वंश भास्कर

(अष्टम खण्ड)

[बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित]

मूल लेखक :

सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक

स्वर्गीय पंडित रामकर्ण आसोपा

भूतपूर्व प्राध्यापक

इतिहास विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथाऽष्टमराशिप्रारम्भः ॥

॥ शुद्धाऽपभ्रंशभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

जयइ गणेसु गयाणणु१ वाणी२ हिमकुंदचंदिमाधवला ॥
एइ करावहिं कव्वं ताह असरिच्छु थवणु हउं करउं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रणसूरा मणउज्जला जणवल्लहु अणमाणु ॥
अम्हारा णमउं जणु गुढकरिकव्वनिहाणु ॥ २ ॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

(अनुष्टुब्युग्माविपुला)

तुर्यांप्र यः सदाऽपश्यजाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु ॥
आत्मारामं स्ववप्तारं चंडीदानं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

॥ संस्कृतअनुवाद ॥

जयति गणेशो गजाननो वाणी हिमकुन्दचन्द्रिकाधवला ॥
एते कारयतः काव्यं तयोरसदृशं स्तवनमहं करोमि ॥ १ ॥
रणशूरा मनस्युज्ज्वला जनवल्लभा अप्रमाणाः ॥
वयं नमामो ये गूढाकृतिकाव्यनिधानाः ॥ २ ॥

गज के मुखवाले गणेश और बरफ, मोगरा और चन्द्रिका के समान उज्ज्वल सरस्वती का जय होवै (सर्वोत्कर्षेण वर्तताम्) ये ही काव्य कराते हैं जिनकी मैं समानता रहित स्तुति करता हूं ॥ १ ॥ युद्ध में वीर, मन के उज्ज्वल, जनों के प्यारे और प्रमाण रहित, उनको मैं नमस्कार करता हूं जो गूढरचना के काव्यों के खजाने हैं ॥२॥ जो सदा जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं से तुर्यावस्था को देखते थे अर्थात् समाधि दशा में रहते थे उन ब्रह्मानन्द स्वरूप चण्डीदान नामक मेरे पिता को नमस्कार करता हूं ॥ ३ ॥

मुनिदृगधृति१८२७मितसकसमय,अजितसिंह१९९।२नरनाह
छत्र धरयो निज जनक छत, लहि भद्रासन लाह ॥ ४ ॥
भ्रातन संजुत भूपके, व्याह१ प्रजा१दिक वत्त ॥
कतिक भूत भावी कतिक, पीढिन क्रम जिम पत्त ॥ ५ ॥
घनाक्षरी–उपयम च्यारि४ कीनें भूपति अजितसिंह१९९।२,
तिनमैं लहैं द्वे२ सुत नियति उदर्क ताम ॥
कृष्णगढ जाइ ब्याही पहिलीं१ बहादुरकी,
कन्या रठउरि रानी सूरजकुमरि १९९।१ नाम ॥
राजाउत किर्त्तिसिंह दुहिता द्वितीय२ व्याही,
सो शृंगारकुमरि ११९।२ सतीमनि म्लाप धाम ॥
तीजी३ ताहि निर्गममैं परनी भनायपुर,
सो अमानकुमरि १६९।३ दलेल सुता अभिराम ॥ ६ ॥
विष्णुसिंह राउलकी कन्या बंसबाटपुर,
बखतकुमारि१९६।४ नाम चोथी४ परन्याँ विदित ॥
भूपतिकै रानी पहिली१मैं सुत जेठो१ भयो,
सो प्रताप२००।१ सिसुहि मरयो जो पाइ आयु मित ॥
सीसोदिनी आहाडी चतुर्थ४ रानी जंपी जास,
बिष्णुसिंह२००।२ दूजो२ चिरंजीव भयो पुण्य चित ॥
एक१ चंद्रशोभा१ ही खवासि जानें स्वांमी अंत,
राजाउति रानी २।१ संग होम्यों अंग हेरि हित ॥ ७ ॥
व्याह तीन३ कीनें भूप अनुज बहादुर१९९।३नैं,

१ पिता के होते ही छत्र धारण किया २ सिंहासन का लाभ लेकर ॥ ४ ॥ ३ सन्तान आदि की ४पहिले हुई और कितनी ही आगे होनेवाली ५प्राप्त ॥ ५ ॥ ६ आनेवाले समय के भाग्यफल से ७ उसी मार्ग में ॥ ६ ॥ ८ बांसवाड़ (बांसवहाला) ९थोड़ी आयु पाकर १०पति (अजितसिंह) के मरने पर ॥

पाये सुत पंच५ रु सुता दुव२ जस प्रकास ॥
झल्ल वखतेसकी सुता सो गर्गराटपुर,
पत्नी बडी१व्याही चंद्रकुमरि१९९१।१ अभिख्याँ तास ॥
रट्ठउरि दूजी२ राजकुमरि१९९१।२ बिबाह्यो बीर,
बीकानेर भूप गजसिंहकी सुता जो आसं ॥
सूरजकुमरि१९९१।३ तीजी३ जादवी अमरदुर्ग,
भैरवादिचंद्र सुता परन्यौं सवप १ भास२ ॥ ८ ॥
ताही जादवीके रामसिंह२००।१ बलवंत२००।२ बलि,
दलपतिसिंह२००।३ चोथो४ सामंतादिसिंह२००।४ सुत ॥
ताहीको द्वितीय२ नाम जीवन२००।४ बखानैं जग,
जानौं पंच५ पंचम५ कनिष्ट सेरसिंह२००।५ जुत ॥
ताहीके सुता द्वै २ तँहँ ———— कुमरि१ जेठी१,
———— कुमार दूजी२ जे न परनी प्रंनुत ॥
भ्राता बलवंत२००।२ सम थान हेरि हार्यो हंत,
इंद्र१कौं कै देतो व्याहि चंद्र२कौं कै जाइ उत ॥ ९ ॥
भूपति अजा१९९।२के भ्रात तजि३ सरदार१९९।३ व्याह,
च्यारि४ करि पाये सुत तीन३ सुता इक१ सह ॥
झल्ली नानतेकी बडी१ पतनी बिबाह्यो एह,
जोरावर कन्या अभैकुमरि१९९१।१ स नाम सह ॥
बीकानैरपुरकी बिबाह्यो बर दूजे२ व्याह,
नाम इंद्रकुमरि१९९१।२ अनंद सुता मंडि मह ॥

१नाम२थी३भैरव है आदि में जिसके ऐसा चन्द्र अर्थात् भैरवचन्द्र॥८॥ ४साम-न्तसिंह५विशेष स्तुति योग्य६भाई बलवन्तसिंह उनका विवाह करने को बराबर का स्थान हेरकर थकगया सो खेद की बात है कि यह इन्द्र को विवाहना चाहता था कि चन्द्रको विवाहना चाहता था॥९॥७अजितसिंह के८झाली९उत्सव रचकर

तीजी३ उनियारेकी नरूकी सरदार सुता,

बखतकुमारि१९९।३ नाम ब्याही बिद उक्त ग्रेह ॥ १० ॥

बाघनवारेकी बहुरि, उदयभानुकुलधारि ॥

दोहा

अखयसिंह तनया बरी, चोथी४ सुबय कुमारि१९९।४ ॥११॥

जेठो१ सुत जेठी१ जन्यौं, ईश्वरिसिंह२००।१ सनाम ॥

दूजी२ दुव२ सुत इक१ सुता, तितय३ जन्यौं बिधि ताम१२

क्रमकरि इह दूजो२ कुमर, देवीसिंह२००।२ उदार ॥

तीजो३ पृथ्वीसिंह२००।३ यह, भो वयसु सिसु गद भार १३

याहीकें इक१ अंगजा, जेठी१ सब३ तैं जोहि ॥

खूबकुमरि१ निज जनक खिँन, सोपुर ब्याही सोहि ॥१४॥

गोर राधिकादास नृप, जो परन्यौं जस जुत्त ॥

इक१ खवासि सरदार१९९।४कैं, हुव ताकैं दुव२ पुत्त ॥१५॥

नाम पहार१ सुरूप२ जे, जेठो१ अज्जहु आहि ॥

यहु अप्पहु काका कहत, जथा कुलक्रम जाहि ॥ १६ ॥

दीप१९८।६ तनय सुरतान१९९।६ हुव, नगर कापरनि नाह ॥

बधू उभय२ तानैं बरी, लह्यो प्रजा चउ४ लाह ॥ १७ ॥

प्रथम१ कूँरमी१ रामपुर, राजाउत्ति२ द्वितीय२ ॥

नाम गुलाबकुमारि१ तस, हुव जेठी१इक१धीय ॥ १८ ॥

सो ब्याही नरउर नृपहिँ, ताके सोदर तीन३ ॥

औरस राजाउत्ति२ कै, प्रकटे सुनहु प्रवीन ॥ १९ ॥

सुत जेठो१ सामंत२००।१हुव, दूजो२सगत२००।२ स नाम ॥

१कहेहुए दिन ॥१०॥२राठोड़कुल("कर्मध्वज" इति पाठान्तरम्)॥११॥३चड़ा स्त्री ॥ मे ४तहां॥ १२ ॥ ५ रोग के भार से बालक ही मरगया ॥ १३ ॥ ६ पुत्री ७ अपुर पिता के समय ॥ १४ ॥ १५ ॥ ८ आज भी है ९ हे प्रभु (रामसिंह) ॥१५॥ भी उस को काका कहते हो ॥ १६ ॥ १७ ॥ १० कछवाही ११ पुत्री ॥१८॥ ६॥

तिनको अनुज प्रयाग२००।३हुव२,अनुज अंसुत[1] मृत तास२०
नृपके भ्रात खवासि भव, जिहिं सिवसिंह१ सुभाइ ॥
बिजैय[2] सुता पद्मावती१, वरी जोधपुर जाइ ॥ २१ ॥
तास अनुज संग्राम २ वर, वरी कृष्णगढ द्रंग ॥
अभयकुमारि १।२ सरदाँरजा[3], निज अग्रज[4] नृप संग ॥२२॥
अनुजन जुत अजमल्ल१९९।२ के, पहु इम व्याह१प्रजारदि ॥
गँदित[5] भूत१ भावी३ गिनहु, अब वर्त्तन[6]२ क्रम आदि ॥२३॥
सूचित१८२७ सक अजमल्ल १९९।२ इम, पायो बुंदिय पट्ट ॥
पद श्रीजित उम्मेद१९८।४ पहु, बह्यो पुरातन बट्ट[7] ॥ २४ ॥
तदनंतर सूचित १८२७ सकहि, श्रीजित सावन मास ॥
पतनी[8] जुत पुष्कर गयो, न्हावन प्रीति प्रकास ॥ २५ ॥
नगर कृष्णगढ पति गयो, श्रीजितकौं तँहँ लैन ॥
आयो तब चहुवान इत, अधिप बहादुर ऐन[9] ॥ २६ ॥
महिमानी अति रचि मुदित, सनमानिय सह सत्थ ॥
मिल्यो रान अरिसिंहहू, हुतो संकुचित[10] तत्थ ॥ २७ ॥

॥चर्च्चरिका ॥

सिक्खकैं चहुवान श्रीजित मग्ग बुंदियको लयो,
होय जैपुर सीम आनि मिल्लान[11] नासरदा दयो ॥
राजसिंह हमीरदेव कुलीन नासरदा पुरी,
कुम्भको कंटकेस[12] हो सु मिल्यो रची हित चातुरी ॥ २८ ॥
अहरी महिमानि औ रहि रत्ति संभर हंकयो,

---

१ विना पुत्र मरा ॥ २० ॥ २ विजयसिंह की पुत्री ॥ २१ ॥ ३ सरदारसिंह की पुत्री ४ अपने बड़े भाई अजितसिंह के साथ ॥ २२ ॥ ५ कहा हुआ ६ अब आदि से क्रम पूर्वक वर्तमान वार्ता है ॥ २३ ॥ ७ प्राचीन मार्ग में चला ॥२४ ॥ ८ स्त्री सहित ॥ २५ ॥ ९ घर ॥ २६ ॥ १० सिन्धी यवनों की तनखाह देने के संकोच युक्त ॥ २७ ॥ ११ मुकाम १२ कछवाहे का सेनापति ॥ २८ ॥

मोदसौं दरकुंच मंडत आनि आश्रममैं ठयो ॥
यौं उदैपुर देसमैं अति दंद संधिननैं कस्यो,
दै जरीब समस्त ग्रामनमैं चढ्यो हक्क जो भस्यो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

इत सक मुनि दृग धृति १८२७ प्रमित, सप्तमि७ पोस मिलाप॥
अजितसिंह नृपकै भयो, पहिलैं कुमर प्रताप ॥ ३० ॥
सकुचि रान अरिसिंह इत, रह्यो कृष्णागढ जानि ॥
आये संधी उदयपुर, हक निज लैन प्रमानि ॥ ३१ ॥
बडो रान अरिसिंहको, सुत हम्मीर कुमार ॥
सो गहि आन्यौं निज निलय, विरचि अनीति अपार ॥ ३२ ॥
तदपि न हक रुप्पय मिले, संधी तब करि मंत्र ॥
दै जरीब कर देसतैं, लग्गे लैन स्वतंत्र ॥ ३३ ॥
अजितसिंह बुंदीस इत, पुनि सुनि मैनन दोर ॥
सेना निज चतुरंग सजि, चढ्यो बिडारन चोर ॥ ३४ ॥
सक मुनि लोचन धृति १८२७ समय, सित पख फग्गुन श्राम।
नगर टोंकड़ा जाय निज, किन्नैं कटक मुकाम ॥ ३५ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

तहांतैं चढ्यो संभरी पट्ट ताजी, बढी सेन भेरीनपैं रीठ बाजी॥
भयो भारतैं जंत्रको ईच्छु भोगी, बन्यौं खीन ठैयालीनतैं विप्रयोगी३६

१ बुन्दी में केदारेश्वर के मन्दिर पर जहां अपना आश्रम था. इधर उदयपुर के देश में सिंधी यवनों ने २ उपद्रव किया ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३ अपनी तनखाह को ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ तोभी तनखाह के रुपये नहीं मिले ५ देश से हासिल लेने लगे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ६ फाल्गुन सुदि ॥ ३५ ॥ वहां से चहुवाण (अजितसिंह) ७ पाटवी घोड़े पर चढा तहां सेना बढकर ८ नौबतों पर निरंतर प्रहार हुए और भार पड़ने से १० शेषनाग ९ चरखी (घांणी) के सांठे (गन्ने) के समान होगया और क्षीण होकर ११ सर्पिणियों से १२ वियोगी होगया ॥ ३६ ॥

छटा मेलसौं सेल आकास छाये, मनों सत्र[1]मैं डम्भ ठट्टे न माये ॥
रचैं चाप टंकार संका रचावैं, मनों पिंजनी[2] तूल[3] फुंफुं मचावैं।३७।
चमंकैं जुरी टोप सन्नाह आली[4], किधौं संग कादंबिनी[5] रंग काली
रजैं यौं ध्वजा मत्त हाथीन राखी, सरूकै खरे संखपैं जानि साखी[6]३८
बिजैकौं नकीबावली[7] अग्ग बोलैं, हिये हेत फुल्लैं रु हुल्लैं हरोलैं[8] ॥
लगे संग दम्मामि[9] सिंधू लगावैं, जथा कोप उच्छाह थाई जगावैं३९
कुसामैं[10] तुले जात यौं बाजि[11] कंधे, बहैं चाप चिल्लान[12] ज्यौं एँन[13] बंधे॥
उडैं ओझकै छाँह उँचेष्ट[14] होती, करैं कैर्तरी[15] होड हल्लैं कनोती।४०।
जगैं ग्रावपैं[16] नाल फुल्लिंग ज्वाला, मनों गोचरी[17] होत खद्योत माला॥
फबैं प्रोथ फुल्लेनमैं स्वास फुक्कैं, किधौं ग्राम्पहुक्कौं[18] तपेहीन[19] कुक्कैं४१
फुंदाकु[20] तथा गारुडू[21] हत्थ पोयो, परयो बैलकै नांस[22]मैं नत्थ[23] पोयो ॥

आकाश में छायेहुए भाले ऐसी शोभा देनेलगे मानों १ यज्ञ में खड़े किये हुए डाभ (दर्भ) नहीं समाये, धनुष की टंकार करके भय रचाते हैं सो मानों २रुई में पिंजया ३ झणकार करती है ॥ ३७ ॥ टोप और कवचों की जुड़ी ४ पंक्ति चमकती है सो मानों सेना के साथ काले रंगवाली ५ घटा चली है और मस्त हाथियों पर ध्वजा ऐसी शोभा देती है मानों पर्वतों पर सरूके ६ वृक्ष खड़े हैं ॥ ३८ ॥ विजय करने को ७ छड़ीदारों की पंक्ति आगे बोलती है जिनके हृदय स्नेह से फूलकर हरोल को ८ आगे बढाते हैं ९ दमामी (ढोली) साथ लगकर बड़े राग के दोहे लगाते हैं और प्रशंसा के योग्य रौद्र रस के स्थायी क्रोध और वीर रस के स्थायी उत्साह को जगाते हैं ॥३९॥ १० लगामों में तुले हुए ११घोड़ों के कंधे ऐसे जाते हैं मानों१२धनुष की प्रत्यंचा में बंधे हुए १३ हरिण जाते हैं अथवा धनुष की प्रत्यंचा में हरिणों को बांधने जाते हैं १४ऊंची होती हुई छाया को देखकर चमक कर उडते हैं और हिलते हुए कान १५ कतरणी की बराबरी करते हैं ॥४०॥ १६पत्थरों पर खुरतालें लगकर अग्नि कणों की ज्वाला उडती है सो मानों जुगनुओं (आगियों) की पंक्ति उडती १७ दीखती है. फूले हुए फुरणों में श्वास चलता हुआ शोभा देता है सो मानों १९बिना टिकड़ी (सुलफे) का १८ ग्रामीण लोगों का हुका फूकता है ॥ ४१ ॥ अथवा जैसे २१कालबेलिये के हाथ में पकड़ा हुआ २० सर्प फुंकार करै तैसे तथा जैसे वृषभ (बैल) की २२ नासिका में २३ नाथ (नाककी रस्सी) पोई होवे

उदै अर्क[1]कै चक्क[2] यौं सज्जि आयो लये विंटि मैनाँ मनों
मेघ छायो ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

मैंननके सब खेट[3] इम, बिंटिलये नृप जाय ॥
सुनत वेहु सज्जित भये, बल खल अतुल बढाय ॥ ४३ ॥

॥ षट्पदी ॥

कर मक्खर[4] कोदंड उभयर मक्खँर[5] गुन ओपित ॥
उपासंग[6] दृढ उभयर पिठि पूरन[7] आरोपित ॥
कटि[8] अय कठिन कटार वसन[9] दारिमँ[10] मसि रंगिय ॥
सिखिचंद्रक[11] धवपत्र कालितँ[12] सिर ललित किलंकिय ॥
अपिहितँ[13] कपाल फैंटा गरद कहिकहि डुड्डुवँ[14] लरन किलँ[15] ॥
बंसिय बजात अपसव्यँ[16] कर किलकारत आये कुटिल ४४
स्योस्यो[17] करि सिव सुमिरि भये सम्मुह मैंनन[18] गन ॥
इततैं संभर भटन बाजि पटकिय मिलाय मन ॥
उततैं तीरन ओघ[19] संगि[20] इततैं घट सारत ॥
हनन सेन उत हक्क इत सु पकरन उच्चारत ॥

और वो फुंकार करे तैसे करते हैं १ सूर्य के उदय होते ही इसप्रकार की २ सेना सजकर आया और जैसे मेघ छावे तैसे छाकर मैनों(मीणों) को घेरलिया ॥ ४२ ॥ ३ सब खेड़ों को घेरालिये ॥ ४३ ॥ उन मैनों के हाथ में ४ मस्कर [बांस] के धनुष और ५ बांस की ही दो दो प्रत्यंचा शोभायमान हैं ७ बाणों से भरे हुए पीठ पर दो दृढ ६ भाथे लगेहुए ८ कमर में कठिन लोहे का कटार और १० दाड़िम की स्याही में रंगे हुए ९ वस्त्र, मस्तक पर ११ मयूर के पंखों और धोकड़ा के वृत्तों के पत्तों की अथवा धावड़ा नामक वृत्तों के पत्तों की १२ लगाईहुई सुंदर किलंगियें १३कपाल नहीं ढकैं ऐसे गोलाकार बंधेहुए मस्तक पर फैंटे जो १५निश्चय ही १४डूडू शब्द कहकर लड़नेवाले (खैराड़ के मीणों का युद्ध प्रारंभ करने का यह सांकेतिक शब्द है १६ दाहिने हाथ से बंशी बजाते हुए वे कुटिल किलकारी करके आये ॥ ४४ ॥ १७ स्योस्यो नाम से शिव का स्मरण करके १८ मीणों का समूह १९ उधर से तीरों का समूह २० इधर से बराछियें

कटि रुंड मुंड सय पय किरत गिरत चाप जीवा जटित ॥
खननंकि बाढ आयुध खिरत फिरत तून जित तित फटित ४५
उलटिजात असवार पलटि तुक्खार प्रवीरन ॥
ए खंडत तिन्ह अनखि जुलम मंडत वे तीरन ॥
जाम जुगल२ इम जुज्झि निबल अब खल सिर नावत ॥
परे आनि नृप पयन सयन जोरत अकुलावत ॥
पहु अजितसिंह पह रन प्रथम करि इम मैंनन जेर किय ॥
लुटवाय खेट बारह१२लये बरस अठारह१८ बय बलिय४६.

॥ दोहा ॥

चोरी गोबध आदिके, मैंनन लिखित कराय ॥
सबके सत्व गिरागकैं, दिय कृषिकर्म लगाय ॥ ४७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशावजितसिंहचरित्रे सपत्नीकश्रीजिदुम्मेदसिंहपुष्करस्नानभूपबहादुरसिंहतत्कृष्णगढाऽऽनयनश्रीजि १ द्राणा २ ऽरिसिंह२ सम्मिलननासरदामार्गनिजाऽऽश्रमाऽऽगमनबुन्दीन्द्रप्रथम १ महाराजकुमारप्रतापसिंहोद्भवनज्ञातकृष्णगढराणाऽतिवासरुद्धतत्पट्टपुत्रहम्मीरसिंहसन्ध्युपाख्यपयवनशीर्षोद्दभूमिभागधेयनिग्रहस्वभृत्यास्वापतेयाऽऽदानशावराङजित-

शरीरों को वेधती हैं १ हाथ पग गिरते हैं २ प्रत्यंचा से जड़ेहुए ३ फटेहुए माथे फिरते हैं ॥ ४१ ॥ ४वीरों के घोड़े पलटकर ॥ ३८ ॥ ५दो पहर पर्यन्त इस प्रकार लड़ कर ६ मस्तक झुकाकर ७ हाथ जोड़ कर ८ बारह खेड़े लुटवालिये ॥ ४६ ॥ ९ खेती के काम में लगादिये ॥ ४७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, स्त्री सहित श्रीजित् का पुष्कर स्नान करना और कृष्णगढ के राजा बहादुरसिंह का उसको कृष्णगढ लाना १ श्रीजित् का राणा अरिसिंह से मिलना और नासरदा के मार्ग से अपने आश्रम को आना २ बुन्दीपति के प्रथम राजकुमार प्रतापसिंह का होना और राणा का कृष्णगढ में अत्यन्त रहना जानकर उसके पाटवी पुत्र हम्मीरसिंह को रोककर सिंधी नामक यवनों का शीशोदियों की भूमि का हासिल ले अपनी तनखा का धन लेना ३

सिंहपुनर्मैणागणाविध्वंसनशस्त्रन्यासपूर्वकस्तेय १ गोवधा२ऽऽदिरोधतल्लेखलेखनं प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥ आदितः ॥ ३४१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अग्गैं बिनु अपराध जोरजुत, ग्राम सुहाके इक सगताउत ॥
हन्यौं इह्व तस बैर चिंति यँहँ, तमकि भूप अब दल हंकिय तँहँ ॥१॥
मानपुरा१ रु सुहा१ निवसथ्थ दुव२, मारि बिडारि बिजय लिन्नौं ध्रुव
बहु सीसोद पकरि करि बिनु मद,आयउ पुर थानौं निज जनपद॥२॥
तँहँ नरेस किय यह बिचार मन, इततैं नाँहिं रुकत मैंनंजन ॥
यातैं कहुँक बिहित गढ बंधैं, इत तातैं चोरन चित रंधैं ॥ ३ ॥
बिल्लहटा१ मेवारँ ग्राम जँहँ, पिक्ख्यो उचित बनायो गढ तँहँ ॥
रानौं सन यह बत्त कहाई, इततैं रुकत न तेंथ उपाई ॥ ४ ॥
यातैं यह तुमरो निंवसथ लिय, हम तँहँ दुष्ट दमन गढ बंधिय॥
अपर लेहु हमसौं तुम या सम, कराहिं रुद्द यातैं तसकरक्रम ॥ ५ ॥
बिल्लहटा इम गढ बंधायउ, गढपति रक्खि रु ढुंदिय आयउ ॥
बसु लोचन धृति १८२८ सक तदनंतरँ, एकादसि ११ ससि राधं बिसद पर ॥ ६ ॥
गो नृप बंसबहाला ब्याहन, सुहृदं जन्न्य सजि अतुल उछाहन ॥
राउल पृथ्वीसिंह सुता प्रिय, बखतकुमारि अभिधान ब्याहि लिय

रावराजा अजितसिंह का फिर मैनों के समूह को नाश करना और शस्त्रों के प्रहारों से नाश करके चोरी और गोवध आदि रोकने का उनका लेख लिखाने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तीनसौ इकतालीस ३४१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ ग्राम २ अपने देश में ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ चोरी करनेवाले ॥ ४ ॥ ४ ग्राम ५ दूसरा ६ चोरों का चलना ॥ ५ ॥ ७ जिसपीछे ८ वैशाख सुदि ॥ ६ ॥ ९ मित्रों को बराती (जनेती) सजकर १० नाम ॥ ७ ॥

लग्गन दिवस बिलहटा सिर द्रुत, चढे जाजपुरके रानाउत॥
सुनि श्रीजित चिंतिय बिचारचित, बुंदिय भूप गयो ब्याहन इत॥८
इत सु लैन बिलहटा आये, रानाउतन बिरोध रचाये ॥
नृप संधी बिगरैं सु न अच्छी,श्रीजित सोचि चढयो तब कच्छी॥९॥
श्रीजित संग चढी खिल सेना, मानहु सत्थ हिमालय मेना ॥
परे जाय रानाउत दल पर, कतल मची जनु काल प्रलयकर॥१०॥
चलन लगे सर सांगि तुपक असि,लगे फिरन गोमायु गिद्ध लसि॥
भेजा भचकि उडत आकासहिं,लोलैं रचत कंदुक जनु लासहिं॥११
ओपित धनुख बान संधित इम, उत्तरकुरु बिच अमरनदी जिम ॥
ब्रह्मपुरी जिम पुंख बिराजत, सैलन पर सैपर्व सर साजत ॥ १२ ॥
भैल उदधिसंगम गति भासैं, ताहि लखत भीरुन गन त्रासैं ॥
तुपकैं चलाय भरत हठि हेरत, गोरीं बिच कि बीज कृखि गेरत॥१३
परत मरत कति मात पुकारत, अकुलावत कुक्कत अति औरत ॥

१बिलहटा ग्राम पर॥८॥२ राजा की प्रतिज्ञा३घोड़े पर चढा॥९॥ अजितसिंह की बरात में गये पीछे४बाकी बची जो सेना श्रीजित् (उम्मेदसिंह)के साथ चढी सो मानों हिमालय के साथ मेना नामक उसकी स्त्री हुई ॥१०॥ तीर, बरछी, बंदूक और तरवारें चलनेलगीं ५ गीदड़ शोभित होकर फूलने लगे, मस्तकों की टक्कर होकर आकाश में उडते हैं सो मानों ६ चपल गेंद ७ नाच करते हैं ॥ ११ ॥ धनुष में संधान किया हुआ बाण ऐसा शोभा देता है जैसे ८ उत्तरकुरु देश में ९ गंगा नदी शोभा देती है "उत्तरकुरु धनुष के आकार टेढा है" १० काशी पुरी के समान उस (गंगा रूपी) बाण के पंख शोभा देते हैं अ-र्थात् पंख तो काशी पुरी है और गंगा के मार्ग में आनेवाले पर्वतों के समान ११ गांठों सहित बाण शोभा देता है अर्थात् तीर की गांठें ही पर्वत हैं ॥ १२ ॥ १२ तीर की भाल (फल) है सो ही गंगा का और समुद्र का संगम दीखता है जिसको देखते ही पाप के समान १३ कायरों का समूह डरता है "यहां गंगा के योग से पाप की तर्जना ऊपर से की जाती है" १४ बंदूक को चलाकर हठ पूर्वक पीछी भरते हैं सो मानों १५ ओरे (बीज डालने की बांस की नली) में खे-ती का बीज डालते हैं ॥ १३ ॥ गिरते हुए और मरतेहुए कितने ही लोग मा ता माता पुकारते हैं और अत्यन्त १६ पीड़ित होकर कूकते हैं सेत नेत्रों रूपी

चक्खत प्रेत नयन *शृंगाटक, निधरक रचत अछक छक नाटक१४
फटिफटि निकसि †क्लोम फहरावत, ‡दर्पी मह रसना कि दिखावत॥
ऊरध होत वहत §असि ऐसैं, जान्हवि धार मेरु सिर जैसैं ॥१५॥
प्रभु श्रीजित अरि बहु इम पारे, बनिजारन टंडा जनु डारे ॥
सैननसहित अयुत रानाउत, देखि हत्थ तजि रैखत भजे द्रुत।१६।

॥ दोहा ॥

बहु सीसक बारूद बलि, तुपक नालि जंबूर॥
इत्यादिक सत्रुन सिविर, सकल छिन्निलिय सूर॥ १७ ॥
बिलहटाके दुर्ग बिच, रखत वहै सब रक्खि ॥
पहुँच्यो आश्रम गेहपतिहि, अप्पहु मरि यह आक्खि॥
करि उँपयम दुलहनि सहित, अजितसिंह इत भूप ॥
भैंसरोरगढ कुंचकरि, आयो रूचप अनूप॥ १९ ॥
जो माहजि उज्जैन रन, गहयो चौंडहर मान ॥
तिहिं महिमानौं मंसभ करि, रक्खयो तँहँ चहुवान ॥ २० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अग्ग रान जगतेस चौंडहर, सलूमरीस कुबेर सहोदर ॥
लाल नाम सोलेह१६सम थप्प्यो, अरु तिहिं भैंसरोरगढ अप्प्यो२१
भो नृप जब अरिसिंह छत्र धरि, तब वह लाल बुलायो अहरि ॥

* सिंघाड़े चखते हैं और पूर्ण तृप्त होकर निर्भयता से नाटक करते हैं ॥१४॥ पेट फटफट कर † तिल्ली बाहर हिलती है सो मानों ‡ कामी महिष (भैंसा) जीभ दिखाता है "कामी भैंसा भैंस के मूत्र स्थान को सूंघकर जीभ निकाला करता है" § तरवारें ऊंची होकर ऐसी बहती हैं मानों सुमेरु के शिखर से गंगा की धारा बहती है ॥ १५ ॥ श्रीजित् ने इस प्रकार बहुत शत्रु मारे सो मानों बनजारों ने बालभ डाली है १ दश हजार २ सामग्री छोड़कर ॥ १६ ॥ ३ शीशा ४ तोपें ॥ १७ ॥ ५ बीलहटा के किलेदार से कहा कि ६ ये सामान भर कर देना ॥ १८ ॥ ७ विवाह ८ दुलह ॥ १९ ॥ ९चूंडाउत मानसिंह १०हठ करके ॥ २० ॥ ११ आगे १२ लालसिंह को सोलह उमरावों के समान ॥ २१ ॥

अरुखी पुर बग्घोरं पधारहु, मं मक्क नाथ पितृव्यक मारहु ।२२।
पुरबग्घोर सुनत गो पापी, थिरकरि द्रोह भिलनकी थापी ॥
नाथ कहिय तुमरो बिस्वास न,पठवहु कहि आवहु मम पास न२३
सिव इकलिंग लाल तब बिच दिय, कपटी पुनि अंदर प्रवेस किय॥
नाथं करत सिव पूजन पायो, लाल तास सिर तोरि गिरायो २४
ताको सुत यह भैंसरोरपति, मानसिंह अभिधान भीरु मति ॥
इहिं कारि हठ रक्ख्यो नृप आवत, पुनि सु डरयो गढबिच पधरावत

॥ दोहा ॥

सामग्री तब गोठिकी, डिल्ली सिविर पठाय ॥
गृह न दिखायो बहँम बस, जिन इनकै गढ जाय ॥ २६ ॥
संरिता चम्मलि बंभनी, दोउनर संगम तत्थ ॥
अष्टोत्तरसत १०८ धेनु दिय, संभर नाह समत्थ ॥ २७ ॥
चढि प्रातहि दरकुंच रचि, रनपट्टु संभर राय ॥
सक बसु दृग धृति १८२८ सुंक्रमैं, प्रबिस्यो बुंदिय आय।२८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशावजितसिंहचरित्रे स्मृतपुरातनबन्धुवैररावराजमानपुरा १ मुहा २ ग्रामेशाऽऽदिशीषोदिनिग्रहणस्वराष्ट्रथाणापुराऽऽगमनराणाग्रामविल्लहटास्वदुर्गबन्धनतत्पार्श्वग्रामनिर्विवादिषुराणाऽनुनयनबुन्द्यागतप्रस्थितरावराड्वंशवद्दालापुरेशशीषोदिराउलपृथ्वीसिंहदुहितोद्वहनपश्चाद्राणाउत्तसैन्य

१बागोर में जाकर २ मेरे काका नाथसिंह को मारो ॥ २२ ॥ २३ ॥ ३ लालसिंह ने ४ नाथसिंह ॥ २४ ॥ ५ कायर ॥ २५ ॥ ६ डेरों में भेज दी ७ सन्देह से ८ यह गढ कहीं इनके न चलाजावे ॥ २६ ॥ ९ चामल और बामणी नदी के संगम पर ॥ २७ ॥ १० ज्येष्ठ मास में २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्रमें, पहिले का भाई का वैर याद करके रावराजा का मानपुरा और मुहुवा के पति शीषोदियों को पकड़ना और अपने देश थाणापुर में आना १ राणा के ग्राम पीलहटा में अपना गढ बांधना और उसकी बराबर का ग्राम निश्चय

विल्लहटावेष्टनश्रुतशात्रवश्रीजित्तत्समायोधनकृतविजयस्वाश्रमा ऽऽग मनस्वीकृतचुण्डाउत्तमानसिंहसत्कारसम्भरेशस्वपुरप्रविशनं द्विती-यो २ मयूखः ॥ २ ॥

आदितः ॥ ३४२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

ऋतु पाउस अंतर *तदनु, नृपकै कुमर प्रताप ॥
कृष्णगढप दौहित्र वह, गत हुव रोग अमाप ॥ १ ॥
तदनंतर याही बरस १८२८, सित दसमी१० इसमास ॥
पतनीजुत श्रीजित चल्यो, प्राची तीरथ आस ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम गयो केसवपुरपट्टनि, न्हान१ दान२ किय तत्थ उचित भनि॥
इसके अंत ग्रहन ससिके पर, सुबरन१ भूमि२ दये पुनि संभर।३।
इंदगढाधिप भक्तराम जँहँ, आयो मिलन लैन संभर कँहँ ॥
प्रसभपुव्व करजोरि अरज करि, स्वीय निलय लैगो हित अनु-सरि ॥ ४ ॥
तँहँ श्रीजित दुव२ रत्ति बिताई, पुनि व्रजभूमि हंकि द्रुत पाई ॥
गिरि गोवर्द्धन दीपमाल दिन, न्हान२दान१किय कथित छहुईन॥५॥

हीं खेड़े ने को राणा का विनय करना २ बुन्दी आकर प्रस्थान करके रावराजा का पांसवाड़ा पुर के पति सीसोदिया राउल पृथ्वीसिंह की पुत्री से विवाह करना और पीछे से राणापत्नों की सेना का पीलहटा को घेरना सुनकर उन शत्रुओं से श्रीजित् का युद्ध करना और विजय करके अपने आश्रम में आना२ चुंडावत मानसिंह का सत्कार स्वीकार करके रावराजा का अपने पुर(बुन्दी) में आने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ ॥२॥ और आदि से तीन सौ बियालीस ३४२ मयूख हुए ॥

*जिसपीछे॥१॥१आश्विन मास में२पूर्वदिशा के तीर्थों की आशा से ॥२॥३आ-सोज सुदि पूर्णिमा को ॥३॥४हठ पूर्वक५अपने घर॥४॥६छाठाओं के पति ने ॥५॥

पुनि मथुरा करि उचित रीति सब, अतुल दान वृंदावन किय अब
पुनि दरकुंच कडामानिकपुर, सुरतटिनी[1] न्हायो संभर सुर[2] ॥ ६ ॥
करि उपवास१ दान२ बिधि संजुत, दरकुंचन पहुँच्यो प्रयाग द्रुत॥
बपन[3]१ न्हान२ उपवास३ दान४ बिधि, करि अरु कृपन लयो का-
सी निधि[4] ॥ ७ ॥
चेतसिंह कासीपुर भूपति, लैगो सम्मुह आय महामति ॥
तँहँ निज धाम राजमंदिर रहि, चतुर समस्त उचित साह्यि चाहि।८।
अजितसिंह बुंदीस भूप इत, आयो नगर इंद्रगढ धरिहित ॥
तब सम्मुह कल्ल्यानखेट तक, भक्तराम पहुँच्यो भट नायक॥९॥
लैगो नृपहिं बधाय निजालय[5], रक्ख्यो अति सतकारि निपुन नय॥
तँहँ जेठो भट भक्तराम सुत, कुमर नाम सनमान बिनय जुत।१०।
ताहि बुलाय भूप हड्डन पति, अभ्युत्थान[6] दयो अहारि अति ॥
यह नवीन किन्नौं नृप आदर, आयो रहि दिन पंच५निज नगर।११।
उदयनेर इत संधी जवनन, हँक[7] लिय चुकि मेवार मुलक सन ॥
छलसिसुमैं[8] न मिले करि मानहिं, लैन गयो ति कृष्णगढ रानहिं१२
कछुदिन रान बिस्वास न किन्नौं, पुनि संधिनको आसय लिन्नौं॥
तब अरिसिंह चल्यो निज देसहिं, स्वसुरहु गो पहुँचान नरेसहिं१३
निज जनपद[9] रानहिं प्रविसायो, तब रठोर कृष्णगढ आयो ॥
इत जसवंत देवगढ स्वामी, हुव छैलवाल सहाय[10] हरामी ॥ १४ ॥
पृथ्वीसिंह भूप कूरमपति, निज दौहित्र जानि रचि बिन्नति ॥
सुन लघु सहित जाय जैपुर सठ, अरिसिंहहिं मारन मंड्यो हठ१५
राजसिंह हम्मीरदेव हर, सेनापति फोरयो तँहँ सत्वर ॥
जट्टनकौं तजि कछुक अनख लहि, समरू हुतो फिरंगी तत्थहि१६

१गंगा नदी २ देव ॥ ६ ॥ ३ मुंडन ४ उस कृपण ने काशी रूपी निधि को ली ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ५ अपने घर ॥ १० ॥ ६ ताजीम ॥ ११ ॥ ७ तनखाह ८ रत्नसिंह में ॥ १२ ॥ १३ ॥ ९ अपने देश में १० रत्नसिंह की सहाय ॥१४॥१५॥१६॥

सो पठयो अरिसिंहहिँ मारन, कुप्पि चल्यो समरू रन कारन ॥
दै कछु दम्म मिलाय ताहि लिय, रान१रु समरू२भये मित्रप्रिय१७
रान साम पंडेर ग्राम करि, भरतपुरहि पुनि गो सु गर्ब भरि॥
इत अरिसिंह उदैपुर आयो, संधिनजुत निज अमल जमायो ॥१८॥
भीम सलूमरि नाह हुकम लहि, चुंडाउत आयो किल्ला चहि ॥
कछु छलकरि सिसु सचिव डरायो, खाली गढ चित्तोर करायो१९
तदनुं रान पठयो बुंदिय दल, बिल्लहटा तुम लयो अप्प बल ॥
रक्खन ताहि चित्त जो लावहु, तो यँहँ सेवन अनुजँ पठावहु॥२०॥
रुप्पय लक्ख१०००००पटा तिहिँ दैहैं, बिल्लहटाहु दँत्त गिनि लैहैं॥
यह सुनि नृप निज अनुज बहादुर, पठयो दै भट संग उदयपुर२१
काका अर्ज्जुनसिंह रान तँहँ, पठयो सम्मुह सुनत इहु पँहँ ॥
दै तिहिँ पटा सुभट निज थप्प्यो, बिल्लहटासु तदँपि नहि अप्पो२२

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजित सिंहचरित्रे बुन्दीन्द्रमहाराजकुमारप्रतापसिंहदेहत्यजनश्रीजित्प्राची तीर्थयात्राप्रस्थानहड्डेन्द्रेन्द्रगढगमनभक्तरामकुमरसन्मानसिंहाऽर्थाऽभ्युत्थानाऽर्पणानीतभृत्याद्रम्मसन्धियवनकृष्णगढगमनराणाऽरिसिंहमेदपाटाऽऽनयनजयपुरगतसपुत्रदेवगढेशचुण्डाउत्तजसवन्तसिंहराणानिपातविचारणाफिराङ्गिसमरूमेदपाटप्रेषणातदरिसिंहमैत्रीकरण

॥ १७ ॥ १८ ॥ १ सलूमर का पति भीमसिंह २ रत्नसिंह के सचिव को ॥ १९ ॥ ३ जिसपीछे ४ पत्र ५ छोटे भाई को नौकरी करने भेजो ॥ २० ॥ ६ दियाहुआ गिन लेवेंगे ॥ २१ ॥ ७तो भी बीलहटा नहीं दिया ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशिमें, अजितसिंहके चरित्र में, बुन्दीपति के कुमर प्रतापसिंह का मरना और श्रीजित् का पूर्व दिशा के तीर्थों को जाना १ हाडाओं के पति का इन्द्रगढ जाना और भक्तराम के कुमर सन्मानसिंहको ताजीम देना२ तनखाह के रुपये ग्रहण करके सिन्धी यवनों का कृष्णगढ जाना और राणा अरिसिंह को उदयपुर लाना ३ पुत्र सहित जयपुर गये हुए देवगढ के पति चुंडावत जशवंतसिंह का राणा८को मारने

सलूम्मरीशचुण्डाउत्तभीमसिंहचित्रकूटस्थछलपत्त्वनिष्कासनराणा
विल्लहटाऽर्थबुन्दीवर्णादूतमेषणारावराट्सोदरबहादुरसिंहोदयपुरप्र-
स्थापनतद्विल्लहटावर्जितपटोपटङ्कग्रामादिपापणं तृतीयो३ मयूखः॥
॥ ३ ॥ आदितः ॥३४३॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत बुंदीस भूप रानिनजुत, इक्क दिन ससक[1] सिकार गयो द्रुत ॥
ताल[2] जोधसागर उपबन[3] जहँ, ससग्राहक[4] ह्वो आवबाट[5] तहँ ॥ १ ॥
बनबाई बग्गुरि[6] ताके सुख, सह अवरोध[7] रह्यो तहँ सह सुख ॥
घेरयो दासिन बिपिनि[8] पिहि सन, उठि उठि आन लगे तब ससगन२
कछुक काल कौतुक इम किन्नौं, अवरोधहिं आयस[9] पुनि दिन्नौं
उपबन तब आये बनिताजन, अप्प चल्यो पुनि इक्क अडर मन ३
बल्लभदास१ अनोपराम दुव२, नाजर संग इतर कोउ न हुव ॥
खर्ब[10] तुरग आरूढ नरेश्वर, उपबन[11] ओर चल्यो हंकत अर ॥ ४ ॥
इक१गहिलोत गुलाब नाम सठ, लाल अनुज[12] तहँ किय अपुब्ब हठ
जामिक[13] दिठ्ठि बचाय रु आयो, धव[14] अंतररहि बिसिख[15] चलायो॥५॥
फुट्टो वह कर बाम कलाई, चहुवानहु तब संगि चलाई॥

का विचार करना और सलूमर के पति चुंडावत भीमसिंह का चीतोड़ में स्थित छलचाल के पत्त को निकालना ५ राणा का बीलहटा के अर्थ बुन्दी पत्र भेजना और रावराजा का अपने सगे भाई बहादुरसिंह को उदयपुर भेजना उसको बिल्लहटा के विना, पट्टा उपटंक ग्राम आदि मिलने का तीसरा३मयूख समाप्त हुआ॥३॥ और आदि से तीनसौ तियालीस ३४३ मयूख हुए ॥

१ खरगोशों की २ तलाव ३ बाग ४ खरगोशों को पकड़ने का ५ पत्थरों का कोट ॥ १ ॥ ६ बागर (फंदा) ७ जनाना सहित ८ वनको ॥ २ ॥ ९ जनाने को आज्ञा दी ॥ ३ ॥ १० छोटे घोड़े पर चढकर ११ बाग की तरफ़ शीघ्र चला ॥ ४ ॥ १२ लालसिंह के छोटे भाई ने १३ पहरायतों की नजर बचाकर १४ धोकड़ों के वृक्षों के भीतर रहकर १५ बाण चलाया ॥ ५ ॥

अरिकै भजत लगी सु पिठि पर, रीढक*रपटि धसी तिरछी धर[1]६
परि पुनि उट्ठि [2]त्वराकरि लज्ज्यो, बाट सु [3]ऊरुदघ्न चढि भज्ज्यो ॥
नृप हय [4]खर्व रुक्यो सु कोट करि, पिट्ठि लग्यो तब कूदि प्लवपभरि७
सजव गयो अरि दै तरु अंतर, [5]उपवन त्यों सुरख्यो तव संभर ॥
याको भ्रात लाल [6]अभिधानक, हो मालिक [7]मृगया सब थानक।८।
ताको नृप कौतुक [8]हेलन पर, कटवायो अग्गैं दक्खिन कर ॥
तास अनुज यहँ वैर बिचारिय, तमकि तीर संभर कर मारिय ॥९॥
विक्रम सक्क वसुदृग धृति१८२८हायन, असित माघ बिच छन्नउपायन
सीसोदक गहिलोत गुलाबसु, प्रबिसि [9]प्रदोसकाल तिहिँ बन पसु१०
[10]बालिस मारि भूप कर बानहिँ, [11]तिमिर सहाय गयो निज थानहिँ॥
[12]तदनु भलाय मनाय नगर दुव, २ इक्क नृपति संबंध बिदित हुव११
[13]जनकँ पितृव्यक्क जोध सुता जँहँ, थूहानि रन व्याही [14]कूरम कँहँ ॥
ताकी [15]धाइ पुत्रसुत मति वर, पटु सुखराम नाम नय तत्पर ॥१२॥
नृप किय मुक्ख्य सचिव गुज्जरवह, इम बुंदीस बितावत सुख [16]अह
पुनि लग्गत नव दृग धृति १८२९ संवत, [17]आरवारँ एकादसि ११
संगत ॥ १३ ॥
[18]राधमास अवदात पक्ख पर, पुर भलाय ब्याहन गो संभर ॥
अनुज बहादुर उदयनैर सन, [19]औसु बुलाय संग लिय अप्पन।१४।
इम दुल्लह सज्जित बरात जुत, पुर भलाय प्रमुदित पहुँच्यो द्रुत ॥
चढि राजाउत सुतन चलाये, उभय २ कोस सम्मुह सब आये१५

*वांसे की हड्डी पर फिसल कर १ भूमि में ॥ ६ ॥ २ शीघ्रता करके ३ जंघा पर्यन्त ऊंचे मार्ग पर चढ़कर ४ राजा का घोड़ा छोटा था इस कारण ॥ ७ ॥ ५ बाग को ६ लाल-सिंह नामक ७ शिकार के सब स्थानों का ॥ ८ ॥ ८ अपराध पर ॥ ९ ॥ ९ सन्ध्या समय ॥ १० ॥ १० सूर्य ने ११ अंधेरे की सहाय से १२ जिस पीछे ॥ ११ ॥ १३ पिता (उम्मेदसिंह) के काका जोधसिंह की पुत्री १४ राजा जयसिंह को १५ उसकी धाय का पुत्र, श्रेष्ठ बुद्धिवाला ॥ १२ ॥ १६ दिन १७ मंगल वार ॥ १३ ॥ १८ वैशाख सुदि १९ शीघ्र बुलाकर ॥ १४ ॥ १५ ॥

कीरतिसिंह झलापनाथ सुत, बख्तावर १ अभिधान प्रीति जुत॥
अभयसिंह २ ईसरदा स्वामी, भैरवसिंह ३ सुहाड़प नामी॥ १६ ॥
नृपहिं वधाय लैगये पत्तन, घरघर उच्छव अतुल भये घन ॥
अंध स्वसुर सम्मुख न इम्म आयो, पुनि दुल्लह तोरन पधरायो ।१७।
नीराजन आदिक तदनंतर, बिधि करि व्याह लई दुलहनि वर ॥
अंध स्वसुर पद्धति वड पावन, करी अरज इक्काब बढावन ।१८।
अग्गैं लिखत राजश्री ठाकुर, धाम नाम पुनि तदनु काम धुर ॥
तुम जामात अरज चित लावहु, महाराजपद पत्र लिखावहु ॥१९॥
लखि तँहँ नृपहु स्वसुर नीति अति प्रिय, महाराज श्रीठाकुर पद दिय
इम शृंगारकुमरि अभिधान सु, चल्यो व्याहि बुंदिय चहुवान सु२०
स्वसुर पुरोहित कृपाराम कँहँ, बहुधन१ कुंडल २ कटक३ दये तँहँ॥
पुनि दरकुंच चल्यो छेकत पथ, सरित बनास बनहटा निवसथ।२१।
अर्बुदजा इम लांघि जुद्ध जय, प्रबिस्यो नागरचाल बडे रय ॥
सुनि पुर नगर आत संभर पहु, सम्मुह गो नारवै सिरदारहु ।२२।
द्वि २ सिरुपाव दुव २ हय इक १ भूखन, नृपकी नजरि निवहि मुदित मन ॥
निस इक१ रक्खि दई महिमानी, उनिपारेसैं प्रीति पहिचानी।२३।
पुनि वदि जेठ चउत्थि४ चलायो, अतिजव दुर्ग नयनैंपुर आयो ॥

॥ १६ ॥ १ श्वशुर अन्धा था इस कारण ॥ १७ ॥ २ आरती ३ बड़ी पद्धति पाने के लिये ॥ १८ ॥ ४ जिसपीछे मुख्य काम की वार्ता ५ तुम जमाई हो इस कारण ॥ १६ ॥ ६ नम्रता ॥ २० ॥ ७ कानों में पहनने के मोती ८ कड़े ९ग्राम से॥२१॥ १०(✻) बनास नदी ११ नरूका ॥२२॥ १२ उणियारा के पति ने ॥ २३ ॥१३नैणवा.

(✻) हम उपर लिख आये हैं कि अर्बुद (आबू) पर्वत से निकलनेवाली बनास नदी पश्चिमवाहिनी होकर पश्चिम के समुद्र में अन्य नदियों में होकर मिलती है. और यह बनास नदी कुंभलगढ के प उनावड़ ग्राम के पास से निकल कर पूर्ववाहिनी होकर चामल नदी में और फिर जमुना, गंगा में हो पूर्व समुद्र में मिली है ॥

दुलहनि स्वपुर तहाँसन भेजिय, ब्याहन अप्प मनाय गमन किय।२४।
उदयभान सम्मुह तब आयो, पुनि लहि काल निलय पधरायो ॥
नव दुवर धृति १८२९ सक्क जेठ दसमि १० दिन, असित पक्ख
बुध वार हुइ इनँ ॥ २५ ॥
भूप दलेल सुता हुलासित हिय, बखतकुमारि अभिधान ब्याहि लिय॥
पुनि पुष्कर आयो संभरपति, महादान किय न्हाय महामति ।२६।
करि पुनि कुंच कृष्णगढ आयो, पै निज स्वसुर तत्थ नहिं पायो॥
बिरदसिंह सालक सम्मुह गय, अति प्रवीन बिद्या गुन आलय ।२७।
रहि कछु दिवस भाम पुनि हंकिय, दरकुंचन आयो पुर बुंदिय ॥
र बाहिर राजाउति रानी, तबलग रही प्रीति पहिचानी ॥ २८ ॥
ब दुलहनि दुवर सहित नरेस्वर, किय प्रवेस बुंदियपुर अंदर ॥
हि बरस१८२९ कोटेस गुमानहु, ब्याहन गो बेघम लै दलबहु।२९।
तनूज प्रतापकुमारी, कोटा परनि गयो छलकारी ॥
री सन श्रीजित इत हंकिय, गयो जाय पितरन सद्गति दिय।३०।
किय बैजनाथ सिव दरसन, बरदवान पहुँच्यो प्रसन्न मन ॥
नृप मंडी महिमानी, श्रीजित कीरति सबन सुहानी॥ ३१ ॥
ो पुनि बालेसुरबंदर, तँहँ मरहट्ठ भटन मंग्यो कर ॥
कलह तब सस्त्र प्रहारे, सत्रु सिपाह अट्ठन मित मारे ॥३२॥
ुत होय जिहाजपुर चालिय, बलि बेतरनी न्हाँन दान किय॥
ाया पुनि पितर तृप्त करि, कटक होय गय जगदीस नगरि ३३।
मारकंडेयाश्रम जँहँ, इंद्रद्युम्न श्राद्धपुनि किय तँहँ ॥
ाहोदधि न्हाय श्राद्ध करि, पुरुसोत्तम परसे पुनि श्रीहरि ।३४।

दुलहन को बुन्दी भेजा ॥ २४ ॥ २ समय पाकर घर में पधराया ३ के पति ने ॥ २५ ॥ २३ ॥ ४ साला ॥ २७ ॥ ५ पहिनोई ॥ २८ ॥ मेघसिंह के पुत्र प्रतापसिंह की कन्या ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ हासिल २ ॥ ॥ ३३ ॥ ८ मार्कंडेय के आश्रम ॥ ३४ ॥

दिन दुव२ बेर नयन सुख लिन्नौं, पुनि प्रयान कछुदिन रहि किन्नौं ॥
न्हाय स्वेतगंगा अघ जालन, अतिजव होय अढारह१८नालन।३५।
आयो तदनु रामगढ पत्तन, मिल्यो भूप ताकोहु मुदित मन ॥
बहुरि होय कासी वैखानस, मुरथ्यो बिंध्यवासिनी मानस ॥ ३६ ॥
पुष्पदंत जँहँ साप मुक्त हुव, किन्नौं तँहँ देवी दरसन ध्रुव ॥
तीरथराज होय पुनि सत्वर, चित्रकूट सेवन करि संभर ॥ ३७ ॥
होय ओंडछा झाँसी आयउ, नरउर बहुरि मिलान लगायउ ॥
रामसिंह कूरम नरउरपति, मिल्यो आय सम्मुह मंजुल मति।३८।
श्रीजित नजरि तुपक इक१किन्नी, महिमानीहु उचित बिधि दिन्नी॥
पुनि केसवपट्टनि मिलान दिय, कथित रीति तँहँ न्हान१दान२किय३९
एकादसि ११ नव दुव धृति १८२९ सक मित, आश्रम निज आयो
भद्दव सित ॥
बाहुल गो बेघस पुनि तपबल, मातामही न्हवाय गंगजल ॥ ४० ॥
बलि पुष्कर हित गमन बिधायउ, अतिजव हंकि कृष्णगढ आयउ॥
महिमानी रठोर भूप दिय, मन्नि ताहि पुष्कर मंजन किय ॥ ४१ ॥
हैं अजमेरु स्वीय आश्रम बलि, अगहनमैं आयो अतिजव चलि ॥
सुत बुंदीपतिकै तदनंतर, बिष्णुसिंह अभिधान भयो वर ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे भ्रातृकरच्छेदवैरोज्जिहीर्षुशीषोंदगुलाबसिंहबुन्दीन्द्रबाहुबाणावेधनतदन्धकारसहायपलायनसचिवीकृतगुर्ज्जरसुखरामराव

॥ ३५ ॥ १ जिसपीछे २ वानप्रस्थ (उम्मेदसिंह) ३ मन ॥ ३६ ॥ ४प्रयाग ॥ ३७ ॥
५ मुकाम ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ कार्तिक मास में ७ तपस्वी ८ नांनी को ॥ ४० ॥
९ गमन किया १० स्नान किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्रमें, भाई के हाथ कटाने के वैर को लेने की इच्छावाले शीषोदिया गुलाबसिंह का बुन्दी के पति के भुज को बाण से बेधना और उसका अन्धेरे में भागना १ गूजर सुखराम को सचिव करके रावराजा का मिलाप के पति राजाउत

राड्झलायपुरेशराजाउत्तकूर्म्मकीर्त्तिसिंहसुताविवहनवर्द्धितश्वशुरसत्कारस्वीकृतनारवशरदारसिंहस्वागतबुन्दीप्रेषितनवोढपरिणीत—भणायपुरभपरह्टोड़दलेलसिंहदुहितृकपुष्करस्नातगृहीतशालाविरुदसिंहस्वागतद्व्यूढरावराड्बुन्दीप्रविशनकोटेशगुमानसिंहवेघमपुरपतिचुण्डाउत्तशीषोदसिवाईमेघपौत्रीपरिणायनजगदीशाऽवधिसेवित—प्राचीतीर्थश्रीजित्स्वाऽऽश्रमाऽऽगमनाऽनन्तरगङ्गोदकमाताम्हीस्नापनकृष्णगढमार्गाऽनुष्ठितपुष्करस्नानपुनराश्रमाऽऽगमनरावराड्राजकुमारविष्णुसिंहोद्भवनं चतुर्थो ४ मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः ॥ ३४४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक नव दुव धृति१८२९पोस बदि, द्वादसि१२ मंगल वार ॥
विष्णुसिंह बुंदीसकैं, प्रकट्यो राजकुमार ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

यह दौहित्र उदार, बंसबहालाधीसको ॥
अमर[1] अंस अवतार, अजितसिंह नृपकै भयो ॥ २ ॥
श्रीजित तदनु[2] सप्रीति, गंगाजल उच्छव कियउ ॥

कछवाहे कीर्तिसिंह की पुत्री से विवाह करना और श्वशुर का सत्कार बढाकर नरू के सरदारसिंह के स्वागत को स्वीकार करके, दुलहन को बुन्दी भेजकर भणाय के राठोड़ दलेलसिंह की पुत्री को विवाह कर, पुष्कर का स्नान करके साले विरुदसिंहका स्वागत ग्रहण करके दो रानियें व्याहेहुए रावराजा का बुन्दी में आना २ कोटा के पति गुमानसिंह का बेघम के पति चुंडाउत सिवाई मेघसिंह की पोती परनना ३ जगदीश पर्यन्त के पूर्व के तीर्थ करके श्रीजित् का अपने आश्रम में आना, जिसपीछे नांनी को गंगाजल से स्नान कराना और कृष्णगढ के मार्ग से पुष्कर स्नान करके फिर आश्रम पर आना ४ रावराजा के राजकुमार विष्णुसिंह के होने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ और आदि से तीन सौ चवालीस ३४४ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ देव अंश ॥ २ ॥ २ जिस पीछे

निज कुटुंब रचि नीति, कोटादिक एकत्र किय ॥ ३ ॥

दोहा—अस्थिपालको[1] जनन सब, बुंदिय लिन्न बुलाय ॥
पठये करि पहिरावनी, पुनि गंगोदक पाय ॥ ४ ॥
तदनंतर फग्गुन असित, सक्क नव दुव धृति१८२९ मान ॥
देस सम्हारन काज इत, किय अरिसिंह प्रयान ॥५॥
बुन्दी जनपदके[2] निकट, पुर संकरगढ नाम ॥
आय तत्थ अरिसिंह नृप, किन्नौं कटक्क मुकाम ॥ ६ ॥
श्रीजितपँहँ पठई अरज, लिखि निजकर नृप रान ॥
तुम अनिच्छहो[3] राजऋषि, बिहित योग बिज्ञान ॥ ७ ॥
हम सेवक दरसन चहत, अधिक रहत जिय आस ॥
सुनि श्रीजित गो हिय हुलासि, सजव रान नृप पास ॥८॥
आय सम्मुख अरिसिंहहू, लैगो सिविरै बधाय ॥
त्यागी नहिं बैठो तखत, श्रीजित विधि समुझाय ॥ ९ ॥
चौका[6] उप्पर भिन्न रहि, किय सँलाप सनेहु ॥
अक्खिय तँहँ अरिसिंह इम, बिल्लहटा तजि देहु ॥ १० ॥
ताहि[8] सँटि बुंदीससौं, लेहु इतर तुम ग्राम ॥
अथवा रुप्पय आयमित, श्रीजित कहिय सुधाम ॥ ११ ॥
तदनु सिक्ख करि संभरी, अप्पन आश्रम आय ॥
अक्खिय इम बुंदीससौं, मिलहु रानसौं जाय ॥ १२ ॥
स्वीय सचिव इत रानहू, अमरचंद्र अभिधान ॥
बंभन बुंदिय मुक्कल्यो, पधरावन चहुवान ॥ १३ ॥

॥ ३ ॥ १ अस्थिपाल के वंश (सम्पूर्ण हाडाओं) को ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ देश के समीप ॥ ६ ॥ ३ हे राजऋषि तुम इच्छा रहित हो सो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ४ डेरे में ५ गादी पर नहीं बैठा ॥ ९ ॥ ६ आसन पर जुदा रहकर ७ स्नेह से बात की ॥ १० ॥ ८ बदले में ९ अन्य १० आमदनी के माफिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

अग्गैं कुमर प्रताप ढिग, कारामैं जगतेस ॥
सेवन रक्ख्यो बिप्र सो, हंक्यो दब्बत देस ॥१४॥
अमरचंद कहि मुक्कलिय, अनय सुरथपुर आय ॥
मेरे सम्मुह दर्प तजि, आवहु संभरराय ॥ १५ ॥
दयो सुनत बारूदमैं, मानहु खदिर दमंग ॥
सजि तनुत्र निर्मोक सम, भो नृप कुपित भुजंग ॥ १६ ॥
हुक्कम पठायो बिप्रपैं, रे कातर बिपरीत ॥
सिंहनकी समता करत, फेरव होत फजीत ॥ १७ ॥
सु सुनि बिप्र खिजि तब कहिय, है दर्पित बुंदीस ॥
पहिलैं पिक्खहिं जाय तिंहिं, बहुरि दिखावहिं रीस ॥ १८ ॥
इम बिचारि आयो सु द्विज, व्है सिबिका आरूढ ॥
कोउन सम्मुह मुक्कल्यो, मन्नि भूप तिंहिं मूढ॥ १९ ॥

॥ षट्पदी ॥

संधी भट लिय संग बडे कमनैत बहादुर ॥
तोड़े सिलगत तुपक पकरि प्रबिसै बुंदिय पुर ॥
वर्म१ टोपर२ बाहुलं३न जटित सब अमरचंद जुत ॥
चिंतत रन मन चंड रुक्के गैंजपारि आय द्रुत ॥
संधी तथापि संतपंच५०० लै हठ करि द्विज परिखद गयउ ॥
अभिमन्यु तनय जनु कलि कुमति तच्छक पर तंडत भयउ२०

॥ दोहा ॥

अमरचंद आसिख दयो, रक्खि बडो मगरूर ॥

१ कैद में ॥ १४ ॥ २ अनीति ॥ १५ ॥ ३ खेर वृक्ष की अग्नि (यह अग्नि तेज बहुत होती है) ४ सर्प की कांचली के समान कवच सज कर वह राजा सर्प के समान कुपित हुआ ॥ १६ ॥ ५ गीदड़ ॥ १७ ॥ ६ घमंडी है ७ जिसको पहिले जाकर देखोगे ॥ १८ ॥ ८ पालखी पर चढकर ॥ १९ ॥ ९ सिंधी यवनों को १०कवच ११ दस्ताना १२ हाथी पोल पर रोके १३ लोभी १४सभा में गया १५ मानों कलियुग की कुमति से परीक्षित ने तक्षक नाग पर गर्जना की ॥२०॥

उदयो नहिँ भूपति अनखि, सु लखि महाबल सूर ॥ २१ ॥
सचिवन सुभटन निहुकारि, बिन्नति सैनति सुनाय ॥
कलह घटावन प्रसभैक्रम, दिन्नौं नृपहिँ उठाय ॥ २२ ॥
तदपि मिसल मरजाद तजि, बैठन लग्गो बिप्र ॥
डोढीरच्छक ओर तब, छोहि लख्यो नृप छिप्र ॥ २३ ॥
सैन समुझि बुंदीसकी, तानैं द्विज ढिग आय ॥
दै कर बगल उठाय द्रुत, दयो मिसल बैठाय ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे रावराडुराजकुमारविष्णुसिंहोद्भवनश्रीजिद्गङ्गोदकोत्सवकरणराणाऽरिसिंहस्वदेशाऽटनतच्छ्रीजित्सम्मिलनशीर्षोदस्वसचिवामरचन्द्रबुन्दीप्रेषणतद्दुर्दविप्रकटुप्रजल्पनं पञ्चमो ५ मयूखः॥५॥

आदितः॥३४५॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥ स्वागता ॥

तत्समीक्ष्य कुपितोऽमरचन्द्रः कोपयन्निव नरेन्द्रमवोचत् ॥
ग्राममर्पयतु बिल्लहटाख्यं सन्धिमेत्य भजतादरिसिंहम् ॥१॥
अन्यथा सपदि सन्ध्युपटङ्कैः शस्त्रसूरिपवनैस्तदमीभिः ॥

॥ २१ ॥ १ नम्रता पूर्वक २ हठ के क्रम से ॥२२॥ ३ द्वारपाल की ओर क्रोध करके देखा ॥ २३ ॥ ४ बगल में हाथ देकर ॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, रावराजा के राजकुमार विष्णुसिंह का होना और श्रीजित का गंगाजल का उत्सव करना १ राणा अरिसिंह का देशाटन करना और श्रीजितका उनसे मिलना २ शीर्षोद का अपने सचिव अमरचन्द को बुन्दी भेजना और उस ब्राह्मण का मर्म वेधनेवाले वचनों का कहने का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीन सौ पैंतालीस ३४५ मयूख हुए ॥

उस बात को देखकर क्रोध में आया हुआ अमरचन्द, राजा को क्रोध करानेवाले वचन बोला कि बिल्लहटा नामक ग्राम देदो और सन्धि (मिलाप) करके अरिसिंह (अड़सी) की सेवा करो ॥ १ ॥ नहीं तो ये सिन्धी पदवीवाले यवन शस्त्रविद्या में पंडित, केश पकड़ कर नीचा मुख करके तुम्हारे राजापन को

न्यङ्कुलमध्य सकचग्रहमास्यं नीयते तव नृपत्वमपास्य ॥२॥
एवमादिभिररुन्तुदवाक्यैः क्रुच्छरासनविसृष्टकलम्बैः ॥
बुन्दधीशहृदयं परिभिद्य प्रस्थितस्सहसाऽमरचन्द्रः ॥ ३ ॥
कोपितस्तदनु संभरराजः पन्नगेश्वर इवाङ्घ्र्युपगूढः ॥
विप्रवाक्यकरणो ह्यरिसिंहः कारकं प्रथममेवममंस्त ॥४॥
तत्र शूरसचिवैर्नृपवर्यो बोधितः समयवेल्लनविद्भिः ॥
सन्धनीय उदयादिपुरेशो रावराडनुदिनं भवतेति ॥ ५ ॥
विप्र एव कुटिलो बलशंसी विग्रहं विरचयंस्तदवादीत् ॥
स्वामिशासनमृतेऽनयमूर्त्ती राज्यभारकलितोद्धतदर्पः ॥६॥
गम्यतामवनिराडरिसिंहं सज्जनो ह्यनुचितं स न कर्त्ता ॥
सन्निशम्य सचिवोक्तमवाच्यं तर्जयिष्यति तमेव सरोपम्॥७॥
एवमादिवचनैरवनीशश्चालितः सचिवयोद्धृभिराद्यैः ॥
कम्पयन्स दिगिभार्णवभूमिं लुम्पयन्नवटकापथशैलान्॥८॥

दूर कर, शीघ्र लेजावेंगे ॥ २ ॥ इत्यादि क्रोध रूपी धनुष से छोड़े हुए बाणों के समान मर्म वेधन करनेवाले वचनों से, बुन्दीपति के हृदय को घायल करके वह अमरचन्द यकायक (अचानक) उठचला ॥३॥ जिसपीछे जैसे पैर से दबाया हुआ सर्प कुपित होवे तैसे चहुवाण राजा कुपित हुआ और वह अरिसिंह ब्राह्मण (अमरचन्द) का कहा करनेवाला, प्रथम कहनेवाले का करनेवाला अर्थात् जो पहिले कहै उसी को माननेवाला हुआ ॥ ४ ॥ तब समय की उलटा पलटी को जाननेवाले उमराव और कामदारों (अहलकारों) ने श्रेष्ट राजा को समझाया कि हे रावराजा आपको उदयपुर के स्वामी से सदैव सन्धि (मिलाप) करना उचित है ॥ ५ ॥ राज्य के भार से (सचिव होने से) आया है बड़ा घमण्ड जिसको, अपने पराक्रम को जैनानेवाला, अनीति की मूर्त्ति, ऐसे कुटिल ब्राह्मण ने ही, बिना स्वामी की आज्ञा के लड़ाई को रचकर ऐसे वचन कहे हैं ॥ ६ ॥ हे महाराज आप अरिसिंह के समीप चलिये, वह सज्जन है सो अनुचित नहीं करेंगे, किन्तु अमात्य के कहेहुए कुवचनों को सुनकर क्रोध से उस (अमरचन्द) को ही धमकावेंगे ॥७॥ अमात्यों के कहेहुए इत्यादि वचनों से, राजा चलायमान होकर, दिग्गज और समुद्रों के साथ पृथ्वी को कंपाता हुआ, खड्डे, कुमार्ग और पर्वतों का नाश करता हुआ ॥ ८ ॥ ऊपर को उड़ीहुई

छादयन् रविमुदग्ररजोभिः सादयन्हयखुरैरतलादीन्॥
ह्लादयन्नतुलसैन्धवरागैर्नादयन्निजभटान्हरिगर्जैः ॥९॥
पेषयन्नुपलपादपगुल्मान्प्रेषयन्स्वपृतनां युधि जेतुम् ॥
श्लेषयन्भरमहीन्द्रफणाभिः प्रेषयन्नखिलदिक्ष्वतिभीतिम् १०
स्पन्दयन्नधरकच्छपपृष्ठं स्पन्दयन्गिरिषु खानिजधातून् ॥
नन्दयन्स हितबान्धववर्गान्क्रन्दयन्नहिततस्करदुष्टान् ॥११॥
जम्भयन्धनुरुदारकरेण स्तम्भयन्विशिखविद्धविहङ्गान् ॥
दारयन्नवनिदारकदंष्ट्रां कारयन्पलभुजां मुदमुच्चैः ॥१२॥
घोषयन्समरवादनवर्यान्पोषयन्पथि समागतदीनान् ॥
मोषयन्नसिरुचाऽचिरभाभां शोषयन् गमनधूलिभिरब्धीन्१३
साधयन्स्वजनसङ्गरवृत्तिं बाधयन्परजनाननकान्तिम् ॥
सोऽरिसिंहशिबिरं तरसेत्थं रावराडजितसिंह इयाय ॥ १४ ॥

धूलि से सूर्य को ढकता हुआ, घोड़ों के खुरों से अतल आदि लोकों को दुःखी करता हुआ, अत्यन्त सिन्धवी रागों (बड़ेरागों) से हर्ष कराताहुआ, सिंहगर्जना से अपने वीरों को नाद कराता हुआ ॥ ९ ॥ पत्थर, वृक्ष और लताओं को पीसता हुआ, युद्ध जीतने के अर्थ अपनी सेना को चलाता हुआ शेषनाग के फणों से भार को मिलाता हुआ, सब दिशाओं में भारको भेजता हुआ ॥ १० ॥ भूमि से कच्छप की पीठ को रगड़ता हुआ, पर्वतों की खानों में उत्पन्न होनेवाली धातुओं को बहाता हुआ, हित के साथ बान्धव वर्ग (सम्बंधियों के समूह) को आनन्द देता हुआ, शत्रु, चोर और दुष्टों को रुलाता हुआ ॥ ११ ॥ दहिने हाथ से धनुष को खेंचता हुआ अथवा वह उदार, हाथ से धनुष को खींचता हुआ, बाणों से छिदे हुए पक्षियों को स्तंभन करता हुआ सूवरों की दाढों को तोड़ता हुआ अथवा वराह की दाढों को तोड़ता हुआ, मांसाहारियों को बड़ा हर्ष कराताहुआ ॥ १२ ॥ युद्ध के श्रेष्ठ बाजों को बजवाता हुआ, मार्ग में आएहुए दीनों का पोषण करता हुआ, तरवार की सुन्दर और चञ्चल कान्ति को छटकाताहुआ, चलने की धूलि से समुद्र को सुखाता हुआ ॥ १३ अपने लोगों की युद्धवृत्ति को साधता हुआ, शत्रुओं के मुख की कान्ति को मिटाता हुआ, इसप्रकार वह रावराजा अजितसिंह अरिसिंह के डेरे को चला ॥ १४ ॥

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

आगच्छन्तं शिविरमधुना बुन्द्यधीशं निशम्य,
द्रागभ्यागात्सभटसचिवः सोऽपि राणोऽरिसिंहः ॥
आनन्दोत्कं सुमिलनमबोभोदुभयोर्भूमिभर्त्रो-
र्वीरांश्चान्यानुभयत इतान्मेलयाञ्चक्रतुस्तौ ॥ १५ ॥

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

प्रथममिन्द्रगढाधिपतेः सुतो रणपटुः सनमानसमाह्वयः१॥
तदनु माधववंशमहार्णवोद्भवशशी भगवंत२इति स्फुटः ॥ १६ ॥
अथ च धोवडपत्तनपात्मजः समिति भैरवभैरवभैरवः३ ॥
इतिमुखा अरिसिंहमहीभुताप्यजितसिंहभटा मिलिताः सुखम्॥१७॥

॥ उपजातिः ॥

अथाऽपरे तत्र सलूम्बरीशश्चुण्डाउतोभीम१उपेत्य पूर्वम्॥
आमेटनाथश्च ततो द्वितीयो वीरः फतेसिंह२उदारभावः॥१८॥
बिजोलिशास्ता परमारजातिर्नीतिप्रपञ्ची शुभकर्णनामा३॥
इत्यादयः सम्भविनः पृथक् तेऽरिसिंहवीरा मिलिता नृपेण॥१९॥

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

बुन्दी के पति का अपने डेरे आना हुआ सुनकर उमराव और मन्त्रियों सहित वह राणा अरिसिंह भी शीघ्र सन्मुख आया, उन दोनों राजाओं का सुन्दर मिलाप आनन्द को बढानेवाला हुआ और उन दोनों राजाओं ने दोनों ओर के वीरों को परस्पर मिलाये ॥ १५ ॥ प्रथम तो इन्द्रगढ के पति का पुत्र, युद्ध में चतुर सनमानसिंह, पीछे माधवसिंह के वंश रूपी समुद्र से उत्पन्न हुआ चन्द्रमा के समान भगवन्तसिंह, जिसपीछे धोवड़ा नगर के पति का पुत्र युद्ध में भैरव के समान स्पष्ट भयङ्कर भैरवसिंह ॥ १६ ॥ इत्यादि अजितसिंह के उमराव आनन्द पूर्वक महाराणा अरिसिंह से मिले ॥ १७ ॥ अथ दूसरी ओर के, सलूम्बर का स्वामी चुण्डावत भीमसिंह, दूसरा आमेट का पति बड़ा पराक्रमी वीर फतहसिंह ॥ १८ ॥ और तीसरा बीजोल्यां का पति पँवार जातिवाला नीति में चतुर शुभकर्ण, इत्यादि महाराणा अरिसिंह के मिलने योग्य उमराव अजितसिंह से पृथक् पृथक् मिले ॥ १९ ॥ इस प्रकार जीतने में नहीं आवे ऐसा

बुन्दीशोऽजितसिंह१ एवमजितो भूपोऽरिसिंह२स्तथा,
राणोट्टङ्किमितो मिथोऽमिलदिह श्रीचाहुवाणेश्वरः ॥
स्मृत्वा तत्सचिवोक्तवाक्यकुलिशं नोपायनं चाप्यदा-
न्नाङ्घ्रिस्पर्शमपि व्यधान्नवयमाऽहीन्दु१८२९प्रमाणे शके२०
पञ्चम्या ५ सहितेऽवलक्षशकले श्यामे तपस्याऽऽह्वये,
सम्मिल्येत्थमुभा२वथो विविशतुः स्वं स्वं निचोलालयम् ॥
मुद्राः कृष्णगढाऽधिपस्य सुतया शीर्षोद्दराड्याऽनुजा-
भर्त्रे बुन्द्यधिपाय पञ्चशतकं ५०० खाद्यैः समं प्रेषिताः।२१।
राणाऽपि द्रविणं खखेन्द्रिय ५०० मिता मुद्रास्तथा प्रेषिताः,
पश्चात्फाल्गुनशुक्लषष्ठदिवसे चातुर्भुजो रावराट् ॥
सुत्रामेव बलाऽऽलयं पटगृहं प्राप्तोऽरिसिंहस्य सो-
ऽभ्युत्थानादिविधेर्यरीतिरचनैः सत्कारितः स्वागतैः ॥ २२ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

पश्चादहोमन्त्रणदूष्यमागाद्राणा१सनाढ्याऽमरचन्द्र१युक्तः ॥
शम्भू३सनाम्ना सनवाडभर्त्रा राणाउतेनाऽपि तथा समेतः ॥२३॥

बुन्दी का पति अजितसिंह और तैसे ही शत्रुओं पर सिंह रूप राणा पदवी को धारण करनेवाला अरिसिंह (अडसी) दोनों परस्पर मिले, इस मिलाप में चहुवाणों के ईश्वर रावराजा अजितसिंह ने उस अमात्य (अमरचन्द) के वज्र रूपी वचनों को स्मरण करके न तो राणा का नजराना किया और न चरण स्पर्श किया यह मिलाप सम्वत् अठारह सौ उनतीस१८२९ फाल्गुन सुदि पञ्चमी को हुआ, इस प्रकार दोनों मिलकर अपने अपने डेरों में गये और कृष्णगढ़ के अधिपति की पुत्री जो सीसोदिया (अरिसिंह) की राणी थी, उसने अपनी छोटी बहिन के पति बुन्दी के पति अजितसिंह के अर्थ मिठाई के साथ पांच सौ रुपये भेजे ॥ २० ॥ २१ ॥ तैसे ही राणा ने भी पांच सौ रुपये भेजे जिसपीछे फाल्गुन सुदि छठ के दिन चहुवाण रावराजा जैसे इन्द्र, बलिराजा के स्थान पर प्राप्त होवै तैसे राणा अरिसिंहके डेरे पर प्राप्त हुआ और ताजीम आदि उचित स्वागत से सत्कार पाया ॥ २२ ॥ जिसपीछे एकान्त में सलाह करने के निमित्त, सनाढ्य जाति के प्रधान अमरचंद, सनवाड़ के पति राणाउत शंभूसिंह के साथ राणा अरिसिंह जुदे डेरे में गये ॥ २३ ॥

बुन्दीपुरीन्द्रोऽ भगवंतसिंहं१ माधोसिंहहड्डं समिदुग्रवीर्यम् ॥
सीलोरसद्वङ्गपतिं सुनीतिं सत्कोकिलग्रामपुरानिवासम् ॥ २४ ॥
वीरं द्वितीयं२ सनमानसिंह२ हड्डेन्द्रसल्लोतपदोपटङ्कयम् ॥
श्रीभक्तरामस्य कुमारवर्यं संयोधिनं चेन्द्रगढाऽधिपस्य ॥ २५ ॥
दाधीचवंशध्वजमार्यवन्द्यं व्यासं तृतीयं३द्विजमुच्चमन्त्रम् ॥
गोपालरामाभिध३मासताहं सैतत्त्रयं३ मंत्रगृहे निनाय ॥ २६ ॥
तत्र स्थितानां घटिका१ व्यतीता राणाऽरिसिंहेन सुगन्धतैलम् १॥
स्वर्णाभपर्णोत्तमवीटकाश्च स्तम्बेरमः१ स्वोच्चरूपशङ्कितार्कः॥२७॥

॥ उपजातिः॥

निरस्तमूल्ये परिधानपूर्णे लोके स्फुटे ये सिरुपावशब्दैः२॥
तुरङ्गमौ२ द्वौ२ जितवातवेगौ मण्यादिभिः सञ्जटिता च भूषा१।२८।
इत्याद्यथाऽहोऽर्हणामुच्चमानैर्निवेदितं भूपतयेऽजिताय ॥
सत्कारितः सोऽजितसिंहवर्मा स्थले स्वकीयं समुपाजगाम ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजित–

वहां पर बुन्दीपति अजितसिंह ने युद्ध में उग्र प्रतापी सीलोर नगर के पति को जो पहिले कोकिल (कोइला) ग्राम में रहता था उस माधोसिंहोत हाडे भगवन्तसिंह और ॥ २४ ॥ दूसरे वीर इंद्रगढ के पति श्रीभक्तराम के पुत्र योद्धा इन्द्रसल्लोत्त पदवीवाले सन्मानसिंह को ॥ २५ ॥ और तीसरे प्रामाणिक आर्यों के पूज्य बड़ी सलाह देनेवाले दाधीचवंश की ध्वजा व्यास गोपालराम इन तीनों को उस सलाह करने के डेरे में लिये ॥ २६ ॥ वहां पर एक घड़ी भर समय व्यतीत हुआ जिसपीछे राणा अरिसिंह ने, इत्र (अंतर) सुवर्ण के वरक लगे पान बीड़े, अपनी ऊंचाई से सूर्य को शङ्कित करनेवाला (इसकी ऊंचाई की आड से अंधेरा नहीं होजावे ऐसी शंका करानेवाला) एक हाथी अमूल्य वस्त्रों से पूरित लोक में सिरुपाव के नाम से प्रसिद्ध दो सिरुपाव, वायुके वेग को जीतनेवाले दो घोड़े, और मणियों का जड़ाहुआ एक भूषण ॥ २७ ॥ २८ ॥ इत्यादि, बड़े मान के साथ राजा अजितसिंह के भेट किये इसप्रकार सत्कार पाकर वह अजितसिंह अपने डेरे आया ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण की अष्टम राशि में, अजितसिंह के

सिंहचरित्रेऽमरचन्द्रविल्लहटानिमित्तकटुतरभाषणभविष्यत्सिन्धियवनत्रासोद्देशनकोपितरावराट्तत्पश्चागमनसचिवसुभटोक्तबुन्दीन्द्रराणसैन्यसाधेयशङ्करगढगमनसम्मुखाऽगताऽरिसिंहसम्मिलनसुभटादिमिथोमेलनचरणाऽपिस्पर्शत्सम्भरोपायनाऽढौकनस्वस्वशिविरविशनसपत्नीकशीर्षोहहह्हेशाऽर्थमुद्रापञ्चशती ५०० प्रमुखस्वागतवस्तुप्रेषणरावराड्द्वितीय २ दिनराणापटाऽऽलयगमनसत्रय ३ सद्वय २ भूपद्वय २ मन्त्रणराणासुगन्ध १ पर्ण २ गज ३ वाजि ४ वस्त्र ५ भूषण ६ हड्डेन्द्रनिवेदनतत्स्वासिविरागमनं षष्ठो ६ मयूखः ॥६॥ आदितः॥३४६॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥इन्द्रवज्रा ॥

राणाऽरिसिंहोऽपि दिने द्वितीये२ बुन्दीन्द्रदौकूलनिवासमागात्॥
सत्कारितोऽनेन च सर्वभावैस्तद्वत्समुत्थानसुभाषणाद्यैः ॥ १ ॥

॥ उपजातिः ॥

चरित्र में, अमरचन्द का बीलहटा ग्राम के कारण अत्यन्त कडुए वचन कहना और आगे आनेवाले समय में सिन्धी यवनों का भय देना १ रावराजा को क्रोध करा कर उसका पीछा जाना और बुन्दी के पति का उमरावों और मंत्रियों के कहने से राणा की सेना से घिरेहुए शंकरगढ में जाना२ सन्मुख आये हुए अरिसिंह से मिलना और उमराव आदि को परस्पर मिलाना ३ चहुवाण का राणा के चरणों का स्पर्श नहीं करके नजराना नहीं करना और दोनों का अपने डेरों में जाना ४ स्त्री सहित राणा का हाडाओं के पति के अर्थ पांच सौ रुपये आदि स्वागत(महमानी)के पदार्थों का भेजना५ रावराजा का दूसरे दिन राणा के डेरे जाना और बुन्दी के तीन और उदयपुर के दो जनों सहित दोनों राजाओं का सलाह करना६ राणा का इत्र, पान, हाथी, घोड़े, वस्त्र, भूषण, हड्डेन्द्र को देना और उसके अपने डेरे में आने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ ॥६॥ और आदि से तीन सौ छियालीस ३४६ मयूख हुए ॥

दूसरे दिन राणा अरिसिंह भी बुन्दीपति के डेरे आये और अजितसिंह ने भी उसी रीति से ताजीम, सुन्दर संभाषण आदि से सब प्रकार से सत्कार किया ॥ १ ॥ और मीठिया [illegible] के अर्थ बुन्दी के पति अजितसिंह ने एक बात

प्रीत्येधनायाऽकुरुताऽन्यदेकं बुन्दीश्वरो हस्तयुगे२ वसूनाम् ॥
थैलीतिशब्दस्फुटबुध्यमानद्वयं२ गृहीत्वा ह्यरिसिंहदेहात् ॥ २ ॥
उत्तार्य तस्यैव च सेवकेभ्यो ददद्यथेन्द्रः कृतसत्रकार्यः ॥
दव्यं सुखं घ्रेय१ मथाऽपि चर्व्यं ताम्बूल२ मिद्धं पुरटप्रकाशम् ॥३॥
निवेदयामास गजं१ सुदन्तद्वयं२ वियद्दर्शनघूर्णनेन ॥
संकेतयन्तं समरेऽसुहानैर्भुङ्क्ष्वान्तु नाकीयसुखं यथेच्छम् ॥ ४ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

मदन्तकीलद्वय२सेवनेन तिष्ठन्तु वा क्षेपयितास्मि नाके ॥
सञ्चालयंतं श्रवणौ विशालौ दात्ताग्यसम्पातिरिवाऽऽत्मपक्षौ ॥५॥

उपजातिः ॥

अश्वौ२तथा क्षिप्रगतौ हि वायोः पृष्ठस्थितत्वादिव निर्बलत्वम् ॥
संसूचयंतौ खरहेषणेन प्रसन्नवस्त्राणि३ तथा नवानि ॥ ६ ॥
हीराद्यमूल्योत्तमरत्नभूषा४ मित्यादि संगृह्य च सम्भरेशात्॥
अथाऽऽज्ञया सैन्ययुतोऽरिसिंहः स्वयं निचोलालयमेव आयात् ॥७॥

यह की कि अपने दोनों हाथों में धन (रुपयों) की थैली जिसका स्पष्ट नाम है लेकर अरिसिंह के शरीर पर ॥ २ ॥ उतार (नोछावर) कर, राणा अरिसिंह के ही सेवकों को, जैसे इन्द्र यज्ञ समाप्त करके देवै तैसे दी, तिस पीछे सुख पूर्वक गन्ध लेने योग्य इत्र, चबाने योग्य सुवर्ण के वरक लगे हुए पान बीड़े ॥ ३ ॥ और श्रेष्ठ दो दांतोंवाला एक हाथी दिया, वह हाथी आकाश की ओर देखकर मस्तक घुमाता था सो मानों यह संकेत [इसारा] करता था कि युद्ध में मरकर स्वर्ग का यथेच्छ सुख भोगो ॥ ४ ॥ मेरे इन दोनों दांतों रूपी कीलों के सेवन से ठहरो तुमको मैं अभी स्वर्ग में फैंक देता हूं और यह संकेत करके अपने दोनों बड़े कानों को ग्रीध पक्षी संपाति की भांति दिखाता था ॥ ५ ॥ तैसे ही वायु के समान शीघ्र चलनेवाले और अपने से पीछे रहजाने के कारण वायु की निर्बलता की अपने तीखे हींसने से सूचना करनेवाले दो घोड़े और सुन्दर नवीन वस्त्र ॥ ६ ॥ हीरा आदि रत्नों से जड़ाहुआ उत्तम मूल्य का भूषण (सिरपेच) इत्यादि चहुवाण (अजितसिंह) से लेकर, सीख लेकर सेना सहित अरिसिंह अपने डेरे गया ॥ ७ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

आगत्य च प्रेषितवान् स्वकीयं दूतं स यत्राऽजितसिंहभूपः ॥
संदेशहारेण तदा यदुक्तं तच्छ्रूयतां रामधराऽधिनाथ ॥ ८ ॥

॥ उपजातिः ॥

चुण्डाउतो वेघमपुर्यधीशः समाख्यया नाम सिवाइमेघः१ ॥
अन्यस्तथा शंकरदुर्गनाथोर राणाउतः स्वामिविरोधचञ्चुः ॥ ९ ॥
कन्हाउतो रामपुरश्च कोजूऽस्तथा तृतीयोरऽमरदुर्गभर्त्ता ॥
राणाउतश्चापि जलिंघरीशोऽद्वेषानुगः साहसिकश्चतुर्थः४ ॥ १० ॥
चत्वार४एते भवदीयपक्षान्निरस्तशङ्का गणयंति नो नो ॥
वशेऽस्मदीये विनियोजनीया धूर्त्ताः खलास्ते भवता नियम्य ॥११॥
श्रुत्वेति दूतोक्तमुदारसत्त्वः श्रीरावराडाविरचीकथत्तम् ॥
चुण्डाउतैर्वेघमपत्तनेशैः कृतोऽस्मदीयो बहुधोपकारः ॥ १२ ॥
विस्मृत्य युष्माभिरतस्तदागः सम्मेलनीयः स सिवाइमेघः ॥
वयं हि मध्यस्थपदं दधानास्तमानयेम प्रसभं पुरस्तात् ॥ १३ ॥
राणाउतः शंकरदुर्गनाथः१ कन्हाउतश्चाऽमरदुर्गदुर्गीर ॥

हेरे आकर राजा अजितसिंह के पास अपना दूत भेजा, उस दूत ने जो आकर कहा सो हे भूपति रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ वेघम का पति चुण्डाउत सिवाई मेघसिंह, दूसरा शंकरगढ का पति राणावत, स्वामी से विरोध करना ही है धन जिसके "व्याकरण में चञ्चु और चणप् प्रत्यय धन अर्थ में होते हैं" ॥ ९ ॥ तीसरा अमरगढ का पति, राम शब्द से पहिले है कोजू जिसके अर्थात् कोजूराम कान्हावत, चौथा द्वेष के साथ रहनेवाला हठी राणावत जलिंघरी का पति ॥ १० ॥ ये चारों आपके पक्ष से निडर होकर हमको नहीं मानते हैं इस कारण आप इन दुष्ट धूर्तों को पकड़कर हमारे वश में करो ॥ ११ ॥ दूत के कहे हुए ये वचन सुनकर बड़े पराक्रमी श्रीरावराजा ने स्पष्ट कहा कि वेघूँ के पति चूंडावतों ने हमारे पर बहुत उपकार किये हैं ॥ १२ इस कारण आप भी उसके अपराध को भूलकर सिवाई मेघसिंह के साथ मिलाप करलो, हम बीच में पड़कर उसको बलात्कार (जबरीसे) आप के सामने ले आवेंगे ॥ १३ ॥ और शंकरगढ के पति राणावत और अमरगढ के गढवाला [पति] कान्हावत, ये

उभावेवमू नः शरणागतौ तद्वयं न तद्विप्रियमाचरामः ॥ १४ ॥
अन्हाय यूयं कुरुत प्रकामं तौ जेतुमाजौ सततं प्रयत्नम् ॥
जलंधरीशं यमने यदीच्छा चमूं प्रयच्छंतु न मेत्र पक्षः ॥ १५ ॥
मत्कोट्टपालोऽपि गमिष्यतीतः सार्द्धं तया केशवरामनामा ॥
विजित्य तत्रत्यजनान् सलीलं निस्सारयिष्यत्युत नात्र चित्रम् ॥१६॥
श्रुत्वेति राणाः परिपंथिभावं गतोप्यऽमात्यं त्वमराद्दिचंद्रम् ॥
सम्प्रेषयामास जलिंधरीशं चतुःसहस्रेण४०००बलेन युक्तम् ॥१७॥
सकोट्टपालोऽपि नियोजितः संजगाम वेगादरिसिंहसिद्ध्यै ॥
जलिंधरीदुर्गनिवासिनो नॄन्निस्सारयामास ददौ च दुर्गम् ॥१८॥
राणाउताश्चाऽपि यथाप्रतिष्ठं प्रवेशिता बुन्दिवनौ सकांताः ॥
पश्चादपृष्ट्वाऽजितसिंहभूपं राणा गतः शंकरदुर्गभूतः ॥ १९ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

खैरूणसंज्ञं पुरमध्यसंस्थं दग्ध्वाऽगमत्सोऽमरदुर्गभूमिम् ॥
बुध्वेति बुंदीपतिमाप्तकोपं सर्वेऽवदन्यत्रगतस्स राणाः ॥ २० ॥

दोनों हमारे शरण आये हैं इसकारण हम दोनों का बुरा नहीं करेंगे ॥१४॥ आप उन दोनों को युद्ध में जीतने का उपाय शीघ्र करो और जलिंधरी को [यहां अजहत्स्वार्था लक्षणा से जलिंधरी के पति का ग्रहण है] कैद करने की इच्छा है तो इसमें मेरा पक्ष नहीं है ॥ १५ ॥ केशवराम नामक मेरा कोतवाल भी उस सेना के साथ जावेगा सो वहां के लोकों को लीला (सहज) से जीत कर निकाल देवेगा इस में कोई आश्चर्य नहीं है॥१६॥ यह सुनकर राणा ने शत्रु भाव को प्राप्त होकर उस प्रधान अमरचन्द को चार हजार सेना के साथ जलिंधरी भेजा ॥ १७ ॥ अरिसिंह की कार्यसिद्धि के अर्थ भेजाहुआ वह कोतवाल भी शीघ्र गया और जलिंधरी के गढ में रहने वाले मनुष्यों को निकाल कर गढ देदिया ॥ १८ ॥ और राणाउतों को प्रतिष्ठा के साथ निकाल कर स्त्रियों सहित बुन्दी के देश में प्रवेश कराया पीछे राजा अजितसिंह से बिना पूछे ही, राणा शंकरगढ की भूमि से गया ॥१९॥ फिर मार्ग में आये हुए खैरूणा नामक ग्राम को जलाकर वह राणा अमरगढ की भूमि में गया, इस बात को जानकर क्रोध में हुए बुन्दीपति को सब (उमराव और सचिवों) ने कहा कि जहां राणा गया है ॥ २० ॥ वहां हम लोगों

॥ उपजातिः ॥

गंतव्यमस्माभिरपीति वाक्यं निराकृतं भूपतिनाऽतु मेति ॥
न स्मः कदैवाऽनुचरास्तदीयाः पृष्ट्वागतं नापि कुतोऽनुसारः ॥२१॥
योग्योऽस्मदीयो भवतीति वाचं ब्रुवन्नपीयाय भृशोक्त एभिः ॥
पातेन तत्राऽमरदुर्गभूमिं स्थितं समीपेऽमरचंद्रनाम्नः ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजित सिंहचरित्रे राणाबुन्दीन्द्रशिविरागमनरावराट्तद्देहवसुधानीद्वयो २ त्तारणसुंगध १ ताम्बूल २ गज १ बाजि २ वस्त्र३ भूषा४ऽऽदिनिवेदनप्राप्तस्वपरस्त्पप्रेषितदूतराणावेघम १ शंकरगढा २ऽमरगढजालिंघरीशाऽदिनिग्रहणाऽर्थकथनहड्डेंद्रतदनूरीकरणजालिंघरीविध्वंसनाऽबोधितबुंदीशराणाऽमरगढगमनस्वसुभटसचिवनितांतोक्तरावराट्तदनुकरणं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥

आदितः ॥३४७॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ उपजातिः ॥

को भी चलना चाहिये, इन वचनों का राजा अजितसिंह ने निषेध किया कि हम उनके कभी अनुचर (नौकर) नहीं हैं जो वे तो विना पूछे ही गये और हम उनके साथ लगे रहे ॥ २१ ॥ यह बात हमारे योग्य नहीं है, ऐसे वचन बोलता हुआ उन उमराव और सचिवों के अत्यन्त कहने से तहां अमरगढ की भूमि में अमरचन्द के पास ठहरा ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, राणा का बुंदीपति के डेरे आना और रावराजा का [राणा] के शरीर पर दो धन की थैलियों का नोछावर करना२ इत्र, पान, हाथी, घोड़े, वस्त्र, भूषण आदि नजर करने१ और राणा का अपने डेरे आकर अपना दूत भेजकर बेघम, शंकरगढ, अमरगढ, जालिंघरी के पति आदि को पकड़ने के अर्थ कहलाना और हाडा के पति का उसको अस्वीकार करना ३ जालिंघरी का नाश करके बुन्दी के पति को बिना जतलाये राणा का अमरगढ जाना३ अपने उमराव और सचिवों के अत्यन्त कहने से उनके सदृश करने[अमरगढजाने]का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥७॥ और आदि से तीनसौ सैंतालीस३४७ मयूख हुए ॥

अत्रापि यातोऽमरचंद्रशर्मा पुरो नृपस्याऽस्य तथाऽप्यतुष्टः ॥
दृष्ट्वैवमाशु प्रजगाद बुंदीपतिर्मया गम्यत अद्य बुंदी ॥ १ ॥
श्रुत्वेतिभूपोऽप्यमरेंदुना द्रागवीवदत्प्रेषित अद्य दूतः ॥
यदुच्यते तेन विधाय कार्यं तद्गम्यतां स्वं नगरं यथेच्छम् ॥२
ततो गतौ स्वस्वनिकेतनं तौ संप्रैषयद्दूतमथोऽरिसिंहः ॥
उक्तं च तेन स्फुटमेत्य भूपं निवेद्यतां विल्हटाख्य आशु ॥ ३ ॥
ग्रामोऽस्मदीयस्तत एतु बुंदीं निशम्य धीरोऽजितसिंह इत्थम् ॥
अलीलपत्तत्र तु दुर्गमेकं कृतं मया चौरनिरोधनाय ॥ ४ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

तद्वप्रदेशे स्वशयान्मयाऽपि क्षिप्ता शिलाऽयासभृता प्रसह्य ॥
तस्मात्क्षमध्वं बलचौरसंघाद्देशे वयं वोऽवनमाचरामः ॥ ५ ॥
ग्रामोऽपरस्तद्द्विगुणो यथेच्छं संगृह्यतां वा नियमो विधेयः ॥
एतावतो वित्तसमुच्चयस्य प्रत्यब्दमस्ति ग्रहणेन तुष्टिः ॥ ६ ॥

॥ उपजातिः ॥

श्रुत्वेति न स्वीकृत एषु पक्षो राणाऽरिसिंहेन कदाऽपि कोऽपि॥

यहां अमरगढ में भी अमरचन्द शर्मा इस राजा अजितसिंह के सामने गया तोभी इसको देखते ही अप्रसन्न होकर बुन्दी के पति ने कहा कि मैं आज ही बुन्दी जाता हूँ ॥ १ ॥ यह सुनकर महाराणा ने भी अमरचन्द्र द्वारा शीघ्र ही कहलाया कि आज दूत भेजा है सो वह जो कहै उस कार्य को करके पीछे यथेच्छ अपने नगर को जाओ ॥ २ ॥ तिसपीछे दोनों अपने डेरे में गये तब अरिसिंहने दूत भेजा उससे राजा ने स्पष्ट कहा कि हमारे पीलहटा नामक ग्राम शीघ्र नजर करो तब बुन्दी जाओ, यह सुनकर धीर अजितसिंह ने कहा कि यहां पर तो मैंने चोरों को रोकने के अर्थ किला बनवाया है ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ इस देश में दुष्ट चोरों का समूह होने के कारण मैंने इसके कोट की नीम में बड़े परिश्रम और हठ के साथ अपने हाथ से पत्थर डाले हैं इस कारण से क्षमा करो हम आपकी प्रीति चाहनेवाले हैं ॥ ५ ॥ इस से द्विगुण[दुगना] दूसरा ग्राम आपकी इच्छा होवे सो लेवें वा कोई ऐसा नियम कर लेवें कि प्रतिवर्ष इतने रुपये लेने से आप प्रसन्न होवेंगे ॥ ६ ॥ यह सुनकर राणा अरि

ऊक्तं च नास्मत्कथनेन यर्हि प्रदीयते स्वन्धिभिरात्तशस्त्रैः ॥ ७ ॥
निवेद्यतां संवसथः स एवेत्येवं वचो जातविवृद्धमन्युः ॥
श्रीरावराजाऽजितसिंहवर्मा तदा बभूव प्रलयाऽर्कचण्डः ॥ ८ ॥
ततश्च तद्वत्सर १८२९ एव चैत्राऽसिते दले पूर्वश्दिनेऽवशिष्टे ॥
घटीत्रये३ घोटसुखाऽनुभूत्यै बहिर्जगामोद्धतदर्पराणाः ॥ ९ ॥
अर्वाधिरूढश्चहुवाणभूपोऽप्यगाच्च तत्रैव महेन्द्रकल्पः ॥
हत्वा शशौ द्वौर स्वबलेन युक्तौ ताराणगैश्चन्द्रमसाविवान्यौ ॥ १० ॥
सुरैः सुरेशाविव शुद्धसत्वौ समुद्यता आगमनाय सद्म ॥
तथाऽऽहवेच्छू अमलायताक्षौ यथाऽऽगतौ दिग्विजयाय सज्जौ ॥

॥ मालिनी ॥

हतदिनपतिकान्त्योः सङ्गमोऽसम्भविष्णु
स्तरणिज इव लोकेऽपूर्वजन्येकहेतुः ॥
अपिच पदकृतोऽपि भ्रान्तिकृत्पण्डितानां

सिंह ने इनमें से एक भी बात को स्वीकार नहीं की और कहा कि यदि हमारे कहने से नहीं देते हो तो उस गाम को शस्त्रधारी क्षत्रियों से देना, इन वचनों से बडे क्रोध में आया हुआ रावराजा अजितसिंह प्रलय के प्रचण्ड सूर्य के समान हुआ ॥ ७ ॥ ८ ॥ जिस पीछे उसी सम्वत् १८२९ में चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन दो पहर में (मध्यान्ह में) तीन घड़ी दिन बाकी रहे घमंड के साथ राणा घुड़दौड़ करने को बाहर गये ॥ ९ ॥ घोड़े पर चढ़कर इन्द्र के समान रावराजा भी वहीं गया वहां दो खरगोशों को मारकर अपनी अपनी सेना के साथ जैसे तारागण के साथ चन्द्रमा होवे तैसे ॥ १० ॥ जैसे देवताओं के साथ इन्द्र होवे तैसे, निर्मल बड़े नेत्रोंवाले, दिग्विजय के अर्थ तैयार होवे तैसे युद्ध की इच्छावाले दोनों राजा डेरे आने को तैयार थे ॥ ११ ॥ हत की है सूर्य की कान्ति जिन्होंने उन दोनों का संगम असंभव वाला है, यमराज की भांति लोकों में अपूर्वता का एक कारण है, देखो पदों में संगम किया है सो भी पण्डितों को भ्रांति करनेवाला है, क्योंकि भू धातु से इष्णुच् प्रत्यय वेद में होता है सो यहां लोक में किया है यही भ्रांति करनेवाला है "कौमुदी के कर्ता भी इसके समाधान में 'निरंकुशाः कवयः' यही लिखते हैं" निश्चय ही

मृगपतिरपि सङ्गादत्र यातो मुधैकः ॥ १२ ॥
भवति विपुलताऽतो ह्यर्थसङ्कल्पनातो
विविधबुधमनस्सु प्रत्ययानां तथाहि ॥
तदुभय २ नृपतिभ्यां क्षिप्तदेशान्तरित्वे
व्यवहृत इह बोध्ये द्वन्द्वलाभः प्रतिष्ठाम् ॥ १३ ॥
इतिमतिशतकारी तत्त्वबोधैकहारी
सुरपुरपटुनारीकामनासम्प्रचारी ॥
सकलसकलधारी स्वविहारोपकारी
समजनि जनिताऽरिव्रातनिःशेषकारी ॥ १४ ॥
अवददमलबुद्धिर्बुन्द्यधीशो महात्मा
भवितरि दिन एता बोभविष्याहं तु ॥
गमनमिह विधेयं तथ्यमाज्ञाप्य राज
न्निति विविधवचांसि प्रश्रुतान्यश्रुतानि ॥ १५ ॥
नरपतिररिसिंहः कारयामास नैवं

अजितसिंह रूपसिंह के साथ से अरिसिंह अकेला वृथा आया ॥१२॥ जैसे पण्डितों के मन में विविध अर्थ की कल्पना से प्रत्ययों की विपुलता होती है, तैसे ही इसके अर्थ की कल्पना से विपुलता होती है. बोध्य (जनाने योग्य) को व्यवहार में लाने से दोनों का लाभ और प्रतिष्ठा होती है, जिसको दोनों राजाओं ने दूसरे देश में फेंक दिया है॥ १३ ॥ इसप्रकार सैकड़ों मति (बुद्धि) करनेवाला, तत्त्वबोध (ज्ञान) का हरण करनेवाला, स्वर्ग की चतुर स्त्रियों की कामना का प्रचार करनेवाला, सम्पूर्ण रीति से, सगुण शिव को धारण करनेवाला, तथा सब कलाओं से युक्त सबको धारण करनेवाला, जो जन्म से ही शत्रु हैं उनके समूह को निरशेष (नाश) करनेवाला ॥ १४ ॥ निर्मल बुद्धिवाला महात्मा बुन्दी का पति बोला कि मैं तो आगामि दिन[कल] को जानेवाला हूं सो हे महाराज यहां पर ठीक आज्ञा देकर जाओ इत्यादि अनेक वचनों को सुने अनसुने किये और न दोनों नेत्रों से राजा अजितसिंह को देखा. तिस पीछे राणा के किसी सेवक वर्ग ने कठोर वचन कहा कि आगामि दिनमें तुम्हारा जाना कैसे होवेगा ॥ १५ ॥

न च नयनयुगेनाऽदर्शि भूपोऽपि तेन ॥
तदनु परुषवाचं क्षत्रियः कश्चिदूचे,
कथमुत गमनं स्यादागतोऽह्नि त्वदीयम् ॥ १६ ॥
उदयपुरनरेशो निर्बलो बुध्यते किं
तदनु च रणशीलाः सैन्धिनः किं न दृष्टाः ॥
नयनपथमुपेतैर्दुस्सहं भीरुहड्ड
त्वयि सति यवनैस्तैरावृतेऽधोदुकूले ॥ १७ ॥
समलशमलमुक्तिं चक्रिरिष्यस्यपि द्रा-
गिति कटुतरवाग्भिस्तर्जयन्तं स्वकीयम् ॥
नहि नहि वचनानां पात्रमेषां धराधा-
डिति किमपि स नोचेऽद्धाऽरिसिंहश्च शृण्वन् ॥ १८ ॥
निजनिलयमुपेतं मुक्तपन्थानमारा-
दुदयपुरनरेशं प्राऽवददूबुन्द्यधीशः ॥
भवति जिगमिषाऽतः श्रीमता मुक्तिमिच्छ-
स्थित इह पुर एवाऽस्मीति चाऽन्यच्चकार ॥ १९ ॥
यवननयप्रवृत्तो यः शिरःस्पर्शरूपो
मुजरविति करेण क्रीयतेऽकारि सोऽपि ॥

॥ १६ ॥ क्या उदयपुर के राजा को तुम निर्बल जानते हो, क्या इस के स्वामिधर्मी सेवक सिन्धियों को नहीं देखे हैं, जिनको देखने से ही भय लगे ऐसे उन यवनों से जब घिराजावेगा तब हे कायर हाडा तू शीघ्र धोवती में मूत्र सहित विष्टा कर देवेगा, इत्यादि बहुत ही कटु वचनों से डरानेवाले अपने मनुष्य को, उस अरिसिंह ने साक्षात् सुन कर भी यह नहीं कहा कि यह राजा ऐसे वचनों का पात्र नहीं है ॥ १७ ॥ १८ ॥ अपने डेरे जाने के अर्थ मार्ग को छोडनेवाले उदयपुर के राणा से बुन्दी के पति ने समीप होकर कहा कि मेरी जाने की इच्छा है इसी कारण श्रीमानों की आज्ञा चाहनेवाला मैं आगे को खड़ा हूं, यह कह कर दूसरा काम यह किया ॥ १९ ॥ जो यवनों की नीति से प्रवृत्त हुआ है और मस्तक के हाथ लगा कर किया जाता है जिसको मुजरा

तदुपरि नहि दृष्ट्याऽदर्शि पृष्ठं विधाय
प्रचलितमतिवेगेनाऽरिसिंहेन मत्तम् ॥ २० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे राणाप्रासभ्पधिल्लहटामार्गणरावराट्तद्विडंवीतरदेयीकरणभूपद्वय २ विरोधीभावमजनबहिर्बाजिविनोदनसम्भरेशस्वप्रस्थाननिमित्तशिष्टाचारश्रावणराणास्वदृष्टिपरिवर्त्तनतदेकतमारुन्तुदाऽऽयुधिकभृत्यविप्रलपनश्रुततद्रावराट्क्रुद्धीभवनमष्टमो ८ मयूखः ॥८॥
आदितः॥३४८॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥
॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

ततः क्रोधसंज्वालिताक्षो महात्मा बभूवाऽजितो भूपतिर्भूतकम्पः ॥
यथा भीमसेनोऽभवद्धार्त्तराष्ट्रेऽनुवेन्द्रः प्रभुर्वृत्रदैतेय आदौ ॥ १ ॥
यथा यत्तपत्ते ध्रुवः पर्शुरामो यथा हैहयेन्द्रे लसद्दोस्सहस्रे ॥
यथा वासुदेवो हरिर्दामघोषौ यथा चण्डिका दैत्यसम्म्राजि शुम्भे॥२॥

कहते हैं, वह मुजरा भी किया जिस पर भी दृष्टि नहीं दी और वह अरिसिंह रावराजा को पीठ देकर मत्त के समान चला ॥ २० ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, अजितसिंहके चारित्र में, राणा का हठ पूर्वक धीलहटा नामक ग्राम मांगना और रावराजा का उस के सदृश (बराबरी) दूसरा ग्राम देना स्वीकार करना १ दोनों राजाओं का विरोध भावको प्राप्त होना और बाहर घोड़ों की क्रीड़ा करना २ रावराजा का अपने घर (बुन्दी) जाने के निमित्त शिष्टाचार सुनाना और राजा का अपनी दृष्टि को फेरना ३ एक शस्त्रधारी नौकर का मर्म बेधन करनेवाले विरोध के वचन बोलना, और उनके सुनने से रावराजा के क्रोधित होने का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥८॥ और आदि से तीन सौ अड़तालीस ३४८ मयूख हुए ॥

तब तो क्रोध से प्रज्वलित नेत्रोंवाला महात्मा राजा अजितसिंह जीवों को कंपानेवाला हुआ, जैसे दुर्योधन पर भीमसेन, आदिदैत्य वृत्रासुर पर इन्द्र, सहस्रबाहु पर परशुराम, दमघोष के पुत्र (शिशुपाल) पर वसुदेव के पुत्र

तथाशक्तिहेतिः पुरोऽश्वं प्रसार्याऽरिसिंहाऽभिवक्त्रं चचालाथ वीरः॥
स्वयं शक्तिघातेन युद्धप्रगल्भो भुवौ पातयामास निष्प्राणराणाम् ३
नराकारमेघादिवोद्दीप्तशम्पा ततश्चैव वा चण्डधाम्नो मरीचिः ॥
यथा वन्हिकुण्डाच्च काली कराला तथा निःसृता शक्तिरुद्भिद्य राणां४
ततः खड्गमाकृष्य बुन्दीनरेन्द्रे जिहिर्षौ शिरोऽरिप्रतीहार एकः॥
भुजे साङ्गदे प्राऽहरत्स्वर्णयष्ट्या कराभ्यां बलात्कारतो रावराजः॥
तदाघातभङ्गस्य दोऽसिस्तदीयश्च्युतोऽध्वाछिनन्नाऽरिसिंहोत्तमाङ्गम् ५
तथा वीक्ष्य तद्भाक्तरामिः कुमारोऽहिनत्पात्यमानं कृपाणेन राणाम्

॥ आर्या ॥

एवं जाते राणाजयसिंहसुतप्रतापसिंहस्य ॥
पौत्रो दौलतसिंह१पुत्रो यः श्यामसिंहस्य ॥ ७ ॥

॥ गीतिः ॥

(श्रीकृष्ण) और दैत्यराज शुंभ पर चण्डिका ॥२॥ तैसे शक्ति (बरछी) शस्त्रवाला प्रबल वीर युद्ध में निपुण राजा अजितसिंह राणा अरिसिंह के सुख के आगे घोड़े को बढा कर अरिसिंह के सामने चला और बरछी की घात से प्राण रहित राणा को भूमि पर पटका ॥ ३ ॥ वह शक्ति (बरछी) जैसे मनुष्य के शरीर रूपी मेघ से बिजुली, प्रचंड सूर्य से किरण और अग्निकुण्ड से कराल ज्वाला निकले तैसे राणा को छेद कर निकली ॥ ४ ॥ फिर खड्ग निकाल कर बुन्दी का राजा, राणा का मस्तक काटना चाहता था, इतने में राणा के एक द्वारपाल छड़ीदार ने दोनों हाथों से बल पूर्वक सोने की[सुवर्ण की] छड़ी रावराजा के भुजबन्ध सहित हाथ (*)पर मारी ॥ ५ ॥ उस छड़ी की चोट से तरवार हाथ से छूट गई और राणा का मस्तक नहीं कटा, यह देखकर भाक्तिराम के कुमर सन्मानसिंह ने पड़े हुए राणा पर तरवार मारी ॥ ६ ॥ ऐसा होने पर राणा जयसिंह के पुत्र प्रतापसिंह का पोता और श्यामसिंह का पुत्र महाराज पदवी

(*)मेवाड़ के इतिहास में लिखा है कि राणा अरिसिंह के बरछी मारकर रावराजा अजितसिंह पीछा फिरा उस समय महाराणा के छड़ीदार ने सोने की छड़ी रावराजा के ललाट पर मारी जिससे रावराजा अचेत होगया और घोड़े के हाने पर मस्तक लगगया उस मूर्छित दशा में रावराजा को घोड़ा ले भगा और इसी चोट के कारण थोड़े ही समय पीछे रावराजा का देहांत होगया.

स महाराजोट्टङ्की तुमुलं युध्वाऽसिभिर्हभूत्तिलशः ॥
शम्भूसिंहश्च तथा सनवाडेशोऽत्र भारताऽवरजः ॥८॥
एतौ२ नाकिनिकेतं प्राप्तौ राणाउतौ समं भर्त्रा ॥
वैश्यश्छोगालालोऽनुजजः सचिवस्य कृष्णगढभर्त्तुः ॥९॥
एतेषु हतेषु त्रिषु राणां त्यक्त्वा प्रदुद्रुवुश्चाऽन्ये ॥
राणाप्राणाऽपह्नीं शक्तिं१ स्वामुज्जहार बुन्दीशः ॥ १० ॥
अर्वंतं२ च तदीयं नीत्वाऽगच्छत्स्वकीयशिबिरभुवम् ॥
श्रुत्वैतदमरचन्द्रो नेतुं कुणपानियाय सैन्ययुतः ॥११॥
बुन्दीपृज्जम्बूरैर्न्यवर्त्तत सप्टत्सनाढ्यविप्रं तम् ॥
तन्मारणकृतबुद्धिः पुनर्जगामाऽजितोभिमुखमेषाम् ॥१२॥
द्वाभ्यां२ प्रसह्य रुद्धो दत्वा नृपभावसिंहशपथाऽऽदि ॥
सीलोर१धोवडेड्भ्यां२ भगवन्त१भवानिसिंह२ नामभ्याम्॥१३
प्रस्थापितश्च बुन्दीमेताभ्यां प्रसभमजितसिंहनृपः ॥
सम्प्राप्तः स निशीथे स्वपुरि ससैन्योऽरिसिंहमाहत्य॥ १४ ॥

को धारण करनेवाला दौलतसिंह खड्ग से घोर युद्ध करके तिल तिल प्रमाण कटा, तैसे ही भारतसिंह का छोटा भाई सनवाड़ का पति शंभूसिंह भी कटा ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ये दोनों राणावत अपने स्वामी के साथ स्वर्ग स्थान को पहुँचे और कृष्णगढ के मन्त्रि के छोटे भाई का पुत्र वैश्य छोगालाल भी मारागया ॥ ९ ॥ इन तीनों के मारेजाने पर और सब राणा को छोड़कर भागगये, तब बुन्दी के पति ने राणा के प्राण लेनेवाली अपनी बरछी को निकाली ॥ १० ॥ और राणा के घोड़े को लेकर अपने डेरों की भूमि में गया, यह सुनकर अमरचन्द सेना सहित उन मृतक शरीरों को लेने को आया ॥ ११ ॥ तब बुन्दी की सेना के जम्बूरों से सेना सहित उस सनाढ्य ब्राह्मण को रोका, और उसको मारने की बुद्धि करके अजितसिंह फिर सामने गया ॥ १२ ॥ जिसको सीलोर के पति भगवन्तसिंह और धोवड़ा के पति भवानीसिंह, इन दोनों ने राजा भावसिंह के सौगन आदि देकर हठ से रोका और इन्हीं दोनों ने बलात्कार पूर्वक उसे बुन्दी पहुँचाया, इसप्रकार वह राजा अजितसिंह राणा अरिसिंह को मारकर सेना सहित आधी रात्रि के समय बुन्दी प्राप्त हुआ

तौ२ बुन्दीश्वरसुभटौ स्थित्वा तत्रैव वैभवं स्वीयम् ॥
नेयं नेयं नेत्र्यं यातौ त्यक्त्वा पटालयाऽद्यन्यत् ॥१५॥
ते सिन्धिनस्तु यवना गताः क्वचित्तद्दिने समाजोत्काः ॥
सुभटाश्च पूर्वमेव च्छत्रबालकपक्षपातिनो भिन्नाः ॥ १६ ॥
अतएवाऽमरचन्द्रो बुन्दीसैन्ये गते समेत्य निशि ॥
अरिसिंहवपुरधिष्ठाप्यनृयानं स्वं रुदन् ययौ शिबिरम्॥१७॥
हड्डेश्वरशिबिराद्धं विलुण्ट्य दूष्याऽऽदिकां तदवशिष्टाम् ॥
अरिसिंहतनुं तत्पटसदने संस्थाप्य शोकमारेभे ॥ १८ ॥
राणाः सप्त७भुजिष्याः सत्यो मनभावनाऽदयस्तत्र ॥
तौर्यविनोदनवत्योऽतिष्ठन् रात्रौ सजीवमिव परितः ॥१९॥
प्रातश्चित्यारोहे कुणपं मनभावनेदमुक्तवती ॥
यदि निजकृतफलमेतत्तदस्तु यदि चान्यथा प्रभो तर्हि ।२०।
त्वां वयमिव विलपन्त्यो भस्मीभूता भवन्तु तन्नार्यः ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ वे दोनों बुन्दीपति के उमराव वहीं ठहर कर, लेने योग्य अपना वैभव लेकर, डेरे आदि अन्य वस्तुओं को छोडकर आये ॥ १५ ॥ वे सिन्धी यवन तो उस दिन सभा से इष्टलाभ के लिये कालक्षेप करने को(नमाज पढने को) कहीं चले गये थे, और छत्रपाल (रत्नसिंह) के पक्ष के उमराव पहिले से ही जुदे थे ॥१६॥ इस कारण बुन्दी की सेना के चले जाने पर अमरचन्द रात्रि में वहां जाकर अरिसिंह के शरीर को पालखी में रखकर स्वयं रोता हुआ डेरे में गया ॥ १७ ॥ और रावराजा की डेरे आदि समृद्धि को लूटकर अरिसिंह के शरीर को उस डेरे में रखकर शोक करने लगा ॥१८॥ वहां पर मनभावन को आदि लेकर राणा की सात पतिव्रता पासवान स्त्रियां, नाच गान करातीं हुईं जैसे राणा जीता होवे तैसे रात्रि में उस राणा को चारों ओर से घेरकर बैठी रहीं ॥ १९ ॥ प्रातःकाल में राणा के शरीर को चिता पर रखते समय मनभावन ने कहा कि, हे स्वामी यदि अपनी ही करनी का यह फल है तब तो ठीक ही है, नहीं तो जैसे हम आप को रोती हैं तैसे ही हे प्राणनाथ! जिसने विना अपराध आप की यह दशा की है उसकी स्त्रियां भी ऐसे ही

येनैवेदृगवस्था प्राणेश्वर ते ह्यनागसो विहिता ॥ २१ ॥
मनभावनेत्यमुक्त्वाऽऽरुरोह चितिकां षडाढ्ऽऽलिजनसहिता॥
सह जग्मुरनुप्रेष्ठं साध्व्यः साल्हादमुच्चगायन्त्यः ॥२२॥
नवनेत्रेभकु१८२९सङ्ख्ये शकवर्षे विक्रमाद्धराभर्त्तुः ॥
प्रतिपदि१ माधवशुक्ले मुहूर्त२शेषेऽह्नि हड्डपतिनैवम् ॥२३॥
शक्त्या हतोऽरिसिंहस्तदश्वमारुह्य बुन्दिकाऽगामि ॥
वैखानसेन पित्रा स भर्त्सितो नयविदाऽनुनीतश्च ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशाव-जितसिंहचरित्रे रावराड्राणाऽरिसिंहनिपातनतद्द्वास्थस्वबाहुयष्टिग्रहणभक्तरामिखड्गराणाभेदनवैश्यदौलतसिंह१ शम्भूसिंह२ मरणभृशभटोक्तसमात्तराणाहयधृतस्वशक्तिसम्भरेशबुन्द्यागमनभगवन्तसिंह१ भवानीसिंह २ नेपथ्यमवानयनभीर्वमरचन्द्रकुणपस्वशिबिरप्रापणभुजिष्यासप्तक ७ राणासहगमनं नवमो ९ मयूखः ॥ ९ ॥

विलाप करती हुई भस्म होओ ॥२०॥२१॥ मनभावन इसप्रकार कहकर छहों सखियों के साथ चिता पर चढ़ी. और वे सातों ही पतिव्रताएं हर्ष के साथ उच्चस्वर से गाती हुई अपनेपति के साथ गई ॥ २२ ॥ इस प्रकार विक्रम राजा के सम्वत् अठारह सौ उनतीस १८२९ के चैत्र कृष्ण एकम के दिन दो घड़ी दिन बाकी रहे, इस प्रकार राणा को बरछी से मारकर, राणा के घोड़े पर चढ़कर हाडों का पति बुन्दी आया और उस रावराजा को नीति के जानने वाले वानप्रस्थ पिता(उम्मेदसिंह)ने धमकाया और धीरज दिलाया ॥२३॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशिमें अजितसिंह के चरित्र में, रावराजा का राणा अरिसिंह को मारना और उनके द्वारपाल का अपने हाथ पर छड़ी को मारना १ भक्तराम के पुत्र का खड्ग से राणा को भेदन करना और एक वैश्य और दौलतसिंह व शंभूसिंह को मारना २ उमरावों के बहुत कहने से राणा के घोड़े को लेकर, अपनी बरछीको निकालकर चहुवाणों के पति का बुन्दी आना ३ भगवन्तसिंह और भवानीसिंह का लाने योग्य वैभव को लाना ३ कायर अमरचन्द का मृतक शरीर को अपने डेरे में लाना और सात पासवानों का राणा के साथ सती होने का नवमां ९मयूख समाप्त

आदितः॥३४९॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

सैन्ययुतोऽमरचन्द्रस्तार्तीयं३ कर्म भूपतेः कृत्वा ॥
गत्वोदयपुरमनुचितमेतादिति श्रावयांबभूवाऽसौ ॥१॥
कार्ष्णगढी तद्राइयासन्नप्रसवा तु मण्डिले दुर्गे ॥
गत्वा सुतं प्रसुषुवे माासद्वयरजीवितो मृतः सोपि ॥२॥
जननी तदाऽतिदुःखात्कृष्णगढं गतवती जनकवसतिम् ॥
द्वे२राइयारवेकादश११सह जग्मुरुदयपुरेऽपि च भुजिष्याः॥३॥
अन्या चैका१ महिषी पितृभवने श्रूयतां कथा तस्याः ॥
राजसमुद्रसमीपं मोह्याख्ये भट्टियादवग्रामे ॥ ४ ॥
आऽमरसिंहाद्राणाः परिणीताः सर्व एव भट्टयाणीः ॥
ताः सर्वाः सह जग्मुर्निजपतिमङ्के निवेश्य पारिवाज्य ॥ ५ ॥
तत्रत्यभट्टितनयामत एव विवाह्य सोऽरिसिंहोऽपि ॥
न्यस्याऽत्रैव नवोढामित आयातो हतोऽजितेनैवम् ॥ ६ ॥

हुआ ॥ ६ और आदि से तीन सौ उनचास ३४९ मयूख हुए ॥
अमरचन्द, राणा के तीसरे दिन का कृत्य करके सेना सहित उदयपुर गया और उसने यह अनुचित सुनाया ॥१॥ उस राणा अरिसिंह की कृष्णगढवाली राणी समीप ही बालक जननेवाली (पूर्णगर्भा)थी जिसने मांडलगढ में जाकर पुत्र जना सो दो मास का होकर मरगया ॥ २ ॥ तब अत्यन्त दुःख से उस बालक की माता अपने पिता के घर कृष्णगढ गई, और उदयपुर में भी दो राणियां और ग्यारह पासवान स्त्रियें सती हुईं ॥ ३ ॥ एक राणी पिता के घर में सती हुई जिसकी कथा सुनो कि राजसमुद्र के समीप मोही नामक ग्राम भाटी शाखा के यादव क्षत्रियों का है ॥ ४ ॥ वहां राणा अमरसिंह से लेकर सभी राणा वहांके भाटियों की पुत्रियें व्याहे थे सो सभी अपने अपने पतियों के साथ सतियां हुईं ॥ ५ ॥ इसीकारण से उस गामवाले भाटी की पुत्री के साथ यह राणा अरिसिंह भी विवाहा था सो विवाह करके उस नई दुलहन को वहीं छोडकर आया था और इसप्रकार अजितसिंह से मारागया

सा सह जगाम मोहग्राममवगतपतिमृत्युयादवी साध्वी ॥
निजकुलपरम्परायाा न निरस्ता सा तया कुरङ्गदृशा ॥ ७ ॥
॥ मत्तमयूरम् ॥
आगत्येत्थं सम्भरराजः स्वनिकेतं यद्यन्नीतं येन जनेनाऽरिहरिस्वम्
चेतोवेगं तस्य विना पट्टतुरंगं तस्मै तस्मै तत्तददाद्द्रव्यमुदारः ॥ ८ ॥
भेदोपायैर्दानविमिश्रैरथ कोटाद्वाराऽध्यचान्क्ष्माऽमितलोभी परिभिद्य
युद्धप्राक्तद्देशजिगीषोः पुनरासीद्बुन्दीभर्त्तू रोगविशेषो विस्फोटः ॥९॥
शान्तेऽप्यस्मिन्दैववशाद्दायुरणिम्ना भागेऽतीते पञ्च५मुहूर्त्ते दिवसस्य
पूर्णा१५८८ख्यायां का०यद्तिथौ माधवमासि त्यक्त्वा देहं स्वर्गमि ॥
यायाऽजितसिंहः ॥ १० ॥
श्रुत्वा राज्ञी तत्त्वथ शृङ्गारकुमारी१ शृंगाराढ्या द्रंगझलायाऽधिपपुत्री
दौहित्री चोम्मेदहरेः साह्निपुरेशस्याऽन्यातन्वीभूपभुजिष्याशशिशोभा

या ॥ ६ ॥ वह पतिव्रता यादवी अपने पति की मृत्यु सुनकर मोही नामक ग्राम में सती हुई ऐसे उस मृगनयनी ने अपने कुल की परम्परा को नहीं छोडी ॥ ७ ॥ इसप्रकार रावराजा ने अपने स्थान पर आकर, जिस जिस मनुष्य ने अरिसिंह का जो जो धन लिया था, उस उस मनुष्य को, मन के वेगवाले एक खासा घोड़े के सिवाय, वह वह द्रव्य उस उदार ने दे दिया ॥ ८ ॥ तिस पीछे पृथ्वी लेने का बडा भारी लोभी, अजितसिंह दान और भेद दोनों मिले हुए उपायों से कोटा के द्वारपालों को अपने में मिलाकर उस देश को जीतना चाहता था कि युद्ध से पहिले बुन्दी के पति अजितसिंह को शीतला (चेचक) का रोग हुआ ॥ ९ ॥ वह रोग भी शान्त होगया था परन्तु प्रारब्ध वश छोटी अवस्था में ही वैशाख शुक्ल पूर्णिमा शुक्र वार के दिन दस घड़ी दिन चढे अजितसिंह शरीर को छोडकर (‡)स्वर्ग गया ॥ १० ॥ तिसको सुनकर झलाय के पति की पुत्री और शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह की दोहिती शृंगार

(‡)इसवंशभास्कर में रावराजा की मृत्यु चेचक (शीतला) के रोग से होना लिखा है इसमें हम नहीं कह सकते कि किसका लिखना सत्य है क्योंकि मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास और वंशभास्कर के कर्त्ता सूर्यमल्ल दोनों ही पूर्ण सत्यवक्ता थे जिनमें मिथ्यात्व का दोष किसी पर नहीं लगा सकते परन्तु निश्चय नहीं कि इस बात का सत्य इतिहास किसको मिला है ॥

ठपोमाऽग्नीभेन्दु१८३० प्रमिते विक्रमशाके पूर्णा१५शौक्रेद६ऽह्नन्पव
शिष्टेऽन्तिमयामे ॥

चित्यारूढे कीलकराले हविराशे हुत्वा देहं द्वे हि सहायान्निजभर्ता
अनुष्टुब्युग्मविपुला ॥

पद्भ्यां गत्वाऽर्द्धं½गव्यूतिं केदारेश्वरसन्निधौ ॥
करवीरं महाघोरं ते २ भर्त्रा सह जग्मतुः ॥१३॥
तयोस्तु सहगाम्निन्योर्हाहाकारो महानभूत् ॥
अकाण्डमरणे राज्ञो रुरुदुः स्थावरा अपि ॥ १४ ॥
श्रीजित्तत्र महासत्त्वः सर्वा आश्वासयत्तदा ॥
प्रकृती रावराजास्ता निर्नाथा बालभूभुजः ॥१५ ॥
मनागुत्साहमानीताः श्रीजिता संविदा स्वया ॥
अभिमन्यौ मृते सेना यथा स्वा धर्मभूभृता ॥ १६ ॥

युक्त शृंगारकुमारी नामक राणी और दूसरी चन्द्रशोभा नामक पासवान स्त्रियें दोनों अपने पति अजितसिंह के साथ, विक्रम के संवत् अठारह सौ तीस १८३० में वैशाख सुदि पूर्णिमा शुक्रवार के दिन एक पहर दिन बाकी रहे चिता पर चढके अग्नि की कराल ज्वाला में अपने शरीरों को होम करके सती हुई ॥११॥ १२ ॥ वे दोनों बुन्दी से एक कोस पर केदारेश्वर के समीप घोर श्मशान तक पति के साथ पैदल गईं ॥ १३ ॥ इस प्रकार राजा अजितसिंह के अचानक और बिना अवसर के मरने से और उन दोनों के सती होने पर बडा भारी हाहाकार हुआ और स्थावर पदार्थ भी रोये ॥१४॥ तब वहां पर राज्य की संपूर्ण प्रकृति (राज्य के अंग) को बडे पराक्रमी श्रीजित (उम्मेदसिंह) ने विश्वास दिया और उस बालक राजा (विष्णुसिंह) की उस अनाथ प्रकृति को अपने ज्ञान से थोड़ा सा उत्साह दिया जैसे अभिमन्यु के मरने पर अपनी सेना को युधिष्ठिर ने, वृषसेन के मरने पर कर्ण ने, लक्ष्मण के मरने पर कुरुपति (दुर्योधन) ने, इन्द्रजित् और कुंभकर्ण के मरने पर रावण ने, त्रिशिरा के मरने पर त्वष्टा ने, विरोचन के मरने पर प्रल्हाद ने, चित्रांगद के मरने पर धनुषधारी भीष्म ने आश्वासन किया तैसे वानप्रस्थ धर्म साधनेवाले श्रीजित् ने सम्पूर्ण परिजनों का आश्वासन किया और वे सब लोग राजा विष्णुसिंह की वृद्धि की इच्छा करनेवाले नगर में आये ॥ १५ ॥ १६ ॥

कर्णेन वृषसेनेऽस्ते कुरुभर्त्तेव लक्ष्मणे ॥
दशास्येनेव वा ऽपस्वोरिंद्राजित्कुम्भकर्णयोः ॥ १७ ॥
त्वष्ट्रा त्रिशिरसि प्रेते प्रल्हादेन विरोचने॥
चित्राङ्गदे तथा पाण्डौ गाङ्गेयेनेव धन्विना ॥ १८ ॥
वैखानसेन विश्वस्ताः सर्वे परिजनाः पुरम् ॥
प्राविशन्विष्णुसिंहस्य क्ष्माभृतो वृद्धिमीप्सवः ॥ १९ ॥
एवं दैववशाद्राजन्स युष्माकं पितामहः ॥
एकविंशे२१ प्रविष्टेऽब्दे जन्मतो विग्रहं जहौ ॥२०॥

दिष्टायत्तत्वाद्धारणस्याप्यसूना-
मल्पायुष्कत्वादीशितुर्बुन्दिकायाः ॥
वोढुर्भूभारं सर्वमब्दद्वयाऽन्त-
र्नायुः स्थानादेर्निर्म्मितिः क्वापि जाता ॥ २१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे कृततृतीया३ ऽहकर्माऽमरचंद्रोदयपुरगमनप्रसूतमृतपुत्रा राणाभोगिनीकृष्णगढगमनतदितरभोगिन्येकादशको ११ दयपुराऽनलप्रविशनतदन्याभट्टयाणी १ पितृगृहज्वलनभस्मीभवनविस्फोट--

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ हे राजा रामसिंह ! इसप्रकार प्रारब्ध के वश से उस आपके पितामह (दादे) ने जन्म से इक्कीसवां वर्ष लगते ही शरीर छोड़ा ॥ २० ॥ प्राणों का धारण करना दैव (भाग्य) के आधीन होने से और सब भूमि के भार को उठानेवाले (अजितसिंह) के अल्पायु होने से इन दो वर्षों में स्थान आदि नहीं बने अर्थात् राज्याधिकार मिलने से दो वर्ष ही आयु रही जिसमें स्थान आदि का निर्माण नहीं हुआ ॥ २१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, तीसरे दिन का कार्य करके अमरचन्द्र का उदयपुर जाना१ मराहुआ पुत्रपैदा करनेवाली राणा अरिसिंह की छोटी राणी का कृष्णगढ जाना२ राणा अरिसिंह की अन्य ग्यारह स्त्रियों का उदयपुर में सती होना३ भटियानी का पिता के घर में सती होना ४ शीतला (चेचक) के रोग से रावराजा अजितसिंह का

कामयरावराङऽजितसिंहदेहत्यजनसभुजिष्याचन्द्रशोभाराजाउत्तिराज्ञीसहगमनश्रीजितसर्वसमाऽऽश्वासनं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥

आदितः ॥ ३५० ॥

समाप्तं चेदमजितसिंहचरित्रम् ॥

शरीर छोडना ५ पासवान चन्द्रशोभा सहित राजावती राणी का सती होना ६ श्रीजित का सब को आश्वासन करने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥१०॥ और अजितसिंह चरित्र समाप्त होकर आदि से तीन सौ पचास ३५० मयूख हुए ॥

इति अजितसिंहचरित्रं समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथविष्णुसिंह२००।२चरित्रम् ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह१९९।२ बपु तजत इम, हुव बुंदिय हाकार ॥
बिजय प्रपंच सु हुव बिफल, आयु नियति अनुसार ॥ १ ॥
जो कछु दिन पुनि जीवतो, पहु तो अवसर पाइ ॥
कोटादिक छिति निकटकी, लेतो स्वभुज लगाइ ॥ २ ॥
सु नृप उदधि सूरत्वको, सजुन बर्द्धक सोक ॥
सुक्र ६ वार बैसाख २ सित, पुरिमाम १५ गो परलोक॥३॥
अजितसिंह१९९।२के पट्ट अब, बिष्णुसिंह२००।२बय बाल॥
बैठायो श्रीजित१९८।४ बिदित, भाँवित बिधि भूपाल॥ ४ ॥
सक नभ गुन धृति१८३० सुक्रमैं, ससि२एकादसि११सीर ॥
बिष्णुसिंह२००।२ नव९पक्ख बय, बुंदी पँहु हुव बीर ॥५॥
पंच ५ घटिय मध्यान्ह पर, अधिक जात अभिसेक ॥
सक्किय निज कुलरीति१ सह, बिधि२ग्रह सुमह३ बिबेक॥६॥
प्रथम पुरोहित१व्यास२ गुरु३, इन्ह त्रिक३किय अभिसेक॥
वलि गुरु३।१किय उपदेस बिधि, कुसलानंद३।१हि एक।७।
तिम इन तीन३न किय तिलक, श्रीजित१।१स्वकर बहोरि
माधानी२।२।२६भगवंत१९१।१।२।५पुनि, किन्न तिलक बिधि जोरि८
चारन१ भट्टरन भेट किय, पहिलैं१ हय१।२ सिरूपाव २।३।४
भेट बहुरि सक्किय भटन, भनियत सो क्रम भाव ॥ ९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

---

१ भाग्य के अनुसार है ॥ १ ॥ २ समीप की भूमि ॥ २ ॥ ३ वीरता का समुद्र ॥ ३ ॥ ४ संस्कार विधि से॥४॥ ५ ज्येष्ठ मास, सोमवार ६ साढे चार मास की अवस्था में ७ बुन्दी का राजा हुआ ॥ ५ ॥ ८ श्रेष्ठ उत्सव॥ १ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

घोरे१ सिरुपाव२ करे उपदा तबहि तत्थ,
पहिलैं पितृव्यक बहादुर१९६।३।३ ओ सरदार१९९।४।४॥
पीछैं सिवासिंह५ पीछैं संग्रामादिसिंह पीछैं,
माधव१९३।२ पिनाती भगवंत७ रीति अनुसार ॥
इंद्रगढ८ बलवनि९ जज्जाउर१० आँतरदा११,
खेरा१२ धोवरा१३ के भये नजर बिधेयं वार ॥
कोटापति१४ हूके द्वै२ तुरंग सिरुपाव द्वै२ ही,
आये भये भेट पुनि औरहूँ बडो उपहार ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

किय उपदा सचिवादिकन, पुनि दम्म१ रु सिरुपाव२ ॥
अधसौध१ न इम सहि अंग, सौध२ न आन्यौं साव ॥११॥
व्याह१ पंजार२ नृप बिष्णु२००।२ के, भावी सब क्रम भाइ ॥
कहत इकट्ठे जे जुदे, ठाँठाँ संभव ठाइ ॥ १२ ॥
तहँ तिय१ अट्ठ८ खवासि२ त्रय३, संतति अट्ठ८ सुहात ॥
पंच५ रु सुत इक१ पुत्रिका, जहँ ए रानिन जात ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

नगरी बीकानैर भूप आनंद अंके भव ॥
संज्ञा करि गजसिंह१ धरत तहँ छत्र धराधव ॥
सुता तास सिसु सैंबय पद्मकुमरी२००।१ स नाम पहु ॥
व्याह्यो प्रथम१ बिबाह बितरि, धन१ पट१ भूखन३ बहु ॥
बालहि भई सु१ पुनि कालबस, बलि दूजी२ जहाँनि बरि॥

---

१ नजर २ काका ३ माधवसिंह के वंशवाला ४ उचित समय ५ सामग्री ॥ १० ॥ ६ नीचे के महलों में ७ पर्वत ऊपर के महलों में ८ बकरे को ॥ ११ ॥ ९ सन्तान १० आगे आनेवाले समय में ॥ १२ ॥ ११ इतने तो राणियों के हुए ॥ १३ ॥ १२ गोद लियाहुआ १३ नाम से १४ भूपति १५ विष्णुसिंह के समान अवस्थावाली १६ देकर

रानी बिदग्ध[1] आनी रमन[2] कमन[3] करौलिय किति करि१४

॥ रोला ॥

तुँर[4] समपाल तनूज पालमानिक्य[5] आदि२ पहु,
नगर करौलिय नाह ललित[6] ताकी कन्या लहु ॥
अमृतकुमरि२००।२ अभिधान[7] व्याह दूजे२ नृप व्याहिय,
अतुल त्याग बसु अप्पि अतुल जस रस अवगाहिय ॥१५॥

॥ घनाक्षरी ॥

कोटापति मंत्री झल्ल[8] जालमें सुता सु तीजी३,
नानता नगर व्याही अजब कुमारि२००।३ नाम ॥
सोपुर नगर गोर भूपति किसोर सुता,
सुरहि कुमारि२००।४ चोथी४ रानी बरी अभिराम ॥
रानी भटियानी लाडकुमरि२००।५ मँगाइ डोला,
पंचमी५ बिवाही बीर भोज सुता बपु बांम ॥
डोला आनि कन्याको मपाग सिंह रानाउत,
सूरजकुमारि२००।६ सो बिबाही छठे उपयाम ॥ १६ ॥

॥ चूडालदोहा ॥

व्याही सप्तम७ व्याह बलि, डगडोलीस गुमान आइ इत ॥
आश्रय पाइ अधीसको, बिनत ठानि संबंध हेरि हित ॥ १७ ॥
नंदकुमरि२००।७ तस नंदिनी, बिधि संजुत सीसोदनीहु बरि ॥
नृप रानी आनी निलय, सप्तमी७ सु बुंदीहि व्याह करि॥१८॥

॥ घनाक्षरी ॥

कृष्णगढ दंग भूप अष्टम८ विवाह बारि,

---

१ चतुर २ पति मे ३ सुन्दर कीर्ति करके ॥ १४ ॥ ४ शीघ्र ५ माणिक्यपाल ६ लघु ७ नाम ॥ १५ ॥ ८ झाला जालमसिंह की पुत्री ९ सुन्दर १० बाम अंग में ११ विवाह में ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

कीनी नाम अंगज प्रताप नृपकी कुमारि ॥
स अमानकुमारि२००१८ स नाम प्रभु माता सती,
आनी बरि अष्टमी८हु रानी रीति अनुसारि ॥
कुंक्षि[2] खनि जाकी रत्न दीपक प्रकास करैं,
आपसे[3] उदार अहो टोटो रूप तम टारि ॥
पात्र१के सनेह२के दसा३के परतंत्रनपै,
भासकँ सबन भासैं धर्म१ नीति२ जस धारि ॥ १९ ॥
अष्टम८ बिवाह जिहिं लग्न नृप कीनौं एह,
सोही लग्न साधि तब व्याह कीनौं मर्म तात ॥
प्रभुकी सवित्री१ प्रभु कविकी सवित्री२ पुनि,
आई इक१ काल ऊढो पाइ कित्ति अवदात ॥
सुबकुल आठ८ ए बिवाह भये संभरके,
जिनमैं छ७तोकैं[12] सुत पंच५ सुता इक जात ॥
दूजी२ सुत जेठ१।२ इंद्रसिंह२०११ रु अनुज२०१।२ द्वैहीं२,
बालपहीमैं कुमर मरे ए बिधिके बिघात ॥ २० ॥

॥ चूडालदोहा ॥

इंद्रसिंह२०११को जो अनुज, सूचित इह जह्यौनि२ जन्यौं सुत॥
नामहु तास न परि सक्यो, सिसुतम सो हुव देह हीन द्रुत २१
क्रम तीजो३ इम नृपतिकै, तनय भयो बलदेवसिंह२०१।३ तह॥

१रामसिंह की माता २जिसकी खान रूपी कूंख में ३आप (रामसिंह) जैसे दीपक रूपी रत्न ४ टोटा रूपी अन्धेरे को टालनेवाले, वह दीपक तो पात्र ५ तेल और ६ बाटी (बत्ती) के परतन्त्र है, परन्तु यह रामसिंह रूपी दीपक धर्म, नीति और यश को धारण करनेवाला सब को ७ प्रकाश करनेवाला स्वतन्त्र दीखता है "यहां परन्तु शब्द के योग से स्वतन्त्रता का ग्रहण है" ॥ १९ ॥ ८ मेरे (सूर्यमल्ल) के पिता ने ९ रामसिंह की माता और १० कवि (सूर्यमल्ल) की माता ११ विवाही हुई एक ही समय में आई, उज्वल कीर्ति पाई १२ बालक ॥ २० ॥ १३ अत्यन्त बालक ही शीघ्र मरगया ॥ २१ ॥

जो चोथी४ रानी जनित, अनसु भयो सिसुभावमैंहि यह॥२२॥
पटु अष्टम८ रानी प्रसव, अप्प भयो प्रभु राम२०१४ वंसइन ॥
मितिक्रम अत्र चतुर्थ४मत, दीपित किय जिन नाम रत्ति दिन२३
पंचम५सुत सप्तमि७प्रसव, हुव गोपाल२०१५दुःपध्व पथिक हुव॥
समुझावन तिहिं प्रभु सु नय, धारी तँह प्रतिकूल वर्यौं ध्रुव२४
आसापूरनि अंबिका, मंदिर ढिग कर्णा१दि भटन मिलि ॥
दिठ्ठिकैंद तव तिहिं दयो, खंग्गा१दिक सव छिन्नि नर्म खिलि२५
तास हवेली भेजि तिहिं, पुनि सूचिय अब लेहु वंस पथ ॥
कुलपतनी आदर करहु, करहु न गनिका संग निंद्य कथ॥२६॥
दिय प्रबोध प्रभु इम दुलभ, तदपि मूढ प्रतिकूल भाव तकि ॥
करि मेहन छेदन कुमति, छीवैं रह्यो अपकित्ति सुरा छकि ।२७।

॥ दोहा ॥

भई सुता इक१ भूपकैं, तीजी३ औरस तांम ॥
सोहु मरी बिधिबस सिसुहि, न परि सक्यो तस नाम ।२८।

॥ षट्पात् ॥

सुंदरसोभा१ सुघरराय२ —— क्रमसरंग३ सह ॥
कैंमन खवासिनकोहु अवनिपतिकैं हुव त्रिक३ यह ॥
तीजी३ बिधिकारि तत्थ लह्यो सुत बिनयसिंह१ लहु ॥
पातुरिगन तिम प्रथित बिविध पटु हुव नृपके बहु ॥
जिनमाँहिं नयनसोभा१ जनित रूपकुमरि१।२ कन्या रुचिर
संतान अठ्ठ८ लहि इन सहित सँमह तप्यो नृप सल्लन सिर २६

१ प्राण रहित ॥ २२ ॥ २ आप (रामसिंह) ३ वंश का पालि, इस क्रम से चौथा है ४रात्रि और दिनको प्रकाशित किया ॥ २३ ॥ ५बुरे मार्ग का चलनेवाला हुआ ६ आपने श्रेष्ठ नीति धारण की ॥ २४ ॥७कर्णसिंह आदि८नजरकैद९हसी करके प्रफुल्लित होकर ॥२५॥१०कुलस्त्री का॥२६॥११लिंग को काटकर अपकीर्तिरूप१२ मद्य में छककर१३मस्त रहा ॥२७॥१४तहां ॥२८॥१५सुन्दर१६ उत्सव सहित ॥२९॥

काका नृपको कथित बीर अभिधान बहादुर१९९।३
तास तनय बलवंत२००।२ प्रथित थित थान गोठपुर[1] ॥
ज्ञानकुमरि२००।१ अभिधान इक१ परन्यौं भटयानिय ॥
अत्थहि डोला आत स्याम तनया जग जानिय ॥
तस प्रसव तीन३ प्रकटे सुतहि जे धौंकल२०१।१फतमल्ल२०१।२जह
तिन्ह अनुज भोम२०१।३तीजो३ तनय आयति[2] होहि प्रमत्त यह।३०।

॥ दोहा ॥

भटियानी सालम सुता, दौलतकुमरि२००।१ सनाम ॥
बलवंता२००।१नुज[3] एक१ इम, व्याह्यो दलपति२००।३बाम।३१।
सिंधु भयो सूरत्व[4]को, इक१ नारीव्रत एह ॥
रन सहाय खिच्चिन खिरयो, तिल तिल दलपति२००।३ देह।३२।
सेरसिंह२००।५ याके अनुज, लहि डोला इक१ नारि ॥
सुता बरी खुसहालकी, जो आनंदकुमारि२००।१ ॥ ३३ ॥
हुव ताकै सुत दुव२ सहज[5], जे जय२०१।१ विजय२०१।२ सनाम॥
जामिज[6] बीकानैरके, रट्ठोरन प्रभु राम२०१।४ ॥ ३४ ॥
अनुज बहादुरसिंह१९९।३को, सूचित जो सरदार१९९।४ ॥
दंग दुघारी थान तस, दुव२ हुव कथित कुमार ॥३५॥
व्याही ईश्वरिसिंह२००।१ तँहँ, जेठ१ सुत चउ४ नारि ॥
अजब कवंधज अंगजा[7], प्रथम१ गुलाबकुमारि२००।१ ॥ ३६ ॥
दूजी२ जादवमेघजा, फतैकुमरि२००।२ निज कीन ॥
तीजी३ ता२००।३ही नाम करि, चालुक नाथ कुलीन ॥३७॥
इनमैं ईश्वरिसिंह२००।१के, जानी भूत[8] प्रजा न ॥

---

१ गोठड़ा पुर २ भविष्यत् काल (आगे आनेवाले समय) में ॥ ३० ॥ ३बलवन्तसिंह का छोटा भाई ॥३१॥४वीरता का समुद्र ॥३२॥३३॥ ५ साथ जन्मेहुए (जोड़ला) ६ भानेज ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ७अजबसिंह राठोड़ की पुत्री ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ८ सन्तान हुई नहीं जानी

जान्यौं तनय खवासि जनु, इक१ लछमन१ अभिधान।३८।
ईश्वर२००१ को भ्राता अनुज, देवीसिंह२००२ द्वितीय२॥
जो व्याह्यो इक१ जादवी, धरि मह सुंदर धीय॥ ३९॥
विष्णुकुमारि२००१ नाम जु बिदित, जात प्रजा चउ४जास॥
संभू२०११अरु सिवदान२०१२सुत, ए जेठे१।२दुव२आस ४०
कन्या गोवर्द्धनकुमारि१, क्रम गोविंदकुमारि२॥
मरी अनूढा३ ए उभय२, अप्पन बिधि अनुसारि॥ ४१॥
इक१ खवासि भव अंगजा, इनकी अनुजा आहि॥
परिनाई तुम राम२०१४ प्रभु, द्रंग जोधपुर जाहि॥ ४२॥
वृद्धिकुमारि१ अभिधान जो, सो परन्यौं सरदार॥
अत्थहि आय खवासि भव, नृप तखतेस कुमार॥ ४३॥

॥ दोहा॥

संभू२०११तैं जेठो सहज, नाम तास ---- २०११॥
सोहु कुमर दुव२ बरस रहि, भयो कालके साथ॥ ४४॥
पंचम५संकरसिंह२०१५ पुनि, सो कनिष्ट सिवदान२०१२॥
कछुक दिननके अंत करि, सोहु भयो अवसान४॥ ४५॥
लावक गाँम इलेसकी, मुहुकमजा वह नारि॥
परनी संभूसिंह२०११ प्रथ, मानहु चंद्रकुमारि१॥ ४६॥
सोलंखी रतनेसजा तखतकुमारि२ अभिधान॥
बरि आनी संभू२०११ बहुरि, दूजी२ पुर दुबलान॥ ४७॥
पुनि व्याही हम्मीरपुर, बिष्णुसिंह वपुजात॥
आनंदादिकुमारि३ इम, सुरतानोत सुनात॥ ४८॥

॥ ३८॥ १ छोटा भाई॥ ३९॥ २ हुए॥ ४०॥ ३ बिना बिवाही॥ ४१॥ ४२॥ ॥४३॥ ४४॥ ४ अन्त॥ ४५॥ ५ लावा ग्राम के भूपति की ६ प्रसिद्ध॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ७ पुत्री॥ ४८॥

भूप भ्रात पुर कापरनि, पति सामंत२००१ प्रवीन ॥
ब्याह तीन३ बिरचे बिदित, तनय लहे तहँ तीन३ ॥ ४९ ॥
पतनी यह परन्यौं प्रथम१ रूपनगर रठौरि१ ॥
दूजी२ राजाउत्ति२ इम, वहहु बरी पटजोरि ॥ ५० ॥
पुनि तीजी३ सिवराजपुर, पति कबंध चंदेल ॥
दुहिता तस परन्यौं दुलह, मंजु सबय लहि मेल ॥ ५१ ॥
तीजी३कैं जेठो१ तनय, हुव बलदेव२०११ सनाम ॥
दूजी२कैं कृष्ण२०१२ रु बिरुद२०१३, तनय भये दुव३[2]ताम
ब्याह१ प्रजा२ भावी बिदित, सूचे इह क्रमसंग ॥
बर्तमानमैं देहु बलि, अब श्रवैं[3] श्रवन उमंग ॥ ५३ ॥
सूचित१८३० सक बुंदी सुपहु, बिष्णुसिंह२००१२ सिसुबेस॥
जनक छत्र धरि सीस जो, इम हुव भुव अखिलेस ॥ ५४ ॥
इत पहिलैं नृप अजित१९९१२नैं, सीम अमरगढ माँहिं ॥
अरिसिंहहिं परलोक दिय, बिल्लहटा१ दिय नाँहिं ॥ ५५ ॥
सुत जेठ१ अरिसिंहके, व्है अधिपति हम्मीर१ ॥
सं[6]ध्या ह्वँपँ पठये सचिव, बुंदिय दब्बन बीर ॥ ५६ ॥
ज्योंही बेघम आदि जे, मिले [7]कपटसिसु मध्य ॥
दक्खिनको भर देन चहि, बंछे तिनकँहँ बध्य ॥ ५७ ॥
भीम सलूमरि नाहको, भ्राता अर्जुन१ नाम ॥
अँपर बनिक२ ए दुव२ गये, माहजि कटक मुकाम ॥५८॥
संध्या माहजि तिंहिं समय, पूरब करि बस भाय ॥
आवतहो अजमेर इह, इत पिक्खन [11]ठैयय१ आयर ॥ ५९ ॥

॥४९॥५०॥ १ चन्देला राठोड़ ॥ ५१ ॥ २ तहाँ ॥ ५२ ॥ ३ सुनने से कान दो ॥ ५३ ॥ ४ बुन्दी की सब भूमि का पति ॥ ५४ ॥ ५ बीलहटा ग्राम नहीं दिया ॥ ५५ ॥ ६ सिन्धिया के पास ॥ ५६ ॥ ७ रत्नसिंह में ८ भार ९ मारनेयोग्य (मारनेचाहे) ॥ ५७ ॥ १० दूसरा ॥५८॥ ११ खरच और आमद देखने को ॥५९॥

तँहँ वकील ए रानके, पहुँचे बिनय पसारि ॥
मोरयो इत कछु दम्म दै, बेघम मंडन रारि ॥६०॥
दरकुंचन तब नैंनपुर[1], आयो माहाजि तत्त ॥
सचिव मुख्य सुखराम पँहँ, पठये बुंदिय पत्त ॥ ६१ ॥
बिल्लहटा१ बुंदीस लिय, अनुचित करि अति गर्व ॥
मारयो पुनि अरिसिंहकौं, यामैं ओगुन सर्व ॥ ६२ ॥
तुरगादिक[2] अरिसिंहको, आयो बिभव१ जितोक ॥
बिल्लहटा२ जुत देहु अब उनको है वह ओक[3] ॥ ६३ ॥
धाइभ्रात सुखराम तब, नैंपपटु[4] समय निहारि ॥
बिल्लहटा१ जुत रान हय२, दिन्नौं बिहित बिचारि ॥ ६४ ॥
कोटापति तनु त्याग[6] किय, इत गुमान२०४।२ लहिखेद ॥
पट्ट सु पायो तस तनय, उचितरीति उम्मेद२०५।१ ॥ ६५ ॥
झल्ला जालमसिंह तिंहिं, मुख्य सचिव किय तत्थ ॥
राज्यकाज प्रकट१ रु पिहित२, सब सौंपे तस हत्थ ॥६६॥
असह रोग उपदंस[8] जुत, पहिलैं इक१ पंननारि ॥
नंटन निपुन कोटानगर, आई लोभ बिचारि ॥ ६७ ॥
नृप गुमान२०४।१ अग्गैं नची, भाव१हाव२सह भास ॥
बिगरयो मन कोटेसको, न लखैं लोलुप नास ॥ ६८ ॥
मन्न्यों नहिं गनिका सु मंत[12], तदपि बुलाइ निकेत[13] ॥
लागि कुकर्म उपदंस[14] लहि, इम हुव अब सु अचेत ॥ ६९ ॥
नृप गुमान२०४।१को जो अनुज, सो तँहँ नाम सरूप२०४।३

॥ ६० ॥ १ नैणवा पुर में ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ २ घोड़ा आदि ३ स्थान ॥ ६३ ॥ ४ नीति चतुर ने ५ राणा का घोड़ा ॥ ६४ ॥ ६ शरीर छोड़ा ॥ ६५ ॥ प्रसिद्ध और ७ गुप्त ॥ ६६ ॥ ८ आतसक गरमी सहित ९ वेश्या १० नृत्य में ॥ ६७ ॥ ११ अत्यन्त लोभी (काम का लोभी) ॥६८॥ १२ वेश्या ने राजा का वह मत स्वीकार नहीं किया १३ तोभी अपने स्थान पर बुलाकर १४ गरमी का रोग लिया

भेज्यो जालम झल्ल भनि, भूप होहु हनि भूप[1] ॥ ७० ॥
तब नृप मारयो बंधि तिहिं, नीच गरल उपनाह[2] ॥
भूरिमायु दमनक भयो, सचिव झल्ल सचाह ॥ ७१ ॥
रानिनपँहँ पठई अरज, इत जालम लिखि एस ॥
तुमरे देवर नृप हन्यौं, बन्यौं चहत बसुधेस ॥ ७२ ॥
सुनि रानिन किय सूचना, जसकर्णहिं निज जानि ॥
तांकि कछु बिधि धावेय तुम, मारहु तिंहिं खल मानि॥७३॥
सचिव मुरुप जसकर्ण सुनि, इम रानिन ओएस ॥
उँपबन माँहिं सरूप२०४।२ वह, दुष्ट हन्यौं कहि द्वेस ॥७४॥
अब उम्मेद२०५।१ गुमान२०४।२, सुत कोटपपति हुव ताहि
इक१ दिवस इकंत लै, जालम कहिय सराहि ॥ ७५ ॥
अहो अखिल प्रभुके अनुग, अरु प्रभु प्रानन ईस ॥
पै अब इक१ अनुचित प्रबल, सचिव कुपित निज सीस ७६
मोसौं यह जसकर्ण मिलि, बदत गूढ तजि बट्ट ॥
मारैं नृप उम्मेद२०५।१कौं, अप्पैं अपरहिं पट्ट[12] ॥ ७७ ॥
जिहिं सठ काका रावरे, मारे बिदित बकारि ॥

॥ ६९ ॥ १ राजा गुमानसिंह को मारकर तुम राजा होजाओ ॥ ७० ॥ २ मल्लमपट्टी में जहर देकर ३ यहां झाला जालमसिंह दमनक नामक गीदड़ के समान हुआ "पञ्चतन्त्र और हितोपदेश के सुहृद्भेद में यह कथा है कि संजीवक नामक बैल और पिंगलक नामक सिंह की बढती हुई मित्रता को काटकर, दमनक नामक गीदड़ ने इनमें विरोध बढाकर पिंगलक से संजीवक को मरवाया, और इनके विरोध का आपने लाभ उठाया" ॥ ७१ ॥ ४ भूपति होना चाहता है ॥ ७२ ॥ ५ जसकरन नामक धायभाई को अपना जानकर कहा कि हे धायभाई ॥ ७३ ॥ ६ आदेश (आज्ञा) ७ बाग में उस सरूपसिंह को दुष्ट कहकर मारा ॥ ७४ ॥ ८ जालमसिंह ने कहा ॥ ७५ ॥ ९ सब आप के सेवक हैं परन्तु आश्चर्य है कि १० आप के ऊपर सचिव जसकरन क्रोधित है ॥ ७६ ॥ स्वामिधर्म का ११ मार्ग छोड़कर १२ दूसरे को पाट देवें ॥ ७७ ॥

न गिनैं सो *उचितानुचित, तुच्छि रह्यो तरवारि ॥७८॥
वदत यहहि नृप मति बदलि, सजि भट कछुक स्वतंत्र ॥
कुजस करन त्यौं जसकरन, मारन मंडिय मंत्र ॥७९॥
तकि खिन जालम झल्ल तिम, व्है जसकरन सहाय ॥
कही तुमहिं मारन कुमति, यह नृप करत उपाय ॥८०॥
यातैं तुम निकसहु अबहि, पुनि हम ओसर पाइ ॥
नृपको कोप निवारिकैं, लैहैं बिदित बुलाइ ॥ ८१ ॥
इम संजीवक१ बैल यह२, निकसायो डर डारि ॥
भयो झल्ल१ दमनक भेरुज२, पिंगल१ नृपहिं निहारि॥८२॥
माहजि लोभ अधीन इत, सेना अतुल सजाइ ॥
रान वकीलनके कहैं, लग्गे बेघम जाइ ॥ ८३ ॥
सजाइ१ मजाइ२ अन्त्यानुप्रासः ॥
सक नभ गुन धृति१८३०मित समा, मलिन२प्रौष्ठपद३मास॥
बेघम संध्या बिंटिकैं, तोपन डार्‌यो त्रास ॥ ८४ ॥
सुनि यह इत बुंदीसके, बहुत सज्ज करि बीर ॥
श्रीजित कहि सुखरामसौं, भेजे बेघम भीर ॥ ८५ ॥

॥ राजसवतिका ॥

पटु राउत देव कर्‌यो पहिलैं निज तातपैं जो उपकार नयो ॥
जन बुंदीके१ आप निबाहे जथा दृढ चित्त स्वकीयर२न कष्ट दयो
अपनैं घर जासौं अहो पट११ अन्न२को भोगह अल्पहि अर्घ भयो॥

---

* उचित और अनुचित नहीं गिनता ॥ ७८ ॥ १ जसकरन को मारने का मंत्र रचा ॥ ७९ ॥ २ समय देखकर ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ३ संजीवक नामक बैल के अनुसार जसकरन को निकलाया ४ वह झाला जालमसिंह दमनक नामक गीदड़ हुआ ५ पिंगलक नामक सिंह के समान राजा उम्मेदसिंह को देखकर ॥८२॥८३॥ ६ सम्वत् ७ भादवा वदि ॥८४॥८५॥ ८ चतुर राउत देवसिंह ने ९ अपने पिता बुधसिंह पर १० अपने लोगों को कष्ट दिया ११ वस्त्र १२ थोड़े मूल्य का

यह श्रीजित २हीहित चित्त इहाँ प्रतिकारी बरूथ[3] उहाँ पठयो ।८६।

॥ दोहा ॥

पाइ मेघ[3]१ बेघम पतिहु, भट इतके निज भीर ॥
सजि गढ पुत्र प्रताप२ सह, बिरच्यो संगर बीर ॥ ८७ ॥
रन संकट बहुदिन रह्यो, खिरन लगे गढ खंड ॥
जालम कोटा सचिव जब, दै बिच ओड्यो[4] दंड ॥८८॥
दम्म लक्ख खट६००००० दैन करि, हीन बित्त[5] तँहँ होइ॥
गढ सिंगोली१ रत्नगढ२, दये परगनाँ दोर३ ॥८९॥
संध्याकै अबलग[6] सुपै, रहत उभय२ प्रभु रामँ२०।१४ ॥
बली अरिन दब्बे बहुरि, धाम न आये धाम ॥९०॥
पुर बेघम इम हीन परि, दै दंम सूचित देस ॥
मेटि बिरोध रु किय मुदित, बुंदिय किति बिसेस ॥ ९१ ॥
श्रीजित इत बुंदीसके, बीरन सबन बुलाइ ॥
सूची है उत्तानसय, प्रभु तुमरो बिधिपाइ ॥ ९२ ॥
सुखरामहिं किय निज सचिव, अजितसिंघ१९९।१ तुम ईस॥
तिहिं मन्नहु प्रभु तुल्य तुम, सासन निबहहु सीस ॥९३॥
बीर भवानीसिंघ१ बलि, माधानी२२।२६ भगवंत२ ॥
दुव२ तुम याके पास दुव२, मगमैं चलहु सुमंत ॥ ९४ ॥
सूनु बहादुरसिंघ१९९।२सौं, अक्खिय बहुरि उदग्ग ॥
राज पितृव्यक तुम रहहु, मगमैं याके अग्ग ॥९५॥

१लज्जा से हित चिन्तकर श्रीजित् ने २उपकार का पलटा देनेवाली सेना बेघम भेजी ॥ ८६ ॥ ३ सवाई मेघसिंह ॥ ८७ ॥ ४ दंड मेला (स्वीकार किया) ॥ ८८ ॥ ५ धनहीन ॥ ८९ ॥ ६ इस समय भी ७ हे स्वामी रामसिंह ८ स्थान पीछे बेघम के घर में नहीं आये ॥ ९० ॥ ९ दंड में सूचना किये हुए देश देकर ॥ ९१ ॥ १०सीधा सोनेवाला (ऊंचे हाथ पैर करके सोनेवाला) अर्थात् अत्यन्त बालक ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ११ अपने पुत्र १२हे राजा के काका ॥९५॥

मिलत न जैसो महतपन, करत राज्यको काम ॥
तैसो लहि धात्रेय तिम, सचिव बढ्यो सुखराम ॥९६॥
अतिहित जालम झल्ल इत, बुंदीपतिहिं *बिखान ॥
माधानी१श२६ भगवंतकौं, पुनि कोटा लैजान ॥ ९७ ॥
दुव२ सामंत रु सचिव दुव२, इक१ मरहट्ट अराल ॥
कोटा रक्खिय माहजि जु, लैन अब्द कर लाल ॥ ९८ ॥
सो पंचम५ जालम सुहृद. ए पठये कहि एह ॥
कोटा१ बुंदिय२ नृपनकैं, संधहु परम सनेह ॥९९॥
नाथ१नाम गैंता नगर, ईसजु हिरदाउत्त२०।२४ ॥
दूजो२ भटवारेस भट, संभूर इँदसल्लुत्त२५।२९ ॥१००॥
देवकरन१।३ भूसुर सचिव, अरु कायस्थ निहाल२।४ ॥
इम पंचम ५ मरहट्ठ यह, सुहृद झल्लको लाल ॥ १०१ ॥
मिले सचिव सुखरामसौं, ए सब बुंदिय आइ ॥
पुनि लग्गे श्रीजित पयन, बिनंत सनेह बढाइ ॥ १०२ ॥
करिये इत १ उत२ एक१ता, सूचत इम हित सोधि ॥
स्वीकृत किय श्रीजित सुन सु, पटु सुखराम प्रबोधि॥१०३॥
भगवंतहिं पुनि तिन भनिय, कोटा पठवन कज्ज ॥
सिक्खदैन तिहिं श्रीजितहु, सामग्री किय सज्ज ॥ १०४ ॥
दंती एक१ तुरंग दुव२, सिंचय१ बिभूखन सत्थ ॥
दैन सिक्ख इत्यादि दै, ताहि बिचारिय तत्थ ॥ १०५ ॥
सो कृतघ्न भगवंत सुनि, छन्नैं परिकर सज्जि ॥

॥ ९६ ॥ * दिखाने को ॥ ९७ ॥ १ टेढा २ लाला नामक मरहठे को सालाना खिराज लेने को कोटा में रक्खा ॥ ९८ ॥ ३ जालमसिंह के चार मित्र पहिले थे और पांचवां यह हुआ ॥ ९९ ॥ ४ भटवाड़ा का पति ५ इन्द्रसालोत ॥१००॥ ६ ब्राह्मण ॥ १०१ ॥ ७ विशेष नम्र ॥ १०२ ॥ ८ समझाकर ॥१०३॥१०४॥ ९ हाथी १० वस्त्र ॥ १०५ ॥ ११ किये उपकार को भूलनेवाला १२ परगह

हित दिखान कोटेसकौं, गयो परोच्छहि भज्जि ॥ १०६ ॥
श्रीजित सूचित क्यौं कितव, अनुचित किन्नी एह ॥
इहाँ विभव जो तस अखिल, गिनि भेजहु तस गेह ॥१०७॥
सस्यं फलित सीलोरके, करजुत तबहि प्रकास ॥
रह्यो विभव भगवंतको, पठयो सब तिहिं पास ॥ १०८ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

आयो जबही तैं रह्यो तैं सु गिनि मुख्य आप,
राख्यो भगवंत पास श्रीजित सुहृद रीति ॥
काज निज राज्यके जनाइ सब ताकौं करे,
पायो काहुनैं न सो पटा दिय निपुन नीति ॥
साठ्यकारि बुन्दी१ कोटा२ एक१ता करन समैं,
गाइ कछु गूढ हाइ बुंदी१की कुजस गति ॥
कोटा२ कौं दिखाइ निज पच्छको अहो कुटिल,
भजि भगवंत गयो चोरलौं भजत भीति ॥ १०९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ विष्णुसिंहचरित्रे विष्णुसिंहविवाहसन्ततिवर्णनसन्ध्याकथनविझहटाग्रामादिराणाविभवप्रत्यर्पणधात्रीभ्रातृजसकर्णघात्यस्वरूपसिंहविषदानमृताग्रजकोटापतिगुमानसिंहात्मजोम्मेदसिंहपट्टासादनझालजालमसिं

१ पीठ पीछे भगकर ॥ १०६ ॥ २ कर्ता ॥ १०७ ॥ ३ पकी हुई खेती ॥ १०८ ॥
४ हृदय के साथ ५ मित्र की भांति ६ शठता (मूर्खता) ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, विष्णुसिंह के विवाह और सन्तान आदि का कथन १ सिन्धिया के कहने से वीझहटा ग्राम आदि राणा के वैभव को पीछा देना कोटा के पति गुमानसिंह का धायभाई जसकरण से मारेजाने वाले अपने छोटे भाई सरूपसिंह से जहर से माराजाकर उसके पुत्र उम्मेदसिंह का पाट बैठना ३ झाला जालमसिंह का कोटा के राजा और मंत्री में दमनक नामा गीदड़ के समान भेद कराना ४ सिंधिया का राणा हम्मीरसिंह के कथन से मेवाड़ से युद्ध करके दंड में

इकोटापतितन्मन्त्रिमध्यदमनकशृगालसमभेदकरणाराणाहम्मीर-सिंहकथनकृतबेघमयुद्धसन्ध्याप्रान्तद्वयग्रहणाकोटाबुन्दीपरस्परैकताभवनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥ आदितः ॥ ३५१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

सुनिये इत पहिले समय, कोटा अधिप किसोर१९७५ ॥
जेठे दुव२ सुत टारि जिन्हँ, राज्य१ न दिय दिय रोर२ ॥१॥
किय तीजो३सुत उचित कहि, राज्य बिभागी राम१९८१३॥
तास अग्रजन संततिन, किय अब बिग्रह काम ॥ २ ॥

॥ रोला ॥

अब आधानी२२१२६ देवसिंह१ रविमल्ल ज्येष्ठ१ सुत ॥
कुल किसोरसिंघुत्त५ जुरन रन धारि दर्प्प जुत ॥
कोटापति सन पलटि, रह्यो आटोनि नगर यह ॥
तापर जालम तमकि आजि जित्तन किय आग्रह ॥ ३ ॥
मूँसामदत१ स नाम रक्खि इक जोध फिरंगिय ॥
तीससहँस३००००मित ताहि दम्म मासिक ध्रुव करि दिय॥
याकहँ पुर आटोनि भेजि अक्खिय अरि भंजहु ॥
आइ ससुख अंकुरहिँ गैल ते पर तिम गंजहु ॥ ४ ॥
जाइ फिरंगिय जत्थ तोप बल्लन पुर त्रासिय ॥
सह कुटुंब वह देवसिंह निस अद्ध निकासिय ॥
सक नभ गुन धृति१८३०समय आइ तिम तिहिँ अनियारा॥
चिंतिय बिबिध प्रपंच दैन जालम उर आरा ॥५॥

दो परगने लेना और कोटा बुन्दी में परस्पर एकता होने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ और आदि से तीन सौ इकावन ३५१ मयूख हुए ॥
१ भय दिया ॥ १ ॥ २ रामसिंह को ३ बडे भाइयों की सन्तान ने ॥ २ ॥ ४युद्ध जीतने को हठ किया ॥ ३ ॥ ५ सन्मुख आकर खडे होवे तो ॥४॥ ६करोल ॥५॥

जालम उरे वह जत्थ भयो पत्थर सम भासत ॥
भेदक्क आरा आदि कुंठ हुव बिफल प्रकासत ॥
धाम्रेय सु जसकर्ण प्रथम गय द्रंग जोधपुर ॥
तिहिँ बुलाइ इहिँ तत्थ अधम बंधिय जुग३ उक्कुरे ॥ ६ ॥
जतन चल्यो नन जत्थ जाइ उभय२ हि तब जैपुर ॥
चुंडाउत्तन चाहि रहे तिन्हँ बस धारक धुर ॥
तिन्ह मति आकिखय तत्थ प्रेरि हमकोँ हरोलपर ॥
करहु अप्प निज काम हनहु परपच्छ चुंडहर ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

चुंडाउत्तन यहहि चहि, पाइ दुवरहि निज पच्छ ॥
चिंत्यो अब कूरम निचय, दलिहैँ हम दंमदच्छ ॥ ८ ॥
सक ससि गुन धृति१८३१इत आसित२,भोग तीज३तिथि भद्द६
रहुआरि श्रीजित रमनि, छोरयो बपु गद छद्द ॥६॥
तदनंतर बुन्दीसको, सचिव मुख्य सुखराम ॥
कतिप८ पुरिग्राम१५ दिन गयो, पट्टनि केसव धाम ॥१०॥
पट्टनि बढ तीजो३ हुतो, संध्याके तिहिँ काल ॥
तातेँ झल्ल सखाहु तहँ, हो मरहट्ठ सु लाल ॥ ११ ॥
सो सम्मुह सुखरामके, इक्क१ कोस लग आइ ॥
लैगो पट्टनि समय लहि, परम प्रमोद दिखाइ ॥ १२ ॥
असित२ मग्गसिर९ दोजि२, दिन तदनु मिलन हित तत्त ॥
जालम झल्लहु प्रीति जुत, पुर कोटा सन पत्त ॥ १३ ॥

---

१ हृदय २ भेदने (काटने) वाले करोत आदि भोठे (तीक्ष्णता रहित) होगये ३ दृढ जुग बांधा अथवा निर्भय होकर जुग बांधा ॥ ६ ॥ ४ धुर को धारण करनेवाले देवगढ के चुंडावत के बश में जाकर वह देवसिंह रहा ५ शत्रुओं को ॥७॥६दंड देने में चतुर कछवाहों के समूह से ॥८॥ ७ भादवा ८श्रीजित की स्त्री ने ९ रोग छाकर शरीर छोडा ॥ ६ ॥ १० ॥११॥१२॥१० मृगशिर वदि॥१३॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि सम्मुह सुखराम१ लाल मरहट्ठ२अभय२ गय ॥
मिलि पुरमेदन प्रबिसि आइ केसव हरि आलय ॥
सपथ करन तँहँ सचिव दुवर हि लै कर तुलसीदल ॥
लगे परस्पर दैन वदत दोउ२ न इक१ मन१ वल२ ॥
तजि संक बैरिसल्लोत२६।३ तँहँ खेरापति भारत कहिय ॥
तुम भरुज फेरु दमनक तरह जुगरअंधहु तजि छल्म जिय॥१४॥

॥ दोहा ॥

शानि१नसौँ रु सुरूप२०४।३।२सौँ, जसकर्ण३ हु सौँ जेम ॥
मिलि मारे नृप४ सह निखिल, तुम न मिलहु इह तेम ॥१५॥
आक्खिय सुनि जालम अनखि, समुझि करत हम सौंह ॥
क्यौँ फुरकावत तुम कुटिल, भीरुनकी गति भोंह ॥१६॥
इम अगहन९ वदि२ दोजि२ दिन, दुव२सचिवन हित रक्खि
करे सपथ एकत्व१ के, दै केसव बिच सक्खि ॥१७॥

॥ षट्पात् ॥

गयो तदनु कोटेस सचिव जालम१कोटा चढि ॥
दूजे२ दिन सुखराम२ गयो तत्थहि बिनोद वढि ॥
द्रुत उततैं भूदेव देव१ मरहट्ठ लाल२ दुव२ ॥
ग्राम दोसपुर अवधि आत सुनि समुह आतहुव ॥
सक इंदु अग्गि धृति१८३१गत समय तिथि चउत्थि४अगहन९असित२
डेरा दिवाइ उपवंन निकट हुलासि दिखायउ परम हित॥१८॥

॥ दोहा ॥

बहु वर फल१ मिष्टान्न२ बहु, सतदुव२००रुप्पय३सत्थ ॥

---

१ पुर में प्रवेश करके २ विष्णु के मंदिर में ३ सौगन करने को ४ दमनक नाम गीदड़ की तरह ॥ १४ ॥ ५ सब ॥ १५ ॥ ६ सौगन ॥ १६ ॥ ७ एकता के ॥ १७ ॥ ८ बाग के पास ॥ १८ ॥

सुक्खय सचिवकी रीति मित, पठये डेरन तत्थ ॥ १९ ॥
*परिखद गो तिथि पंचमिप५, सुखराम सु धात्रेय ॥
महाराव उम्मेद२०५।१सौं, मिलन भयो हितमेय ॥२०॥
जे आदरके सुभट जँहँ, हे बुंदिय सन संग ॥
तेहु मिले कोटेससौं, अपिहित बिहित उमंग ॥२१॥
छठ्ठी६ दिन परिखद बहुरि, गयो सचिव सुखराम ॥
जुद्ध गज१न मल्ल२न जहाँ, पिक्खे कौतुक काम ॥ २२ ॥
सुखरामहिं पुनि सिक्ख दिय, सप्तमि ७ दिन कोटेस ॥
सिरुपेच१ रु सिरुपाव२ सह, हय३ दिय खास सुहेस ॥ २३ ॥
बहुरि म्हल१ मरहट्ठ२ के, आलय क्रम सन आइ ॥
दोउ२नतैं सिरुपाव१।२ हय३।४, प्रीति रीति मित पाइ ॥२४॥
पुनि सुखराम मुकाम किय, नगर नाँनता आनि ॥
तस संगहि पठयो तिलक, महाराव हित मानि ॥ २५ ॥
वहँहि लाल१ मरहट्ठ अरु, पुर गैंतापति नाथ२ ॥
लै टीका सुखरामसौं, मिले चलन सब साथ ॥ २६ ॥
दुव२ तुरंग सिरुपाव दुव२, इक१ गज भूखन एक१ ॥
बुन्दी आइ निवेदि यह, इन किय मनति अनेक ॥ २७ ॥
नाथ१ हिं लाल२हिं नाम प्रति, इक१इक१हय१।२सिरुपाव३।४
दे बुन्दियपति सिक्ख दिय, सचिवन कथन स्वभाव ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याही सक इक गुन धृति१८३१अंतर, परयो मार लखनेऊ ऊपर
टेक अमोघ रुहिल्लन टोला, दुखित करयो सु आसिफुद्दोला २९
तब नवाब समुचित लखि त्रायक, किय अंग्रेज स्वकीय सहायक

॥१९॥*सभा में१स्नेह के साथ ॥२०॥ २ मसिद्ध और उचित उमंग से ॥२१॥२२॥ ३ श्रेष्ठ हींसनेवाला घोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ४ जिन का हठ खाली नहीं जावै ऐसे रुहिल्लों के समूह ने ॥ २९ ॥ ५ उचित रक्षक देखकर

जब नवाब दिय मुख्य जिलाका, इनहिँ बनारस नगर इलाका३०
लखनेऊ पति प्रथम दबि लिय, दंग कासिका सो अब इम दिय
पट्टु कंपनी देस वह पायो, अमल बढत तबतैं इत आयो ॥ ३१ ॥
इहिं नवाब या१८३१ ही सकमैं इत, फैजाबाद रहनसौं तजि हित
पुर लखनेऊ रहन समुझि प्रिय,करि थिति सोहि राजधानी किय३२
दोहा–चरन द्वारकाधीसके, इत परसन चहुवान ॥
याही सक अगहन९ असित२, श्रीजित किय प्रस्थान॥३३॥
दरकुंचन अजमेरु१ व्है, अरु श्रीपुष्कर२ न्हाइ ॥
अग्ग चलत मरुईसके, सचिवन अटके आइ ॥ ३४ ॥
करी अरज रट्ठोर नृप, रक्खत मिलन उमंग ॥
सुनि श्रीजित गो जोधपुर३, सत्थ अलप लै संग ॥ ३५ ॥
मरुप आइ सम्मुह मिलि रु, पुर लैगो पधराइ ॥
रहि कछु दिन पुनि सिक्ख लहि, पहुँच्यो सत्थहिं आइ ३६
तदनंतर हंकत सजव, दिय संचोर४मिलान ॥
धरनीधर५ दरसन कियउ, पुनि अविरत प्रस्थान ॥ ३७ ॥
॥ षट्पात् ॥
बावगाम ६ अभिधान नगर पहुँचिय पुनि श्रीजित ॥
ताके नृप चहुवान नाम गजसिंघ ठानि हित ॥
महमानी बिधि मंडि मन्नि सम्मद सुचिमानस ॥
करे नजर हय दोइ२ ते न रक्खे वैखानस३॥
झंझाम७ होइ दरकुंच तिम आडेस्वर८ विश्राम लिय ॥
वलि ईस जजन बरनां९बिरचि तीकड़१०जाइ मिलान दिय॥३८॥

१ अपने जिले का॥३०॥ २ काशी नगर ॥ ३१ ॥३२॥३३॥ ३ मारवाड़ के राजा के ॥३४॥३५॥३६॥ ४ निरन्तर गमन किया ॥ ३७ ॥ ५ उज्वल मन से हर्ष रचा ६ वानप्रस्थ (श्रीजित) ने ७ फिर ८ महादेव का पूजन करने को ॥ ३८ ॥

तीकड़१० सन करि कुंच बढ्यो प्रातीच्य१ मग्ग वलि ॥
नगर मोरवी ११ जात मिल्यो जद्दव सम्मुह चलि ॥
जाड़ेचा नृप बग्घसिंह रक्खन निस हठ किय ॥
तदपि रह्यो नहिं तत्थ जानि मग मिजल२ अल्प जिय ॥
कछु दूर बग्घ१ पहुँचाइकैं कति हय१ आयुध२ भेट किय॥
लै इक्क सक्ति३ तिनमाँहिसौं जाइ टकार१२मिलान दियो३९।
चढि टकार१२ सन चलत इक्क जद्दव मग अंतर ॥
राजकोट१३ पुर नाह बंस जाड़ेच धुरंधर ॥
नाम कुंभ किय नजर आइ सम्मुह सु न रक्खिय ॥
तदनु बीरपुर१४जाइ सिँबिर रचना हित अक्खिय ॥
रहि रत्ति बहुरि हंकिय सजव इक१ मुकाम मग मध्य करि
रैवत१५गिरीस तीरथ रुचिर परसन पत्तो प्रीति धरि ॥४०॥

॥ दोहा ॥

जूनाँगढ१५ डेरा बिरचि, अप्प चढ्यो गिरि आइ ॥
रैवत१५ के सब पुन्यथल, पिक्खे सम्मद पाइ ॥ ४१ ॥
हनुमतधारा१ होइ द्रुत, अंबा२ दरसन कीन ॥
परसी ओघड़पादुका३, पुनि गिरि चढत प्रबीन ॥ ४२ ॥
बहुरि दत्त आत्रेयके, कुंड४ आचाँमि१ रु न्हाइ२ ॥
परसी ताकी पादुका५, अचल शृंग सिर जाइ ॥ ४३ ॥
पांडव छली ६ आइकैं, तँहँ धन गुप्त चढाइ ॥
न्हाइ अपस्मृतिकुंड७ पुनि, पत्तो डेरन आइ ॥ ४४ ॥
जूनाँगढ१५ सन चढि सजव, दरकुंचन चहुवान ॥
सरित गोमती१६ जाइ किय, माघ११ अमा३० दिन न्हान४५

१पश्चिम दिशा के मार्ग २मिजल छोटी जानकर ३बरछी ॥३९॥४डेरा करने को कहा ५ पर्वतों का पति (पर्वतराज) ॥ ४० ॥ १ हर्ष पाकर ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ७ आचमन करके ८ पर्वत के शिखर पर जाकर ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

श्राद्ध सहित उपवास करि, डेरा तत्थहि रक्खि ॥
ज्योतिर्लिंग शिव१ जजनंकिय, अप्प जाइ हित अक्खि४६
सनि७ वासर जुत माघ११सित१, तिथि चउत्थि४बट तत्थ ॥
पूजि नागनाथेस२ पुनि, आयो डेरन अत्थ ॥ ४७ ॥
तिथि सप्तमि७ कुज३ दिन तदनु, शमहड़ा१७ पुर जाइ ॥
दूजे२दिन चढ़ि पोत३ किय, सागर१८ गमन सुभाइ ॥४८॥
मज्जन संखुद्धार१९ करि, जात निसा इक१ जाम ॥
द्वारकेस हरि २० दरस किय, किय तँहँ चपारि४मुकाम४९
रवि१जुत द्वादसि१२माघ११सित१, पुनि चढ़ि नाव पधारि॥
गोपीपल्वल१ न्हान हित, पहुँच्यो बिहित बिचारि ॥ ५० ॥
डेरन दिस सँसि१दिन मुरयो, घटिय पंच५ निस जात ॥
काबाभिध तँहँ बन्य जन, घल्लत हुव मग घात ॥ ५१ ॥
गहन दुरपासन तुंगं गिरि, बिच कापथ अति घोर ॥
श्रीजित सन कावन सरिस, रचिय तत्थ रन सोर ॥ ५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

लरि इच्छित कर लौन बिसम मम मंतुंकार बनि ॥
कावनके अधिराज रचिय घमसान नगम्मनि१ ॥
अद्दिन चढ़ि दुहुँ२ ओर तुपक१ तीर२ सु झुकि झारत ॥
हंकिय न गिनंत हह्ह६१ कलह सुभटन हलकारत ॥
गोलि१न दुरसार फुट्टत तुरग बान२बिसंत बिल उरग जिम ॥
चोटन सिपाह घोटन गिरत पारावत लोटन प्रतिम ॥५३॥

१पूजन किया ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ २ मंगलवार ३ नाव में चढ़कर ॥ ४८ ॥ ४ स्नान ५पहर रात जाने पर ॥ ४९ ॥ ६ आदित्य वार सहित ॥ ५० ॥ ७ सोमवार के दिन ८ काबा नामक ९ वन मनुष्य ॥ ५१ ॥ १० दोनों ओर ऊंचा पर्वत ११ बीच में बुरा मार्ग १२ क्रोध सहित १३ भयंकर युद्ध रचा ॥ ५२ ॥ १४ अपराध करनेवाला १५ नगम्मनि नामक काबों (लुटेरों) के पति ने १६ उनको नहीं गिनकर १७ घुसते हैं १८सर्प के समान १९घोड़े २०कबूतर लोटने के सदृश॥५३॥

अग्गैं श्रीजित अडर१ बहुरि सत्रुन रन रुक्कियर२ ॥
अग्गैं श्रावन५ श्राम१ झरन उत्तर४।७ घन झुक्कियर२ ॥
अग्गैं मारुति१ जांबवान बहुरि सु बिरुदायउ२ ॥
अग्गैं बनपति सरभ१ बहुरि अल अलिय लगायउ२ ॥
अग्गैं सुरेस बिक्रम अतुल१ कर दधीचिकीकस लयो२ ॥
इक्कल वराह सिंहन असह१ बलि कुक्कुर गन बिंटयो२ ॥५४॥
जदपि क्रोध१ लोभा२दि तजे बुंदीपुर संगहि ॥
सहसा तदपि मिलाइ दयो जुज्झन बिधि जंगहि ॥
कावन अनुचित कहिय पुराय जत्ता फल१ पावहु ॥
मत्ता२ दै सब हमहिं अंदल तरु होइ पलावहु ॥
इहिं प्रसभ दुष्ट करि दुव२आनिय सैलन चढि दुहुँ२ओर सन
मग द्रोनि चलल श्रीजित मुदित रन दुव२ दिस लग्गे करन॥५५॥
गिरि दंतक डगमगत टोल टोलन लागि टक्कर ॥
तुट्टत लघु तरु१ तबैं२ रुंड डंकत भरि डक्कर ॥
आनि मिलत कति असिन बहुरि भज्जत चढि पब्बय ॥
पत्ति लगत तिन्ह पिट्ठि जाइ मारत धारत जय ॥
उत्तारि दुरओर अद्रिन रुहिर द्रवित द्रोनि वट्ट सु बहत ॥
पाउस प्रभाव जनु वुट्ठि जल चलि खालन तालन चहत॥५६॥
अति साहस लखि अरिन तुपक श्रीजित अब झल्लिय ॥

आगे ही १ श्रावण मास था और फिर उत्तर दिशा का मेघ झुका आगे ही २ हनूमान था और फिर जांबवान ने बिरुदाया आगे ही३केसरीसिंह था और ४फिर बिच्छू ने डंक लगाया पहिले ही अतुल पराक्रमवाला५इंद्र था और फिर ६ हाथ में वज्र लिया ७ आगे ही सिंहों को असह होनेवाला एकल सूवर था और फिर कुत्तों ने घेरा ॥ ५४ ॥ ८यात्रा के ६ मात्रा (धन) १० बिना पत्तों का वृक्ष (नग्न) होकर भागो ११ हठ १२पर्वतों पर १३ दोनों पर्वतों की छेटी (नळे) के मार्ग में ॥ ५५ ॥ १४ पर्वत के दांतों ऊंचे उभरे हुए पत्थर १५ ठूंठ १६ तरवारों से १७ पैदल १८ रुधिर १६ तालावों में जाना चाहता है ॥ ५६ ॥

दै पब्बय पर दिट्ठि[1] घात मालिक[2] सिर घल्लिय ॥
सेसं नगम्मानि[3] आयु तास भिक्खन गुटिका हुव ॥
भट तस ढिग हुवर भेदि भक्खि कालिर्कं[4] प्रविसी भुव ॥
पहुँचे तिर हड्ड[5] हैवर पयन रय हत बिमत निरस्तं[6] रटि ॥
मनु मद्य मत्त आये उभयर आधोरँन[7] इभसन उलटि ॥५७॥

॥ दोहा ॥

इक्क ओर काबन अधिप, हुतो नगम्मानि तत्थ ॥
सो श्रीजित सय लखि सफल[8], भीरु भज्यो सह सत्थ॥५८॥
तास पितृव्यक[9] अपर[10] दिस, सज्ज हुतो रन सीर ॥
गोलिन ओलरन गुंप[11] वह, बरस्यो घन बिधि बीर५९
भट चालुक खदिरौंट[12] तँहँ, निज हय गिरत निहारि ॥
काबन पति काका हन्यो, रचि दलेल अति रारि ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

काबनपति काका सु हुतो गिरि सिर दक्खिन दिस ॥
ताकै चालुक्क तुपक लगी नव घटिय जात निस ॥
आइ परयो सु अचेत उलटि अँधभुम्मि[13] अधोमुख ॥
मनु पट्टी सन मलापि नटी उलटी रँय[14]की रुख ॥
सिर तास कट्टि मारकं[15] सुभट कंदुक[16] कौतुक करन लिय ॥
इम हड्ड माघ सित मदन ग्रह काबन सन रन बिजय किय६१

॥ गीतिः ॥

काबन पतिको काका भरतहि खिलँ[17] मंद भीरु भज्जि गये ॥

१दृष्टि २ कावों के मालिक पर ३ उस नगम्मानि की आयु बाकी थी जिससे ४ कलेजा खाकर ५ हाडा के घोड़े के पैरों में ६ मारे ऐसा कहकर ७ महावत ॥ ५७ ॥ ८ हाथों को सफल देखकर ॥ ५८ ॥ ९ उसका काका १० दूसरी ओर ११ प्रत्यञ्चा (यहां लक्षणा से बाण जानने चाहिये) ॥ ५९ ॥ १२ खैराड़ नामक देश सम्बन्धी (खैराड़ा) ॥ ६० ॥ १३ नीचे की भूमि पर १४ वेग से १५ मारनेवाले श्रेष्ठ वीर ने १६ गेंद का खेल करने को ॥ ६१ ॥ १७ बाकी के मूर्ख

श्रीजित जस रन एका, पूरन ससि बिस्तरी जय पताका ॥६२॥
*मृध दस१० सागस मारे, करि घायल बीस२० पाकुल बिडारे
तिन †कुणपनके न्यारे, मस्तक लै संग डेरन पधारे ॥ ६३ ॥
हुलसि बिरचि रन इतको, अमराभिध१ सिलहदार श्रीजितको
इक१ मरयो वह इतको, आहीर उदार समर समुचितको॥६४॥
बाकी लुत्थि२हु आनी, स्वतुरग कुसहालचंद सोमानी ॥
श्रीजितको सो मानी, मधानहो किति यों तिंहिं प्रतानी ॥६५॥
तीन३ मरे इत१के हय, चालुक्य दलेल१ सिवजि२ इनके दै२।
तीजो३ तथा जथा रय, गंगाधर१।३ अग्निहोत्रि भूसुरको ॥६६॥
सत्त७सुभट गोलि१नसों, सायक२सों इक्क१।८इक्क१।९असिवरसों
ए९घायल हुव तिनसों, श्रीजित लै सब सम्हारि सिविर चल्यो६७
बीट नगर पति यह सुनि, भूप फतैसिंह कुसल पुच्छनकों ॥
दूत पठाइ रु पुनि पुनि, सूँचो लेजाहु मो भट सहाई ॥६८॥
सो नहिं मन्नि रु श्रीजित, अक्खिय तुमरे कहाँ कहाँ रहिहैं ॥
तदनंतर सत्थ सहित, रामहड़ा पुर मुकाम आइ परयो ॥६९॥
तहँ बीटपुर नृपतिके, भट रामहड़ेस आइ रु इम भनी॥
मस्तक तस्कर ततिकै, देहु व तुमरे न कामहै तासों ॥७०॥
सुनि यह बिन्नति श्रीजित, दुष्टनके छिन्न सीस दस१० दिन्ने ॥
रामहड़ा१ पतिसों हित, करि इम प्रतिपंथ अब करयो प्राची ७१

॥ दोहा ॥

रामहड़ा१ पुर व्है चल्यो, इम निज आश्रम ओर ॥
कावन पुनि मग रन करत, रचिय अमंगल रोर ॥७२॥

॥ ६२ ॥ * युद्ध में † अपराधी ‡ मुरदों के ॥ ६३ ॥ १ अमरा नामक ॥ ६४ ॥ २ लोथ (मृतक शरीर) ३ आदर पाया हुआ ४ फैलाई ॥ ६५ ॥ ५ इसीप्रकार बेगवाला ६ ब्राह्मण का ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ७ कही ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ८ रामहड़ा के पति ने ९ चोरों की पंक्ति के ॥ ७० ॥ १० पूर्व दिशा को चला ॥७१॥ ११ भय ॥७२॥

दुव२ घायल इत१के भये, इक१उतको घुर धाइ ॥
आर३ चउद्दसि१४ माघ११सित, रहिय गोमती२ आइ ॥७३॥
बुध४ पुण्णिम१५ दूजे२ दिवस, रक्खिय तत्थ मिलान ॥
भयउ चंद्र उपराग तँहँ, दये उचित सब दान ॥७४॥
वह तत्थहि काबन अधिप, नम्र नगम्मनि१ आइ ॥
श्रीजित अग्गैं जोरि सँय, परयो पाय खिंनपाइ ॥ ७५ ॥
अक्खी यह कुल पूरुखन, बिरचि अग्ग रन बाद ॥
अर्जुनसे लुट्टे इहाँ, तबतैं यह मरजाद ॥ ७६ ॥
अब सरनागत रावरे, इह सुनि उचित बिचारि ॥
सत१०० मुद्रा१ सिरुपाव २ सह, दिय श्रीजित हित धारि७७
नदी गोमती२ सौं तदनु, बाबाके मठ३ आइ ॥
क्रमि दामोदर दरस१ किय, रान४ मुकाम रचाइ ॥ ७८ ॥
श्राद्ध पिंड तारक५बिरचि, दान निगम बिधि दत्त ॥
जद्दव नृप जाड़ेचके, नयेनगर ६ पुनि पत्त ॥७९॥

पादाकुलकम् ॥

जाम जैंनन जाड़ेचा जादव, नयेनगर६ जसकर्ण१ धराधव॥
सम्मुह नाइसक्यो सु बालवय, साचिव आइ इक्क १ कोस जोरि सँय ॥ ८० ॥
तनि आदर लैगो पुर वह तब, महारूप१ अभिधान सुसाहब॥
रत्ति१रहि सु मानी महमानी, मानी बहुरि न आग्रह मानी८१

महमानी१ ग्रहमानी२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

जाँमि तत्थ जसकर्ण जनककी, साधन संजमें रीति सनककी
पुव्व समय याको हुव सगपन, सहर जोधपुर रामसिंह सन८२

१ मंगलचार ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ २ हाथ जोड़कर ३ समय पाकर ॥ ७५ ॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ४ वंश ५ भूपति ६ नहीं आ सका ७ हाथ जोड़कर
॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८ पट्टिन ९ सनक मुनि के समान योग साधती थी ॥ ८२ ॥

मूढ[1] बहुरि तिहिं राज्य गुमायो, पति और न यानैं तउ पायो ॥
निज भ्राता[2] दिनै जदपि निहोरिय, तउ न अन्य व्याहन मन मोरिय८३
तब गतदेस[3] मूढ वह हो तँहँ, पठयो तस डोलाहि राम पँहँ[4] ॥
जुहि इहिं व्याहि तथा जड़ जान्यौं, पुनि लै व्रत यह धर्म प्रमान्यौं८४
पति अपमान इहाँ मन पावत, सोदर घर ईम हमहिं सुहावत[5] ॥
यह कहि नयेनगर वह आई, पति संगति बहुरि न तिहिं पाई॥८५॥
तिहिं महमानी प्रसभ तनायो, मन्त्री नाहिं पै दुख न मनायो ॥
कच्छी हय जसकर्ण भेट किय, रचत प्रसभ तिनमैं इक१रक्खिय८६
नयेनगर६ वल्लभकुल नामी, हे नत्थेस नाम गोस्वामी ॥
करि तिन्ह दरसन१ भेट २ जथा क्रम, दूजे२ दिनहि चढयो सु अरिंदम[6] ॥ ८७ ॥
बदि २ तँपस्य १२ नवमी ९ जिहिं बासर, पहुँच्यो पुर मोरवी ७ धर्म पर ॥
तास अधिप सूच्यो सु बग्ध तँहँ, करत भयो हठ पुनि भोजन कँहँ ॥ ८८ ॥
महमानी श्रीजित सु न मन्निय, लंचामैं चउ४ काचपात्र लिय ॥
दरकुंचन बदि२ त्रयोदसी१३दिन, आइ रह्यो भंभाम ८व्रतिन ईन८९

घनाक्षरी ॥

जाँतबेर[10] याही पुर कीनौंही मुकाम जब,
चोरननैं चोरयो पल्लीवाल बहुरेको बैल१ ॥
श्रीजित करायो सब रीति अब ताको सोध,
जनन जनाई गहि राख्यो तिहिं कूटगैल[11] ॥

१सूर्ख २उस स्त्री के भाई आदि ने ॥८३॥३गये हुए देशवाले४रामसिंह के पास ८४ ॥ ५ इस कारण भाई का घर सुहाता है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ६ शत्रुओं को दंड देनेवाला ॥८७॥७फाल्गुन ॥ ८८ ॥८भेट (नजराने) में ९ व्रत (नियम) वालों में सूर्य ॥ ८९ ॥ १० जाते समय ११ पर्वतों के संगम के मार्ग (नले) में

औ हैं वह अजहु चलाइ मन नामी चोर,
जामिक१ जमाइ फौर२ फेरहु परिधि फैल ॥
दाव रावरेमैं परिजाइजो असह दुष्ट,
खूंटिजाइ तौतो धनिकनको इतहु खैल३ ॥ ९० ॥
सिविरके जामिक जमाये गूढ श्रीजितनैं,
चित्तहिं चलाइ पैठो रातिमैं वहहि चोर ॥
चालुक्य दलेल१ खदिराटै गुटिका चलाइ,
मारि सुहि लीनौं महा चौरनको सिरमोर ॥
लीनों सिर काटि सो दिखायो पुरलोकनकौं,
आइ तिन सूची यह सोही दुष्ट नहिं और ॥
पीछैं दरकुंच धरनीधर९ पधारि पंथ,
व्है संचोर१० सहर जरूर पहुँचे जालोर११ ॥ ९१ ॥
दूजे२दिन लागो मधु१ मासको असित२ आदि१,
मानौं इम जालोर११हि होला१५।१फुल्लडोल१।२ सह ॥
जालउर११ तैं चढि द्वितीया२ दिन धारि जव,
अध्वनीन पल्ली१२ पुर आये अप्रबुद्ध अह ॥
भेजे तहँ पत्र जोधपुरतैं बिजय भूप,
गेही व्है पधारो गेह थानि इहाँ पानिग्रहैं ॥
मानी सो न मानी दरकुंच मधु१३ मेचक२की,
एकादसी११ कीनौं आइ पुष्कर१३ समस्त सह ।९२।
दरसन१ न्हान२ दान३ तत्थ करि ताही दिन,

१पहरायतों के २ समूह का घेरा ३ दुःख मिटजावै ॥ ९० ॥ ४ डेरे के पहरायत ५ खैराड़े सोलंखी ने गोली चलाकर ॥ ९१ ॥ ६ चैत मास के बदि पक्ष का प्रथम दिन ७ यह मार्ग चलनेवाला पालीपुर में ८ नहीं जानेहुए दिन में ९ राजा विजयसिंह ने १०वानप्रस्थ से गृहस्थी होकर ११ यहां विवाह ठान (कर) के घर जाओ १२ उस मानवाले ने यह बात नहीं मानी १३ चैत्र बदि ॥ ९२॥

मग्ग कछु लंघि मकड़ावली१४ करि मुकाम ॥
दंतधृति१८३२ संबतके चैत१ सित१ आदि१ द्यौंस,
आये इम आपुनैं वरोदिया१५ नगर नाम ॥
रामनवमी ९ के दिन बुन्दी१६ आइ रंच रहि,
धारी रहिबेकी ठानि केदारेस ढिग धाम ॥
बाग१ कुंड२ महल बडे जबे बनाइबेकौं,
दीनौं आप सासन हजारन खरचि दाम ॥९३॥

आर्यागीतिः ॥

इहि बिधि पच्छिम३५वारी, जाज्ञा करि बानप्रस्थ३ पनमैं जानैं ॥
बसुधातल बिस्तारी, निर्मल निज किति चंद्रिका इक१ न्यारी ९४

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ विष्णुसिंहचरित्रे आटोणकोटाकटकपराजितकोटानिष्कासितकोटाबन्धुदेवीसिंहधात्रीभ्रातृजसकर्णसहितजयपुरगमनश्रीजिद्राज्ञीराष्ट्रकूटीतनुत्यजनकोटाबुन्दीमन्त्र्यैकमत्यकरणरुहिल्लभीतलखनऊपतिनव्वाबस्वसहायार्थांगरेजकाशीपुरप्रदानत्यक्तफैजाबादलखनऊस्वराजधानीविधानकृतद्वारकाधीशदर्शनश्रीजित् (उम्मेदसिंह) बुन्दीप्रत्यागमनं द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥ आदितः ॥ ३५२ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

---

१ शीघ्र ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें विष्णुसिंह के चरित्र में कोटा के राजवी, देवसिंह का आटोण में कोटा की सेना से हारकर, कोटा से निकालेहुए जसकर्ण धायभाई सहित जयपुर जाना १ श्रीजित की स्त्री राठोड़ी का शरीर छोड़ना और कोटा व बुन्दी के मंत्रियों का एकता करना २ रुहेलों से घबराकर अपने सहायक अंगरेजों को लखनऊ के नवाब का, काशीपुर देना और फैजाबाद को छोड़कर लखनऊ को अपनी राजधानी करना ३ श्रीजित (उम्मेदसिंह) का द्वारकाधीश के दर्शन करके पीछे बुन्दी में आने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ॥२॥ और आदि से तीनसौ बावन३५२मयूख हुए॥

॥ दोहा ॥

जत्ता श्रीजित करन जब, पच्छिम३।५ किय प्रस्थान ॥
तब बुंदी पठयो तिलक, मरुपति बिजय समान ॥१॥
इक१ मनि भूखन इक्क१ इभ, दुव२ हय दुव२ सिरुपाव ॥
इम टौंका पठयो इहाँ, समतों रीति स्वभाव ॥२॥
तिलक निवेद्यो आइ तिन, विष्णुसिंह२००।२ नृप अग्ग ।
दिन्नी हय१ सिरुपावदे, उनको सिक्ख उदग्ग ॥३॥
भूत कथा कछु भाखिपत, पँहु अब पाइ प्रसंग ॥
जिम उदंत मेवार हुव, सुनिये तिम हित संग ॥४॥

॥ राजसवत्तिका ॥

अग्गैं उदैपुर रान संग्रामकै धात्री तँनै नगराज मुसाहब ॥
केसरीसिंह सलूमरि सासक जो भन्यौं सो भट मुख्य हुतो जब
विग्रह ता१के तथा नगराज२कै बोलनमैं बढतो परिगो तब ॥
सूँछनवारी सिंवा कहतो इम राउतकौं नगराज मरयो अब।५।
राउतकी करि काँनि तथापि कह्यो तस मानि करयो हित रानतो
सोमरिबे लग्यो केसरीसिंह पटुत्वं न पुत्रनमैं पहिचानतो ॥
गो जसवंतहु देवगढेस जहाँ हित पुच्छन संभव जानतो ॥
केसरीसिंह कह्यो तब ताहि रह्यो अब रानकै तूही प्रधानतो६
पाटव नाँ ममपुत्रनमैं तिन मूढनकी अब लाजहै तोकर ॥
सो सुनिकैं बिसवास बढाइ धरीक रह्यो जसवंत चल्यो घर ॥
पंथमैं भाख्यो नहै निज पूत भरोचित यौं अब देत हमैं भर ॥

१ यात्रा ॥ १ ॥ २ बराबर की रीति से ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ हे राजा रामसिंह ३ अब कुछ कथा गयेहुए समय की कहता हूं ॥ ४ ॥ ५ धाय का पुत्र ६ मूंछोंवाली स्यालनी (गीदड़नी) ॥ ५ ॥ ७ अदब ८ पुत्रों में चतुर पना नहीं देखता था (अपने पुत्रों को चतुर नहीं जानता था) ॥ ६ ॥ ९ चतुरपन १० इन मूर्खों की लज्जा तुम्हारे हाथ में है ११ अपने पुत्रों का भरोसा नहीं है इस कारण हमको

संगव्है[1] राउतके चेर सो सुनि दोरि कही निजस्वामिसौं सत्वर॥७॥
मानित[2] सेसह्यो राउत पै सुनि दर्प्पको बैन कह्यो जसवंत सु॥
बंट्टसौं[3] ताकहँ पीछो बुलाइ बंच्यो[4] नहिं तोबस मो सुत धी[5] वसु॥
जेठो१ कुबेर१ छमाजुत पै[6] लहुरो सबसौं यह लाल अहो अँसु[7]॥
रावरे लैन बिधी[8] रचिहै पुनि धीजिहोतो अब छीजिहो ज्यौँ पसु।८।
राउत बैन ए राउतके सुनि आयो निगूढ[9] बिरोध सम्हारिकैँ॥
राँउत[10] अंत अनंतर रान कुबेर गिन्यों तिहिठाँ सतकारिकैँ॥
भो अरिसिंह उहाँ जब भूप कर्यो जसवंत सुमंत्री बिचारिकैँ॥
केहरि सूनुनसौं[11] यौं कह्यो तुम कट्टहु काल स्वगेह सिधारिकैँ।९।
साँझ हवेली सलूमरिकी यह सासनै[12] राउत१ रान२को आवत॥
राति सो काटी दुखी रहिकैं कहिकैं खल सो नृपको बहिकावत॥
लै सब भ्रातन प्रातही लौंल[13] महा ठिग ड्योढी गो सोक मचावत॥
ऐसैं दई नृपकौं अरजी क्रमिहैं हम छ्वै[14] प्रभुके पय पावत॥१०॥
सद्मके[15] जावनको नहि सोक पै जैहैं अहो प्रभुकौं लखि जीवत॥
वञ्चसे ए सुनि लालके बैन बढ्यो सबके मन धोका चढ्यो बत॥
सोदर माँहि बुलाये सबै मिलवे लगी सीख तहँ छलके मत॥
स्याल[16] सो मारिच चूरन लेस छुवाइकैँ नैनन रोयो वृथा छत।११।
पूँछैँ[17] घनी हिचकी भरि पापँ[18] कह्यो अब दासतो जावत गेहकौं॥

भार देता है १ रावत केशरिसिंह के चाकर॥७॥ २ केशरिसिंह के प्राण कुछ ही बाकी थे तोभी ३ मार्ग में से जसवन्तसिंह को ४ कहा ५ हे बुद्धिमान मेरे पुत्र तुम्हारे भरोसे पर नहीं हैं ६ परंतु यहां छोटा पुत्र लालसिंह ७ तुम्हारे प्राण लेने की आश्चर्य युक्त ८ विधि रचेगा॥८॥ ९ जशवंतसिंह, केसरिसिंह के ये वचन सुनकर निश्चय ही गुप्त वैर विचार कर आया १० केशरिसिंह के मरे पीछे ११ केशरिसिंह के पुत्र से॥९॥ १२ जशवन्तसिंह और महाराणा का हुक्म १३ बडा ठग लालसिंह १४ स्वामी के चरण छू (स्पर्श) कर॥१०॥ १५ घर जाने का १६ वह गीदड़ (ठग) मिरच का चूर्ण थोड़ा सा नेत्रों के लगा कर विना घाव रोया॥११॥ १७ बहुत पूछने पर १८ पापी ने

नैक *विविक्त मिलैंतो †निदान दिखाइ कहैं सुभ ^६ई प्रभु देहकों॥
भीत ‡मनोबस सो सुनि भूप निगूढलै पूछे जनावत नेहकों ॥
लंबे निसास कह्यो तब लाल महा ठिग छोरत अश्रुन मेहकों ॥१२॥
जो प्रभु मंत्री करयो जसवंत सो बालिस स्वामिसौं द्रोह बिचारत॥
पुण्यसौं आपसो पाये प्रभू हम पाये सबै सुख यामें निहारत ॥
पापिनी जीभतो काटीपरैं पर पापी स्वघातपैं हाथपसारत ॥
नाथके आनि पितृव्यक नाथ धनी करिहै यौं कहै हमैं धारत॥१३॥
पायो हुतो हम लेख प्रमानको वृष्टिमैं क्लिन्न सुतो बिगरयो गयो ॥
सत्यकरैं हम रावरे सौंह नतो सुरनाँ जो प्रबोध परयो गयो ।
हेरतहे पुनि पैबो प्रमान इतेबिच काढिही दैबो अरयो गयो ॥
पेखिबो यातैं चहयो प्रभुको रु कहयो प्रभुतो अब ख्यात करयो गयो ॥ १४ ॥
यामैं प्रमान लखो बें यहै जसवंतसौं गूढ कह्यो तुम जाइकैं ॥
पापी पितृव्यक बगघपुरेस निपातहु नाथ बिसास बढाइकैं ॥
जो तुम यौं न करो जब तो हमरे तुमनाँ यौं गिनैं हम हाइकैं ॥
एह करैं जसवंत तो आप कुपात्रन देहु हमैं निकसाइकैं ॥१५॥
दासनकौं अथवा दै निदेस निहारहु नाथ पितृव्य निपातितैं ॥
चामर१ छत्र२न लैबे चल्यो मन जाको अहो अधमाधम सौंम्मित॥

* एकान्त † इस रोने का कारण दिखाकर ‡ मन में भय बस कर १ एकान्त में लेकर ॥ १२ ॥ २ वह मूर्ख ३ हमनै इसीमें सब सुख पाये हैं ४ आप को मारने पर ५आप के काका नाथसिंह को स्वामि बनावेगा ६इसकारण हमको कहता है ॥ १३ ॥ ७ इसके प्रमाण का लेख (पत्र) पाया था सो तो वृष्टि में भीज कर बिगड़गया ८कानों में ६ प्रसिद्ध किया गया ॥ १४ ॥ १० अब ११ गुप्त रीति से १२ पापी बागोर के पति हमारे काका १३ नाथसिंह को मारो १४ तुम हमारे नहीं हो ॥ १५ ॥ १५ चाकरों (हम) को हुक्म देकर १६ नाथसिंह को मराहुआ देखो १७ नीच के सदश

स्वामिको सासनही सिर लै हम मारैं पिताहुकौं धार नहीं हित ॥
भीम कुबेर तनैहू[1] भन्यौं यह काका कह्यो सुहि जान्यो असांकित १६
मनस्वी[2] हुतो अरिसिंह तथापि सिख्यो सुहि केहरि नत्तियकी[3] सुनि ॥
आसु हवेली पठाइ इन्हैं चलचेत[4] न सोच्यो सुनी निहचै चुनि ॥
जो निज काका१ तथा जसवंत परस्पर मित्रहे हेरी सुपै पुनि ॥
देवगढेस गिन्यों बदल्यो नृप नंदसौं[5] मल्लियनाग जथा मुनि ॥१७॥
सो जसवंत हुतो मन सुद्धहि चित्तहु स्वामिसों द्रोह न चाहत ॥
एक सलूमरि पैं अनरुप्यो१ बहुरयौं हित नाथके साथ निबाहत[6]॥
लालके जालमैं यौं उरझ्यो सकली अरिसिंह भली न समाहत
जालम[7] कोटा रच्यो बिधि जो सु उदैपुर भो उलटी अवगाहत १८
जसवंत बिबिक्त[8] बुलाइ जहाँ अरिसिंह भन्यौं मम काका अहो ॥
प्रतिकूल रहैं रु चहैं प्रभुतां तिनकौं तुम गंजि इनौं१ कि गहो२॥
जसवंत कह्यो प्रभु आप जहाँ कछु द्रोह प्रतीति प्रमान कहो ॥
नहितो बिपरीत पितृव्य नहैं बहिके कहुँ क्यौं गुरुहत्या बहो १९
अरिसिंह कह्यो बिनु मंतुंहु[12] एह कह्यो हमरो तुम ज्यौंत्यौं करो॥
प्रतिकूल तुम्हैं नहि जानिपरैं हम जानत यातैं कलेस हरो ॥
जसवंत कह्यो हम मित्र जहाँ इम सासन मोहिकौं क्यौं दे अरो
यह औरकों सौंपिकैं मेरो उहाँ ध्रुव सूचन जानिकैं कारा[13] धरो२०
सुनिकैं यह राउतकी अरिसिंह स्वपच्छमैं जानि सलूमरिके ॥

---

१ कुबेरसिंह के पुत्र भीमसिंह ने भी कहा ॥१६॥ २ अरिसिंह वीर था तोभी ३ केसरीसिंह के पोते की बात सुनकर ४ चलायमान चित्तवाले महाराणा ने ५ नन्द नामक राजा से चाणक्य मुनि बदला था जिस प्रकार ॥ १७ ॥ ६ नाथसिंह से स्नेह रखता था ७ जालमसिंह झाला ने कोटा में रची थी वह रीति ॥ १८ ॥ ८ जसवन्तसिंह को एकान्त में बुलाकर ९ आश्चर्य युक्त १० उदय पुर का स्वामीपन चाहता है ११ बड़ा पाप लेते हो ॥ १९ ॥ १२ बिना अपराध है तो भी १३ कैद करो ॥ २० ॥

जसवंतसौं भाख्यो नमानों जहाँ कारि[1]हँ न स्वपच्छमैं केहरिके ॥
तनि [2]ब्याज बिसास यौं सिक्ख दै ताकों बलि[3]ष्ठ सहायहुमैं बरिके
बलि[4]वा ठिगकौं ढिग आप बुलाइ कह्यो अरि[5]मारि तथा औरिके॥
मत आपुनों जो न चहैं मनसौं सुहि सत्रुको पच्छ [6]समाइनौंहै।
बलि [7]बग्घपुरेसके संग बली [8]है हरैं उतकों सुपै ढाइनौंहै ॥
यह देवगढेसहु [9]छद्मी अमात्य बनीपैं बिगार निबाहनौंहै ॥
तुममाँहिसौं जो फटि [10]सूचैं तिन्हैं दुखदाता सुपै दव दाहनौंहै॥२२॥
पहु रान बिसासके यौं चउ पंच दु[11]घाँ पटु लालके संग दये।
जसवंतसौं छानैं [12]प्रबोधि यौं जे पहु बग्घ[13]पुराधिपपैं पठये॥
वह धर्म्म बिचच्छनैं[14] नाथ अहो भयहीन हुतो तँहँ सज्ज भये।
पठई कहि भूपतिके [15]पठये इह आये करैं कछु मंत्र अये ।२३।
वह बग्घपुराधिप नाथ उहाँ क्रम नित्यसमै सिवपूजा करैं ॥
इहिं ताही समै ढिग आवनकी पठई [16]कहिनौंतो बिलंबपरैं ॥
इकलालकौं आवनदेहु इहाँ हठ जानि यौं नाथहु भाख्यो हैं[17]
सठ जान्यौं मिल्यो यह ई[18]छसमै बहुमैं हम घातकक्यौं उबरैं२४

१ केसरीसिंहवालों के पक्ष में तुमने निकाल देने का कहा सो नहीं करेंगे २ झूठा विश्वास फैलाकर ३ बलवान ४ फिर उस ठग लालसिंह को पास बुलाकर ५ शत्रु (नाथसिंह) और उसके पक्षवालों को मारो ॥ २१॥ ६ शत्रु के पक्ष का कपड़ना है ७ बागोर के पति के साथ ८ छली ९ नाथसिंह को सूचना करदेवे तो १०दुःखदाई है जिसको भी अग्नि में जलाना है ॥ २२॥ ११ देवगढ के रावत जसवन्तसिंह और बागोर के महाराज नाथसिंह, इन दोनों ओर से चतुर अर्थात् उक्त दोनों ओरवालों को यह छल नहीं जतलाने वाले को जसवन्तसिंह के छाने १२ समझाकर १३ बागोर के पति के ऊपर १४ चतुर १५ महाराणा के भेजेहुए ॥ २३ ॥ १६ इस कहने में तो विलंब होता है परन्तु उसने शीघ्रता की, अथवा लालसिंह ने कहलाया कि आप से कहना है जिसमें विलंब होता है१७धीरे से कहा १८ अनुकूल(चाहाहुआ)समय ॥२४॥

खिनमैं तँहँ जाइ महाखलकी बलकी मनसुक्खपैं तेग वही ॥
सिर चाहत सूरको मानि मनों सिरपैं सिवकी रुचि जाइ रही॥
सु महीप उमेद१९८ामभुत्वे समै क्रम प्रस्तुतठाँ सब बत्त कही
अब जैपुर राज्य उदंत३ इहाँ चहि सूचन सो पुनरुक्त चही ॥२५॥
दोहा-काका घातक सोहि करि, लघु१ गुरु२ संगत लाल ॥
भैंसरोरगढ दै भये, कुहके सु रान कृपाल ॥ २६ ॥
जिम चमके जसवंतकौं, निजाखिन पाइ निकारि ॥
भय बिरहित अरिसिंहभो, ध्रुव भीमहिं निज धारि ॥ २७ ॥
भाखी जिम पहिलैं भये, सहित रान संग्राम१ ॥
जगत२ पता३ अरु राजहरि४, ते न बचे बिधि लाम ॥ २८ ॥
पंचम५ अब लहि पट्टकौं, भो अरिसिंह भुवाल ॥
सोपैं जानहु प्रभु सुमति, क्रम सम भूतहि काल ॥ २९ ॥

॥ राजसवतिका ॥

केहरि१को सुत जेठो कुबेर२ नहो तँहँ भीमसु हो तस नंदन
ताको पितृव्य छली इस तत्थ महाखल लाल कहायो महामेंन
जैपुर व्याही सुता जसवंत सुही अवलंब बिचारि कियौ सन ॥

१ रावराजा उम्मेदसिंह के राजापन के समय में क्रम पूर्वक २ प्रकरण के स्थान पर आगे की सब बात कही है ३ अब यहां जयपुर राज्य का वृत्तान्त चाह कर फिर इस बात को कहना चाहा है ॥ २५ ॥ ४ काका के मारनेवाले उस लालसिंह को छोटे से बड़ा बनाया अर्थात् छोटे उमरावों में था जिसको बड़े (सोलह) उमरावों में किया ५ उस ढंग पर राणा कृपालु हुआ ॥ २६ ॥ ६ भय से दूर हुआ, निश्चय ही सलूंबर के राउत भीमसिंह को अपना जानकर ॥ २७ ॥ ७ राजसिंह ८ तहां ये नहीं रहे ॥ २८ ॥ ९ क्रम से १० भूत काल (गत समय) ही जानो ॥ २९ ॥ केशरीसिंह का बड़ा पुत्र कुबेरसिंह उस समय नहीं था, उस का पुत्र भीमसिंह ही था, जिसका काका लालसिंह इस प्रकार ११ वीर कहलाया १२ उपाय से

भीत उहाँ पहुँच्यौं भयतैं सुत राघवदासकौं सौंपि धरा धन ॥३०॥
सूनुगुपाल पुरोग समेत घनैं भय गो जसवंत सुताघर ॥
पुत्री समेत उभै२सुत पुत्रीके आपुनैं जानि प्रधान बन्यों अर ॥
यौं अरिसिंह सलूमरि सासक भीम प्रधान कर्‌यो निज दै भर॥
आपुनैं औरँ गिन्यों नहि याहित पंच रु राना२ रँचे न परस्पर॥३१॥
याहितैं पीछैं बिरोध उठ्यो सिसुपै प्रकट्यो वह रत्नसनामक॥
कुंभिलमेरु निवास कर्‌यो रु धर्‌यो बटि अर्द्ध½ धरा१धन२धामक३॥
ह्वैगयो नास हजारनको रन दक्खिन२।३तैं दुव२बेर बिरामक॥
सो तिम पीछैं हन्यों अरिसिंह भयो नृप हम्म बढे भट भ्रामकै॥३२॥
जैएरहो तबतैं जसवंत समाश्रय पाइ सुता१रु सुतासुत२ ॥
रानीहू राखि पिताही प्रधान भुजा तस राज्यको भार दयो द्रुत॥
औ इक१ बिप्र१ महावत२ इक्क१ उभै२ भुज१।२ए रु रह्यो सिर
२।३ राउत ॥
राज्यको काज सिसुप्रजारानिप१जो करैं सो सब या त्रिक३संजुत
ए कछवाहनके उरमैं नहिं मावत तीन३ जुते धुर नायक ॥
चपारि४नकों इम कैद चहैं दुरबिधा बटि द्वै२द्वै२जथा दुखदायक ॥

१ अपने पुत्र राघवदास को देवगढ का ठिकाना और धन देकर ॥३०॥ २ पहिले गयेहुए अपने पुत्र गोपालसिंह सहित ३ पुत्री के घर (जयपुर) गया ४ अपनी पुत्री [माधवसिंह की राणी] और ५ पुत्री का पुत्र दोहिते पृथ्वीसिंह और प्रतापसिंह सहित अपना जानकर ६ शीघ्र ७ दूसरे को अपना नहीं समझा ८ इसीकारण मेवाड़ के पंच सरदार और राणा अरिसिंह परस्पर नहीं राचे [रंगे] ॥ ३१ ॥ ९ कृत्रिम बालक रत्नसिंह भी पैदा हुआ १०. नाश करनेवाला ११ हम्मीरसिंह राणा हुआ १२ धूर्त उमराव बढे ॥ ३२ ॥ १३ श्रेष्ठ आश्रय पाकर १४ बेटी और दोहितों का १५ पिता जशवंतसिंह को ही सचिव रखकर १६ शीघ्र १७ बालक सन्तानवाली रानी ॥ ३३ ॥ चारों का १८ दो भाग करके यथासंख्या से दुःखदायक कैद किया चाहते हैं जिनमें राजा पृथ्वीसिंह की

न्यारे नरेस प्रसू१रु नरेस२ ए भिन्न करैं दृगकैद अभायक ॥
बिप्र१३ रु मिच्छ१४ छली बलसौं धरि कारा करैं निज कज्ज
बिधायक ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

दिट्ठिकैद बिच ए दुरघाँ, रानी१ अरु नृप२ रक्खि ॥
द्विज१ रु मिच्छ२ कारा दुवरहि, सठ डारँहिं सब सक्खि ३५
नाँनाँ१ मंत्री नृपतिको सुत२ जुत ताहि निकासि ॥
क्यौंन अमल अपनों करैं, तेगन बल खल त्रासि ॥ ३६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

राजाउत१ नाथाउत२ थंभ राज्यके जे थिर,
प्रीत बनि अर्थपैं दिखाइ हठवारी प्रीति ॥
रानी१ अरु राजा२ भिन्न भिन्न दुव२ ठाम रोहि,
नाँनाँ१अरु माँमाँ२द्वैरनिकासिबो समुझि नीति ॥
बिप्र१रु महावत२कों भिन्न ठाँ निगंडबंधि,
आपुनों सम्हारि राज्य टारहिं अरिनईति ॥
ऐसी सोचि कूरम बिचारैं निज दाव आयो,
जानैं भाव आयो मुख्य रहिहैं सबन जीति ॥ ३७ ॥
माधवमहीप लघुता१सौं गुरुता२मैं लाइ,
आगैंखुसहालीराम१ सो द्विज खँडेलवार ॥
मंत्री करि मान्यों पुनि रानीसौं कह्यो मरत,

१माता और राजा को २नजर कैद जुदे करदेवें और खुशालीराम बोहरा और ३फीरोजखां महावत को ४कैद करके विधान पूर्वक अपना कार्य करैं ॥ ३४ ॥ ५ नजरकैद ६ कैद ॥ ३५ ॥ ७ राजा के नाना देवगढ के रावत जशवंतसिंह को पुत्र सहित निकाल कर ८ तरवारों के बल से ॥ ३६ ॥ ९ रोककर १०कैद करके ॥ ३७ ॥ ११ राजा माधवसिंह ने १२ खुशालीराम ब्राह्मण को छोटे से

याके बस दुर्ग१ रु खजानाँ२ नीति अनुसार ॥
दूरकरि या१कों नहिं और२ कों उचित देबो,
यातैं हुतो ताही के अधीन उक्त अधिकार ॥
त्यौं फीरोज२ नाम सु महावत बढायो तानैं,
द्रव्य कर लावन हुतो सो तहसीलदार ॥ ३८ ॥
राजसिंह ३ नामक हमीरदेव कूरमके,
बंसमैं हुतो जो लघुपंतिबिच बारगीर ॥
नासरदानैर दै बढायो सोहु माधवनैं,
सेनानी बनायो स्वामिधर्म्मके समुझि सीर ॥
माधवके मरत उतारयो अधिकार याको,
पीछैं सब ओर लखी प्रसरी प्रजापैं पीर ॥
सेखाउत पीछो लै मनोहरपुरहिं सजे,
सोहि तब सेनानी बहोरि कीनौं गिनि बीर ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामिधर्मपन दर्प सठ, राखतहो यह राज ॥
राजकाज बिगरत रहयो, लोपि बहहु बह लाज ॥४०॥
राजाउत वाहि न रुचत, देखि पट्ट दायाद ॥
वह३।१ न रुचत राजाउतन, बहुरा२ जुत नुंत बाद ॥ ४१
कीरतिसिंह कालायको, ईस जु पुब्ब अनेह ॥
बहुरी द्विज किय हीन बल, बैर वहत अब एह ॥ ४२ ॥

बडा धनाकर १ गढ २ हासिल का धन लाने को ३ अपना भार आप उठाने-वाला छोटा नौकर था ४ सेनापति ॥ ३९ ॥ यह ६ मूर्ख ७ राजसिंह स्वामिधर्मिपन का घमंड रखता था ॥ ४० ॥ ८ जयपुर के पाट के दायभागी होने के कारण राजावत उसको नहीं रुचते थे ९ बहोरा खुशालीराम सहित १० स्तुति के वचनों से राजावतों को नहीं सुहाते थे ॥ ४१ ॥ ११ पहिले समय में १२ वह वैर रखता था ॥ ४२ ॥

पै अतिवृद्ध झलायपति, आयु बितावत औन ॥
बखतावर१ तस सुत तकत, लहि खिन बैर सु लौन ॥४३॥

॥ घनाक्षरी ॥

बिप्र बहुरा जो खुसहालीराम१ साक्ष्यो बुध[2],
अहित झलायको हुतो जिहिँ प्रसभं आनि ॥
माधव महीपतिकौं गेरि निज सम्मतिमैं,
कीनौं सत्रुसाल२ तुल्य सुभट बढाइ कानि ॥
काका बखतावर१ को हो यह सेता२ कुमति,
जानैं तिय खीचि१३निपैं लाभ सु दुलभ जानि ॥
पतिके नियोग[4] लैं झलाय उपमेय[5]पन,
पाइ राखी[6] राखी खुसहालीराम द्विज पानि ॥ ४४ ॥
पिप्पलदा १ यातैं राजधानीकौं बितरि पुरी,
सत्रुसाल द्विजनैं करयो इम झलाय साल ॥
दाबि बलसौं सो बलसौं जो तिन दाब्यो देस,
किंत्ति हरि कीनौं बिधि सिधिसौं तब बिहाल ॥
माधवके मरन अनंतर समय मत्त,
जैपुर प्रसारि बखतावर कुहक जाल ॥
ठानि बहुरेको पकराइबो स्वमति ठीक,
चिंतैं हनिडारिबो जथातथ अहित चाल ॥ ४५ ॥
राजाउत१ नाथाउत२ इनकै सदा बिरस,

१घर में ॥ ४३ ॥ २ चतुर ३ खोटी बुद्धिवाला शत्रुशाल ५ झलाय के पति की जिसको उपमा लगे ऐसे शत्रुशाल अपने पति की ४आज्ञा लेकर खीची जाति की स्त्री ने खुशालीराम ब्राह्मण के हाथ में ६ राखी रक्खी (राखी बांधी) ॥ ४४ ॥ इस कारण पीपलदा नाम राजधानी ७ देकर ८ खुशालीराम ने शत्रुशालको झलाय का शाल कर दिया, जिस देशको झलायवालोंने बल से दबा लिया था उसको इसने बल से दबाकर ६ कीर्तिसिंह को विहाल किया १० बखतावरसिंह ने जयपुर में ठग जाल फैलाकर ॥ ४५ ॥

हो तिस फल्यो सु लखो दिष्ट फल हाइ हाइ ॥
ए उभैर कहुँक एक१ ओकहु बनत अनूप२,
असैं प्रभु राज्यकों नसैवे लगे अनखाइ ॥
नाथाउत चोमूँपति पहिले सबै अनखि,
जैपुर बिहाइ करयो जोधपुर बास जाइ ॥
चोमूँके ठिकानैं तब नारव प्रताप चाहि,
बैठारयो नरूका राजगढ पुर वै बढाइ ॥४६॥
एक१ मुख्य बैठक दुर२ठाम भई ताहिनतैं,
चोमूँपति पीछैं आइ आपुनैं वहहि चाहि ॥
वंछत भयो मन नरूकेको बिगार कारि,
त्योंही जयनैरतैं निकारयो भ्रम डारि ताहि ॥
तुरगी कितेकनसौं जट्टके निवासि तानैं,
दिल्ली देखि बूडत समीपके सुहृद दाहि ॥
लोलुपनैं द्वैहिंधाँ बिचारिराख्यो लहु लोभ,
जैपुरसौं जानैं त्यौं न जैपुरके जानैं जाहि ॥४७॥
जैसैं झल्ल जालम भो कोटामैं महाकुहक,
नारव प्रताप तैसैं जैपुरको चिंति नास ॥
अंतर१ मिलाइकैं झलापके कुमर१ आदिं,
बाहिर२ बढाइ मोघ बहुतनकै बिसास ॥
भूपतिको बिद्यागुरु राजा जो बजत भट्ट,

१भाग्य के फल से २ एक घर में भी ३ अपने स्वामी के राज्य को ४ छोडकर ६ राजगढ के पति ५ नरूके प्रतापसिंह को बढाकर चोमूं की बैठक पर बिठा दिया ॥ ४६ ॥ ७ उस प्रतापसिंह ने कितने ही सवारों से जाट के भरतपुर में रहकर ८ नजीक के मित्रों को जलाकर उस ९ लोभी ने १० दोनों ओर ॥४७॥ जैसे कोटा में झाला जालमसिंह ११ महाछली हुआ तैसे १२ नरूके प्रतापसिंह ने जयपुर का नाश विचारा १३ झूठा

भेद्यो सो सदासिव मुसाहबी करन भास[1] ॥
याहीकौं निमित्त[2] राखि बिप्र१ रु महावत२कौं,
कैद करिबेको फंद डास्यो पाइ अवकास ॥ ४८ ॥
बात न रहत बंध तीजे३के श्रवन बिसी[3],
जानि सोही बिप्र१ रु महावत२ हवेली जाइ ॥
[4]अंतेउरडोढी जसवंत३कौं पिहित[5] आनि,
भूत१ भावी२ रानीको सुनायो सब समुझाइ ॥
भट१ अरु राजाउत्त२ नारव३ मिलि रु भये,
रोधक[6] हमारे१ रहिहैं जे राज्य बिगराइ ॥
जैपुरकी सीमामैं न चुंडाउत राखिहैं[7] जे,
पुत्र१सौं न तुम२कौं मिलैहैं३ कारा पटकाइ ॥ ४९ ॥
सोहि सुनि रानी हठ आनि इन्ह[8] सम्मतिसौं[9],
नारव प्रताप१ सीख दैकैं पठ्यो निकेत[10] ॥
राख्यो भट बिद्यागुरु२ ताहीके निलय रुंद्ध[11],
संगी तास सचिव३ कितेक रोके समवेत[12] ॥
पंथहीसौं पीछो मुरि आयो सुनि सो प्रताप,
पैठन दयो न पुरमैं तब [13]अँघउपेत ॥
केते देस जैपुरके लूटि१ अपनाइ२ केते,
दुष्ट गो निजालय[14] अनेकनकौं दुखदेत ॥५०॥
जैपुरतैं कटक[15] प्रताप पर भेज्यो जब,
बाहिर१ तो सासन[16] दिखैबो छलसौं बिचारि ॥

---

१ मुसाहबी करना प्रकाश(प्रसिद्ध) करके २ कारण ॥४८॥ ३ तीसरे के कान में घुसी हुई ४ जनानी डोढी पर रावत जसवंतसिंह को ५ छाने लाकर ६ हमारे कैद करनेवाले ७ कैद में डालकर ॥४९॥ ८ इनकी सलाह से ९ निकले प्रतापसिंह को १० उसके घर भेजा ११ उसीके घर में बंध रक्खा १२ उसीके साथ रोके १३ पाप सहित पापी को १४ अपने घर गया ॥५०॥ १५ प्रतापसिंह पर सेना भेजी १६ प्रसिद्ध में तो

अंतर२मैं सारे कछवाहन अरुचि आनि,
नारवसौं नेह कैं रची जिन कपट रारि ॥
चुंडाउत१ बिप्र२ रु महावत३ बिगारे चहि,
पापिननैं लाख वीस २०००००० मुंद्राको खरच पारि
आपनी१ पराई२ कछु न गिनी पकरि आँट,
धूमिडारी धरनि खिजे गजकी धक धारि ॥ ५१ ॥
जैपुर सुभट ऐसैं राजगढदुर्ग जाइ,
वासर कितेक लरे मोघैंहि बिरचि व्याजें ॥
प्रत्युत दिखाइकैं प्रतापको बलिष्टपन,
कूरमन कूँरन बिगास्यो निज स्वामि काज ॥
दीसिबेलगी वं पुर१ देस२के प्रजादिकन,
राखिहैं जो तीनों३ उक्त पहिले सचिव राजें ॥
नारवके सम्मत बिनाँ तो निबहैन नैंक,
ऐसे उपद्रवमें अधीसको बिभव आज ॥ ५२ ॥
दोहा–नारव जैपुर आनिबो, करिबो तस अनुकूल ॥
दुखटारिबो तव देसको, मान्यौं मंगल मूल ॥ ५३ ॥
सिसु समान हारे समुझि, रानी१ अरु नरराय२ ॥
ओंकारयो नारव इहाँ, दे दलों सबन सहाय ॥ ५४ ॥
नारव तव प्रतिभू चहयो, सेखाउत नवलेस१ ॥
पुर झलायको कुमर२ पुनि, नृप लिपिका दल लेस३ ॥५५॥

आज्ञा दिखाई १ नरूके प्रतापसिंह से स्नेह करके २ बीस लाख रुपयों का ३ खिजे हुए हाथी की धक को धारण करके ॥५१॥ ५ छल करके कितनेक दिन ४ झूंठी लड़ाई लड़ ६ उलटा प्रतापसिंह का बलवानपना दिखाकर ७ मूर्ख अथवा झूठे कछवाहों ने ८ अब पुर के और देश के प्रजा आदि को दीखने लगी कि ऊपर कहे हुए पहिले तीनों सचिवों को राखेंगे तो ९ राज्य में नरूके (प्रतापसिंह) के विना ॥५२॥५३॥ १० नरूके को बुलाया ११ पत्र देकर ॥ ५४ ॥ १२ जमानत देनेवाला जामिन चाहा १३ राजा का लिखाहुआ छोटा सा पत्र ॥ ५५ ॥

वलेस १ ललेस २ अन्त्यानुप्रासः १॥

तब जैपुरतैं कारि तिमहि, बुल्ल्यो नारव नीच ॥
बहुरा१ पठयो लैन बलि, बहु आदर२ मग बीच ॥ ५६ ॥
परयो बुलानों सब पट्टन, नारव इम जयनेर ॥
पुनि तैदिष्ट करनौं परयो, बीसारि मंतु१रु बैर ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे सलूम्बरेशकेशरिसिंहान्तिमसमयकुशलप्रश्नप्रयातदेवगढेशज सवंतसिंहवाक्कलहवर्द्धनतन्निमित्तकृतकुहककेसरिसिंहपुत्रलालसिंह जसवन्तसिंहमेदपाटनिष्कासन १ जसवंतसिंहजयपुरगमनराणाारि सिंहादेशनिहतनगधोरपतिमहाराजनाथसिंहलालसिंहमहाभटपदग्रह णा २ स्वपक्षसमानीतस्वपुत्री (जयपुरेशमाधवसिंहराज्ञी) दौहित्र (जयपुरेशपृथ्वीसिंह) जसवन्तसिंहजयपुरसचिवीभवनकूर्मतद्विरोध वर्द्धन ३ जयपुरामात्यमिथोद्वेषसभैकासनहेतुचोमूँराजगढविद्वेषराज गढेशनारवप्रतापसिंहजयपुरनिष्कासन ४ राजगढप्रयातजयपुरसैन्य

॥ ५६ ॥ १ चतुरों को २ इसप्रकार नरूके को जयपुर में बुलाना पड़ा ३ उसका चाहाहुआ ४ अपराध और वैर भूलकर ॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंह के चरित्र में, सलूम्बर के पति केशरीसिंह के मरते समय आराम पूछने को गये हुए देवगढ के पति जशवंतसिंह से वचनों का विरोध बढना और उसी कारण से केशरीसिंह के पुत्र लालसिंह का ठग विद्या करके जशवंतसिंह को मेवाड़ से निकलवाना १ जसवंतसिंह का जयपुर जाना और राणा अरिसिंह की आज्ञा से लालसिंह का वागोर के पति महाराज नाथसिंह को मारकर बड़े उमरावों की पदवी लेना २ रावत जशवंतसिंह का अपनी पुत्री (जयपुर के राजा माधवसिंह की राणी) और दौहित्र (जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह) को अपने पक्ष में लेकर जयपुर का सचिव होना और कछवाहों से उसका विरोध बढना ३ जयपुर के सचिवों का परस्पर द्वेष और सभा की एक बैठक होजाने के कारण चोमूँ और राजगढ में द्वेष होना और राजगढ के पति नरूके प्रतापसिंह का जयपुर से निकालाजाना ४ राजगढ पर गई हुई जयपुर की सेना के छलयुद्ध से नरूके प्रतापसिंह का बलवानपना प्रसिद्ध होकर उसको जयपुर में बुलाने

च्छलयुद्धनारवप्रतापसिंहबलवत्त्वप्रथनतज्जयपुराऽह्वानं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥ आदितः ॥ ३५३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—इम प्रताप नारव वहै, आयो जैपुर अत्थ ॥
ईष्ट[1] प्रसारयो आपुनौं, तिम बिन्नति लखि तत्थ ॥ १ ॥
याकी सम्मति पाइ इन, कैद महावत[1] किन्न ॥
यातैं साहस दम्म[3] अरु, लक्ख सत्त ७००००भरि लिन्न ॥२॥
है बहुदार[2] को चहत हित, भट नाथाउत भीर[1] ॥
अरु यह पटु[4] इम उब्बरयो, नौविक[5] जह द्रह नीर ॥ ३ ॥
कीरतिसिंह कुमार अरु, धूलापति रघुनाथ[2] ॥
राजाउत दोउ[2]न, रच्यो सेस विरोधिन साथ ॥ ४ ॥
चुंडाउत जसवंत इक[1], राउत देवँगढेस ॥
राजगढेस[8] प्रताप इत, आन्यौं जैपुर एस ॥ ५ ॥
दोउ[2]न इन करवाइ दिय, मन इन दोउ[2]न मेल ॥
पै फुट्टे खप्पर[9] प्रतिम, खलन मिलन मय खेल ॥ ६ ॥
करि नारव प्रमुखन[10] कथन, कारातैं[11] खिंचि[11] काढि ॥
गेह जाइ विद्यागुरुहि, लायो नृप इभ[12] चाढि ॥ ७ ॥
प्रथितैं[13] प्रताप प्रतापको[14] बढिगो इम जिहिं बेर ॥
कोऊ काछुहु सकैन कहि, जिन[15] सिंह[1]हिं गज[2] जेर ॥८॥

का तीसरा मयूख समाप्तहुआ॥३॥ और आदि से तीनसौ तेपन३५३मयूखहुए॥

१ नरुका प्रतापसिंह २ अपना वांछित ॥ १ ॥ ३ दंड के रुपये लीये ॥ २ ॥ ४ वह चतुर भी था इस कारण ५ जैसे नाववाला गहरे जल से बचै तैसे बच गया ॥ ३ ॥ ६ बाकी के विरोधियों का साथ किया ॥ ४ ॥ ७ देवगढ के पति ने ८ राजगढ के पति प्रतापसिंह को ॥ ५ ॥ ९ फूटेहुए खप्पर के सदृश ॥ ६ ॥ १० नरुके आदि का कहना करके ११ बाकी की कैद से निकाल कर १२ हाथी पर चढाकर राजा लाया ॥ ७ ॥ १३ प्रसिद्ध १४ प्रतापसिंह का प्रताप १५बहुत वृद्ध सिंह को हाथी दबालेवे जैसे "जिनः,अतिवृद्धे॥ इति शब्दार्थचिन्तामणिः"

घनाक्षरी—पायो पटा जैपुरको नारव प्रताप तासौं,
बहुरि बिसेस पाई नित्य मुद्रा पंचसत५०० ॥
कित्तिसिंह कुमर कछायके प्रथम काल,
बैर अरिसिंहको मिटाइदैबो मंडि मत ॥
जैपुरही मंत्रमैं लै चुंडाउत्त जसवंत,
पत्र बुंन्दी पठयो स्वसापति छितीस छत ॥
रानाँ रत्नासिंहकौं बिबाहो कुल कन्या जाम,
जाजपुरदैहैं लिखि प्रत्युत ए ह्वै प्रनत ॥ ९ ॥
सालकको पत्र यह भूपति अजितसिंह,
बंचिकैं पुरोहित पठायो दयाराम तस ॥
पीछैं नृप छोरयो देह यातैं मुरि मग्गाहीसौं,
आयो परकूलतैं बनास लंघि बिप्र यह ॥
सोहि पुनि श्रीजित पठायो नीति समुझाई,
आयो अब जैपुर सुनायो तत्व प्रीति सह ॥
पै अब स्वसा१ जुत स्वसापति२ अभाव पाइ,
बदल्यो कुमार बखतावर बिरोध वह ॥ १० ॥
भूतहूमैं भूत यो विरोध बीज जानौं जब,
भूपतिनैं इंद्रगढ ईस१ हन्यौं पुत्र२ जुत ॥
ताकी तिय जोधीनैं कछायपति भाइनेंज,
लोभसौं बुलाइ ताहि दैकैं अर्द्ध९ भूमि हुत ॥
संध्याकहँ सेस१० इंद्रगढकी अवनि अर्द्ध२,

१ रुपये २ बहिन का पति ३ बुंदी का राजा अजितसिंह था तब राणा अरिसिंह को मार डालने का बैर मिटादेना चाहा था ४ उलटे नम्र हो कर जहाजपुर देवेंगे ॥ ९ ॥ ५ बनास नदी के परले किनारे से ६ परन्तु अब बहिन सहित बहिन के पति का नाश जानकर ॥ १० ॥ इस विरोध के बीज भूतकाल से भी भूतकाल में जानो कि ७ उम्मेदसिंह ने ८ भानेज को ९ शीघ्र आधी भूमि दी १० बाकी की आधी भूमि सिन्धिया को देकर

दैकैं भेजि ताकौं पहु ठानि जनकू *प्रनुत ॥
इंद्रगढ ऐसैं भक्तराम सौं छुराइ एह,
बापघर गागरनी जाइबैठी जो †बिसुत ॥ ११ ॥

॥ सवैया ॥

कीरतिसिंह झलायको ठाकुर लै इम आधी१स्वमातुलकी महि॥
सन्धया जयासुत जो जनकू तिहिं दै तिम आधीर२बिरोधइतैं बहि॥
इंद्रगढाधिप व्है छिति अर्द्ध२मैं आपनौं थानौं जमाइ छली अहि ॥
हायन च्यारि४लौं ऐसैं रह्यो कछु मातुलीकौं न रह्यो इहाँ यौं कहि१२
जैपुरको भटवाराके खेत अनीक भज्यो जब कोटासौं हारिकैं ॥
वाही प्रचंड उपद्रवमाँहिं झलायके झूठे दयेहि निकारिकैं ॥
बुन्दीको पाइ सहाय बली पद भक्त१ रु राम२ ए द्वै२ढिग पारिकैं ॥
नाम कहावतहो निज जो सो भयो पुनि नाह सिपाह सम्हारिकैं१३

॥ दोहा ॥

सक धृति धृति१८१८सम्मित समय, भटवारे सन भज्जि ॥
माधव नृपको दल मुरयो, रह्ये अबहु जिहिं लज्जि ॥ १४ ॥
तब झलायपति न्यष्ट तिन्हँ, अरिन गंजि पुनि एस ॥
भक्तराम बुन्दीस भट, इम हुव इंद्रगढेस ॥ १५ ॥

घनाक्षरी ॥

तबतैं झलायपति बुन्दीसौं बिरचि बैर,
कूर रह्यो पुर इत फंद डारिबो करत॥
बुन्दीपुर आपुनी सुता जब बिबाही धूरि,
मुखपैं गिराइ तबतैं भो हितही धरत ॥

*विशेष स्तुति करके † बिना पुत्रवाली ॥ ११ ॥ १ अपने मामा की भूमि २ सर्प, चार वर्षतक रहा ३ यहां मामी का कुछ नहीं रहा ॥ १२ ॥ ४ सेना ५ भक्तराम, इन्द्रगढ के पति का नाम ही कहाता था सो पति होगया ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ६ झलाय के पति के स्थापन कियेहुए शत्रुओं को मारकर ॥ १५ ॥

जामाता१ सुता२ कैं२ ठहरे न पीछैं दिट्ठ जब,
पीछो प्रतिकूल भयो जो खल रुषाजरत ॥
इंद्रगढ ईस देवासिंहको पिनाती इहिं,
दंभसौं प्रकास्यो परलोकहुसौं नाँ डरत ॥ १६ ॥

पादाकुलकम् ॥

देवसिंह दोलतसिंह दुवरहि, बुंदीपति मारे बिरोध बहि॥
दोलतसिंह बंधूकैं मिसकरि, पीछैं सुत हुव इहिं साहस परि१७
इंद्रगढेस देव तिय जन सब, काढे नयननगरतैं जब तब॥
जिम यह छद्म बनैं तिम बंचक, राखि किमहु कहुँ पाप प्रपंचक।१८।
अब फलाय यह ठँपाज बनायो, दोलतसिंह तनय भव पायो ॥
पै हम करते प्रकट तबहि तो, याकह सुनि हनते अरि अहि तो१९
जुब्बन बय सत्रह१७ संमभो जब, इंद्रगढेस रेंयात हुव यह अब ॥
रतनसिंह प्रकट्यो जिम रानाँ, वह सोलह१६बिच पावरहि आनाँ२०
तिम ऐसहु झूठो प्रकटायो, बलि तिहिं कुहक फलाय बुलायो ॥
भूतहुमैं पुनि भूत प्रमानहु, जथा लेखं बत्त सु इम जानहु ॥ २१ ॥
भागनगर१ दक्खिन२।३ पुर भाख्यो, अब हैदराबाद२ अभिलाख्यो॥
जाको पति दिल्लीससचिव जो, सठ गाजुद्दीखान नामसो ॥२२॥
जिहिं इत नादरसाह बुलायो, पुनहु तास नाम सुहि पायो ॥
अपराधी दिल्लीको सो यह, जट्टन सरन रह्यो कछुदिन जह ॥ २३ ॥
बेचि बेचि भूखन१ मनि२ गन के, किय निर्बाह ठानि कनकनके ॥

१जमाई २ भाग्य ले ३ क्रोध से जलता है ४ पोता को छल से प्रसिद्ध किया ॥ १६ ॥ ५ दोलतसिंह की स्त्री के छल से इस हठ पर पुत्र हुआ ॥ १७ ॥ ६ छल ॥ १८ ॥ ७ छल ८ दोलतसिंह के पुत्र ने जन्म पाया है ९ शत्रु रूपी सर्प ॥ १९ ॥ १० वर्ष का ११ इन्द्रगढ का पति प्रसिद्ध हुआ ॥ २० ॥ १२ इसको भी १३ अब यह गये समय में भी गये समय की बात जानो १४ जैसी लिखी हुई मिली तैसी ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ १५ एक एक बिखेर कर ॥ २४ ॥

आलीगोहर तब दिल्लीपति, जट्टनपर आन्यौं अमरख अति ॥२४॥
जब सु नवाब निकास्यो जट्टन, जैपुर आइ रह्यो सह निजजन ॥
खरच गंठि निज तत्थहु खायो,बहु मनि१मूखन२*निचय बिकायो२५
जैपुरपर तिम साह खिज्यो जब, ताहि कूर्म्मन सिक्ख दई तब ॥
वह नवाब दक्खिन१।३तब आयो, पुन्पापति जिहिं स्वभट बनायो
पटा लक्खत्रय ३००००० दम्म प्रमानक, दिय बुंदेलखंड बिच थानक ॥
असनमात्र सोपै लिखवायो, बिनुचाकरी पटा इम पायो ॥२७॥
कछुदिन रहि कोटा अति आग्रह, आइ नवाब झलाय टिक्यो वह
कीरतिसिंह सोहु बहिकायो, बलि तँहँ तब सु फितूर बुलायो २८
संग नवाब बंधु१ लै बल२ सह, मंडि झलाय ईस अतिसय मँह॥
आइ समुह बैठाइ ताहि इभँ, निज हठ मानि फितूर१सत्य२ निभ२९
इम झलाय उच्छव जुत आन्यौं, जदपि तास बिस्मय जग जान्यौं
भ्रष्ट तदपि ताजुत करि भोजन, सज्ज कर्‌यो भुबलैन प्रसभ सन
कटक नवाबकोहु संगी किय, इंद्रगढेस बंधु बलि बुल्लिय ॥
रत्नसिंह खातोली२ पुरपत्ति, कूँतक भीर भेजे निज भट कति३१
अवरहु कति निमहोला२आदिक,मिले भीर तस खिलहुप्रमादिक
जाइ इंद्रगढके भट१परिजन२, मिले बहुत छल स्वामी चहि मन३२
कृष्ण१९९१ दलेल१९८।२ पुत्र मुहुकम१९४।५ कुल, पुर करवर को लोभ दै बिपुल ॥
मतिहत सोहु बुलाइ मिलायो, बढते ग्राम लैन बहिकायो ॥३३॥
पहिलैं खल याकोहि पितामह,सालम१९७।१रह्यो झलाय भीतिसह

*समूह ॥ २५ ॥ १ पूना के पति ने अपना उमराव बनाया ॥ २६ ॥२रोटी खरच के लिये ॥ २७ ॥ ३ उस इन्द्रगढ के झूठे दावीदार को ॥ २८ ॥ ४ उत्साह (उत्सव) ५ हाथी पर ६ सत्य के सदृश ॥ २९ ॥ ३० ॥ ७उस करतवी की सहाय ॥ ३१ ॥ ८ धाकी के धावले ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

राजाउतन प्रीतिकारि रक्ख्यो, उपकार सु चिंतहु मन अक्ख्यो ३४
कृष्ण१९९१ सु चिंति नैंन नीचे करि, संगी भयो कुहक्क मत अ-
नुसरि ॥
पहिलैं देवसिंह साधानी२२।२६, तजि आटोंनि कढ्यो अभिमानी ३५
आइ सु प्रथम ढ्ंग उनियारा, दुर्ग ककोर रक्खि सुत१ दारा२ ॥
उनियारा सासक सिरदारहु, बिरचि प्रीति सतकारयो जिहिं बहु ३६
पीछैं गो यह ढ्ंग जोधपुर, धात्रेयहिं३ मिलि धरत भयो धुर ॥
उदयकर्ण धात्रेय तनै वह, तह सूचित जसकर्ण हुतो तह ॥३७॥
ए दुव२ मिलि जैपुर पुनि आये, तँहँ प्रधान चुंडाउत पाये ॥
तौलौं जैपुर ठहरिसके दुव२, पीछैं नाँरव४ कथन प्रबलहुव ॥३८॥
भट्ट सदासिव नृप बिद्यागुरु, फैल्यो तास प्रपंच उहाँ उरु५ ॥
सम्मति चलन रुक्यो सीसोदन, देख्यो कहुँ और न अनुमोदन६ ३९
देवसिंह१ जसकर्ण२ तबहि दुव२ हेरि उपाय फजाय आतहुव ॥
तँहँ फितूर७ संगी हुव तेहू, लुंटक८ लोक कुहक९ खिल केहू ॥४०॥
इम दससहँस १०००० बंधि बल अप्पन, सज्ज फितूर भयो इत
सप्पन१० ॥
सुनि बुंदीहु भेजि भट श्रीजित, इंद्रगढेस सँाव हित किय इत ४१
भक्तराम सासक तँहँ अतिभट, भिरत सज्ज इच्छैं रन प्रतिभट ॥
देवसिंह१ जसकर्ण२ चह्यो मन, पहिलैं कोटा देस बिगारन ॥४२॥
अरु नवाब कोटा जब आयो, पै तब आदर उचित न पायो ॥

॥ ३४ ॥ १ झूठे (ठग) के मत की साथ ॥ ३५ ॥ २ स्त्री ॥ ३६ ॥ ३ कोटा का धायभाई जोधपुर में था जिससे ॥ ३७ ॥ ४ नरूके प्रतापसिंह का ॥ ३८ ॥ ५ विशाल (बहुत) ६ अपनी पुष्टि करनेवाला ॥ ३९ ॥ ७ इन्द्रगढ के झूठे दायेदार की साथ ८ लुंटक (लुटेरे) ९ बाकी के ठग ॥ ४० ॥ १० सपंन (चलन) ११ बालक का हित किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

इहिँ तिहिँ अनख मंडि अनुमोदन, कोटादेस चल्यो तिम तोदन ४३
यह सुनि सज्जि महारावहु उत, जालम झल्ल सचिव निज संजुत
प्रबिस्यो सिविरँ सजव कढिपुरतैं, यह बुंदिय सुनि हित अंकुरतैं ४४
सुखराम जु धालेय मुसाहब, सजि गो भीर बाहिनी लै सब ॥
एक १ निसाह्नि पर्यो बिच अंतर, प्रातहि जाइ मिल्यो हित तत्पर ४५
सुखराम सु कोटेस सराहयो, छुल्ल्यो हद एक१त्व निबाह्यो ॥
सचिवँ सचिव झल्लहु सतकारिय, बलि सत्रुन दिस चढन बिचारिय ॥ ४६ ॥
उततैं सज्जि फितूरहु आयो, बलँ नबाब बल मुरुप बनायो ॥
संग नबाब सचिव जिहिँ बल जुत, आयो देसहिँ करत उपद्रुत ४७ ॥
कोटा दिष्टँ बलिष्ट बन्यौं जँहँ, ठहरि सक्यो न नबाब बल सु तँहँ
पुन्यापति सन छिति इहिँ पाई, लक्खतीन ३०००००दम्मनँ ठकुराई
जो बुंदेलखंड जनपदमैं, होनलगे बँ बिघ्न तस हदमैं ॥४९॥
यह लहि सुद्धि नबाव सचिव वह, सूचितँ देस गयो निज बल सह
अमल कर्यो जिहिँ जबहि जाइ उत, मिटिगो तबहि देव १९८।१ सुत छल सुत ॥ ५० ॥
मंगी धाँरि बिगारि सबै मुख, रही न तब सु गई फटि रुखरुँख ॥
बलबिनु हैअलँबिनुजिमबिच्छिय, इमनव बदलबिनुछलइच्छिय ५१

१ इस कारण २ पुछना करके ३ व्यथन (दुःखी) करना चाहा ॥ ४३ ॥ ४ डेरों में ॥ ४४ ॥ ५ धायभाई ६ सब सेना लेकर ॥ ४५ ॥ ७ बुन्दी के सचिव का कोटा के सचिव झाला ने सत्कार किया ॥ ४६ ॥ ८ नबाब की सेना का बल ९ व्याकुल ॥ ४७ ॥ १० कोटा का भाग्य बलवान हुआ ॥ ४८ ॥ ११ रुपयों की १२ देश में १३ अब ॥ ४९ ॥ १४ खबर १५ सूचना कियेहुए देश में १६ देवसिंह के पुत्र दोलतसिंह का वह छली पुत्र मिटगया ॥ ५० ॥ १७ मांगीहुई धाड़ (लुटेरे) १८ जिधर मुख हुआ उधर १९ जैसे डंक विना बिच्छू होवे तैसे नबाब की सेना विना होकर ॥ ५१ ॥

अनालंब इम होइ अचानक, भज्यो फितूर चकित मिंत भानक ॥
देवसिंह१ जसकर्णा२ दुमन दुव३, हुलकर तक्कू तंत्र जाइ हुव॥५२॥
नाणक नित्य दुहुन कछु कारि दिय, इक१ ग्रामहु खिञ्चि१३न भू अप्पिय ॥
जुगहिं रक्खि वनिता१ सुता२दि जँहँ, करत भये मालिक तक्कू कँहँ ॥ ५३ ॥
जड़मति कृष्ण१९८।१ दलेल११७।२ जु जायो, पुर सु करोली चकित पलायो ॥
नृप मानिक्यपाल रक्ख्यो नन, सुमुरिक्क करन बुंदिय धिय सगपन५४
जैपुर आइ टिक्यो सु कृष्ण१९८।१ जब, वह फितूर खातोली गय अब ॥
रत्नसिंह खातोली सासक, आइ समुख छल स्वामि उपासक॥५५॥
कुल निज मुख्य मानि वह कृत्रिम, आन्यौं करि उच्छव पुरमैं इम॥
भाजन इक्क१दुहुन किय भोजन, सिद्ध जतन तदपि न हुव सो जन५६
महाराव उम्मेद२०५।१ मुदित मन, सनमान्यौं सुखराम प्रीति सन
इक१ करेनु अरु खास तुरग इक१, तिम सिरुपाव इक्क१ इम दै त्रिक३ ॥ ५७ ॥
दिय महमानी तदनु सिक्ख सह, आयो बुंदिय पाइ सुजस यह ॥
संवत लगत दंत धृति १८३२ सम्मित, यह उदंत हुव राधर मास इत ॥ ५८ ॥
महिपति भून१ इहाँलग मानहु, जुरत वर्त्तमान२सु अब जानहु ॥

१विना आधार२थोड़े वोधवाला३आधीन ॥५२॥४रुपये ॥५३॥५बुन्दी में बेटी का सम्बन्ध करना जानकर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ६ एक पात्र में ॥ ५६ ॥ ७हाथी ॥ ५७ ॥ ८ वैशाख मास में ॥ ५८ ॥ ६ हे राजा यहां तक गयेहुए समय का वृत्तान्त

कुमर झलायको सु अब यातैं, बुंदी हित१ न चहैं रु*बिघातैं२॥५९॥
नृप बुंदीस पुरोहित जो निज, पठयो जैपुर दयाराम द्विज ॥
सहित मिल्यो सु झलाय कुमर सन, मिलतहि नहि दीस्यो पहिलोमन
करि बाहिर१ हित लोकलज्ज करि, अंतर२ भयो सछद्म नयो अरि॥
चुंडाउत जसवंतसौंहु तब, मिल्यो बिप्र सूच्यो आसय सब ॥ ६१ ॥
राउत कह्यो रान रतनेसहिं, ब्याहहु मेटहु बैर बिसेसहिं ॥
कह्यो बिप्र बुंदिय नहि कन्या, ब्याहहिं तदपि अंक३ लहि अन्या६२
पै तुम भुल्लि सबन भ्रम पारयो, बिदित रानघर४ चलन बिसारयो॥
रानन रीति अबहु सब साहहु, ब्याह इक्क १ अन्यत५ बिबाहहु।६३।
कूरम६ नृप भवदीय सुतासुत, जामिन करहु२रक्खि बिच हितजुत॥
बिजयसिंह बलि मरुप मिलावहु३, पंति असन फेला तुम पावहु६४
अग्ग बचन किय सोहु सुमिरि उर, प्रभु१ रु पंच२ लिखिदेहु जा-
जपुर५ ॥
अरु रतनेस पच्छपाती अब, सपथ१० हमहि लिखिदेहु तुमहु सब।६५।
सो इम रतनसिंह हम स्वामी, नरपति राजसिंह सुत नामी ॥
महिप प्रताप पुत्त११सुत मानहु, जिम जगतेस प्रनत्तिय१२ जानहु ॥६६॥
सुद्ध जनन१३ दुव२ पक्ख सुहावहिं, हम तिन्हँ फलि१४ तुम लखत पावहिं
यामैं होइ किम्हु कछु अंतर, हम १ तुम२ बिच तो गंगा१ हरि २
हर३ ॥ ६७ ॥
उतके पंच देहु लिखि तुम यह६, राघवदास रावरे सुतसह॥

जानो, अब आगे वर्तमान वृत्तान्त जुड़ता है * विशेष घात करता है ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ १ छल सहित ॥ ६१ ॥ २ राणा रत्नसिंह को ब्याहकर ३ और कन्या को गोद लेकर ॥ ६२ ॥ ४ राणाओं की रीति ५ एक ब्याह दूसरी जगह करदो ॥ ६३ ॥ ६ जयपुर का राजा आपका दोहिता है ७ जमानत देनेवाला (प्रतिभू) ८ मारवाड़ के पति को ९ पंक्ति में रत्नसिंह का उच्छिष्ट भोजन करो ॥ ६४ ॥ १० सौगन लिखदो ॥६५॥ ११ पोता १२ पनाती (पड़पोता)॥६६॥ १३ वंश १४ उच्छिष्ट

ए खट६ बत्त प्रथम हम इच्छैँ, परिनावहिँ रानहिँ इन पिच्छैँ॥६८॥
तुम छित्वर चालुक्क तब धारिधुर, पठयो बुंदिय देन जाजपुर ॥
सुमिरन है कि बचन बिसरायो, अब सुहि सत्य करन खिन आयो६९
राउत कह्यो जोधपुर१ जैपुर२, पुनि बुन्दी३ अरु मुख्य उदैपुर ४॥
सो बुन्दी ३ सूचित तीन ३ न सम, छितिप उदैपुर ४ पच्छ करन छम ॥ ७० ॥

जैपुर१ दैपुर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

तिन्ह सहाय हमरी सुधरैँ सब, ते किम अन्य सहाय चहैं तब ॥
पुनि जोलौँ संसय जन पावैं, निजहु कोन तोलौँ परिनावैं१ ॥७१॥
को इनकौँ ठिल्लैं इत कूरम१, कोन कबंध२धीर उत धूरम ॥
जो बलिष्ठ इनके जुग२ जानहु, तुम१ हम२ जुग२हु क्यौंन तिम मानहु ॥ ७२ ॥
इन्ह२सहायसाहसइमउज्झहु२।३, बचि तुल्यरु तुल्यहिंक्योंबुज्झहु॥
आदिम कथित तजहुत्रय३ यातैं, बिरचहि हम अंतिम त्रय३बातैं७३
प्रभुकी फेलिं पंतिबिच पावहिं१, लेख जाजपुर दैन लिखावहिं२ ॥
सपथ लेखहम पंच समप्पहिं३, यह त्रिक३सिद्ध दिखावैं अप्पहिं७४
सूचिय बिप्र तबहि व्है संसय, भेद भेद प्रतिभेद तनैं भय ॥
पै हम सिरहि भार जो पटकहु, इक१ तुम करहु तो न तँहँ कट-कहु ॥ ७५ ॥
झल्ल१प्रमार२कबंध३रु संभर४, चउ४कुल मुख्य भटनमैं नव९घर

॥ ६८ ॥ १ समय ॥ ६९ ॥ २ समर्थ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ धुर को धारण करनेवाला ॥ ७२ ॥ ४ इनकी सहायता लेने का हठ छोड़दो ५ ऊपर कही हुई छः बातों में से आदि की तीन छोड़दो, अन्त की तीन बातें हम करेंगे ॥ ७३ ॥ ६ स्वामी (रत्नसिंह) का उच्छिष्ट ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७ चहुवाण ८ मेवाड़ के उमरावों में इन चार कुलों में नौ ठिकाने मुख्य हैं. झालों में देलवाड़ा और गोघूँदा, पँवारों में बीजोल्यां, राठोड़ोंमें बदनोर और घाणेराव,

रान सदा परिनैं१परिनावैं२, तुम पक्खी भट तेहु कहावैं ॥ ७६ ॥
त्यौं पुनि इक्क१ सल्लूमरिकों ताजि, सब तुम रत्न सहाय रहै साजि॥
कति तन१ सौं धन२ सौं मन३सौं कति, यहहि पक्ख चाहत मत उन्नति ॥ ७७ ॥

तो असगोत्र कहे नव९तिनमैं, ब्याहहु प्रथम१।१पिसुन जिम बिनमैं
पीछैं करि स्वीकृतँ त्रय३प्रत्यय, भर हम भुजन देहु तोहु न न भय
इह नृप तुम दौहित्र१रु अर्भक२, तुमरो कथन तास जननी तक३
तोहुन तिन दोहु२न लै बिच तुम, सलिल मध्य रहि जिम साँर स सुम ॥ ७९ ॥

इक१हमरेहि सहाय चहत यह, तदपि हह्ह६१भुज भर झेलैं तह॥
चउ४ प्रत्यर्य ए सुनि चुंडाउत, पठये लिखि रु देवगढ जवं जुत८०
पितापत्र राघव यह पायो, पुनि द्रुत कुंभिलमेरु पठायो ॥
भिंडरपति सुहुकम्म सुरूप तह, सगतावत्त हुतो पंरिकर सह ।८१।
दलँतिंहिं संगी भटन दिखायो, इम कुहकनै प्रतिपत्र लिखायो ॥
ब्याह १ जाजपुर २ दुरवहि विहाये, अमकर फोलि १ सपथ २ मनभाये ॥ ८२ ॥

दुव २ लिखि ठिगन विधेय रक्खि दुव२, हित बहु लिखि इम छँद भेजत हुव ॥
कृष्ण१ पमार जु बेघमत्रासी, पठयो पुव्वहु दुरदिसु उपासी॥८३॥

चहुवाणों में बेदला, कोठारिया और पारसोली ये उमराव तुम्हारे (रत्नसिंह के) पक्षवाले हैं ॥ ७६ ॥ १ रत्नसिंह की ॥ ७७ ॥ २ जिस कारण से, चुगली करनेवाले ३ विशेष नमें ४ आपके स्वीकार किये हुए सुबूत ॥ ७८ ॥ ५ यह जयपुर का राजा तुम्हारा दोहिता और बालक है ६उस बालक की माता तक ७ कमल का फूल ॥ ७९ ॥ ८ विश्वास ९ शीघ्र ॥ ८० ॥ १० परगह सहित ॥८१॥ ११ पत्र, साथ के उमरावों को दिखाया १२ ठगों ने, उत्तर में पत्र लिखाया १३ रत्नसिंह का उच्छिष्ट खाना और सौगन खाना ॥ ८२ ॥ १४ पत्र ॥ ८३ ॥

बुल्लि सो१हि पठयो तिन बुंदिय, पुनि प्रत्यय हित मुख्य बंधु प्रिय॥
सगताउत्त बिजैपुर सासन, अखलबंधु सिवनाथ२मिलत मन ॥८४॥
जैत पउत्त रु अचल तनय जो, दयो प्रमार संग गतदय जो ॥
इतको बिप्र रह्यो जैपुर उत, दुवर सूचिते आये बुंदिय द्रुत॥८५॥
दोउ३न सचिवहिं पत्र दिखायो, सुखराम सु पिक्खत छल पायो॥
जो बिबिक्त श्रीजितपुनि जान्यौं, पुनि सम्मत सुभटन पहिचान्यौं८६
कपट जानि रक्ख्यो४समुचित कहि, सगताउत्त इहाँ सिवनाथहि ॥
कृष्णा१ प्रमार संग पठयो द्विज, नत्थूनाम बिसासपात्र निज ॥८७॥
कछुदिन रक्खि देवगढ तिनकहँ, पठये कुंभिलमेरु कृतक पहँ ॥
भिंडर आदि भटहु तब भोनन, हे रु नहे तहँ इच्छितहो नन ॥ ८८॥
भूप कृतक भेजे दुवर भिंडर, किय मुहुकम्म सोहि मिस छल कर॥
तिहिं निज पक्ख भटन मत लै तहँ, करि सुहि लिपि पठये दोउर न कहँ ॥ ८९ ॥
प्रथम१ बिबाहन१ न इम जाजपुर२, कथित करन सुहि जुगर अघ अंकुर ॥
व्याह जाजपुर रक्खि सेस बलि, छलिन पुव्व जिम पठये पुनि छलि९०
ए उभयरहि बुन्दी जब आये, द्विज१ प्रमार२ मतिमुष्ट दिखाये ॥
श्रीजित प्रति सुखराम मुसाहब, अरज करि रु छल जानि प्रकट अब ॥ ९१ ॥
पत्र पुरोहित दयाराम प्रति, सुहि जैपुर पठयो छल सम्मति ॥
अरु सूचिय निश्चय भो अब इम, रान रतन कुलबर्जित कृत्रिम९२

॥८४॥ १निर्दय२सूचना कियेहुए ॥८५॥ ३एकान्त में ॥८६॥ ४ ठीक है यह कह कर ॥८७॥५ कृत्रिम (रत्नसिंह के पास ६ अपने घरों पर थे ॥ ८८ ॥ ७ लेख ॥ ८९ ॥ ८ पाप खड़ा होकर ९ मेवाड़ के उमरावों में रत्नसिंह का प्रथम विवाह कराना और जहाजपुर का देना बाकी रखकर (अस्वीकार करके)१०छल करके ॥९०॥ ११ठगाई हुई बुद्धिवाले दीखे ॥९१॥ १२कुल रहित और फरेबी है ॥९२॥

ओर न कोहु सुता जिहिँ अप्पैं, इम अप्पन वंचन थिति थप्पैं ॥
प्रासन[2] फेलि१लिखन सत्य सपथ२, अंगीकरत[3] एहि दुवरते अथ९३
पुनि नटिजाइ तहाँ को प्रत्यय[4]१, कै खल करैं ओडि कुल प्रत्यय[5]
पापकरन अवधि न पापिनकै, अंत्यज फेलि[6] त्याग नहि तिनकैं९४
कूहँ[7] सपथ वंचक क्यौं न करैं, धी[8] अपरन वंचन सपथ धरैं ॥
दल वंचत यातैं अब हे द्विज, न करहु तुम सगपन सम्मति निज९५
महाकितव मन्नहु मेवारन, कितव[9] भाव दृढ हुव बहु कारन ॥
यातैं स्वीकृत कछुहु न अक्खहु, राउत फंद टारि पथ रक्खहु९६।
जो जैपुर पहिलो हित जानहु, तो इतसौंहु अधिक पुनि तानहु[10] ॥
इम द्विज प्रति सुखराम कहाई, दुत मेवारन सिक्खि दिवाई ।९७।

॥ दोहा ॥

सगताउत सिवनाथ१सौं, नगर विजैपुर नाह ॥
कृष्णासिंह२ मामार कुल, पहिलैं कथितें[11] सिपाह ॥ ९८ ॥
हित बहिरादर[12] इन दुहुँरन, रुचिमित कछु दिन रक्खि ॥
बुंदीसन दिय सिक्ख बलि, उचित जथागम[13] अक्खि ॥९९॥
दयाराम बुंदीस द्विज, जैपुर इत खिन जानि ॥
बुंदी पठवन तिलक बिधि, पुच्छिय उचित प्रमानि ॥१००॥
भेजैं अब अब इम भनत, कछवाहन चिर[14] कीन ॥
बिच बिच पारे विघ्न बहु, नियति[15] नवीन नवीन ॥१०१॥

---

१ ठगने को २ उच्छिष्ट भोजन करना और सौगन करना ३ स्वीकार करते हैं ॥ ९३ ॥ ४ वृथा विश्वास है ५ कुल का नाश ६ अन्त्यज का उच्छिष्ट खाना ॥ ९४ ॥ ७ झूठे सौगन, ठगनेवाला क्यों नहीं करैगा ८ दूसरों की बुद्धि ठगने को ॥ ९५ ॥ ९ ठगपन ॥ ९६ ॥ १० फैलाना ॥ ९७ ॥ ११ पहिले कहे हुए ॥ ९८ ॥ १२ बाहर के आदर से १३ फिर आना यह कहकर ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १४ विलंब १५ भाग्य ने ॥ १०१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे नारवप्रतापसिंहपट्टातिरिक्तजयपुरराज्यप्रतिदिनपञ्चशतमुद्राग्रहणेन्द्रगढकृत्रिमपतिप्रादुर्भवन १ दिल्लीन्द्रयवनाप्रसत्तिनिष्कासितहैदराबादनव्वाबगाजुद्दीखांभरतपुरजयपुरनिवासाप्राप्तिहेतुप्राप्तबुन्देलखण्डपुरायपत्तनपतिसुभटीभवन २ उक्तनव्वाबसहायससैन्यकृत्रिमदायादेन्द्रगढाक्रमणकोटाजनपदलुण्टन ३ प्राप्तबुन्दीसेनासहायकोटापतिशत्रुसम्मुखागमनश्रुतस्वदेशोपद्रवनव्वाबगमनहेतुकृत्रिमदायादपलायन ४ मेदपाटकृत्रिमराणारत्नसिंहबुन्दीविवाहहेतुमेदपाटसुभटयत्नकरणतत्कैतवप्रादुर्भावबुन्दीशास्वीकरणं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः ॥ ३५४ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उक्त रान हम्मीर इत, भो जु उदैपुर भूप ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, नरूके प्रतापसिंह का पट्टा के सिवाय जयपुर के राज्य से पांचसौ रुपये नित्य लेना और इन्द्रगढ के फरेबी पति का प्रकट होना १ हैदराबाद के नवाब गाजुद्दीखां का दिल्ली के बादशाह की अप्रसन्नता से निकाला जाकर, भरतपुर और जयपुर में नहीं ठहरने देने के कारण बुन्देलखंड का मार्ग पाकर पूना के पति का उमराव होना २ इस नवाब को सहायक करके फितूरी दावीदार का सेना लेकर इन्द्रगढ पर आना और कोटा का देश लूटना ३ कोटा के पति का बुन्दी की सहायक सेना पाकर शत्रुओं के सन्मुख निकलना और अपने देश में विघ्न सुनकर नवाब के चलेजाने के कारण छली दावीदार का भागना ४ मेवाड़ के कृत्रिम राणा रत्नसिंह का बुन्दी सम्बन्ध करनेका मेवाड़ के उमरावों का उपाय करना और उनका छल प्रकट होजाने के कारण बुन्दी से अस्वीकार करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से तीन सौ चौपन ३५४ मयूख हुए ॥

वय सैसव सो भय बहैं, रहैं समय अनुरूप ॥१॥
कछु दूरहु पुरतैं निकासि, उपवन१ मृगया२ औन ॥
सह भोजन३ मह संक्रमन४, क्रीड़ा कछुहु करैन ॥२॥
कृत्रिम रानाँ रत्न करि, सब पलटे सामंत ॥
तातैं रक्खत त्रास तिन्हँ, हास बिलासहु हंत ॥३॥
इक१ सलूमरि पुर अधिप, अपर२ कुरावड़ ईस ॥
भीम१ रु अर्जुन२ नाम भट, इच्छैं दुवर सु अधीस ॥ ४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सासक सलूमरिके केहरी मरत कह्यो,
देवगढ नाह जसवंतहिं बलि बुलाइ ॥
मेरे सुत मूढ मानै तिनमैं लघुहु लाल,
कालिदैहैं केतो खल तोकह१ कैं जैहँ खाइ ॥
कुहकसौं कुहक पिताजो कही सोही कारि,
नाथहिं निपाति अरिसिंह उर ईष्ट आइ ॥
राउतके तनय अचानक यौं राउतकौं,
काढ्यो उत्तमर्ण१ अधमर्ण२ ज्यों सब सिकाइ ॥५॥
देवगढ दुर्ग सो पै ताकै रहतो न तहँ,
जेठे१ जसवंत सुत राघव प्रगल्भ जब ॥
देवगढदुर्गमैं रह्यो सो लरिबेकौं दच्छ,
सम्मत पिताको पाइ स्वीयभट सज्जि सब ॥

१ बालक अवस्था ॥ १ ॥ २ बाग और शिकार के स्थानों में ३ उत्सव में जाना ॥ २ ॥ ४ उमराव ५ हास्य विलास का नाश अथवा खेद है ॥ ३ ॥ ६ दूसरा ॥४॥ ७पीछा बुलाकर ८ छली से, छली के पिता ने ९अनुकूल १० रावत केसरीसिंह के पुत्र ने रावत जसवंतसिंह को ११ऋण देनेवाला (बहोरा) १२ऋण लेनेवाले (धुरिये)को ॥५॥ १३जसवंतसिंह का बडा पुत्र राघवदास बुद्धिमान् १४दक्ष(चतुर)

तापैं उदैपुरतैं अनीक भीम१ अर्जुन२नैं,
भेज्यो तँहँ केते भनैं तेहु आये भ्रात तब ॥
पैन जय पायो चक्र२ प्रत्युत पलायो मरिबो,
न भट मानैं व्हाँ क्रियाको फल होइ कब ॥ ६ ॥

॥ राजसवत्तिका ॥

सोलह१६ बीरनमैं अरिसिंहके पच्छभो एक१ सलूमरिको पति१।
अर्जुनसिंह कुरावड़ ईस२ बतीस३२नमैं रह्यो मुख्य महामति ॥
काज बडो इक१ यानैं करयो स्मृतिमैं न फुरयो सो कथा क्रम
संगति ॥
है कथनीय सो जात कह्यो इम ओरहु ठौं क्रम तूटी कथाकति७
बैठ्यो उदैपुरकौं बलतैं जब माहजि संध्या महाबल जाइकैं ॥
भो पुरमाँहिं महा दुरभिच्छ व्हाँ प्राभृत लीजे कह्यो भय पाइकैं
मद्यप सालक माहजिको बिलसैं परनारिन नित्य बुलाइकैं ॥
साहसँ बात बिगारिदै सो उत१की इत२ साहस ऊपर आइकैं॥८॥
बाहिर माहजिके बलमैं लहि अर्जुनैं कोउक मित्र पटालैय ॥
ओरहि आप अजस्र उहाँ दमैं देवो कहैं सु चहैंनहि निर्दय ॥
रत्नँके पच्छमैं राचिरह्यो वह सालक संध्याको आगम अँत्यय ॥
एक उँपायन को न उपाय भयो जिहिँ अग्ग बिसेस छयो भय ॥९॥

---

१ भीमसिंह और अर्जुनसिंह दोनों भाई २ सेना उलटी भागी ॥ ६ ॥ ३ इस समय यह ठिकाना सोलह उमरावों में है ४ कथा के क्रम के साथ याद नहीं आया ५ वह कहने योग्य है इस कारण कहा जाता है ६ इसप्रकार अन्य जगह भी कितनी ही कथा तूटगई है ॥ ७ ॥ ७ सेना से उदयपुर को घेरा जब ८ भेट ९ माहजी का साला १० दंड की वार्ता ११ हठ करके ॥ ८ ॥ १२ सेना में १३ अर्जुनसिंह १४ किसी मित्र के डेरे में १५ निरन्तर १६ दंड देना कहै सो १७ फितूरी राणा रत्नसिंह के १८ शत्रु का नाश करनेवाला तथा दंड के आगम की १९ भेट (फौजखरच) देने का कोई उपाय नहीं हुआ ॥ ९ ॥

जानिकैं अर्जुन लंपट जाहि निसागम नारिको[1] बेस बनाइकैं ॥
पूगिबो सीखि छली पहिलैं जिम लज्जित त्यौं तम[2]मैं तहँ जाइकैं ॥
ठानि प्रमादी महाठिगनैं नखरेसौं निरंतर प्याले पिवाइकैं ॥
संहारि[3] ताहि पटालय स्वीय अतित्वर[4] आइ परयो मिस पाइकैं ॥१०॥
लोटि कबूतर लोटनलौं[5] सु पिचंड[6]मैं व्याजके सूल प्रसारिकैं ॥
ज्यों निज प्रान प्रयान[7] जनाइ रह्यो अति आतुर[8]ह्वै छल धारिकैं॥
दीनौं स्वकीयन[9] दात्रनसौं जठरां[10]श तदीय प्रतीक[11]हि जारिकैं ॥
एक[12]ही दाहनको उपचार बन्यौं दृढ प्रत्यय[13] सत्य उबारिकैं ॥११॥
आदिम जामिनि जाम[14] गये पहिलैं पहिलैं पटु[15]कृत्य सबै करि ॥
स्वोदर[16] दाहत स्वीय सखाहु लख्यो बिधि[17]सौं बिलख्यो बिधिसौं लरि ॥
हारिकैं दाह अनंतरहू जिम अंग थकै तिम नैंन पलैं[18] औरि ॥
रीति घटी खट[19] सेस रही तब निंद लही छल[20]सिंधु वहै तरि॥१२॥
हारव[21] भो अरुनोदय होतहि स्वामिको सालक काहू हन्यौं कहि॥
स्वामिनी[22] अन्न तज्यो सुनिकैं व्रत[23] मारनहारके मारनकौं वहि ॥
साहजि कोपि तहाँ तिपलंन उठाइ फैंटा[24] जिम पुच्छ दव्यो अहि ॥

१ सन्ध्या समय स्त्री का वेश करके २ अन्धेरे में, लज्जित स्त्री के समान जाकर ३ उसीके डेरे में उसको मारकर ४ अपने डेरे में शीघ्र आकर ॥ १० ॥ ५ लोटन कबूतर के समान लोटकर ६ पेट में मिसकी पीड़ा बताकर ७ अपना प्राण जाना जनाकर ८ घबराकर ९ अपने सेवकों ने दांतुली से १० उसके पेट के ११ अवयव (हिस्से) को जलाया १२ एक जलाने का इलाज ही १३ सत्यता को बचाने का विश्वास हुआ ॥११॥ १४ रात्रि की पहिली प्रहर जाने से पहिले १५ उस चतुर ने सब कार्य किया १६ उसका पेट जलाते समय उसके मित्र ने भी देखा १७ विधि (रीति) से लड़कर विधि से रोया १८ नेत्रों की पलकें बन्द करके १९ बाकी २० उस छल के समुद्र को तिरकर ॥ १२ ॥ २१ सूर्य उदय होते ही हाहाकार शब्द हुआ २२ साहजी की स्त्री ने २३ नियम धारण किया २४ फण

उच्चरयो जंबुक१ ज्यों अरिसिंह मराइ मयंद२न भोगैं कितीमहि१३

॥ घनाक्षरी ॥

रैन२पच्छी झाला देलवारापति राघोदेव१,
आदिक उहाँ हे किते तेहु सो सुनत आइ ॥
बोले धूर्त्त चुंडाउत ३अर्जुन जुवति बेस,
४मारे होइ मोंघ तोके लेहु हमरे कटाइ ॥
हो ६हरि खिज्यो १ रु सिर ठोकर प्रहार पायो२,
सौनलागो सपथ७ उदेपुरको अपनाइ ॥
८ताके मित्र आइ तँहँ ९संध्याके सुभट सूची,
होत प्रभु कोप क्यों १०अनागसपैं हाइ हाइ ॥१४॥
साँझके अंतरही अर्जुन उदर सूल,
चालन लगे अति असाध्य न रुके बिचारि ॥
दानादिक कृत्य १०अवसानके सब कराइ,
जठर तदीप हम ११दाँत्रनसौं राख्यो जारि ॥
जाम१हु गई न राति और सब ठाँ निज १२बैं,
दाहिहु चुके तब १३मृधा तो लेहु सिरदारि ॥
१४स्वामिनीके सोदरतो सूतेसमै संभवत,
मध्यछाके कोऊ गो निसीथ१५ पीछैं खल मारि ॥ १५ ॥
हाकाभो जहाँलौं सब ताँ१६के पास हे हमहु,
दासहीके डेराहै पर्यो सो कछु सेसदम्म ॥
१७भौंनबिनु लोटत रह्यो सो सबराति भुव,

१सिंहों को मराकर ॥१३॥२रत्नसिंह के पक्षवाले३अर्जुनसिंह ने स्त्री का वेस करके ४झूठ होवे तो ५ हमारे मस्तक कटवा लो ६ क्रोध किया हुआ सिंह था और ७ सौगन ८ अर्जुनसिंह के मित्र ने ९ दोष रहित पर ॥ १४ ॥ १० अन्त समय के ११ दांतुलियों से १२ अब १३ झूठ होवे तो मस्तक कटा लो १४ आपकी स्त्री के भाई को तो १५आधी रात पीछे ॥१५॥१६अर्जुनसिंह के पास १७ विना चेत

भूलिहु न आनौं नाथ हेलनमैं[1] तास भ्रम ॥
राम[2] प्रभु ऐसैं ह्वै निरागस[3] बचिहु रह्यो,
संहरि[4] सपत्नकों दिखानों उदासीन सम ॥
भार उपकारकेसों[5] स्वामीकों नमाइ भयो,
वंचकता[1] वीरता[2]मैं तैसो को पुरोगतम[6] ॥ १६ ॥
ईस अरिसिंह सीस अवेदयो[7] आगस न,
बित्त जो लयो सो दयो दंडमैं डरि बिसेस ॥
ऐसी ठानि अर्जुन कुरावड़के चुंडाउत्त,
पायो दाह दुख न गुमायो पै प्रभु प्रदेस ॥
राघव[1] सु मारचो[8] जसवंत[2] सु बिडारयो[9] रान,
आदरयो सलूमरि[1] कुरावड़[2] जुग[2]हि एस ॥
पीछैं रान मारयो सो अंजा[10][11]नैं[2] याँ उदैपुरमैं,
वर्त्तमानमैं है अब हम्मीराख्य वसुधेस[11] ॥१७॥
द्रंग इत जैपुर कही जो दयारामद्विज,
बनि न सकी सो जसवंतसौं उचित बात ॥
सो तजि उपाय तब भेजिबे तिलक साज,
सूची कूरमनसौं दुहुँ[2]घाँ हित दरसात ॥
जैपुरपैं दिष्टि[12]नैं प्रकोप करि राख्यो जब,
यातैं माँहिं माँहिं मच्चे पंचनमैं उतपात ॥
नारव प्रतापसे बिराजैं जहाँ वंचक[13] तो,
क्यों न परैं ताही ठाम घरघर घोर घात ॥

१ अपराध में २ हे प्रभु रामसिंह ३ अपराध रहित ४ शत्रु को मारकर ५ उपकार के भार से ६ अत्यन्त अग्रणी ॥ १६ ॥ ७ अपराध नहीं आने दिया ८ उस राघवदास को मारा ९ निकाला १० बुन्दी के पति अजितसिंह ने अरिसिंह को पीछे मारा ११ हम्मीरसिंह नामक राजा ॥१७॥ १२ भाग्य १३ ठग

सबन बिगारिबेकौं राजगढवारो सोहि,
चोर१कौं लगावैं गृहस्वामि२कौं जगावैं चाहि ॥
ऐसी कछु मोहिनी मचाई कुहकेस[1] उहाँ,
जाहि बहिकावैं सो स्वकीय[2] करि मानैं जाहि ॥
फोरि[3] बहुरे१कौं बखतावर२पैं डारैं फंद,
बंधि हित ता१सौं बहुरे२को गहिबो निबाहि ॥
रानी१कौं रुठाइं नाथाउत्त२न निकारैं नीच,
तिन१सौं प्रतारैं चुंडाउत्त२न मन मुधाहि ॥१९॥
मित्र बहुरे१सौं जसवंत२की मति मुराइ,
ताहि द्वार ता१सौं नृपमाता२की मुराइ मति ॥
गूढलै निदेस ता१को बिप्र२ गहिबेकौं गढ,
माँहि रहिबेकौं गाढ कूरम बुलाइ कति ॥
राजागाँर द्वार सब ओरके कराइ रुद्ध,
गोपुर जराइ सब पत्तनके गूढगति ॥
राजाउत्त तीन३हि जलेबचोक सज्ज राखि,
जंपी काहि ज्यों न जाइ यों रह्यो प्रबुद्ध अति ॥ २० ॥
जिनमैं प्रबीर धूलाधीसै[11] रघुनाथ१ जानौं,
नंदन[12] दलेलको जो छलमनको अनुज ॥
सारसोप ईस दूजो२ बिक्रमादिनेस[13]२ सज्ज,
नाँती फतमल्लको जो रत्नसिंहको तनुज ॥

---

१ ठगों के पति ने २ उसको अपना करके ३ खुशालीराम बहोरे को फोड़कर झलाय के कुमर बखतावरसिंह पर ४ अप्रसन्न करके ५ नाथावतों से चुंडावतों को मिथ्या ही अपने मन से ताड़ना कराता है ॥ १९ ६ गुप्त आज्ञा लेकर ७ राजा के महलों के सब ओर के द्वार ८ बन्द कराकर ९ नगर के द्वार १० सावधान ॥ २० ॥ ११ धूला नगर का पति १२ दलेलसिंह का पुत्र और लछमणसिंह का छोटा भाई १३ विक्रमादित्य

तीजो३ बखतावर३ झलायको कुमर तत्थ,
मानौं लय३ लैकैं सावधान अपनैं मनुज ॥
रुद्धकरि राहकों जलेबचोकमैं ए रहे,
दीसे घोर भूसुर१के रोकिबेकों भूदनुज२ ॥२१॥
रीति सोही स्वीकरि प्रतापके पढाये रहे,
नाथाउत्त संसदके अंतर धवल धाम ॥
इनमैं पुरोग रत्नसिंह१ पुर चोमूँ ईस,
दूजो२ पुर सामोदेस नाम सुरतान२ नाम ॥
भिन्न मत केते भनैं इनकों तटस्थ इहाँ,
कोऊ चुंडाउत्तन बुलायो सूचि इहिं काम ॥
बिद्यागुरु भट्ट१कों निमित्त राखि नारवरैनैं,
रूठि पकरायो यों बहोरा कुसहालीराम ॥
पीपलदा काका सत्रुसालकों दयो लै पुब्ब,
चित्त सु बिरोध बखतावर कुमर चाहि ॥
मारिबे लग्यो व्हाँ द्विजको सो छलघात मंडि,
दुर्बचन पावक प्रयोग पाली उर दाहि ॥
बिक्रमदिनेस तब कुमर निवार्यो बदि,
मंत्री सब जानैं मर्म अबहि नमारो याहि॥
मंत्र३।१ कोस४।२ दुर्ग५।३नको यासों सब पाइ मर्म,
मारिहैं सहज पीछैं कोउक बिधि समाहि ॥ २३ ॥
माधव महीप जब जाटतैं समर जीत्यो,

---

१ ब्राह्मण के कैद करने को २ भूमि के दैत्य ॥ २१ ॥ ३ प्रतापसिंह के सिखाये ४सभा के भीतर महलों में रहे ५ अग्रणी ६ सामोद का पति ७ प्रसिद्ध तथा क्रोधी तथा निंदायुक्त ८ कारण ॥ २२ ॥ ९ खोटे वचनों रूपी अग्नि से हृदय रूपी पत्री को जलाकर १० यह ब्राह्मण मंत्री सब मर्म जानता है जिससे ॥ २३ ॥ ११ भरतपुर के जाट से

जैपुरके जोध परे धूलापाति आदि जब ॥
राव१ रु बहादुर२ उभै२ पद मिलित राखि,
एह *उपटंक पायो बिक्रम तरनि तब ॥
विप्र कुसहालीराम तामैं भो निमित्त बुध,
यातैं बीर बिक्रम सो चिंति उपकार अब ॥
मृत्युमुख पैठो यौं निकास्यो द्विज मंत्री कुल१,
धर्म२ सुद्ध व्है जो भूलिजाइ उपकार कब ॥ २४ ॥
पीछैं राजकाज पूछिबेकी बात बंध करि,
देवगढ बासिनकौं मंतु३ कछु दै दबाइ,
भाखी जो रहो तो लहो अपनैं पटाकौ भोग,
आहु न बुलायैं बिनु अंगजाकौं अपनाइ ॥
रानीको पितासौं पूछिबोहू करि तस रुद्ध,
भाख्यो पिछ्छिद्वार न बुलावहु जनक१ भाइ२॥
सूनु दुव२ रावरे न राखहु निज समीप,
संसद७ रहन देहु पंचनमैं पधराइ ॥ २५ ॥
ऐसो फंद डारिकैं नरूका रहि दूर आप,
राजकाज बाहिर जे भेदिक समस्त भट ॥
भाख्यो भूप माधव जो मंत्री निज कीनौं मुख्य,
विप्र कुसहालीराम साधैं काम नीति बट॥
राजाउत्त बंचकनैं भेदिकैं पिहितैं रानी,
मल्लिनाग मंत्रमैं जो हंत पकरयो प्रकट ॥
यातैं अंधकारमैं न रहिबो उचित अहो,
नगरतैं निकासि निवारैं द्विज भै१२ निपट ॥२६॥

---

*राव बहादुरकी पदवी १विक्रमादित्यनें पाई२कारण॥२४॥३दोष४पुत्रीको५पूछना बंध करके६पिता को और भाई को खिड़की पर मत बुलाओ७सभामें॥२५॥८नरूका प्रतापसिंह९ठगों ने१०गुप्त११चाणक्य के मन्त्र में(नीति में)१२ब्राह्मणका भय॥२६॥

राजाउत्त१ नाथाउत्त२ चुंडाउत्त३ महिँराखि,
सेसन सिखाइ यौं खुलाइ पुरके अरर[1] ॥
बाहिर निकसि स्वीयस्वीय[2] घरतैं बुलाइ
सेसँसेस[3] सुभट प्रताप रहि अग्रसर॥
रानीसौं कहायो राजाउत्त जे चहत राज्य,
तिनको भरोसा न करो ए गिनौं सत्रुतर ॥
बिप्र नय[4]पंडित जो रावरो हितहि बंछैं,
ताहि निकसावहु नतो हैं हम पापपर ॥ २७ ॥
भेज्यो जो बिदग्ध[5] मरहट्ठ१न समुह भूप,
भेज्यो जोहि मिच्छ२नके सम्मुह दै भुजभार ॥
भेज्यो अंगरेज३नके सम्मुह उचित भाखि,
तूही यह राजपद राखिवे अति उदार ॥
राजा१ भट२ सचिव३ प्रजा४ कौं थिर राखिबेको,
जाकै पन ताहि रोकैं जे जनैं पिहित[6] जार ॥
यातैं बुध[7] बिप्रकौं छुराइ करो मंत्री आप,
हाहा नहितो ब प्रतिकूल भासैं होनहार ॥ २८ ॥
फीरोजा[8]भिधान सु महावत बुलाइ फिरि,
मिच्छ राजाउत्तन रखायो राजकाज माँहि ॥
बिप्र पकरायो सो बिरोध बिसराइबेकौं,
आप टरिबैठे अब रानीतैं प्रनत[9] आँहिँ ॥
बंचक कहाइ द्विज कारातैं निकासिबेकी,
नारव प्रताप इत कृत्यमैं रहत नाँहिँ ॥

---

१ कपाट २ अपने अपने ३ थोकों के उपयोगी (उचित) सुभटों को बुलाकर प्रतापसिंह अग्रणी रहा ४ नीति चतुर ॥ २७ ॥ ५ चतुर ६ छिपेहुए जार से उत्पन्न है ७ पंडित ब्राह्मण को ॥ २८ ॥ ८ फीरोजखां नामक ६ नम्र है.

लोभिनकों प्रेरिकैं उपद्रव करन लागो,
जितनित जाके जोध लूटिबेकों चढिजाँहिं ॥ २९ ॥
बिप्र गहिबेकी पहिलैं जो लिखी बंचकनैं,
रानीपास अरजी१ हुती सो बेग निकराइ ॥
एक१ लिखि पत्र निजनामको नवन उभैर२,
पत्र कछु०याज पुर बाहिर दये पठाइ ॥
यौं लिख्यो उदंत तुमहीकों बंचि बंचकनैं,
बिप्र पकरायो लेहु प्रत्यय३ लिखित पाइ ॥
हेरि हित यातैं पुर पैठहु प्रताप हनि,
बिप्रहिं कढाइदैहैं इत हम भद्रभाइ ॥ ३० ॥
सेखाउत्त१ खंगारुत्त२ आदि कछवाह सूर,
बाहिर हुते जे पत्र ते दुतर२ लखि बिचारि॥
सेनानी हमीरदेव बंसी राजासिंह१ सान२,
उत्तेजक सूर१ सस्त्र २ पैनैं करे धक धारि ॥
बोल्यो करी कुहक प्रताप सो लखहु बीर,
डौकी कढिजैहैं अब राज्यपैं गजवपारि ॥
तातैं तुम संग हम अज्जहि अनेहतकिं,
मित्रन बिरोधी महा अधमकों डालैं मारि ॥ ३१ ॥
पत्र सु महावतकों बाहिरके पंचनमैं,
आतहि बिचार्‌यो घात नारवपैं क्रुद्ध आति ॥
पत्र राजाउत्तन पठाइ इहिं अंतरमैं,

॥ २९ ॥ १ वृत्तान्त २ ठग ने ठग कर ३ इस लिखावट को लेकर विश्वास पाओ ४ राजगढ़ के नरूका प्रतापसिंह को मारकर ५ कल्याण की रीति से ॥ ३० ॥ ६राजसिंह ने सान से प्रेरेहुए शूर और शस्त्रों को तीक्ष्ण किये ७अत्याचार करनेवाला (पापी) ८ गजब पटक कर ९ समय देखकर ॥ ३१ ॥

नारवकों नीचन जनाइ दीनी गूढ गति ॥
दूर कछु भेजि यातैं आपुनैं पिहित दूतै,
पीछे बुलवाये ख्यात दोरतजे आपप्रति ॥
आइ तिन भाखी राजगढकों लगे अहित,
राखिहो महीं तो इहाँ धरिहै नृपहु रति ॥ ३२ ॥
सोहि सुनि लैकै मुख्य मुख्य उपहार संग,
और प्रसरेंही राखि डेरन सहित एह ॥
कुंचकरि ताही निस चढिकैं प्रताप कढि,
छद्मघातै भीत छद्मी गो निज कथित गेह ॥
अयुत१०००० अनीकको अधीस राजसिंह १अरु,
सेखाउत्त१।२ खंगारोत्त२।३ है मिलि दृढ सनेह ॥
ताँकतेही तदपि रहे छद्मघातक त्यों,
पारदलों कढिगो प्रताप लै सु निधि लेह ॥ ३३ ॥
बाहिरके पंचन प्रताप कढिगो बिचारि,
सर्प१ हि गुमाइ लेखा२ कूटिबेकों सज्ज बनि ॥
मार१लूट२ धाँधाँ तिन अधिक मचाई बिप्र,
सचिव निकासिबेकों जोरकी मरोरैं जानि ॥
आये पुर चाहैं तिन्ह राजाउत्त रोकि अध्व,
पैठन नदै ए प्रतिकूल पच्छभाव भनि ॥
व्है तदपि व्याकुल प्रजा सब पुकारी हाइ,
क्यों न द्विज काढहु रे तुम१ हम२ भद्रँ तनि ॥ ३४ ॥

---

१ प्रतापसिंह को २ छिपेहुए दूत ३ जयपुर का राजा भी प्रीति करेगा ॥ ३२ ॥ ४ सामग्री ५ फैलेहुए ६ छलघात के डर से राजगढ चलागया ७ देखते ही रहे ८ पारा के समान ९ ब्रह्मा के श्रेष्ठ लेख ॥ ३३ ॥ १०रेखा (लकीर) ११ दिशा दिशा (ठाम ठाम) १२ मरोड़ (घमंड) करके१३मार्ग १४तुम्हारा हमारा कल्याण फैलाकर ॥ ३४ ॥

हाहाकार सुनि सु पिताके मत बाहिरव्है,
हेरि अवकास भगिनी[1]को गूढलै हुकम ॥
सूनु लहुरो[2] जो जसवंतको गुपालसिंह,
लैगो निज आलयसों बिप्रहिं छुराइ छम[3] ॥
ताहि सतकारसौं कितेक दिन राखि तत्थ,
ताके गेह पीछैं पहुँचायो जाइ सूरितम[4] ॥
बिप्लव[5] निवारयो तब बाहिरके पंचनपै,
पुरमैं न पैठनदै राजाउत्त सत्रुसम ॥ ३५ ॥
अरर[6] न खोलैं ए फलायके कुमर१ आदि,
औबो चहैं नारव प्रतापको बहुरि अत्र ॥
जाइ घर नारव न आयो देस१ काल२ जानि,
पापिननैं जदपि बुलायो दै प्रचुर[7] पत्र ॥
बेला तिहिं[8] प्रत्युत प्रतापको प्रताप बढ्यो,
लेख जवनेसके लहे छिति१ चमर२ छत्र३ ॥
नालकी४ नृपत्व५ त्रिहजारी२००० उपटंक आदि,
ऐसैं घर बैठैं[9] भयो भूपति अघ[10] अमत्र ॥ ३६ ॥
पहिले समय कोपि बीकानेर भूप पर,
जोर डारि माँगे साह सौंहसके दम्म[11] जब ॥
रुप्पय कितेक लक्ख दैकैं अवसेस रहे,
तिनमैं प्रमेय[12] दयो बंदी इक१बंधु तब ॥
देय[13] सेस बहुरि दये न कछु ब्याज[14] करि,
कोल टरिबेतैं यो बालिष्ट रुकिजात कब ॥

---

१ बहिन का छाने हुक्म लेकर २ रावत जसवन्तसिंह का छोटा पुत्र ३ समर्थ ४ अत्यन्त चतुर ५ राज्य का उपद्रव ॥ ३५ ॥ ६किवाड़ नहीं खोले ७बहुत पत्र देकर ८ उस समय उलटा प्रतापसिंह का प्रताप बढा और बादशाह की लिखा वट से ९ राजापन लिया १० पाप का पात्र ॥ ३६ ॥ ११ दंड के रुपये १२प्रमाण (रुपयों के प्रमाण में) १३ देने योग्य बाकी के रुपये १४ मिस करके

नाम नहिँ जान्यौं पै *कबंध जो जवन कर्यो,
सो नजीब खान सुत मान्यौं सौंपि गेह सब ॥ ३७ ॥
बीकानैर नृपको सनाभि[१] जो तजि स्ववंस,
कष्ट लहि[२] कारामैं कबंध बजिबो बिहाइ ॥
कथित नजीबखान नामक नवाब कर्यो,
पुत्र जाकौं अकथित साहको हुकम पाइ ॥
या समय ताको उहाँ चलन बढ्यो अधिक,
अयुत१०००० तुरंगनसौं बाहिनी[३]कौं अधिकाइ ॥
जैपुरके जीतिबेकौं साहको लै सासन सो,
अज्जपॅन[४] लज्ज छोरि सज्ज भयो अनखाइ ॥३८॥
केते कहैं सो सुत नजीबको नजब नाम,
सूचैं के नजीबसोही नाँ यह जनकैं नाम ॥
दावे देस दिल्लीके छुराइबेकौं सज्जि दल,
प्रस्थित भयो सो जेर जैपुर करन काम ॥
साहसौं लिखाइ दै कह्यो जो अधिकार सब,
नारव नरेसकौं बुलाइ तानैं सह साम[६] ॥
दिल्ली छिति दावी जाटसो तिहिं अधिक दैकैं,
अमल प्रतापको करायो तहाँ अभिराम ॥ ३९ ॥
संबतके एकऊन बीसम१९ सतक१०० समैं,
कतिक गये१ रु भये२ देखो नये२ राज्य कति ॥
पुराग्यापुर१ राघोगढ२ सोपुर३ नलपुरा४दि,

*जिसका नाम नहीं मालूम हुआ उस राठोड़ को यवन किया ॥३७॥ १सपिंडी (सात पीढी के भीतर का भाई) २कैद में राठोड़ पजना छोड़कर ३सेना को बढाकर ४आर्यपन की लज्जा छोड़कर ॥३८॥ १ पिता का यह नाम नहीं है ६मिलाप के साथ नरूके राजा प्रतापसिंह को बुलाकर ७ भूमि ८ प्रतापसिंह को ॥३९॥ ९ उन्नीस सौ के शतक में कितने ही राज्य चलेगये और कितने ही नये हो

अैसैं बडे१ छोटे२ घनैं विगरे प्रमत्त अति ॥
लवपुर१ अलपुर६२ ज्योंही टोंक३ जावरा४ रु,
पट्टनि५ पुरोग३ यों नये के भये भूमिपति ॥
उक्त काल नारव प्रताप इनहीमें एह,
मिच्छनकों बंचिकैं४ महीप बन्यों छद्मति ॥ ४० ॥
अल्प ग्रास याकै पहिलैं हो मंचहेरी५ आदि,
तानैं देस१ काल२ छल३ बल४के सहाय तव ॥
जोर लहि छोटे१ बडे२ बावन५२ गढन जीति,
स्वीय कीनो दिल्ली सन दक्खिन२।३ प्रदेस सब ॥
अलपुर६१ राजगढ२ तिमहि तिजारा४ आदि,
याके बसवर्त्ती७ भये सहर अनेक अब ॥
कर्मध्वज८ मिच्छ९ वा प्रतापकों सुहृद कीनों,
जैपुरकी जीतिलैन नजब रुक्यो न जव ॥ ४१ ॥
दाबे कछवाहन जितेक उत दिल्ली देस,
जीति तिन्ह जैपुर भूं जीतिबो नियत जानि ॥
मित्र बहुरातें भेदि सचिव महावतकों,
मित्र राजाउत्तन नयो जो लयो डर मानि ॥
संग तस दैकैं सब वैभव मुसाहबको,
तीनलाख३००००० मुद्रा दै उपायनकों नय तानि ॥
पठ्यो जवन सो प्रतारक जवन पास,
भाख्यो जाइ टारो भय व्हैहैं नतो छिति हानि ॥ ४२ ॥
रानी१को निदेसलै सहाय जसवंत२ राखि,

गये१ लाहोर२ अलपुर३ झालरापाटन आदि४ यवनों को ठगकर ॥ ४० ॥५ मांचेड़ी ६ अलपुर ७ आधीन ८ कमधज (राठोड़) से यवन होनेवाला ९ मित्र बनाया ॥ ४१ ॥ १० जयपुर की भूमि निश्चय ही जीतना जानकर ११ नजर करने को, नीति फैलाकर १२ ठगाई करनेवाले यवन के पास इसयवन महावतको भेजा ॥ ४२ ॥

तब राजाउत्तन महावत यों भेज्यो ताम ॥
प्रीतिपत्र भेज्यो संग यौं लिखि प्रतापप्रति,
करिये नरेस१को रु मित्रनर२को यह काम ॥
जैबोहु न भावतो महावतके गेह जाको,
सो अब समुह आइ साधिबेकौं छल साम ॥
मिलि उरलाइ एक१ गजपैं महावतसौं,
बामर२ अध बैठि लैगो मीन१ ज्यों बँडिसर२ बाम ॥
बस्त्रालय आइ तास आसन अधर बैठि,
पीछैं जाइ संग लै जँवनकौं जवन पास ॥
आन्यौं उपहार उक्त भेट सु१ कराइ इभर२,
अस्व३न समेत रु दिखाइ आगमन आस ॥
पीछे आइ भाखी यौं महावत प्रतापप्रति,
दाबे देस जैपुरके छोरहु जिम स्वदास ॥
लेहु नित्य मुद्रा सतपंद्रह १५०० नृपालपतैं,
ठहैन जिम हे प्रबुद्ध आपुनैं मिलत हास ॥४४॥
जोरि तँहँ बंचक प्रतापनैं कपट जाल,
घर बिधि ठानि घोर करन बिसासघात ॥
लोभी उक्त मानि ताकौं आगरानगर लाइ,
पिहितैं उपाय कर्यो ताहीको पुनि निपात ॥
तोप१ गज२ बाजि३ द्रव्य४ आदिक बिभव ताको,
दाबि सब राख्यो प्रतिकूलता दृढ दिखात ॥

१ तहां २ जयपुर के राजा का ३ नीचे बैठकर ४ कांटा मच्छी को उलटी लेजावै जैसे ॥ ४३ ॥ ५ डेरे में ६ गाडी के नीचे बैठकर ७ महावत को उस नवाब के पास लेगया ८ सामग्री लाया था सो ९ राजा के घर से, जिस में हे चतुर अपने मिलने की हसी नहीं होवे ॥ ४४ ॥ १० ठग ने ११ छिपेहुए उपाय से १२ उस महावत को मारडाला

ऐसेही प्रकार सेखाउत्तनके देस इत,
ओज फैल्यो तिनको मनोहरनगर आत ॥ ४५ ॥
तिनकौं दबावन१ फझावन सचिवता२ रु,
राजाउत्त कुमर चबावन३ ठहै जमराज ॥
पत्रन मिलाइ निज मोचक सुहि गुपाल,
कीनौं खुसहालीराम बहुरा लखहु काज ॥
रानीकौं मनाइ बखतावर इनन रीति,
टाटीकोसो ओट सेखावाटीको बिरचि व्याज[3]॥
बाहिरके बीर भेजिबेकौं पुरमैं बुलाइ,
सीखदैन तिनकौं सज्यो अब कपट साज ॥४६ ॥
नाथाउत्त१ निखिल समज्ज्या[4]सद्म राखे सज्ज,
चक्रपति२ खंगारोत३ ए थित जलेबचोक ॥
कुमरको काका४ बेग तबहि बुलायो वह,
घातक बिचारि इन्ह पास राख्यो ताही ओक[6] ॥
राजद्वार बाहिर बजारमैं सकल सेना५,
राखी करि सज्ज कढिजाइ तो रचन रोक ॥
सरदकीडोढी पंथ राउत्त६ पठायो सद्म,
लैन बाँधिराखी दुहुँरघाँ भारि प्रबल लोक ॥ ४७ ॥
पुरमैं अवाई यौं मनोहरपुर१ पुरोग,
पीछे लये थान सेखाउत्तन खिनौंहिं पात ॥
यातैं सेखावाटीपैं इहाँके भट१ औ अनीक२,

१प्रताप ॥४५॥२भ्फलाय के कुमर के चबाने को३छल ॥४६॥४लश नाथाउतों को सभा के मकान में सज्जित रक्खे ५ सेनापति ६ उसी स्थान में ७ जयपुर के महलों की डोढी का नाम ८इंदराउत जसवन्तसिंह को उसके घर भेजा ॥४७॥९ आदि १० समय पाते ही ११ सेना, सेखावतों को विजय करने को सीखलेने

आये सीखलैन उहाँ जय करिबेकों जात ॥
जासमैं कुमार[1] व्है कुमारें[2] नृपकी हजूर,
सीखलै बिगत संक आपुनी हवेली आत ॥
संसदं[3] निकेत हुते तिनतैं बिधेयं[3] साधि,
सीमातैं नृजान बैठि निकस्यो अकसमात ॥ ४८ ॥
आवत जलेबचोक अंतर कुमर एह,
कटकँअधीस राजसिंह यों दिय कहाइ ॥
आपतैं न छानी हम जात अबही पै इहाँ,
रावरो रैहस्य कछु इच्छत करहु आइ ॥
कुमर कहाइ तुम क्रमहु[6] हवेली होइ,
एतेमैं हरोल ओकं देख्यो लोक उफनाइ ॥
बाहिर बजारकीहु सुद्धि पहुँची व्हाँ सुनौं,
कुसलपिनाती आज कुसल न जान्यों जाइ ॥ ४
बेनीतक[10] आपुनों मुराइ सो सुनत बेर,
बोल्यो टेरि आवत मैं मंत्रकरिहैं अबहि ॥
चोक१ बिच चोकी२सिकता[11]को कोट छाती सम,
लोक बहु ताके द्वार मारनकों सज्ज लहि ॥
कोटतैं नृजानहिं[12] भिराइ यह पैठो कूदि,
ओरनकों छोरि ढिग लीनो राजसिंह अहि[13] ॥
पूगे संग पंद्रह१५ तदीयं[14] भट ताही पंथ,

आई है॥ १ जयपुर के बालक राजा से २ सभा के मकान में ३ उचित र्‍ साधकर ॥ ४८ ॥ ४ सेनापति राजसिंह ने ५ एकान्त चाहता हूं ६ हवेली होकर जाना ७ आगे के स्थान पर लोक बहता हुआ देखा ८ खबर ९ आज कुशलसिंह के पोते (कुमर बखतावरसिंह) का कुशल नहीं दीखता ॥४९॥ १० बिना नीति से अपना पीछा फेरना सुनते ही "डिंगलभाषा में नीति को नीत कहते हैं" जिसके साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्यय करने से नीतक हुआ है ११ धूलकोट १२ पालखी को भिड़ाकर १३ राजसिंह रूपी सर्प को पास लिया १४ उस कुमरके वीर

कुमर सुनाई कटकेस¹ अब देहु काहि ॥ ५० ॥
काका सत्रुसाल ढिग देखि पूछ्यो आये कब,
भाख्यो तिहिं याहीबेर आयो द्रुत² हेभतीज ॥
राजसिंह भाख्यो आप क्यों यह बिगारो राज्य,
बाँर³ कब खात हाहा खेतमैं फलित बीज ॥
दिवस⁴ बिभावरी⁵ घटावत चलन देखो,
सोतो रन रावरी खटावत खलन खीज ॥
परगनाँ दाबे आठ अयुत८००००प्रमेय⁶ धर-
नीसके निदेस बिनु को करैं यों हठ धीज ॥ ५१ ॥
बल्लनादि गाम¹ तीन अयुत३००००को दाव्यो ढंग,
सोंपे भाखि भोजनकों चाकरी बिनुविचारि ॥
पिप्पलदा संटैं पंच अयुत५०००० प्रदेस पुनि
सांसन बिनांहि दाबे सासनसम सम्हारि ॥
कीलि⁷ बहुराकों⁸ दुष्ट नारवरकों मिल कीनों,
मित्र कीनों जानें सो महावत सचिव मारि ॥
बैभव धनीको दाबिराख्यो स्वीय सम्मतिसों,
को फल लहोगे अहो पापिनमैं बंट पारि ॥ ५२ ॥
बैन कटकेसको यहै सुनि कुमर बोल्यो,
अबहि सुधारो आप बिरच्यो हम बिगार ॥
काकाकी कटारी बही पीठिपैं इतेक बिच,

१ हे सेनापति ॥ ५० ॥ २ शीघ्र ३ खेत के फलेहुए बीज को बाड़ कब खाती है, दिन ४ रात में राज्य को घटाने का आप का चलन देखो आपकी यह खीज दुष्टों पर युद्ध में खटाती है ५ अस्सी हजार के प्रमाण वाले परगने राजा की बिना आज्ञा दबाये हैं ॥ ५१ ॥ ६ बिना ही आज्ञा उदक के समान रख लिया है ७ बहोरा को कैद करके ८ नरूका प्रतापसिंह को ॥ ५२ ॥ ९ सेनापति का वचन

क्रोड़[1] बखतावरको भेद्यो सहसा दुरसार ॥
प्रद्रवंत प्राननलै जैपुर चमूप[2] जब,
तीजे[3] पैंड पूगि ताकैं प्रहंत[4] कर्यो प्रहार॥
कुमर कटारी राजसिंह हिय भेदि कढी,
प्रमदा[4] कटाच्छ जैसैं छैल्लनके[5] उरपार ॥ ५३ ॥
क्रोड़ कटकेसको बिदारि पारि यौं कुमर,
बैठो चढि ऊपर निजासन तिहिं बनाइ[6] ॥
रंगि सत्रुसोनितसौं मूछनकौं भाख्यो राज्य,
जात बिगर्यो जो यौं सुधार्यो भलो अपनाइ ॥
ऊरध[1]अधर[2] ऐसैं दुहुँ[7]न बिहाय असु,
आयतिउदर्क[8] जथा उद्यम जस जनाइ ॥
सत्रुसाल पारदलौं[9] सिटाकि सिटाइ स्यार,
मारि याकौं ताहीखिन गेह गो सुंर[10] मनाइ ॥ ५४
त्यौं भट पचीस२५ इत१ उत२के परे तँहँ,
सपिंड१ असपिंड२ रु सगोत्र३ असगोत्र४ संग ॥
द्विरगुन ५० समीप संख्य[11] घायल भये दुरदिस,
आयुबल केते बचे तिनमैं अबस अंग ॥
वनिक धनिक राखि नाव धनकाज बोरि,
जियनचहैं ज्यौं मूढ नाविक पकरि संगैं[12] ॥
बिद्ध[13] बखतावर यौं पहुँचि पलावतकौं[14],

[1] भुजान्तर(छाती). [2] जयपुरका सेनापति [3] प्राणलेकर भागा तब [3] नाश करनेवाला [4] स्त्री के कटाच [5] छैलों (रसिकों) के ॥५३॥ [6] राजासिंह को अपना आसन बनाकर [7] इसप्रकार ऊपर नीचे दोनों ने प्राण छोडे [8] आनेवाले समय का फल [9] पारे के समान [10] देवताओं को मनाकर "हम ऊपर लिखआये हैं कि संस्कृत में देवता शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लोकरूढि के कारण पुल्लिंग लिखते हैं" ॥५४॥ [11] संख्या (गणना) [12] नाव का मस्तक पकड़कर नावड़िया (खेवटिया) रहै तैसे [13] बेधन किये हुए (घायल) होकर के कुमर बखतावरसिंह ने [14] युद्ध में भागतेहुए राजासिंह को

रंग१ राजसिंह२ राख्यो मूछ१ न कुपित रंग२ ॥ ५५ ॥
पीछैं खंगारुत्त१ न उपेत नाथाउत्त२ननैं,
चुंडाउत्त काढे अधिकार अपनौं बिचारि ॥
राख्यो मुख्यमंत्री बहुरा सो खुसहालीराम,
धीधन जो जाके पच्छ सोही दच्छ हिय धारि ॥
रानीके प्रकोष्ट निज जामिक सुभट राखि,
रैन१ सुरतान२ सज्ज सस्त्र अपनें सम्हारि ॥
पित्थल१ नरेस सह सोदर प्रताप२ पोतें,
माँहिं१तें निकासि माँहिं२ राखे अन्य मद मारि ॥५६ ॥
पावें नाहिं मिलन प्रसूं१ सुत२ परस्पर ज्यौं,
आपुनें भटन बीच भ्राता राखि यौं उभय२ ॥
करनलगे ए बिप्र सम्मतिसौं राजकाज,
राजाउत्त काढे सेस बाजी जिम हीन रय ॥
तापैं इन नारव प्रतापकौं मिलाइ तब,
द्योसा१ पुर लूट्यो दौरि अनयमैं जानि अय ॥
नगर निवाई१।२जो झलायके भटन जाइ,
जेर निज कीनौं ठानि ग्राम२।३न समेत जय ॥ ५७ ॥
कीर्तिसिंह सासक झलायको जरठ काय,
कुटिल हुतो जो अंध तैसे महापाप कारि ॥
सूनु बखतावरसो सोयो सूरसज्जा सुनि,
अंधता बढाई अब रोइरोइ बोध आरि ॥
बेगहि मरयो सो लोभतैं तिम कुल बिगारि,

॥ ५५ ॥ १ बुद्धिमान २ ड्योढी पर अपने पहरायत ३ बालक भाई प्रतापसिंह सहित ॥ ५६ ॥ ४ माता और पुत्र ५ बेग रहित घोड़ा निकाला जावै जैसे ६ अनीति में अपना भाग्य जानकर ॥ ५७ ॥ ७वृद्ध शरीरवाला ८बखतावरसिंह जैसा पुत्र ९ ज्ञान का शत्रु

ताहूको पिनाती[1] उनमत्त भयो पापपरि ॥
जाहि प्रभु[2] जानों मस्यो आपुनें समयमाँहिं,
सासक झलायसो[3] बहादुर भो नै बिसरि ॥ ५८ ॥
पीछें कतिवर्ष खोइ हाथतें झलायपुर,
आलंबनें[4] हीन लह्यो दीनलों दुख अछेह ॥
ईरखातें तबहु झलायपुरवारे द्विज,
हीन बहु मारे[1] करिडारे बहु व्यंग[5] देह[2] ॥
केही भ्रष्ट पारे जवननतें मुख थुकाइ[3],
गेरी तिनकी तिय जनंगमें[6] जनन गेह[4] ॥
मनुजको मारिबो कुतूहल पतित[7] मान्यों,
ऐसो भयो प्रथित[8] बहादुर कथित एह ॥ ५९ ॥
भावी[1][9] सो उदंत वर्तमान[2] अब भाख्योजात,
रुष्ट[10] खुसहालीराम इनकों बिगारि इम ॥
दावे बखतावर जे दावे पुनि ग्रंग[1] देस[2],
विद्यागुरु भट्ट[1] बहुरा ए जुरे एक[1] जिम[11] ॥
दोउ[2] नके नामके चलाये व्यवहार देल,
कूरम कितेकनके न रुची तथा प्रतिमें[12] ॥
पैत्ति[1][13] नमें राखे दे[2] बरूथें[14] दादूपंथि[2] नके,
सैंदि[1][15] नमें राखे दुव[2] दक्खिनी[2] अनीक सिमें[16] ॥ ६० ॥

१उसका पोता २ये प्रभु रामसिंह उसको अपने समय में मराहुआ जाना ३ वह झलाय का पति बहादुरसिंह नीति को भूलनेवाला (मूर्ख) हुआ ॥५८॥ ४बिना आधार ५ हीननासिका नकटे करदिये ६चांडाल मनुष्यों के घरों में ७उस नीच ने मनुष्यों का मारना खेल समझलिया था ८ यह बहादुरसिंह ऐसा प्रसिद्ध हुआ ॥ ५९ ॥ ९ यह वृत्तान्त आगे होनेवाला है १० क्रुद्ध [क्रोधयुक्त] ११ पत्र १२अपने सदृश होना नहीं रुचा १३पैदलों में १४सेना १५सवारों में १६समान॥६०॥

इंगलिया अंबा१ सातसहँस७००० तुरंगनतैं,
कीनौं निज आश्रित फिरंटन बिजय काज ॥
दक्खिनी चालुक्य जसवंतराव२ नाम दूजो,
बाउलाबजत सोपै सप्तिन इते७००० समाज ॥
सूचित पदाति१ सादी तंत्र निज राखि तिन,
काढि राजाउत्तनकौं लरि रु लुपाइ लाज ॥
गेरि भय पीछे लै निवाई१ भगवंतगढ२,
जैपुरको अमल जमायो रामर०१४ नरराज ॥ ६१ ॥
पिथलनरेसहिँ चढाइ ए सचिव पीछैं,
विद्यागुरु भट्ट१ अरु बहुरा२ बल बनाइ ॥
संग भट नाथाउत१ खंगारोत२ आदि सजि,
जाल जरि बिट्यो मनोहरपुर१हिँ जु जाइ ॥
पहिलैं मनोहरपुराधिप सगतसिंह१,
नाथ२ निज अंगज उपेत छोनि छक छाइ ॥
दर्प कछु कीनौं ज्येष्ठभाव कहि जैपुरतैं,
माधव महीप समै दायाँदत्व दरिसाइ ॥ ६२ ॥
तबही सगतसिंह१ नाथ२ ए पिता१ तनय२,
माधवनरेस काढे दोउरनको मदमारि ॥
अमरसर१ रु मनोहरपुर२ थान उभैर,
सीमा सह सहित छुराये छर्म डर डारि ॥
वर्तमानमैं बलि उभैर ए आइपैठे अब,
राजाकौं चढाइ लाइ मंत्रिननैं रचि रारि ॥

---

१ मरहठा जाति विशेष २ इतने ही घोड़ों के समूह से ३ हे राजा रामसिंह ॥ ६१ ॥ ४ सेना बनाकर ५ अपने पुत्र सहित ६ जयपुर से पाटवी होना कहकर ७ भाईपन दिखाकर ॥ ६२ ॥ ८ बड़ा भय डालकर

दै भय पिता१ सुत२ वे पीछे निकसाइ दये,
अमल जमायो पीछो आपुनौं जस उवारि ॥ ६३ ॥
पित्थल नरेसकी सवित्री इत व्याधि पाइ,
जैपुर असाध्य भई ताकी सुद्धि जानतहि ॥
मंत्रीद्वैरहि तासों द्वैरहि पुत्रन मिलैबो मानि,
लाये मोरि भूपतिकों २प्रत्यह प्रयान लहि ॥
३अंतेउर आपुनों प्रबंध करि द्वैरही पुत्र,
मातासों मिलाये कहि आये लाये जीति माहि ॥
तीजे३ दिन तासों तज्यो चुंडाउति काय तिम,
साधारन रीति भयो कृत्य पिछलो सबहि ॥६४॥
जाट१ जवनन२कै मच्यो यों पुर डिग्घ जुद्ध,
पूगो व्है तटस्थ तँहँ नारव पतौ१ नृपहु ॥
जैपुरके तंत्र दक्खिनी जो जसवंत२राव,
बाउलासो चालुकहु गो तह सदर्प बहु ॥
मंत्र करि बिजन पता१ रु जसवंत२ मिलि,
करट कनीनिकालौं द्वैरघाँ बनिसूचकहु ॥
मायापटु जट्ट१नतैं पिहित२ मिलाइ मन,
मिच्छ१नतैं प्रकट२ मिलेही रहे मंत्र महु ॥ ६५ ॥
मंत्री बहुरानैं तब जाइ तँहँ मिच्छनसौं,
कामाँपुर पीछो लयो मंग्यो वसु भेट करि ॥
बचन ११कलंबन प्रतापको हृदय बेधि,
आयो बिप्र जैपुर यौं लै जस दवात आरि ॥

॥ ६३ ॥ १ राजा पृथ्वीसिंह की माता २ प्रतिदिन गमन करके ३ जनाने में ॥ ६४ ॥ अलवर का राजा ४ नरूका प्रतापसिंह ५ बहुत घमंड से ६ एका… में ७ काक पक्षी के नेत्रों की पुतली के समान ८ जाटों से छाने मन मिलाकर ९ मधु[मीठे]मंत्र से ॥६५॥१० मांगा जितना धन देकर ११ वचनों रूपी बाणों

खीजि इत जुज्झत नबाब सु नजबखान,
डिग्घगढ पैठो जाइ भाजिगये जट्ट डरि ॥
सूनु लहुरो[1] जो रविमल्ल१को नवलसिंह२।२,
जट्टराज सोतो पहिलैं गो काल ज्वाल जरि ॥ ६६ ॥
पाकपंन[2] केसरी३।१ तदीय सुत पायो पट्ट,
काका रनजीत२।३कौं न भायो यह नीति क्रम॥
भावीकाल याहीतैं भयो रन भरतपुर,
दूजी२ बेर दीनों जो छुराइ अंगरेज छम[3] ॥
पीछो जयनैर इत नारव पता प्रबिसि[4],
सूझ्यो पुनि मायावी समस्तनकौं सुद्ध सम ॥
बंचककौं भायो सो दुवायो पटा बिप्रननैं,
पित्थलसौं भाख्यो स्वामि सेवक पता परम ॥ ६७ ॥
जासमैं पताको भाग्य ऐसो अनुकूल जान्यौं,
ठानैं प्रतिलोम[5]१ जोजो सोसो अनुलोम[6]२ ठाइ ॥
प्रत्युत[7] प्रमान दिल्ली१ जैपुर२ भरतपुर,
भूमि इन तीननकी लैं सुहि सुहृद भाइ ॥
मान्यौं सोहि दिल्लीको वकील द्विज मंत्रिननैं,
जंपी मिच्छ[8] कामां[9] पहिलैं ज्यौं जिन पैठिजाइ ॥
साक दंत धृति १८३२तैं सुपर्व धृति १८३३ संवतलौं ॥
ऐसे मचे जैपुर अनेक उपद्रव आइ ॥ ६८ ॥
मंत्री दुव[10]२ बहुरि चढाइकैं महीपतिकौं,
दाबी छिति लैन गये साकंभरद्रंगैं दिस ॥

---

१ ल्होड़ा [छोटा] पुत्र ॥ ६६ ॥ २ वृद्धावस्था में ३ समर्थ प्रतापसिंह ने ४ प्रवेश करके ॥ ६७ ॥ ५ उलटी वार्ता कार्य करता था सो ६ सुलटी होती थी ७ उलटा ८ मित्र ९ कामा नगर में ॥६८॥ १० सांभर नगर की ओर

मानवंस खंगारोत कतिक रहे मुरारि,
वेढ तिन्हँ बिखम रचाइ रारि धारि रिस ॥
कूरम लरे न तहाँ प्रभुके बिजय काज,
नारव मिलाइबेकी ईरखा धरैं अनिस ॥
यातैं भ्रम राखि मंत्री लै नृप निलय आये,
मान घटिबेकी जानि दोरहु ठानि कोहु मिस ॥ ६९ ॥
जैपुरको चाकर कह्यो जो जसवंतराव,
बंसमैं चालुक्य मरहट्ठ बाउला बजत॥
बिप्र दम्म लक्खन चढाइ ताके बेतनमैं,
लेखकरि मालपुरा१ टोडा२ द्वैर दये लजत ॥
ग्राम द्वै भेंटनकै जे दोउ२नकी सीमगत,
राखितिनकै ते कह्यो टारि इनकों रजत॥
सेस सब ग्रामनतैं लेहु कर सासक०है,
भूपतिकों राखि सिर स्वामिधर्मतैं भजत ॥ ७० ॥
जानी जसवंतराव साँसना यहै जदपि,
मानी इम मानी हम दिल्ली दायभागी मानि ॥
चापुरे ए करि न सकैं कछु अधिप बजे,
याहीतैं करैं ए ओट आश्रित हमहिं आनि ॥
मालपुरा१ टोडा२ असे मंदसों सम्हारि सठ,
चालुकनके जेते हमारे यह पाहिचानि ॥
अबहु अधीस कीनों मैंहि इनरको अधिप,
करिहै मदीयँ बस ग्रामनके मेरी कानि ॥ ७१ ॥

१ राजाउत २ निरंतर ॥ ६९ ॥ ३ सोलंखी ४ तनख्वाह में ५ वमराअ। ०
६ रूपा (हांसिल के रुपये) ॥ ७० ॥ ७ यह हुक्म है तो भी ८ दिल्ली के दावी
दार [बराट] करानेवाले ९ गर्व से १० मेरे आधीन ॥ ७१ ॥

दर्प्पसह दक्खिनी बिचार मन औसो बांधि,
मालपुर१ टोडा२ बस जे हे तिन कूरमन ॥
निकट बुलाइ कह्यो मैंहे तुमरोतो नृप,
जेहो तुम टोडा१ मालपुर२के निवासिजन ॥
बत्त यह सुनत न भाई मन बिप्रनके,
पक्करन लागे याहि टारनको एक पन ॥
यातें पुर टोडासौं प्रमत्त जसवंत आइ,
सैम्मद[1] बलित भारूयो एह हमरो सदन[2] ॥ ७२ ॥
औनै[3] चालुकनको सदासौं यह टोडा आहि,
औसो कहि अंद्रि पैं बनैबे लग्यो दुर्ग इक१ ॥
मालपुर१ टोडा२के प्रदेसबासी कूरम्मन,
अटकि सुनाइ भू हमारी तुम आधुनिक[6] ॥
जैपुरतें चक्कहु बुलायो जो प्रबल जानि,
करि तब सज्ज भेज्यो संग२ भट दै कतिक ॥
आयो चक्क यापर बसंतको बिडंबक व्है,
केतु१ सहकार२ पीलु१ पब्बय२ नकीब१ पिक२॥७३॥
काढ्यो जसवंतराव आतहि प्रघात[12] करि,
बदन बिगारि गयो लुट्टत सरनि[13] ग्राम ॥
बनिक१ बिरोधी प्रतिमल्ल२हिं[14] जिम बिहाइ,
कोप बालकनपैं करैं सफल कछु काम ॥

१दर्प से घिरा हुआ२हमारा घर ॥७२॥३ सोलंखियों का घर४है ५पर्वत के ऊपर ६ अभी के आयेहुए हो ७ सेना ८ वसन्त ऋतु का भ्रम करानेवाली होकर ९ सेना में ध्वजा है सोही आम्र वृक्ष है १० हाथी है सोही पर्वत है ११ नकीब है सोही कोयल है ॥ ७३ ॥ १२विशेष घात करके १३ मुख बिगाड़ कर मार्ग के ग्राम लूटता गया १४ जैसे, बनियां मुकाबला [सामना] करनेवाले को छोड़ कर बालकों पर अपने कोप को सफल करै तैसे

ऐसैं प्रतिबसथ झलाइ१पुर आदिनके,
इंद्रगढ२ कोटा३के रु सोपुर४के धन१ धाम२ ॥
लूटत गयो सो दुष्ट बुंदेलन देस लग,
तक्कूको भतीज बापू१ भेद्यो तँहँ जाइ तामैं ॥ ७४ ॥
ताहिसंग लैकैं आइ दोउ२न बहुरि तैसैं,
देस लूटि सोपुर१ करौली२के गढाइ दल ॥
दिल्लीकेर चाकर भए ए जाइ पीछैं द्वैरहि,
खीजे अब जैपुरपैं विग्रह बिथारि खल ॥
बेद गुन अष्ट इंदु १८३४ संबतके सुचि४ बीच,
मिच्छन मिले रु पीछैं जैपुरपैं बंधि बल ॥
हिंडोनि१ रु द्योसा२ खोहरी३के बनैं हाकिम ए,
छीनिलीनैं तीन३हि प्रदेस केही गेरि छल ॥ ७५ ॥
तीस धृति १८३० संबततैं हायन सअर्द्ध४ त्रय३,
जैपुरके देस रहे ऐसे बहु बिघ्न जब ॥
दयाराम याहीतैं पुरोहित इतेक दिन,
ताकत खिनहिं काढ जैपुर अतंत्र तब ॥
विद्यागुरुभट्ट१ बहुरा२ इन उभै६ बुधन,
उचित बिचारि आदिरीति व्यवहार अब ॥
भूँसुरके संगाहि पठायो मिथोहित८ भाखि,
सज्ज करि टीकाको बिधेय उपहार सब ॥ ७६ ॥
बेद गुन सिद्धि ससि १८३४ संबतके आद्र६ बिच,
ऐसैं व्यवहारी जन जैपुर१तैं बुंदी२ आइ ॥

१ ग्राम २ तहां ॥ ७४ ॥ ३ आषाढ मास में ॥ ७५ ॥ ४ साढे तीन वर्ष तक ५ राज्य कार्य की चिन्ता से रहित होकर जयपुर में रहा अथवा किसी के आधीन नहीं रहकर समय देखता रहा ६ पंडितों ने ७ ब्राह्मण दयाराम के साथ ही ८ परस्पर का हित कहकर ९ उचित सामग्री ॥ ७६ ॥

एक१ दंती एक१ मनिभूखन तुरंग उभैर२,
लोनैं१ सिरुपाव उभैर२ संसदैं२ निवेदे लाइ ॥
बालक नरेसकौं दिखाइ ए कथित बिप्र,
स्वीकृत कराये रीति सचिवकौं समुझाइ ॥
आन्यौं व्यवहार ताकौं अर्ब१३ सिरुपाव२ अर्प्पि,
दीनी सीख जैपुर दुहूँ२घाँ प्रीति दरिसाइ ॥ ७७ ॥
विष्णुसिंह२००१२ भूप जब बुंदीके तखतबैठो,
तबतैं पुरोहित गयोहो जयनैर तिम ॥
ऐसे बहु विघ्ननतैं अबलौं रह्यो सो उहाँ,
औविच्छिन्न बात यातैं भाखी उतकीहि इम ॥
प्रीतिको लिखाइ पत्र जैपुर महीपतितैं,
जा द्विजनैं लाइकैं निवेद्यो टीका संग जिम ॥
पीछे जुर्यो नेह पहिलैं ज्यौं दुहुँ२ओर पुनि,
साधक सुबुद्धिनतैं स्वामि हिय होत हिम ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

दयाराम इम लाइ द्विज, सब टीँकाको साज ॥
बुंदी१ जैपुर२ दुहुँ२न बिच, किय पीछो हित काज ॥ ७९॥
अति बिलंब हुव ताहि इम, सूच्यो कारन सोहु ॥
अब क्रमकारि सुनिये उचित, पहु६ उदंत पहिलोहु ॥ ८० ॥
श्रीजित किय जात्रा सफल, ज्यौं बदरी बन जाइ१॥
प्रभुको प्रथम बिवाह पुनि, सुनिये कहत सहाइ ॥ ८१ ॥

१ सुन्दर २ सभा में नजर किये ३ टीका लानेवाले को एक घोड़ा ॥ ७७ ॥ ४ निरन्तर ५ हृदय ठंडा होता है ॥७८॥७९॥ ६ हे राजा अब क्रम से पहिला वृत्तान्त सुनो ॥ ८० ॥ ७ प्रभु (विष्णुसिंह) का ॥ ८१ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे गृहीतसैन्यमेदपाटसुभटसलूमरेशराउत्तकुरावड़ेशराउत्तदेवगढ गमनस्वपराजयप्रत्यागमन१ कुरावड़ेशार्जुनसिंहमाधजीसिंध्यारयाल कच्छलघातहनन २ राजगढनारवप्रतापसिंहच्छद्मजयपुरखुशाली रामकारानिपातनखुशालीरामवधप्रवृत्तझलायेशकुमारबखतावरसिं हतात्पितृव्यशत्रुशल्यवारणा३ जयपुरनिष्कासितदेवगढेशजसवन्तसिं हनारवप्रतापसिंहभट्टविद्यागुरुकारामोक्षणा ४ फीरोजखांनाधोरण द्वाराराज्ञीमेलितसेखाउतादिज्ञातच्छलघातनारवप्रतापसिंहप्रच्छन्नप लायन ५ आक्रान्तदिल्लीजयपुरभरतपुरप्रान्तच्छलितयवनप्राप्तराज पदनारवप्रतापसिंहालवरराज्यस्थापनतत्समयकतिपयराज्यध्वंसक तिपयनवीनराज्यस्थापनसूचन ६ नारवप्रतापसिंहजयपुरागतमन्त्रि हस्तिपकफीरोजखांछलघातमारणबहोराखुशालीरामझलायेशकु-

---

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र में, मेवाड़ के उमराव सलूमर के रावत, व कुरावड़ के राउत का सेना लेकर देवगढ जाना और वहांसे हारकर पीछा आना।कुरावड़के राउत अर्जुनसिंह का माधजी सिन्धिया के साले को छलघात से मारना २ राजगढ के नरूका प्रतापसिंह का जयपुर में ठग विद्या फैलाकर बहोरा खुशहालीराम को कैद करना और झलाय के कुमर बखतावरसिंह को खुसहालीराम के मारने से काका शत्रुसाल का रोकना ३ नरूके प्रतापसिंह का देवगढ के राउत जसवन्तसिंह को जयपुर से निकलवा कर भट्ट विद्यागुरु को कैद से छुडाना ४ फीरोजखां महावत द्वारा राणी के मिलाएहुए सेखावत आदि से छाने नरूका प्रतापसिंह का छलघात से बच कर राजगढ भागना ५ नरूका प्रतापसिंह का दिल्ली, जयपुर, भरतपुर के परगने दबाकर यवनों को छलकर अलवर का राज्य स्थापन करना और राजा का खिताब पाना, तथा इस समय कई राज्यों के नष्ट होने और कई नये राज्य स्थापन होने की सूचना करना ६ नरूके राजा प्रतापसिंह का जयपुर से आयेहुए मंत्री महावत फीरोजखां को छलघात से मारना और बहोरा खुशालीराम का जयपुर में झलाय के कुमर बखतावरसिंह को छलघात से मरवाना ७ बहोरा खुशालीराम का जयपुर में दादूपं-

मारवखताग्ररसिंहजयपुरच्छलघातहनन ७ खुशालीरामजयपुरदाढू पन्थिमरहट्टसेनासंग्रहणसेखावाटीमनोहरपुरेशदमन ८ जयपुरेशपृथ्वीसिंहमातृमरणडींगजट्टयवनरणकरण ९ जसवन्तरावबाउलार्थ जयपुरभृत्यामालपुराटोडामदानश्रुततद्दुर्गनिर्माणतन्निष्कासन १० लुण्टितजयपुरप्रान्तजसवन्तरावबाउलाबापूमरहट्टप्रान्तत्रयग्रहणजयपुरटीकाबुन्द्यागमनवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥ आदितः ॥३५५॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तातैं सक चोतीस३४ तक, बंदि जैपुरकी बात ॥
अब बत्तीसम ३२ अंतमैं, जुंहि क्रम बरन्यो जात ॥ १ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

उक्त दुव२ कामनमैं एक१ करि बिप आपो,
तोलों इकतार उतकोहि बरन्यो उदंत ॥
यातैं कह्यो जात मुरि पिछलो उदंत अब,
ऐसैं सार्क दंत धृति १८३२ हायनको होत अंत ॥
व्याधि तिहिंबेर सुखरामकै कछुक बढ्यो,
सो मिट्यो तहाँलों रहि श्रीजित परम संत ॥

थियों को और मरहठों की सेना का नौकर रखना और सेखावाटी में मनोहरपुरवालों को दंड देना ८ जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह की माता का और डींग में जाटों और यवनों का युद्ध होना ९ जशवन्तराव बाउला को जयपुर की तरफ से तनखाह में मालपुरा और टोडा देना और उसको वहां गढ बनवाते देखकर निकालना १० जशवन्तराव बाउला और बापू मरहटे का जयपुर के राज्य को लूटकर तीन परगने दबाना और जयपुर से बुन्दी टीका आने के वर्णन का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीन सौ पचावन ३५५ मयूख हुए ॥

१ कह कर २ बड़ी बुन्दी का इतिहास ॥ १ ॥ ३ वृत्तान्त ४ विक्रम के शाक के

चैत्र१ बदि छट्ठी६ दिन आश्रमतैं आप चढ्यो,
अच्युत बदरिकेस अर्चनकों मतिमंत ॥ २ ॥
जैपुर नगर जात तुल्यपन१ रीति जिम,
पित्थल नरेस आइ सम्मुह अवधि पर ॥
ओन निज लैगो तहाँ आँजिनपैं२ बैठो भिन्न,
श्रीजित निहारेहू तपस्वीनमैं अग्रसर ॥
पच्छिम३१५ प्रयानसैं निबाही जैसे जोधपुर१,
ऐसैं सब रीति इहाँ न्यारी साधि जैनगर२ ॥
कास तास साखापुर३ बदनपुरेमैं रह्यो,
पीलु४१ इय आदिकन राख्यो उपदा५ प्रकर ॥ ३ ॥
केहीबेर पित्थल१ प्रताप२ तैं मिलाप कीनों,
ओज अधिकार रह्यो वृत्ति६ राजसी रहित ॥
आपुनों पुरोहित हुतो व्हाँ दयाराम वह,
आयो अरु ज्यों बन्यों सुनायो हित१औ अहित२ ॥
संबत बिबुध धृति१८३३ सम्मित लगत७ समा,
सानुकूल राखि मन सबको कृपासहित ॥
चैत१ सित २ छट्ठी६ दिन बदनपुरा१ तैं चढि ॥
संबसथ कूकस२ मुकाम बिरच्यो महित ॥ ४ ॥
वंस बलभद्रकेमैं कूरम जहां बिदित,
अबिदित९ नाम अचलोर३ दंग अभिधान ॥
कीनैं तहँ श्रीजित मुकाम अरु कूरमकी,
भेटमैं कटारी एक१ राखी होत हठ भान ॥

॥ २ ॥ १ बराबर की २ मृगचर्म पर जुदा बैठा ३ नगर के बाहर का पुरा ४ हाथी ५ भेट का समूह ॥ ३ ॥ ६ रजोगुण की (राजाओं की) वृत्ति बिना ७ सम्वत् ८ ग्राम ॥ ४ ॥ ९ जिसका नाम नहीं मालूम है

सुद्धि तँहँ आई यौं रुहिल्लन निकर सज्जि,
मग्गमैं उपद्रव मचाइराख्यो मनमान ॥
पहिलैं नजीबदोला मंत्री सुत वारे पच्छ,
पत्थरगढहिँ लै तहां ए लरे अतिमान ॥ ५ ॥
भूतकालमैं तब रुहिल्लनसौं साह भीत,
पुरम्मा१ लखनेऊ२ कलकत्ता३को सहाय पाइ ॥
बिरचि मघात अतिपात सत्त्र ब्रातनके,
जीत्यो साह आलमनैं पत्थरगढ सु जाइ ॥
जाबितै१खाँ नामक रुहिल्ला व्है पराजित जो,
उक्त गढ छोरि पस्यो साहके पपन आइ ॥
उक्तगढ १ आमिला२ बरैली ३ ए रुहिल्लनके,
लीनैं लखनेऊपति साहसौं मन मुराइ ॥ ६ ॥
पै जो लखनेऊ पति आमिला२ जबहि१जीत्यो,
कैद तस ३सासक रुहिल्लाको कुटुंब करि ॥
ताकै इक१ कन्या ही सु बलसौं पकरि तब,
डारि निज गेह परलोकतैं न नैंक डरि ॥
कन्यानैं मिलन काल राखि छुरिका कितहु,
धार खर१ जारकै धकोई बस्तिदेस धरि ॥
सोतो हनी तबहि रुहिल्लेकी सुता सु सठ,
मास तीन३ पीछैं सो नबाबहु गयोहि मरि ॥ ७ ॥
राम२०१४ प्रभु देखो कुलनारिनकी कैसी रीति,
जैसी अहो आधुनिक नरन न राखीजात ॥
जोबन गिन्यों न१ गिन्यों एक१ पतिमान२जानैं,

१ रुहिल्लों का समूह सजकर ॥ ५ ॥ २ मयूखों के समूहों के ॥ ६ ॥ ३ पति (हाकिम) ४ तीक्ष्ण धारवाली ५ नलों (पेडू) में ॥ ७ ॥ ६ इस समय के

जीवन गिन्यो न३ ज्यौं बिलासिबो बिभव ब्रात४ ॥
मात१ पिता२ दै जिहिं सुहि पति उचित मानि,
ओरनकौं इंद्रलौं बिडारैं सील अधिकात ॥
वाह जवनीकौं फैजाबाद१ लखनेऊ२ ईस,
गंजि रु गिरायो पै न रंजि रु भिरायो गात ॥ ८ ॥
बांधी लखनेऊ१ राजधानी तजि फैजाबाद२ ॥
नारीहंत कथित नबाबकेर सोहि सुत ॥
बैठो वा पिताके पाट पै न तैसो भाग्य बल,
जासौं नई दाबी सो गई भू१ छूटि कीर्ति२ जुत ॥
दाब्यो पहिलैं जो पुर कासिका१ प्रमुखं देस,
आयो पहिलैं सो अंगरेज़८नके हाथ उत ॥
यातैं पर्‌यो मंद लखनेऊको प्रताप अब,
लागो पुनि लुंटक रुहिल्लनको दाव द्रुत ॥ ९ ॥
जीवतहो नोलसिंह जट्टन अधीस जब,
खीजि तब साह मीरबखसी नजीबखान ॥
जूझि जिहिं मुगल स अंह६ समा७ जट्टनतैं,
पँट्टन छुराइलयो आगरा बल्ल प्रधान ॥
जट्ट नोलसिंह१ मर्‌यो भ्राता तब रनजीत२,
काका ब्रजेन्द्रादिकबहादुर३ गहि कृपान ॥
नोलसुत केसरी कुमार बय ठानि नृप,
हंकि पुर डिग्घ१आये कुंभेर२ को करि हान ॥ १० ॥

---

१ समूह २ मुसलमानी राजधानी फैजाबाद और लखनेऊ के पति को मार कर प्रीति से शरीर को नहीं भिड़ाया उसको वाह (प्रशंसा) है ॥ ८ ॥ ३स्त्री के मारनेवाले ४ काशी आदि देश ५ लुटेरे ॥ ९ ॥ ६ छेह वर्ष ७ १स्तान [पुर] ८ ब्रजेन्द्रबहादुर ॥ १० ॥

कुंभेर१हिं भेज्यो गढ डिग्ग२ सन पीछैं काढि,
पंचननैं जट्ट रनजीत जानि द्रोह पर ॥
तब हो रुहिल्ला१एक जट्टनके आश्रितहु,
ताको चढ्यो मासिक परयो सो बहु काल तर ॥
जानि बहिक्रावत रुहिल्लानैं पलटि जब,
निज बस कीनौं जीति डिग्ग तिनको नगर ॥
एक तस दुर्गसैं सक्योन करि सो अमल,
तामैं हुते जट्ट जे रहे ते रुपि धीर धर ॥ ११ ॥
काढ्यो डिग्गतैं१ जो रनजित्त१ सोहो कुंभेर१हि,
तासौं मिल्यो बाउला जो जसवंतराव२ तब ॥
वा खिन रुहिल्लापैं अचानक दुहु२न आइ,
दीनौं रतिवाह दल गेरि दलपैं गजब ॥
दुर्गकेहु जट्टननैं ताही खिन दाव देखि,
आइ गढ बाहिर चखाये आसि बाढ अब ॥
भीत दुहुँ२घातैं छोरि सकल रुहिल्ला भज्यो,
संगी भट तीनसै३०० बचे जे भजे संग सब ॥ १२ ॥
लीनौं जसवंत जो रुहिल्लाको बिभव लूटि,
पंचदस१५ पीलु१ संप्ति२ अष्ठतीस अग्ग सत ॥
सस्त्र३ बस्त्र४ भूखन५ खजानौं६ तोपखानौं७ सब,
जट्टन जहर जारि सो सही मतानुमत ॥
सो तिन बिडारि दयो बाउला छली समुझि,
आइ तब जैपुर रह्यो वह गरूर गत ॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १ हाथी २ एकसौ अड़तीस घोड़े ३ एक दूसरे की सलाह के साथ अर्थात् अभिप्राय और अनुज्ञा सहकर ४ निकाल दिया ५ घमंड रहित

मालपुर१ टोडा२ ताहि वेतनमैं[1] पीछैं मिलो,
बात इतनीसी रही पहिले प्रसंग बेत[2] ॥ १३ ॥
सो खिल कही अब रुहिल्लन प्रसंग संग,
इत सिख जट्ट बढे नानक मत अधीन ॥
आजि[3] तिन जीति लवपुर१[4] मुलतान२ आदि,
कोटि रिपु कही पंज[5] आबमैं अमल कीन ॥
जाबितखां जो कह्यो रुहिल्ला तानैं अब जाइ,
आनैं सिख जट्ट इत लूटनके लोभ लीन ॥
दिल्लीके समीपलग पच्छिम३।५ दिसाको देस ॥
निखिल दबाइ लयो तिननैं तब नवीन ॥ १४ ॥
जट्ट१ रु रुहिल्ला२ मार१ लूट२हिं मचाइ जब,
पंथ प्रसरावत उपद्रव खिनहिं पाइ ॥
क्रेता[6] रुकिबैठे व्यवहारक बनिजकार,
क्रेपलैकैं[7] कोहू जोर रहित सकैं न जाइ ॥
श्रीजितनैं सो सब उदंत[8] अचलोर ३ सुन्यौं ॥
ताके पति कुम्भहु दयो यह सब जताइ[9] ॥
जन अवरोधक लै संग न उचित जैबो,
अैनैंनमैं[10] चैन न उपद्रवन अधिकाइ ॥ १५ ॥
श्रीजित कह्यो नाँ अवरोधजन मुख्य संग,
लाये कछु दासीजन तित्थन[11] समुझि लाह ॥
पीछो अब तिनको पठैबो व्है न लैलै पनैं[12],
चिंति जिन्हैं आइ तिन्हैं साधिबो धरत चाह ॥

१ तनखाहमें २ पहिले प्रसंगवाली वार्तामें ॥ १३ ॥ ३ युद्ध ४ लाहोर ५ पंजाबमें ॥ १४ ॥ ६ खरीददार ७ बेचने की वस्तु ८ वृत्तान्त ९ जनानेके लोग १० मार्गोंमें ॥ १५ ॥ ११ तीर्थों का लाभ १२ नियम ले लेकर

*उज्झीहै न बरन अहंता तीजे३ आश्रममैं,
२राह रन ह्वैहैं सिर१ देह२नकौ दुव२ राह ॥
पीछैं पर सत्थ इष्ट साधहु अभय पाइ,
अब तँहँ कोन गोन करिहै सह उछाह ॥ १६ ॥
ऐसैं मधु१ मासकी बलच्छ१ दसमी१०के अँह,
श्रीजित पयान कीनौं उक्त अचलोर३ सन ॥
पंथ दरकुंचन मनोहरपुर४ पधारि,
भामरा५ पयागपुर६ लंघत भो धीरधन ॥
कोटफूतली७ त्यौं साहजिहांपुर८दै मुकाम,
राह रहि चोबारा९ रु रेवाड़ी१० प्रबीनपन ॥
राध२ बदि२ चोथी४ रविबार१ कौं रह्यो सो बहा-
दुरगढ११ जाइ लंघि बीचको बिखम बन ॥ १७ ॥
मिलन बहादुरगढेस११ ताजमुहुम्मद१।३,
एक१ कोस अवधि नबाब जो समुह आइ ॥
निष्कपटता१ सौं नम्रता२ सौं त्यौं निहोर३नसौं,
पहिलैं प्रसन्न लैगो स्वीय६सद्म पधराइ ॥
भूति अनुरूप वस्तु बिबिध निवेदे भेट,
श्रीजित न राखे नृप राखैं यहै दरिसाइ ॥
ताहूनैं कह्यो तब उपद्रव निचितं औन,
दासीजन यातैं इहाँ राखहु हित दिखाइ ॥ १८ ॥
ईस अचलोर३ को कह्यो जो तिहिं कूरम२सौं,
पहिलैं कही सौं त्यौं ह्यां नबाब मित्र प्रकटि ॥

*वर्ण(क्षत्रिय)पन का अहंकार नहीं छोड़ा है१वानप्रस्थपन में२मार्ग में युद्ध होगा तो मरेंगे ॥१६॥३चैत्र सुदि४दिन५वैशाख बदि ॥१७॥ ६अपने घर ७ अपने ऐश्वर्य के सदृश८राजा होवै सो रखते हैं अर्थात् हम वानप्रस्थ हैं९मार्ग में भय॥१८॥

यात्रा जट्ट के गढ१२ मुकाम पंचमी५ विरचि,
अर्कजा लघाई१३ घट्ट छट्टी६ रह्यो गम्य अटि ॥
राध२ वदि२ सप्तमी७ कलिंदतनयाकों राति,
पारजात सहसा तपहुत तुसार पटि ॥
अध्वसों डिगाई नाव वढिकैं सलिल ओघ,
एक१ कोस अवधि रुकी जो निट्ठि निट्ठि रटि ॥ १९ ॥
उच्च थल वालुकाको नाव अवरोध अरि,
श्रीजित विताई रत्ति सकल उहांहि यह ॥
प्रात निज संगिनमैं पेलतीर१४ पुगि रहे,
ताहिन मुकाम कीनों अष्टमी८ अनेह तह ॥
करत प्रयान चढि प्रातहि नवमि९ काल,
जलद अकाल कीनी वृष्टि करकानं जह ॥
यातैं सेढकोस११हि लुवारी१५ लों पहुँचि आप,
ताही ग्राम रहे तव संगिन समाज सह ॥ २० ॥
दसमी१० दिवस व्हांतैं जाइरहे जावदल१६,
एकादसी११ घोस रहे सामलीसहर१७ आइ ॥
हीरासिंह नाम सिखको जह अमल हुतो,
पंथ मिलि तासौं तह आदर उचित पाइ ॥
ज्वालापुर१८ होइ राध२ असित२ चउद्दसि१४ ज्यों,
इंदुसुत१३ वीर गये गंगाद्वार१९ उमगाइ ॥

१ जाने योग्य स्थानों में गमन करके २ जमुना नदी के परली तरफ जाते समय ३ धूप से बरफ पिघलकर पानी से नदी भरगई ४ मार्ग में ५ पानी का समूह बनकर ॥ १९ ॥ ६ रेत के ऊंचे स्थल पर ७ लग कर नाव रुकी ८ समय ९ मेघ ने बिना समय १० ओलों की वृष्टि की ११ डेढ़ कोस ॥ २० ॥ १२ वैशाख वदि १३ बुधवार

ठानि पंच५ बासर मुकाम तिहिँ पुराय ठाम,
साधे न्हाँन१ दान२ श्राद्ध३ आदिक बिधि सुहाइ ॥२१॥
चंद्र२ सित१ राध२की चउत्थी४ दिन ह्वाँ तैं चढि,
मग्गबिच तीर्थ भीम ओडारक२० नाम मानि ॥
साधि तँहँ न्हान१ दान२ थान तिहिँसौं समीप,
उचित मुकाम दीनौं करखडी२१ ग्राम आनि ॥
श्रीनगर भूपति प्रमार जो ललितसाहि,
ताको हो अमल तिहिँ ठां वह मुकाम ठानि ॥
कुंच करि ह्वाँ तैं रहे जाइ तिम हृषीकेस२२,
रथ१ हय२ आदि राखे जत्थहि उचित जानि ॥ २२ ॥
ह्वाँ तैं नरजान[२] बैठि तपोबन२३ तीर्थ होइ,
गंगा न्हान१ दान२ करि रहे शिवपुरी२४ ग्राम ॥
व्है डुंगरगाढ२५ ग्राम२५ त्यौं ब्रह्मनकोटी२६ होइ,
कीनैं बद्रियाकीकोह२७ नाम ठाँ निज मुकाम ॥
आयो एक१ कोस सन संगमैं सलिल उहाँ,
छोटी करि ह्वाँ तैं जानि सैलन सरौंनि[३] छाम ॥
संगी जन यातैं दूरदूरलौं चलाय सब,
श्वेत१ राध२ दसमी१० जहाँ दिन रहत जाम ॥ २३ ॥
प्रद्यौतन[४]१ बार चढि अद्रि मनभंग२८ पर,
कोस तीन३ अंतर मुकाम राजाखाल२९ किय ॥
पंद्रह१५ दिवस राखि तत्थहि मुकाम पुनि,
ज्येष्ठ बदि२ दसमी१० जहाँ तैं चंद्रकौं चलिय ॥
त्रिपथगा[५] धारा३० एक१ झूला करि लंघि तिस,

१ दिन ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ पालखी पींजस में ३ पर्वत तंग रस्ते में ॥ २३ ॥ ४ रविवार ५ गंगाकी

दूरकछुधारादुव२ संगम३१ मिलाने किय ॥
सोही देवआदिक प्रयागनाम तित्थ सुभ३,
सेयो दिन तीन३ रह्यो श्रीजित ऽहाँ पुण्य प्रिय ॥२४॥
नाम दुव धारन भागीरथी१ अलकनंदा२,
ऐसैं रहि दोउ२नके संगम३१पैं तीन३ अह ॥
मुंडन१ रु न्हान२ दान३ आदिक सविधि मंडि,
तित्थगुरु केसोराम कीनौं धन पात्र४ तह ॥
पीछैं लंघि सुक्र३ वदि२ भूत१४ गुरु५ वार पर,
उक्त जो अलकनंदा३२ झूला करि ऽहां असह ॥
रानीबाग३३ नाम ग्राम बिरचि मुकाम रहे,
श्रीनगर सासक सो जानी बात जान जह ॥२५॥
सो नृप ललितसाहि आवत समुख सुनि,
इततैं कहाइ आइहोतो हम मिलि हैं न ॥
तानैं तब आपुनौं अमात्य जो परमपति१,
नित्यानंद२ सेनानी२ ए भेजे अभिमुख ऐन ॥
सेना द्वैहजार२००० उभै२ इम जु समुख आइ,
श्रीनगर३४ लेगये निहोरन सिविर सन ॥
श्रीजित कहाई इम श्रीनगर सासकसौं,
तबहि मिलैं जो नृप मानि मिलो हमतैं न८॥ २६ ॥
अभ्यागम१ अभ्युत्थान२ आदि करिबो न कहि,
श्रीनगर भूप पहिलैंतो लई मानि सब ॥
श्रीजित पधारत नृजानकौं तजत समै,
जत्थहि मिल्यो सो आइ भूपति प्रमार जब ॥

१ मुकाम २ देवप्रयाग ३ तीर्थ ॥ २४ ॥ ४ दिन ५ ज्येष्ठ ॥ २५ ॥ ६ मार्ग में सन्मुख भेजे ॥ २६ ॥ ७ सन्मुख आना ८ ताजीम देना

संसद[1]मैं जात एक१ आसन प्रसभ[2] साह्यो,
तदपि न मानि भिन्न बैठो निज पीठ[3] तब ॥
अधिप प्रमार पुनि श्रीजित सिविर आयो,
सोहि तब साधि रु उहाँतैं भयो कुंच अब ॥ २७ ॥
सुक्र३ सुदि२ दूजी२ तिथि चाले श्रीनगर३४ सन,
सो३२ अलकनंदा३५ आई बहुरि जवी[4] सलिल ॥
ताकौं लंघि झूला करि पार गये श्रीजन तो,
ओलीतीर[5] स्वीय संगी पुरुख रहे अखिल ॥
तिनकी इरोलवारे[6] झूलापैं चढे तबही,
तूटी इक१ घाँकी[7] तंति नढ्ढून[8] बचीन तिल ॥
पै जे लई पकरि समीपके नरन संघ,
यातैं जन आरोही[9] कहे जे बचे उक्त किल[10] ॥ २८ ॥
अध्व[11] वह छोरि ओर झूलातैं उदकौघ[12]३५,
अन्य पंथ उत्तरि दये मिलान भरदार३६ ॥
क्रमतें मलयकोटि३७ चंद्रपुर३८ गुप्तकासी३९,
कुंड४० तस न्हाइ१ दै२ रु व्है सिवदरस कार३ ॥
नारायनकोटि४१ रहि पुनि व्है गनेसकोटि४२,
संग भेजि झलमलपटना१ मग सुढार ॥
त्रियुगीनारायन४३के दरसन काज तहँ,
अलप सत्थ आप जाइ पूजे उक्त उपचार ॥ २९ ॥
छुट्टि करकान कीनी जत्थहु जलद[13] बहि,

१ सभा में २ एक गद्दी पर बैठने का हठ किया ३ अपने आसन पर ॥ २७ ॥ ४ वेगवाले जल के ५ इधरली तीर (इधर के किनारे) ६ रस्सि (डोरी) ७ एक की डोरी ८ मनुष्यों के समूह ने ९ झूला पर चढेहुए पुरुष १० निश्चय ॥ २८ ॥ ११ मार्ग १२ जल के समूह को ॥ २९ ॥ १३ मेघ ने.

तातैं रहि तत्थहि त्रिलोक स्वामीके सरन ॥
प्रस्थित ह्वै प्रात झलमलपटना ४४पहुँचि,
लंघे प्रात झूलाकरि अन्य स्रोत४५ आवरन ॥
मुंडकट४६ नाम पूजि गनपति मग्गमैं रु,
सैल ढिग गोरीकुंड४७ जाइरहे स्वाचरन ॥
और संगी श्रीकेदार पूजिकैं वहुरि आये,
तोलौं रहे तत्थहि निवाहत सबै नरन ॥ ३० ॥
पीछैं बुधवार४ जुत ज्येष्ठ३ वदि२ तेरसि१३पैं,
मंडे भीमआडारक४८ जाइ अपनैं मुकाम ॥
श्रीकेदारगंगा४९ बिच दूजे२ दिन१४ न्हान साधि,
लंघि स्रोत५० झूलाकरि अग्गहु क्रिया ललाम ॥
ताही दिन श्रीकेदार५१पहुँचि जथा बिधितैं,
धीरधी प्रनमि पूजे प्रभुकौं उचित धाम ॥
हो तँहँ बरफ रासि ढिगाहि हिमालयको,
ताम मरे जाइ जन सत्रह१७ प्रमिति ताम ॥ ३१ ॥
भिन्न भिन्न तामैं जन पंद्रह१५ खपत भये,
बरजत सबके न मानी तिन नैंक बात ॥
पै इक्क१ उदैपुरके रानाको सगोत्र१ पुनि,
दूजो२ बुंदीसीमगत वंसीपुरको द्विजात२ ॥
जदपि निवारे इन दोउन२ तदपि जाइ,
पानि निज जोरि तँहँ कीनो सहँ देह पात ॥
जोलौं परे दीठि तोलौं जातहि लखाये जुग२,

१ झूला से ढके हुए प्रवाह को २ अपने आचार से-अथवा अपने चरणों से (पैदल) चलकर ॥ ३० ॥ ३ धैर्य की बुद्धिवाला ४ बरफ का समूह ५ तहां ॥३१॥ ६ ब्राह्मण ७ साथ ही

कैसी बिधि जानैं कोन गरिकैं गिरत गात ॥ ३२ ॥

दोहा—इम तँहँ श्रीजित ताहि अहं, करि अर्चित केदार५१ ॥
पच्छो करिय मुकाम पुनि, आइ भीम ओडार१।५२ ॥३३॥
गिरि टहरी१ गढवाल२को, श्रीकेदार५१ सु थान ॥
दिय पच्छो मुरि दाहिनैं, चलन अग्ग चहुवान ॥३४॥
आइ भीमओडार१।५२तैं, पुनि झलमल पटना२।५३सु॥
अग्ग झूला३।५४ ऊतरे, अखिल निबाहत आसु ॥३५॥
हित मग राजाकोटि५५ व्है, धामाँकोटि५६ सु धीर ॥
कल्पानादिककोटि५७ व्है, संगिन मग क्रम सीर ॥ ३६ ॥
पुण्य गुप्तकासी५८ परसि, ओखीमठ५९ तिम आइ ॥
दरस१ आदि केदारको६०, बिरचिय जजन२ बनाइ ॥३७॥
उहाँ भोग उपहारके, प्रथित द्रम्म पंचास५० ॥
करि अंजलि[3] प्रभु भेट करि, अग्गैं प्रस्थित आसँ ॥३८॥
हुलकर खंडूनारि हुव, निपुन अहल्या१ नाम ॥
तास धर्मसाला६१ तहाँ, कीने जाइ मुकाम ॥ ३९ ॥
धव पीछैं वह पुन्य धिय, करतभई सुभ काज ॥
बिबुधालय१ ठाँठाँ बिदित, सहित सदाव्रत साज ॥४०॥
व्हाँ तैं मग तुंगेस६२व्है, बिधि क्रम भेट बिधाइ ॥
ब्रह्मनकोटी६३ व्है बहुरि, अलकनंदिका६४ आइ ॥४१॥
तिहिं झूला करि उत्तरि रु, पित्थलकोटि६५ पधारि ॥
सनि७अष्टमि८सित१सुक्र३की, किय मुकाम सुखकारि ॥४२॥
नवमि९ गरुड़गंगा६६ नदी, मज्जन करि तिहिं माग ॥

॥ ३२ ॥ १उस दिन ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ २ पूजन ॥ ३७ ॥ ३ हाथ जोड़कर ४ गमन हुआ (किया) ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ५ पति के पीछे देवचित्र बुद्धिवाला ७ मंदिर ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ८ ज्येष्ठ सुदि ॥ ४२ ॥

व्है जोसीमठ६७ जात हुव, प्रविदित विष्णुप्रयाग ॥४३॥
अलकनंदिका६८ उत्तरे, पुनि झूलाकरि पार ॥
अग्ग स्रोत लंघे उभय२, ध्रुव छुरिका१।६९ असिधार२।७०
सित१ तेरसि१३ गुरु५ शुक्र३व्है, कल्यानादिककोटि७० ॥
अलकनंदिका७१ उत्तरे, जँहँ पुनि झूलाजोटि ॥ ४५ ॥
वाहि१३ दिवस संध्या समय, विकिरव१ रु जजिर२ बदरीस ॥
तँहँ किय पंच मुकाम तब, श्रीप्रभु धारत सीस ॥ ४६ ॥
आर३ द्वितीया२ सुचि४ असित, पच्छो करि प्रस्थान ॥
कल्यानादिक कोटि१।७२ किय, मुरतहु प्रथम१ मिलान४७
षट्पात्-असित१ तीज३ करि अप्प पंडकेश्वर२।७३ पूजादिक ॥
मग जोसीमठ३।७४ बलि गुलाबकोटी४।७५ सुभ बादिक ॥
व्है पीपलकोटि५।७६ हृदगरुड़गंगा६।७७ व्है संगत ॥
बैरागीकोटि७।७८ बलि होइ पँद्धति अप्रतिहत ॥
रहि प्रात लंघि भागीरथिय८।७९करन प्रयाग९।८०हु न्हान करि॥
शिवकोटि१०।८१होइ लंघिय सहज श्रीजित राजा बाग सरि॥४८॥
दोहा-देवीमहड़ा११।८२ गिरि दुगम, क्रम मग चढि चउ४कोस ॥
सुचि४ बदि२ चउदसि१४श्रीनगर१२।८३, आयो बहुरि अदोस४९
मिलि पहिलैं तस महिप सन, आये पुनि पँटभौन ॥
महमानी किन्नी महिप, दूजे२दिन सहसैन ॥ ५० ॥
सित प्रतिपद१ नृपनिज सदन, बिच आराम बुलाइ ॥
महमानी पुनि किय मुदित, अँह तीजे३ उमँगाइ ॥ ५१ ॥
चोथे४ अह व्हाँतैं चढि रु, रानीबाग१३।८४ पधारि ॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ ज्येष्ठ सुदि ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ २मंगलचार ३ आषाढ वदि ॥ ४७ ॥ ४ मार्ग में ५ विना रुकावट ६ चलकर ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ७ डेरों में ८ सेना सहित ॥ ५० ॥ ९ बाग में १० तीसरे दिन ॥ ५१ ॥

देवप्रयाग१४।८५ मुकाम दुव२, स्नान१ दान२ बिधि सारि॥५२॥
रहिय बहुरि भागीरथि१५।८६प, उत्तरि झोला आप ॥
राजखाल१६।८७ बिश्राम रचि, पंचमि५ सित१ दिन पाप ॥५३॥
करि ह्वाँ तैं दरकुंच क्रम, सुचि४ नवमी९ सित१ सत्थ ॥
हृषीकेश१७।८८ आये हुलसि, त्यक्त मिले सब सत्थ ॥५४॥
रच्छक जन१ हय२ रथ३ करभ४, जीवत रक्खे जत्थ ॥
तहाँ पहुँचि लै संग तिन्ह, मंडिय गमन समत्थ ॥ ५५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुचि४ दसमी१० पक्ख सित१ कुंच श्रीजित ह्वाँ तैं किय ॥
गंगालक्करघाँट गैल पटगृह पठ्ठाविय ॥
गंगाद्वार१८।८९हि गमन अप्प करि सुरि तँहँ आयउ ॥
बारसि१२ न्हाइ विधेय श्राद्ध कनखल१९।९० सद्धायउ ॥
कड़खड़ीप२०।९१ग्राम विश्राम करि लक्कर घाँट२१।९२निवास लहि
सुचि मास विसद१ चउदसि१४ समय गंगा२२।९३ लंघिय नावगहि५६

इक्क१ पोत उत्तरत उहाँ बारह१२ लग्गे अह ॥
अधिक उपद्रव इक्खि तजिय पद्धति पहिली तंह ॥
सित१ सावन५ सप्तमि७य सत्थ गंगा२२।९३ उत्तारि सब ॥
आइ ग्राम आहार२३।९४ अप्प मंडिय सुकाम अब॥
दरकुंच बिसद१ एकादसि११प आइ गुंडवारी२४।९[illegible] ॥
उत्तरे स्रोत जमुना२५।९६ उचित जथा तँरंड निवा[illegible]॥
करि ह्वाँ तैं दरकुंच हाइ कामाँ२६।९७ बिसवा२७।[illegible]
खोसा२८।९९ नामक दंग पाइ इतिमुख निवास[illegible]
निवसिनिवाई२९।१००नैरटोंक३०।१०१तिमसोनत्र[illegible]

[illegible]।१२॥ १ शनिवार ॥२३॥२ छोड़ा हुआ साथ ॥ ५४॥ [illegible]
[illegible] दिन ६ पहिया मार्ग छोड़दिया ७ नाव से ॥ [illegible]

अष्टमि८ भद्दव६ असित२ चढिय व्हाँतैं न मग्ग चिकि ॥
सरदारसिंह नारव नगर३२।१०३ उनियारापति करि अरज॥
पटु कियउ रत्ति रक्खन प्रसभ गदि स्वगेह पावन गरज५८
घनैं हठन हुव२ घटिय अप्प रहि नेगर३३।१०३नगर इम॥
उपदा² बिच सस्त्र इक१ तुपक१रक्खि रु श्रीजित तिम॥
महमानी न करन मनाइ व्हाँतैं इत हंक्किय ॥
जात रत्ति इक१ जाम आइ दगपुर३३।१०४ रहि आंकिय॥
दरकुंच असित२नवमी९दिवस हुवलानाँ३४।१०५मग करि विदित॥
आयउ स्वकीय आश्रम३५।१०६इहाँइम श्रीजित अतिपुराय इत५९

॥ दोहा ॥

या जात्रा बिच जे उदित, गिरि१ तीरथ२ पुर३ ग्राम४ ॥
समुझहु ते मग्ग चिन्ह सब, कहुँ कहुँ कथित मुकाम॥६०॥
इम सुर धृति१८३३ सक आगमन, जत्ता उत्तर४।७ जाइ ॥
बदरीस१हिं जजि भद्द६ बदि२, आश्रम पहुँचिय आइ ॥६१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिं चरित्रे मरहट्टाङ्गरेजसहायदिल्लीन्द्रालमशाहरुहिल्लाक्रान्तप्रस्तरदुर्गादिविजयनविजितामलाधीशलखनऊपतितदङ्गजासंग्रहणम् १ नवाव रतकालचकरिकापहर्तृरुहिल्लसुताहनन २ भरतपुरजट्टयवनरणाकरण

॥५८॥ ... र नामक नगर में २ नजराने में ३ नैणवा नगर में ॥ ५९ ॥ ४ मार्ग... ... हैं अर्थात् ये सब मुकाम नहीं हैं; कहीं कहीं पर मुकाम कहे हैं ... ... ६ पूजन करके ॥ ६१ ॥

महमानी ... ... महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, विष्णुसिंहके चरित्र चौथे४ ... ... अंगरेजों के बल से दिल्ली के बादशाह, शाहआलम का रुहि- ॥ ४३ ॥ ४८ ॥ ... ...ादि विजय करना और लखनेऊ के नवाव का आमिला ... ... उसकी कन्या को लेना१ रतकाल में उस कन्या का नवा- ॥ ५० ॥ ६ ... ... १ और नवाव का उस कन्या को मारना २ भरतपुर के जाट

जट्टाहृतडीघपुररुहिल्लशान्त्रिसंगरपलायन ३ जयपुरागतजसवन्तराव-बाउलाभृत्यत्वहेतुदर्शननानकमतानुयायिसिक्खपञ्चनदजनपदग्रहणजट्टरुहिल्लदिल्लीदेशलुण्टन ४ श्रीजिदुत्तरदिक्तीर्थयात्रानन्तरबुन्द्यागमनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥ आदितः ॥ ३५६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीजित१९८ प्रस्थित जाहि सक, रुचि बदरीबन राह ॥
सुर धृति१८३३सम्मित ताहिसक, बन्याप्रथम१नृप ब्याह॥१॥
प्रथम कृत्य श्रीजित१९८ प्रथित, सबविधि पुब्ब सधाइ ॥
चलिय अप्प बदरीस चहि, सबन उचित समुझाइ ॥ २ ॥
सुभट भवानीसिंह१ सह, सचिव सुरूप सुखराम२ ॥
पीछैं सन महिपालको, आरंभिय उपयाम² ॥ ३ ॥
कोटा१दिक भ्रातन कलित, हुव उपदा ब्यवहार ॥
सिसु नृप संग बरात सजि, किय प्रयान मह कार ॥ ४ ॥
सजि पत्ते लै भट१ सचिव२, बीकानैर बरात ॥
ससिसुत४ तेरसि१३ सुक्र३ सित१, सधिय लग्न सुहात॥५॥

॥ घनाक्षरी ॥

बयमैं चतुर्थ४ अब्द अंतर कुमार बर,

और यवनों का युद्ध होना और रुहिल्ले का जाट से डीघपुर लेना और शांति-शाह के युद्ध में रुहिल्ले का भागना ३ जसवन्तराव बाउला के जयपुर में आकर नौकर रहने का कारण दिखाना और नानकपंथी सिक्खों का पंजाब लेना तथा रुहिल्ले और जाटों का दिल्ली के देश में लूट मार करना ४ श्रीजित् (उम्मेदसिंह) का उत्तर दिशा की तीर्थ यात्रा करके पीछे बुन्दी में आने का छटा ६ मयूख समाप्त हुआ॥६॥ और आदि से तीन सौ छप्पन ३५६ मयूख हुए॥

१ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का ॥ १ ॥ २ ॥ २ विवाह ॥ ३ ॥ ३ प्रास ४ उत्सव का कार्य ॥ ४ ॥ ५ बुधवार ६ ज्येष्ठ सुदि ॥ ५ ॥

बीकानैर भूप गजसिंह सुता तुल्य बय ॥
नाम पद्मकुमारि२००१ बिवाही पट्टरानी२ नृप,
निपुन कुमार सुरतेसकी स्वसा सुनय ॥
देय बसु जात दैकैं कविन प्रसन्न करि,
सुभट१ अमात्य२ नैं लै सुजस तथातिसय[3] ॥
ब्याहि यों महामहसौं स्वामीकौं प्रथम ब्याह,
बाल महिपाल आन्यौं बुंदीपुरी बीत भय ॥ ६ ॥
बेद गुन अष्ट इंदु १८३४ संबत लगत बेर,
[4]मधु सित१ अष्टमी८ प्रयान सुमता मिलाइ ॥
[5]गम्य गिनि रामेश्वर श्रीजित१९८ किय3 गोन,
दक्खिनरा3 के तीरथ समस्त से[6]य दरिसाइ ॥
पट्टानि१ प्रथम१ पूजि केसवर पँयपयोज,
पत्तन बिसाला3 जाइ ईसको दरस पाइ ॥
सिप्रा५ न्हाइ गम्य भू परिक्रमि बिरचि श्राद्ध,
देय दैकैं द्विजन दयो बहु जस बढाइ ॥ ७ ॥
राखि डेरा दत्तके अखारे बिच आप रहे,
जात्रा होइ सफल जितेक दिन श्रद्धा जानि ॥
बैरागी हजार च्यारि४०००सायुध[9] इतेक बिच,
आत सुनि व्हाँके भीत संन्यासी पुकारे आनि ॥
बोले जे सदातँन[10] हमारे१ उनकैं२ है वैर,
मत्त जे प्रगल्भ हम थोरे यह छिद्र मानि ॥
[11]आहव रचैं तो आप करहु सहाय आज,

१ यदिन २ धन समूह ३ अतिशय (अत्यन्त) ॥ ६ ॥ ४ चैत्र सुदि ५ जाने योग्य ६ सेवन ७ चरण कमल पूजकर ८ उज्जैन ॥ ७ ॥ ९ आयुध सहित १० सदैव ११ युद्ध

दीनबंधु बिरुद पुरातन जो पहिचानि ॥ ८ ॥
सुनत पुकार सज्ज श्रीजित१९८। *स्वचक्र सह,
उनकौं अभै दै रहे आपही लरन अग्ग॥
बैरागी यहै सुनि पराजय निज बिचारि,
सुरारि कढे जे बाम दक्खिन पकारि मग्ग ॥
फैल्यो जस जाको खंड भारत अमित्त फीत,
लसत हिमालय१ सौं दक्खिन उदधि२ लग्ग ॥
ऐसी बिधि जाइ पूजे रामेस्वर नाम ईस१,
अतुल उदार दैदै बिप्रन बसु उदग्ग ॥ ९ ॥
जात्रा यह कीनी ताको प्रतिदिन अध्वक्रम,
लिखित न जान्यौं यातैं बरन्यौं समासं लाइ ॥
दक्खिन२।३ दिसाके इम तीरथ कारि असेस,
आश्रमपैं आये मास तेरह१३ मैं पुराय पाइ ॥
पृथ्वीसिंह१ भूप इत जैपुर तजत प्रान,
अनुज प्रताप२ कीनौं भूपति भटन आइ ॥
बान गुन अष्ट इंदु१८३५ संवत तखत बैठो,
मास राध२ असित२ चउत्थि४ पैं मह मचाइ ॥ १० ॥
भूपति प्रताप यह जैपुर बिदित भयो,
गानमैं रसिक राखि गायक गहिर गान ॥
याके नृप होत अवरोधतैं फितूर उठ्यो,
मान्यौं जन्म कीनौं पृथ्वीसिंहके कुँवर मान ॥
साच१ झूँट२ ताकी निहचै न भई पै सबन,
आदरयो न देखत प्रतापको जस उफान ॥

॥८॥*अपनी सेना सहित १ प्रफुल्ल विकासित[प्रफुल्लित]अथवा बहुत ॥९॥२ समुद्र का ३ संक्षेप से ४ वैशाख वदि ॥ १० ॥ ५ कलावँत, गहरे गानेवाले ६ जनाने से ७ मानसिंह नामक

वृंदावन यातैं चिरकाल वह मान बस्यो,
प्रभुके प्रताप पेख्यो जात्राके समय जान ॥ ११ ॥
जैपुर तख्त बैठो भूपति प्रताप जोलौं,
अब्द प्रति जान्यौं बुधसिंह१९७१नृपतैं उदंत ॥
बान गुन अष्ट इंदु १८३५ संवत अगारी बात,
अब्द प्रति लिखित न जानी या १९ सतक१०० अंत ॥
यातैं अब भाखीजात बिच बिच छोरि अब्द,
भेकफाल न्याय जो जनाई कथा भगवंत ॥
लेखालय सकल लिखायो प्रभु आपलेख,
जैसैं पुब्ब लिखात न आये उँक्त परजंत ॥ १२ ॥
नगर करोली नाह तुरसमपाल तनैं,
मानिक्यादिपाल१ अभिधान हुतो महिपाल ॥
ताकै ही तनूजा नाम अमृतकुमारि २००२तास,
घरं बर मानि तास बुंदी अधिराज बाल ॥
हड्डन अधीस बय तेरहम१३ हायनमैं,
ब्याहन बुलायो गो बरात साजि सो बिसाल ॥
संबत नयन बेद बसु भू १८४२ असितरसहों९,
कलित उछाह साध्यो बारसि१२को लग्नकाल ॥ १३ ॥

---

१ हे प्रभु रामसिंह आप के प्रताप से तीर्थयात्रा को गया तब मैंने भी उसको देखा था ॥ ११ ॥ बुन्दी के राजा बुधसिंह से लेकर जयपुर की गद्दी पर प्रतापसिंह बैठा वहां तक २ प्रतिवर्ष(हरसाल)का वृत्तान्त हमने जाना है परन्तु आगे की वार्त्ता ३ प्रतिवर्ष की इस उन्नीस सौ के शतक के अन्त तक की नहीं मिली इस कारण बीच बीच के ४ वर्ष छोड कर ५ मेंडक के फदकने के न्याय से भगवन्तसिंह ने कही सो लिखी है ६ हे प्रभु रामसिंह, दफतर से सब लेख आपने ही लिखवाया है सो ७ कहे हुए समय पर्यन्त का लेख, पहिले के लेख समान नहीं आया ॥ १२ ॥ ८ माणिक्यपाल नामक ९ पुत्री १० अष्टवर ११ मृगशिर बदि में प्राप्त ॥ १३ ॥

श्रीजितके सम्मत बिबाह यह दूजो२ उपाह,
आप१ घन१ पूरि *बसु१ बिदुरन कबिन ऐन ॥
बुंदी पुरभेदन स्वकीय बिधि काल बिस्यो,
देप सुख निखिल पितामह मुखनैं दैन ॥
सक गुन बेद अठ भू १८४३ मित समा समय,
राजा गजसिंह मर्यो बीकानैर सिर रैन ॥
सूनु तस जेठे गंजि तीसरो३ सुरतसिंह,
पीछैं भो महीपति बिसारि नय१ धर्म२ बैन ॥ १४ ॥
पहिलैं इरानको बन्यो स्वबल पातसाह,
नादिर स नाम जान दिल्लीकौं करी कतल ॥
ताकौं मारि ताहीके भरोसाके प्रधान भट,
खूब अपनायो राज्य अहमदसाह खल ॥
मथुरा कतल मंडि जानैं करि दिल्ली१ जेर,
मारि मरहट्ठ२न बिडारे पारि हीन बल ॥
साह आलीगोहर४९के जे भट मिले सभप,
ते जवन ताहीके अधीन कीनैं छोरि छल ॥ १५ ॥
सत्रह मतंगज भू १८१७ संबत प्रथम समैं,
अहमदसाह रन जीति तब दिल्ली आइ ॥
दिल्लीपति मंत्री लखनेऊ ईस१ उक्त दूजो,
प्रबल रुहेला जो नजीबुद्दोला२ नाम पाइ ॥
दिल्ली काज तंत्र इनकै करिगयो जो देस,
जाबितखाँ पुत्र भो नजीबुद्दोला गेह जाइ ॥
सूनु जा रुहेलाकै भयो गुलामकादिर सो,

* आपने मेघ रूप होकर घन रूपी बुन्दों से १ कवियों के घरों को पूर्ण किये २ पुर में ३ प्रवेश हुआ ४ आदि को ५ रत्नसिंह का पुत्र ॥१४॥१५॥ ६ आधीन

दिल्लीलूटिबेकों आयो या समैं छल दुराई ॥ १६ ॥
पहिलैं ख वेद धृति १८४० संवत अनेह पर,
दिल्ली साहआलम५० नै दुर्बलव्है पाइ दुख ॥
माहजि सनाम तासैं संध्याकों सबल मानि,
मंत्री निज कीनों सो पटैल बज्यो लोकमुख ॥
वाके बल स्वस्थ वेद वेद धृति १८४४ साक अब,
सो गुलामकादिर चलायो लौन लूट सुख ॥
साह हत लाइ ताहि राहमैं न रोकिसक्यो,
रोकि अब दिल्लीद्वार पैठिबेकी जानि रुख ॥ १७ ॥
जाके द्वैहजार २००० जंगी कामके सिपाह जानि,
रोक्यो तस अैबो साह आलम५०१५ प्रमत्त रहि ॥
अलैयार१ सुलैमान२नाजर३ प्रमुखें इहाँ,
बोले करजोरि है रुहेला स्वीय धर्म वहि ॥
उज्झि भय भाखत भरोसाके जनन अैसैं,
सो गुलामकादिर बुलायो सह सेन सहि ॥
आइ तानैं साह दिय पट्टसौं उतारि अरु,
क्रुद्ध बनि मंगिय खजानौं मनि मुख्य कहि ॥ १८ ॥
कूर पछिताइ साह बापुरे नजर कीनौं,
मनि गन आदि वित्त व्रात जो हो स्यात मन ॥
तदपि न तृप्तिव्है बहोरि खिल मंग्यो तत्थ,
धृजि मुगलेस भाख्यो अैसो अब तो न धन ॥
साहकों इतोक सुनि मारन लग्यो जो मूढ,

॥ १६ ॥ १ समय २ तहां ३ चिन्ता रहित होकर ४ दिल्ली के द्वार बंद ।
॥ १७ ॥ ५ आदि ६ भय छोड़कर ॥ १८ ॥ ७ धन का समूह जो मन में भी
था ८ बाकी का धन मांगा,

सोतो जिन आन्यो तिन रोक्यो [1]नतिभाव सन ॥
तोहू अति क्रुद्ध हाथ[2] छुरिका निकासि तिहिँ,
पूरे खल दीनों साह आलम५०। कों अंधपन[3] ॥ १९ ॥
केते अधिकारी मुगलेसके कतल करि,
ठानि कछु काल दिल्ली आपुनों अमल ठाम ॥
पीछैं मरहट्ठ सेना आइबेकी संक पाय,
हाथ जो लग्यो [4]वसु सो लै भज्यो भजि हराम ॥
ताको पलटाहु दीनों दिष्टैनैं[5] त्वरिततम[6],
वेर दुवर[7] आयो पकर्‌यो यह [8]बंधन बाम ॥
पीछैं कीलिरोक्यो घोर कष्ट सूलपंजरमैं[9],
छेदि छेदि थोरो यों रुहेला हन्यों छल छाम[10] ॥ २० ॥
माहजि वजीर इम जाबितखाँ [11]सूनु मारि,
आनि साहआलम५० ही बैठार्‌यो तखत अंध ॥
तंत्र[12] निज कीनों सब मुलक परन्तु ताको,
वाहिनी बड़ी बल [13]वसुंधरा किरलि बंध ॥
साक सर बेद इभ अवनि१८४५ अनेह इत,
भो पता असु[14] भूप कछवाहकको कबंध ॥
ता सुत कल्यान [15]गुरुमानी पट्ट बैठो तास,
[16]राम२०।१४ प्रभु मातुल जो रावरो सिथिल संध[17] ॥२१॥

---

१ नम्रता से २ हाथ से छुरी निकालकर ३ अंधा कर दिया ॥ १९ ॥ ४ धन ५ भाग्य ने ६ अत्यन्त शीघ्र ७ उलटा चतुरों से पकड़ा हुआ आया ८ कैद करके रक्खा ९ लोहे के कांटों के पींजरे में १० छल में समर्थ छली को मारा ॥ २० ॥ ११जाबिदखां के पुत्र को१२अपने(बादशाह के) आधीन१३पृथ्वी की बड़ी सेना से बंधन किया१४राजा प्रतापसिंह प्राण रहित हुआ१५बड़े घमंडवाला कल्याणसिंह १६ हे प्रभु रामसिंह वह आप का मामा १७ढीली प्रतिज्ञावाला अथवा प्रतिज्ञा में ढीला हुआ ॥ २१ ॥

तर्क वेद अष्ट ससि१८४६ संवत समय तामैं,
ईस जयनैरको प्रताप नृप बुन्दी आइ ॥
आम ईस७ सुभ्र१ बुध३ पंचमी५ लगन साधि,
दीपसिंह१९८।६ तनया बिबाह्यो सुखमा दिपाइ ॥
नामकरि दुलही बिचित्रकुमरी१६९१।१ जो निज,
अनुज तनूजा ब्याही औजित मह अघाइ,
पत्नी हीन आप यातैं दीपसिंह१९८।६पानि करि,
कन्यादान कीनौं बिधि गेहतैं खिल बनाइ ॥ २२ ॥
गढ१ तैं अवधि लैकैं बुन्दीपुर गोपुर२लौं,
मनुज न माये जे जिमाये ते बजार बीच ॥
होत जन भोजन चली बहि तरंगिनी व्हाँ,
सर्करासो सोर हो करि आज्य१ जल२ भक्त१कीच ॥
अनुजकी तनूजा प्रतापकों बिबाहि ऐसैं,
॥
आची सीख जैपुर१ अलोर२कै भयउ औंजि,
सीमापर संकुलि मचावत मैरक मीच ॥ २३ ॥
जावदूके७।२१ बंस बर सांवतका७।२१।१ बार जानि,
औजितनैं पहिलैं प्रतापकों दयो सुभट ॥
सीम रनमैं सो अभिधा करि बिनयसिंह१,
इहाँ काम आयो पायो अच्छरीन जो प्रकट ॥
मुहुकमासिंहउत्त२७।३१ जाके बोल देत मुरि,

१ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की २ अत्यन्त शोभा ३ अपने छोटे भाई की पुत्री को ४ उत्सव से तृप्त होकर ॥ २२ ॥ ५ नगर के द्वार तक ६ नदी ७ उस नदी में खांड [शक्कर] ही रेत ८ घृत ही पानी और ९ भात [चावल] का ही कीचड़ हुआ १० छोटे भाई की पुत्री जयपुर के राजा प्रतापसिंह को ११ युद्ध हुआ १२ भरकर (अवकाश रहित) १३ मरी रोग के समान मारकर ॥ २३ ॥ १४ नामवरी (यश) करके कछवाहे के पास

मंगल२ स नाम बीर आयो काम बीरबट ॥
जैपुर विनय राख्यो श्रीजितनैं भाखि जैसो,
पूजि तैसी कूरमपैं बाहमैं रह्यो निपट ॥ २४ ॥
संबत तुरग बेद बारन अवनि १८४७ समैं,०
पोकरनि वारैंनैं बिरोध बाँध्यो छल पारि ॥
जोधपुर दुर्गं नाती भीमकौं तखत जोरि,
याकौ तात तात भूप बिजय दयो उतारि ॥
कोप बस चंपाउत पहिलें कुसलसिंह,
कीनौं बखतेस जोधपुर वैं अनयकारि ॥
ताकैं अंत पाट बैठो बिजय तनूज ताको,
मान्यो उपकार भार तापैं जैत मदमारि ॥ २५ ॥
आउवा अधीस जैत१ कुसल तनूज अरु,
हेवसिंह२ पोकरनिवारो चंपाउत दोरहि ॥
केसरी तृतीय३ ईस आसोपको कुंपाउत,
रासिपति ऊदावत केसरी४ सनाम सोहि ॥
चीनि पहिलैं ए अपनैं मत चलत च्यारि,
राज परिखदमैं इन्हैं नृप बिजय रोहि ॥
पकरि पठाइ कारा मारे दुख दैदै पूर,
बरस अनेक बीते जोपै रह्यो बैर जोहि ॥ २६ ॥
देवसिंह चंपाउत कहतो असह दर्प,

१प्रशंसा में रहा ॥२४॥ पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह ने छलकरके विरोध किया, जोधपुर के गढ पर२पोते भीमसिंह को बिठाकर पिता के पिता अर्थात् पितामह (दादा) ३विजयसिंह को उतार दिया ४ अनीति करके बखतसिंह को जोधपुर का पति किया था ५ उस बखतसिंह का पुत्र विजयसिंह पाट बैठा ६ जैतसिंह का ॥ २५ ॥ पहिले इन चारों को अपने मत पर (स्वतंत्र) चलते७देखकर राजा विजयसिंह ने इनको राज्य की सभा में ८ रोक कर ९ कैद में भेजकर

सो कटार कोसपुट जोधपुर दुर्ग माइ ॥
सोतो कीलि मार्‌यो भो तनै तस सबलसिंह,
परिगो दगासौं सो पै तुपक प्रहार पाइ ॥
ताको हुतो तनय सवाईसिंह नाम तह,
जामै धरि वैर अब उक्त समै ढिग जाइ ॥
आराध्यो बिजय भूप ऊपरकी प्रीति सौं यों,
भूलि कृत भोरो जैसैं धीजिगयो मन भाइ ॥ २७
कथित गुलाबराय जाटिनी खवासि करि,
रानिनको छोगा करिराखी जो विजयराज ॥
राखी बँधवाइ तापैं भगिनी कहत रह्यो,
कुदिल सवाईसिंह निवहन इष्ट काज ॥
तेजसिंह नामक खवासिकै हतो तनय,
विस्फोटक रोग भयो ताकै सो बढत बाज ॥
तामैं न्हान आदि काम नियत असेस तजि,
साँचो भ्रात भास्यो भगिनीकौं सो उचित साज ॥२८॥
विस्फोटक मिटिगो तथापि पटुता न बनी,
चँपाउत भाख्यो भगिनीसौं यह हेतु चहि ॥
मंडोवर जाइ पूज्य देवन मनाइ रचो,
पूजन बढैं ज्यौं बाल जामिज अरोग रहि ॥
दंपति पधारि सर्व भटन समेत द्रुत,

१ मेरी कटारी के म्यान के भंडारे में जोधपुर का गढ समा सकता है २ उसको तो कैद करके मारडाला ३ सवाईसिंह के पिता और पितामह के साथ कई प्रकार के कार्य किये थे जिनको भूलकर जैसे भोले स्वभाव का मनुष्य धीजै तैसे धीज गया ॥ २७ ॥ ४ उस जाटनी को बहिन कहता रहा ५ खोटे दिलवाला ६ पुत्र ७ शीतला (चेचक) ८ शीघ्र बढा ९ सचा भाई दीखा ॥ २८ ॥ १० भानेज ११ स्त्री पुरुषों का जोड़ा अर्थात् गुलाबराय जाटनी (पासवान)

अभय करो यौं तेजासिंह प्रस्यो रोग आहि ॥
सो सुनि गुलाबराय स्वामीकौं सब समेत,
आनिसत मंडोउर लैगई बिसास लाहि ॥ २९ ॥
आपुनौं हिवाय औसैं चंपाउत पैठि उर,
रीभ्मत स्वैसाज्यौं वस कीनी सो गुलाबराय ॥
ताकै परतंत्र हो महीपति बिजय तैसैं,
कहती वहै सो करतो मन१ वचन२ काय३ ॥
पीछैं जो मरयो सुत तज्यो ठहाँ अन्न दंपतिरैनैं,
चंपाउत तबहु लिवायो अन्न हित चाय ॥
काहूमिस औसैं उक्त १८४० संवत नृपहिं काढि,
लैगो पुरबाहिर पूर बाहिर लगाय लाय ॥ ३० ॥
स्वीय भट सर्व राखि पुरमैं सवाईसिंह,
संग ठहै अकेलो काढि स्वामी समुपेत सब ॥
गोपुर जुराइ पुर पाछो पैठि गढगति,
जेठो नृप नाती भीमँ कारातैं निकासि जब ॥
आप मंत्रीपनको करार करि ताकौं आनि,
आनसौं सभाके सौधं गद्दी बइठारि तब ॥
नालीगन उच्छवके सूचक दगाइ नैर,
अखिल दुहाई फेरी भीमकी नवीन अब ॥ ३१ ॥
भूपति बिजयकै सुनैं ए.सुत सात७ भये,
फतैसिंह१ जालमर२ रु भोमसिंह३ नाम फाबि ॥

और महाराजा बिजयसिंह ॥ २९ ॥ १ बहिन प्रसन्न होवे तैसे २ पासवान और राजा दोनों ने ॥ ३० ॥३बाहर पूर्ण लाय लगाकर राजा को शहर बाहर लेगया ४ अपने भट ५ बिजयसिंह सहित सबको ६शहर के दरवाजे बंध करवाकर ७ राजा के बड़े पोते भीमसिंह को ८ कैद से निकाल कर ९रचा से १० सभा के महल में ११ तोपें ॥ ३१ ॥

त्यौंही सरदार४ सेरसिंह५ रु गुमान६ तह,
सामंतादिसिंह७ नाम सप्तम७ को छाइ छवि ॥
तेजसिंह१।८ नामक खवासिके भयो तनय,
होइ सुत जेठे सम जासौं रहे सर्व दबि ॥
भूखन१ बसन२ सस्त्र३ बाहन४ अतुल भासैं,
रोचमान जाको वपु ज्यौं जगमगात रबि ॥ ३२ ॥
भोम२ सुत भीम१।१ रु गुमान६ सुत मानसिंह१।२,
सप्तम७ कै सूनु भयो सूरसिंह१।३ नाम सह ॥
भूपको बडो१ सुत कुमारहि अंनसु भयो,
ताके पुत्र मान्यो भीम भोमको तनूज तह ॥
बाहिरहो जालम१ जो जनक प्रसाद बल,
जालपुर मानहो२ गुलाबराय इष्ट जह ॥
और सुत नाती जिते जियत हुते ते आप,
कारा कीलिराखेहे बिचारि घरमैं कलह ॥ ३३ ॥
कारातैं निकासि अैसैं भीमकौं नृपति कस्यो,
सो सुनि बिजयसिंह आन्यो उर कष्ट अति ॥
रानी सम मानी सो खवासिहु गुलाबराय,
मारिडारी चोरैं भेजि घातक सदंभ मति ॥
कुटिल सवाई पुरबाहिर बिजय काढ्यो,
गोकुलस्थ गुरुन मिलापहिं कहत कति ॥
कैसैं कछु होहु पैं खवासिकौं हानि रु काक,

१प्रकाशमान(कान्तिवाला)शरीर॥३२॥२भोमसिंहका पुत्र भीमसिंह३गुमानसिंह का पुत्र मानसिंह४सामन्तसिंहकेपुत्रसूरसिंह५राजा का बडा पुत्र(फतहसिंह)तो कुमारपन में ही मरगया६जिसके भीमसिंह को गोद लिया७पिताकी प्रसन्नता के बल से जालमसिंह कैद बाहर था८मानसिंह जालोर था ९ विजयसिंह ने कैद कर रक्खे थे ॥ ३३ ॥ १० कितने ही लोक गोकुल में गुरुओं से मिलना कहते हैं

बाहिरलै बिजय दयो दुख गरूर गति ॥ ३४ ॥
सेस भट संगहे बुलाइ तिनकों बिजय,
रंकपन लैं कह्यो सभामैं इम रोइ रोइ॥
मैं जरठ कोलौं अब रहिहौं जियत मंद,
पंचनको जो मत कहो वह लच्छन पोइ॥
पोखरिनवारेसौं कहाई तब पंचननैं,
खीज बस क्यों यह कलंक लेहु जस खोइ ॥
यौं तिहिं कहाई मो१कों भीम२कों मिलैं अभय१,
होहु तुम बीच२ तो इहां बिजय भूप होइ ॥ ३५ ॥
आँट कछु वासर रही यह उभय२ ओर,
जोरि छल गूढ जो महीपति बिजय जानि ॥
सबनके आगैं निज इष्टके करत सौंहँ,
इनकों बुलायो मिल्यो चंपाउत दुष्ट आनि ॥
बोल्यो पंच करहु करार दस१०कोस बट्टै,
जूझि पहुँचैबो भीम१ मो२जुत जियत जानि ॥
तुम सहधर्म यह बचन निवाहो तोतो,
बिजयकों गादीदै निकासौं भीम हठ बानि ॥ ३६ ॥
बायस सवाई लै यों पंचन बचन बीच,
जोधपुर आइ भाख्यो भीमसौं जस जनाई ॥
एक दुव अब्द भूप रहिहैं जियत अब,
जाके अंत नियत तुम्हारो पट्ट कित जाइ ॥
लीजे रत्न दुलभ खजानों खोलि संग सब,

॥३४॥१ युद्धा २ सवाईसिंह ने कहलाया कि मुझको और भीमसिंह को अभय मिलजावै ॥ ३५ ॥ ३ कुछ दिन ४ मार्ग में युद्ध करके दश कोस पहुंचाने का ॥ ३६ ॥ ५ सवाईसिंह काक ने ६ निश्चय

कीजे कछुकाल बास मोघर यौं बहिकाइ ॥
भीमहिँ उतारि त्यौं सवाईसिंह पाप भट,
चाल्यो कोस लूटि पीछो नृपकौं गढ चढाइ ॥ ३७ ॥
जात गढऊपर छली नृप पकरि जोर,
धकि उर कोप तोप मुच्छनपैं पानि धरि ॥
जाजो निज मंत्रहीं चमूसो पठई जवनक,
जवन१ गोकुलस्थर२ जालम३ ए मुख्य करि ॥
भीम१ रु सवाईसिंह२ दोउ रन कै तोरि१ भट,
आनहु कैँ पकरि२ अधर्मी अति सीम आरि ॥
ऐसी कहि बाहिनी पठावत वचनवारे,
भीमहिं बचावन मिले उतकौं धर्मभारि ॥ ३८ ॥
चूकत करार भूप विजय अधर्म चहि,
फेलि अघ सेना पठई सो पहुँची फौंवर ॥
जहाँके जाट चंपाउत देवै पकरायो हुतो,
तास नौंती वाको कुल संहर्यो असेस तर ॥
कोल जिन कीनौं उत जहै तिन मुरन कह्यो,
विजय अनीकैं तोहू मुरिवो न मानि बर ॥
खूब आसि फारत दुरओरके सुभट खिरे,
पेख्यो कछुकालसो सवाई१ भीम२ पीलुपर ॥ ४० ॥

१ मेरे घर में २ खजाना लूट कर ३ राजा विजयसिंह को ॥ ३७ ॥ ४ अपनी सलाह में ५ उनकी सेना को ५ शीघ्र ही यवन, गोकुली गोस्वामी और जालमसिंह इन तीनों को ६ दोनों के मस्तक तोड़कर ७ अथवा पकड़ कर लाओ ८ सवाईसिंह को अभय का वचन देनेवाले ॥ ३८ ॥ ९ विजयसिंह ने १० फौंवर नामक ग्राम में ११ देवसिंह चांपावत को गले में फन्दा डालकर पहिले पकड़ा था उसके १२ पोते और उसके सब कुलको मारा १३ विजयसिंह की सेना को पीछा फिरना कहा परंतु तोभी उस सेना ने वापिस लौटना श्रेष्ठ नहीं माना १४ सवाईसिंह और भीमसिंह को हाथी पर देखे ॥ ४० ॥

जोधपुर राजकी सभा ही होते सून्य जह,
आपुनैं जे जूझे तिनके दृग बचाइ अब ॥
पीलुतैं उतारि भीम१ संजुत पिहित पापी,
जो२ करभ[2] बैठि लग्यो पोखरानि पंथ जब ॥
काके आगैं लरत इतैं इनतैं काहू कह्यो,
ते जे कछु सेस सून्य बारन[3] निहारि तब ॥
कुणापन[4] जारि गये ऊबरे[5] निज निकेत,
सेस इतके जे पहुँचे ते नृप पास सब ॥ ४१ ॥
साक वसु बेद नाग भू १८४८ मित समा समय,
जैपुर१ अवंती२के[6] बिरोध बढ्यो क्रोध जगि ॥
तुंगापुर खेत आयो माहजि प्रसभ[7] तानि,
लक्ख दुव२००००० लै बल[8] अहंबल[9] आयास[10] लगि ॥
कूरम सचिव दोला आधो[1] राज्य दैन कहि,
पर जो नबाब हमदानी आन्यौं प्रीति पगि ॥
ऊबर्यो[11] अनीक जोधपुरको सहाय आयो,
दोहू२ ओर घोर अँवमर्द[12] मच्यो तोप दगि ॥ ४२ ॥
क्रोधबस जोधे[13]१ गयं[14]२ हय३ मेय[15]४ नासकाल,
पेखत खरे दुव२ चमूं परि गजन पीठि ॥
गोलालगि एतेमैं करीतैं हमदानी गिरयो,

१भीमसिंह सहित हाथी से उतर कर, वह पापी (सवाईसिंह)२ऊंट पर बैठकर ३ हाथी को खाली देखकर ४ मुरदों को जलाकर ५ युद्ध से बचे सो अपने अपने घर गये ॥ ४१ ॥ ६ उज्जैन के ७ हठ फैलाकर ८ सेना ९ अहन्ता (मेरे समान कोई नहीं)का१०श्रम करके११ऊँबर के युद्ध से बचीहुई सेना१२युद्ध ॥४२॥ क्रोध के वश१३वीर१४हाथी, घोड़े और१५ऊंटों का नाश होते समय हाथियों की पीठ पर राजा प्रतापसिंह और हमदानी दोनों खड़ेहुए सेना को देख रहे थे इतने में गोला लगकर हमदानी हाथी के ऊपर से गिरा और जयपुर की

आकुलता होत जयनैरके कटक ईठि ॥
भ्रात हमदानीको तदीय गज सज्जभयो,
कूरम कह्यो यों निज ओरके टकत नीठि ॥
दोला यह गोला मम अंग लगतो तो देर,
दैन असु नैकहु न होती यों परत दीठि ॥४३॥
भनत इतीक दोला बनिक कह्यो हे भूप,
स्वामीके निदेस बिनु आधोराज्य दैन पाहि ॥
आन्यों सो मर्यो तो अब रावरो रह्यो अखिल,
भागधेयँ प्रभुको वलिष्ट भास्यो लभ्य लाहि ॥
भूपति प्रतापकै इतमैं लघुवाधा भई,
चित्यो भूमि उत्तरन छोरिवो मतंग चाहि ॥
वोल्यो दै दुसाला मंत्री याबिच हरहु वाधा,
नाँतो गज सून्य देखि टिकिहै अनीक नाहि ॥ ४४ ॥
तैसैंही करत परदलके प्रबीर तह,
आगैं बढि आवते लखे रजगुन उफान ॥
हैंतिं झारि सेना जोधपुरकी दसहजार१००००,
समुख भिरो व्हाँ ठानि सत्रुनको अवसान ॥
काटि मरहट्ठ करवालनसौं संपरांय,

सेना में घबराहट की १ दृष्टि(इच्छा)हुई २ राजा प्रतापसिंह ने दोला नामक अपने मंत्रि से कहा कि हे दोला इधर(सेना की ओर)दृष्टि होने से ऐसी इच्छा होती है कि हमदानी के लगा सो यह गोला मेरे लगता तो ३ प्राण देने में कुछ देरी नहीं होती अर्थात् अब निर्लज्जता से भागने की अपेक्षा वा शीघ्र मरजाना अच्छा था४आपके प्राप्त राज्य को लेने से अर्थात् हमदानी को आधा राज्य नहीं दियेजाने के कारण आपका भाग्य बलवान् दीखता है क्योंकि सब राज्य आपके ही रहा ५ लघुशंका (मूत्र करने) की पीड़ा हुई इससे ६हाथी को छोड़कर नीचे उतरना चाहा ७ सेना नहीं ठहरेगी ॥ ४४ ॥ ८ शत्रु की सेना के वीर ९ शस्त्र चलाकर १० नाश करके ११ युद्ध में तरवारों से काटकर

माहजि भजायो कर्यो कूरमको जय मान ॥
भँवर१ बचे जो खेत तुंगार२ के अखिल[1] भरे,
जोधपुर रच्छक रहे सिसु नहि जवान ॥ ४५ ॥
जय जो कबंधनके जोर यौं प्रतापं पायो,
या १८४८ ही उक्त संवतमैं दक्खिन प्रदेस इत ॥
टीपूसुलतान अंगरेजनके त्रास टारि,
जुद्ध पहिले हीमैं भज्यो सठ कहाइ जित ॥
हैदरअली जो महसूर नृप मंत्री हुतो,
हो जनक टीपूको सु स्वामीको बिगारि हित ॥
आप बरजोर महसूरको बन्यौं अधिप,
चाल्यो मनमग्ग त्यौं गिनैं न उचिता१ऽनुचित ॥ ४६ ॥
किंवदंती जानै किरस्तान पकरे कहत,
छअयुत६०००० प्रान तिनमैं लव चतुर्थ१५००० छोरि ॥
क्रूर खिल पैंतालीस सँहस४५०००करे कतल,
वैरी सम भार्‌यो जो दयाकौं अंघसिंधु बोरि ॥
ताकै सुत टीपू भो कहायो सुलतान तिम,
जो श्रीरंगपट्टनमैं राजधानी निज जोरि ॥
सो सु सक उक्त१८४८बहिकायो फरासीसनको,
सत्रु कंपनीको सिट्यो मृधतैं[11] तुरग मोरि ॥ ४७ ॥
नैर बुंदी त्यौं इत हमीरसिंह नाथाउत,
विष्णुसिंह२००१२ नृपकी खवासी वैठि एक अंह[12] ॥
मंत्री बनि स्वामीको पितामहसों[13] मारि मन,

१ सब ॥ ४५ ॥ २ जयपुर के राजा प्रतापसिंह ने ३ टीपू का पिता था ४ बल पूर्वक जबरी से ५ मन चाहे मार्ग ६ उचित और अनुचित नहीं गिना ॥ ४६ ॥ ७ जनश्रुति (दन्तकथा) है ८ चौथा अंश (भाग) ९ बाकी के १० पाप के समुद्र में डुबोकर ११ युद्ध से घोड़ा मोड़कर ॥ ४७ ॥ १२एक दिन१३श्रीजित

भाख्यो आप भूपति१स्वतंत्र२बलि३ओज सह४ ॥
ईस कोटा जालम अमात्य कहिबेको आज,
इच्छत बिवाही सुता आपकों मचाइ मह ॥
है स्वसुर बंदगी बनाइबे उचित होइ,
जासौं संधि राखत सितारा१ दिल्ली२ आदि जह ॥४८॥
बात यह नृपहिं मनाइ यौं करी बिदित,
श्रीजित निवारयो उक्त सगपन होत सुनि ॥
सूचकन सिच्छ१ वय जोबन उफान२ बस,
चाह करि व्याह कीनौं अंगीकृत लाह चुनि ॥
भाख्यो सुनि श्रीजित बडे हमहु आज भये,
गेह हमरेमैं ऐबो झालीको अलभ्य गुनि ॥
मान्यो बरजोर तोहू सगपन सो महिप,
पिसुन१ कहा न करै लागो प्रभुकान२ पुनि ॥ ४९ ॥
साहसी जो चंपाउत्त इतकौं सवाईसिंह,
आपुने सदन दंग पोखरनि भीम आनि ॥
दूजे२ अब्द लैगयो बिवाहन अजलौं देस,
जैसलसहित मेर भाटिन उचित जानि ॥
व्याहिकैं सुन्यौं तँहँ महीपति मरयो बिजय,
ठीक लखि दुल्लहकौं खल सेल पीठि ठानि ॥
जोधपुर लायो अर्धरजनी समय जोही,
पाए जुरे अँरर न खोले इन्हैं पहिचानि ॥ ५० ॥

उम्मेदसिंह से १ उत्सव ॥ ४८ ॥ २ सूचना करनेवालों की शिक्षा से ३ व्याह करना स्वीकार किया ४ उस सम्बंध को जबरी से स्वीकार किया ५ चुगल क्या नहीं करता ॥ ४९ ॥ ६ अपने घर पोकरण नगर में भीमसिंह को लाकर ७ निर्जल देश ८ जैसलमेर में ९ ऊंट की पीठ पर चढाकर १० कपाट ॥ ५० ॥

जाइ उपद्दार[1] जब साहसी सवाईसिंह,
बित्त दै अधिक पटा दैबेको करार बहि ॥
जामिक[2] तहाँके फोरि बारी खुलवाइ जाइ,
गादी धरयो भीमहिँ ढुराए चौंर बाँहँ गहि ॥
तबहि अचानक बधाईकी चलत तोप,
कोलाहल्ल माँच्यो दंग जोधपुर आहि कहि ॥
बाहिर हो जालम[3] रह्यो सो पुर बाहिरही,
मारे सेस रुद्ध रैंजवीजी[4] भीम लेत महि ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

अंक बेद बसु चंद्र १८४९ इह, नियमित संबत नाम ॥
अर्क१चतुर्दसि१४ सुचि[5]४ असित२,तज्यो बिजय वपु ताम५२
तदनंतर रठोर तह, अष्टमि८ सित१ आषाढ४ ॥
भट चंपाउत भीमकोँ, बिजय पट्ट दिय बाढ ॥ ५३ ॥
बय त्रिसठि६३ हायन बिजय, तज्यो कलेवर तत्र ॥
बय छब्बिस२६ सम[7] भीम बलि, छितिप बन्यौं धरि छत्र॥५४॥
पहिलैं सूचिय जोधपुर, नाम अजित नरनाह ॥
तनय भए वाईस२२ तस, अभर्य१[8] आदि रज राह ॥ ५५ ॥
सुत जोरावर१ खेमसर१, स्वामी अंक[9] समप्पि ॥
पुत्र देव[10]२ इत पोखरनि२, ईस अंक थिर थप्पि ॥ ५६ ॥
कछुक दये इम भटनकोँ, सुत अकरथ[11] सुभाइ ॥
भजे सेस बखतेस भय, हन्यौं अजित[12] तब हाइ ॥ ५७ ॥

१ खिड़की पर २ पहरायतों को ३ जालमसिंह ४ राजवंशियों (राजवियों) को ॥ ५१ ॥ ५ आषाढ वदि ६ विजयसिंह ने तहां शरीर छोड़ा ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ७ वर्ष ॥ ५४ ॥ ८ अभयसिंह आदि ॥ ५५ ॥ ९ गोद देकर १० पोकरण के ठाकुर देवसिंह के ॥ ५६ ॥ ११ उमरावों को, पुत्र गोद दिये १२ बखतसिंह ने, पिता अजितसिंह को मारा तब बाकी के सब भागगये ॥ ५७ ॥

देव सु इम काकाहु दमि, भूपति विजय भतीज१ ॥
कीलि हन्यौं न गिनैं कुहक, बंधुभाव नृपबीज ॥ ५८ ॥
प्लवङ्गमम्–सु इम सवाईसिंह पितामह३ बैर पर,
दुख विजयहिं अति दै रु करयो सब राज्य कर४ ॥
मग्ग खवासि मराइ अजस१ अघ आदरिय ॥
अब भीमहिं पुनि आनि कथित१८४९ सक भूप किय५९

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे बुन्दीपतिविष्णुसिंहविक्रमपुरविवहनश्रीजिद्दाक्षिणयात्राकथन १ जयपुरेशपृथ्वीसिंहपरासुतातदनुजप्रतापसिंहसिंहासनासादन पृथ्वीसिंहसंदिग्धसुतमानसिंहवृन्दावननिवसन २ एकोनविंशतिशतकसंबन्धिशकक्रमकथाऽपरिज्ञानसूचनविष्णुसिंहकरोलीविवहन३ विक्रमपुरपतिगजसिंहपञ्चत्वतदनुजसुरतसिंहपट्टाक्रमण ४ लुण्ठितदिल्लीकरुहिल्लयवनगुलामकादिरशाहआलमान्धीकरणश्रुतदिल्लीशामात्यमाहजिसिंधियागमनकांदिशीकरुहिल्लकारामरण ५ कृष्णग

इस कारण देवसिंह काका था जिसको १ भतीजे राजा विजयसिंह ने कैद करके मारा २ राज्य वंशवाले सम्बन्ध को नहीं गिनते ॥ ५८ ॥३दादा देवसिंह के वैर पर विजयसिंह को दुःख देकर ४ राज्य को अपने हाथ में किया ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंहके चरित्र में बुन्दी के पति विष्णुसिंह का बीकानेर विवाह करना और श्रीजित् का दक्षिण की यात्रा करना १ जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह का देहान्त होकर छोटे भाई प्रतापसिंह का गद्दी बैठना और पृथ्वीसिंह के सन्देह युक्त पुत्र मानसिंह का जन्म होकर उसका वृन्दावन में रहना २ उन्नीस सौ के शतक में सम्पत्वार कथा नहीं जानने की सूचना करना और विष्णुसिंह का करोली विवाह करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का देहान्त होकर छोटे पुत्र सुरतसिंह का पाट बैठना ४ रुहिल्ला यवन गुलामकादिर का दिल्ली को लूटकर शाहआलम को अन्धा करना और दिल्ली के वजीर माहजी सिंधिया का आना सुनकर भागे हुए रुहिल्ला का कैद होकर मारा जाना ५ किशनगढ के

ढाधीशप्रतापसिंहकलेवरहानतत्पुत्रकल्याणसिंहगद्दिकोपविशनज यपुरेशप्रतापसिंहबुन्दीविवाहकरण ६ मरुदेशसामन्तपोकरणठक्कुर सवाईसिंहस्वपितामहदेवसिंहघातकयोधपुरेशविजयसिंहराज्यच्युति समयतत्पौत्रभीमसिंहपट्टप्रदापनपुनाराजसिंहासनारूढविजयसिंह-झँवरग्रामयुद्धपलायितभीमसिंहपोकरणग्रामनयन ७ तुंगाग्रामयो-धपुरेशानीकसहायजयपुराधीशप्रतापसिंहावन्तीपतिमाधजीसिंधिया समरविजयनाङ्गरेजसमरटीपूसुलतानपलायन ८ योधपुरेशविजयसिं हमरणचांपाउत्तसवाईसिंहभीमसिंहपट्टोपवेशनभीमसिंहस्वबन्धुमार णं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥ आदितः ॥ ३५७ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूडालदोहा ॥

इत बुंदिय बय तरुन अब, विष्णुसिंह२०० १वसुधेस बिराजत॥
गज१हय२विद्या सब३गुन, श्रुति४पुराण५इतिहास६काव्य७रत॥१॥
असह बेग बेधत उडत, बाजीन बल बरछीन बराहन ॥

राजा प्रतापसिंह का देहान्त होकर उसके पुत्र कल्याणसिंह का गद्दी बैठना और जयपुर के राजा प्रतापसिंह का बुन्दी विवाह करना ६ मारवाड़ के उम-राव पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह का, अपने दादा देवसिंह को मारनेवाले जोधपुर के राजा विजयसिंह को छल से गादी से उतार कर उसके पोते भीमसिंह को गादी पर बिठाना और फिर विजयसिंह को गद्दी पर बिठाकर झँवर ग्राम के युद्ध से भागकर भीमसिंह को पोकरण लेजाना ७ तुंगा नामक ग्राम में जयपुर के राजा प्रतापसिंह का जोधपुर की सेना की सहायता से उज्जैण के पति माधजी सिन्धिया के युद्ध में विजय करना और अंगरेजों के युद्ध से टीपू सुलतान का भागना ८ जोधपुर के राजा विजयसिंह का देहान्त होने पर चांपाउत सवाईसिंह का भीमसिंह को गद्दी बिठाना और भीमसिंह का अपने बान्धवों को मारने का सातवां ७ मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से तीनसौ सत्तावन ३५७ मयूख हुए ॥

१ भूपति ॥ १ ॥ २ घोड़ों के बल से ३ सूवरों को

प्रदर१तुपक२करि मृगपतिन, सहज हनिहु समुझैं सु सराहन॥२॥
कवि१बुध२भट३आदर करन, सचिव४न संसद[२] मान प्रसारन ॥
पंच५अंग मंत्र१हिं परखि, बलि प्रगल्भ[३] हित२ बैर३ बिचारन ॥३॥
रामभक्त कपिराजकों, मन्त्रिय इष्ट सु दिष्ट महीपति ॥
भुञ्जत जिहिं सब धाटिधर१, अरि२मेवास३अनिष्ट लहैं अति॥४॥
नृप सगपन हुव नांनता, कोटामंत्रिय झल्ल कनी सन[६] ॥
सो श्रीजित चाह्यो न सुनि, पालतँ पहु प्रतिमल्ल धनीपन ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक ख पंच बसु सोम १८५० असित२ सुक्र३ग सप्तमि७ अह ॥
इंद्रसिंह२०११अभिधान तनय जहांनि जन्यों तह ॥
प्रथम कुमर भव पर्व[८] तास उच्छव अति तानिय ॥
बिष्णुसिंह २००१२ बुन्दीस दये नानाबिध दानिय ॥
करि जातकर्म१ आदिक क्रिया लहि अवसर जग जस लयो ॥
श्रीजित तटस्थ भावहु सुनि सु भांवत मह बिरचत भयो ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

नाथाउत चालुक हमीर पलटायो नृप[११],
भावी बस सो मरयो रु मनोहर१ताको भ्रात ॥
कृष्णसिंह२ तनय उमेद३ही राज काज करैं,
ए काका१ भतीज२ द्रोह श्रिजितपैं उफनात ॥

१ तीरों से ॥ २ ॥ २ सभा में ३ मंत्र (सलाह) के पांच अंगों "कर्मणामारम्भोपाय, पुरुषद्रव्यसम्पत्, देशकालविभाग, विनिपातप्रकार, कार्यसिद्धि" की परीक्षा करनेवाला और बुद्धिमान् ॥ ३ ॥ ४ हनुमान् को इष्ट माना, श्रेष्ठ भाग्यवाले राजा ने ५ धाड़ा डालनेवाले ॥ ४ ॥ ६ झाला जालमसिंह की कन्या से ७ वह राजा अपने दादा से शत्रुता और स्वामीपन की पालना करता था अर्थात् उम्मेदसिंह के विरुद्ध था और उसकी आज्ञा में नहीं था ॥ ५ ॥ ८ ज्येष्ठ वदि ९ जन्म समय १० आपकी ओर का, वा रुचि पूर्वक उत्सव ॥६॥ ११ विष्णुसिंह को

संबत कहे १८५० मैं तिनहीनैं सुचि[4] मास सित,
देवगुरु[5] बार दसमी१० कों लग्न दरसात ॥
जालमकी तनया बिबाह्यो नृपकौं लै जाइ,
अजबकुमारि २००।३ नाम तीजी३ रानी क्रम आत॥७॥
जालम स्वसुर तदनंतर समय जानि,
आपओर आन्यौं मोरि जामाता[3] धरा[4]धनिक ॥
[5]हेरनमैं नानाबस्तु कीने भेट साधि हित,
[6]मैंगल१ तुरग२ सस्त्र३ बस्त्र४ हेम५ त्यौं मनि[7]क ६ ॥
मोदसों पठाइ बुंदी निकट महीपतिकैं,
फैली[8] जन जूह राखे आपुने जथा फनि[9]कैं ॥
उक्त १८५० सकहीमैं इत कालख नगर आंजि,
वीर दोला जैपुरको मंत्री सो मर्‍यो वनिक ॥ ८ ॥
संबत अवनि पंच अष्ट इक१८५१ मान समैं,
मत्तपनतैं करदलाके चोक जंग मचि ॥
भागपुर नरेस१ रु माहजि कुमर२ मिरे,
लगत प्रहार भागे जवन सभी[11]कैं लचि ॥
कंपनीकी सेना सम निपुन कवायदमैं,
राखि तँहँ नौरि[12]नकी पलटनि दोइ२ रचि ॥
भागपुर लैगई नबाबकौं निबाहि भोन,
सन्ध्याके सिपाहनके वेढ[13]तैं बचाइ वचि ॥ ९ ॥
लीनौं अंगरेज७न मलाका१ उपद्वीप इत,
बर्मा१ मास२ तैं जो लग्यो दक्खिन२।३ दिसा बि[14]थैरि ॥

१ आषाढ सुदि २ बृहस्पतिवार ॥ ७ ॥ ३ जमाई ४ राजा को ५ दहेज में ६ हाथी ७ जवाहिरात ८ फैल करनेवाले मनुष्यों का समूह ९ सर्पों के समान १० युद्ध में ॥ ८ ॥ ११ भय सहित १२ गाघरा पलटन १३ घेरे से वा युद्ध से ॥ ९ ॥ १४ फैलाव (विस्तार)

द्वै२ही लघु टापू और तासौं लगतेहि दावे,
सिंहपुर१ नाम रूपि नाँग२ नाम अग्रसारि ॥
अच्छे जळ१ पवन२ बनावत सुखद इहाँ,
कालापानी कहत प्रजामैं इन्हैं रूढि परि ॥
क्रूर अपराधी इनहीमैं बसिबेके काज,
कैलिकैं पठावत न अैबेको प्रबंध करि ॥ १० ॥
पुण्यापति पेसवा नाम बिप्र,
जाति चितपावन जो अपनैं न सुत जानि ॥
अंक निज लेतभो तनै गिनि अमृतराव१,
औरसभो पीछैं तास बाजेराय२ सुत आनि॥
रीति कहि पीछैं टारि पंचन अमृतराव१,
बाजेराय२ बैठास्यो पिताके पट्ट मह मानि ॥
उक्त१८५१ सकहीमैं कहे ए भये उदंत उभैर,
कढिकैं अमृतराव१ कीनौं द्रोह ताजि कानि ॥ ११ ॥
पुण्याको प्रदेस सब लूट्यो इहिं दुष्ट पीछैं,
बादी खल बिप्र१ गाइ आदिक हनैं बहुत ॥
पीछैं जिहिं कासी आइ लाखन खरच पारि,
द्विजनकी दुस्थता दबाई व्है उदार द्रुत ॥
पाप१ मैं रु दान२ मैं दुर घौं जो अतिसीम पायो,
सो१ इम बिडारि राख्यो२ इमहिं तदपि सुत ॥
भोग बसु पुण्या बाजेरावहु कुपुत्र भयो,
देसहि गुमाइदैहैं जो पुनि प्रमाद जुत ॥ १२ ॥
संवत नयन बान बारन अवनि१८५२ समा,
बुन्दी इत श्रीजित नरेसतैं भये बिमन ॥

१ कैद करके ॥ १० ॥ २ गोद ३ कुलवंती विवाहिता स्त्री से ॥ ११ ॥ ४दरिद्र ॥ १२ ॥ ५ विष्णुसिंह से उदास हुए.

पेच पिसुननके उपायतैं अवस पाइ,
जात्रा जगदीसकी करी पुनि सभक्त जन ॥
आपुनैं परिग्रह समेत जाइ आश्रमतैं,
पूजि उपचारन[1] दै उपदा[2] उदार पन ॥
जात[1] अरु आत[2] पहिलैं[3] जे परसे न जानैं,
तीरथ समस्त परसे ते सुद्ध भाव सन ॥ १३ ॥
सोलंखिन[1] नागर[2]न दै इत नृपहिं[4] सीछा,
कासी आत श्रीजित कहाई यह रोध[5] करि ॥
आवहु न देस अब रहहु उहाँहीं आप,
भेट सतपंच५०० द्रम्म प्रतिदिन लेहु भरि ॥
एक[1] संग बिक्रम[1।1] हो थाँनाँपतिको अनुज,
धीर दूजो[2] भूरा[2] महासिंह[1९।1९] बंसी धर्म धरि ॥
सामंतके[7।1।1]संगी च्यारि[4] भैरव[1।3] बिनयसिंह[2।4],
सूर खुसहाल[3।5] ज्ञानसिंह[4।6] हुते संग सँरि ॥ १४ ॥
संगी दुहितासुत कवंधज नवलसिंह[1।7],
सोमानी प्रधान खुसहालीराम[1।8] पुत्र[2।9] सह ॥
संकर[1।10] रु बिनय[2।11] तृतीय[3] तैसैं शिवदान[3],
तीन[3] संगी चारन बुलाये तिनकौंहु तह ॥
कृष्णराम[1।13] धात्रेय रु भोप[2।14] तिम कोटवाल,
श्रीजितके राज्य संग कोटवाली उज्झि वह ॥
कायस्थहु केसोराम[1।15] सालिग्राम[2।16] वैस्य संगी,
विष्णुदास[1।17] नाजर है इत्यादिक सार्थ वह ॥ १५ ॥

---

१ चूनड़ों के २ पूजा ३ भेट ॥ १३ ॥ ४ राजा विष्णुसिंह को शिक्षा देकर ५ श्रीजित का बुन्दी में आना रोककर कहलाया ६ हाडों की एक शाखा का नाम है ७ पत्तकर ॥ १४ ॥ ८ दौहित्र ६ छोड़कर ॥ १५ ॥

स्वीय गुरु कुसल१।१८भतीज तथा सुरतान१।१९,
जाइ जगदीस द्वै२ मिले ये पीछे आत जिम ॥
कापरनि हठन पठायो सुरतान १।१९ काह,
आयो कछवाहनके रामपुर व्याहि इम ॥
जानें तास सामंत२० रु सगत २००।२ तनूज जुग,
कापरनि आयो सुश्तो नायो गुरु मानि किम ॥ १६ ॥
श्रीगुरु१ सहित जे१है हाजरि तिनहिँ सभा,
श्रीजित बुलाइ भाख्यो जाहु सबही सदन ॥
जानि तिस बिन्नति करी तिन करन जोरि,
जातबेर आपुन अयोध्या सुन्यो पाप पन ॥
बुंदीके उदंतमैं अनिष्ट जिम पीछैं बन्यौं,
सूनु सरदार१९९।४ जैसैं छोरि बास दुक्ख सन ॥
जेठ१ सुत ईश्वर२००।१ समेत गयो जैपुर जो,
मुरनकी भाखी तब आप सो चही न मन ॥१७॥
नेर लखनेऊ१ फैजाबाद२के नबाबहुनैं,
आपतैं कहाइ कहो बंदगी बताइ आरि ॥
मामके पितामह१के रावरे पिता२सौं मेल,
हो यौं मिलि जाहु कालिह मो घर पवित्र करि ॥
सोपै प्रभु मानी नौं नबाबकी व्हाँ भेजि सेना,
नाँती समुझायो क्यौं न अन्यद्वाश जाल जरि ॥
नाथाउत कृष्ण१ अरु छाऊलाल२ नागरहि,
भूप पलटायो जोर जालमके पाप भरि ॥ १८ ॥
पीछे न पधारे१ लखनेऊ न पधारे२ पुनि,

॥ १६ ॥ १ अपने अपने घर जाओ ॥ १७ ॥ २ मेरे दादा से ३ इस कारण पोते को ५ जालमसिंह झाला के ज़ोर से ॥ १८ ॥

जाइ जगदीस मुरि आत इहाँ सर्वजुत ॥
कासी रहिबेहीकौं कहाइ अब आप कह्यो,
आसय कहाहै बनैं पाल्ले१ जेहि सत्रु२ उत ॥
भाख्यो तहाँ श्रीजित यौं बरजत मोहि भूप,
सर्व तुम जावहु सम्हारहु स्वनारि१ सुत ॥
रहिहौं इहाँ मैं बानप्रस्थन३ उचित रीति,
इच्छा उनकीतैं पाइ कासी बसिबो प्रजुत ॥ १९ ॥
ऐसो सुनि सासन कितेक जन छोरि आये,
श्रीगुरु१ कह्यो ह्याँ मैंतो रहिहौं संततं२ संग ॥
श्रीजित कह्यो नहि निबाहनकौं स्वापतेय३,
मंगिखैहौं मैं द्विज कह्यो गुरु१ धरि उमंग ॥
बिक्रम सुभट कह्यो तिमहिँ न चाहि बसुँ४,
इत्यादिक कतिक रहे ढिग ज्यों निज अंग ॥
जालम५ स्वसुर इत बुंदी राखि स्वीय६ जन,
भेद बल भूपकों रचायो अपनेंही रंग ॥ २० ॥
धाइआत मंत्री सुखरामपै दँम धमाइ,
लाख१००००० द्रम्म नृपपैं लिवाये जंपि जालमहि ॥
जाकरि गनेसघाँटी१ कोट१ दरवाजे२ जुत,
तारागढ तैसैं बडटाँका२ बर सिलप बहि ॥
कलाधारी हरिको निकेत३ रु पृथुल कोस४,
श्रीजितके सम्मत रचे ए ४पीछैं मेल रहि ॥
पै अब कथित काल झालानैं फरक पारि,
जानहु स्वकीय राखे बुंदी१ अरु देस२ चहि ॥ २१ ॥

---

१ बुन्दी का राजा मुझे बुन्दी आते को रोकता है ॥ १९ ॥ २ निरन्तर ३ धन ४ धन ५ जालमसिंह झाला ने ६ अपने वीर ॥ २० ॥ ७ दंड ८ मन्दिर ॥२१॥

तारागढ एक१ टरयो झालाके प्रबंधनतैं,
नाथाउत१ नागर२ सु पै निज करन सीर ॥
तारागढ लै चले नरेसहिं सिखाइ तिम,
बट्टतैं कहाई पहु आतहाँ लै कति बीर॥
सरवर हुतो दुर्गपति सीसोलेस अरज,
कराइ तानै आप आवहु गुन गहीर ॥
जालमके पच्छको इहाँ न ऐहैं कोऊ जन,
श्रीजितको सासन यों है हम धरहु धीर ॥ २२ ॥
देसके सिपाह तिम छसत६००छुराइ दये,
कामपर राखे तँहँ खारी३तटके कबंध ॥
मुख्य रनसिंह तिनमैं करि निज सु मान्यों,
दुर्गपति आवन दये न ऐसें मदअंध ॥
नाथाउत१ नागर२ व्हाँ भाखन लगे नृपहिं,
श्रीजित न छोरयो राज्य आप रहे हत संध ॥
जाकी आन सीस रहै स्वामी सो कहायो जात,
रावरे निदेसमैं न जोरकी गिनहु गंध ॥ २३ ॥
स्वामीको इहाँ हम मुराइराख्यो सूचकन,
खीजबस यातैं रह्यो पन्नगलों बलखाइ ॥
कासीपुर आत इहि कारनतैं रोध क्रम,
बरजि कहाइ रहिये तँहँ बिधि बनाइ ॥
श्रीजितहु भाखी रहिबेकी जब एह सुनि,
छोरि तब आये घनें आयतन मोह छाइ ॥
मंगिहों न कछु साधिलैहों दासभाव मैंही,

१ मार्ग से २ सीसोला ग्राम का पति ॥२२॥ ३खारी नदी के किनारे के राठो
४ विष्णुसिंह को कहने लगे ५ प्रतिज्ञा छोड़नेवाले ॥२३॥६ घरोंमें ७स्नेह कर

ऐसी बदि बिक्रम१ रह्यो उहाँ प्रसभ पाइ ॥ २४ ॥
श्रीगुरु कुसल१ भट बिक्रम२ दुवरहि संगी,
साँचेमनसोँ ए रहे स्वामी पास प्रीति सन ॥
सेनमैं थोरेसे मध्यभावतैं रहे सुनत,
और बहु छोरिआये मोह जोरि मोरि मन ॥
सबकोँ परखि ऐसैं कासीतैं उचित साधि,
आपहु प्रयान कीनो आजमके आँयतन ॥
मग्ग बिच रोकन अनेक नृप दूत मिले,
पै तिन्ह रुक्यो न नैंक श्रीजित समर्थपन ॥ २५ ॥
माधोपुर आत योँ कहाई कछवाह मनि,
जैपुरतैं मनुज भरोसाके पठाइ जह ॥
आश्रम पधारहु व्हे जैपुर प्रथम आप,
ऐहो जो न तो मैं आइ लाइहौं सो पुराय अह ॥
माधवपुरहि जाइ झालाके सचिव मिले,
अरजकरी योँ है न मंतु हमरो असह ॥
बय अनुसार नाँती रावरे प्रबल बनैं,
मानैं काहूकी न जानैं भोगनमैं नित्य मह ॥ २६ ॥
मंतु न तुमारो इम श्रीजित तिन्ह मनाइ,
जालमलोँ जैहरि कहायो नर्म गालिजुत ॥
जैपुरधनीको इत ऐबोही नियत जानि,
आपहि पधारे सोधि जामाता अभीष्ट उत ॥
समुह प्रताप आइ लैगयो उचित साधि,

---

१ हठ करके ॥ २४ ॥ २ स्थान में ॥ २५ ॥ ३ जयपुर के राजा ने ४ पवित्र दिन ५ हमारा अपराध नहीं ॥ २६ ॥ ६ जालमसिंह भी जयसिंह कहलाने लगा अर्थात् जैसे जयसिंह ने बुधसिंह से बुन्दी छीन ली थी तैसे यह भी छीनना चाहता है ७हसी (मसखरी) ८ निश्चय ९ जमाई का

पुव्व जिम बैठो भिन्न अजिन तहाँ प्रभुत ॥
जामाता कह्यो यौं निज संग मम सेना जाइ,
देस१ जुत बुन्दी२ करैं रावरे अधीन द्रुत ॥ २७ ॥
श्रीजित कह्यो यूँ आहि नांती लारिका सुपहु,
बात घरकीहै इहां हैं नहिं कछु बिचार ॥
जात अब व्हाँ मो समुझायेंतैं समुझि जैहैं,
आप जिन आनौं नैंक संसय मन उदार ॥
ऐसैं कहि जैपुरतैं बिरचि प्रयान इत,
आए निज आश्रम पढावत जस प्रसार ॥
बुन्दी कहि भेजी प्रभुरंगकै चरन बंदि,
कासी पुनि जैहैं रहिबो चहि सब प्रकार ॥ २८ ॥
ऊपर१ की बात ऐसैं कासीतैं कहत आए,
आप ढंग जैपुरव्है आश्रम स्वकीय इत ॥
अंतर२की नैंक न जनाई बात दोहू२ ओर,
हित हित१केन अहित२ न जो गिनि अहित ॥
सुभट१ अमात्य२ गये बुन्दीके सबै समुह,
माथावत कृष्ण१ कौं निहारि कह्यो आहि कित ॥
मो दृग जरातैं होतजात अब ऐसे मंद,
ऐसी सुनि ओरन दिखायो कृष्ण१ सो बिदित ॥ २९
कृष्णको बिवाहिबो समीप हो सो जानि कही,
आयु तनुमैं वे हैं न व्याह करिबो उचित ॥
पीछैं तुम बुंदीके मुसाहिब सु मंत्र पटु,

१ बोध ॥ २७ ॥ २ बुन्दी के इष्टदेव का नाम रंगनाथ है ॥ २८ ॥ ३ कि है ४वृद्ध अवस्था के कारण ॥२९॥५अब अल्प आयु में (कृष्णसिंह को मरवावेंगे इस कारण उसके विवाह करने को अनुचित कहा)

करिहो बिचारि काज मानिबो स्वबुद्धि मित ॥
सबको कुसल पूछि दै पुनि सबन सीख,
थान निज केदारेस पास बन्यौ तत्र थित ॥
यौंस कछु अंतर पितामह१ रु नप्ता२ दै२हि,
जालमको पच्छ जोपै जानतहो मंत्रजित ॥ ३० ॥
एकदिन श्रीजित श्रीरंगके नि२लय आय,
आप रहते ज्यौं रहे उत्तर४।७ त्रि३दर ओर ॥
दक्खिन२।३ त्रि३दर दिसा बैठे नर५नाह नीती,
ठानैं बुधउत्तर४।७ त्यौं दक्खिन२।३ भटनं६ ठौर ॥
न६प्ताको कृपानलै निकासि लखि पानि लयो,
तबतो सिटाइ संकि पलटे सबन तोर ॥
तोहू धीर श्रीजित सो दै नृपहिं भाख्यो तूहि,
मोहि हानि१ औरनपैं क्यों हनात२ कुलमोर ॥ ३१ ॥
सो सुनि सिटाइ भूप भूमिकौं लखन लग्यो,
पीछो दयो आप सो कृपान लयो कोसि कारि ॥
कछु न कह्यो गो न मिलाइ दीठि जोरि कर,
भीत आत ह्वीत नैंन हेतं लेत लेत भारि ॥
जंपी पच्छपा११तिन कुपुत्रहु प्रे१२जा जदपि,
पितर दयालु होत तदपि दया प्रसरि ॥
ऊठि तदनंतर निजाश्रम सिधारे आप,
सो पहु खि१३सानु पछिताइबेके कष्ट परि ॥ ३२ ॥

---

१ पोता ॥ ३० ॥ २ मन्दिर में ३ उत्तर दिशा के किवारे में ४ पोता विष्णुसिंह ५ श्रीजित की ओर पंडित और राजा की ओर उमराव बैठे ६ पोता की तरवार लेकर ७ वह खड्ग विष्णुसिंह को देकर कहा कि हे कुल के मुकुट मुझे दूसरों से क्यों मरवाता है तू ही मार ॥ ३१ ॥ ८ वह खड्ग म्यान में कर लिया ९ लज्जित १० स्नेह से ११ राजा के पक्षपालों से श्रीजित ने कहा कि १२ सन्तान कुपुत्र होजावै तो भी १३ राजा लज्जित हुआ ॥ ३२ ॥

कढत कितोक काल संसय बिघात करि,
कीनौं बिसवास जानि श्रीजितकौं सानुकूल ॥
बीच नृप जानी पिसुननकी कपटबाजी,
मानी मन सुद्धि पहिचानी प्रीति सुख मूल ॥
याही हेतु पीछैं कृष्णासिंह१ रु मनोहर२ ए,
बाग रंग आदिक बिलासमैं फबत फूल ॥
मंत्र मिस भोजनादि सालामैं बुलाइ मारे,
सीढीनपैं आत परयो मनोहर प्रोत सूल ॥ ३३ ॥
गयो भजि कोटा भीत छाऊलाल नागर सु,
जोपै कुँहकेस मरतो पै तज्यो विप्रजानि ॥
सेसहु भजे कति रहे कति उदास सम,
महिप कह्यो मैं रह्यो पितामह पूज्य मानि ॥
नेर इत कोटा नाम महिप गुमान मरयो,
सम्मत त्रि सर अष्ट अवनी १८५३ प्रमित आनि ॥
पायो तास तनय उमेदसिंह ताको पट्ट,
जालमके तंत्रहि रह्यो जो होत हित हानि ॥ ३४ ॥
आसफउद्दौला लखनेऊको नवाब इत,
हो जो अतिसीम दानी पै गुन परख हीन ॥
ताकै हो तनै न यातैं एक जवनीको तनैं,
बालक दलिद्रहु लख्यो रुचिर१ त्यों प्रवीन१ ॥
ताहि सुत मानि अंगरेजन मनाइ तानैं,
कुलहिं मनाइ वह पट्टधर पुत्र कीन ॥

---

१ सन्देह मिटाकर २ प्रसन्न ३ रंगविलास बाग में ४ सलाह करने के मिस ५ भोजनशाला में ६ बरछी में पोया हुआ ॥ ३३ ॥ ७ ठगों का पति ८ राजा गुमानसिंह ९ जालमसिंह झाला के आधीन ॥ ३४ ॥ १० उसके पुत्र नहीं था ११ पालकी पुत्र किया

जनक¹ अनंतर वजीरअली नाम जोही,
अवधि नवाब भो करे जिहिं सब अधीन ॥ ३५ ॥
जाको नाम जगमैं सहादतअली सुनत,
दाइभागी याको भो पितृव्य² सुत बहि डोरि ॥
ढंग कलकत्ता अंगरेजन कातिक देस,
जैनो लिखि भाख्यो देहु मोकहँ तखत जोरि ॥
तबतो बिकाल³ यह बिन्नति लगी न ताकी,
हाकिम वजीरअली चाहत सब निहोरि ॥
पै यह नबाब पीछैं मत्त बै⁴ तरुन पाइ,
करन अनीति लग्यो साहसी व्है बिधि कोरि ॥ ३६ ॥
नीच सुनि पाइ जोहि पुरमैं रुचिर नारि,
हठन बुलाइ सोही बिलसी अभय होइ ॥
पीछैं तो पिताहुकी जनी जे⁵ अवरोध पाई,
बिलसि सबल तेहु तरुनी जस गिगोइ ॥
ढंग१ अवरोध२रु कुटुंब३ बल४ मंत्री५ देश६,
सबन कुपुत्र समुझायो पै खलत्व खोइ,
तानैं नाहिंमानी व्हाँ बडे नबाबकी तियन,
अंगीकृत एह न यौं रंकलौं कहिय रोइ ॥ ३७ ॥
भावी तब तैसो अंगरेजनको चाह्यो भयो,
बेग कलकत्ता जो सहादतअली बुलाइ ॥
वासूँ लिखवाइ देस अद्ध औ द्रविण⁸ आदि,
जोहि बइठार्‌यो लखनेऊके तखत जाइ ॥

१ पिता के मरे पीछे ॥ ३५ ॥ २ काका के वेटे ने ३ विना समय ४ तरुण अवस्था पाकर ॥ ३६ ॥ ५ पिता की स्त्रियां ६ जनाने में पाई उनको बल पूर्वक (जबरीसे) भोगी ७ दुष्टपन से उनका समझाना खोकर ८ अंगीकार करके ॥ ३७ ॥ ९ धन आदि

कामी जो नवाब सब सम्मतिसौं दूरकीनौं,
सोपै अधिकारी अंगरेज[1]हिँ तहँ नसाइ ॥
उक्त१८५३ सकहीमैं *सकलत्रसौं वजीरअली,
भाजि आयो जैपुर प्रतापको सरन भाइ ॥ ३८ ॥
नृपसौं कह्यो इम सभाबिच मिलि नवाब,
सरन सहाय सुन्यौं बिरुद तुमारे वंस ॥
अब जो रहौं तो राखिलेहो[1] सौंपि दैहो[2] आप,
द्रव्यकी न हानि देहु ज्यौं मिटैं अरिन दंस ॥
राम[2]०[3]४ नरनाह यौं जनश्रुति सुनतरहैं,
इष्ट बसु[3] लेकैं कह्यो रामबंस अवतंस ॥
अर्थ लागिहै सो जो लगाइबे काहत आप,
धाम तुमरो तो रहो को करि सकत ध्वंस ॥ ३९ ॥
यौं पहु प्रताप राख्यो सरन वजीरअली,
जैपुरको जानि अंगरेजन यह उदंत ॥
आइ इष्ट महुर उपायनको[7] लोभ[1] आनि,
मंग्यो जो नवाब कछु ओरहु नियम[2] मंत ॥
सूचि यौं नवाब मुहिँ चोरैं छोरि सस्त्र सह ॥
अरिन दिखैहो तोहु दुरित न पैहो अंत ॥
सोहु ताको न सुनि अड़ो ताजि बिरुद स्वीय,
कीलि अंगरेजनकों सौंप्यो लखनेऊकंत ॥ ४० ॥
मानि इन कातर प्रतापहिँ कनकें[11]मुद्रा,

* स्त्री सहित ॥ ३८ ॥ १दन्त २ हे राजा रामसिंह ऐसे दन्तकथा (जबानी बात) सुनते हैं ३ चाहा हुआ (इच्छानुसार) धन लेकर ४ रामचन्द्र के वंश के मुकुट ने ५ धन ६ नाश ॥३९॥७ मोहरें भेट होने का लोभ करके ८ तोभी मुझको सौंप देने का तुम्हें पाप नहीं लगैगा ९ कैद करके ॥ ४० ॥ १०कायर ११ सुवर्ण की मुहरें प्रचार (चलन) की तो नहीं दीं मोहरों का प्रचार सुवर्ण

रीतिकी१ न दीनी दीनी रीतिकी२ कनकरंग ॥
आश्रम बिसिख अष्ट भू१८५४ समा सक अनेह,
अधिप प्रताप यौं कलंक सु लगायो अंग ॥
पीछैं पछितायो आरकूटकी महुर पेखि,
सो लग्यो रहन गूढ लै त्रपा१ कुजस संग ॥
श्वान जोलौं कील्यो बहु सूत्र लोह पंजरमैं,
तोलौं अंगरेजन वजीरअली अति तंग ॥ ४१ ॥
पट्ट लखनेऊको सहादतअलीहु पाइ,
स्वीप मतमाँहिं खिल कीनौं सबकौंहि सुख ॥
पीछैं व्है प्रगल्भ नयपाटव अतुल पाइ,
देसतैं मिटैबो चाह्यो कंपनीं निदेस दुख ॥
जानैं गजउत्तर अगाऊ लिखि केहि जानैं,
सोरे अधिकारी सब लंधनके स्वामि मुख ॥
हुतहि इहाँको होतो छल सु इजारदार,
पै न फल पायो कछु दिष्टके बडे कलुख ॥ ४२ ॥
उक्त१८५४ सकहीमैं तक्रू हुलकर ईस इत,
विग्रह बिहात भो मलार नाती काल वस ॥
ईंदउर द्रंग जसवंतराव एकदृग,
तनय खवासिको तदीय बैठो पट्ट तस ॥
उक्त१८५४ सकहीमैं भीमैं जोधपुर ईस इत,

१ का है सो तो नहीं दी और सुवर्ण के रंग की २ पीतल की मुहरें दी ३ पीतल की मुहरें देखकर ४ लज्जा लेकर गुप्त रहने लगा ॥ ४१ ॥ ४ बुद्धिमान् अथवा जयवंत ५ और नीति की चातुरी ६ विस्तार पूर्वक उत्तर ७ जाने (ज्ञात) हुए ८ आदि ९ भाग्य के बडे पाप से अथवा बडे पाप के भाग्य से ॥ ४२ ॥ ९ शरीर छोड़ा (मरा) १० कांणा ११ तक्रू के खवास का पुत्र उसके पाट पर बैठा १२ भीमसिंह ने.

जालपुर सेना भेजि बेढ्यो दुर्ग खोइ जस ॥
पंद्रह१५ समा वयमैं मानसिंह तास पति,
पायो नाँ पराजय रचायो खूब रारि रस ॥ ४३ ॥
संबत कलंब भूत अष्ट अवनी१८५५समय,
तामैं इत बुन्दी दूजो२ जादवी जन्यो तनय ॥
बाल २०।१२ वह नाम संसकार बिधिलौं न बच्यो,
इंद्रसिंह२०।१ अग्रज ज्यौं बालहि न पाइ अयं ॥
आश्विन७ के असित२ त्रयोदसि१३ जनमि इहै,
दूजो२ हू कुमार न रह्यो ज्यौं रविलौं उदयं ॥
बुड्डि धन पहिलैं१ बधाइ मैं उभय२ बेर,
प्रसर्यो अकाल पीछैं२ भावीतैं बिसिष्ठ भय ॥ ४४ ॥

॥
,
॥
,
॥
,
॥ ४५ ॥

उक्त१८५५ सकहीके काल संहननँ सन्ध्या उज्झि,
माहजि वजीर मर्यो उज्जइनी ईस इत ॥
राज्य तस पट्ट बैठो दौलतसहितराव,

१जालोरपुर में सेना भेजकर गढ को घेरा २ पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ॥ ४३ ॥ ३ आनेवाले समय के शुभ कर्मों का फल नहीं पाकर ४ सूर्य के समान उदय होनेवाला वह दूसरा कुमार नहीं बचा ॥ ४४ ॥ यहां एक छंद की त्रुटि है ॥ ४५ ॥ ५ शरीर ६ छोडकर ७ दौलतराव

हुलकर सीरी व्हैहु जित तित जंग जित ॥
उक्त १८५५ सकहीमैं इत दक्खिन प्रथुल देस,
आँजि केही हारि अब मंद व्है जो मूढमित ॥
अंतकी लराई रुपि टीपू अंगरेजनसौं,
दिष्ट प्रातिकूल मिरघो साहसी इहाँ बिदित ॥ ४६ ॥
सहिखट अग्र६६ मृत १ घायल२ भये सुभट,
सेस कंपनी१के सूर अच्छत रहे समर ॥
ज्यौंही द्वैहजार२०००मृतर घायलर अखिल जानैं,
भीलुकं पलानैं खिल टीपूर के अनीक भर ॥
ताही रनमाँहि मारि टीपूकौं बलिष्ट तब,
जेनरल बिलजली जई इम बढ्यो जबर ॥
सो श्रीरंगपट्टनमैं ताको अवरोध सोधि,
लूटिकैं खजानां१ ईलार लेतभोर असेस अर ॥
अंग सर नाग भूमि१८५६ संवत अनेह इत,
---लखवाद्विज पटैलको भट निदान ॥
जैपुरसौं आंट कछुकारन उरझि जात,
आयो देस ढुंढाहर लुट्टत बल अमान ॥
जो झेल्यो प्रताप पहु कूरम समुख जाइ,
घोर पुरलंबाके समीप मच्यो घमसान ॥
सेना मरहट्ठनतैं अधिक हुतो पै संग,
एक बिनु दोलाके सध्यो न सांचो अवधान ॥ ४८ ॥

१ पहे देश में२युद्ध३अब वे मूर्ख के समान मंद होगये ४विरुद्ध भाग्य से लड़ा ॥४६॥५युद्ध में बिना क्षत(घाव)रहे६पाछी के कायर भागगये७भूमि८शीघ्र॥४७॥ ९इज्जैन के पाति पटैल का उमराव लखवा नामक ब्राह्मण१०युद्ध११एक दोला नामक मंत्रीके बिना१२सच्चा सावधानी नहीं सधी तथा मनोवांछित नहीं सधा॥४८॥

स्वामी राम२०।१४ सुनहु जनश्रुति जनावत ज्यों,
दक्खिन२।३ अनीक लग्यो पहिलैं बिदूर हुत ॥
पै कछु समय अंत जैपुरके चक्र पर,
भाग्य प्रतिकूल भयो जीत१ टारि हरि२ जुत ॥
कूरम सभी४ह्वै अचानक भज्यो कहत,
आइ खरे पीछे खेत पाइ मरहट्ठ उत,
भूप सु कितेनके निवारतहु औसो भज्यो,
जैपुरमैं जात तामैं धाम दुरयो धीर धुत ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

वत्त जनश्रुति इम वदत, आंयुअवधि नृप एह ॥
कबहु न पुनि बाहिर कढयो, नय१ रु धर्म धरि नेह ॥५०॥
उक्त जु लखनेऊ अधिप, सौंपि वजीरअली१ सु ॥
लखवासन भाजि२ लजमैं, बूड्यो जदपि बली सु ॥ ५१ ॥
इम जीवत मृत भो अधिप, पुर जयनैर प्रताप ॥
रोचि रहित बिमना रह्यो, अपजस बिस्तरि आप ॥५२॥
संवत हय सर अष्ट ससि१८५७, इत बुंदिप नरनाह ॥
पुर सोपुर परन्यों प्रथित, बिहित चतुर्थ४ बिबाह ॥५३॥
गिनहु लग्न साध्यो गनित, सुचि४ सित१ छट्ठी६ सोम ॥

१ हे स्वामी रामसिंह २दन्तकथा ऐसी सुनते हैं कि पहिले तो ३बहुत दूर तक दक्षिण की सेना भागगई परन्तु थोड़े समय पीछे जयपुर की सेना पर भाग्य उलटा हुआ जिससे विजय को छोड़कर ४ जयपुर का राजा प्रतापसिंह भय युक्त होकर अचानक घोड़े सहित भागा जिसपीछे मरहठे उस क्षेत्र को पाकर आ खड़े हुए ५तहां धीरता को छोड़कर मकान में छिपगया ॥ ४९ ॥ ६ जीवन पर्यंत ॥ ५० ॥ ऊपर कहेहुए लखनेऊ के पति वजीरअली को ७ अंगरेजों को देकर और लखवा से भागकर वह राजा ८ बलवान् था तो भी लज्जा में डूबकर ॥ ५१ ॥ ९ कान्ति रहित उदास रहा ॥ ५२ ॥ १३ ॥१०आषाढ शुदि

कविन त्याग बसु आढ्य कारि, बिथारि कित्ति छिति व्योम५४

कन्या भूप किसोरकी, सरदकुमारि२००।४ सुभ सील ॥

स्वसा२ राधिकादासकी, सो पहु ऊढ सलील३ ॥ ५५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे विष्णुसिंहपुत्रजननश्रीजिद्विरुद्धविष्णुसिंहझल्लजालमसिंहकनीपाणिग्रहणं१ कालखनगरसमरजयपुरमन्त्रिदोलावैश्यपरासुभवनकरदाग्रामभागनगरनबाबमाहजीसुतसंग्रामनबाबपलायन २ पेशवाबाजेरावविरुद्धामृतरावपुरायपत्तनप्रान्तलुण्ठनकुपुत्रबाजेरावराज्यच्युतिसूचन ३ विष्णुसिंहविरक्तश्रीजिज्जगदीशयात्रागमनविष्णुसिंहश्रीजिद्बुन्द्यागमननिषेधन ४ रङ्गनाथदर्शनव्याजश्रीजिद्बुंदीप्रत्यागमनविष्णुसिंहकरसमर्पितकृपाणश्रीजित्स्ववधसूचनविष्णुसिंहव्रीडासमासादन ५ कोटापतिगुमानसिंहमरणतत्सुतोम्मेदसिंहझल्लजालमसिंहायत्तीभवन ६ स्वजनन्यादिव्यभिचारहेत्वंगरेजनिष्का-

१ धन से धनवान् ॥ ५४ ॥ २ बहिन ३ लीला सहित ब्याहा ॥ ५५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंहके चरित्र में, बुन्दी के पति विष्णुसिंह के पुत्र प्रकट होना और श्रीजित से विरुद्ध होकर जालमसिंह झाला की कन्या से विवाह करना १ कालख नगर के युद्ध में जयपुर के मंत्री दोला वैश्य का माराजाना और करदा में भागनगर के नबाब और माहजी के पुत्र से युद्ध होकर नबाब का भागना २ पेसवा बाजेराव से विरुद्ध होकर अमृतराव का पूना का देश लूटना और कुपुत्र बाजेराव से राज्य छूटने की सूचना करना ३ बुन्दी में विष्णुसिंह से उदास होकर श्रीजित को जगदीश की यात्रा जाना और विष्णुसिंह का श्रीजित को पीछा बुंदी आने से मना कराना ४ रंगनाथके मिस से श्रीजितका पीछा बुन्दी आना और पोते को खड्ग देकर अपने को मारने की सूचना करने से विष्णुसिंह का श्रीजित से लज्जित होना ५ कोटा के पति गुमानसिंहका मरना और उसके पुत्र उम्मेदसिंह का झाला जालमसिंह के वशीभूत होना ६ लखनेऊ के नबाब आसिफुद्दौला के दत्तक पुत्र वजीरअली का, उसकी माता आदि के व्यभिचार से करके अंगरेजों से उसका निकाला जाना और सआदतअली का नबाब होकर वजीर

सितलखनेऊपत्त्यासिफुद्दोलादत्तकपुत्रवजीरअलीजयपुरशरणग्रहण शहादतअलीनबाबपदप्रापण ७ स्वर्णादम्ममत्ययगृहीतरीतिमयदम्म जयपुरेशप्रतापसिंहस्वशरणागतवजीरअल्याख्यांगरेजायत्तीकरणन बाबशहादतअल्याख्यांगरेजविरोधन ८ इन्दोरेशहुलकरतक्कूमरणात-दासीपुत्रजसवन्तरावपट्टासादनयोधपुराधीशभीमसिंहजाबालिपुरदुर्ग मानसिंहसमावरण ९ अवन्तीपतिमाधजीसिंधियामरणासिंहासना रूढदौलतरावकतिपययुद्धपराजयनांगरेजरणटीपूसुलतानहनन १० लावानगरावन्तीसामन्तलखवाविप्रयुद्धजयपुरेशप्रतापसिंहपलायन-बुन्दीपतिविष्णुसिंहसोपुरविवाहकरणवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥ आदितः ॥ ३५८ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत काबल ईरानकैं, उरझी प्रथम[1] अनेह ॥
बन्यौं तबहि रनजित बली, इन लवपुर[2] सिख एह ॥१॥
नानकमत अनुगत[3] नियत, अवसर उचित उपाय ॥

अली का जयपुर शरण आना ७ जयपुर के राजा प्रतापसिंह का धोखे से पीतल की मोहरें लेकर अपने शरणागत वजीरअली को अंगरेजों के आधीन करना, नवाब शहादतअली का अंगरेजों से विरुद्ध होना ८ इन्दोर के पति हुलकर तक्कू का मरना और उसके पासवानिये पुत्र जसवन्तराव का पाट बैठना, जोधपुर के राजा भीमसिंह का जालोर के गढ में मानसिंह को घेरना ९ उज्जैन के पति माधजी सिंधिया का मरना और दौलतराव का उसके पाट बैठकर कई युद्धों में हारना और अंगरेजों की लड़ाई में टीपू सुलतान का मारा जाना १० लावा नामक पुर में उज्जैन के उमराव लखवा नामक ब्राह्मण से लड़ कर जयपुर के राजा प्रतापसिंह का भागना और बुन्दी के पति विष्णुसिंह का सोपुर विवाह करने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से तीनसौ अट्ठावन ३५८ मयूख हुए ॥

१ पहिले समय में २ लाहोर में ॥ १ ॥ ३ नानक मत के साथ चलनेवाला

अप्प सुनहु प्रभु राम२०१४यह, नृपति भयो जिहिँ न्याय॥२॥

॥ घनाक्षरी ॥

जातिकरि जट्ट रनजीतको पितामह जो,
सो चरितसिंह नाम जानौं पहिलै समय ॥
जंबू आदि आढ्य पुर लूटे बहुबेर जानैं,
वित्त बहु जोर्‍यो दोर्‍यो धारि धारि मध्य वय ॥
ताकै भो तनूज महासिंह अभिधानै तैसे,
जितातित दोर्‍यो जोहु धाँटि मेल खाटि जय ॥
सो रह्यो अधिक काल पत्तन अमृतसर,
ताकै यह बीर रनजीत प्रकट्यो तनय ॥ ३ ॥
विस्फोटक रोगमैं गयो तस नयन वाम२,
पै जिहिँ पिता छत सपूती प्रकटाइ पूर ॥
सजातीय जाति चहुँ४ओरके सिख समूह,
स्वजनक पीछैं बढ्यो सीमासौं अधिक सूर ॥
साह पुर काबलको जबहि जमानसाह,
आयो लंघि अटक दिखायो जै इतहु दूर ॥
तानैं यौं सुनी तँहँ ईरानपति सेना तानि,
जित्तन हिरात आत रित्त न मुरैं जरूर ॥ ४ ॥
सो सुनत पीछो भज्यो सजव जमानसाह,
ताकी रही बूडि कै वितस्ताके सलिल तोप ॥
पूगि घर तिन रनजीतकौं दयो यौं पत्र,
नालीगन भेजहु निकासि अधिकात ओप ॥

॥२॥१धनवान् २ महासिंह नामक पुत्र हुआ ३ धाड़ायतियों से मिलकर जय संपादन किया ॥ ३ ॥ ४ शीतला के रोग से ५ अपनी जातिवालों को ६ सेना का विस्तार करके ७ खाली नहीं मुड़ेगा ॥ ४ ॥ ८ अटक नदी के पानी में ९ तोपें १० शोभा से

तोप आठ८ भेजी रनजीतनैं कढाइ तब,
औरहु अनेक साथ सासन हित अलोप ॥
ह्वै प्रसन्न यातैं साह काबल दयो हुकम[1],
लवपुर[2] छीनिलेहु करि रन कालकोप ॥ ५ ॥
साहबादिसिंह१ चेतसिंह२ रु महुरसिंह३,
देस१ काल२ मूढ हुते हाकिम ए लवढंग ॥
जद्द रनजीतनैं मिलाय द्वारपाल जिन,
सज्जि यह गो तब कपाट खोले छल संग ॥
सो लाहोर लीनौं इम पहिले अनेहं[3] सिख,
जीत्यो बहु भूपनके दुर्ग१ देस२ जय जंग ॥
सो अब भुजग पंच लारन अवनि१८५८ साक,
उद्धत चलायो मुलतानपैं धरि उमंग ॥ ६ ॥
हाकिम मुजफ्फरखाँ नाम मुलतान हुतो,
तानैं सुनि आत गढमैं बल अतुल तानि ॥
तोपैं करि सज्ज रह्यो अंतर१ लरन तोर,
बाहिर निकासि भन्यों बाहिर२ बिनति बानि ॥
मंडि महिमानी१ त्यों उपायन२ बिविध मंजु[4],
मनिगन आदि दये स्वामीलौं महत मानि ॥
तब रनजीत मुलतानकौं दुगम[5] ताकि,
आयो मुरि गेह दया छलमैं प्रकट आनि ॥ ७
उक्त १८५८ सकही इत कबंध१ कछवाह२ईस
पुष्करमैं भीम रु प्रताप२ मिले प्रीति पर ॥
दैरही[6] भूप दुलही बिवाहे दुव२ घाँकी दुव२,
जोधपुर१ जैपुर२ सगाई सोधि तुँल्यतर[7] ॥

१ हुकम २ लाहोर ॥ ५ ॥ ३ समय में ॥ ६ ॥ ४ सुन्दर भेट ५ दुर्गम देखकर ॥ ७ ॥ ६ दोनों ओर की (परस्पर) ७ अत्यंत बराबर पन देखकर

जेठी१ सुता आनंदादिकुमारि१ प्रतापकी जो,
ब्याह्यो कछवाही इतैं कमंध्वज भीम१ बर ॥
भीम अनुजा भगिनी२ तिम अर्बुदनामधेया,
भूप परताप२ परनी यों उभै२ पत्तं घर ॥ ८ ॥
नैर इत कोटा झल्ल जालम निपुन नीति,
भूपति उमेद निज तंत्रकीनों मंत्र धरि ॥
देसकाल कोबिद बढ्यो सो प्रभुराम२०१४देखो,
कीलिराखे हाकिम समैके जिंहिं दाव करि ॥
जानैं निज ओर जाहि दिल्लीके सबै जवन,
पेसवार प्रमानैं हमैं चाहत त्यों छद्म हरि ॥
हुलकर३ सन्ध्या४ गिनैं जालम हमारो हितू,
अंगरेज५ मानैं झल्ल आपुनों ध्रुवत्वं धरि ॥ ९ ॥
नीतिबल जानैं देस१ काल२ की दसा निरखि,
जैपुर जंई जो बिप्र लखवा१ रहत जानि ॥
दुरजनसाल २ खीची राखि ए अधीन हैर ही,
मौसिकमैं लाखनदै जंगहि उचित मानि ॥
बनत बिरोध दुवर यों कछु निमित्त बस,
पेलि पृतनाकों उदैपुरपैं अनख आनि ॥
जाजपुर लीनों भीमैं रानांतैं कलह जीति,
पच्छिम३१५ कितीक करी कोटाके अधिप पानि ॥१०॥
मेवारन राख्यो स्वीय स्वामीतैं मुराइ मन,

---

१ आनन्दकुमरि २ कमधज (राठोड़) भीमसिंह ३ भीमसिंह की छोटी बहिन ४ जिसका नाम मालूम नहीं है ५ राजधानियों में प्राप्त हो हो कर ॥ ८ ॥ ६ अपने वश में ७ चतुर ८ क़ैद कर रक्खे थे ९ छल मिटाकर १० निश्चयपन धरकर ॥ ९ ॥ ११ जयपुर को जीतनेवाले ब्राह्मण लखवा को १२ तनखाह में १३ सेना भेजकर १४ महाराणा भीमसिंह से ॥ १० ॥

प्रधनं[1] मरे न जानैं नामी इम जालमपुर ॥
भिल्लहड़ापुरलौं भई बस कथित[2] भूमि,
धारत दुहाई महारावकी प्रधान धुर ॥
इतको अमल रह्यो सोलह१६ समा[3] अवधि,
अँबल[4] सिटाइ रह्यो रानौं कष्ट पाइ उर ॥
भाखे १८५८ सकही यौं झल्ल जालमके नीति धर,
पेचनतैं कोटाको प्रताप बढिगो प्रचुर[5] ॥ ११ ॥
पंडितोपटंकी[6] मरहट्ठ लाल कोटापुर,
काल पटुँ[7] संध्या को पठायो रह्यो लैन कर ॥
मित्र कीनौं ताकौं झल्ल जालम उचित मानि,
दोउ२नके एक१ चित्त मिटिगो कितोक डर ॥
बिप्र लखवा१ रु खीची दुरजनसाल२ बलि,
उक्त लाभ लै तिम छुराइ दये एहु अर ॥
प्रभुके कुलादि भट देसके निबल पारि,
प्रबल अनीक परदेसी राखे प्रीति पर ॥ १२ ॥
उक्त १८५८ सकहीसौं कछु पहिले समय इत,
जेनरल बिलजली मिलापमैं सुख जनाइ ॥
लेख जुत पेसवातैं मित्रता चहन लागो,
संध्यानैं दयो तब सो बाजेराव बहिकाइ ॥
तासूँ प्रतिकूल जसवंतराव भो तबहि,
पेसवा मिल्यो व्हाँ जेनरलसौं भयहिं पाइ ॥
दैकैं कंपनीकौं बुंदेलनको अखिल देस,
आपुनौं इलाका तज्यो कौलके नियम आइ ॥ १३ ॥

---

१ इस कारण युद्ध में नहीं मरे २ कहीहुई (मेवाड़ की) भूमि ३ वर्षतक ४ निर्बल ५ बहुत ॥ ११ ॥ ६ पंडित खितायवाला ७ समयचतुर ८ शीघ्र ॥ १२ ॥ १३ ॥

बात यह संध्याकौं न भाई यातैं छद्म बस,
नागपुर नृप१तैं पटैल तब मेल पारि ॥
काठमांडू नृप२कौं स्वपच्छमैं बहोरि करि,
रुचिमैं मनाइ अंगरेजनसौं लैन रारि ॥
ज्यौंही लसवारी१ डोघ२ दिल्ली३ मुखं जंग जीति,
संध्या१कौं हरायो बिलजली२नैं जु मद मारि ॥

॥ १४ ॥

अंक सर नाग भूमि १८५९ संबत समय अब,
हारि इम दो२उन निरंतर निबल होइ ॥
संध्या१नैं समस्थलिका२ देस कंपनीकौं दयो,
घौंसल्या१नै ओडीसा२ दयो घन धन धिजोइ ॥
उक्त १८५९ सकहीमैं अंगरेजननैं आगरा१ रु,
दिल्ली२पुर है२ही लये दक्खिन२।३को खैल खोइ ॥
जेनरल उक्त जो असाँई रन उक्त जीत्यो,
दुःखित हराये संध्या१ घौंसल्या२ तबहि दोइ२ ॥ १५ ॥
पास बिलजलीके व्हाँ हुतो दल सहस पंच५०००,
दोउ२नके पास व्हाँ हुतो हजार तीस३०००० दल ॥
तोहू बिलजलीनैं भारि संतत असह तोप,
बज्र गति गोले गेरि कीनैं सत्रु हीन बल ॥
आगरा१ रु दिल्ली२ होत कंपनी अधीन इत,
दोनौं मेटि दोउन२तैं संध्याको सब दखल ॥

१ छल के वश २ आदि ॥ १४ ॥ ३ दक्षिणियों (मरहटों) का दुःख मिटाकर ४ नगर का नाम है ॥ १५ ॥ ५ सेना के निरन्तर

कैदी ज्यौं हुतो जु साह आलम४९ सु अंध काढि,
मुद्रा लाख १०००००² मासिक कराइ दीनौं सायकल ॥
प्राँची³के समुद्र⁴तैं लगाइ सीमा दिल्लीपुर,
कोस सतसप्तक ७०० लौं कंपनी यौं राज्य कारि ॥
हाकिम पुरातन इहाँके सब गंजे हंत,
एक१ जसवंतराव२ मान्यौं बरजोर अरि ॥
जट्ट सिख दूजो२ रनजीत२सो इतो न जब,
बढन लग्यो ही जो मही तिय नवीन बरि ॥
जित्वर अजेय अब लंधन सबन जान्यौं,
जे भये अधीन दीन अंतर बिरोध जरि ॥ १७ ॥
संबत ख तर्क वसु भूमि १८६० सित सावनमैं,
जैपुर प्रताप मर्‍यो भूत१४ तिथि काल जाम ॥
सूनु तब ताको मत्त उद्धत जगतसिंह,
त्रिपै नरेस भयो रीतिसौं संतत बाम ॥
जीवत प्रताप मान्यौं मारिबो उचित जाको,
नाँहिं सुत दूजो२ हो बचायो यौं रहन नाम ॥
उक्त १८६० सकहीमैं भीमैं जोधपुर भूप इत,
बाहुलै८की बिसद१ चउत्थी४ तज्यो बपु ताम ॥ १८ ॥

---

१ रुपये २ लाख रुपयों के ऊपर कुछ अंश ॥ १६ ॥ ३ पूर्व दिशा के समुद्र से लेकर ४ पहिले के ५पृथ्वी रूपी स्त्री को ६ग्रन्थ को जीतनेवाला और आप नहीं जीतने में आवै ऐसा ७ लंदन नगर को ॥ १७ ॥ ८ श्रावण मास के शुक्लपक्ष में जयपुर का महाराजा प्रतापसिंह मरा ९ जहां १०उस प्रतापसिंह का पुत्र उद्धत बुद्धिवाला और ११ निर्लज्ज (जगतसिंह) राजा हुआ सो १२ रीति से निरंतर विरुद्ध था १३ इस कारण नहीं मारा १४ भीमसिंह ने १५ कार्ती सुदि चौथ को तहां शरीर छोड़ा ॥ १८ ॥ वहां सूर्व सवाईसिंह ने

मातंगी करंडपैं दुसाला तब डारि मूढ,
काढी सो सवाईसिंह चंपाउत छद्म करि ॥
जात अवरोधतैं दिखाइ त्यों घने जनन;

१(#)चंडालिन (भंगिन) स्त्री के टोकरे पर दुशाला डालकर २उस चांडालनी को निकाली और ३ जनाने से जाती हुई बहुत मनुष्यों को दिखाई और

(#)जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के कृत्रिम पुत्र धोकलसिंह की उत्पत्ति का कारण दिखाने के लिये सवाईसिंह का यह फरेब रचना ग्रंथकर्ता ने लिखा परंतु जोधपुर की ख्याति में यह वृत्तांत जिसप्रकार लिखा है वह नीचे लिखाजाता है ॥

महाराजा मानसिंह जालोर थे जहां फौजमुसाहिब सिंघी इंद्रराज किले के घेरा लगाये हुए था इस अरसे में महाराज भीमसिंह ने अदीठ के फोड़े से तीन दिन तक बीमार रहकर सं०१८६० में कार्तिक शुक्ला ४ को शरीर छोडा तब धायभाई शंभुदान, भंडारी शिवचंद और मूंणोयत ज्ञानमल जो जोधपुर का काम करते थे इन तीनोंने फौजमुसाहिब इन्द्रराज को जालोर लिखभेजा कि महाराजा भीमसिंह का तो देहांत होचुका परंतु राणी देरावरजी को गर्भ है और यहांके प्रधान पोकरन के ठाकुर सवाईसिंह पोकरन हैं जिनको बुलानेका कासिद भेजा है सो उनके आने पर सलाह करके जब तक आखिरी हुक्म तुमारे पास न भेजाजावे तबतक जालोर के किले का घेरा मत उठाना. यहपत्र इन्द्रराज के पास कार्तिक शुक्ला५ को पहुंचा तो उसने विचारा कि अब महाराज विजयसिंह के वंश में केवल मानसिंह ही बच रहे हैं अगर राणी देरावरजी को गर्भ होता तो साद बंटने वगैरह का उत्सव जरूर होता परंतु ऐसा न होनेसे पायाजाता है कि गर्भ का तो केवल तोत ही खडा किया है इसलिये अच्छा हो कि महाराज मानसिंह को जोधपुर पहुंचा कर गद्दी बैठावें यह विचारकर उसने उनसे बातचीत करके मृगसिर वदि ७ को उन्हें जोधपुर के किले में दाखिल किया इधर पोहकरन ठाकुर सवाईसिंहने जोधपुर आकर महाराज भीमसिंह की राणी देरावरजी को गाम चांपासणी भेज दी और महाराज मानसिंह से अर्ज की कि राणी देरावरजी को गर्भ है यह सुनकर महाराज मानसिंहने लिखावट करदी कि यदि उनके लड़का होगा तो हम वापिस जालोर चलेजावेंगे और लड़की होगी तो उदयपुर या जयपुर व्याह देंगे परंतु सुनते हैं कि उनको गर्भ होनेका बिलकुल फरेब रचागया है सो उनको किले में दाखिल करदो ताकि सचझूट निकल आवे यह लिखावट करके महाराज मानसिंहने चांपासणी के गोस्वामी को देदी. तब सवाईसिंहने यह विचारकर कि देरावरजी को गढ में दाखिल करने से फरेब खुलजावेगा इसलिये उन्हें तलहटी के महलों में भेजदी और वहां राज्य के तर्फ से पहेरे खडे होगये तब सवाईसिंह पिछली रातको उमराव सिरदारोंके सौ सवा सौ घोड़े इकट्ठेकर तलहटीके महलोंके नीचे गया और वहां से बाजार में हो, दरवजा खोल मेड़तिये दरवाजेके रास्ते शहरके बाहिर निकल गया और सब घोडों को इधर उधर बिखेर दिये और दूसरे दिन सुबह को यह प्रकट करदिया कि रात्रिको भीमसिंह की राणी देरावरजी के पेट से बालक हुवा, सो उन्होंने छबड़े में रखकर ऊपर से नीचे उतार दिया जिस लड़के को उसका मामा भाटी छतरसिंह खेतड़ी लेकर चलागया ॥

प्रकट कही यौं कैदयाँ१ कैगयो अत्र परि२ ॥
ऐसो दाव बिरचि पठाये पीछैं दूत इत,
लैबे जहाँ जालपुर घेरा रह्यो मान लरि ॥
भीमकी चमूके जहाँ हल्ला बहुबेर भये,
झगत अमाप तोप गोले रहे बज्र झरि ॥ १९ ॥
सेनापति सिंघी बनराज आदि व्हाँ सुभट,
कही जोधपुरके ऐसे कैमन आये काम ॥
त्यौं इत कालमैं नष्ट संग्रह सकल ताकि,
धारयो कढिजैबो मानसिंह सोपै तजि धाम ॥
काहू सिद्ध जोगी बन काहूसौं मिलात कह्यो,
तीन३ दिन लंघितहू मान टिकिजैहै ताम ॥
जोधपुर पैहै छत्र छादित इहाँतैं जैहै,
निजन बढैहै पट्टलैहै जग व्हैहै नाम ॥ २० ॥
कानफटा लिंगी तहां देवनाथ नाम करि,
दुर्गमाँहिं जातो भीखमाँगिबे पिहितद्वार ॥
भाखी सिद्ध जो सो जानि मानसौं कहतभयो,
स्वप्नमैं कह्यो यौं मोसौं जलंधरनाथ सार ॥
ताके बिसवास मान लंघन सहत तीजो३,
जालपुर दुर्ग जो रह्यो रुपि भुकति भार ॥
तिमहिं जु भीम मरिबेकी ध्रुव सुद्धि आई,
लैबे पुनि आये भट१ मंत्री२ मुख्य बहु वार ॥ २१ ॥

प्रसिद्धि में यह कहगया कि यहां यह कैद पड़ी हुई थी, यह दाव करके जिस पीछे १ जालोर में घेरा के भीतर २ मानसिंह लड़ रहा था उसको लेने को दूत भेजे ॥ १९ ॥ ३ अन्य भी सुंदर वीर काम आये ४ लंघन (उपवास) करके भी ॥ २० ॥ ५ खिड़की के छिपे द्वार से ६ तत्व (सिद्धान्त) ७ भीमसिंह के मरने की निश्चय खबर आई ॥ २१ ॥

बाहिरके सखहीन दुर्गमैं कति बुलाइ,
मानि नीठि सपथं भरोसाके दिवाइ मान ॥
पीछैं छत्र१ चामर२ चलाइ जाइ जोधपुर,
बैठो पट्ट छट्ठी६ मग्ग९ मेचक२ सह बिधान ॥
जालपुर चाकरी बिपत्तिहुमैं कीनी जिते,
सकल बढाये ते बुलाइ दुक्ख अवसान ॥
कानफटा सोंपे देवनाथ गुरु मुक्ख्य कीनों,
थापि तँहँ दीनो महामंदिर बिरचि थान ॥ २२ ॥
उक्त१८६० सकहीके मग्ग९ मेचक२ चउत्थि४ इत,
बुन्दी नरनाह बिष्णुसिंह२००।२ कै स्वादिष्ट बस ॥
तीजी३ मंकुवानी रानी उदर प्रसूता तँहँ,
तनुजा भई सो मरी मानहु परयो न तस ॥
इंदु खट बारन भू१८६१ संबत अनेह इहां,
आमयँ असाध्य देखी श्रीजितकै अंतदस॥
आश्रमतैं लाये महलनमैं बिहायो अंग,
जानैं मग्ग९ मेचक२ चउत्थी४ पैं उबारि जस ॥ २३ ॥
होती बुद्धि सुद्धि तो न आगमं महल होतो,
पै निज पितामह अचेत आनैं जाइ पँहु,
थाँस दुव२ अंतर कहै समय छोरयो देह,
नौंती नरनाह बिधि राह दये दान बहु ॥
अब्द पहिलेतैं दुरभिच्छहु हुतो असह,
लोक इत आये देसदेसके बिसेस लँहु ॥

१ सौगन दिलाकर २ मृगशिर वदि छठ के दिन ३ दुःख के अंत में ४ अपने भाग्य के वश ५ झाली रानी के उदर से ६ कन्या हुई सो ७ रोग ८ अन्तदशा में ९ मृगशिर वदि ॥ २३ ॥ १० बुद्धि और चेत होता तो महलों में आना नहीं होता ११ राजा बिष्णुसिंह मे १२ पोते बिष्णुसिंह ने १३लघु(शीघ्र)

तेहु सब भोजे द्वादसाह१२मैं असन तानि,
भूखे जन लूट्यो सेस दूजे२ दिन भोजनहु॥ २४ ॥
भाखे१८६१ सकहीके मास फागुन१२ बिसद१भाग,
सोधित द्वितीया२ कर्मवाटी लग्न अग्रसर ॥
भाटिननैं डोला आनि बुन्दी परिनायो भूप,
कन्या रत्नसिंहकी अनन्या सील जोरि कर ॥
नाम लाडकुमरि२००।५ ललाम गुन१ रूप२ निज,
पंचमी५ सु रानी आनी कित्तिके प्रसार पर ॥
सालम हरामीकी हवेली माँहिँ लग्न साधि,
बिलस्यो बिलासननैं बरनी१ उपेत बर२ ॥ २५ ॥
उक्त १८६१ सकहीके समै पत्तन करोली इत,
जो मानिक्यपाल भूप छोरत भो देह जब॥
नाम हरिपाल भो तदीय सुत छोटो नृप,
तातके तखत बैठि उचित अनेह तब ॥
संबत नयन तर्क नाग भू१८६२ प्रमित समै,
अंध साहआलम४९।१नैं दिल्ली तज्यो देह अब ॥
पहिलैं कहायो आलीगुहर ४९।१ स नाम पीछैं,
साह भयैं लागे साहआलम ४९।१ कहन सब ॥
सो आलमगीर ४८।१ दूजे२ को सुत कथित समै
बुद्धिहग सुद्धि असैं दिल्ली भयो काल बस ॥
तैसैं अभिधानैं करि अकबर ५०।१ दूजो२
तात पट्ट बैठो पै गिरिसी फिरी आन तस॥
जोधपुर१ जैपुर२ उदैपुर३ बढ्यो जहर,

१ जिमाये ॥ २४ ॥ २ तिथि ३ परम ४ दुलहन सहित ॥ २५ ॥ ५ ॥ २६ ॥ ६ प्रज्ञाचक्षु (अन्धा) ७ अकबर नामवाला

राम २०१४ प्रभु सुनहु रह्यो ज्यौं माँहिँमाँहिँ सर ॥
मार्‌यो अरिसिंह रान रावरे पितामहनैं,
जिततित छायो त्यौं बढायो बीरभाव जस ॥२७ ॥
जेठो[1] अरिसिंहको तनूभव हमीर जब,
बैठो बिधिके बस पिताके पट्ट बाल बय ॥
बेगहि मर्‌यो सो रान हायन[2] अलप बचि,
दूजे[3] तस भ्रात भीम[3] पायो राज्य अभ्युदय[4] ॥
भीम रानकै भई तनूजा इक ताको भयो,
सगपन जोधढंग[5] भीमसौं गये समय ॥
पुद्गल[6] बिहायो जोधपुरके अधीस पीछैं,
पट्ट तस पायो मान आपुनैं बलिष्ट अय[7] ॥ २८ ॥
कन्याकी सगाई तब मानसौं करन फेर,
जोधपुर भेजे विसत्रासके स्वकीय जन ॥
माननृप तबतो नट्यो तस महत्व मानि,
जदपि निहोर्‌यो इत[1] उत[2]के किते जनन ॥
कन्याकी सगाई जपनैंर तब रान करी,
पेखि जगतेसकौं समान[1] कुल रूच्य[2]पन ॥
होतहि सगाई तदनंतर कुपित होइ,
चंपाउत भाख्यो देत कन्या पहिले[1] बचन ॥ २९ ॥
पहिलैं मरत भीम चंडाली कांडे[11] पर,
दुष्टनै दुसाला डारि काढी अवरोधैं[12] द्वार ॥

॥२७॥ १ बडा पुत्र हमीरसिंह २ थोड़े वर्ष राना रहकर ३ हमीरसिंह के छोटे भाई भीमसिंह ने ४ समृद्धिवाला राज्य पाया ५ जोधपुर में भीमसिंह से ६ भीमसिंह ने पीछे शरीर छोड़ा ७ शुभफल देनेवाले भाग्य के बल से ॥ २८ ॥ ८ उस कन्या की अवस्था बडी समझ कर ९ जयपुर १० दुल्लह(वर)पन बरावर का देखकर ॥ २९ ॥ ११ टोकरे पर १२ जनाने द्वार से

राजा मानकौं अब अधीन निज राखिबेकौं,
बिरच्यो सवाईसिंह बायस यह बिचार ॥
जानि यह मान लागो रहन स्वतंत्र जिम,
आनि तिम जोरतैं प्रधान ताको अधिकार ॥
भाख्यो यौं हमारे अधिराजकी सगाई भूलि,
कूरम लहैं सो कौन दुलही प्रथम१ दार ॥३०॥
बिरचि प्रबंध यौं लै पंचन प्रपंच बिच,
सूची नृप मानसौं सवाईसिंह काक सम ॥
रावरी बधूटी बरिबेकौं कछवाह रंक,
होइ सिर जैहैं मरिजैहैं जब सब हम ॥
भूप तुम कैसैं रह्यो बित्रप२ चकित२ भाव,
जान कब देहैं कछवाहकौं कबंध जम ॥
आप सिर सारी धारि लीनी तो धरहु और,
पट्टप उचित कोऊ धर्म ज्यौं रहै परम ॥ ३१ ॥
बचन प्रतोद३ ऐसैं दैदै नृप मान बुद्धि,
फेरी फेरु४ चंपाउत के करि कपट फैल ॥
जानि स्वान छोरयो इक बिप्र मख छाग जैसैं,

१ जिसके साथ पहिले सगाई हुई उसी की स्त्री है ॥ ३० ॥ २ निर्लज्ज ॥ ३१ ॥ ३ वचन रूपी चाबुक ४ गीदड़ रूपी चांपावत सवाईसिंह ने जैसे एक ब्राह्मण ने धूर्तों के कहने से यज्ञ के बकरे को(*)कुत्ता जानकर छोड़ दिया तैसे

(*)यह कथा हितोपदेश में इसप्रकार है कि एक ब्राह्मण यज्ञ के अर्थ एक बकरा लेजाता था उसे देख कर ४ धूर्तों ने यह विचारा कि इस ब्राह्मण से यह बकरा छुडालेना चाहिये यह सलाह करके वे चारों रस्ते पर दूर दूर बैठ गये जब ब्राह्मण निकला तो उसे पहिला बोला कि तू ब्राह्मण होकर यह कुत्ता कंधे पर क्यों लिये है. यह सुनकर वह ब्राह्मण आगे चला तो उस दूसरे धूर्त ने भी ऐसे ही कहा और ज्यों ज्यों वह ब्राह्मण आगे चला त्यों त्यों तीसरा और ऐसे ही चौथा धूर्त भी मिला और पहिले ने कहा वैसे ही कहनेलगे तब वो ब्राह्मण यह जानकर कि इन चारोंने जो कहा वही सत्य है और मेरी दृष्टि में फर्क है, स्नान करके उस बकरे को छोड़ अपने घर चला आया, और उन चारों धूर्तों ने उस बकरे को मारखाया.

ऐसैं बहुतनके कहेसौं एह गहि गैल ॥
ऐंचि कर मुच्छ भूप मानहु पलटि अब,
सोहि मत भाख्यो कोन लंघहिं कनकसैल ॥
[2]रूच्य पाहिलो१ कै जो [3]सुंबासिनी बरन रीति,
छीनि हम लैहैं ब्याहि गंजि तो अपर छैल ॥ ३२ ॥
पत्र ऐसो इतहु लिखाइ भेज्यो रान प्रति,
कै इत बिबाहहु१ कै मारहु कनी कुटिल ॥
क्यौं तुम बिरोध पारयो जैपुर सगाई करि,
कूरम [6]नपोतेकौं बिनासहिं कबंध किलँ ॥
रंडा रहिजैहैं हनिहोतो कहि भेजी रान,
बारन नमाइहै पिपीलिकाके छुद्र बिल ॥
अबहु कनीकौं हमरे मत बरहु एक१,
खोलि रन झंडे अरि जीति रहो जोहि खिलँ ॥ ३३ ॥
ऐसी रीति दुरदिस लगाइ लाय चंपाउत,
कोऊ कुल बालककौं भीमको तनूज करि ॥
जाको नाम धौंकल प्रसिद्धिमें अब जनाइ,
पास बिसवासके मबीर राखे बीच परि ॥
मान महिपालकौं अधीन अपनैं न मानि,
अट्ठहि८ मिसल आदि भटन स्वपच्छ भरि ॥
जैपुरलौं आप समुझावनके ब्याज जाइ,
कूरममें मिलिगो स्वमुच्छ करसौं कतरि ॥ ३४ ॥

---

१ सुमेरु का उल्लंघन कौन करैगा २ दुल्लह ३ पिता के घर रहनेवाली कन्या ४ दूसरे रसिक को मारकर ॥ ३२ ॥ ५ कन्या को ६ नशा से यह शब्द नपोता हुआ ७ निश्चय ही. कछवाहे जगतसिंह को मारोगे तो कन्या रांड रहजावेगी परन्तु कीड़ी के ९ छोटे बिल मेंदहाथी नहीं समावेगा १०शत्रु को मारकर जो बाकी रहै सोही कन्या को विवाहो ॥३३॥ ११ किसी कुल के बालक को भीमसिंह का पुत्र बनाकर ॥ ३४ ॥

मिलि जगतेससौं कह्यो इम रहस्य¹ मत,
स्वामी हम सबं चहि धौंकल जो भीम सुत ॥
आप चलि ताहि जोधपुरको करहु ईस,
द्रम्म नवलक्ख ९००००० दैहैं१ होतहि अभीष्ट द्रुत ॥
रावरो उदैपुर बिबाह१ कोऊ रोकिहैं न२,
नामकरि ऐसैं सब भूपनमैं होहु नुत² ॥
मान सठ आपकौं निवारे सो कवन मद,
जाहि गहि आनहु गहाइदैहैं बित्त जुत ॥ ३५ ॥
सुनत इतीक निज बुद्धिके जनन सह,
मत्त बारुनीमैं³ जगतेस धारि अभिमान ॥
भाख्यो लिखिदेहु१ भट अट्ठ८हि मिसल आदि,
धौंकलकी फेला⁴ लेहु२ टारिदेहु ⁵पवधान ॥
कग्गर लिखाइ इम तबहि कबंधनको,
इष्ट धर्म सौंहन सवाईसिंह अघवान ॥
सौंप्यो जगतेसकौं करारमैं सबन साखि,
पाघ बिनु ⁶ह्वैबे१ पै बिपत्ति देवे प्रभु⁶ प्रान२ ॥ ३६ ॥
पापी इम पत्र हत भेज्यो मान भूपप्रति,
खूब समुझायो पै न मानै कछवाह खल ॥
यातैं अब जुद्धको बिलंब न करहु आप,
करहु चढाइ जीति लैहै प्रभुके सकल⁷ ॥
कोन कोन ठाम जीते कूरम⁸ कबंधनसों,
बाहिर करहु डेरा यातैं बेग बाँधि बल ॥
मत्त भई धौंकल बुलाइ मिलि तुल्य मानि,

१एकान्त में २ स्तुतियोग्य ॥ ३५ ॥ ३ मद्य में मस्त ४ भीमसिंह के पुत्र धूंकलसिंह का उच्छिष्ट खाओ और उससे ५ अन्तर छोडदो ६ अपने स्वामी मानसिंह के प्राण को ॥ ३६ ॥ ७ सब आपके ही हैं ८ जगतसिंह

एक१ पट्ट बैठत इहाँतो मत है अचल ॥ ३७ ॥
पूछे नृप मान तँहँ संसद२ बुलाइ पंच,
चंपाउत पत्रहु दिखायो मत लैन चहि ॥
ते सब पिहित३ मिले धौंकल सिसुहि ताकि,
गाढे हठ लोभी लेख द्विगुन पटान गहि ॥
जो लिखी सवाईसिंह सोही करतव्य४ जंपि,
बाहिर करहु डेरा सूची अतिदर्प बहि ॥
माननृप चार१ रु बिचार२ दृग५ द्वैरही मींची,
कीनो कह्यो तिनको भरोसातैं पयान कहि ॥ ३८ ॥
मद्य मदमत्त इत जैपुर अधीस मानी,
जंग उपहार६ सबै कीनैं सज्ज जगतेस ॥
तोहू इक१ बेरतो रुक्यो जो आनि कानि त्रपा७,
बुंदी प्रभु बिष्णुसिंह२००१२ बरज्यो जब बिसेस ॥
पै जँहँ सवाईसिंह दमनक८ स्यार पास,
आस मानिबेकी तँहँ कैसी लग्यो कान एस ॥
डाँकदार९ जैसैं मत्त बारनकों दैदै डाँक१०,
ऐसे कछवाह काढ्यो बाहिर बिधि असेस ॥ ३९ ॥
लाखन खरचि दम्म राखि दल तीन लाख ३०००००,
सज्जि पहु बीकानैर१ आदि बहु मित्र संग ॥
भीमसुत११ धौंकलकों जोधपुर दैन१ भाखि,

१यहां तो एक गद्दी पर बैठने का निश्चल विचार है ॥ ३७ ॥ २ सभा में ३ छाने धूंकलसिंह से मिलेहुए थे क्योंकि कृत्रिम(फरेबी) बालक ने दुगुने पट्टे देने के लेख सब को कर दिये थे ४ करने योग्य कहकर ५ हलकारे और विचार ये दोही राजा के नेत्र हैं जिनको बंध करके ॥ ३८ ॥ ६ युद्ध की सामग्री ७लज्जा ८ दमनक नामक गीदड़ पास था ९जैसे सांटमार मस्त हाथी को क्रोध दिलाने के १०छोटे घाव लगावै तैसे ॥३९॥ ११भीमसिंह के कृत्रिम पुत्र धूंकलसिंह को

आप बंलि ब्याहन उदैपुर२ बय उमंग ॥
कोटादिक दंडि पै[1] लगावन३ बिचार करि,
जोधपुर इंक्यो पहिलैं जय करन जंग ॥
श्रावक[3] सचिव रायचंद बहुबेर रोक्यो,
तदपि रुक्यो न बढ्यो पंथन करत तंग ॥ ४० ॥
सेना यह राखि लायो अधिक जितीक सज्ज,
औरनकै नाँ सुनी तितीक तिहिँ काल इम ॥
पायो पै[4]१ हरोलिन ह्वाँ चंदोलिन पायो पंक[5]२,
अध्वके[6] अरण्य तरु तूट भये चोक तिम ॥
साक दुव तर्क अष्ट इंदु १८६२ के शिशिर६ समै,
जामैं हुव ग्राम नाम गिंघोली मुकाम जिम ॥
उततैं स्वसंगलै अनीक सब मान आयो,
कपटमैं जानैं जयलोभी रुकिजाय किम ॥ ४१ ॥
अध्वबिच आत कृष्णगढके छली अधिप,
राज्य निज जैबो जानि मायाको प्रपंच रचि ॥
स्वीय भूमि लैबे कँरकेरीवै अमरसिंह,
संग पहु कूरमके हो तस सहाय सचि॥
मिथ्या पिसुनत्वै जगतेसको मुराइ मन,
मरवायो जो दगासौं ——पाप ताप[12] तँचि ॥
जैपुरको आप बनिबैठो सुभचिंतक ज्यौं,
जोधपुर छोरि जोरि याहीतैं प्रसाद[13] जाचि ॥ ४२ ॥
द्वैरही मिले ऐसैं ग्राम गिंघोली समीप दल,

---

१ पुनि २ चरणों में लगाने का विचार करके ३ सरावगी वैश्य ॥ ४० ॥ ४ नीर ५ कीचड़ ६ मार्ग के वन के वृक्ष ७ जहां ८ अपने साथ सेना लेकर ९ मान सिंह ॥ ४१ ॥ १० करकेड़ी के पति अमरसिंह ११ झूठी चुगली करने से उस अमरसिंह को मारडाला १२ पाप की अग्नि से जलकर १३ प्रसन्नता ॥ ४२ ॥

जोधपुर१ जैपुर२ वनै जे चित्त वरजोर ॥
बाजिन उठाइवेकी बेरमैं कबंध कुल,
आये टरि टरिकैं सबही कछवाह ओर ॥
मान यह देखत बिचाऱ्यो करसौं मरन,
नीठिन निवारि सोपै संगके दुसह दोर ॥
जोधपुर जाइ लरिबेकी थापि टेकी लागे,
मानकौं निकासिकैं भजे लै च्यारि४ भटमोर ॥ ४३ ॥
ऊदाउत अर्जुन १ स नाम रायपुर ईस,
नाह त्यौं कुंचामनिको मेरतिया सिवनाथ२ ॥
भद्राजनि१ लाडनौंर२ के जोधे द्वै२ कबंधभट,
साथ बखतेस१।३ अरु मंगल१।४ ए क्रम साथ ॥
लछमन१।५ मान१।६ हुकमेस३।७ ए त्रय३ हि लार,
सोदर कनिष्ट शिवनाथके मथनपाथ ॥
काकासुत भ्राता सिवनाथ१ अरु मंगल२के,
संगी सारदूल१।८ पता१।९ सक्रमगदितगाथ ॥४४॥
ए नव९ बिदित नव९ अबिदित नाम ऐसैं,
अष्टादस१८ मानं भजे मानकौं लैं असवार ॥
भूँरि धूरि पूरि ख भई इम तिमिर भरि,
आपुनैं न भासे कर आपकौं लखन लार ॥
मानवारे डेरनमैं आवत न मग्ग मिलि,
बाजि कछवाहनके उरभे जव बिहार ॥
जौंहीकरि मानको पलायन सबन जान्यौं,

१मानसिंह ने अपने हाथ से मरना विचारा॥४३॥२छोटे भाई३युद्ध के अर्जुन४क्रम सहित कहीहुई कथा से॥४४॥५जिनके नाम नहीं जाने गये६प्रमाण(गणना)वाले ७बहुत धूल ८आकाश में भरकर अंधेरे में अपना ९हाथ आपको नहीं दीखा १०कछवाहों के घोड़ों का गमन रुका ११जिससे१२मानसिंह का भागना जाना

पैठो जगतेस चित्त जाको *दर्प गतपार ॥ ४५ ॥
†संभर नरेस वरज्यो बलि जगतसिंह,
बुन्दीतैं पठाइ दूत दूजी२ बेर नीतिबल ॥
सो जब ममानी चढ्यो कूरम तबहि सज्जि,
द्वै सहँस २००० भेज्यो इक जोधपुर भीर दल ॥
भूपालादिसिंह१ मुख्य धात्रेस संग भट,
बनिक प्रधान त्यौं गनेसराम२ धीबिमल ॥
दोइ२ तिम तोप संग पलटनि दोइ२ दै रु,
भेज्यो कपतान नाम भीखम३ सजैं सकल ॥४६॥
इन तब सूची आइ मानसौं पलायनमैं,
रावरे निदेस बस हैं हम रचहिं रारि ॥
कीजे आप गोन रजपूतनके देखि कर,
जैपुर सम्मुख जंग पच्छिलैं हमहिं पारि ॥
माननृप भाख्यो इहाँ व्यर्थ तुमरो मरन,
जीतिबो१ रह्यो पै बचिबो२ न बनै विष जारि ॥
आहु मम संग यातैं देहु न अनर्थ अस्तु,
जोधपुर जाइ रचिहैं रन पैर प्रचारि ॥ ४७ ॥
जोरिकर ऐसैं तब बुन्दीके भटन जंपी,
आपकौं न निंदैं मिल्यो सत्रुनसौं चक्र इम ॥
मुरि हम सज्ज सब भूपहिं दिखाँहि मुख,
कथन तदीय टारि सम्मर्द बिथारि किम ॥
जातैं आप जोधपुर जाहु सवेग जाइ,

* अपार घमंड ॥ ४५ ॥ † बुन्दी के चहुवाण राजा ने १ सेना २ निर्मल बुद्धिवाला ॥ ४६ ॥ ३ भागते समय मानसिंह से कहा ४ वृथा प्राण मत दो ५ शत्रुओं को ललकार कर ॥ ४७ ॥ ६ आपकी सेना शत्रु से मिलगई इस कारण ७ उनका कहना छोडकर ८ हर्ष

जुरि हम ठाढे इहाँ इकघाँ तटस्थ जिम ॥
चाहि हमपैं जो बढिहैं तो करिहैं ज्यौं चित्त,
पँहुँचहु आप हम आडे आपगा प्रतिम ॥ ४८ ॥
ऐसी कहि एक ओर बुन्दीको रख्यो सु बल,
सत्रुनको भार टारयो तोपनके वार साजि ॥
मान महिपाल मंडयो जोधपुर जाइ जंग,
भारुयो कछवाहन सभीक गयो सत्रु भाजि ॥
बुन्दी इत आयो राखि गौरव अधीस बल,
त्यौं गो जगतेस उत गम्य दुर्ग संक तजि ॥
जाल दल१ तोपन२ को दंग गरदाइ जोरयो,
जंगतैं न रोक्यो चित्त झोक्यो वित्त इष्ट जजि ॥ ४९ ॥
जोधपुर सीम पैठो जवतैं जगतसिंह,
तबतैं चमूके लोक लाये गहि लभ्य तिय ॥
तिनके निकेतके विनम्र लौन आये तव,
दोहि२ दोइ२ पैसे लै रु पीछौ तिन्हैं सौंपि दिय ॥
जोधपुर घेरचो जगतेस मत्त ऐसैं जाइ,
केते काल पीछैं जीति दंगहु स्वतंत्र किय ॥
दुर्ग एक मानके अधीन रहिगो दुर्गम,
जैसें सब देहमाँहिं आयुके अधीन जिय ॥ ५० ॥
जंत्रविच इच्छू जिम बिच्छू जिम मल विच,
रसनी रदन बीच ऐसे कष्ट मान रहि ॥

१एक तरफ२नदी के समान हम खड़े हैं ॥४८॥३भय सहित होकर४जाने योग्य (जोधपुर)गढ पर५इष्ट की पूजा करके धन लगाया॥४९॥६जो निजी उन स्त्रियों को पकड़ लाये ७ उन स्त्रियों के घरवाले अधिक नम्र होकर ८ नगर को भी अपने आधीन करलिया ॥ ५० ॥ जैसे ९ घांणी (चरखी) में गन्ना (सांटा) १० वा दांतों के बीच में जीभ ११ मानसिंह रहा

देस१ जुत दंग२ माँहिँ अरिको अमल देखि,
कुहक्क सवाईसिंह पास भेजी एह कहि ॥
अर्द्ध३ देस लेख जुत नागपुर लेहु आप,
बैठारहु धौंकल व्हां मोसौं तुल्य४ भाव बहि ॥
इज्जत हमारी बिगरावहु क्यौं सत्रु आनि,
गेहसैं समुझि लेहु नेहसैं सु लेंह५ गहि ॥ ५१ ॥
मानको विनय लेख सोहु न विनय६ मान्यो,
चंपाउत१ मीन२ बैन१ स्रोत२ प्रतिकूल७ चढि ॥
दिन बिपरीत यातैं दुहँहिँ सुगम दीस्यो,
मान गहिलैबो१ गढलैबो२ घमसान मढि ॥
पच्छी कहि भेजी यौं सवाईसिंह मान प्रति,
करहु न देर जोधपुरतैं बँ जाहुकढि ॥
सीसपैं अधीस धारि धौंकल करहु सेवा,
पावहु उचित पटा प्रभुके अधीन पढि ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

कहिपठई पच्छी कुहक, चंपाउत इम चौंकि१२ ॥
कोल सँपथ१३ नागोरकी, फरद लिखी वह फैंकि ॥ ५३ ॥
इम परिगो संकट असह, महिप जोधपुर मान ॥
लुट्यो मुलक सब सीमलग, न मिटयो द्रोह निदौन१४ ॥५४॥

१ पुर में २ इन्द्रजाल ३ आधे देश सहित नागोर लिखावट सहित लेलो ४ मुझसे बराबर पन लेकर अर्थात् धौंकलसिंह को मेरे बराबर कर दो ५ लिखावट (लेख) ॥ ५१ ॥ मानसिंह की इस विशेष नम्रता को ६उस अनीतिवाले सवाईसिंह ने नहीं मानी सवाईसिंह रूपी मच्छ, वचनों रूपी ७प्रवाह में उलटा चढा ८ मानसिंह का पकड लेना ९ युद्ध करके १० अब ११ धौंकलसिंह की ॥ ५२ ॥ १२ क्रोध करके १३ सौगन ॥ ५३ ॥ १४ द्रोह का कारण ॥ ५४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौविष्णुसिंह चरित्रे काबुलाधीशसाहाय्यसिक्खरणजीतसिंहलवपुरग्रहणयोधपुराधीशभीमसिंहजयपुरपतिप्रतापसिंहपरस्परविवाहसंबन्धकरणं १ समात्तजाजपुरादिमेदपाटप्रान्तकोटासचिवझल्लजालमसिंहकोटाप्रतापवर्द्धनं २ विजितपेशवाबुन्देलखण्डपराजितसिंधियाहुलकरगृहीतोड्डीशान्तर्वेदजनपदस्वायत्तीकृतदिल्ल्यागरापत्तनशाहआलमार्थनियतीकृतवार्षिकवसुलार्डविलजल्यासमुद्रस्वराज्यस्थापनं ३ जयपुरपतिप्रतापसिंहमरणजगतसिंहतत्पट्टासादनयोधपुराधीशभीमसिंहदेहपातजालपुरसेनासमावेष्टितमानसिंहयोधपुरपट्टप्रापणं ४ परिहृतबुन्दीराज्यवानप्रस्थश्रीजित्सुरसद्मसमासादनबुन्दीपतिविष्णुसिंहपाणिग्रहणकरौलीन्द्रपमाणिक्यपालपरासुताकालहरिपालगद्दिकोपविशनं ५ दिल्लीन्द्रान्धशाहआलमप्रेतत्वपुत्राकबरपट्टसमासादनं६ उदयपुराधी

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, काबल के अमीर के पक्षसे लाहोर लेकर सिक्ख रणजीतसिंह का बढना और जोधपुर के राजा भीमसिंह व जयपुर के राजा प्रतापसिंह का परस्पर विवाह करना १ कोटा के सचिव झाला जालमसिंह का मेवाड़ के जाजपुर आदि प्रान्त लेकर कोटा का प्रताप बढाना २ लार्ड विल्जली का पेसवा से बुन्देलखंड लेकर सिंधिया और हुलकर को पराजय देकर अन्तरवेद, ओडीसा देश लेकर आगरा और दिल्ली विजय करना और शाह आलम को पिनसन देकर पूर्व समुद्र से दिल्ली तक अपना राज्य जमाना ३ जयपुर के राजा प्रतापसिंह का देहान्त होकर जगतसिंह का पाट बैठना और जोधपुर के राजा भीमसिंह का देहान्त होकर जालोर में सेना से घिरेहुए मानसिंहका जोधपुर के पाट बैठना ४ बुन्दी का राज छोड़कर वानप्रस्थ आश्रम में रहनेवाले श्रीजित् (उम्मेदसिंह) का देहान्त होना और बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का विवाह करना, व करोली के राजा माणिक्यपाल का देहान्त होकर हरिपाल का गद्दी बैठना ५ दिल्ली के अन्ध बादशाह शाह आलम का मरना और उसके पुत्र अकबर का पाट बैठना ६ उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की पुत्री को विवाहने के हठसे जोधपुर के राजा मानसिंह और जयपुर के राजा जगतसिंह का सेना सजकर गींघोली नामक ग्राम में युद्ध क्षेत्र में मिलना ७ मार-

शभीमसिंहसुताकरग्रहणहेतुसज्जसैन्ययोधपुराधीशमानसिंहजयपुरपतिजगत्सिंहाग्रिघोलिग्रामरणाङ्कणसमायोजन ७ पोकरणठक्कुरसवाईसिंहैकमत्यमरुसामन्तजयपुरसैन्यमिलनरणाङ्कणमत्यावृत्तमानसिंहयोधपुरागमनकृत्रिमदायादधौंकलसिंहार्थप्रतिज्ञातमरुधराधिपत्यजगत्सिंहयोधपुरसमावेष्टन ८ कृच्छ्राक्रान्तमानसिंहकृत्रिमदायादधौंकलसिंहार्थनेममरुराज्यसहितनागपुरदानस्वीकरणपोकरणठक्कुरतदनङ्गीकरणं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥ आदितः ॥ ३५९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पाइ कष्ट ऐसो प्रचुर, भूरि परत सिर भार ॥
मान जबहि चिन्त्यो मरन, कैलि करि खोलि किंवार ॥१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सचिव दोइ२ तँहँ कारा संगत, हुते कैद पहिलैं सन मन हत ॥
इंदराज सिंघी१ अधिकारिय, भनत द्वितीय२ गंग भंडारिय ॥ २ ॥
इन दिय अरज मानपति ऐसैं, प्रभु हम जो जैपुर भुवँ पैसैं ॥
तो मुरि गेह भजैं जगतेसहु, इक्खहु प्रीति रीति मतिगति एसहु॥३॥
इम सुनि मान अक्खि पठई इम, कैलित तुम बिस्वास बनैं किम

वाड़ के उमरावों का, पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह के छल से जयपुर की सेना में मिलजाने के कारण राजा मानसिंहका वहां से भागकर जोधपुर जाना और मारवाड़ के झूठे दावीदार धूंकलसिंह को जोधपुर की गद्दी पर विठाने की प्रतिज्ञा से जगतसिंह का जोधपुर को घेरना ८ राजा मानसिंह का घबरा कर नागोर के साथ मारवाड़ का आधा राज्य धूँकलसिंह को देना स्वीकार करना और पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह का इस बातको अस्वीकार करने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ ॥९॥ और आदि से तीन सौ उनसठ ३५९मयूख हुए ॥

१ युद्ध करके ॥ १ ॥ २ जेलखाने में ॥ २ ॥ ३ जयपुर की भूमि में घुसें तो ४स्वामी में बुद्धि पूर्वक प्रीति देखो ॥३॥ ५ तुम कैदी हो जिनका विश्वास कैसे

सूचिय तिन इमठां हमरे सुत, दुवर कारि कैद हमैं भेजहु द्रुत ॥

॥ वैतालीयम् ॥

इम गंग१ रु इंदराज२की, अरजीतैं तिनके तनै उभैर३ ॥
कारा धरि लाजं काजकी, दे कढि गढतैं उतारि दै ॥ ५ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सिंघीइंदराज१ अरु गंगराम२ ए सचिव,
कारातैं निकासि तिनकी ठाँ पुत्र कैदकारि ॥
दुर्गतैं उतारे मान भूपन कथित देरही,
धारि बिसवास आस भेजे भुजभार धरि ॥
आइ तिन अधर मिलायो छलि चंपाउत,
भाजे गिनि कैदी मत्त धीजिगो प्रमोद भरि ॥
साजि दुवर तासूँ लै रु आरुहि स्वबुद्धि बल,
दंगतैं कढे द्वैर तिन सत्रुन समुद्र तरि ॥ ६ ॥
संग नृप मानकै रह्यो जो कह्यो सिवनाथ,
मेरतिया सोपै बहु गुनन बिदंग्ध मति ॥
अधिप पठायो छिद्रमैं काढि निलैय आयो,
गाढे चित्त सो इन मिलायो बुद्ध मंत्र गति ॥
अलप जीविकाके भट अखिल बुलाइ बल,
सहँसन जोरिसंग अधिकहु राखि अति ॥
छत्रैं सिवनाथ१ इंदराज२ लै उपाय छमैं,
पैठे निस मग्ग अग्ग जैपुरके देसपति ॥ ७ ॥

किया जावे १ कारी जगह ॥ ४ ॥ २ इन के दोनों पुत्रों को कैद करके ३ इस काम की लज्जा तुमको है ऐसे भलामन देकर ॥ ५ ॥ ४ कैद से निकाल कर ५ नीचे आकर ६ इनको कैद से भगेहुए जानकर वह मत्त सवाईसिंह ७ उससे दो घोड़े लेकर ८ उन पर सवार होकर ॥ ६ ॥ ९ चतुर १० अपने घर (कुचामन) ११ छोटी जीविकावाले उमरावों अथवा वीरों को १२ समर्थ ॥ ७ ॥

सोधि भय पीछैंको प्रमत्तहु जगतसिंह,
मंत्रिनके भाखैं गति दैवकी दुर्गम मानि ॥
भेज्यो सिवलाल फोजबखसी स्वकीय ध्रुव,
जैपुर१रु देस२ त्रानं[2] करन समर्थ जानि॥
फागीपुर हो जो तब लौंकैं रही खिल[3] फोज,
ऐसे खिन सोंपै मत्त तीज३पै उमंग आनि ॥
अलप भट संगी आप जैपुर सदनं[4] आयो,
कटक असेस सेस व्हांही राखि भय कानि ॥ ८ ॥
बीर सिवनाथ१ इंद्रराज२ त्यौं पिहित बट्ट,
कितहु नहेरि रत्ति फागी एक गम्य[6] कहि ॥
पहुँचि निसीथ जयनैर दल सीस पर,
मारि१ बहु त्यौं बहु बिदारि२ कीनी सोर्न महि ॥
सेस असु लैलै ताजि भाजे उपहारं सब,
लूटे इन सोधि सोधि काहूकी न संक लहि ॥
व्हें अब बिदित घेरि जैपुरकौं लैन हंके,
गैल इक१ कौंकिनी[11]मैं नारिनकों देत गहि ॥ ९ ॥
ऐसैं गरदायो द्रंग जैपुर बलिन आइ,
तूटिपरयो सबै ढुंढाहरपैं अतुल त्रास ॥
मचिगो पलायन[12] जितैं तित जि जिनै[13] मानि ॥
आलयँ[14] रहैंतैं रही काहूको न असु आस ॥

१भाग्य की दुर्गम गति२रक्षा करने को३बाकी की सेना ४ जयपुर में अपने घर गया॥८॥५छिपेहुए मार्ग से६रात्रि में जाने योग्य फागी नगर को कहकर७आधी रात को ८ भूमि को लाल करदी ९ बाकी के माल ले ले कर १० सामान छोड़ भागे ११मार्ग में जयपुर के देश की स्त्रियों को पकड़ कर छदाम(पैसे के चतुर्थांश) में उनके घरवालों को पीछी देनेलगे ॥ ९ ॥ ११ भागना १३ रहने से अपना जीना नहीं मानकर तथा जिधर मन हुआ उधर भागे १४ घर पर रहने से

स्वामी इत संगमैं हजारन सिपाइनके,
मासिक चढत सुनैं देतदेत प्रति मास ॥
मन प्रतिकूल मीरखानसे बहुत मुरे,
हठि हक लैन जगतेसको बिरचि हास ॥ १० ॥
सुरभि[1] निदाघ[2] बरखा[3] ऋतु खरच सहि,
भूप जगतेस नीठि निर्बह्यो सो दल भार ॥
चढत कितेक मास मूढ अकुलायो चित्त,
जानी इत जैपुरकौं भोगिहै दुसह जार ॥
मत्त मुरि आइबेको मंत्र जग गूढ मान्यौं,
गोगाउत संभूके खवासिके सुत बिगार ॥
ठानि चंपाउतसौं कहाई खुसहाल ठाम,
दम्म खटलक्ख६००००० की भई सो देहु सरदार॥११॥
एक दुर्ग छोरि सबठां भो तुमरो अमल,
दम्म उक्त६००००० देय यातैं चिंति स्ववचन देहु ॥
दुर्ग दै तुम्हैं रु लैहैं सेस जे त्रिलक्ख३०००००दम्म,
यौं न करिहौतो लैहैं गहिकैं बिदित एहु ॥
ऐसे कहिबेपैं दुष्ट चंपाउत टेक आनि,
गर्बसौं कहाई जाहु बापुरे व्है निजगेहु ॥
बंधिकैं हमैं जो लैहो जानिहैं तबहि बली,
नारिनके भाग न तो लाजे भौंन मग लेहु ॥ १२ ॥
ऐसी कहि साहसी सवाईसिंह चंपाउत,
जैपुरके चंक्रसौं रह्यो टरि सटेक जब ॥

किसीको प्राण की आशा नहीं रही १ मनका लेने को ॥१०॥ २ बसन्त,ग्रीष्म ३ सेना का भार कठिनाई से निबाहा ४ सवाईसिंह से ॥ ११ ॥५कहेहुए रुपये ६ देने योग्य हैं इस कारण ७ ये तीन लाख भी ८ लज्जा पायेहुए स्त्रियों के भाग्य से घर का मार्ग लो ॥ १२ ॥ ९ सेना से

सूची जगतेससौं यौं जोधपुर दुर्ग स्वामी,
धौंकलकौं ठानि धन उक्क काल लेहु अब ॥
नाँतो इम रीते बहिकाइबेमैं सार नहि,
कोलमैं यहहि मुख्य सेस करिहो सु कब ॥
लूटी मारवारि नाँतो आप बहु वित्त लीनौं,
सोही गिनि कोलमैं पधारहु लै स्वीय सब ॥ १३ ॥
उक्त करिहो न तो उदैपुर बिबाह आप,
कैसैं करिलैहो हमरे छत बर कहाइ ॥
तंत्र मेरे अबहि प्रचारौं मरुदेस तोतो,
ज्यौं बनी जयातैं त्यौं बनाइहो घरन जाइ ॥
जंपि ऐसैं चंपाउत देसके स्वबस जोरि,
मुरयो करि डेरा भिन्न कूरम मन नमाइ ॥
ओरहु जे संगी मीरखान१ से बलिष्ठ ऐसैं,
लागे जगतेस देस लूटन उलटि आइ ॥ १४ ॥
ऐसैं जे इलेसं बीकानेरके सुरत१ आदि,
जैपुर घटत जानि गर्दभकी गाज गति ॥
के घर गये१ तिम रहे मुरि तटस्थ ठेहे२ के,
मानी जगतेस अब मानी बल हानि मति ॥
चंपाउत बंचकको संभवी कथन चिंति,
प्रेर्यो महामात्रनको गै ज्यौं कछवाह पति ॥

१अपने सब लोकों को लेकर॥१३॥२मेड़ता के घेरे में(जया को छलघात से मरवा डाला था) जया नामक सिन्धिया से बनी सोही ३ मारवाड़ के लोकों को अपने बश में करके ॥ १४ ॥ ४ राजा ५ सुरतसिंह आदि ६ जयपुरवालों को गधे के चीखने के समान घटते हुए जानकर "गधा भोंकता है तब तो बड़े जोर से चीखता है और फिर उसकी आवाज धीरे धीरे घटती जाती है" ७ घमंडी जगतसिंह ने ८ ठग सवाईसिंह का होनेवाला कहना याद करके (छलघात से मरवा डालने को सत्य मानकर) ९ जैसे महावत का फेराहुआ हाथी फिरे तैसे

रायचंद बनिक पुरोगेन निहोरैं नीठि,
मान्यौं घर जैबो मूढ औवेसौं सलज्ज अति ॥ १५ ॥
ऐसैं पटु वीर सिवनाथ१ इंदराज२ इत,
देकैं त्रास जैपुरपैं लूटयो आढ्य अरि देस ॥
यौंही मीरखानसे अमानन मुररि आइ,
लागि लूटयो बहुन न राखिजान्यौं कहुँ लेस ॥
चिंति सुव जैबो यौं अचानक प्रमत्त चढि,
पैठो भजि गेह लजि निंदा उग्र सहि पेस ॥
आयो ज्यौंही नाकदे कबंधनको चंपाउत१,
त्यौंही कछवाहनको नाक देगो जगतेस२ ॥ १६ ॥
जोधपुर१ जैपुर२कै उरझी अधिक जानी,
भीमरान भूपति उदैपुरको भीरु इत ॥
भीरुनके भाखैं डर आनि उक्त भूपनको,
मारिडारी कन्या वह पापी गेरदै अमित ॥
साक गुन तर्क नाग भू१८६३ मित सरद४ समै,
जैपुर अधीस भजि गो यौं गेह दिष्ट जित ॥
तदपि सवाई मरुदेसमैं अमल तानि,

कछवाहों का पति रूपी हाथी सचिवों (प्रधानों) का फेराहुआ पीछा फिरा "महामात्र नाम, प्रधान और महावत दोनों का है" १ आदि ॥ १५ ॥ २ शत्रु के धनवान् देश को ॥ १६ ॥ ३ कायरों के कहने से ४ जोधपुर और जयपुर दोनों राजाओं का भय मानकर ५ (*) बहुत विष देकर उस कन्या को मारडाली ६ समय का तथा भाग्य का जीता हुआ ७ तो भी सवाईसिंह ८ अधिकार फैलाकर.

(*) महाराणा भीमसिंह की बाई कृष्णकुमारि को मीरखां ने उदयपुर में जाकर बड़े हठ से जहर दिलाया यह करुणामय दृश्य मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में हृदयविदारक लिखाहुआ है सो वहां देखो महाराणा ने उस कन्याको नहीं मारी थी परन्तु मीरखां के भय से उसको रोक नहीं सके सो कथा लंबी होने के कारण यहां नहीं लिखसकते.

स्वामी करिराख्यो सोहि धौंकल चमू सहित ॥ १७
स्वच्छकन संग व्रंग नागोरहि ताकों राखि,
देसमैं दुहाई फेरि वा सिसुकी आप द्रुत ॥
लूटत जो मुलक इतैं उत भ्रटन लागो,
साल्यो मानके उर बलेस सबलेस सुत ॥
लभ्यै वसु१ हस्ती२ हय३ करभ४ गवादि लूटे,
जोरदै बिसेस कर६ देसके असेस जुत ॥
डारि डारि डाका मारवारिसु निचोरी डारि,
दीपक जरन दीनों आपके अधीन उत ॥१८॥
उक्त सक बन्हि तर्क नाग भू १८६३प्रमित इतैं,
बुंदीप्रभु विष्णुसिंह२००१२छट्ठी६ करयो निज ब्याह।
रानाउत सीसोदे अमानकी सुता रुचिर,
सो खुमानकुमारि२००१६ नाम बरी तस सराह ॥
आयो निज बुंदीनैर डोला दुलहीको यह,
पायो तिम दुल्लह महापट्टु नरननाह ॥
सूचित तपस्य१२ स्याम२ छट्ठी६ निस लग्न साध्यो,
वारही पैच्छ कीनों ब्याह सप्तम७ लै कविवाह ॥१९॥
भावन सनाम वंस सीसोदे उचित भाखि,
नाम नंदकुमारि२००१७ तनूजा अपनी निपुन॥
भूपहिं बिबाही इहाँ नैनपुर डोला भेजि,
गर्दित तपस्य१२ काल२ एकादसी११काल गुन ॥

॥ १७ ॥ १ फिरने लगा २ बलवान् सबलसिंह का पुत्र ३ जो मिलगये सो ४ जो जो घर अपने अधिकार में थे तिन तिन में दीपक जलने दिया ॥ १८ ॥ ५ सूचना कियेहुए फाल्गुन वदि ६ उसी पक्ष में ॥ १९ ॥ ७ पुत्री ८ कहेहुए फाल्गुन वदि में एकादशी के समय

ऐसे बिधि रानी यह सप्तमी७ अधिप आनी,
साजि इत चंपाउत बाहिनी जथा सकुन ॥
इच्छु खंड जलतैं कढे जिम बिरस अंग,
ऐसैं मारवारि कीनी——नाँहि जत्न उन ॥ २० ॥
पूरे कष्ट ब्याकुल महीप मान जोधपुर,
देस अर्द्ध१/२ देबेकी हढाई पुनि नअ्रपन ॥
सोंपे नहिमानी काल[2] कैवल सवाईसिंह,
धृष्ट कहिभेजी ह्वैहै धौंकलही भूमिधंन ॥
लेख निज दैकैं तब धर्मके सपथ लैकैं,
मित्र गूढ कीनौं मीरखानकौं मिलाइ मन ॥
ताहि अर्द्ध१/२ आसन बिभागी कहि मान्यो तुल्य,
सूची मानें चंपाउत मारिलेहु छद्म सन ॥ २१ ॥
द्रव्य बहु देनौंकरि इष्ट बिच साखी दै रु,
मिच्छ इम प्रेर्यो चंपाउतकौं हनन मान ॥
क्यौं हमहिं धीजैं सावधानीमैं कितव काक,
खोजहु निमित्त यौं पठाई कहि मीरखान ॥
सूची इम मान जोधपुरके बजार सह,
देस मम लूटहु बिसासमैं गिनि निदान ॥
नारी कहि गारि दै हमारी पै करहु निंदा,
ऐसे फंद सो खल परैगो आयु अवसान ॥ २२ ॥
स्वीय सजि सेना मीरखान तब कीनी सोहि,
लूटी मारवारि पैठि खंधावारैं[12] नैर लग ॥

१चरखी से गन्ने का टुकड़ा बिना रसवाला निकलै तैसे ॥२०॥ २काल के ग्रास ३धौंकलसिंह ही राजा होवेगा ४ छिपाहुआ मित्र किया ५ आधी गद्दी पर बैठने वाला ६छिलकर६मानसिंह ने कहलाया७छल से॥२१॥८हमको कैसे धीजेगा९कारण देके१०मानसिंहने सूचना करी११आयुके अन्त में॥२२॥१२राजधानी के नगर तक

दैदै गारि निंद्यो नृप मानकौं तिमहिँ दुष्ट,
जान्यौं सत्य इनकै विरोध बढ्यो सब जग ॥
चंपाउत धीज्यो एह प्रथित[1] प्रमान चिंति,
पत्रन बिसास पारयो पहिलैँ मिलाप मग ॥
सोंपे खान नागोरहि आइ इनके सिबिर[2],
मिलिगो प्रथम मिच्छ आडोदै बिसास अंग[3] ॥ २३ ॥
पोखरिन नाह हित राह गो मिलन पीछैं,
जवन मुकाम ग्राम मूँडवा सनाम जब ॥
केते इहाँ तुरकँ[4] कुरान बिच दीनी कहैं,
तारकीन[5] पीर इहाँ हो ताके करे सौंह तब ॥
केते कहैं सौंहँ तिन मानैं पै न सौंहँ करे[6],
ऐसैं मिलिगो सो आये तास डेरा तेहु अव[7] ॥
मंत्रके निमित्त एक तंबू तिन्ह मारनकौं,
पृथक तनाइ राख्यो मिच्छनैं चहे पंरल ॥ २४ ॥
तंबूमैं बिछायो सोर[8] सघन बिछौनैं तर,
रस्से काटिडारनकौं बाहिर सुभट राखि२ ॥
तापैं इक ओर वहु तोपनकौं राखी तीरि३,
सैन निज सूचनं भरोसेपै दगन भाखि[9] ॥
बिरचि प्रबंध यौं दगाको आप नम्र बनि,
आयो तिन्ह आत सुनि सान्है घात अभिलाखि ॥
आवन लगे ए तहाँ मेरतिया चंपाउत,

१ प्रसिद्ध प्रमाण जानकर २ सवाईसिंह के डेरे पर ३ विश्वास का पर्वत आड़ा देकर अर्थात् बहुत विश्वास देकर ॥ २३ ॥ ४ यवन मीरखां का बीच में कुरान देना कहते हैं ५ पीर का नाम है ६ चांपाउत सवाईसिंह ने तो मीरखां के सौगन करने मान लिये परन्तु मीरखां ने सौगन नहीं किये ७ समय ॥ २४ ॥ ८ भरकर ९ अपने इसारे की सूचना पर चलाना कहकर

इनतैं बहादुर१ टस्यो इक सकुन साखि ॥ २५ ॥
बैठारे कुबुद्धि इम सादर सबन आनि,
तंबू उक्त अंतर तथा जन निजहु टारि ॥
मंत्रके निमित्त राखे इनके कथित मुख्य,
संग दुव तीननसौं आप रह्यो छल सारि ॥
व्याज करि पीछैं मिच्छ द्वै२जुत निकसि बच्यो,
एक१ बंधु रहिगो सक्यो न सु तिहिं उबारि ॥
बाहिर कढत सोर सैनसौं पटकि बन्हि,
मानके अमित्र भूँजि डारे ज्यों चैनक भारि ॥ २६ ॥
सोरके उडत१ गुन तंबूके कटतर संग,
तोप३न गुबार२नके वार होत भिन्न तर ॥
रक्कउर कुंपाउत बखसी प्रमुख राम१,
नाम जाको सो व्हां कढ्यो तंबू चीरि बीर नर ॥
पैंड दै सम्मुख पारि आहित अनेक परयो,
घंडावल नाह चढे सूरनमैं अग्रसर ॥
छद्मके नरेसकै न होतो संग तोतो छेम,
भेदिजातो सोतो रविमंडल लौं पुराय भर ॥ २७ ॥
सावन५तैं लागत कितीठौ व्यवहार संक,
ऐसैं मिति भेदै होत सो मत न है उचित ॥
तदपि कितेक गुन तर्क६३ मान मानैं तत्थ,
मानैं किते संवतको अग्र बेद तर्क६४ मित ॥

१शकुनों की साची से ॥२५॥२अपने लोकों को ताड़ि (निकाल) कर ३ मानसिंह के शत्रुओं को ४ भाड़ में चणों के समान भूंज डाले ॥ २६ ॥ ५ रस्से १ प्रत्यन्त कटगये ७ बखसीराम ८ अनेक शत्रुओं को गिराकर ९ छली राजा (धोकलसिंह) के साथ नहीं होता तो १० वह समर्थ ॥ २७ ॥ ११ व्यवहार का सम्वत् १२ थोड़ा फरक

इनके सिविरें जाइ नागपुर लूटि आयो,
अैसें मीरखान हनि मानके सबै अहित ॥
जोधपुर भेजे काटि सीस तिनके जवन,
स्वाननकों हारि दैन सूची इन्हैं मान इत ॥ २८ ॥
चंपाउत बीर बखतावर बिहित चाहि,
स्वामीकों मनाइ दाहे मंडोउर भेजि सिर ॥
मीरखान मिल आइ मानसौं सहित मिल्यो,
चाहि समभाव बैठे एका१सन भोन चिर ॥
धाकल पलाइगो बच्यो जित जियन धारि,
आजगढ पीछैं टिक्यो भीरु रनके अंजिर ॥
मारी भीमरान वह कन्या सो करी कुमति,
याहीतैं उदैपुर कहायो थकितेस क्रिर ॥ २९ ॥
बेद रस नाग भूमि १८६४ साक इत नेर बुंदीर,
अधिराज कीनों—— अष्टम८ बिबाह बलि ॥
मार्गशिर९ मेचकर द्वितीयार गुरु लग्न मेल,
कृष्णगढ जाइ साध्यो संभर अभीत कलि ॥
कल्यानकी भगिनी प्रताप नृपकी जो कन्या,
सो अमानकुमरि२००१८ स नाम छबि मोद छलि ॥
चरमं बिबाह विष्णुसिंह२००१२ नरनाह चारु,
दुलही बिबाही दानी दारिद कबिन दलि ॥ ३० ॥
भो जिम समौंढ्य देस हाडोती उदित भाग१,

१ डेरे नागोर जाकर लूट लिये २ राजा मानसिंह के शत्रुओं को ॥ २८ ॥ ३ उचित जानकर ४ हित सहित ५ धौंकलसिंह भगगया ६ कायरों के चौक में ७ थकितों (कायरों) का पति ८ किल (निश्चय) ॥ २९ ॥ ९ कल्याणसिंह की बहिन १० अन्तिम विवाह ॥ ३० ॥ ११ शोभायुक्त धनवान्

कविनके पूरन भये जिम अखिल काम२ ॥
बिप्रनके गेह जिम रत्नाकर नाना बनैं३,
जोधनके ख्यात जिम निकसे नियतं नाम४ ॥
धर्म१ नीति२ सफल भये५ जिम धरनि धन्य,
तत्वबोध१ भक्ति२हु भये जग प्रकट ६तामैं ॥
आदरसैं बेद भो७ सपुत्र होत जाके इम,
रावरी सावित्री एह आइ गेह प्रभुराम२०१४ ॥ ३१ ॥
व्याहे जिहिँ लग्न भूप रावरे पिता१ बिदित,
कविके पिता२ हु तिम व्याहे तिहिँ लग्न काल ॥
यातैं न पधारिसके हरिना स्वकवि औन,
साधी तउ रीति सो पधारिबे ज्यौं छितिपाल ॥
उक्त रनजीत जट्ट लाहोराधिराज इत,
भो बलिष्ठ दुस्सह बढ्यो बलि सुबिधि भाल ॥
कीनौं कंपनीसौं तानैं उक्त १८६४ सकहीमैं कोल,
वार सतलंजके न आवनको सहि साल ॥ ३२ ॥
कंपनीनैं ताहि समुझावन वकील क्रम,
चारलिसलिकफ१ स नाम भेज्यो प्रीति चहि ॥
ताके समुझाइबेमैं जट्ट सु न आयो तब,
दंग लुधियाना लगे भेजी फोज दर्प दहि ॥
आकटरलोनी करनेल फोजदार उहाँ,
रारिको उपक्रम दिखायो बरजोर रहि ॥
जीतिबो न जान्यौं सर्वथाही रनजीत जब,

१ रत्नों की खान अथवा समुद्र २ वीरों के निश्चय ही नाम प्रसिद्ध हुए ३ तहां ४ वेद का आदर हुआ ५ आप (रामसिंह) की माता ॥ ३१ ॥ ६ इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता ७ अपने कवि के घर हरणा नामक ग्राम में ८ लाहोर का पति ॥ ३२ ॥ ९ उपाय पूर्वक आरंभ

उक्त सीम कोल लिखिदीनौं व्है करंड अहि ॥ ३३ ॥
सो यातैं सतद्रू स्रोत वार न प्रसारि सक्यो,
छोटे१ बडे२ छितिप बचे यौं इतके बहुत ॥
ते न रहते जो अंगरेजके अमल तंत्र,
जट्ट सबकी भू तो छुराइलेतो जोर जुत ॥
पै यौं रहे कंपनीको दुर्लभ सरन पाइ,
आन रही ताकी स्रोत सूचितके पार उत ॥
खग्ग बल तोहू इनके उर रह्यो खटकि,
सेनाके समत्व सूर सोहू महासिंह सुत ॥ ३४ ॥
साक सर अंग अष्ट अवनि १८६५ अनेह इत,
काबल वजीर दोस्तमुहम्मद नाम करि ॥
खल व्है हरामखोर स्वामी दूर कीनौं साह,
आप बनिबैठो साह साहको कहाइ अरि ॥
अहमदसाह दुरानी जो कथित उहाँ,
नादरकौं मारि नाह भो जो अति१ दर्प भरि ॥
जीतिलीनी दिल्ली१ करि मथुरा२कतल जानैं,
प्राचीलग लूट्यो देस अर्ज्जनको बाद परि ॥ ३५ ॥
रुहेला नजीबुद्दौला१ दिल्लीको वजीर राखि,
सानुकूल राखे लखनेऊ ईस२ आदि सब ॥
अहमदशाह४७।१ जो कलीज कर्यो पीछे अंध,
जवनन ईस दिल्ली साह राख्यो सोहि जब ॥
काबल गयो जो तहाँ तबतैं तदीयँ कुल,

१ टिपारे में बन्ध कियेहुए सर्प के समान होकर ॥ ३३ ॥ २ राजा ३ अंगरेजों के आधीन ४ अटक नदी के पार ५ बराबरवाला ॥ ३४ ॥ ६ समय ७ बादशाह का शत्रु कहाकर ८ आर्यों का ॥ ३५ ॥ ९ कलीजखां ने १० उसका कुल

अधिप रह्यो सो मद्य१ प्रमदा२ प्रमाद अब ॥
कालको सासक सुजाउलमुल्क१नाम१काढ्यो,
ताके महमूद२ नाम सोदर समेत तब ॥ ३६ ॥
ऐसैं उपटंक जाको बारकजई सो एह,
धारत भो छत्र दोस्तमुहुम्मद१ नामधेय ॥
तनय मुहुमदादि अकबर२ नाम तानैं,
आपुनों वजीर राख्यो धी१ बल२ गिनि अमेय ॥
भावी वस वत्त वह कावल अधिप भाजि,
लवपुर आयो जानि जट्टको सरन लेय ॥
हीरा कोहनूर छीनिलीनों सिख यातें हंत,
दाम पूछिबेपैं कह्यो मोल जूती इक देय ॥ ३७ ॥
हीरा यह पायो हुतो साहजिहाँ३९१दिल्ली साह,
जोहु लैगो नादिर मुहुम्मद६५४सौं बरजोर ॥
नादरकौं मारि भो जो अहमदसाह नाह,
ताके रह्यो तबतैं इहाँलौं भो न प्रभु और ॥
अहमदनाम दुररानीको पिनाती एह,
लेतभो सरन आइ जट्टको पुरी लाहोर ॥
तासौं लेत हीरक पदत्र भाख्यो अर्घ तानैं,
दै सु पीवि पीछे लायो कंपनी सरन दोर ॥ ३८ ॥
एक कछु भावी वर्त्तमानमैं वजीर ऐसैं,
सूचे१८६५ सकमाँहिं बन्यो कावल तखत साह॥
खासिनसौं१ जानैं मेल पावन सहाय राख्यो,

---

१ स्त्रियों के प्रमादवाला ॥३६॥ २ लिताप ३ नाम ४ मुहुम्मद अकबर ५ बुद्धि से और पवामें अमाप जानकर ६ लाहोर आया ॥३७॥ ७ यहां तक इस हीरे का यवनों के सिवाय अन्य स्वामी नहीं हुआ ८ जूती ९ उस हीरे की कीमत में १० रणजीतसिंह को यह हीरा देकर ॥ ३८ ॥

राख्यो रनजीतहुसौं[1] मेल नट दैन राह ॥
अंग रस नाग ससि १८६६ संवत अनेह इत,
संध्या दोलतादिराव[2] खीयलै सब सिपाह ॥
कारन कछुक पाइ जैपुर दमन[3] कम्यों,
लालच लग्यो सो लग्यो दूनी दंग बसु लाह ॥ ३९ ॥
जैपुर के निर्दय महा ठिग बिसेस जन,
उनमैं कितेक हुते गोगाउतके अहित ॥
संभूसिंह भूपति प्रतापकै रह्यो सचिव,
सोपै सुमिराइ[4] अर्थ अतुल दिखाइ इत ॥
दूनीपुरपैं यौं मोरि संध्याकों लराइ दीनों,
माच्यो ताप तोपनको कल्पके कृसानु[5] मित ॥
जैपुर हो संभूसुत दूनीपति चंद जब,
सद्म[6]हो प्रधान सिंघी बीर जो लख्यो बिदित ॥ ४० ॥
रत्नचंदनाम जिहिँ मासनलौं रारि रचि,
टूटन दई न दूनी गोलनको सहिताप ॥
दिनमैं गिरैं जो कोट रत्तिमैं बनाइ देदै,
थोरे बलतैंहु मारि तोपनके मुख थाप ॥
अर्थ[7] दे मिलाइ राख्यो संध्याको स्वसुर अंबा,
बैजाँनाम नारि संध्या व्याही तास यह बाप ॥
फोज याकी इकधाँ चलात रही खाली फेर,
दुर्गमैं रुकी न आत सामग्री इम दुराप[8] ॥ ४१ ॥
सोपै इन जैपुर पुकार्‌यो चंद संभू सुत,

१ दोलतराव २ जयपुर को दंड देने गया ३ दूणी नगर के धन का लाभ ॥ ३९ ॥ ४ बहुत धन देकर स्मरण कराया ५ प्रलय की अग्नि के समान ६ घर (दूणी) में ॥ ४० ॥ ७ धन देकर अंबा नामक सिन्धिया के श्वशुर को उस बैजां का यह पिता था ८ दुर्लभ ॥४१॥

ताको वह कष्ट मेटिबेको भूप जगतेस ॥
कीनो खुसहालीराम बहुरा पेतानै कैद,
ऐसी ठाँ सहायी जयगढतैं उतारयो एस ॥
आत राजमहल रुकाई तोप१ तानैं अहो,
सिविरै[2] सुराई सेना२ पैठत तस प्रदेस ॥
कही लाख मुद्रा[3] लैन माहाजिको लेख काढि,
सूची रुपयें१ दंड२लौं हमारे देहु अब सेस ॥ ४२ ॥
सत्य अर्थ[5] बहु राखि पटैल पिताके सिर,
दैनको दिखाये व्हाँ जितेक दम्म लेख दल[6] ॥
दंड१ रुपय२ लौकैं जे सक्यो न दै खिलहु दम्म,
[7]वँदन बिगारि संध्या चढिगो उपेत बल[8] ॥
जैपुरहु जाइ बहुरा सु कैद भो बहुरि,
बरजि पिता१ गो सो सो कीनो पुत्र२ धीबिकल ॥
जाइपरयो संध्या ढंग ग्वालियर सीमा जब,
चढि न सक्यो सो रह्यो तबतैं तहाँ अचल ॥ ४३ ॥
ऐसैं रहि ग्वालियर संध्या सो अंवंती[10] ईस,
दाबत भो देस इत उतके बलिष्ठ अति ॥
राधिकादिदास काढ्यो सोपुरतैं गोर राजा,
तरुन पचीस२५ सैम[11] तोहू मुग्ध[12] कुंठमति ॥
ताहिदै बरोदा लाख १००००० मुद्रा मित आय ताको,
सोपुर समेत सबै दाब्यो देस गढ गति ॥

---

१ राजा प्रतापसिंह ने २ डेरे में ३ रुपये ४ फौज खरच और दंड तो तो और हमारे रुपये बाकी रहे सो दो ॥ ४२ ॥ ५ धन ६ लिखाहुआ पत्र ७ बाकी के रुपये नहीं दे सका तब मुख बिगाड़ कर ८ सेना सहित ९ विकल बुद्धिवाले पुत्र (जगतसिंह) ने पिता (प्रतापसिंह) मना कर गया था सो सब किया ॥ ४३ ॥ १० उज्जैन का पति ११ वर्ष १२ मोटी बुद्धिवाला (मूर्ख)

ऐसैं बढि राघोगढ१ नरउरर२ देस आदि,
काल कछु भावीमाँहिं तानैं लये दाबि काति ॥ ४४ ॥
सुंडापान मत्त इत जैपुर जगतसिंह,
नग्नठहैं जो नग्न रमनीननमैं लग्यो रहन ॥
लेकैं अंक नारि मारि द्वार परदेपैं जात,
आयो कढि बाहर नसाबस निसा१ अहरन ॥
द्वारसेवी जनन अकेल्यो पीछो मीचि हग,
जुवती सतन बीच निखर्प करैं जह न ॥ ४५ ॥
जोधपुर१ बिछुठहैं उदैपुर२ सक्यो न जाइ,
पीछो आइ तदपि जैई ज्यौं पाप दर्पपर ॥
पूरे हठ लाखन उपायमैं खरच पारि,
काम१ कामअंकुसर२ बढाय द्वैरहि चित्रंकर ॥
सतनैं सुवाइ भोगैं नारिन विविध संग,
आपुनी१ पराई२ गुरुलौं न गिनीठहैं अडर ॥
जाकौं रतिजंग गनिका रसकपूरि जीति,
खूब बस कीनौं जो खेरी१ ज्यौं चंडबेग खरर२ ॥ ४६ ॥
याही लंजिकाको कृपापात्र बन्यौं निप इक्क,
नाम सिवनारायन जो दधीचिके जैनन ॥

---

१ आगे आनेवाले समय में ॥ ४४ ॥ २ मद्य पीने के स्थान (मतवाल) में ३ नग्न स्त्रियों में नग्न होकर रहनेलगा ४ स्त्री को गोद में लेकर ५ दिन और रात में ६ ड्योढीदार लोकों ने ७ सैकड़ों स्त्रियों में ८ वह निर्लज्ज नाहीं नहीं करता अर्थात् स्त्रियों के देखते हुए रत करता ॥ ४५ ॥ ९ जोधपुर से नकटा होकर विवाह करने को उदयपुर नहीं जासका १० तो भी विजय पाया हुआ होवे तैसे ११ लिंग १२ आश्चर्य करानेवाले बढ़ाये १३ सैकड़ों स्त्रियों को सुला (लेटा) कर अनेक प्रकार से भोगता था १४ जैसे गधी १५ भयंकर वेगवाले गधे को वश में करै तैसे रसकपूर नामक गणिका ने उस राजा को वश में किया ॥ ४६ ॥ १६ वेश्या का १७ वंश में

वैहासिक[1] जैसैं अंतरंग है मिथुन[2] बीच,
मिश्र यह तैसैं बढ्यो दोउनके जोरि मन ॥
याही गनिकाको भयो भ्राता बीतलज्ज[3] यह,
पाँनि[4] बंधवाइ राखी पायो प्रभु[5] सालपन ॥
सोही करयो मंत्री तहाँ[6] भामसौं पिसुन सूचि,
धींसख[7] गहायो रायचंद लैबे-भाटि धन ॥ ४७ ॥
उक्त १८६६ सकमैं यौं रायचंदहि कितेक अंह[8],
कैद राखि पीछैं हनिगेरयो बिनु दाह करि,
भूपको सकार[9] मिश्र मारनमैं हेतु[10] भयो,
जारनमैं हेतु न भयो जो मोघ मंतु जरि ॥
बहुरा१ निकारहु न१ हरदे२ बिडारहु न३,
मारहु न२ रायचंद३ यौं कहिगो तात[11] मरि ॥
सोसो करी सबही सपूती जगतेस सुत,
प्यारी गनिका१ सैंह[12] सकार२ वारे फंद परि ॥ ४८ ॥
कग्गर[13] बसन धारि नारिन सहित करैं,
बौरि[14] फाग कौतुक दिगंबर[15] बनैं बहुरि ॥
कुल जान धारैं ताहि बहुरि बिसारैं कामी,

१ विदूषक (स्त्रीपुरुष को मिलानेवाला) २ स्त्री पुरुष के बीच ३ निर्लज्ज ४ उस वेश्या से अपने हाथ से राखी बन्धवाकर ५ स्वामी (जगतसिंह) का सालापन पाया ६ बहिनोई (जगतसिंह) से, उस चुगल ने कहकर ७ धन लेने को उस भड़वे ने मन्त्री को पकड़वाया ॥ ४७ ॥ ८ दिन ९ राजा का साला (राजा की अविवाहिता 'पासवान' स्त्री का भाई) यथा "मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्यसंयुक्तः॥ सोयमनूढाभ्राता श्यालः शकार इत्युक्तः ॥" १० झूठा अपराध लगाकर उस मंत्री के मारने में कारण हुआ परन्तु वह बिना जलाया पड़ा रहा जिसके जलाने में कारण नहीं हुआ ११ पिता (प्रतापसिंह) मरते समय कह गया था १२ साले सहित प्यारी गणिका के फन्द में पड़कर ॥ ४८ ॥ १३ कागज के वस्त्र पहनकर १४ जल की फाग करता और १५ नग्न होकर

मोहैं चित्रबंध सुहि सोहैं लंक बंक मुरि ॥
नगकी सतीन तजिदीनों अवरोध औबो२,
दूर के पलाई३ दुख छाई रही केक दुरि३ ॥
हीजरे किसोर बय आदरे सुनत हंत,
जानैं कामअंध है बिधाता सोहु बाद जुरि॥ ४९ ॥
मिश्र शिवनारायन स्वामीको सकार१ मंत्री,
काज बिनु लाज सब राजके लग्यो करन॥
सुभट१ सिपाहि२ गन गहन दुमन सबै,
सचिव३ अपा के गहि बैठे जित जो सरन ॥
काढयो बहुरा तब रेहस्यमैं किते कहत,
धृष्ट बल सत्थ वैत्थ ताहूकों लग्यो भरन ॥
भाख्यो मैं प्रसन्न तँहँ भाख्यो द्विज वृद्ध भो मैं,
पुत्रहिं पठैहों बै" नवीन निज१ जो पर२ न ॥५०॥
ओरन बुलाइ बेग विप्र कढिगो रु ऐसैं,
सचिव रैहस्य केक भुकते१ बचे२ सुनत ॥
जो रसकपूरि गनिकाही तैंस दर्प जीति,
मान१ मैं रु पॅान२मैं अमान प्यारी स्वामि मत॥

---

१ टेढी कमर करके चित्रबन्ध आसन से मोहित करें ओ ही स्त्री सुहावै "कामसूत्र में कहेहुए रतके आसनों में एक चित्रबन्ध आसन है सो स्त्री के टेढी कमर करने से होता है" २ नगर की पतिव्रता स्त्रियों ने जनाने में आना छोडदिया ३ कितनी ही स्त्रियां दूर भाग गईं ४ कितनी ही छिप रहीं ५ युवा अवस्थावाले हींजड़ों का आदर किया ६ खेदकी बात है ॥ ४६ ॥ ७ अपने मालिक का शाला और मंत्री (सलाहकार) ८ लज्जा ९ एकान्त में १० बाथ [अंक] में भरकर ११ नवीन अवस्थावाला है और यह भी आपका ही है अन्य नहीं है ॥ ५० ॥ १२ कितने ही सचिवों का इस एकान्त को भुगतना और कितनों ही का बचना सुनते हैं १३उस राजा जगतसिंह के घमंड को जीतकर १४ बल में अतोल

साध्यो बाजीकरन अकाल मरिबेकों सठ,
तातैं प्रतिमल्ल मोहि *हेला१ हाव२ भाव३ तत ॥
जैपुर अधीस जगतेस करिलीनों जिहिं,
बाजीगर बंदर नचावैं जिम तारि तब ॥५१॥
कामीपन हाका अजमेर नृप बीसलको,
जैसो भयो भूपनमैं तैसो इहिं बेर जग ॥
औरनको जान्यों नाहिं एही महाराज उमैर,
मत्त इहिं बेर भये जाँनैं छैल छैल मग ॥
जोधपुर१ भीम१ जगतेस२जु ए जैपुर२ज्यौं,
एक सील१ चरित२ निलज्जताके उच्च ३अग ॥
कैसे भये जैसे परदेसी सुनि रोकैं कान,
देसी कहा दुष्टनैं भायो इम एक ४भग ॥ ५२ ॥
एक१ काकिनीमैं पीछो देदे गही नारि इत,
सिंघी इंदराज१ उक्त दूदाउत्त सिवनाथ२ ॥
गंगाराम३ संजुत ए जबहि हजूर गये,
ठहे कैं जंई लौ जस दिखाये आछे निज हाथ ॥
मान महिपाल जे लगाये उर पूरे मोद,
सबहि बढाये सतकारक बिभव साथ ॥
दैनलागो सिंघीकौं मुसाहबी उचित देखि,
नीतिसौं नच्यो ठहाँ इंदराज असैं गुनगाथ ॥ ५३ ॥
जोरि कर स्वामीके समक्ष यौं बनिक जंपी,
आय१के अधीन धनैं सबठाँ विधेय ठपर्य२ ॥

*सुरत की प्रबल इच्छा और हाव भाव से तहां मोहित करके ताड़ना देकर ॥५१॥ १ रसिकों के मार्ग में रसिक वा बकरे के समान रसिक इन्हीं दोनों को जाने २ एक से स्वभाव और चारित्रवाले ३ऊँचे पर्वत ४एक योनि ही अच्छी लगी ॥५२॥ ५ छदाम में ६जीतनेवाले होकर ॥५३॥ ७ रोबरू ८ जितनी आमद होवै उतना ही

रीति यह इंद१ बिधि२ ईस३ हरि४ लौं जो रही,
नर तो कितेक तहाँ कैसैं बनैं छोरि नेय ॥
रीझ आदि व्ययमैं प्रमान जो प्रभु न राखे,
मोपै बनिहै क्यौं नाथ काम तो प्रबंधमय ॥
मान नृप भाख्यो हम तेरेही दिखाये मग्ग,
अबतैं चलहिं सदा तेरी मतिके उदय ॥ ५४ ॥
कैसैं व्है प्रतीति अरजी यों इंद्रराज करी,
देवनाथ इष्ट गुरु रावरे जे बिच देहु ॥
भीर तिनकौं मैं राखौं व्हैन ज्यों नियम भंग,
व्हैतो हित हेरि अटकैं तिहिं मिलित एहु ॥
सुधरन काज श्रीजलंधरके लै सपथ,
हानि१ लाभ२ हमकौं गिनों इक१ दै निज गेहु ॥
करन बिहीन रीझ१ खीज२ न बिधेय करि,
लाह नरनाह पीछैं राहके पथिकैं लेहु ॥ ५५ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

जब प्रभुतैं करजोरि, इंदराज किय यह अरज ॥
नाथ सु तबहि निहोरि, कमध्वज्ज तस भीर किय ॥ ५६ ॥
सूचे सौंहन साथ, हित जिम बनिक प्रतीति हित ॥
नाम जलंधरनाथ, दोउ२ न अप्पन१ बीच दिय ॥ ५७ ॥
लिपि प्रभुकी१ लिखवाइ, लिपि नाथहुर२ की संग लहि ॥
पुनि बिस्वासहि पाइ, काम बनिक लग्गो करन ॥ ५८ ॥
व्यय१ तब अधिक बिडारि, सिंघी रक्खिय आय२सम ॥

खरच उचित है १ शिव २ नीति ३ स्वामि का (आप का) काम ॥ ५४ ॥ ४ सहाय ५ जलंधरनाथ के सौगन ६ उचित ७ चलनेवाले ॥ ५५ ॥ ८ कमधज मानसिंह ने देवनाथ को उसका सहायक किया ॥ ५६ ॥ ९ कहे हुए सौगनों के साथ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १० अधिक खरच था जिसको निकाल कर

नाथहिँ मीर निहारि, उचित राह आनैं अखिल ॥ ५९ ॥
नृपहिँ बनिक[1] जुत नाथ[2], राह तजत अटकत रहैं ॥
सब वैभव नयँ साथ, बढन राज्य लग्गो बिबिध ॥ ६० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौविष्णुसिंह चरित्रे मानसिंहात्मघातविमर्शकारामोचितसिंघीन्द्रराजभाण्डागारि गंगारामकुचामणठक्कुरशिवनाथसिंहसहितजयपुरजनपदगमनफागी नगरजयपुरानीकपलायनजयपुरावरणम् १ सेनाव्ययव्याकुलजग- त्सिंहचम्पाउत्तसवाईसिंहविरसताहेतुस्वराष्ट्रनाशभीतजगत्सिंहजयपु रदिगभिमुखपलायन २ राजयुग्मभीतराणाभीमसिंहस्वसुतागरलप्र योगमारणसवाईसिंहमरुधरालुण्टन ३ बुन्दीशविष्णुसिंहाविवाहद्वय करणार्द्धगद्दिकोपवेशनस्वीकारमित्रीकृतमीरखांयोधपुरेशमानसिंहस वाईसिंहच्छद्मघातमारणम् ४ कृत्रिमदायादधोंकलसिंहकांदिशीकीभ वनबुन्दीभूपकृष्णगढाष्टमविवाहकरणम् ५ लवपुरपतिसिक्खरणजी

॥ ५९ ॥ १ देवनाथ सहित २ नीति के साथ ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंहके चरित्र में, राजा मानसिंह के आत्मघात विचारने पर सिंघी इंदराज और गंग भंडारी का कैद से निकल कर कुचामण के ठाकुर शिवनाथसिंह सहित फागी नगर में जयपुर की सेना को भगाकर जयपुर को घेरना १ सेना के खरच से घबराये हुए राजा जगतसिंह और पोकरण के चांपाउत सवाईसिंह से विरस होकर अपनी भूमि के जाने के भय से जगतसिंह का जयपुर जाना २ महाराणा भीमसिंह का दोनों राजाओं के भय से अपनी पुत्री को जहर देकर मारना और सवाईसिंह का मारवाड़ को लूटना ३ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का एक मास में दो विवाह करना और जोधपुर के राजा मानसिंह का मीरखां को मित्र बनाकर उसको आधी गादी पर बिठाना स्वीकार करके पोकरण के ठाकुर चंपाउत सवाईसिंह को छलघात से मरवाना ४ जोधपुर के कृत्रिम दावीदार धूंकलसिंह का भागना और बुंदी के राजा का कृष्णगढ में आठवां विवाह करना ५ लाहोर के शिक्ख रणजीतसिंह और ईष्ट इण्डिया कम्पनी से विरोध बढकर सुलह होना और काबल के वजीर दोस्त मुहम्मद का, काबुल

तेष्इंडियाकम्पनीसंधिविधाननिःसारितकाबुलेशामीरसुजाउल्मुल्कमन्त्रिदोस्तमुहम्मदकाबुलाधिपत्यमापणा ६ स्वशरणागतकाबुलेशामीरकोहनूराख्यवज्रसिक्खरणाजीतसिंहग्रहणामीरकम्पनीशरणसमासादन ७ दूणीपुरकृतसमरदौलतरावसिंधियापुनर्दक्षिणादिग्गमनग्वालियरसमागतेतस्ततोदेशसमाक्रमण ८ मद्यपकामुकजयपुरेशजगतसिंहविवस्त्ररमणीरमणादिगर्हितकर्मनिन्दनसिंघीन्द्रराजविहितजयपुरजनपदोपद्रवहेतुत्यक्तयोधपुरावरणजगत्सिंहजयपुरपलापनमानसिंहसिंघीन्द्रराजप्रधानपदप्रदानादिवर्णनं दशमो मयूखः ॥ १० ॥ आदितः ॥ ३६० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

सोरठा दोहा ॥

इंदराज अधिकार, पाइ मुसाहबको प्रथित ॥
सब लखि सार असार, हेरघो हित प्रभुको हरखि ॥ १ ॥
कछुक भूत इहिं काल, संगी नाथ समर्थ नमि॥
नियमहिं आनि नृपाल, कोविदँ वनिक प्रधान किय ॥ २ ॥
जाके मतिगति जोर, नियम जदपि न रुच्यो नृपहिं ॥
तदपि लग्यो नय तोर, दिनप्रति चमक्यो अभ्युदय ॥ ३ ॥

के अमीर सुजाउल्मुल्क को निकाल कर बादशाह होना ६ अपने शरण आये हुए काबुल के अमीर से सिक्ख रणजीतसिंह का, कोहनूर नामी हीरा लेना और अमीर का कंपनी के शरण जाना ७ दौलतराव सिंधिया का दूणी नगर में युद्ध करके पीछा दक्षिण में जाना और गवालियर जाकर इधर उधर के देश दबाना ८ जयपुर के मद्यपी और कामी राजा जगतसिंह का नग्न होकर स्त्रियोंमें रमने आदि निन्दनीय कामों की निन्दा और जयपुर के देश में उपद्रव करके जोधपुर के घेरे से जगतसिंह को जयपुर में बुलानेवाले सिंघी इंद्रराज को राजा मानसिंह का प्रधान बनाने आदि वर्णन का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥१०॥ और आदि से तीनसौ साठ ३६० मयूख हुए॥

१ विदित ॥ १ ॥ २ यह कथा कुछ गये समय की है ३ चतुर ॥ २ ॥ ३ ॥

निगम बहिर्गत[1] न्याय, पंच५ मकारक[2] पथ पथिक ॥
इत मत तदपि[3] सहाय, कानफटा गुरु मान किय ॥४॥
दयो मोहि इन दान, प्रान[4] उपसन खिन जोधपुर ॥
मतध्रुव इम हुव मान, किंकर कानफटेनको ॥ ५ ॥
इम नाथहिं बिच आनि सिंघी हुव प्रभुको सचिव ॥
मानहिं बहुमत मानि, न मुसाहब होतो नतो ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जैपुरके जोरतैं भज्यो जब महिप मान,
आपुनों अनीक देखि बेरपैं बन्यों[5] अहित ॥
पाइ निज देस१ जगतेसहिं मुराइ पुनि,
संगी रहे जे भट बढाये सबही सहित[6] ॥
उक्त सिवनाथसिंह१ मेरतिया दूदाउत,
मानि हित चिंतक दै लाख१००००० को पटा महित[7] ॥
औरनतैं अधिक समप्पि द्रम्म[8] सिक्का१ आदि,
राख्यो सबिसेस ताहि औरन तुला रहित[9] ॥ ७ ॥
सूचे तीन३ संगी सिवनाथवारे सोदरन,
सहँस पचीस मुद्रा तुल्य[10] दै पटा सबन ॥
नींबी१।२ मुख्य थान लछमन१।२ कौं दयो नृपति,
मान२।३ हित दीनों मान भहलियार।३ तुष्ट[11] मन ॥
स्वामी करचो थान धनकोली३।४ को हुकमसिंह३।४,
सूँप्यो सारदूलता१।५ कौं पिप्पलाद१।५ प्रीति सन ॥
द्रम्म पंच अयुत५०००० पटासौं पहिलैं तो दयो,

१वेद मार्ग से बाहिर २ वाम मार्ग में चलनेवाला ३ तो भी उस कनफटा को मानसिंह ने गुरु किया ॥ ४ ॥ ४ प्राण नाश होते समय ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ शरीर पर शत्रु बना अर्थात् आत्मघात करने लगा ६ हित सहित ७ पूज्य (आदरणीय) ८ रुपये का सिक्का ९ बराबरी रहित ॥ ७ ॥ १० बराबर ११मन से प्रसन्न होकर

*भावीकाल देहैं बलि बूडसूर१५ पुरी भवन ॥ ८ ॥
ऊदाउत वंसमें प्रधान उक्त अर्जुन१६ कौं,
अयुतन आय ग्राम बारह१२ दये उचित ॥
भद्राजनि ईस बखतावर१७ जो जोधा१ भन्यौं,
द्रम्म लाख१००००० मानी पट्ट ताकौं दयो हेरि हित ॥
जंप्यो लाडनूँ पति छितीप२ जोधा२ मंगल जो,
मान नृप ताहूकैं बढाइ पटा लाख१००००० मित ॥
पंच अयुता१५००००ऽऽये तास बंधव पता१३१९कौं पट्ट१,
यो दयो त्रिसत३०० सादी स्वामिता२ उपेत इत ॥ ९ ॥
अल्पाजीव हे ए८ सब एक१ टारि अर्जुन१ कौं,
ऊदा कुल पट्टपति सोतो रायपुर१ ईस ॥
आठ८ मिसलनमैं सिरायत हो आदिहीतैं,
अष्टादस१८ संगी यौं बढाये मान अवनीस ॥
तिनमैं कुचामनि१रु भद्राजनि२ लाडनूँ३तो,
बढे लाख१००००० लाख१०००००के पटाकी ठानि बखसीस ॥
ऊदाउत मूलहीतैं ऐसो सो बढ्यो अधिक,
जानैं जंग जैसे बढे संगी हीन द्विक२ बीस१८ ॥ १० ॥
ऐसैं भूत१ कालमैं बढे ए बंदगीतैं अरु,
इंद्रराज१ मंत्री भयो नृपकौं नियम आनि ॥
वर्त्तमान२ मैं अब बुरो यह लगन लग्यो,
मानी मानवारे मन व्यपमैं अटक मानि ॥
सौंह लै जलंधर१के साखी देवनाथ२ सह,
तापैं पछिताइ हरैं छलतैं सचिव हाँनि ॥

* आगे आनेवाले समय में देवेगा ॥ ८ ॥ १ पचास हजार की आमद का तीन सौ सवारों की स्वामिता सहित ॥ ९ ॥ २ ये थोड़ी जीविकावाले थे राजा मानसिंह ने ५ दो कम बीस ॥ १० ॥ ६ खरच रोकने से ७ सचिव को मार

हाहा काहूकै न ऐसो कपटी अधिप होहु,
पापी लोम[1] अंचक जो मारै स्वीय पहिचानि ॥ ११ ॥
संबत तुरंग अंग संजुत भुजंग ससि१८६७,
इंदउर ईस जसवंतराव छोरयो अंग ॥
जोलौं रह्यो स्वास हुलकरकै निपाति[2] जोर,
तोलौं त्रास रह्यो अंगरेजनकै बल तंग ॥
हंकि आरि तोपनपैं जानैं बहुबेर हय,
ढंकि छिति[3] दीनी रुंड मुंडनके करि ढंग ॥
पृथ्वीराज पीछैं बीर तैसो यह जान्यों परयो,
जाकौं वाह व्याहसो उछाह रहयो सब जंग ॥ १२ ॥
साहस१ उपाय२ बुद्धि३ बिक्रम४ रु बिद्या५सिद्ध,
एक१ अध्वं६ अध्वग ए अंगरेज आइ इत ॥
होनलागे हाकिम इहाँको देस१ काल हेरि,
हेरैं हेरै क्रमतैं बढाते निज लाभ हित ॥
एक१ प्रतिभटतैं मुरे न बहुबेर आजि[6],
मोरे महसूर१ मकसूदाबाद२ से अँमित ॥
जोध कंपनीके जे मुराये बहुबेर जानैं,
बीर एक१ ऐसो जसवंतराव भो बिदित ॥ १३ ॥
संकटमैं एकसमै बलको बुरज बांधि,
तोप दुव२ तामैं चटकारिनं मित चलात ॥
अंगरेज६ दक्खिन२।३ तैं उत्तर४।७ लरत आये,
काजहु करत आये पाउस३ सलिल पात ॥

---

१ सुनते ही वाल (रोम) खड़े होजावैं ऐसा ॥ ११ ॥ २ [illegible] के बल से ३ पृथ्वी को ४ ढेर (समूह) ५ एक मार्ग में चलनेवाले ६ युद्ध में ७ बहुत ॥ १३ ॥ ८ सेना की ९ चुटकी बजने के समान १० वर्षा का जल पड़ने में

नीठि नीठि लंघि कृत्य[1] कोविद मिली[2] नदिन,
गंगापर व्हैंगये बढेक्रम निबाहि गात ॥
लरत उहाँलों गयो हुलकर पीछैं लागि,
बलको बुरज पै न बिगरयो जिनहि जात ॥ १४ ॥
ऐसे अंगरेज अतिसीम बुध१ बीर२ अहो,
ऐसैं एक काल दुर्ग भरतपुराख्य अरि ॥
बाहिरतैं बेढिकैं करयो रन कछुक काल,
टेक बल लेकनैं अनेकनमैं एक१ टरि ॥
माँहि१के प्रघात जट्टराज रनजीत मारे,
काढे जसवंतराव बाहिर२के पातकरि ॥
हारि न मुरे जे१मुरे तबतो कछुक हेतु,
लैकैं१ दयो जट्टनको पीछैं उक्त दुर्ग लरि ॥ १५ ॥
ऐसे वज्रफेट जैसे अंगरेज६ आहवमैं,
हुलकरराज जे भजाये बहुबेर हनि ॥
एकबेर आवत दरेको करि रुद्ध द्वार,
माँहिं अंगरेजन लै कोटाके प्रधान नमि ॥
चम्मलि उतारि काढी सुखसौं कथित चमूँ,
तातैं रंच रुद्ध जसवंत पीछैं प्रीति तनि ॥
माँहिं नीतिसौं लै धरि रोधन जु कारा[13] माँहि,
वज्र कोप झेल्यो झल्ल जालमनैं नम्र बनि ॥ १६ ॥

१ कार्य में चतुर २मार्ग में मिली हुई नदियों को लांघकर ॥ १४ ॥ ३अत्यन्त चतुर और वीर ४ भरतपुर नाम के ५ घेर कर ६ अंगरेजों के सेनापति का नाम है ७ बाहर के प्रहारों से ८ कुछ कारण से अंगरेजी सेना पीछी फिरी ९ कहा हुआ गढ (भरतपुर) ॥ १५ ॥ १० युद्ध में ११ कोटा के राज्य में पर्वतों के बीच के मार्ग का नाम, दरा जिसको रोककर १२ नम्रता से १३ कैद में ॥ १६ ॥

ऐसो नीति पाटव[1] दिखायो जिम रीझै एह,
हो तबहु पाउस[2] पै हेरी नाँहिं बित्त हति ॥
दलही[3] पटन ढाँक्यो भीजे करवाइ दूर,
तंबू जे नवीन पीन तिनकी तनाइ[4] तति ॥
दैकैं उपदामैं[5] इष्ट जो रह्यो जितेक दिन,
मंडि महिमानी दीखि अपुनैंसे तास मति ॥
रोकै मूढ रोधक तो ऐसी कहि राजी राखि,
काढ्यो जसवंतराव ऐसे खेलि दाव कति ॥ १७ ॥
एकबेर ऐसेही परयो जो पुर बुंदी आइ,
गोपुर जराए[6] नृपनैं व्हाँ कछु हेतु गहि ॥
रंचहु न भेजि महिमानीकी न ठानी रीति,
सोहु हित हानी मानी मानी रह्यो तोहु सहि ॥
श्रीजितको केदारेस आश्रम निवास सुनि,
स्वल्प पत्ति संगी चल्यो तिनसौं मिलाप चहि ॥
जो लौ बाह्यपंथ[7] गिनतीके जन दरवाजा,
ऊपरतैं भारी एक१ तुपक तहाँतैं रहि ॥ १८ ॥
जाकौं हो न सासन पै गोपुर जर्टित[8] जानि,
एक मूढ ऊरुज[9] सो आगस[10] करयो असह ॥
पीछो आइ तबहि निदेस दीनौं सेनापति,
लोहु१ गढ१ बुंदी लुटि२ आजके प्रवृत्त[11] अह ॥
परिखा[12] कितोक जो पैदत्रनतैं[13] देहु पूरि,
ताको कुद्धताको होत सासन इतोक वह ॥

१ नीति की चतुराई २ वर्षा ३सेना को वस्त्रों से ढकी ४बडे डेरों की पंक्ति तना कर ५ इच्छानुसार भेट देकर ॥१७॥ ६ नगर के द्वार बन्ध कराये ७ नगर के बाहर के मार्ग से ॥ १८ ॥ ८ दरवाजे जुड़े जान कर ९ वैश्य ने १०अपराध ११ वर्तमान दिन में १२ खाई कितनीक है जिसको १३ जूतियों से भर दो

बाहिरकी *बुंदी१ साखापुर२न समेत बेग,
जबहि लुटीसी दीसी साखी हीन साख जह ॥ १९ ॥
पत्तनके कोट१पैं रु दुर्ग२पैं प्रसारि पंति,
[2]तौरि दीनी तोपनकौं मोरि मोरि सिस्त मुख ॥
लैलै [3]तूल भार बहु [4]खातिका भरन लगे,
राहकौं धरन लगे निश्रेनिन चाह रुख ॥
निजन निहारैं नीठि बुंदीके बचावनकौं,
श्रीजितके आतहि सो साम्हैं आइ पाइ सुख ॥
तब पधराइ उपालंभनको [5]ओघ तानैं,
——अनखाइ दीनौं तदपि मिटाइ दुख ॥ २० ॥
[6]नाती जिन दिनन प्रतीपह्यो पितामहसौं,
तीव्र बल आयो इहाँ हुलकरराज तब ॥
याही तैं बिलंबि पीछैं श्रीजित सहाय आयो,
जान्यौं सह सचिव१ महीप२ को प्रमाद जब ॥
[7]लुंटक पिटात१ बरजात२ के [8]सरनि लखे,
उक्त बिधि ह्वैरही मिलि बैठे [9]स्वस्व थान अब ॥
सूचे उपालंभ जसवंतके असेस सुनि,
पीछो दयो उत्तर यौं श्रीजित लहे पैंरव ॥ २१ ॥
[11]मातुल मलार कुल तू भयो कुपुत्र मूढ,
बुंदीपति मूढ भयो२ मो कुल कुपुत्र [12]वंत ॥

* शहरपनाह जैसे बाहिर का शहर जिसको जूनी बुन्दी भी कहते हैं १शाखा हीन वृक्ष के जैसी ॥ १६ ॥ २ भरीहुई ३रूई के बोरे लेकर ४खाई को भरने लगे ५ उरहनों (ओलंभों) के समूह से ॥२०॥ ६ पोता (विष्णुसिंह)७लुटेरों को ८ मार्ग में देखे ९ अपने अपने स्थान पर १० समय पर ॥ २१ ॥ ११ मामा मलार के कुल में (उम्मेदसिंह के पिता बुधसिंह की राणी कछवाही ने मलार के राखी बांधी थी इस कारण उसको मामा कहता था) १२ खेद है

अंग अपनेकौं अहो काटन लग्यो तू१ आप,
मंडन लग्यो त्यौं भूप२ इतको प्रतीप मत ॥
दोउन२को सत्रु भारि तुपक भज्यो जो दुष्ट,
ताहि खोजि लावनकौं भेजे जन जूह२ तत ॥
अखिल कुटुंब मेरो आत मारिबेको इहाँ,
मारि१ तिनको उबारि२ निज१तैं निज सुरत ॥ २२ ॥
श्रीजितके बैन ऐसे हुलकरराज सुनि,
नीचे करि नैन दये लुंटक सब निवारि ॥
आश्रम पधारे इम तूटो हित जोरि आप,
धीरपन पीछैं नृप आइ मिल्यो हित धारि ॥
स्वागत बलिष्टको बन्यो जिम सबहि साध्यो,
बाँबासौं बहोरि मिलि मंत्रिनको मद मारि ॥
पीछैं चढि गो जो पर्बतनपैं करत पंथ,
सूचे सक सोपै जसवंत मर्यो जपकारि ॥ २३ ॥
भूत१ बत्त भाखी अत्र ताकी बर्तमान२ अब,
बैठो तास आसहु मलारहि स नाम बंलि ॥
नाम कहिबेको सो१ बडे२ सो बल धाम नहि,
इंदँउर१ पुष्प२पैं भो तोहूसो१ प्रसक्तअलि२ ॥
हाकिमपनोंतो जसवंतहीको गैल गयो,
छैल गयो छौनिको वहैही विप्रलंभ छलि ॥
कंटक कढ्यो जो अंगरेजननै मानि कीनौं,
उच्छव अपार कोऊ रोधक न जानि कलि ॥ २४ ॥

---

१ विरुद्ध २ मनुष्यों का समूह ३ क्या तू जाता ॥ २२ ॥ ४ लूटनेवालों को रोक दिये ५ श्रीजित से ॥२३॥ ६पुनि७इन्दोर रूपी पुष्प पर आसक्त भ्रमर८भूमि का रसिक ९ वियोग कर गया १० युद्ध में रोकनेवाला कोई नहीं जानकर ॥ २४ ॥

एक१ बलहीसों जई कलि४ मैं सुनत आये,
जाकै सुन्यौं धीबल१ न ताकै सुन्यौं बीर जस२ ॥
आयो कलि४ देखो प्रभुराम२०१४ अपनीही ओर,
ओरनकै आये कृत त्रेता२ बिधि कर्म बस ॥
देस१ काल२ बुद्धि३ बिद्या४ पाइकैं नवीन दृढ,
रमनी महीको लैन लागे अंगरेज७ रस ॥
ऐनं भद्र इननैं बिचारि गहिलीनो एक१,
टेकसौं टरैं न तासौं अध्वनीन नित्य तस ॥ २५ ॥
उक्त१८६७ सकहीके मास बाहुल८ असुभ्र२ इत,
दीपमालिका३० की आदि तेरसि १३ निसा२ दुसह ॥
भूप बिष्णुसिंह२००२ को पितृव्यज कनिष्ठ भ्रात,
मोरि मन स्वामीसौं हरामीपन मानि मह ॥
ईस गोठपत्तनको नाम बलवंत२००। अहो,
द्रोहबस बूडिबेकौं पापके अगाध द्रह ॥
निश्रेनी लगाइ सहसाही पैठि नैनपुर,
दाबिकैं दगासौं बनिबैठो जो अधीस जह ॥२६॥
श्रीजितके जीवतरहे जे कहे तीन३ सुत,
अग्रज अजितसिंह१९९ तिनमैं लह्यो तखत१ ॥
दूजे स्वामिधर्मी बीर अंगज बहादुर१९९। कौं,
गोठद्रंग दीनो जाको मान उक्त औदि गत ॥

१ कलियुग में युद्ध में एक सेना से ही जीतते सुने हैं २जिसको बुद्धि का बल है उसको वीरता का यश नहीं है "दानाच्च प्रभवा कीर्तिः शौण्डीरप्रभवं यशः" दान से कीर्ति होती है और वीरतासे यश होता है३हे प्रभु रामसिंह४सत्ययुग ५ शुभदायक मार्ग ६ इन मार्ग चलनेवालों से वह कल्याण अलग नहीं होता ॥ २५ ॥ ७ कार्तिक वदि में ८ काका का बेटा छोटाभाई ९ गोठड़ा का पति १० नैणवा नगर॥२६॥११वह बहादुरसिंह इस कही हुई कथा से पहिले ही मरगया अथवा उस गोठड़े की आमद का प्रमाण गयेहुए पहिले कथन के अनुसार है

दीनौं सुत तीजे३ सरदार १९९। हित दुर्ग्ग धुर१,
कापरनि४दीप१९८कौं जो लक्ख१०००००को पटाकहत
ओसरपैं दाय भेद हेतु१ कहिआये आदि,
तन्न कहि आये उक्त तीन३ न प्रजौ२ हु तत ॥ २७ ॥
तीन३ सुत तिनमैं बहादुर१९९।के आयुबली,
जेठो१ बलवंत२००।१ मध्य२ दलपति२००।२ नाम जुत॥
सेरसिंह२००।३ तीजो३ तिम द्वै२ही इत आँयुसगी,
ईश्वरी१रुदेवी२आदिसिंह२००।१,२००।२सरदार१९९सुत॥
ताहीकै खवासिके पहार१ रु स्वरूप२ तनै,
उक्त दायभागी—— दीप१९९। के तनूज उत ॥
अत्र आयुवारे सुरतान१९९।१ रु सगतसिंह१९९।२,
॥ २८ ॥

इनमैं बहादुर१९९।२ तनूज बलवंत२००। उग्र,
वीर खल सील पसु सिंहकी तुला वहत ॥
केती भूत१ भावी२ जिहिं सत्रुन समर करे,
मंडिल१ रु बिंझोली२ से दुर्ग लैनके महत ॥
त्रिगरे उपायजेतो निश्रेनी लगत देर,
नँगर१ नरूकनतैं लौहीलयो पै लहत ॥
तामैं बेग आइपैठो भीमको कटक तातैं,
आयो कढि पीछो लूटि बैभव जो अपहत ॥ २९ ॥
कलह अनेक ऐसे भूत अरु भावी करे,
केही रन जित्ति कित्ति बीरता करी बिदित ॥

१उम्मेदसिंह के छोटे भाई दीपसिंह को दिया था सो२तीनों की सन्तान यहाँ कह आये हैं ॥२७॥३आयुवाले४ईश्वरीसिंह और देवीसिंह ॥२८॥५पशुके समान दुष्ट स्वभाववाला६पराक्रममें सिंहकी बराबरी करनेवाला७नगर नामकपुर॥२९॥

एक धर्म्महीकौं पीठि दैबेतैं दुरित१ ओढि,
हंत अपकित्ति२हु लै हेर्‍यो एक लोभ हित ॥
बाम२ अध्व पथिक मपंचक५ निरत बुद्धि,
ईससौं बदलि सूचे १८६७ बर्त्तमानसो ब इत ॥
पैठिकैं दगासौं घरहीके दुर्ग्ग नैनपुर,
आसु अपनायो जोध अंतरके ठानि जित ॥ ३० ॥
सो सुनि सकोप बिष्णुसिंह२००१२ नरनाह सज्ज,
चित्यो आप चढन निवार्‍यो सो भटन न्याय ॥
बोले हम आगैं बलवंत२००१को कितोक बल,
छीनिगढ१ लैहैं अरि व्हैहैं कैद हत छाय ॥
धोवरेस१ भूपाल रु बिक्रम२ सु खीना२ धनी ॥
अग्रज१ तदीय बिरुदेस२ ———— आय ॥
नाथाउत चालुक्क सता४ तिम पगारां४नाह,
चंद्र५ कोरमां५ को पति कूरम चरित चाय ॥ ३१ ॥
इत्यादिक सामंतन नीठिन निवारे ईस,
काल१ देस२ धर्म्म३ नय४ अर्थ५ को जनाइ जय ॥
यौंही सचिवनमैं मधेसं प्रभु त्युँही आइ,
मंत्री तुलाराम१ द्विज नागर सु नीतिमय ॥
नंदराम२ भट्ट रु प्रधानहु गनेस३ निज,
सेनापति चंद४ कृष्णधात्रेयहु जोरि सय ॥
सज्जकरि सेनाकौं पठातभये नैनपुर,
नामी नरनाहसो बिराजत रह्यो निलयं ॥ ३२ ॥

---

१ पाप झेल कर २ वाम मार्ग में चलनेवाला ३ पंच मकार में ४ निपुण बुद्धिवाला ५ नैणवापुर को शीघ्र अपना किया ॥ ३० ॥ ६ छाया (आश्रम) रहित ॥ ३१ ॥ ७ शुभ भाग्य को ८ प्रधानों का ईश ९ हाथ जोड़ कर १० घर विशेष शोभायमान होता रहा अर्थात् राजा बुन्दी में ही रहा ॥ ३२ ॥

पैठत दगासौं बलवंत२०० इत नैनपुर,
गुज्जर गुमान१ दुर्गपति जो रन गरूर ॥
जंप्यो अनिरुद्ध नृपकैं भो देव धावरजो,
साखापुर देवपुर१ सासक अतुल सूर ॥
हाकल प्रभेद यह ताके कुल जात हुतो,
तीर१ तुपक२नके प्रहारनमैं गुनपूर ॥
मंडै बीर गोलिन१ की माला बटपत्र२ माँहि,
दैदै पैत्रबाह१ पैत्रबाह२ खंडै दूरदूर ॥ ३३ ॥
अंग१ बय२ जोर कमनैतनको मोर यह,
स्वामिधर्म साधक बिबाधक बिपच्छ बल ॥
जाके असुभाव छत कोऊ परिपंथक२ जो,
छीनिहु सकैं न पैठि छन्नहु पसारि छल ॥
पै यह गुमान धाइभाई दुर्ग पैठनमैं,
खोलि बसु ताहीके बिसासवारे मोरि खल ॥
डरतैं अडर एह तिनपैं हनाइ डार्‌यो,
पार उर गोली भेदि जावत लग्यो न पल ॥ ३४ ॥
ऐसैं बिसवासवारे माँहिके अधर्मिननैं,
गोलीदै गढेसैं मार्‌यो गुज्जर वह गुमान ॥
किल्लाके सिपाह भेदि१ केक हनि२ केक काढि३,
थापि अपने गढ अधीन कीनों थान थान ॥
सामंतके११।७१ संकर१ स नाम भुजनैरी स्वामि,
स्वामीको लजाइ लोन छीमी होन अवसान ॥

---

१ गूजरों की जाति विशेष २ बट वृक्ष के पत्ते में बंदूक की गोलियों की माला रच देता था ३ तीरों से ४ पक्षियों को ॥ ३३ ॥ ५ शत्रुओं के बल को मिटाने वाला ६ जीवित रहते समय ७ शत्रु ८ धन देकर ९ उनसे उस धा भाई को मरवाडाला ॥ ३४ ॥ १० किल्लादार ११ अन्त में दुर्बल होकर

दुर्ज्जन लै दुर्जनकौं पैठो जिम बुंदी दुर्ग,
पैठो बलवंत२००१कौं लै नैनवा यह मधान ॥ ३५ ॥
बुंदी भट मुरुयनमैं मुहुकमसिंह१९४१५ बंसी,
नैनपुर रच्छक हो दूजो२ फतैसिंह२ नाम ॥
इत्यादिक और सुनि मरन गुमान सोर,
आये मुख ढंकि व्है पलायन रन अकाम ॥
बुंदीके बरूथ इततैं बाढि गढ सु बेढयो,
तत्थ अर्द्ध बाहुलं८तैं भो रन तुमुल ताम ॥
बीज सुहि पाइ हाइ देस१ काल२ दिष्ट३ बस,
राज्य यह बुंदी तत्र दुर्गत भो प्रभुराम२०१४ ॥ ३६ ॥
जाके रन नाथाउत चालुक सता१से जोध,
महासिंह१९४१९ बंसी बंधु छग्गन१।२ मगन१।२से ॥
के अरि बिदारि रारि भारि असि आये काम,
नंठे केक कातर जु लघुत्वमैं नगनसे ॥
श्रीजितके जेठो१ इंदुकुमरि१ खवासि सुता,
सूनु तस हत्थी१ आदि घायल सगनसे ॥
आयुबल ऊबरे१ मरे२ के लघु हीसौं इहाँ,
भाजि केक भीरु भये भीकरि भगनसे ॥ ३७ ॥

१जैसे दुर्जनसिंह शत्रु को लेकर बुन्दी में घुसा था तैसे ॥३५॥२भागकर ३सेना ४आधे कार्तिक से तहां भयंकर युद्ध हुआ ५ इसी कारण से ६ भाग्य के वश ७ हे राजा रामसिंह बुन्दी के आधीनवाला राज्य दरिद्री होगया ॥ ३६ ॥ ८ भागे कितने ही कायर लघुपन में ९ नगण के समान होकर (नगण में सर्व लघु होते हैं तैसे होकर) १० सगण के समान घाव लेकर (सगण में अंतगुरु होता है तैसे प्रारंभ में छोटे और अंत में बढनेवाले घावों से) ११ भय से भगण के समान हुए (भगण में आदिगुरु होता है) सो प्रारंभ में तो बडे वीर दीखे परन्तु अंत में लघु के समान कायर होकर भागगये ॥ ३७ ॥

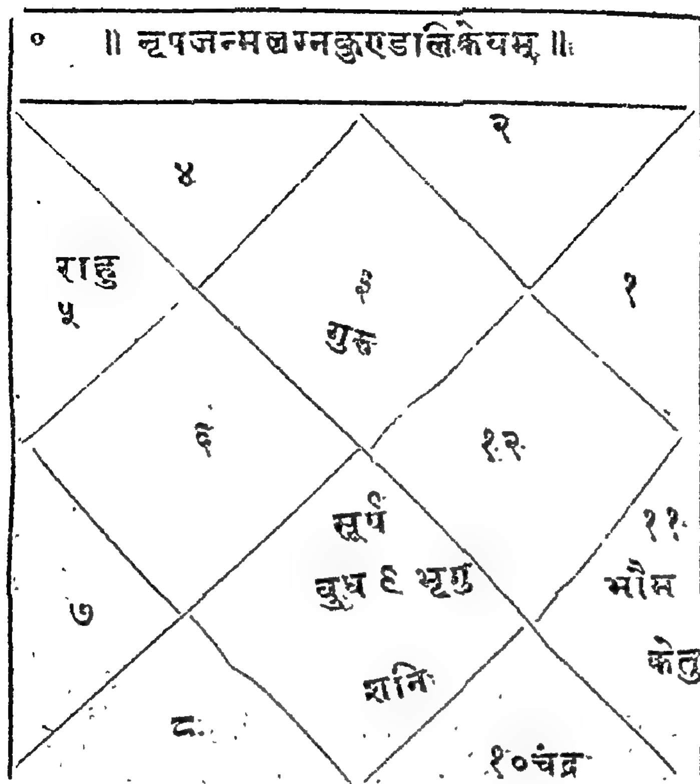
कृष्णागढ१ आदि केक संबंधिन ताही काल,
जोध कछु भेजे भीर बुंदी यह बिघ्न जानि ॥
आहव रह्यो जो कछु ऊनचउ४ मास अंत,
खरचि खजानौं परे होत न रजत खानि ॥
भूखन१ अमत्र[1]२ आदि बेतनमैं जात भूरि,
पूर बसु[2] कष्ट पर्‌यो देत न रुकत पानि ॥
कष्ट ऐसो जदपि सह्यो पै बलवंत२००।कँहँ,
तदपि निकासिदीनौं बुंदीभूप बल तानि ॥ ३८ ॥
तासदै निकास्यो बलवंत२००। नैनवातैं तासौं,
अहन[3] कितेन आदि मेचक२ तपस्य[4]१२ मास ॥
द्रंग बुंदी चोथी४ गोरि रानीकै द्वितीय२ दिन,
तीजो सु तनूज बलदेवसिंह२०१।३ नाम तास ॥
जेठे द्वैरहि कुमर बचे न इम ताके जन्म,
बुड्ढि धन दुर्गत[5] दसाहुमैं जस बिकास ॥
कित्ति प्रसराइ आप जिततित नाम कीनौं,
धामकीनौं धवल खजानौं खोलि खिल[6] खास ॥ ३९ ॥
कुमर तृतीय३ एह जनम्यो तदनुँ[7] कढ्यो,
अलपहि दिनन अंत भीत होइ भ्रात यहँ ॥
बुंदीको निसान फहरानौं नैन[9]नैर बलि,
बिजय पताकाके बिसेस बिधि लै निबह ॥
जोर अंगरेज७नको फैल्यो प्रतिघस्र[10] जहाँ,
द्रोही दल२ दक्खिनके होत मग्न लोभ द्रह ॥
केतु[11] कंपनीको अपनैंढिग बढत आयो,

---

१ पात्र २ धन का पूर्ण कष्ट ॥ ३८ ॥ ३ कितनेक दिन पहिले ४ फाल्गुन वदि ५ दरिद्र दशा में ही ६ बाकी का खजाना खोलकर ॥ ३९ ॥ ७ जिसपीछे ८ बलवन्तसिंह ९ फिर नैणवा नगर में १० प्रतिदिन ११ कंपनी का झंडा

एक१ऐनं पथिक प्रमाद हीन रत्ति१ अह ॥ ४० ॥
आत बलवंत२००१ नैनपुरतैं निकसि भीत,
मालिक अधीन भयो जोरि हाथ नम्र मन ॥
तबहि दयालु विष्णुसिंह२००१२ नरनाह ताहि,
सासि न मिल्यो पै ग्रामच्यारि४ दये नीति सन ॥
दूजे२ अब्द तासौं सबदेसके सुदिष्ट दिन,
अंतिम८ प्रियाके गर्भ प्राची१ गर्भ ज्यों तपन ॥
भूप भोज१९१।२रतन१९२।३सता१९४।१के पुराय संभव भो,
भूमि तबहीतैं भासी सोभामय संहनन ॥ ४१ ॥
सो भुजंग अंग रु मतंग ससि १८६८ संबतके,
विसद१ सहस्य१० मास उत्तमके बुध४ बार ॥
तीज३ तिथि घटिका छबीस२६ पल आकृति२२ त्यौं,
एकबिंसी२१ तारारद३२ छप्पन५६ क्रम उदार ॥
योगध्रुव१२ तेरह१३ औ अठतीस३८ तैतिल त्यौं,
उत्कृति२६ द्विनेत्र२२ इष्ट पंच द्वै२५ छपंच ५६ पार ॥
लवचउ४ जात धनु९ रविके मिथुन लग्न,
ताही काल रामं२०१४ प्रभु रावरो भो अवतार॥ ४२ ॥

१एक मार्गके चलनेवाले प्रमाद रहित २रात दिन॥४०॥ ३तरवार सहित नहीं मिला ४ श्रेष्ठ भाग्य के दिन से राजा विष्णुसिंह की अंतिम रानी के गर्भ से राजा भोज, रत्नसिंह और शत्रुशाल के पुराय से पूर्व दिशा में ६ सूर्य उदय होवै तैसे ५ बालक (रामसिंह) का ७ जन्म हुआ तभी से भूमि शोभा के ८ शरीर वाली दीखने लगी ॥४१॥ ९ पौष सुदि तीज बुधवार छबीस घड़ी बाईस पल, और इक्कीसवां (उत्तराषाढा) नक्षत्र बत्तीस घड़ी छप्पन पल, ध्रुव नाम योग तेरह घड़ी अड़तीस पल, तैतिल कर्ण छब्बीस घड़ी बाईस पल, इष्ट घटी पचीस और छप्पन, धन के सूर्य के चार अंश जाकर मिथुन लग्न के समय में १० हे प्रभु रामसिंह आप का जन्म हुआ ॥ ४२ ॥



भास्यो तनुभावमैं वृहस्पति५ मिथुन३ भोगी,
तीजे३ भौन सिंह५ को बिधुंतुद८ प्रविष्ट तह ॥
रवि१ कवि६ मंद७ बुध४ सप्तममैं धन्वी९ रहे,
अष्टम८ मैं इंदु२ मकर१० स्थित प्रकासि मह ॥
आर३ अरु आहिक९ ए कुंभ११कैं नवम९ औन,
ऐसो ग्रह जोग ग्रात उक्त१० मास उक्त३ अह ॥
रानी अष्टमी८सौं आप जनम अधिप राम२०१४,
सबके सुदिष्ट१ इष्ट२ बिद्या३ नीति४ धर्म५ सह ॥ ४३ ॥
स्वामी बिष्णुसिंह२००१२ महिपालके सदन प्रभु,
बालके प्रसवैं जन जालैं के मिले मुदित ॥

लग्न में मिथुन का बृहस्पति, तीसरे भवन में सिंह का राहु, सातवें भवन में धन राशि में सूर्य शुक्र शनि और बुध, आठवें भवनमें मकर का चन्द्रमा स्थित होकर उत्सव प्रकाश करता है और मंगल और केतु नवम स्थानमें कुंभ राशि के हैं ॥ ४३ ॥ १घर में २ जन्म ३ समूह

आयो समै थानाँ कलिकालके उठावनको,[1]
रोध रिपु ढालके ह्वै सालके रह्यो रुदितं[2] ॥
गालके बजात चंद्र[3]भालके निहाल गति,
मालके मिलाप तंगहालके तज्यो तुदित[4] ॥
बुंदीपुर सूचे काल थालके बजत बाल,
बालके बिकासी अंक मालके भये उदित ॥ ४४ ॥
सारघ[5]१ सुवर्ण२ मुखं[6] दै मुख१ कही सरनि,
साधि जातकर्म्म२ बंस बिप्रन जिमाइ सब ॥
रत्नाकर रीझके[8] दये तिन्ह बिबिध दान,
कबिहु निहाल कीनैं[9]५ अंहति[10] उफान अब ॥
भैंमतैं असेस गायकनके निलैप[11] भरे६,
पुरमैं बधाई बटी चहुघाँ चहे पैरब[12]७ ॥
भावी सुखमूल होत सौंनं[13] अनुकूल भये,
बातकैं[14] बधूल तूल पातक पहार तब ॥ ४५ ॥
धर्म धुर धोरी बेद रथके धुरंधर[15]जे,
आदि मनु१ आदि गये कृत[16]१मैं बहत बाम ॥
त्रेता२मैं निबाह्यो राम२आदिक नृपन तैसैं,
द्वापर३मैं कंकादिन[17]३ कीनो भर जो ललाम ॥

---

१ कलियुग का थाणा उठाने का समय. शत्रुओं की ध्वजा को रोकनेवाला तथा शत्रुओं को रोकने के लिये ढाल और शाल होकर उनको २ रुलानेवाला ३ गाल बजाने से शिव निहाल करदेवै तैसे, धन के मिलने से दरिद्रीपन ४ दुःख से भागा ॥ ४४ ॥ ५ शहद और सुवर्ण ६ मुख में देकर ७ कहेहुए मुख्य मार्ग को साधकर जातकर्म किया ८ रीझ के समुद्र ने ९ दान के उफान से १० सुवर्ण से ११ कलाँवतों के घर भर दिये १२ उस चाहेहुए समय पर १३ शकुन १४ पापों के पर्वत वघूले के पवन की रूई के समान हुए ॥ ४५ ॥ १५ वेद रूपी रथ के धुर को खैंचनेवाले १६ सत्ययुग में १७ युधिष्टिर आदि ने सुंदर भार लिया सो

आज कालि⁴मैं तो हरि⁴।१ विक्रम⁴।२ प्रमुख अहो,
धारि धारि जो धुर गये ताजि उचित धाम ॥
सोहि धुर जानि करतारनैं बहुरि सूनौं,
रूप रावरेतैं अवतार लीनौं प्रभु राम२०।१४ ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डवती ³अय उदित हुव, इम प्रभु जन्म ⁴अनेह ॥
⁵भर्मादिक बितरन भये, गेहगेह मह गेह ॥ ४७ ॥
सक नव खट बसु चंद्र१८६९सम, मन जिन अमल उमाहि॥
अँगरेजन बानिज्य इत, सब मेटयो ⁶नय साहि ॥ ४८ ॥
जिहिं सक१८६९ सप्तम७ जेनरल, आयो अप्पन देस॥
अटक्यो प्रभुपनँ मन्नि इहिँ, अब बानिज्य असेस ॥ ४९ ॥
⁸चविहैं पुनि प्रभुके चरित, जेनरलहु सब जोरि ॥
नेपालन मंडयो अमल, बढि इत तबहि बहोरि ॥ ५० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौविष्णुसिंह चरित्रे योधपुरेशमानसिंहविपत्समयसेवारतसेवकोचितजीविकाप्रदान १ इन्दोरेशहुलकरजसवन्तरावबलवत्त्वदर्शनतद्देहान्तसमयसूचन कामुकमल्लाररावतत्पट्टासादन२ स्वपितृव्यजबलवन्तसिंहशत्रुभाव-

१ भर्तृहरि २ आदि ॥ ४६ ॥ ३ आनेवाले समय के शुभ कर्म फल ४ आप के जन्म समय घर घर में और इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के घर में ५ सुवर्ण आदि का दान हुआ ॥ ४७ ॥ ६ नीति ग्रहण करके अंगरेजों ने सोदागर पन छोडा ॥ ४८ ॥ ७ इस देश का स्वामीपन मानकर वाणिज्य छोडा ॥ ४९ ॥ ८ रामसिंह चरित्र में सब जनरलों को जोड़ कर कहेंगे ॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, जोधपुर के राजा मानसिंह का आपत्काल में अपनी सेवा करनेवाले सेवकों को जीविका देकर बढाना १ इन्दोर के हुलकर जशवंतराव का बलवान पना बताकर उस के देहान्त की सूचना करना और उसके पाट पर भोगों में आसक्त मलारराव का बैठना २ बुन्दी के राजा के काका के बेटे भाई

नयनपुराक्रमणासोढानेकापद्विष्णुसिंहतन्निष्कासन ३ बुन्दीरावराट्
रामसिंहप्रादुर्भवनरपकतवाणिग्भावेष्टइंडियाकम्पनीभारतवर्षनृपत्वसू
चनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥ आदितः ॥ ३६१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक नभ हय बसु ससि १८७० समय, इत नेपालिन आइ॥
नगरकोट लग अमल निज, किन्नो बल अधिकाइ ॥१॥
तनया दै रनजीत तब, सिख करि स्वीय सहाय ॥
नगरकोट तब तास नृप, रक्खयो सह बल१राय ॥२॥
प्रतिबल इम नेपालके, बढत उहाँ लग जानि ॥
जयकारि सप्तम७ जेनरल, प्रद्रुत किय असि पानि ॥ ३ ॥
तिनके रक्खयो पुब्ब१तट, काली सरिता केर ॥
पच्छिम३।५ तट लग कंपनी, जित्ते सब करि जेर ॥ ४ ॥
संसार१दिकचंद सो, नगरकोट नरनाह ॥
जो इम सिख रनजीतको, स्वसुर बन्यो अ-सिपाह ॥ ५ ॥
इत लखनेऊ याहि १८७० सक, अलीसहादत अंत ॥
तस लघु सुत बैठो तखत, पहुँचि थान परजंत ॥ ६ ॥
आगामीर स नाम इक, हो तस हुक्काभृत्य ॥
करि दृढ मन ताके कहैं, किय दोउ२ न यह कृत्य ॥ ७ ॥

बलवन्तसिंह का अपने स्वामी का हरामी होकर नैणवापुर लेना और अनेक आपत्तियें उठाकर विष्णुसिंह का उसको निकालना ३ बुन्दी के रावराजा राम सिंह का जन्म और ईष्टइंडिया कम्पनी का व्यापारीपन छोड़कर हिन्दुस्थान के पति होने की सूचना का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥११॥ और आदि से तीनसौ इकसठ ३६१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ रणजीतसिंह को अपनी पुत्री देकर ॥ २ ॥ २ हाथ में खड्ग लेकर भगाये॥३॥३ पूर्व का किनारा ४ काली नदी का ॥ ४ ॥ ५ संसारचन्द्र ॥ ५ ॥ ६ सहादत अली मरा॥ ६ ॥ ७ ॥

अंगरेज इक्खे उहाँ, राजद्वार सब रुद्ध[1] ॥
चढिग जए[2] तउ क़ोट चढि, पहुँचे अवधि प्रबुद्ध ॥ ८ ॥
तरजि साह बहि तेग गहि, आगा मंत्र अधीन ॥
हैदर अंत अधीस हुव, दिपत गाजियुद्दीन ॥९॥
उक्त १८७० सकहि प्रभु सुनहु इत, जोधनैर१ जयनैर२ ॥
परनि उभै२ नृप परसपर, बनैं सुहृद[3] तजि वैर ॥ १० ॥
ए निज निज सीमा अवधि, द्वै२ संक्रमि[4] कुल दीप ॥
रूपनगर१ मान१ सु रह्यो, मरवा२ जगत२ महीप ॥ ११ ॥
सुरहिकुमरि१ तँहँ निज सुता, व्याहि मानं बसुधेस ॥
अप्प स्वसुर व्है आदर्‍यो, जामाता[6] जगतेस ॥ १२ ॥
निज भगिनी जगतेस नृप, चंद्रकुमरि२ हित चाहि ॥
मरवाँ बुल्लि सु मानकौं, बिहित काल दिय व्याहि ॥ १३ ॥
पति रट्ठोरन मान पहु, भयो स्वसुर१ अरु भाम२ ॥
जामाता१ सालक२ जगत, कूरम हुव हित काम ॥ १४ ॥
अहं[10] अष्टमि८ मह्व६ असित२, व्याह्यो मान बहोरि ॥
नवमी९ दिन कछवाह नृप, जगतसिंह पट्ट[11] जोरि ॥ १५ ॥
मान सिविर कूरम गयो, थित एकासन थान ॥
तँहँ बैठार्‍यो तुल्य गिनि, मीरखान गहि मौन[12] ॥ १६ ॥
तदनंतर[13] आतहि तहाँ, कृष्णागढ पै[14] कल्यान ॥
बैठार्‍यो जगतेसगहि, एकासन अति मान ॥ १७ ॥
इक्क१ तखत बैठे चउ४ हि, ए तुव२ सम्मुह अत्थ ॥

---

१ रोककर २ जीते ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३ मित्र बने ॥ १० ॥ ४ गये ॥ ११ ॥ ५ राजा मानसिंह ने ६ जमाई जगतसिंह का आदर किया ॥ १२ ॥ ७ मानसिंह को मरवा नगर में बुलाकर ॥ १३ ॥ ८ बहिनोई ९ जगतसिंह ॥ १४ ॥ १० दिन ११ यज्ञ जोड़कर ॥ १५ ॥ १२ मानसिंह ने मीरखां को बराबर जानकर एक गद्दी पर बिठाया ॥१६॥१३जिसपीछे१४कृष्णगढ के पति कल्याणसिंह को॥१७॥

न रुच्यो पै कूरम नृपहि, जवन तुल्यपन जथ्थ[1] ॥ १८ ॥
पत्तो कूरम सिविर पुनि, मीरखान जुत मान ॥
तखत न रक्ख्यो कुम्म तहँ, बैठ इतर[2] बिधान ॥ १९ ॥
सक उक्त१८७० हि बुन्दीसकै, पंचम५सुत गोपाल२०।१५॥
सप्तम७ रानीकै भयो, इस[3]७ सित१ तेरासि१३ काल ॥ २० ॥
जातक्रियादिक रीति जह, सब सक्किय नरनाह ॥
दान१ बधाई२ बहुल दिय, रोचक उच्छव राह ॥२१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत जैपुर ससि हय बसु इक १८७१ सक, छलि जगतेस भूप उद्धत छक ॥
रसकपूर गनिका अति मानी, रानिन मुख्य करी जो रानी॥२२॥
ताहि महारानी१ पद दीनौं, अधराजनि[4]२ उपटंकहु कीनौं ॥
किते कहत याही १८७१ सक अंतर, पच्छिम ३ बढे गोरखे[5] बल पर ॥ २३ ॥
तिनकौं जीति कंपनीके दल, काली नदी उतारे हत बल ॥
उक्त१८७१ सकहि लरि इत अंग्रेजन, लंकाद्वीप अमल किय अप्पन ॥ २४ ॥
बिक्रम राजसिंह अभिधाको[6], त्रासित करि काढ्यो नृप ताको॥
तह कोलंब राजधानी पुर, धरयो स्वीय हाकिम थंभन धुर २५
इत संबत दुव मुनि अष्टादस १८७२, बनि नृप मान जोधपुर परबस ॥
इंदराज जिम राज्य अवेस्यो, हित नय आय१उचित व्यय[8] हेरयो२६

---

१ मीरखां का बराबर पन जगतसिंह को नहीं रुचा ॥ १८ ॥ २ अन्य रीति से बैठे ॥ १९ ॥ ३ आश्विन सुदि ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ ४राणियों की मालिक का खिताब ५ हिमालय पर्वत की जाति विशेष ॥ २३ ॥ २४ ॥ ६नामवाला ७लंका (सीलोन) की राजधानी का नाम कोलंबो है॥२५॥८पराये वश में९खरच ॥२६॥

सो प्रबंध नृपकोँ न सुहायो, अक्खिय इम मरनहि मम[1] आयो॥
इंदराज सत्रुन तब अक्खिय, सिंही हम हनिहैं प्रभु सक्खिय२७
भूप कह्यो योँतो नहिं भावहिं, मीरखान प्रति सूचि मरावहिं॥
तब किय मीरखान प्रति सूचन, जंपिय[2] जवन कहहु नृप मो-
सन१ ॥ २८ ॥

कै लिखि२देहु हनैं तब तो हम, सुतो नृपहिं न रुची वंचक सम॥
देवनाथ गुरु करि संकोचित, सपथ करे पहिलैं तिम सोचित२९
छत्रसिंह निज कुमर भेजि तँहँ, मारन सचिव कहाई तापँहँ॥
मिच्छ सु सुनत लैन मासिक[3] मिस, दुर्गमाँहिं पठये भट नृप
दिस ॥ ३० ॥

रोकि द्वार कीनोँ तिन कलकल[4], छितिप सचिव पठयो तब तिँहि छल
रोक्यो[5] गुरु नृप तउ हठ रंगहि, सिंघी जात नाथ लिय संगहि३१
मोतीमहल माँहिं तिन मिच्छन, जातहि दुवरहि अमंतु[6] हनैं जन॥
वचे मिच्छ अंतर नृप मँत बल,[7] चिर[8] करि जियत गये अपनैं दल३२
धर्म सपथ इम लोपि धराधव,[9] भाखि अलीक[10] बिगारयो निज भैंव[11]
छन्न रह्यो न मान कृत[12] यह छल, चल्यो प्रकट जिततित ठहैं चंचल३३
दै बिस्वास सपथ मारे दुव२, हाहाकार जोधपुर इम हुव ॥
ओरमग्ग भास्यो न नृपहिं अब, तकि कपट उनमत्त बन्योँ तब३४
इक्क कोन रहिबो निज आदरि, कुहक[13] बेस तैसोहि लयो करि॥

१राजा मानसिंह दानी बहुत था सो उनका हाथ रुकने से कहा कि मेरा मरन आया ॥२७॥ २मीरखां ने कहा कि यातो राजा हम से रोबरू कहै या लिख दे तब मारैं ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३ तनखाह लेने के मिष से राजा की ओर वीर भेजे ॥ ३० ॥ ४ कोलाहल किया ५ देवनाथ को जाने से रोका ॥ ३१ ॥ ६विना अपराध मारे ७ राजा के मत के बल से ८ विलंब करके अपनी सेना में गये ॥ ३२ ॥ ९ भूपति १० झूठ बोलकर ११ अपना जन्म विगाड़ा १२ मानसिंह का कियाहुआ यह छल छिपा नहीं रहा ॥३३॥३४॥ १३ उस छली ने

जानि यहहि पंचन निहचै जिय,कुमर छत्रसिंह सु तब नृप किय३५
किय कतिकन पुहवीस परिच्छा, दीसी तदपि गहिलपन दिच्छा॥
सपंहु तँहँ छोरे कति सूचत, गहि लिय तेहु डरयो नहिँ छलगत३६
अधिक बिपन्न रह्यो नृप असैं, परिजन सुख कोउ न तँहँ पैसं ॥
जो प्रभुकी सस्सू तस रानी, सेवत रही सोहि भटियानी ॥३७॥
पै तानैहु न आसय पायो, हढ छल असो बेस दुरायो ॥
सुभट प्रताप बूड़सू सासक, यह हो जदपि अधीस उपासक॥३८॥
जानैं तदपि तथा जड़ जानिय, खेटक१ खग्ग२ उठाइ रु आनिय।
दुवरहि करे पुनि कुमर निवेदन, भट सब मिले रह्यो इम भेदन
कतिकन परनारिन रस कहि कहि, चपलकुमर मोरयो उत चहि चहि ॥
उपदंसादि रोग प्रकटे इम, कामुक चिर बैभव बिलसैं किम॥४०॥
भनैं १८७२ सकहि प्रभुके कवि भूबर, पायो भव असितारदि१उज्ज८ पर ॥
कवि जनकहु श्रद्धोचित महँ किय, दान द्विजादि बुधन समुचित दिय ॥ ४१ ॥
इत बुंदिय सक गुन हय बसु इक १८७३, असित२ सँहस्य१०मास तिथि आदिक१ ॥
सरसरंग नामक खवासि सुव, बिनयसिंह१बुंदीस कुमर हुव॥४२॥

॥३५॥१राजा की परीच्छा की २ बावलेपन की क्रिया ॥ ३६ ॥ ३ विपद्ग्रस्त ४ पास के अपने मनुष्य ५ रावराजा रामसिंह की सासू और मानसिंह की राणी ॥३७॥३८॥६ढाल तरवार ॥३९॥७ गरमी (आतशक) आदि ८ कामी होवै सो बहुत समय तक वैभव कैसे भोगै ॥ ४० ॥ ९ हे भूपति कहे हुए सम्वत् (अठारह सौ बहत्तर) में आप के कवि (सूर्यमल्ल, इस ग्रन्थकर्ता) ने ११ कार्तिक वदि एकम को १० जन्म पाया १२ सूर्यमल्ल के पिता (चंडीदान) ने श्रद्धा के उचित १३ उत्सव किया १४और ब्राह्मण आदि पण्डितों को दान दिया॥४१॥ १५पौष वदि ॥ ४२ ॥

इहिं १८७३ सक इत पुरायापुर अंतर, बाजेराय पेसवा *भूवर ॥
अंग्रेजनको अमल उठावन, इच्छा करि भू सब अपनावन ॥४३॥
तत्थ रजीडंटी डेरन तक, अनल¹ लगायो प्रेरि अचानक ॥
समर रच्यो कंपनी सिपाहन, इत उत बहुत रुरे उच्छाहन॥४४॥
दौलतरावहु बैर दिखावन, पठयो दल नेपाल मेलपन ॥
पत्र किमहुं ते इन पकराये, अंग्रेजन गोचैर तब आये ॥ ४५ ॥
आश्रम हय बसु ससि १८७४ सक अंतर, सब दिस जित्ति कंप-
नी संगर ॥
लिय अजमेर गंजि मरहट्ठन, पापउ तजि लाहोर जईपन ॥ ४६ ॥
खानकपूर१ रु मीरखान२ हुवर, हुलकर भट तासौं बदलत हुव॥
तिनमैं मीरखान इहिं अंतर, सजि तोपन जैपुर किय संगर ॥४७॥
ताको छिन्नि तोपखाना तब, अंग्रेजन तस मद मेटयो अब ॥
पुनि इतउत लुंटैक जे पाये, ते सब ओरहि वृत्ति लगाये ॥ ४८ ॥
संध्याकेहु मेटि मद१ साहस२, निखिल करे रजवारे निज बस ॥
लार्ड मारकिस हेस्टिंगज१।७जहँ, क्रम सप्तम७जेनरल हुतो तँहँ ४९
तिहिं पठयो रजवारन अंतर, टाड१ नाम पहिलो१ अजंट बर ॥
कोटा तिहिं झल्लँ सु सासित किय, जाजपुरहु रानहिं दिवाइ दिय५०
पहिलै सक अट्ठावन५८ अंतर, भीम रान रनतैं भजाइ अरं ॥
भिल्लहड़ा लग जित्तिलई भुव, तबतैं जाजपुर सु इतको हुव ॥५१॥
सोलह१६अन्द अमल कोटा किय, अब जालम रानहिं पच्छोदिय
कोटाके धन करि पहिले क्रम, इंटुंदा बंधिय गढ उत्तम ॥ ५२ ॥
तँहँ भट विष्णुसिंह सगताउत, जालम रक्ख्यो निचितैं चक्र जुत ॥

* भूपति ॥ ४३ ॥ १ अग्नि लगाई॥ ४४ ॥ २ अंगरेजों ने ३देखने में आये ॥४५॥
॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४ लुटेरे ॥ ४८ ॥ ५ सब ॥ ४९ ॥ ६ एजेंट ७ झाला जालमसिंह
को ८ दंड दिया ॥ ५० ॥ ९ शीघ्र ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० पूर्ण सेना सहित

मारे जिहिँ सहँसन रन मैनँ, पारे कुंठ रहे नहिँ पैनँ ॥ ५३ ॥
इम तागढ जुत जाजपुर सु अब, रान तंत्र हुव सहित साज सब ॥
उक्त १८७४ सकहि चितपावन द्विज इन, बाजेराय पेसवा भय जित ॥ ५४ ॥

पुराया तजि अंग्रेजन पय परि, धौं अब ब्रह्मावर्त्त रहन धरि ॥
पाइ द्रम्म वसुलक्ख८००००० अब्दप्रति,रह्यो बिठूर फेलिँ भोजन रति
जिहिँ चाकर हुलकर१ संध्या२ सम, पिंसन लहि सु रह्यो इम अपँस ॥

हारि महीदपुरहि हुलकर बल,इनके बस हुव ढुंगा कि बिना अल५६
महिप नागपुरको तजि निज महि, गो भजि सरन जोधपुर भय गहि
मान नृपहिँ कछु प्रवल न मान्यौं, पै अंग्रेजन नँय पहिचान्यौं ॥ ५७ ॥
वाको मुलक बहुत लहि अप्पन, थिर कछुमैं तस कुल किप थप्पन ॥

सक उक्त १८७४हि नवमी९ पोस१० असित२, ईन जैपुर जगतेस मरयो हत ॥ ५८ ॥
गनिका उक्त आदि तरुनी तह, दुव चालीस४२ जरी नृप बसु सह ॥
उक्त १८७४ सकहि लाहोर ईस इन, सिख रनजीत अरिन करि सासिंत ॥५९॥

नाम मुजफ्फरखान महाभति, प्रधन हनि सु मुलतान दुर्गपति ॥
ताके पुत्रहु मारि घनैँ तब, अमल कस्यो मुलतान दुर्ग अब॥६०॥
ताकौं मिल्यो प्रचुर धन तामैं, सिख इम वढ्यो अधिक सँखमामैं

१ वे मैन मोटे होगये तीक्ष्ण नहीं रहे ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ २ ब्रह्मावर्तदेश में रहने की बुद्धि करके ३ उच्छिष्ट भोजन में प्रीति करके विठूर में रहा ॥ ५५ ॥ ४ समान ५ उत्कर्षता रहित ६ मानों विना डंक का विच्छू ॥ ५६ ॥ ७ नीति ॥ ५७ ॥ ८ जयपुर का पति जगतसिंह ॥ ५८ ॥ ९ रसकपूर नामक वेश्या आदि १० दंडित ॥ ५९ ॥ ११ युद्ध में ॥ ६० ॥ १२ बहुत १३ परमशोभा में

सो कसमीर हारि इक्क१ संगर, दूजो२ रन तरिहै पुनि दुस्तर॥६१॥
जगतसिंह जैपुर नृपकै सुत, उज्झत बपु न हुतो बिधि[2] अद्भुत ॥
मोहन नाम सचिव तब नाजर, नरउर द्रंग पठाइ चतुर चैर[3] ॥६२॥
नरउर नृपको भ्रात मनोरथ, तस सुत मान[4] बुलाइ नीति पथ ॥
जैपुर पट्ट धरयो सु मान जब, रानिनकै जान्यौं न गर्भ तब ॥६३॥
पहिलैं जालम बिबिध जत्न किय, बुंदीसहिं निज सुता ब्याहि[5] दिय
सो जब मरी तबहिसौं जो सठ, हुव बैरी बुंदीको अतिहठ ॥ ६४ ॥
जिहिं बस रह्यो जाजपुर जोलौं, तिहिं लुट्टी बुंदी भुव तोलौं ॥
द्रंग सथूर१ बरोदा२ आदिक, बुंदीपुर ढिगलौं प्रतिबादिक[5] ॥६५॥
कटक भेजि सब लट्टिलयो[6] कर, पुरबिच अमल रह्यो नृपको[7] पर
अप्प सुदित तदपि न भय आन्यौं, जालमसदा जथा नृत[8] जान्यौं६६
उक्त १८७४ सकहि झल्ला वह जालम, लखि सु अंगरेजनको आलम ॥
बुंदी सन पहिलैं बंचक[9] बढि, अंगरेज साधे छल नय पढि ॥६७॥
अधिक सुल्क दै बहुत उपायन[10], पिहितैं[11] लुभाइ मिलाइ धूर्त पन ॥
जन अजान मानैं छल जैसैं, अँगरेजन अपनैं करि ऐसैं ॥६८ ॥
बुंदीके भेट[12] बंधु सदासौं, इंद्रगढा१दि८ फोर उंपदासौं[13] ॥
कोटा बस ए कुहक[14] लिखाये, सब अजंट१मुख[15] तिमाहि सिखाये६९
इंद्रगढ१ रु खातोली२ ए दुव२, लुब्धि[16] इंदसल्लोत भिन्न हुव ॥
बलवानि१।३ द्रंग बैरिसल्लोत सु, आंतरदा१।४मुहुकमसिंहोत सु७०

॥ ६१ ॥ १ शरीर छोडत समय २ यह अद्भुत रीति है कि ऐसे कामी के भी पुत्र नहीं था ३ हलकारे ॥ ६२ ॥ ४ मानसिंह नामक ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ५ विरोधी ने ॥ ६५ ॥ ६ हांसिल लाट लिया ७ विष्णुसिंह का अमल केवल बुन्दी नगर में ही रहा ८ जैसा झूठा था तैसा ही जाना ॥ ६६ ॥ ९ ठग ॥६७॥ १०भेट ११ छाने लोभ देकर ॥ ६८ ॥ १२ उमराव १३ भेट देने से १४ उस ठग जालमसिंह ने १५ आदि ॥ ६९ ॥ १६ लोभ करके ॥ ७० ॥

लोतसु होतसु अन्त्यानुप्रासः१॥

करबाट१५ सु पिप्पलदा१६।२१७ जुग जुत, ए तीन३हि फोरे हर-दाउत ॥

बंधु सु भट जालम प्रतिबादिक, दै इच्छित फोरे इत्यादिक ॥७१॥

बुंदीतैं न मिल्यो महत्व जिम, सबको बहुत बढायो तिम तिम ॥

गहि कुलोभ ऐसो बंधव गन, परबस भये निबाहि गनिकापन॥७२॥

आवत१ जात२ बैठत३ रु उठ्ठत४, जनम५मरन६ सेवन सुख सं-गत ॥

समुखजान७ मुख्य रीति बढावन, कोटा रहत नित्य धन पावन७३

अधिक पटाहु सबन हित अप्पन३, सब पाहिलैं सब देयँ समप्पन॥

इत्यादिक अधिकार अप्पि इम, जालम स्ववस करे सब जिम तिम ॥ ७४ ॥

कोटा बस तिनसोहु कहाइ रु, जिम अंग्रेज प्रबोधे जाइ रु ॥

जालमँ छल पीछैं यह जान्यौं, पछितैबोहि अंजंट प्रमान्यौं ॥७५॥

पै इक्क वचन ऐन इनके पँर, यातैं पलटिसकें नहिं अवसर ॥

इनको हितहु झल्ल सछ्यो आति, हुलकर रोकि बचाई संहति७६

बहु उपकार ठानि यह याविधि, निहचै इनहि झल्ल भास्यो निधि॥

इम तदीय छलमैं ए आये, पुनि पुनि जाति जदपि पछिताये॥७७॥

उत रहि तदपि पिक्खि नय असहिं, बलि दिय बंटि भूहु तस वं-सहिं ॥

इम नँत सिर जालम उपकारनैं, अंग्रेजहु प्रबिसे रजवारन॥७८॥

१विरोधी जालमसिंह ने ॥७१॥२जैसा उन उमरावों को बुन्दी से बडप्पन नहीं मिला तैसा ॥७२॥३आदि ॥ ७३ ॥४देने योग्य ॥७४॥ ५ अंगरेजों को समझाये ६ जालमसिंह का छल ॥ ७५ ॥ ७ अंगरेजों के एक वचन निबाहने का श्रेष्ठ मार्ग है इससे ८ जसवन्तराव हुलकर को रोककर अंगरेजों के समूह को बचाया था ॥७६॥९उसके छल में॥७७॥ १०मस्तक झुकाकर ११उपकारों से ॥७८॥

उक्त १८७४ सकहि बुंदी तव आये, बुंदी पहु[1] सब मान बढाये ॥
तुलाराम मंत्री द्विज नागर, प्रभु सम्मति लहिकैं नय तत्पर ॥७९॥
उपालंभ[2] दीनौं अंग्रेजन, जो सुनि रहे ठगे जिम जे जन ॥
सूचित १८७४ सक पंचमी५ माघ१०सित, अंग्रेजन सु करार[3] लि-
ख्यो इत ॥ ८० ॥
भाख्यो हम ठिग झल्ल भ्रमाये, पुनि अब हेतु[4] सत्य सब पाये ॥
बुंदी नृप हमरे हित वंछक, तिहिँ झल्ल सु गोपित[5] किय हम तक ८१
मोदित साहब टाड महामन, सह[6] लिपि काल कियउ बुंदीसन ॥
नत करजोरि मन्त्रि महमानी, बहुदिन रहि नृप कित्ति बखानी ८२
सर हय अठ इक्क १८७५ पुनि संवत, इत रनजीतसिंह सिख
उद्धत ॥
पुर लाहोर अधिप साहस परि, करि रन जय कसमीर लयो
लरि ॥ ८३ ॥
बहुरि जुज्झि पेसोर कियउ बस, तहँ कति मरे१ भजे२ रच्छक तस
इह सेना काबल पुनि आई, लग्गि प्रसभं[7] करि घोर लराई ८४
तब पेसोर छुराइलयो तिन, खिज्जि पुनि सु लैहैं यह लहि खिन
उक्त १८७५ सकहि जैपुर पत्तन इत, संगत राध[8] मास पंच्छ
ति[9] सित१ ॥ ८५ ॥
नृप रानी भटियानी औरस, तनय भयो जयसिंह नाम तस ॥
मास च्यारि४ अरु दिवस सप्त७ मित, रह्यो मान[10] गद्दीपर रोचित ८६
लखि यह साहब अलटरलोनी, हेरन तब होनी१ अनहोनी२॥
दिल्ली सन जैपुर आयो द्रुत, सत्य किमहु करि कथित भयो सुत ८७

१ बुन्दी के पति ने ॥ ७९ ॥ २ अंगरेजों को उरहना (ओलंभा) दिया ३ बुन्दी से कोलनामा हुआ ॥ ८० ॥ ४ कारण ५ छिपाये ॥ ८१ ॥ ६ लिखावट सहित ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ७ हठ ॥ ८४ ॥ ८ वैशाख मास के साथ ९ शुक्लपक्ष ॥ ८५ ॥ १० मानसिंह ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

रूप्पय पंच ५ नित्य जीवनं करि, मान सु दूर कर्यो मद संहारि ॥
द्रंग फेरि जयसिंह दुहाई, सुनृप कर्यो यह सबन सुहाई ॥ ८८ ॥
लखि सामोद नाह नाथाउत, राउल बैरीसाल बुद्धि जुत ॥
साहब ताहि मुसाहब कीनौं, निज संगहि नाजर वह लीनौं॥८९॥
गो पच्छो इम अकटरलोनी, छोनिपै सिसु हुव जैपुर छोनी ॥
तर्क तुरग बसु ससि १८७६ सक अंतर, इत कोटा उम्मेद धरा
बर ॥ ९० ॥
बिधि अनुगत अब देह बिहायो, दुसह सोक तस झल्ल दिखायो ॥
जीवन लह्यो भूप इहिं जोलौं, तखत रह्यो प्रतिमा जिम तोलौं९१
खाद्यहु झल्ल दयो सुहि खायो, पहिर्यो बसन इँहिं जु पहिरायो ॥
रक्खन सस्त्र दयो सुहि रक्ख्यो, उत्तर कछु न कबहु तिंहिं अक्ख्यो
असो नृप उम्मेद मर्यो अब, तीन३ तनूज हुते ताकै तब ॥
जे किसोर १ बलि बिष्णुसिंह२ जिम, तीजो ३ पृथ्वीसिंह ३ सूनु
तिम ॥ ९३ ॥
जुब्बन बय ए त्रय३ हि हुते जँहँ, तखत तदीय किसोर१ धर्यो तँहँ
पहिलैं झल्ल जाजपुर दै करि, सुत दुव२सहित रान भीमहिं बरि९४
ब्याही त्रि कैंनी बुल्लि प्रबल पन, तँहँ मुख्य१जु बयमैं सु चिरंतन
नृप उम्मेद सुता रानहि दिय,क्रम पुनि ब्याह रान कुमरन किय९५
अधिप मध्य २ सुत बिष्णु २ सुता इम, रान कुमर अमरेस बरी
तिम ॥
नाम जवान रानको लघुसुत, परिनायो सु इंद्रगढ जसजुत ॥९६॥

१मानसिंह के जीवन पर्यन्त ॥८८॥८९॥२जयपुर की भूमि पर,वह बालक भूपति हुआ३राजा उम्मेदसिंह ने॥९०॥४विधि के साथ शरीर छोडा५झाला जालमसिंह ने ६ मूर्ति के समान ॥ ९१ ॥ ७ खाना (भोजन) ॥ ९२ ॥ ८ पुत्र ॥ ९३ ॥९ उस उम्मेदसिंह के तखत पर ॥९४॥१०तीन कन्या बिवाहीं११पुरानी (बुड्ढी,॥९५॥९६॥

इंदगढेस नाम सिवदान सु, तत्थ एह व्याहयो भगिनी तसु ॥
बलकारि बुल्लि रान कुमरन सह, जालम झल्ल बिवाहे इम जह ॥
बपु पीछैं कोटेस बिहायो, पुत्र किसोर१ पट्ट तस पायो ॥
महाराव होतहि यह मानी, करतब्यो जग कुजस कहानी ॥९८
जिहिँ कछु साध्य असाध्य न जान्यो, पटु जिस रहन स्वतंत्र प्रमान्
जवनी इक जालम खवासि किय, जठर तास सुत इक्क१ जन
लिय ॥ ९९ ॥
हुव गोवर्द्धनदास नाम तस, सो बदलाइ किसोर१ करयो बस ॥
मुख्य सचिव तिहिँ करन मनायो, इनमैं सुरि गोवर्द्धन घायो ॥१००
नृप ३ भ्रात रु यह झल्ल १ चउ ४ हि तब, स्वबस करन चाहन
लग्गे सब ॥
पै जालम बल जाल अपूरब, कछु नय बिनु इन्ह तंत्र होइ कब१०१
सैफअली अभिधान अजीठन, पलटायो सु अप्पि बलपति पन ॥
जालम इनहिँ पुत्र माधव जुत, इठमत कै पकरहिँ बलकारि द्रुत१०२
पिहित मंत्र किन्नौं यह पंचन५, मिच्छ१ झल्ल२सोदर त्रय३।५इकमन
सोदर मध्यम बिष्णुसिंह सुनि, प्रकट रह्यो इनके सम्मत पुनि१०३
चित्त सुरि सुं जालमकौं चाहत, बैठन पट्ट स्वबुद्धि निबाहत ॥
सैफअली अक्खिय अब सासन, देहु लखहु बुद्धि१रु बल दासन१०४
नृप किसोर१ अक्खिय अबहीं नन, पुनि बिचारि लहहिँ स्वतंत्रपन॥
संवतमुनिहयवसुइंदु१८७७सम,करिबिलंब पंहिलैंनरच्यौक्रम॥१०५॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ उस यवनी के उदर से ॥ ९९ ॥ २ गोवर्धनदास ३ महाराव किशोरसिंह ने उसको जालमसिंह से बदला कर अपने वश में किया ॥ १०० ॥ १०१ ॥ ४ नाम ५ सेनापतिपन से ॥ १०२ ॥ ६ पांचों जनों ने यह गुप्त सलाह की ७ एक तो सैफअली यवन, दूसरा झाला जालमसिंह का पास वानियां पुत्र, और महाराव सहित तीनों भाई, ये पांचों एक मन होकर॥१०३॥ ८ वह विष्णुसिंह ९ आज्ञा ॥१०४॥१०पहिले कहा हुआ क्रम नहीं रचा ॥१०५॥

पुनि कहि सैफअली नृप प्रेरयो, अति भर पै सु फ्रिलपोश[1]न अवेरयो ।
जालम हो पुरढिग बाहिर जब, तिम माधव कोटा *अंतर तब१०६
द्वार जरन सासन नृप देतहि, †लघु कहि निजन हाजरी लेतहि ॥
‡अरर जरत कछु बिधि मिस आग्रह, भ्रात मध्य भजिगो जालम जह
जुज्झन द्वार हवेलीके जुरि, माधव सज्ज रूप्यो पुरमैं मुरि ॥
गोपुर जुरन सुद्दि सुनि संकित, आयो सजव जरठ[2] जालम इत१०८
मिलि मग विष्णुसिंह मुजराकिय, लखि तिँहिँ बस जालम स्वसंग लिय ॥
सूरजपोरि आइ इम अक्खिय, खुल्लहु द्वार रोध किहिँ रक्खिय१०९
इन अक्खिय प्रभुको आदेस[3] न, अहो अरर खुल्लन खिँन एस न ॥
तबहि कुठारन अरर तुराये, इम झल्ल रु तस भट पुर आये११०
इक्खयो स्वसुत हवेली आवत, माधव सकुसल जंग मचावत ॥
तब जालम तजि सोक ससाहस, गहि कर मुच्छ घोर पकरी गंस ॥ १११ ॥
बडी तोप दुवर तँहँ बुंदीकी, लैगो भीम हुती तबहीकी ॥
प्रथित धूरिधानी१ बहु पूजी, दुस्सह करकबिज्जुली२ दूजी ॥११२॥
इनके गोलंदाज बुल्लि अर, कह्यो प्रहार करहु महलन पर ॥
इत सुनतहि जालम पुर आयो, पगि भय सैफअली सु पलायो११३
तस संगहि नंट्ठे संगी तस, बल रंचक रहिगो नृपके बस ॥

* जालमसिंह का पुत्र माधवसिंह कोटा के भीतर था ॥ १०६ ॥ † शीघ्र अपने लोगों की हाजरी लेता हुआ ‡ कपाट जुड़ते समय महाराव किशोरसिंह का मध्यम भ्राता (विष्णुसिंह) जहां जालमसिंह था तहां भाग गया ॥ १०७ ॥ १ शहर के द्वार जुड़ने की खबर सुनकर २ बुड्ढा जालमसिंह शीघ्र आया ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ३ स्वामी का हुक्म नहीं है ४ किवाड़ खुलने का यह समय नहीं है ॥ ११० ॥ ५ अपने पुत्र माधवसिंह को ६ गांठ (आंट) ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ७ शीघ्र बुलाकर ८ भागा ॥ ११३ ॥ ९ उसके साथवाले

जब किसोर १ नृप अल्प भटन जुत, दुरयो जाइ महलन अंदर हुत ॥ ११४ ॥
पृथ्वीसिंह अनुज नृप पासहि, सस्त्रनको न दुहुरन अभ्यासहि ॥
गन प्रासाद गिरत लखि गोलन, झुल्ला जिम हल्लत गढ झोलन ॥ ११५ ॥
तजि अवरोध१ सस्त्र२ धन३ तत्थहि, सके न लै गज४ हय५ कछु सत्थहि ॥
धन कछु इक१ सिविकाँ अंतर धरि, तरि चम्मलि लै इक्क मिली तँरि ॥ ११६ ॥
पयचर६ निकासि भज्यो सानुज पहु, बलि मगमैं जिहिं छोरिगयेबहु।
इम व्याकुल नृप बुंदी आवत, पै प्रवहन कछु मग्ग न पावत॥११७॥
रामलाल लछमीपुर सासक, सुन्यो हड्ड६६ बुंदीस उपासक ॥
सोहु हुतो न तदपि तस तिय सुनि, पठई तिहिं निज उभयर हयी पुनि ॥ ११८ ॥
दोउनरपैं चढि तब सोदर दुवर, व्है स्वस्थ रु इम अग्ग बढत हुव ॥
सोदर पृथ्वीसिंह३ केर सुत, जो कोटा सासक अब छल जुत११९
सिसु बय एहु हुतो तिन्ह संगहि, अनुचर खंध बढ्यो जिन्ह अंगहि
इम दुवरकोस अवधि पर आवत, समुह जाइ बुंदीस सुहावत१२०
अति आदर भ्रातहि ग्रह आनिय, मंडिय विविध उचित महमानिय॥
अक्खिय तिम तुमरो घर एसहु,देखि समय जित्तहिं निज देसहु१२१
इहाँ रहहु तोलौं निज आलय, जानहु धर्म जहाँ सु तहाँ जय ॥

उसके साथ ही भागे १ शीघ्र ॥ ११४ ॥ २ महलों का समूह ॥ ११५ ॥ ३ जनाना ४ पालखी में ५ जो मिली उसी नाव को लेकर ॥ ११६ ॥ ६ पैदल ७ छोटे भाई सहित राजा भगा ८ डोली आदि मार्ग में सवारी नहीं मिली ॥११७॥ ९ दो घोड़ियां भेजी ॥११८॥११९॥ छोटे भाई पृथ्वीसिंह का पुत्र जो इस समय कोटा का पति है वह बालक१० चाकरके कंधे पर चढा ॥१२०॥१२१॥

अप्पन लै निज मतअंग्रेजन, दारहिं१ झल्ल त्वचा जिम तेजन२ १२२
कै मारहिं२ कै करहिं सु कीलित३, कतिक बत्त खल झल्लकु-
सीलित४ ॥
कहुँ गोपाल धनीको गोधन, अपनावत न सुने रचि रोधन॥१२३॥
धरा स्वकर कर्षुक नहिं धारत, स्वामी जव तब ताहि सम्हारत ॥
कोटा इम अपनौं जैहैं कित, सहबल१कोस२संग हम समुचित१२४
पै कछु देस १ काल २ क्रम पिक्खहु, साहहु धीरज त्वरा न सि-
क्खहु ॥
विष्णुसिंह२००१२ भूपति इम बहु विधि, समुझायो कोटेस स्वस-
न्निधि ॥१२५॥
महाराव तदपि न यह मन्निय, क्रम संत्वर दिल्ली प्रयान किय ॥
इक अंग्रेज मिल्यो तह इनमैं, जालम पच्छ ओर सब जिनमैं ॥१२६॥
ए जिम निकसि भजे पलटत श्रेय, गोवर्द्धन झल्लहु तिम भजिगय॥
इत जालम अंग्रेज उपासक, सबल रह्यो कोटाधर सासक १२७
॥ दोहा ॥
इत नव९ हायन वय उदित, राजकुमर मनि राम२०१४ ॥
सिंह सिसु कि हात्थिन हनन, करै उचित वय काम॥१२८॥
गुटिका चाप१हि पुब्ब गहि, अंकुरि तस अभ्यास ॥

---

१ जैसे वांस की छाल (चमड़ी) निकाल देवै तैसे झाला को निकाल देवेंगे ॥ १२१ ॥ २ उस (जालमसिंह) को कैद करके ३ खोटे स्वभाव वाला ४ कहीं पर स्वामी का गोधन ५ रोककर ग्वाल को अपनाते नहीं सुना ॥१२३॥ और करसा ६ उसकी भूमि के हासिल को धारण नहीं कर सकता, जब तब उस भूमि का स्वामी (मालिक) ही उसे सम्भालता है, ७ सेना और खजाने सहित वह हमारे ही उचित है ॥ १२४ ॥ ८ शीघ्रता मत करो ९ अपने पास ॥ १२५ ॥ १० शीघ्र ११ सब अंगरेज जालमसिंह के पक्ष में थे जिन में से एक महाराव किशोरसिंह में मिला ॥ १२६ ॥ १२ शुभ कर्म के पलटते ही ॥ १२७ ॥ १३ नौ वर्ष की अवस्था में १४ रामसिंह ॥ १२८ ॥ १५ उस अभ्यास में उदय

प्रात नित्य करि तदनु पढु, बिरचहिं बेध्य बिनास ॥१२८

॥ घनाक्षरी ॥

नित्य करि लै निज बयस्यन कुमर राम२०।३।४।१,
सानुज१ सुरीति खुरलीमैं खेल ख्यात करि ॥
कोहल१ मतीर२ रु दसांगुल३ कपित्थ४ बिल्व५,
क्रमतैं कितेही स्थूल बेध्यनके पात करि ॥
मंडूरक१ मृत्तिका२ मिलाये गुरु गोल गाढे,
खातकरि जात ज्यौं बंदूकनसौं बात करि ॥
तारीदै तराके जंत्र स्वस्तिक१कौं फेरिदेत,
गेरिदेत गुंजरन गिलोलनकी घात करि ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

कंदुक अंभ उछारिकैं, मर्म गिलोलन मारि ॥
अनाधार रक्खत उहां१, इच्छित लेत उतारि२ ॥ १३१ ॥

॥ मनोहरम् ॥

छोरिकैं गिलोल१ तदनंतर सरासन२लौं,
मित्रन अखारो मंडि छोह छिति छेतीमैं ॥
आलीढ१ रु प्रत्यालीढ२ बैसाख३ रु मंडल४ त्यौं,

(खड़ा) होकर १ निसाने का ॥ १२९ ॥ २ अपनी समान अवस्थावालों को ३ छोटे भाई सहित शस्त्राभ्यास में. कोहला (कूष्मांड) मतीरा ४ खरबूजा ५ कैंत, बीला ६ लोहे के मल (कीटा) और मिट्टी के मिलाये हुए बडे और दृढ गोले खड्डु करजाते हैं ७ यन्त्र विशेष ॥ १३० ॥ ८ गेंद को आकाश में उड़ाकर ९ बिना आधार वहीं पर रखकर चाहैं तब उसको नीचे उतार लेते हैं ॥ १३१ ॥ १० धनुष लेकर मित्रों के साथ अखाड़ा रचकर उत्साह से भूमि ११ये सब पैंतरे हैं जिन में दाहिने पैरको आगे बढाकर बाम पैर को समेटने का नाम आलीढ है १२ आलीढ से उलटा करना प्रत्यालीढ है १३ एक वितस्त (बेंथ, बिलस्त) के अंतर से दोनों पैरों को रखकर बाण चलाने का नाम बैशाख है १४ गोलाकार फिर कर बाण चलाने का नाम मंडल है

साधि *समपाद५ थान रीति इत रहेतीमैं ॥
सब्दवेध आदिक समस्त बिधि साधनकैं,
पूरन प्रगल्भ प्रभा पारथकौं पैंतीमैं ॥
कातर कपोल कोपे फीलन१कौं फेरिदेत,
गेरिदेत गुंजरन कलंब कमनैती मैं ॥ १३२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत नृप विष्णुसिंह२००।२ बुंदीइन, दिष्टतंत्र सुचि४पुराग्राम१५रवि दिन ॥
कोप्रयो वपु तँहँ उचित रीति छत, बिदित आयु दिष्टानुसार बत१३३

॥ दोहा ॥

सक नव दुव वसु इक्क १८२९ सम, आसित२सहस्य१०अनेह॥
तिथि तेरसि१३ तँहँ अवतस्यो, उर्व्वे लहि पहु एह ॥१३४॥
व्योम त्रि बसु ससि१८३०सुंक्र३वदि२, तिथि एकादसि११तत्थ
राज्यासन पायो रुचिर, संभर सिसुंहि समत्थ ॥ १३५ ॥
वासरं[12] दुव२ बर्जित स्वबय, पावत मितिनव९ पच्छ ॥
बिष्णुसिंह२००।२पायो बिदित, आजित१६९।२पट्ट इम अच्छ
कुलभव अट्ठ८ बिवाह किय, इनमैं बय अनुसार ॥
पंच५ तनय इक्क१ पुत्रिका, पाये आधिप उदार ॥ १३७ ॥
तीन खवासिनमैं तनय, इक्क१ बिनैप[13] लहि आप ॥

---

*दोनों पैरों को बराबर रखकर बाण चलाने को समपाद कहते हैं, ये ही पांच पैंतरे धनुर्विद्या जाननेवालों के हैं १ पूर्ण बुद्धिमान् २ पैंतरों (पदन्यासों) में अर्जुन के समान कांतिवाला ३ कपोलों के कायर ऐसे कोपे हुए हाथियों को फेरदेता है और तीरों से ४ चिरमियों को गिरा देता है ॥१३२॥५बुंदी का पति ६भाग्य के आधीन ७ खेद है कि आयु भाग्य के अनुसार ही होती है॥ १३३ ॥ ८ पोष वदि ९ यह राजा जन्म लेकर उत्पन्न हुआ ॥ १३४ ॥ १० ज्येष्ठ मास ११ बालक पन में ही ॥ १३५ ॥ १२ दो दिन कम साढे चार मास की अवस्था में ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३ एक विना नीतिवाला हुआ.

बसु हय७८ सक इम छोरि बपु, पायो लोक दुराप ॥१३८॥
नाम नयनसोभा१ निपुन, मंजु पातुरिन माँहिं ॥
कथित काल नृप तनु तजत, इहाँ गर्भ तस आँहिं ॥१३९॥
पंच५मास पीछैं प्रसव, तनया प्रकटी तास ॥
रूपकुमरि जो रावरी, भगिनी प्रभु गुन भास ॥१४०॥
पोस१० असित२ तिथि प्रतिपदा१, कनी सु भावीकाल ॥
पैहै अब उद्भव प्रथित, प्रभु जँहँ अप्प नृपाल ॥१४१॥
ए क्रमकरि खट६ अरु उभय२, प्रजा अट्ठ८ नृप पाइ ॥
गदित काल परलोक गत, जग जस अतुल जगाइ॥१४२॥

॥ गीतिः ॥

छत्र महलसौं लगतो उत्तर४।७ दिस अत्तनाट१ अभिधानी ॥
वज्रांग इष्ट थिति चहि, तिनको प्रासाद निर्मयो नृपनें ॥१४३॥
याहीबिधि अभिरामकँ, पच्छिम३।५ दिस अर्द्ध½-कोस निज पुरतैं ॥
विष्णुबिलास१।२ स नामक, उपबन प्रेष्यप्र निर्मयो ऐसैं ॥१४४॥
प्रभु रावरी प्रसूं इम, पुरतैं दक्खिन२।३ समीप बहु व्ययसौं ॥
जग सुखदा निज घर जिम, चतु४रावर्त धर्मसालिका१ बिरची१४५
निज पति इष्ट प्रमानत, ता बिच वज्रांग२ मूर्ति पधराई ॥
इच्छित भोजन आनत, अन्न जन जाके सदाव्रत उमहे ॥१४६॥
सुंदर घट्ट१ बनायो सुंदरसोभा१ खवासि संभेरकी, ॥
हरिमंदिर१ जुत ठायो, प्रासादगन२ जह तौल तट पुरमें ॥१४७॥

---

१ दुर्लभ लोक पाया ॥१३८॥१३९॥१४०॥१४१॥२ कन्यान २ ऊपर कहेहुए समय में ॥१४२॥४नाम्नदाला ५ हनूमान् के इष्ट की स्थिति चाह कर ६ महल (मंदिर) बनाया ॥१४३॥ ७ सुन्दर ८ बाग ९ नवीन बनाया ॥१४४॥१० हे प्रभु रामसिंह आपकी माता ने ११ चौकोन (चौरस) ॥ १४५ ॥ १२ हनूमान की ॥ १४६ ॥ १३ घट्टघाट (विष्णुसिंह) की १४तलाव गाम में तथा तलाव के किनारे ॥ १४७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे नगरकोटावधिनपपालागमनांगरेजतत्पुनर्निःसारण १ अंगरेजलखनऊयोधनजयपुरयोधपुरसुहृद्भावसंबन्धकरण २ ईष्टइंडिया कम्पनीगोरखाविजयनलंकाद्वीपसमासादन ३ सचिवेन्द्रराजवधदोषाच्छादनमानसिंहोन्मादत्वप्रकटनयुवराजच्छत्रसिंहमरण ४ ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लजननसर्वतोविजय्यंगरेजाजमेराक्रमण ५ अंगरेजप्रथमाजण्टकर्नलटाडराजपुत्रस्थानागमनझल्लजालमसिंहदण्डनपूर्वराणां-भीमसिंहार्थजाजपुरादिप्रान्तप्रापण ६ अंगरेजगृहीतण्यपुरयापति बाजिरावपेसवाविठूरनिवसननागपुरेशयोधपुराधीशशरणागमनतद्वंश्यार्थैषज्जीविकाप्रदापन ७ निःसंतानज[illegible]शजगतसिंहमरणानरउरागतमानसिंहपट्टाक्रमणविरोधीभूतझल्लज[illegible]समसिंहबुन्दीदेशलुण्टनपूर्वकरग्रहण ८ छलकारितांगरेजसंधिपत्रझल्लजालमसिंहबुन्दीसा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र में, नेपालियों का नगरकोट तक चढ़ना और अंगरेजों का उनको पीछा हटाना १ अंगरेजों का लखनेऊ में युद्ध होना और जयपुर जोधपुर के राजाओं का मित्र होकर परस्पर सम्बन्ध करना २ ईष्ट इंडिया कम्पनी का गोरखों को जीतना और लंका नामक द्वीप को विजय करना ३ जोधपुर के राजा मानसिंह का अपने सचिव इन्द्रराज को मरवाकर उस दोष को छपाने के लिये फरेब करके बावलापन प्रसिद्ध करना और मानसिंह के पुत्र छत्रसिंह का राजा होकर मरना ४ इस ग्रन्थ के कर्ता सूर्यमल्ल का जन्म होना और अंगरेजों का सब ओर विजयी होकर अजमेर लेना ५ अंगरेजों के प्रथम एजंट करनल टाड का राजपूताने में आना और झाला जालमसिंह को दंड देकर जाजपुर आदि प्रान्त उदयपुर के महाराणा भीमसिंह को दिलाना ६ पूना के पति बाजेराव पेसवा का अंगरेजों से पिनसन लेकर विठूर में रहना और नागपुर के राजा का जोधपुर में शरण आकर उसके कुटुम्ब को कुछ जीविका मिलना ७ जयपुर के राजा जगतसिंह का बिना सन्तान मरने के कारण नरवर से आकर मानसिंह का पाट बैठना और जालमसिंह झाला का विरोधी होकर बुन्दी के देश को लूटकर हासिल लेना ८ जालमसिंह झाला का अंगरेजों से छल्का

मन्तेन्द्रगढखातोल्यादिकोटाराजपसंमेलन ९ पश्चाद्बुन्द्यंगरेजसंधिपत्रभवनरणजीतसिंहविजितपेशोरप्रान्तकाबुलसेनागमनतत्प्रत्यादान १० जयपुरेशजगत्सिंहराज्ञीभटियाणीजठरजयसिंहजननहेतुदत्तप्रत्यहपञ्चरुद्रमानसिंहनिष्कासनानन्तरजयपुरप्रान्तजयसिंहाज्ञाप्रवर्तन ११ कोटान्नृपोम्मेदसिंहमरणकिशोरसिंहतत्पट्टासादनकोटासचिवझल्लजालमसिंहविरोधहेतुकिशोरसिंहपलायन १२ बुन्दीपतिविष्णुसिंहपञ्चत्वगमनतदनेहरचितस्थाननिर्माणसूचनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥ आदितः ॥ ३६२ ॥

समाप्तमिदं विष्णुसिंहचरित्रम् ॥

साथ अहदनामा करवा कर बुन्दी के उमराव इन्द्रगढ, खातोली आदि को कोटा के राज्य में मिलाना ६ जिसपीछे अंगरेजों का बुन्दी के साथ अहदनामा होना और रणजीतसिंह के विजय किये हुए पेसोर को काबल की सेना का पीछा लेना १० जयपुर में राणी भटियाणी के उदर से राजा जगतसिंह के औरस पुत्र जयसिंह का जन्म होने के कारण मानसिंह को पांच रुपये रोज की पिनसन देकर निकाले पीछे जयपुर में जयसिंह की दुहाई फेरना ११ कोटा के राजा उम्मेदसिंह का देहान्त होकर किशोरसिंह का पाट बैठना और कोटा के सचिव झालाजालमसिंह से महाराव किशोरसिंह का विरोध बढकर कोटा से किशोरसिंह का भागना १२ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का देहान्त होना और उनके समय में बनेहुए मकानों की सूचना करने का बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ ॥१२॥ और आदि से तीन सौ बासठ ३६२ मयूख हुए ॥

इति विष्णुसिंहचरित्र समाप्त हुआ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथ रामसिंहचरित्रम् ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्री मम राज१ सरस्वती२, बखसहु बुद्धि सु वित्त ॥
कहियत राम चरित्र अब, जो इहिं ग्रन्थ निमित्त ॥ १ ॥
एकादश११ दिन करि अखिल, कैरटा१दिक विधि काज ॥
पुनि अवसर लहि राम२०१४ प्रभु, अप्प भये अधिराज॥२॥
द्विज पुर१के अरु देस२के, भोजे तद्दिन असेस ॥
दान विविध बहुतन दये, गोगन१ पुरट२ प्रदेस३ ॥ ३ ॥
सजातीय१ कविकुल२ सकल, जिम पुर३अखिल जिमाइ॥
लखित कित्ति सुख सुख लई, भूप सबन मनभाइ ॥४॥
नव९ अब्द रु खट६ मास मित, इहिं बय समय अधीन ॥
विधि अप्पहि दिन बारहम१२, कुल हड्ड६१न इन कीन ॥५॥
संबत गज हय अट्ठ ससि १८७८, स्रावन५ बारसि१२ स्याम
गुरु५ मृगासिर५ व्याघांत१३ गत, तैतिल४करन सु ताम॥६॥
समरकंद६ जहँ संहर्‍यो, नारायन१८७१ नरराज ॥
भूपति तहँ अभिसिक्त भो, कथित सद्धि विधि काज ॥ ७ ॥
आसापूरनि१ अंबिका, पीतांबर हरि पाय ॥

---

१ बुद्धि रूपी श्रेष्ठ धन २ जो इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) के बनने का कारण है वह रामसिंह चरित्र कहता हूं ॥ १ ॥ ३ एकादशाह आदि सब श्राद्धों के कार्य करके ४ हे राजा रामसिंह आप स्वामी हुए ॥ २ ॥ ५उस दिन सब ब्राह्मणों को भोजन कराया ६ सुवर्ण ७ भूमि ॥ ३ ॥ ८ अपनी जातिवाले (क्षत्रिय) और चारणों के सब कुल को ॥ ४ ॥ विधि पूर्वक आपको हाडाओं का ९ पति किया ॥ ५ ॥ १० व्याघात नामे योग जाकर ११ तहां तैतिल करण में ॥ ६ ॥ जहां राजा नारायणदास ने समरकंद को १२ मारा था तहां कहाहुआ विधि पूर्वक कार्य साधकर राजा का अभिषेक हुआ ॥ ७ ॥

पूजन करि प्रनम्यौं सु पहु, समुचित मन्त्रि सहाय ॥ ८ ॥
पुनि पधारि महलन प्रथित, रचि अर्चित श्रीरंग ॥
पट्ट१ पंच५सिख सीस धरि, बैठो पट्ट२ अभंग ॥ ९ ॥
गुरु१बुध२कवि३भट४सचिव५गन, अतुल सभा सब आइ
॥ १० ॥
॥
॥११॥
॥
॥ १२ ॥

पुनि अजंट आइउ इहाँ, साहब टाड१ स नाम ॥
सभा बहुरि दूजी२ सुपहु, रची उचित अभिराम ॥ १३ ॥
श्रावन५ बिसद१ चउत्थि४ सिर, पंचमि५ आगम पाइ ॥
सक्यो पुनि दसतूर सब, सूपित क्रम दरिसाइ ॥ १४ ॥
टाड१ अजंटहु गज१ तुरग२, भूखन३ सस्त्र४ दुकूल५ ॥
उपदा१ किय अधिराजकैं, मुदित नम्र हित मूल ॥ १५ ॥
उत्तासन१ सक्यो उचित, रीति सहित नति रक्खि ॥
कह्यो कहहु हमपर हुकम, सब अनुगत नप सक्खि ॥ १६ ॥
महिमानी आदरि बहुरि, करि प्रभु हुकम बिकंट ॥
तदनन्तर लै सिक्ख गो, साहब टाड अजंट ॥ १७ ॥
अवसर क्रम भावी इहाँ, व्याह१ प्रजा२दि बखान ॥

॥८॥ १ मस्तक पर पांच शिखा(कलंगी)का शिरपेच धारण करके "हम ऊपर लिखआये हैं कि पांच शिखा का शिरपेच बांधना राजापन का चिन्ह है" २ किसी से भंग नहीं होनेवाला महारावराजा रामसिंह पाट बैठा ॥९॥ ३ पण्डित ४ चारण ॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥ ५ वस्त्र ६ राजा को भेट किये ॥ १५ ॥ नीति पूर्वक नम्रता रखकर अजंट टाड साहब७वाम ओर बैठा ॥१६॥ ८स्वामी रामसिंह के हुक्म को निष्कंटक करके ॥ १७ ॥ समय के क्रम से भाइयों सहित राजा रामसिंह के९आगे होनेवाले व्याह और१०सन्तान आदि का वर्णन करते हैं सो

भ्रातन जुत प्रभुको भनत, समुझहु सभ्य[1] सुजान ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

भे उपयम[2] चउ४ अधिप प्रथम१ तिनमाँहिं जोधपुर ॥
मान[3] सुता रट्ठोरि परनि आनी रानी धुर ॥
नाम सुरूपकुमारि२०।१।१ प्रसव जाके[4] सु पुत्र मनि ॥
कुमर भीम२०२।१ प्रभुकेर जई जनम्यौं पाटव[5] खनि ॥
दूजे२ बिबाह पुर झुंझनाँ सेखावति व्याही सु बर ॥
अभिधा[6] गुलाबकुमारि२०।१।२ सु उचित स्यामसिंह तनया सुघर[7]॥१९॥

॥ दोहा ॥

गया पधारे अप्प जब, पुर नागोद पधारि ॥
तीजो३ उपयम किन्न तहँ, दारिद कविन बिदारि ॥ २० ॥
बिदित सुता बलभद्रकी, गुन गन अतुल गहीर[8] ॥
चन्द्रभानु कुमरि२०।१।३ सु चतुर, व्याही रानिय वीर ॥२१॥
प्रतिहारी कुलकारि प्रथित, जाके औरस जात ॥
रंगनाथ२०।२।२ सुत रावरे, दूजो२ जस अवदात ॥ २२ ॥
ए त्रय३ रानी अरु लहे, सूनु उभय२ कुल सुद्ध ॥
चउ४ खवासि तिनकी चतुर, संतति सुनहु प्रबुद्ध ॥ २३ ॥
पट्ट सुरूपलतिका१ प्रथम१, तामैं हुव सुत तीन३ ॥
अर्जुन१ अबिदित[9] नाम अरु, गोवर्द्धन३ गुन पीन ॥ २४ ॥
सदानंद२ दूजी२ सुघर, जाकै जुगर२ सुत ख्यात ॥
नारायन१।४ जेठो१ कुमर, जगन्नाथ१।५अनुजात[10]२ ॥ २५ ॥

---

१ श्रेष्ठ बुद्धिवाले सभासद जानो ॥ १८ ॥ २ राजा के चार विवाह हुए ३ जोधपुर के महाराजा मानसिंह की पुत्री ४ रामसिंह के ५ चतुरता की खान ६ नाम ७ सुघड़ (चतुर) ॥ १९ ॥ २० ॥ ८ गंभीर ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ९ जिसका नाम मालूम नहीं ॥ २४ ॥ १० छोटा भाई ॥ २५ ॥

सरससरंग३ तीजी३ प्रसव, स्वीय नियति अनुसारि ॥
कन्या इक१ सुपठित२ भई, नाम सुभद्रकुमारि१ ॥ २६ ॥
आनंदा१ दिकबेलि३४ इम, चोथी४ चतुर खवासि ॥
कन्या इक१ बल्लभकुमरि१।२, भई तास गुन भासि ॥२७
सुत इम पंच५ रु दुव२ सुता, प्रजा खवासिन सत्त७ ॥
प्रथम१ तृतीय३ रु पंचम५ सु, त्रय३ सुत सायुस तत्त ॥२८॥
बाल वयहि बल्लभकुमरि२ धीदा ध्यसु विधि धारि ॥
विद्यमान तनया बडी१, सूरि सुभद्रकुमारि१ ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रभुअनुजनु गोपाल२०१५ रहउरन गागरनी ॥
चन्द्रकुमारि२०११ रघुनाथ सुता अप्रज१ इक१ परनी ॥
अरु खवासि भव अनुज त्रिनय१ व्याहयो उनियारा ॥
जालमजा आनंदकुमरि१ सुहु प्रसव असारा ॥
अरु रूपकुमारि१ त्रिनया११नुजा बीकानेर नरेस सुत ॥
जीवन१२हिं रक्खि आश्रित इहाँ परिनाई प्रभु प्रीति जुत ३०
काका सुन धोकल२०११२कुमार फतमल्ल२०११३उक्त दुव ॥
बीकापुर नृप अनुज अजब तनया व्याहतहुव ॥
चन्द्रकुमारि२०११२ आनंदकुमरि२०११३क्रम सन अभिधा१४रि,
जैपुर विरचि विवाह बिंद सोदर आपेवारि ॥
रहि अचिरँ१५ परे पट्टनिसमरँ१६ जे जुगर जनक१पितृ१७ रगुन॥

१ अपने भाग्य के अनुसार २ श्रेष्ठ पढीहुई ॥ २६ ॥ ३ आनंदबेल ॥ २७ ॥ ४ जहां तीन पुत्र आयुष्यवाले हुए ॥ २८ ॥ ५ पुत्री ६ मर गई ७ पहिला ॥ २९ ॥ ८ रामसिंह का छोटा भाई ९ बिना सन्तानवाली १० बालक जनने में असार ११ भिनयसिंह की छोटी बहिन १२ जीवनसिंह की चुन्दी में आश्रित रखकर ॥ ३० ॥ १३ बीकानेर के राजा के छोटे भाई १४ नाम १५ थोड़े समय रहकर १६ पाटण के युद्ध में मारे गए १७ पिता और काका सहित.

अल्पायु बीज इनकेहु इम सके जनमि न सुता१ न सुत२।३१।
भीमसिंह२०१३ इन्ह अनुज अप्प ब्याह्यो रचि उच्छव ॥
नगर ऊमरी नाम भनित सीसोदै बंस भव ॥
भीम सुता महतापकुमरि२०१।१ ख्यांपित अभिधाकरि ॥
पुत्री दुव२ इक१ पुत्र प्रकटहुव तास गर्भ परि ॥
तहँ अजबकुमरि१ जेठी१ सुता कृष्णाकुमरि२ दूजी२कथित॥
सुत बिस्वनाथ२०२।१इनसौं अनुज बिनु निकेत जो अब ब्यथित३२

॥ दोहा ॥

भीम२०१।३ तनूज खवासि भव, बलदेव१ सु मृत बाल ॥
इक१ खवासि भव अंगजा, नवनंदा१ इहिँ काल ॥ ३३ ॥
सेर२००तनय जयसिंह२०१।१सो, प्रभु ब्याह्यो हित खुल्लि ॥
तनया देवीसिंहकी, डोला बुंदिय बुल्लि ॥ ३४ ॥
कुल भटियानी नाम करि, कहियत बदनकुमारि२०१।१ ॥
सिसु इक१ मृत ह्वै तस सुता१, न सके नामहु पारि ॥३५॥
राजाउतिब्याह्यो बिजय२०१।२,राजकुमरि२०१।१अभिधान॥
ग्राम खजूरी धाम भव, उदय सुता मतिमान ॥ ३६ ॥
इक्क सुता याकै भई न पर्‌यो तासहु नाम ॥
अल्प आयु लहि पंच५ अह, जो परलोक जगाम ॥ ३७ ॥

॥ चूडाल दोहा ॥

संभू२०१।१ देवीसिंह२००।२सुत, दुर्गापुर पति ब्याह तीन३किय ॥
इक१नारव मुहकम सुता, चद्रकुमरि२०१।१ पुर लाव ब्याहिलिय३८
तखतकुमरि२०१।२ दूजी२ बधू, चालुक्क रतनसुता सु लई बरि ॥

---

१ अल्प आयु होने के कारण ॥ ३१ ॥ २ नाम से प्रसिद्ध ३ बिना घर (ठिकाना) ४ अब पीड़ित है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ पांच दिन की अल्प आयु लेकर ६ परलोक गई ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

कूरम सुरतानोत कुल, लघु आनंदकुमारि२०१३ प्रीति धरि।३९।
संतति संभूसिंह२०१२के, पंच५ तहाँ सुत च्यारि४ सुता इक१ ॥
इक१ प्रथमा १ इक१ अंतिमा३, तनया १५ जुत दूजीर हु जन्य त्रिक३ ॥ ४० ॥
इन पंच५नमैं इक१ अनुज, वच्यो नाम ओंकार२०२१४आयुबल॥
इतर गये तजि तजि असुन२, तनया तनय बिहाइ छोनि तल ॥४१॥
उपयम त्रय३संभू२०१२अनुज, क्रम सूचित सिवदानसिंह२०१२किय
जेठी१ राजाउत्ति जहँ, नाम सु चंदकुमारि२०१२ बरी प्रिय ॥४२॥
बरी जवाहिरकुमारि२०१२ बलि, ताही कुल दूजी२हु दिष्ट बस ॥
जेठी१ सुव सुव इक्क१जानि, तात सुनहु सिवराज२०१३नाम तस४३
छत्रसिंह तनुजा चतुर, रठउरि तीजी३हु बरी वर ॥
ग्राम कचोले करि गमन, व्रजकुमरी सिरदारसिंह१९१४हर ॥४४॥
ब्याह उभय२सामंत२००१२सुत, छरन्यों इत बलदेव२०१२कापरनि॥
सुत चतुष्क४ अरु दुव२सुता, जो सप्रज हुव तोकै इते६ जनि॥४५॥
जेठी पतनी जादवी, जो आनंदकुमारि२०२१ नाम करि ॥
सर मथुरापुर जाइ सो, लई मनोहरसिंह सुता बरि॥४६॥
रठउरि दूजी२ बधू, जो महतापकुमारि२०२१२ बरी वर ॥
कँमन सुता भूपालकी, इन्द्र फतैगढ जाइ दीप१९८१६ हर ॥४७॥
त्रय३जेठी सुत सुतनमैं, हलधर२०२१तिम हरदेव२०२१२नामहुव
अनुज सु बैरीसाल२०२१३ अरु, दूजी२कै सुत इक्क१ सुता दुव४८
सुत दुर्जनसल्ल२०२१४ रु सुता, राजकुमारि१ खुसहालकुमारि२जँहँ
दंग सल्हानाँ दिय बडी१, कुल कबंध तखतेस१ बिंद कहँ ॥४९
कृष्ण२०१२ बिरुद २०१३ बलदेव २०१२ के, अनुजन इक१

१ शीघ्र ॥३९॥४०॥ २ अन्य प्राण छोड़ छोड़ कर गये ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥
३इतने बालक जनकर सन्तानवाली हुई ॥४५॥४६॥४सुन्दर ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

इक१ ब्याह करे इम ॥
प्रथित[1] जाइ सिवराजपुर, तकि कबंध चंदेल बंस तिम ॥५०॥
क्रमकरि नाम वँधूनके[2], उमरावकुमारि२०१।१ कंचनकुमारि२०१।१
दुवर॥
इनमैं इक१कौ अंगजा[3], स्यामकुमारि१ बिरुदेस गेह हुव ॥५१॥
इम अनुजन जुत रावरे, व्याह१ प्रजा२ क्रम संग बखानित ॥
सब संतति उपयम[4] सुनहु, अवसर अब प्रभुराम२०१।४प्रमानित५२

॥ षट्पात् ॥

जगतसिंह नृप जबहि प्रचुर[5] रानिन परन्यौं पहु ॥
भट्टी जैपुर सुभट[6] बनैं दै तब कन्या बहु ॥
जहँ राउल कुल१ देवराज कुल२ जात जथाक्रम ॥
बुंदी पठयो बिजय सुता डोला इक१ सत्तम[7] ॥
अरु मेघसिंह पठयो अपर२ दुवर डोला आये बिदित ॥
पट्टप कुमार भीम२०२।१सु सगुन[8] परिनाये प्रभु हेरि हित५३
कन्या जीवनकुमारि२०२।१ बिजय तनया पहिलैं१ बरि॥
व्याही बलि[9] बर वरनि[10] मेघतनया ऋद्धिकुमारि२०२।२ ॥
कथित गुलाबकुमारि२०२।३ कमन[11] तीजी३ कुमरानिय ॥
बंसवढ़ाला व्याहि उचित अति जस घर आनिय ॥
रघुनाथसिंह२०२।२ तदनुज[12] कुमर मित[13] जीवितपाउससमय
नागोद दुंग मातुल निलयँ[14], बपु उज्झिय[15] दसअब्द वय५४

१ प्रसिद्ध ॥ ५० ॥ २ स्त्रियों के ३ पुत्री ॥ ५१ ॥ ४ विवाह ॥ ५२ ॥ जयपुर का राजा जगतसिंह ५ बहुत राणियों को परना तब बहुत कन्या देकर भाटी ६ जयपुर के उमराव बनगये थे ७ सुन्दर ८ विशेष गुणवान ॥ ५३ ॥ ९ फिर १० सुन्दर दुलहिन ११ सुन्दर १२ उसका छोटा भाई १३ थोड़े समय जीवित रह कर १४ मामा के घर १५ शरीर छोड़ा ॥ ५४॥

जाठेरि धारि सुरूपलता१ जिहिं जामि सकारकी जद्या वजी जि
अर्जुन१ जेठो१ कुमार वहै परन्यो पहिलैं१ मह झालरापट्टनि ।
सो मदनाधिप झल्ल सुता महिला वडी१ खूबकुमारि१ वधू मनि
आयो निजोचित व्याहियहाँ हितसौं कविलोकन दारिदकौं हनि

॥ घनाक्षरी ॥

पीछैं जाइ तीन३हि कुमार व्याहे जोधपुर,
अर्जुन१ द्वितीय२ वरी सूरजकुमारि२ इत ॥
त्यौं कल्यानकुमरि१।२ बिवाह्यो जगन्नाथ३।५ तहाँ
एतो द्वै२हि भूप तखतेसकी सुता उचित ॥
सेवकीपुरेस नृप मानको खवासि सुत,
नाम सिवनाथ ताकी नंदिनी हुलास हित ॥
नामकरि राज सु कुमार१ कुमरानी निज,
मध्यम२ कुमार व्याह्यो गोवर्द्धन३।२ साम्य मित
जोधपुर भूप मानसिंहकै खवासि जात,
पुत्र लालसिंह१ नाम ढंग हरसोर पति ॥
सूनु ताको सुद्धकुलजा भव प्रतापसिंह१,
विहित बरातसौं बुलाइ बुंदी मंजु मति ॥
व्याकरन आदि वहु विद्यामैं प्रवीन बुद्धि,
सो सुभद्रकुमारि१ खवासि सुता रम्य रति ॥
दुल्लही वनाइ लग्नकाल तिहिं दुल्लहको,

स्वरूपलता ने जिसको १ उदर में धारण करके २ रामसिंह के साकार की पहिन "पासवान" (अविवाहिता) स्त्री के भाई का नाम था। सरूपलता नामक पासवान जिसको जन कर जाचा (प्रसूता) बजी अर्जुनसिंह ३ राजा मदनसिंह झाला की पुत्री ४ स्त्री ५ अपने अर्थात् पासवान की पुत्री विवाह कर आया ॥ ५५ ॥ ६ बराबर वाला ॥१९॥ ७ पासवान स्त्री से उत्पन्न दशुद्ध कुल में उत्पन्न ९ सुन्दर

आप प्रभु कूकुंद बिबाही दै सुदायँ अति ॥ ५७ ॥
राम२०१४ प्रभु रावरे पितृ०पसूनु गोठपुर,
भोमासिंह२०१३ स्वामीके निवारँ प्रतिकूल भनि ॥
राव फतमल्ल१ उनियाराके अधीस अर्थ,
जेठी१ सुता अजबकुमारि१ ब्याही मोद जानि ॥
न गई नरूकनकै कन्या इतकी कबहु,
बहुत कहाई आप तदपि स्वतन्त्र बानि ॥
ब्याह यह कीनौँ दिष्ट तास फल दीनौँ बेग,
आलय बिहीन फिरैं खीन अहि ज्यौँ अमनि ॥५८॥

॥ चूडाल दोहा ॥

ब्याह इक१बलदेव२०१२सुत, हलधर२०२१कापरनीस बिवाहिय
मेरातिया रँइयां अधिप, देवसुत ———कुमारि २०२१ तिय५९
तस ओरस प्रकटे तनय, राजसिंह२०३१ अरु बीरसिंह२०३२हुव॥
जो हलधर२०२१इनको जनक, होत तरुनवय आसु अनसु हुव६०
उक्त उभय२ हलधर २०२१ अनुज, गलथूनी कछवाह कनी दुव॥
——कुमारि२०२१ ——कुमारि २०२१, सह क्रम ब्याहि गृहस्थ
हुव ६१ हुव ॥ ६१ ॥
राजसिंह२०३१ पुर कापरनि, सासक सिसु उपयाम इक१किय ॥
कछवाहनके रामपुर, ——कुमारि २०३१ स नाम सवय तिय६२
इम सबही भावी३ इहाँ, सब बंधुन प्रभुके बिवाह१ सुत२ ॥
सब संतानन ब्याह बलि, जंपिय अवसर रीति जथा जुत ॥ ६३ ॥

---

१ प्रशंसा युक्त कन्यादान करनेवाले आपने २ श्रेष्ठ दहेज देकर परणाई ॥ ५७ ॥ ३ काका के पुत्र ४ भाग्य ने उसका फल दिया ५ बिना घर ६ बिना मणिवाला चीण सर्प फिरै तैसे ॥ ५८ ॥ ७रंइयां नगर का पति ॥ ५९ ॥ ८ ताव (तप) से प्राण रहित हुआ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ९ कापरन्य के पति ने बालपन में एक ब्याह किया ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

कारन पाइ प्रसंग कहुँ, भूत१ कथा क्रम भूप॥
बर्तमान२ अब्ब बर्णियत, अप्प चरित अनुरूप॥ ६४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

धाइपनाँ प्रभु अप्प धवाये, इम कौमार१ लंघि इत आये ॥
अवसर पर क्रीड़न क्रम आयो, बलि पौगंड३२ अनेह बितायो॥६५॥
दसम१०अब्द अंतर दिनदुल्लह४, स्वामी हुव धरि धर्म१नीति २सह॥
तबहि कालक्रीड़ा सब त्यागी, राजन रीति गही अनुरागी ॥ ६६॥
सद्धि सुकवि१ बुधर भटइन समागम, आदरि हित समुझै सब आगमँ ॥
श्रीगुरु आसानंद१ समज्या, बरनैं आदि नृपन चरिज्या ॥६७॥
पुनि कवि जनकँ१० चंडरखिनपावल, सन्निधि११ रहि पद्धति१२ समुझावत॥
सह दुर्जनसल्ला१दि१३ वयस्यन, महिप बिधेयँ१४ सुनैं सु धरैं मन॥६८॥

॥ दोहा ॥

बिधिसह लिन्नौं ताहि बय, बेद बिहित१५ उपबीत ॥
सावित्री१६ जप निज समय, सद्धैं पट्टुन प्रतीत ॥ ६९ ॥

---

१ आपके सदृश चरित्र का अब वर्णन कियाजाता है ॥ ६४ ॥ २ हे प्रभु (रामसिंह) आपको पना नामक धायने स्तन पान कराया (धुंवाया) ३पौगंडता का समय विताया "पांच वर्ष की अवस्था से लेकर दस वर्ष की अवस्था का नाम पौगंड है" ॥ ६५ ॥ ४ प्रतिदिन दुलह के समान रहनेवाला ॥ ६६ ॥ श्रेष्ठ कवि ५ पण्डित और ६ उमरावों का समागम साधकर. आदर के साथ हित करके सब ७ शास्त्र समझे ८ सभा में ९ प्राचीन राजाओं के आचरणों का वर्णन करता है ॥ ६७ ॥ समय पाने पर कवि सूर्यमल्ल के १० पिता चण्डी दान ११ समीप रहकर १२ राजाओं का मार्ग समझाता है सो दुर्जनशाल आदि १३ समान अवस्थावालों के साथ राजा(रामसिंह)१४उचित समझता है उसी को धारण करता है अथवा राजा के उचित समझता है उसीको धारण करता है॥६८॥१५वेद के कथनानुसार जनेऊ ली१६गायत्री के जप॥६९॥

॥ षट्पात् ॥

पाइ दसम१० समं पट्ट सुपहु पट्टु राम२०१४ सम्हारिय ॥
श्रुति[2] निषेध१ बिधि२ समुझ्झि हेय[3]१ आदेय[4]२ निहारिय ॥
व्याकृति[5]१ शिक्षा२ वृत्त३ कल्प४ ज्योतिष५ निरुक्त६क्रम ॥
बदन[6]१ नक्क[7]२ पय३ बाहु४ नयन५ श्रुति६ निज छह६ अंग छम ॥
श्रुति चउ४ऋग[9]ादि४बिद्यादसक१०मीमांसा११पुनि तर्क[10]१२मत ॥
स्मृति१३अरु पुरान१४चउदह१४सुपहु श्रवन किन्न बिद्या तैतहु[11]७०

॥ दोहा ॥

रचहिं नित्य संसद[12] रसिक, बुधजन दुल्लभहु बुल्लि ॥
नाँहिं लखैं व्यय[13] ओर नृप, तत्व लखन दृढ तुल्लि ॥७१॥
पहु तह्व[14] पुच्छिय पट्टन, अज्जावत्त[15] अगार ॥
कति हित मग्ग१कुमग्ग२ कति, कति अहंग[16]३अनुकार७२

॥ षट्पात् ॥

सूरिन[17] आक्खिय सुनहु सिसुहि पृंच्छक[18] पहु सादर ॥

१दशम वर्ष में पाट पाकर२वेदमें कहेहुए निषेध और विधिको समझकर३त्यागने और४ग्रहण करने के कर्तव्योंको देखे५व्याकरण, शिक्षा, छन्द, कल्प[श्रौतसूत्र], ज्योतिष और निरुक्त, यथा क्रमसे वेद के६मुख,७नासिका, पैर, हाथ, नेत्र और कर्ण (कान) इन छः अंगों और ९ऋग्वेद आदि चार वेद, ये दश विद्याएं और मीमांसा १०तर्क शास्त्र, स्मृति और पुराण, ये मिलकर चौदह विद्याएं ८ उस समर्थ राजा ने११तहाँ (उसी अवस्था में) श्रवण कीं॥७०॥ वह रसिक राजा दुर्लभ पण्डितोंको भी बुलाकर नित्य१२सभा करता है और तत्व को पहिचानना दृढ़ तोलकर१३खर्च की ओर नहीं देखता है ॥ ७१ ॥ १४ उसी अवस्था में राजा ने विद्वानों से पूछा कि१५आर्यावर्त स्थान में हित के मार्ग कितने हैं और कुमार्ग कितने हैं और १६[ ]के सदृश कितने हैं "यहां मूल में [अहंग] शब्द है इसका आगे कुछ वर्णन नहीं है और न यह शब्द कहीं मिलता है इस कारण हमने इसका विवरण करना छोड़ दिया है सो पण्डित लोग विचार लेवें"॥७२॥ १७ पण्डितों ने कहा कि हे १८ पूछनेवाले बालक राजा आदर सहित सुनो अथवा पूछनेवाला बालक राजा भी आदर योग्य है सो सुनो.

श्रुति मत कहियत सरनि[१] ताहि उज्झन[३] कुसरनि[२] तर ॥
मन्नहु श्रुति सु त्रि[३]मग्ग चरम[५] खट[६] भेद बिचारहु ॥
अधिकारी जन उचित धीन[६] नानागति धारहु ॥
समुझहु त्रि[३]मग्ग पहिलैं श्रुतिहु जहँ कृति[१]पुब्ब[२]सु अति जड[१]न
मध्य[२]न उपास्ति[२] दूजो[२] महिप अद्वय[१३] तीजो[३] उत्तम[३]न ।७३।

॥ दोहा ॥

तीजो[३] मग्गहु छक्कबिधि तँहँ, पहिलो[१] त्रिक[३] प्राकार ॥
उत्तर उत्तर त्रिक[३] अपर[२], सुभ फल मति अनुसार ॥७४॥
जैन[१] बौद्ध[२]है कुपथं[२] जिम, लोकायत[११][३] गिनिलेहु ॥

१वेद का मत २मार्ग कहा जाता है और उसको ३छोड़ना ४अत्यन्त कुमार्ग है तहां वेद के तीन मार्ग जानो और ५ अंतिम के छः भेद विचारो और अधिकारी लोकों की ६ बुद्धियों के योग्य नाना प्रकार जानो. पहिले भेद के तीन मार्ग समझो. जिनमें पहिला कर्म मार्ग (कर्मकांड) अत्यन्त अज्ञानियों के लिये है और हे राजा दूसरा उपासना मार्ग मध्य (जिनको ज्ञान उत्पन्न नहीं हुआ और कर्मों में आसक्त हैं उन) लोकों के लिये है और तीसरा ७ अद्वैत मार्ग उत्तम लोकों के लिये है ॥ ७३ ॥ तीसरा मार्ग (ज्ञान मार्ग) छः प्रकार का है जिनमें पहिला तीन ८ प्रकार का है अर्थात् न्याय, पूर्वमीमांसा और वैशेषिक भेदवाले द्वैतवादी हैं अर्थात् जीव और ईश्वर को भिन्न माननेवाले हैं और बाकी के ९ अन्य तीन अर्थात् सांख्य, योग्य और उत्तरमीमांसा [वेदान्त] ये बुद्धि के अनुसार उत्तरोत्तर शुभ फल देनेवाले हैं ॥ ७४ ॥ १०वेद को नहीं माननेवाले कुमार्ग छः हैं जिनमें एक तो जैन (*), दूसरा बौद्ध जो चार प्रकार का है, और तीसरा ११चार्वाक[देहात्मवादी]अर्थात् एक जैन, चार बौद्ध और छठा

(*)जैनमत का कुछ विवेचन हमने इस ग्रन्थ के चतुर्थराशि में वीसलदेव के चरित्र की टीका में लिखा है उसके उपरान्त प्रकरण वश कुछ यहां पर लिखाजाता है कि, कर्मफल को देनेवाले और जगत् का नित्यमूल कारण जो ईश्वर है उसका स्वीकार यह(जैन)मत नहीं करता. जैन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द ये तीन प्रमाण मानते हैं, वे आगम सर्वज्ञके शब्द हैं. मनुष्य ही उत्तम ज्ञान, सम्यक्दर्शन और सम्यक्चारित्रसे आवरणका नाश करके सर्वज्ञ बनसकता है. "जिनको जैनी सर्वज्ञ पुरुष मानते हैं वे चौवीस तो अवसर्पिणी (भूत) काल में होगये, चौवीस वर्तमान काल में हुए और चौवीस उत्सर्पिणी (भविष्यत्) काल में होवेंगे और वर्तमान काल में, पहिले ऋषभदेव, तेवीसमे पार्श्वनाथ और चौवीसमे महावीर हुए जिन्ही का जैनियों में पूजन

होता है" जीव मात्र पर दया करने को वे मुख्य धर्म समझते हैं, इस मत में जीव और अजीव ये दो मुख्य तत्व मानेजाते हैं, ये दोनों अनादि और अनन्त हैं, कितनेएक पदार्थकी व्यवस्था नौ प्रकार की करते हैं अर्थात् जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष. इनके भी कई अवांतर भेद मानते हैं, जैनोंकी प्रसिद्धक्रिया "सप्तभंगीनय" है. यथा— "स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिचनास्ति, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्तिचावक्तव्यः, स्यान्नास्तिचावक्तव्यः, स्यादस्तिनास्तिचावक्तव्यः ॥" इन सात भंगियों को स्वीकार करने से वे स्याद्वादी कहाते हैं इनका विशेष वर्णन 'सर्वदर्शनसंग्रह' में देखो. जो जैन संसार का त्याग करते हैं वे 'यति' और जो गृहस्थाश्रम में रहते हैं वे 'श्रावक' कहाते हैं. जैनों में दिगंबर और श्वेतांबर ये दो मुख्य वर्ग हैं, इनके लक्षण और भेद विस्तार के भय से यहां नहीं लिख सकते.

बौद्धमत का दिग्दर्शन.

इस मतके आदि प्रवर्तक कपिल वस्तुके गौतम कुलके शाक्य राजा शुद्धोदन के पुत्र सिद्धार्थ हैं, इस मतमें प्रत्यक्ष और अनुमान ये दो प्रमाण मानेगये हैं, चार भावना से पुरुषार्थ की प्राप्ति मानीजाती है. यथा— "सब क्षणिक है, सब दुःख है, सब स्वलक्षण है (एक जैसा दूसरा नहीं) सब शून्य है, भावमात्र सत् भी नहीं है, असत् भी नहींहै, सदसत् नहीं है ऐसा भी नहीं है, वह अनिर्वचनीय और निस्वभावहै. एकही गुरुके एकही उपदेश पर चार शिष्योंने चार प्रकारके सिद्धान्त बांधे, यथा सौत्रान्तिक तो बाह्यवस्तु को केवल शून्य नहीं मानते परन्तु उसको अनुमेय मानते हैं. और वैभाषिक, बाह्यपदार्थ को प्रत्यक्ष मानते हैं और सविकल्प ज्ञानको अप्रमाण और निर्विकल्प ज्ञान को प्रमाण मानते हैं. योगाचार, अज्ञात के ज्ञान की प्राप्ति के लिये पूछने को "योग" और गुरु के कथित अर्थ के अंगीकारको "आचार" कहते हैं, चारों भावना को निर्वाण का हेतु मानते हैं और बाह्य पदार्थ को शून्य मानते हैं परन्तु भीतर अर्थ-बुद्धि का स्वीकार करते हैं. माध्यमिक, एकही पदार्थ में भिन्न भिन्न मनुष्यों की भिन्न भिन्न कल्पना होने से पदार्थ मात्रको केवल शून्य रूप मानकर सर्व शून्यत्व का अंगीकार करते हैं बौद्धोंमें यही चार भेद हैं. जिनके सिद्धान्त ऊपर लिखे अनुसार हैं, इनका अधिक विवेचन स्थानाभाव के कारण यहां नहीं होसकता ॥

॥ चार्वाक मतकी संक्षेप सूचना ॥

इस मतका आदि प्रवर्तक बृहस्पति कहा जाता है, इसमें ज्ञान साधन के लिये केवल प्रत्यक्ष प्रमाण मानाजाता है, अनुमान और शब्द प्रमाण को नहीं मानते, अतः ईश्वर और परलोक प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध न होने के कारण वे इन दोनों को नहीं मानते, सृष्टिको स्वभाव से मानकर इसका कोई कर्ता नहीं मानते, आत्मा को देहसे अभिन्न मानकर देहके सुखकोही पुरुषार्थ मानते हैं और मरनेकोही मोक्ष मानते हैं, इसी मतका दूसरा नाम लोकायत है (लोक में फैलाहुआ) अर्थात् इसमें अर्थ और काम की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है और इन दोनों की कामना लोक में स्वतः और सर्वत्र देखीजाती है. इनके सिद्धान्तके कुछ श्लोक संसारमें प्रसिद्ध हैं उनमें से तीन श्लोक पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे लिखते हैं॥

श्लोक—त्रयो वेदस्य कर्तारो भांडधूर्त निशाचराः। जर्फरी तुर्फरीत्यादि पंडितानां वचः स्मृतम् ॥ १ ॥

यावज्जीवं सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत् । भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥ २ ॥

पतिहीना तु या नारी पत्नीहीनश्च यः पुमान्। उभाभ्यां रण्डशण्डाभ्यां न दोषो मनुरब्रवीत्॥ ३ ॥

बौद्ध२ तहाँ चउ४ भेद बलि, इम नास्तिक छ६हि एहु ॥७५॥
सौत्रांतिक१ बैभाषिक२ रु, योगाचार३हु आहि ॥
चउम४ माध्यमिक४ च्यारि४ही, सौगत सून्य समाहि ॥७६॥
लि३ प्रथम१ श्रुति कहिय तहँ, सहँसअसी८०००० श्रुति मानँ ॥
कर्म१ धर्म२हेतुक करन, पहिलो१ यह सोपानँ ॥ ७७ ॥
निजमति बोध१ रु भक्ति२ जुग२, पायहेतु प्रकटैन ॥
तिन अध्वग अंधन तरन, यह१ दिखात श्रुति ऐन ॥७८॥
कर्म उचित करतहि करत, इहिं मग अध्वग आइ ॥
गम्य सुद्धमति ह्वै गहत, वहु भव मिजल बिताइ ॥७९॥
जे संसृति सन बिरत जन, स्वसुखहिं जानि सकैंन ॥
पथ तिन्ह मध्य२ उपासना२, प्रतिगति इमहु पकैंन ॥ ८० ॥
यह अक्खत सोलहसहँस१६०००, श्रुति द्वितीय२ सोपान ॥
जन्म१ मरन२ औषध यह२हु, प्रभुदासत्व प्रधान ॥ ८१ ॥

चार्वाक हैं इन्हीं छहों को नास्तिक जानो ॥ ७५ ॥ सौत्रान्तिक, वैभाषिक, योगाचार और माध्यमिक ये चारों ही १ बुद्ध के २ शून्य भेद में समाजाते हैं ॥७६॥ अब वेद के उपरोक्त तीन मार्गों को कहते हैं कि प्रथम कर्मकांड पर कर्म और धर्म करने के निमित्त अस्सी हजार ३ गणनावाली श्रुतियां हैं जो यह ४ पहिली सीढी है ॥ ७७ ॥ पाप के कारण जिनकी निज बुद्धि में ज्ञान और भक्ति प्रकट नहीं होवै उन संसारी अंधे पथिकों के तिरने के लिये वेद यह मार्ग दिखाता है ॥ ७८ ॥ ५ पथिक (संसारी) इस मार्ग पर आकर उचित कर्म करते करते ७ कई जन्मों की मंजिलों को बिताकर निर्मल बुद्धि होकर ६ पहुंचने योग्य स्थान (मुक्ति) को पहुंचता है ॥ ७९ ॥ जो मनुष्य ८ संसार से तो विरक्त हैं परन्तु ९ आत्मसुख(आत्मज्ञान)को नहीं जान सकते उनके लिये बीच का मार्ग उपासनाकांड (भक्ति) है जिससे भी मुक्ति होती है परन्तु उपरोक्त मार्ग के अनुसार एक ही जन्म में १० निश्चय ही मुक्ति होवेगी ऐसा परिपक्व नहीं होता क्योंकि इसमें द्वैत भाव रहता है ॥ ८० ॥ ११ इस दूसरी सीढी को सोलह हजार श्रुतियां कहती हैं जिसमें १२ ईश्वर का दास भाव प्रधान होने से यह भी जन्म मरण की औषधि है ॥ ८१ ॥

चपारिसहँस४००० खिल श्रुति चवहिँ, ब्रह्म१ जीव२ इक बोध॥
आरोहन तीजो३ यहै, रंचन जहँ थिति रोध ॥ ८२ ॥
पहिली१ सीढी कर्म१ पर, स्मृति१ पुरान२ सब सार्थ ॥
बामी१दिक भ्रामक बहुरि, पथ जिहिँ निंद्य अपार्थ ॥८३॥
भक्ति२ अनन्या भाखियत, सुभ दूजो२ सोपान ॥
पंच५रात्र मुख ताहि पर, तांत्रिक ग्रंथ बितान ॥ ८४ ॥
साधत यहहु उपासना२, प्रभु व्है भक्ति प्रसन्न ॥
रचत भक्त उर बोध रवि, आकृत सब करि अन्न ॥ ८५ ॥
तत्व१ बोध बिनु मुक्ति२ तियँ, भोगी इतर भिरैँन ॥
सतत पुकारत बेदसिर, बारबार यह बैन ॥ ८६ ॥
इहिँ तीजे३ आरोह पर, श्रुतिसिर१ प्रमिति असेस ॥
व्याससूत्र१ तिनपर बहुरि, योग२ सांख्य३ त्रिक३ एस ॥८७॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्र

१बाकी की चार हजार श्रुतियां ब्रह्म और जीव के एक होने का ज्ञान कहती हैं यह२तीसरी सीढी है जिसमें मोक्ष की रंच मात्र भी रुकावट नहीं है ॥ ८२ ॥ कर्मकांड रूप पहिली सीढी पर स्मृति और पुराण हैं सो तो सार्थक (सत्य)हैं. फिर जो वाम (कौल) मार्ग आदि ३ भ्रमोत्पादक मार्ग हैं सो निन्दनीय और ४ अर्थशून्य (झूठे) हैं ॥ ८३ ॥ ५ जिसमें अनन्या भक्ति [भक्त को जिसके समान संसार में कोई अन्य पदार्थ नहीं दीखता]होवे यह श्रेष्ठ दूसरी सीढी है जिस पर ६ नारदपंचरात्र आदि तांत्रिक ग्रंथों का ७ विस्तार है ॥ ८४ ॥ इस उपासना के साधने की भक्ति पर ईश्वर प्रसन्न होकर आकारवाले सब पदार्थों को ९ भक्षण (नष्ट) करके भक्त के हृदय में ८ ज्ञान रूपी सूर्य को उदय करता है ॥ ८५ ॥ तत्वज्ञान के विना ११ अन्यभोगी १० मुक्ति रूपी स्त्री से नहीं भिड़सकता सो यह वचन १३ उपनिषद् १२ निरंतर (बारंबार) पुकारते हैं ॥८६॥ इस तीसरी १४ सीढी पर १५ प्रमाण युक्त सब उपनिषद् हैं और उन पर फिर व्याससूत्र (वेदान्तसूत्र) योग और सांख्य ये तीनों हैं॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, रावराजा रामसिंह का बुंदी की गद्दी पर बैठना १

रामसिंहचरित्रे रावराजारामसिंहपट्टोपवेशन१ ससोदररावराजाविवाहसन्तानवर्णन २ रामसिंहश्रेष्ठशिक्षाश्रवणपण्डितसकाशधर्मवर्त्मप्रश्नवर्णनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदितः त्रिषष्ट्युत्तरात्रिशततमो मयूखः ॥ ३६३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उत्तरमीमांसा१ इहाँ, प्रथम१ उर्क सोपान ॥
यह १ हि मुक्ति फर्ला याहितैं, मुख्य वेद सिर मान ॥ १ ॥
वाक्य तत्वमसि१ मुख बदत, जीव१ ब्रह्म१ इक जत्थ ॥
सत१ अनंत२ चित३ बोध४ सुख५ सत्य६ असंग ७समत्थ॥२॥
सब प्राकृतं२ कल्पित ४असत, जिम गुन१ माँहिं भुजंग२॥
केवल यह मन कल्पना, इक१ खिल आप१ अभंग ॥३॥

षट्पात् ॥

ब्रह्म स्वसुख प्रतिबिंब१ सहित जो प्रकृति२त्रि३ गुन सम ॥
आधिष्टान२ जुत यह२ हि ईस२ कहियत असुधोपम ॥

भाइयों सहित रावराजाके विवाह और संतानों का वर्णन२ रामसिंह का श्रेष्ठ शिक्षा को सुनना और पण्डितों से धर्म मार्गों के पूछने के वर्णन का प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तीन सौ तेसठ ३६३ मयूख हुए ॥

यहां १ उक्त (तीसरी) सीढी पर उत्तरमीमांसा वेदान्त प्रथम है इसीसे मुक्ति रूप फल मिलता है इसी कारण से उपनिषदों में इसको मुख्य माना है ॥१॥ जहां तत्वमसि २आदि वाक्य जीव और ब्रह्म की एकता कहते हैं जिस [ब्रह्म] का स्वरूप सत्, अनन्त, चित्, ज्ञान, आनंद, सत्य, असंग और समर्थ है ॥२॥ ३सब प्रकृति संबंधी पदार्थ(संसार)कल्पित है४असत (अस्थिर)है जैसे रस्सी में ५ सर्प का होना कल्पित है वैसे ही यह संसार मन की कल्पना है बाकी एक ६ ईश्वर ही अखंड है ॥ ३ ॥ स्वयं सुख रूप ब्रह्म के प्रतिबिंब सहित जो तीन गुणों की [सत्त्व रज तमकी] साम्यावस्था[एक हालत] है उसीको प्रकृति

सत्व१ बिमल माया२ सु तत्थ यह बिंब२ ईस२ तिम ॥
मलिन१ अविद्या२ माँहिं जीव३ तस बस अनेक जिम ॥
माया१ उपाधि ईस्वर२ अवस जीव३ अविद्योपाधि२बस ॥
कारन सरीर१ ताकौं कहत अभिमंता तँहँ प्राज्ञ१ अस१।४।

॥ गीर्वाणभाषा ॥ गुरूपजातिः॥

प्राज्ञ१स्य भोगाय तदीश्वरेच्छया तमःप्रधानप्रकृतेः समुत्थितम् ॥
ख१वायु२तेजो३ऽम्बु४भुवः५समाख्यया शब्द१श्दिकं५प्राकृतभूतपंचकम्५

॥ आर्या ॥

पञ्चानां भूतानां सत्वांशैः पञ्च ५ बुद्धिकरणानि ॥
श्रोत्र१त्वग्२दृग्३रसन४घ्राण५समाख्यानि जातानि ॥
तैः सर्वैः सत्वांशैरन्तःकरणं१ द्विधेरति वृत्तिभिदा ॥
तत्र विमर्शात्म मनो१ निश्चयरूपात्मिका बुद्धिः२ ॥ ७ ॥
भूतानां५ च रजोंशैः५ क्रमेण पञ्चैव कर्मकरणानि ॥

कहते हैं, अधिष्ठान होने से उसीकी ईश्वर संज्ञा होती है. उस माया में उस विशुद्ध आत्मा का बिंब जैसे ईश्वर होता है वैसे ही अविद्या में मैला होकर जीव कहाता है और उस अविद्या ही के वश से वह अनेक होता है, माया उपाधि से ईश्वर स्वतंत्र है और जीव अविद्या की उपाधि से परतंत्र है, उसी को कारण स्वरूप कहते हैं, अर्थात् अविद्या में जीव की प्रथम बंधनावस्था को ही कारण शरीर कहतेहैं, जीव जब उस कारण शरीरमें अभिमान युक्त होता है तब उसको प्राज्ञ कहते हैं ॥ ४ ॥ उस ईश्वर की इच्छा से प्राज्ञ शरीराभिमानी चेतन [जीव] के भोग [सुख दुःख] के अनुभव के लिये तम गुण प्रधान प्रकृति से आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी नामक तत्व और उनके क्रमशः शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये पांच गुण उत्पन्न हुए ॥ ५ ॥ इन पांचों तत्वों के सतोगुण अंशों से क्रमशः कान, त्वचा, नेत्र, जीभ और नाक नामक पांच ज्ञानेंद्रियां उत्पन्न हुईं॥६॥ उन्हीं सतोगुण अंशों से अंतःकरण हुआ जो वृत्ति भेद से दो प्रकार का है जिनमें विचारात्मक स्थितिवाला मन और निश्चयात्मक स्थितिवाली बुद्धि है ॥ ७ ॥ उक्त पंच महाभूतों के रजोगुण के अंशों

वाक्१पाणि२पाद३पायू४पस्थ५समाख्यानि जातानि ॥ ८ ॥
पञ्च५भिरेव रजोंशैरेतैः प्राणः१ स पञ्च५धा वृत्त्या॥
प्राणा१पान२समानो३दान४व्यानाः५ समाख्याभिः॥ ९ ॥
धीन्द्रियपञ्चक५कातिखशरैः५ प्राणपञ्चकै५श्च तथा॥
मनसा१।१६धिया२।१७शरीरंसूक्ष्मंसप्तदशभि१७र्लिङ्गम्॥१०॥
प्राज्ञ१स्तु तदभिमानात्तैजस२सञ्ज्ञामियात्स हि व्यष्टिः ॥
स हिरण्यगर्भ२सञ्ज्ञामेतीश्वर१ एष तु समष्टिः ॥ ११ ॥
ये ऽविद्यावैविच्यात्व्यष्टयव्यास्ते तु तैजसा२ नाना ॥
सर्वेषां तादात्म्यादीश्वर एकः१ समष्ट्या१ख्यः॥ १२ ॥
व्यष्ट्य२भिधानां भुक्त्यै सभोग्य१भोगायतन२मनुष्ठातुम् ॥
पञ्ची५कृतमंशेन प्रत्येकं१ पञ्चकं५ खादि ॥ १३ ॥
द्विदलीकृत्यैकै१कं१ दलमेकै१कं विभज्य च चतुर्धा४ ॥

से क्रमशः वाणी, हाथ, पैर, गुदा और लिंग ये पांच कर्मेन्द्रियां हुईं॥८॥ इन रजोगुण के पांच अंशों से प्राण उत्पन्न हुआ जो वृत्ति भेद से प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान इन नामों से पांच प्रकारका है॥९॥ पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रिय, पांच प्राण, मन और बुद्धि, इन सत्रह से सूक्ष्म शरीर बना जिसका दूसरा नाम लिंग शरीर है ॥१०॥ उस सूक्ष्म शरीर के अहंकार से प्राज्ञ की तैजस संज्ञा हुई सो व्यष्टि रूप समष्टिका अंश अर्थात् एक देशव्यापीहै और वही ईश्वर हिरण्यगर्भ संज्ञा को प्राप्त हुआ वह समष्टि सर्वव्यापी है ॥ ११ ॥ जो चेतन अविद्या की विचित्रता से व्यष्टि होनेयोग्य हैं वे तैजस अनेक हैं और इन सबका ईश्वर में तद्रूप अभेद होने से समष्टि नामवाला ईश्वर एक है॥१२॥ व्यष्टियों[तैजसों]को भोगके अर्थ भोग्य(भोगने योग्य पदार्थ) और भोगायतन (जिससे भोग भोगेजावैं ऐसा स्थूल शरीर) बनाने के लिये ईश्वर ने आकाश आदि पांचों तत्वों का पंचीकरण किया ॥ १३ ॥ वह पंचीकरण इस प्रकार से है कि पांचों प्रत्येक तत्व के आधे आधे बराबर दो दो भाग करके उनमें पांचों तत्वों के पांच आधे भागों को तो वैसे ही रहने दिये और बाकी के आधे आधे पांच भागों में प्रत्येक के चार चार विभाग करके फिर इन प्रत्येक पांचों अष्टमांश भागों को उन प्रत्येक अर्ध भागों में ऐसे

भागानपरश्दलै२स्तान्संयोज्य च पञ्च पञ्चेति ॥ १४ ॥
तैपरराडं तत्र च भुवन१भोग्य२भोगायतन३मसृजदीशः ॥
स्थूले३ हिरण्यगर्भो२ देहे वैश्वानर३त्वमितः ॥ १५ ॥
तैजस२सञ्ज्ञा विश्वा३भिधानमीयुर्ह्यविद्यया२ जीवाः२ ॥
सुर१नर२तिर्य३क्त्वभिदा परा२ग्दृशोन्तर१स्वगतिमूढाः ॥१६॥
कुर्वन्ति कर्म भुक्त्यै कृत्वा कर्माऽपि भुञ्जते तत्तत् ॥
न लभन्ते स१च्चि१त्सुख१मनुयान्तो जन्मनो जन्म॥ १७ ॥
स्वस्वहृद्गाहितमिथ्याद्वैत२सदास्थाः सदैव तप्यन्ते॥
आवर्तादावर्तं यान्तो नद्यां यथा कृमयः॥ १८ ॥
सत्कर्मोदर्कबलाद्यो यस्तेषूपदेशमेत्य गुरोः॥
स्वयमद्वैती१भवति हि स स जीवन्मुक्त उद्दिष्टः॥ १९ ॥

मिलाये कि जिससे आधा तो एक तत्व और आधे में बाकी के चार तत्वों के चार अष्टमांश भाग मिलाकर पुरा तत्व बना दिया. जैसे आकाश तत्व के आधे भाग में बाकी चार तत्वों के अर्थात् आकाश के अष्टमांश को छोड़कर शेष वायु, तेज, जल, पृथ्वी, इन चारोंका एक एक अष्टमांश आकाश के उस अर्ध भाग में मिलाकर आकाश तत्व को पूरा किया इसी प्रकार के संयोग से पांचों तत्वों का परस्पर पंचीकरण किया ॥ १४ ॥ उन पंचीकृत पांचों तत्वों से ईश्वर ने ब्रह्मांड बनाया, उस ब्रह्मांड में चौदह भुवन (लोक) बनाये और उन भुवनों में भोग्य पदार्थ भोगायतन(भोगके घर)अर्थात् स्थूल शरीर बनाये, इस प्रकार स्थूल शरीर होने पर हिरण्यगर्भ वैश्वानर संज्ञा को प्राप्त हुआ ॥ १५ ॥ स्थूल शरीरमें अविद्या के कारण तैजस नामवाले जीव विश्व नामको प्राप्तहुए; जो सुर, नर, पशु, पक्षि इन भेदोंवाले बहिर्दृष्टि होने के कारण अभ्यंतरदृष्टि (आत्मज्ञान) से मूढ हैं ॥१६॥ वे जीव भोगके अर्थ कर्म करते हैं और कर्म करके उस उस फलको भोगते हैं, इस प्रकार जन्म जन्मान्तर में फिरते हुए भी सच्चिदानंद रूप परब्रह्म को नहीं पाते॥१७॥ वे जीव अपने आप हृदयमें ठहराये हुए मिथ्या द्वैत भाव में आस्था रखकर नदी के एक चक्र से दूसरे चक्र में पड़नेवाले कीड़ों के समान सदा ही दुःख पाते हैं ॥१८॥ इन में से जिन जीवों के सत्कर्मों का उदय होता है वे उस कर्मफल के बल से गुरु के उपदेश को पाकर स्वयं अद्वैत [अहंब्रह्मास्मि]होजाते हैं वे ही जीवन्मुक्त कहाते हैं ॥१९॥

श्रुतिशीर्षमहावाक्यात्तत्ता१हन्ते२ विहाय तदुपाधी ॥
स१च्चि१त्सुख१बोधा१त्मन्यस्मितयोना स्थितिः परमा ॥
येशस्येशनशक्तिर्नियामिका सर्ववस्तुजातस्य ॥
चित्प्रतिबिंबावेशाद्विभाति साऽचेतने चैव ॥ २१ ॥
तच्छक्त्युपाधियोगात्सद्ब्रह्मै१वेश्वरत्व२मुपयातम् ॥
कोशोऽपाधिविवक्षा जीवं२ प्रत्याययति त१द्धि॥ २२ ॥
यो हि पिता१ सुत१योगात् स नप्तृ२योगात्पितामहो१ऽप्येकः१
पितृ३योगेन स पुत्रः१ श्वसुरो१ जामातृ४योगेन ॥ २३ ॥
पुत्रा१द्युपाध्यसङ्गे क पिता१ क पितामहा२ङ्गजश्वसुराः४ ॥
द्वौ२कोश१शक्त्यु२पाधी हित्वा तद्वन्न जीवे१शौ२ ॥ २४ ॥
ईश२श्चिदधिष्टानं१ माया२ मायागतश्च चिद्विम्बः३ ॥
जीव२श्चिदधिष्ठानं१ लिङ्गतनु२स्तत्स्थचिद्विम्बः३ ॥२५॥

उपनिषदों [वेदान्त] के महावाक्यों [तत्वमसि] से तरे मेरे पन की उपाधियों को छोडकर सच्चिदानंद और ज्ञानमय ब्रह्म में अहंकार रहित स्थिति है वही परम मुक्ति है ॥ २० ॥ जो सब वस्तु मात्र को नियम में रखनेवाली ईश्वर की प्रभु शक्ति है वही प्रतिबिंब को पाकर चेतन स्वरूप में भासती (प्रकाशती) है ॥ २१ ॥ उसी शक्ति रूपी उपाधि के सम्बन्ध से सत् रूप ब्रह्म ईश्वर पन को प्राप्त हुआ है और वही (ब्रह्म) पंच कोशों की उपाधि (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय आत्माको आच्छादन करनेवाले ये पांच कोष हैं) योग से जीव भाव को प्राप्त हुआ है, ऐसी प्रतीति कराता है ॥ २२ ॥ जो पुत्र के संबंध से पिता है वही पौत्र के सम्बन्ध से पितामह (दादा) है और वही पिता के संबंधसे पुत्र है और जमाईके सम्बन्धसे श्वसुर है वास्तव में वह एक ही है, परन्तु संबंध भेद से भिन्न भिन्न कहाजाता है॥२३॥ यदि पुत्र आदि उपाधियां न होवें तो कहां पिता, कहां पितामह, कहां पुत्र और कहां श्वसुर है; वैसे ही कोश और शक्ति इन दोनों का त्याग किये पीछे न तो जीव है, और न ईश्वर है अर्थात् दोनों एकही है॥२४॥ चैतन्य का स्थान माया है और मायामें रहनेवाले चैतन्यका प्रतिबिंब है वह ईश्वर है और जहां चैतन्यका स्थान लिंग शरीर है उस लिंग शरीर में चैतन्यका बिंब है वह जीव है ॥२५॥ अन्न (स्थूल

अन्न१प्राण२मनो३बुद्ध्या४नन्दा५रूपेषु पञ्च५कोशेषु ॥
तैरावृत एका१त्मा स्वविस्मृतौ भ्रमति संसारम् ॥२६॥
एवं विचार्य्य विद्वान्नरस्य नानाभ्रमं सुखमवाप्य ॥
भ्रमनाशावधि दुःखमवगीर्य कूटस्थ आतिष्ठेत् ॥ २७ ॥
अस्य सचिव१सेनान्या२वात्मज्ञाना१रूपसार्वभौमस्य॥
तौ साङ्ख्य१योग२संज्ञौ भेदत्रिक३तः सदस्पभिमतौ ॥ २८ ॥
आत्मसु भेदो१ जगति च तथ्यत्व२मथेश्वरोन्य३ इति भेदान्॥
त्यजतश्चेज्जतस्तौ सम्राजा स्वेन सम्यक्प्रभू२ ॥२९॥
धीर्व्याकुला न येषां ये चैक्यज्ञानविस्तृतात्मानः ॥
स्वैकात्मबोध१येष प्राप्यत इति तैः सकृत्सुखतः ॥ ३० ॥
येषां बुद्धिर्मलिना ऽनन्तकलुषकर्म्मभिर्भ्रमोदर्कैः॥

शरीर) प्राण, मन, बुद्धि, आनंद नामक इन पांच कोशों से ढका हुआ आत्मा जो एक अद्वितीय, ईश्वर से भेद रहित है वह अपने स्वरूप को भूल जाने के कारण उक्त पांच कोशों में आसक्त होकर संसार में भ्रमता है "अन्न जल से उत्पन्न और पुष्ट हुआ स्थूल शरीर अन्नमय कोश है, पांच कर्मेन्द्रियां और पांच प्राण यह प्राणमय कोश है, पांच ज्ञानेन्द्रियां और मन यह मनोमय कोश है, पांच ज्ञानेन्द्रियां और बुद्धि यह विज्ञानमय कोश है, और पुण्य कर्म के फल से दक्षिण अन्तर सुख हुई वृत्ति आनंदमय कोश है, येही पांच कोश जीव को आच्छादन करनेवाले हैं" ॥ २६ ॥ इस प्रकार विचार करके विद्वान् मानवीय सुख को नाना प्रकार का भ्रम रूप जानकर जब तक भ्रम का नाश नहीं होवे तब तक दुःख सहकर दृढ होकर रहै ॥ २७ ॥ स्वजातीय, विजातीय और स्वगत, इन तीन भेदों की निवृत्ति के वास्ते आत्मज्ञान रूपी राजा है जिसके सांख्यशास्त्र तो प्रधान और योग शास्त्र सेनापति हैं ॥२८॥ आत्माओं में भेद मानना, संसार को सत्य मानना और परमेश्वर को जीव और जगत् से भिन्न मानना, इन भेदों को यदि छोड दे तो वे दोनों सांख्य और योग इस जीव को राजा के बराबर आत्मज्ञानी करदेते हैं॥२९॥ जिनकी बुद्धि व्याकुल गड़बड़ नहीं है और जिनकी आत्मा अद्वैत ज्ञान से विस्तीर्ण है वे तुरंत सुख पूर्वक एकात्मज्ञान को पाते हैं ॥ ३० ॥ जिनकी बुद्धि भ्रम के फल रूप अनन्त कुत्सित कर्मों से मलिन है उनको प्रथम सांख्य और योग हितकारी

प्राक् तत्र सांख्य१योगौ२ हितौ यथा धीमलं हिंस्तः॥३१॥
सांख्य१सचिव२योग१चमुपबोध१नृप२स्यास्त्र१सैन्य२दुर्गादि॥
मीमांसन१काणभुजा२ऽक्षपाद३मेतत्त्रयं सर्वम् ॥३२॥
धीनैर्मल्यविवृद्धौ केवलमन्त्यत्रिको३पयोगोत्र ॥
प्राप्ते स्ववीर्यसाम्राज्येऽस्त्र१चमू२दुर्ग३चिन्ता का ॥३३॥
श्रुतिकोदिता तृतीया३ निर्मलतरसंविदध्वगारोहया ॥
श्रीराम२०१४भूमिभृदियं विद्वद्भिरवाप्यते श्रेढी ॥३४॥

(इतिज्ञानकाण्डम्)

अस्या आदि१र्मध्या२ या श्रेढी सा ह्युपासनो२पाख्या ॥
सारूप्यमेति जीवो विश्रब्धोऽस्यां२ परम्परया ॥३५॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

श्रुति जिहिं जंपित मध्य२ सो, उपासना२ अभिधान ॥
श्रेढी मध्यम२ नृप सुनहु, निखिल पैं भक्ति निधान ॥ ३६
भिधान१ निधान२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

हैं, क्योंकि वे बुद्धि के मल का नाश कर देतेहैं॥३१॥ जिस आत्मज्ञान रूप च वर्ती राजा के सांख्य तो सचिव और योग सेनापति हैं उसके मीमांसा, वैशेषिक और न्यायशास्त्र, ये तीनों क्रम से शस्त्र सेना और गढ हैं ॥ ३२ ॥ इन में पिछले तीनों मीमांसा, वैशेषिक, न्याय केवल बुद्धि की निर्मलता बढाने के उपयोगी हैं सो अपने पराक्रम से साम्राज्य प्राप्त कर लेने पर शस्त्र सेना और किले की फिर क्या आवश्यकता है? ॥३३॥ हे भूपति रामसिंह वेद की कही हुई निर्मल बुद्धिवाले पथिकों के चढने योग्य इस तीसरी सीढी को विद्वान् ही पातेहैं ॥३४॥ यह ज्ञानकांड समाप्त हुआ॥ अब आगे उपासनाकाण्ड कहते हैं॥ इस तीसरे सोपान से पहिले की जो उपासनाकाण्ड नामक मध्य[बीच] की सीढी है इस में भी विश्वास करनेवाला जीव परंपरासे सारूप्य मुक्तिको प्राप्त होता है ॥३५॥ वेद में जिसको उपासना१ नामक मध्यमार्ग कहा है, हे सबके पति और भक्ति के भंडार राजा रामसिंह उस(उपासनाकाण्ड)को सुनो॥३६॥

इक१रस आप१ असंग१कौं, सूरिहु जानि सकै न ॥
सांख्य१रु योग२हुमैं समुझि, हाहा जिनकी व्है न ॥३७॥
मीमांसाऽऽदिक त्रय३ मनन, करिहु न बुद्धि रुकाइ ॥
सगुन ईस तवही समुझि, पटु निश्रेयस पाइ ॥३८॥

॥ षट्पात् ॥

नव९ विध भक्ति२सुनियत जाहि प्रभुराम२०।१४भक्त जन॥
अविरत कृति आचरहिं मोरि प्राकृत गनतैं मन ॥
श्रवन१ रु कीर्तन२ स्मरन३ अंघ्रिसेवन४ तिम अर्चन५ ॥
प्रनति६ दास्य७ सख्य८ पुनि नवम९ जहँ स्वात्म निवेदन९ ॥
ए भक्ति नव९हि मिलि त्रि३गुन अब सप्तबीस२७भेदन सहित
कर्ताहु भक्त१गुन२भेद करि मानि त्रि३विध कहियत महित।३९।

॥ दोहा ॥

सप्तबीस२७ विध भक्ति सब, त्रि३विध भक्त करि ते२७हि॥
कहियत एकासीति८१ क्रम, जिन जिन जिम जिम जेहि४०

॥ षट्पात् ॥

एकरस और असंग १ परमेश्वर को २ पंडित भी नहीं जानसकते [यहां 'आप्लृ व्याप्तौ' इस धातु से आप नाम सर्वव्यापी परमेश्वर का है] और खेद है कि सांख्य और योग में भी जिस परमात्मा की समझ नहीं है ॥३७॥ ३ मीमांसा, वैशेषिक और न्याय, इन तीनों के मनन करने से भी जिनकी बुद्धि स्थिर नहीं होती तब वे चतुर सगुण ब्रह्मको समझकर ४ मोक्ष पाते हैं ॥३८॥ हे प्रभु रामसिंह वह भक्ति नव प्रकार की है सो प्रकृति संबंधी (संसारके) पदार्थों से मन को मोड़कर भक्त लोक निरंतर भक्ति का ५ कार्य करते हैं, वह नवधा भक्ति श्रवण, कीर्तन, स्मरण ६ चरणसेवन ७ पूजन ८ वंदन९दासभाव१०सखाभाव और नवमी११अपनी आत्माको ईश्वरके अर्पण करदेना, ये नव ही प्रकार की भक्तियां तीन गुणों से सत्ताईस प्रकार की हैं और इन्हीं तीन गुणों के भेदों से १२ पूजनीय तीन प्रकार के भक्त कहते हैं॥३९॥ ये सत्ताईस भक्तियां तीन प्रकार के भक्तों के साथ मिलकर जिन जिन की जैसे जैसे होती हैं वे सब इक्यासी प्रकार की भक्तियां कहते हैं ॥४०॥

सात्विक१राजस२सुनहु भक्त तामस३ त्रय३ भूपति ॥
इन३ करि एकासीति८१ भक्ति पूर्वोक्त त्रिनव२७ भंति ॥
इह हिंसा१ दंभ२ अरु चित्त मच्छरपन३ चाहत ॥
तक्कैं भक्त तामसिय१ बलि सु कर्ता क्रोधी१ बंत ॥
जस१भोग२भुक्ति३चहि भक्त जब रचत भक्ति वह राजसिय
कर्ता१हि तत्थ कामी२कहत बहुत काम जिहिं हिय बसिय४१

॥ दोहा ॥

ईश्वरमैं कृति अप्पिकैं१, अघ नासन२ अनुरूप ॥
चाहि सत्प्य प्रभु३ आचरैं, भक्ति सात्विकिय३ भूप ॥४२॥
कर्ता१ कँहँ सात्विक३ कहत, सगुन भक्ति ए८१ सर्व॥
कर्ता भक्त सकाम१ है, अब निष्काम२अखर्व ॥ ४३ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रभु गुन सुनतहि१ पुरुष जानि अंतरजामी२ जिहिं ॥
बिनु फल३ बिनु उपबधान४ ताकि एकाग्र चित्त५ तिहिं ॥

हे राजा वे भक्त १ सतोगुणी १ रजोगुणी और ३ तमोगुणी, इन तीन प्रकार के भक्तों से पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकार की भक्ति मिलकर इक्यासी ४ प्रकार की होती है सो सुनो कि तमोगुणी भक्त हिंसा, कपट और ५मत्सरता करके भक्ति करता है सो ६ खेद है कि वह भक्ति करनेवाला क्रोधी होता है. और यश, संसार के पदार्थों के भोग और उत्तम भोजन चाहकर भक्ति करता है वह रजोगुणी भक्त है, वह भक्ति करनेवाला कामी कहलाता है कि जिस के हृदय में बहुत कामना बसती हैं ॥ ४१ ॥ हे राजा जो पापों का नाश करने को अपने सदृश सब७कार्यों को ईश्वर में अर्पण करके ईश्वरको आराधनीय जानकर भक्ति करै वह सतोगुणी भक्ति है ॥ ४२ ॥ इसको सतोगुणी भक्त कहते हैं, ये सब इक्यासी प्रकार की सगुण भक्तियां हैं जिनका कर्ता कामना सहित है और अब आगे निष्काम(कामना रहित) भक्त कहता हूं जो सबमें ८ बड़ा है ॥ ४३ ॥ प्रभुके गुण सुनते ही उसे हिरण्यगर्भ (परब्रह्म) और अन्तर्यामी जानकर बिना फल और९आवरण रहित एकाग्रचित्त से देखें(ध्यानकरें)

सागर१ गंगा२ सलिल२ जथा मन वृत्ति जमावहिं६ ॥
सांत१ दास्य२ रस सख्य३ रु सुचि४ वात्सल्य५ रमावहिं७ ॥
कति जन सु भक्ति निर्गुन१ कहत स्वांत बिसय इम कति सगुन२॥
कहिदेहु सकल अभिधान कछु प्रेम अतुल चहियत प्रगुन ॥४४॥

॥ मनोहरम् ॥

कहत परिच्छित१ ज्यों श्रवन१तैं आप्तकाम,
उपाससुत२ कीर्तन२ तैं विदित वखानिये ॥
स्मरन३तैं दैत्यपति३ लच्छी४ पयसेवन४तैं,
पूजन५तैं पृथु५ से प्रतापी जिम जानिये ॥
बंदन६ तैं विदित स्वफल्कसुतं६ पायो इष्ट,
दास्य७तैं कपीस्वर७ प्रतीति पहिचानिये ॥
सख्य८तैं किरीटी८ बलि९ स्वात्मको समर्पन९तैं,
बलि६ से बिमुक्त पद प्रापित प्रमानिये ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

यह मध्यमा२ श्रेढी इहाँ, भक्ति निरंत हे भूप ॥

और जैसे १ समुद्र में गंगा का जल मिल जाता है तैसे मनकी वृत्तिको परमेश्वर में जमाते हैं और शान्तरस, दासभावरस, सखाभाव रस २ निर्मलभावरस और वात्सल्यरस से प्रभुको रमाते हैं. इस भक्ति को कितने ही लोग तो निर्गुण भक्ति और कितने ही इसकों ३ मनका विषय होने से सगुण भक्ति कहते हैं सो ४ नाम कुछ भी कहो परन्तु तुलना रहित ५ सरल गुणवाला अथवा प्रकृष्ट गुणवाला प्रेम होना चाहिये ॥ ४४ ॥ अब आगे नवधाभक्ति के उदाहरण दिखाते हैं कि श्रवण से राजा परीक्षित ६ स्वरूपानन्द से तृप्त हुआ, ७ कीर्तन से शुकदेव प्रसिद्ध हुआ, स्मरण से ८ प्रह्लाद, चरणसेवन से ९ लक्ष्मी, पूजन से प्रतापी राजा पृथु, वंदन से १० श्वफल्क का पुत्र अक्रूर, दासभाव से ११ हनुमान, सखाभाव से १२ अर्जुन, १३ फिर आत्मसमर्पण से १४ बलि दैत्य, ये इष्ट फल पाकर १५ मुक्तिको प्राप्त हुए मानो ॥ ४५ ॥ हे भक्ति में १६ प्रीति करनेवाले राजा यह बीचकी सीढी है जिसमें निष्काम भक्ति से विष्णु भगवान् को प्राप्त होकर

हरि पावत निष्काम व्है, अंत मुक्ति अनुरूप ॥ ४६ ॥
तत्वबोध निरतहु तथा, भक्ति सहित हुव भूरि ॥
सिव१ बिरंचि२ सनका३दि सम, प्रेम द्विधा२ रुचि पूरि ॥ ४७
दत्त१ रु कपिल२ बिदेह३ से, बहु रत केवल बोध ॥
व्यापहु भक्तिहु बोधमैं, बोधहि भिन्न बिरोध ॥ ४८ ॥

इत्युपास्तिकाण्डम् ॥

गीर्वाणभाषा आर्या ॥

भक्तेः श्रेढी प्रथमा १ यां स्वाधिष्ठाय धर्म्ममात्मीयम् ॥
आद्विजचाण्डालावधि कृत्वा कर्म्माप्नुते परमम् ॥ ४९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पात् ॥

इहाँ धर्म१ आचरन प्रथम१ श्रेढी जो भूपति ॥
सो सामान्य१ बिसेस२ गिनहु द्वि२बिध२हि श्रुति संग
आदि१ वर्ण सन एह१ स्वपचँ परजंत सम्बुद्धर ॥

१अंत में सादृश्य मुक्ति होजाती है ॥ ४६ ॥ २ तत्वज्ञान में लगकर भी शिव, ब्रह्मा, सनकादिकों के समान बहुत भक्ति सहित (भक्त) होकर रुचि पूर्वक दोनों (ज्ञान और भक्ति) में पूर्ण हुए हैं ॥ ४७ ॥ ३ दत्तात्रेय, कपिलदेव और ४ राजा जनक जैसे बहुत केवल अद्वैतज्ञान में ही प्रीति करनेवाले हुए हैं और ज्ञान (आत्मज्ञान) में भी भक्ति होती है क्योंकि ज्ञान विरोध से भिन्न है इस कारण उसको भक्ति से भी विरोध नहीं है ॥ ४८ ॥

यह उपासनाकाण्ड समाप्त हुआ ॥ आगे कर्मकाण्ड कहते हैं ॥

भक्ति से पहिले जो कर्मकाण्ड रूपी प्रथम सीढ़ी है जिसको पाकर अपने धर्म में स्थित होकर, कर्म करके ब्राह्मण से लेकर चाण्डाल पर्यन्त परम पद (मोक्ष) को प्राप्त होते हैं ॥ ४९ ॥ हे राजा यहां अपने धर्म में चलने की जो प्रथम सीढ़ी है वह ५ वेद से सम्बन्ध रखनेवाली सामान्य और विशेष, इन दो प्रकार की है जिनमें सामान्य धर्म का भार सब मनुष्य मात्र के ऊपर कहा है सो ६ ब्राह्मण से लेकर ७ चाण्डाल पर्यन्त का ८ उद्धार करनेवाला है और दूसरा

सब मनुजनके सीस भनिय सामान्य धर्म१ भर ॥
दूजो२ बिसेस धर्म१ सु बदिय अप्प बरन१ आश्रम२ उचित ॥
परधर्म वरहु सद्धि रु परत२ निंद्य१हु निज निज होत हित५०
सुनहु धर्म सामान्य१ प्रथम१ संतोष१ छमा२ पुनि ॥
सम३ बहोरि दम४ सौच५सुपहु अस्तेय६ लहु सुनि ॥
सहित दया७ तिम सत्य८ बिहित निज पठन९ बिचारहु ॥
आत्म१ ब्रह्म२ एकत्व१ धी१० जु दसम१० सु हिय धारहु ॥
सामान्य धर्म लच्छन दस१०हिं मुख्य१ इतर अनुगत२सुमति
आर्जव१ रु मैत्र२ अनसूयता३ क्रम परोपकारा४दि कति५१
दसम१० माँहिं नहि दिपत अर्थ जह तह इम अक्खहिं ॥
सम१ मन मतिजय२सद्धि रु दम१ इंद्रियजय२ रक्खहिं ॥
सौच१ न्हान मुख२ सकल बहुरि अस्तेय१ बखानत ॥
बिकखत परधन बिजन जु गन बिष्टा सम जानत२ ॥

विशेष धर्म अपने अपने वर्ण और आश्रम के उचित कहा है जिसमें १ दूसरे का धर्म उत्तम होने पर भी उसको साधने (चलने) से गिरजाता है और अपना धर्म निन्दनीय होने पर भी उसमें चलना हित (भला) होता है ॥ ५० ॥ अब सामान्य धर्म सुनो कि प्रथम सन्तोष, फिर क्षमा, २ मनको जीतना, फिर इन्द्रियों को जीतना, शुद्धि (पवित्रता) ३ चोरी नहीं करना, दया, सत्य, ४अपने लिये जिसकी विधि होवे उसका पाठ करना ६ अपनी बुद्धि में जीव और ब्रह्म की ५ एकता को धारण करना, यही सामान्य धर्म के दश ७ लक्षण हैं सो मुख्य हैं. और हे श्रेष्ठ बुद्धिवाले राजा रामसिंह ८ अन्य ९ सरलता, मैत्री (मित्रता) १० दूसरे के गुण में दोष नहीं लगाना, इस क्रम से कितने ही परोपकार आदि धर्म उपरोक्त दश लक्षणोंवाले धर्म के साथ चलनेवाले हैं ॥ ५१ ॥ ११ उपरोक्त सामान्य दश धर्मों में जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं दीखता उनकी व्याख्या करते हैं कि मन और बुद्धि को जीतना सम है, और इन्द्रियों के रोकने का नाम दम है, स्नान आदि सब पवित्रता को शौच कहते हैं, १३ एकान्त में देखेहुए भी पराए धनको विष्टा के समान जानना १२ अस्तेय है, सो इस प्रकार सामान्य धर्म के सब लक्षणों और अपने अपने विशेष

सामान्य१ धर्म लच्छन सकल अरु बिसेस२ निज आचरहिं
सत जन्म१००कहुँ न चुकहिं सु नर सत्यलोक सासन करहिं॥५२॥

॥ दोहा ॥

आस्यज१ बाहुज२ ऊरुज३ रु, पज्ज४ प्रभेदन पंति ॥
बिरच्यो बर्ण चतुष्क४ बिधि, भूतल निवसन भंति ॥५३॥
तास अवस्था च्यारि४ तकि, चउमुख आश्रम च्यारि४॥
बटु१ गृहस्थ२ बैखानस३ रु, धरिय भिक्षु४ क्रम धारि ॥५४॥
अवर बर्ण१ आश्रम२ उचित, पहिलैं धर्म्म प्रबोधि ॥
राजधर्म पुनि रावरो, सब कहियत हित सोधि ॥५५॥
पठन१ रु पाठन२ यजन३ पुनि, ध्रुव तिम याजन४ धर्म्म ॥
बितरन५ ग्रहन६हु विप्र१कै, किय बिधि मुख्य छ६ कर्म्म५६
स्नान१ रु संध्या२दिक सकल, इनमैं निवसत आइ ॥
बिधि को अैसो विप्र१कै, जो इन६तैं टरिजाइ ॥५७॥

धर्म का जो आचरण करते हैं और जो मनुष्य सौ जन्म पर्यन्त कहीं नहीं चूक ते वे सत्यलोक का १ पालन करते हैं अर्थात् ब्रह्म रूप मे मोक्ष को प्राप्त होते हैं ॥५२॥ २ मुख से ३ भुजा से ४ जंघा से और ५ चरण से उत्पन्न करके इन भेदों से भिन्न भिन्न पंक्तियां करके भूमितल को बसाने की ७ रीति से ६ ब्रह्माने चार वर्ण (यथाक्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) रचे ॥ ५३ ॥ ब्रह्माने उनकी चार अवस्था देख कर ८ अपने चारों मुखों से, ९ ब्रह्मचारी, गृहस्थ १०वानप्रस्थ११संन्यासी, ये चार आश्रम किये ॥५४॥ हे राजा रामसिंह यहां अन्य तीनों वर्णों और आश्रमों के उचित धर्म १२ समझा कर आपका (क्षत्रियों का) धर्म हितको सोधकर पीछे कहेंगे ॥ ५५ ॥ पढना, पढाना, १३यज्ञ करना, १४ यज्ञ कराना, १५दान देना, १६ दान लेना, ये मुख्य छः कर्म ब्रह्माने ब्राह्मणोंके रचे ॥५६॥ स्नान और सन्ध्या आदि सब इन्हीं उपरोक्त छः कामों में निवास करते हैं, ब्राह्मण के ऐसी कौनसी विधि है कि जो इन छहों कर्मों से टलजावे "संस्कृतमें विधि शब्द पुल्लिंग है परन्तु यहां लोकरूढी से स्त्रीलिंग लिखा है" ॥ ५७ ॥

प्रजात्रान१ यजन२ रु पठन३, भोग प्रसक्ति अभान४ ॥
वीरभाव५ बितरन६ बिधि सु, बाहुज२ बर्ण बिधान ॥ ५८ ॥
अंहति१ इज्या२ अध्ययन३, कृषि४ पसुपालन५ कर्म ॥
बानिज्य६हु ए बैश्य३कै, धरे सीस खट६ धर्म्म ॥ ५९ ॥
पठन१ निजोचित यजन२ पुनि, बितरन३ शिल्प बिधान ॥
त्रि३वरन सेवा५ कारुता६, पज्ज४ छ६ धर्म प्रमान ॥६०"

॥ मनोहरम् ॥

वरन चतुष्क४कै ए खट६ खट६ कर्म तहँ,
तीन३ तीन३ जीवन उपाय अवधारिये ॥
खट६मैं सम त्रय३सौं विप्र१ अरु अप्रसक्ति१,
त्रान२ सूरता३सौं जीवैं बाहुज२ बिचारिये ॥
बैश्य३ पसुत्रान१ कृषिकर्म२ रु बनिज३तासौं,
सेवा१ शिल्प२ कारुता३सौं पज्ज प्रतिपारिये ॥
गेह१ देह२ मंडन१।२ सुबैन३ पतिसेवा४ भक्ति५,

१प्रजाकी रक्षा करना, यज्ञ करना, पढना, भोगोंमें आसक्त नहीं होना, और२ दान देना, ये छः ३ क्षत्रियों के कर्म हैं ॥ ५८ ॥ ४ दान देना, ५ यज्ञ करना, पढना, खेती करना, पशुओंका पालन करना और व्यापार करना, ये वैश्यों के मस्तक पर छः धर्म रक्खे हैं॥५९॥ पढना, ६ अपने योग्य यज्ञ करना, दान देना, शिल्प कर्म(दस्तकारी) करना, तीनों वर्णोंकी सेवा करना और७कर्मोंपन करना अथवा कारीगरी करना, ये छः धर्म ८ शूद्रों के हैं ॥ ६० ॥ चारों वर्णों के ये छः छः कर्म हैं जिनमें से तीन तीन कर्म ९ जीविका के उपाय के जानो. उपरोक्त छः कर्मों में से पढाना, यज्ञ कराना और दान लेना, इन तीन कर्मों से ब्राह्मण जीविका करें और १० भोगों में अनासक्ति, रक्षा और वीरता से ११ क्षत्रिय जीविका करें, इसी प्रकार १२पशुओं की पालना, १३खेती करना और व्यापार करना, इन से वैश्य जीविका करें और सेवा करना (नौकरी), शिल्प, कारीगरी वा कर्मोंपन से १४ शूद्र अपना पालन (जीवन) करें, घर और शरीर को शोभायमान रखना, श्रेष्ठ(मीठे) वचन बोलना, पति की सेवा करना भक्ति करना और सम्पूर्ण वस्तुओं को शुद्ध रखना, ये मुख्य छः काम स्त्रियों

वस्तुसुद्धि६ सुख्य छद्दहि नारिन निहारिये ॥ ६१ ॥
॥ षट्पात् ॥
आश्रम४ धर्महु अखिल धरहु अब कथ्थों धराधव ॥
पोते त्रि३बर्णज पाइ भनित बय परि द्वितीय२ भव ॥
अजिन१ जटा२ उपवीत३ मेखला४ दंड५ कमंडलु६ ॥
सविधि धारि दर्भ सय ख्यात गुरु गेह बसैं खलु ॥
मंगि सु द्वि२संध्य भिच्छा मुदित आनि निवेदहिं गुरु अरथ॥
वहै तस नियोग तो तास वहै असन१नतो उपवास२अथ६२
इंद्रिय जित१ मित असन२ सील३ श्रद्धा४ नति संजुत ॥
पुनि गुरु इच्छा पठन६ प्रथम पठनीय निगम७ नुत ॥
पठन आदि१ अंत२ पुनि प्रनति मंडहिं श्रीगुरु पय८॥
जुग संध्या मौन९ जिम नियत सावित्री जप१० नय ॥
सायं१प्रभात१गुरु१विष्णु२शिव३अर्क४कृसानु५उपासना११

के जानो ॥ ६१ ॥ १हे राजा रामसिंह अब आश्रम धर्म भी सब सुनो जिनमें प्रथम ब्रह्मचारी का धर्म कहते हैं कि तीनों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के २ बालक यज्ञोपवीत लेने की कही हुई अवस्था में ३ द्विजन्मा होवें अर्थात् यज्ञोपवीत लेवें और ४ मृगचर्म, जटा, जनेऊ ५ कटिमेखला (मौंजी अर्थात् मूंजका कटिसूत्र जिसको लोकमें करधनी या कणगती कहते हैं) दण्ड कमण्डलु (जलपात्र) इनको विधि पूर्वक धारण करके ६ दर्भ (डाभ) को हाथ में लेकर ७ निश्चय ही प्रसिद्ध गुरु के घर में बसै और ८ दोनों सन्ध्या अर्थात् प्रातःकाल और सायंकाल को भिक्षा मांग कर प्रसन्नता पूर्वक गुरु की भेट कर देवै जो गुरु की ९ आज्ञा होवै तो खावै और आज्ञा नहीं मिले तो वहां उपवास ही करै॥ ६२ ॥इन्द्रियों को जीतै १०प्रमाण से भोजन करै शील, श्रद्धा और नम्रता युक्त होकर फिर गुरु की इच्छा होवै तब पढै उसमें प्रथम ११ पढने योग्य और १२स्तुति योग्य वेद पढै पढने के आदि और अन्त में गुरु के चरणों में नमस्कार करै दोनों सन्ध्याओंके समय मौन रक्खे और नियम पूर्वक १३गायत्री जप करै यही ब्रह्मचारीकी नीति(न्याय)है सन्ध्या समय और प्रभात समय दोनों समय में गुरु, विष्णु, शिव, सूर्य और १४ अग्नि की उपासना

स्रज१मधु२पल३भूखन४गंध५सह वर्जहिं नारिन बासना॥६३॥

॥ दोहा ॥

इम गुरु गृह पढि आयुको, बंटि चतुर्थ४ बिताइ ॥
गुरु अभीष्ट[2] दै स्वीय गृह, उपनय[3] बिरचहिं आय ॥ ६४ ॥
जो असपिंडा१ जननि कुल, स्वक असगोत्रा२ सुद्ध३ ॥
क्रम सवर्ण४ ऐसी कनी, व्याहै सु वटु[6] प्रबुद्ध ॥ ६५ ॥

॥ षट्पात् ॥

बिवहिँ नारि गृह बसहिँ पंच५ सूँना जाके जिम ॥
कघट१ चुल्लि२ बहुकरिय३ आदि कंडन४ घरट्ट५ इम ॥
पंचन मेटन पाप पंच५ मख नित्य गृही पर ॥
पाठन पठन१ प्रसिद्ध ब्रह्ममख[13] यह वसुधाबर[14] ॥
बलि सुनहु श्राद्ध तर्पन नृपति मख२ पैत्र२ रु हवनादि३मत॥
सुर[15]मख३रु भूतमख४बलि सुनहु नृ[16]मख५अतिथि पूजन५नियत॥६६॥

॥ दोहा ॥

करै १पुष्पमाला, शहत, मांस, भूषण, सुगन्धि पदार्थ और स्त्रियोंकी संगति, इन सबका त्याग करै ॥ ६३ ॥ इसप्रकार गुरु के घर में पढने में अपनी आयुका चौथा भाग विताकर गुरु को २ मनवांछित देकर अपने घर पर आकर ३ उपनयन संस्कार (ब्रह्मचारी का विद्या की समाप्ति का संस्कार विशेष) करै ॥ ६४ ॥ जो अपनी माता के कुलकी ४ सपिण्डी में नहीं होवे (माता के कुलकी सपिंडी पांच पीढी पर्यन्त और अपने कुलकी सपिंडी सात पीढी पर्यन्त मानी जाती है) और ५ अपने गोत्रकी नहीं होवे उस शुद्ध और अपने वर्ण की कन्या को क्रम से विद्वान् ६ ब्रह्मचारी व्याहै ॥ ६५ ॥ स्त्री को व्याहकर घर में रहता है तब उस गृहस्थी के पांच ७ हिंसा होती हैं ८ जल का घड़ा ९ चूल्हा १० बुहारी ११ ऊखल और १२ घरटी, इन पांचों का पाप मिटानेको गृहस्थ पर नित्य पांच यज्ञ लगेहुए हैं तहां १४हे राजा रामसिंह पढना और पढाना यह तो १३ ब्रह्मयज्ञ है, श्राद्ध और तर्पण यह पितृयज्ञ है, यज्ञ आदि १५ देवयज्ञ है, बलि देना भूतयज्ञ है और अतिथि पूजन १६ मनुष्य यज्ञ नियत है ॥ ६६ ॥

क्रम करि करि मख पंचक५ रु, जति१ बटु२ अतिथि३ जिमाइ।
ज्यों सब निज४न जिमाइकैं, खिल३ तब दंपति२ खाइ ॥६७॥
जाम१ रहत निस नित्य जागि, धर्म१ अर्थ२ गति ध्याइ ॥
सौच१ न्हान२ संध्यादि३ सब, बिधिसह कृत्य बनाइ ॥ ६८ ॥

॥ षट्पात् ॥

महिला ऋतु प्रतिमास घस्र चउ अग्ग जु लंघत ॥
अहं बारह१२ सो अधम बालहंताहि होत बत ॥
अष्टमि८।१ मूल१४।२ अमा३०।३ रु अखिल चंद्रा१४।४ एकादसि११।५
इन्ह५।८ तजि अरु खिल२२ अहन मिलहिं तिपसन बांछा बसि ॥
गर्भ१ लखि करहिं तबतैं गृही२ संस्थावधि संस्कार सब ॥ १६ ॥
गृहि२ धर्म एह लाघव गदित अरु बैखानसं३ धर्म अब ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

आयु भाग दूजो२ सु इम, ब्याहि रु गेह बिताइ॥
पुत्रन दै सब तब बिपिनैं, जावैं दंपति२ जाइ ॥७०॥

क्रम पूर्वक ये पांचों यज्ञ करके सन्न्यासी १ब्रह्मचारी और अतिथि को भोजन कराके और वैसे ही २ अपने सब लोगों को भोजन कराकर जो ३ शेष बाकी) रहै सो आप स्त्री पुरुष भोजन करै॥ ६७ ॥ एक प्रहर रात्रि बाकी रहते नित्य जगकर, धर्म और अर्थ की रीति सोच (विचार)कर फिर शौच, स्नान, सन्ध्या आदि कर्म विधि पूर्वक करै ॥ ६८ ॥ प्रतिमहीने४ स्त्री की ऋतु रजस्वलापन)के शुद्ध हुए पीछे आगे के चार ५ दिनों को लांघ कर इसके अनन्तर बारह ६ दिन तक ऋतु काल रहता है [यहां पहले चार दिनों का इस कारण से त्याग है कि उन चार दिनों में गर्भाधान होने से बालक अधम और हिंसक पापी होता है] और अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमासी और एकादशी, इन तिथियों को छोडकर बाकी सब ७ दिनों में इच्छा पूर्वक स्त्री से मिलै और गर्भ धारण किया हुआ देखकर गृहस्थ, गर्भाधान से लेकर ८ मरण पर्यन्त के सब संस्कार करै, यह गृहस्थ का धर्म संक्षेप से ९कहा है और अब१०वानप्रस्थ का धर्म कहता हूं ॥ ६९ ॥ इस प्रकार ब्याह करके आयु के उस द्वितीयभाग को घर में बिताकर सब पदार्थ पुत्रों को देकर स्त्री और पुरुष दोनों ११ बन

पत्नी ०है संतति प्रिया, जग गृह छोरैं जाहि ॥
बिपिन नतो उभयर हि बसैं, ताकि आकिंचनताहि ॥७१॥

षट्पात् ॥

केवल रहन कृसानु उटज१ कंदर२ वा आश्रय ॥
नख१ रु रोम२ मल३निब्रहि सहैं सीता१दि३ऋतु३।६न रंय॥
नीवारा१दिक वन्य अन्न१ फल२ पुष्प३ कंद४इम ॥
पुरोडास१ चरु प्रमुख करैं सह क्रम तिनसौं तिम ॥
अवसेसको सु बिरचैं असन बेर इक्क१ सबकारि बिहित ॥
नीवार१आदि४जब होइ नव चतुर तजै तव पुब्ब चित॥७२॥

॥ पादाकुलकम् ॥

जो गिनि बिहित न्हान डारैं जल१, मंजन कारि खोलैं न देह मल
कृत्ति १ रु वल्कल२ दंड३ कमंडलु४, खिल दर्भा१दि५ रहैं धारत
खलु ॥ ७३ ॥

में जाकर जीवें ॥ ७० ॥ यदि स्त्री १ संतान में प्रेम करनेवाली होवे तो उसको घर में ही छोडे और वह भी संतान का स्नेह छोड देवे तो उसको २ कामना रहित देखकर स्त्री पुरुष दोनों ही वन में वास करैं ॥ ७१ ॥ केवल ३ अग्नि रखने के लिये ४ झौंपड़ी (छपरी) वा गुफा का आश्रय लेवे, नख और केश नहीं काटे, शरीर का मैल नहीं उतारे, सर्दी गर्मी आदि ऋतुओं के ५ वेग को सहन करे ६ तृणों से निकलनेवाले जंगली धान्य(सांवां, मलीचा आदि अकृष्ट धान्य) आदि अन्न और फल, फूल, कंद, ७ जवके चूनकी रोटी, होमने के अन्न आदि से क्रम पूर्वक नित्य होम करके "यहां चरु शब्द की संगति से होमका ग्रहण है" उचित कार्य करे होमसे बाकी बचै उसको दिनमें एकबार भोजन करै और ८ जब सांवां, मलीचा, भुरट आदि वन के अन्न नवीन उत्पन्न होजावैं तब वह चतुर पहिले का संग्रह किया हुआ अन्न त्याग देवे ॥ ७२ ॥ ९ विधि समझकर शरीर पर स्नान का जल डाले परन्तु १० मर्दन (मालिस) करके पसीना नहीं उतारे अर्थात् रगड़कर शरीर का मैल नहीं उतारे १२ पाकी डाभको आदि लेकर ११ मृगचर्म, वृक्षों की छाल(भोजपत्र आदि) दंड (हाथमें रखने की यष्टि, लकड़ी) कमडलु (जलपात्र) १३ निश्चय ही धारण करे ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

इम तृतीय३ निज आयुको, बन रहि बंट बिताइ ॥
बैखानस३ सन्न्यास४ बिधि, पुनि सवैं खिन पाइ ॥ ७४
जोन बिरति तो वह जबहि, रचि अनसन बिधि एह
तत्व२४न तत्व२४मिलाइ तनु, छोरैं क्रम लहि लाह ॥ ७५ ॥
ब्रह्मचर्य१हीतैं बिरति, वा गृह१हीतैं आइ ॥
तो जुग२ आश्रम मध्य तजि, जती४ द्रुतहि होजाइ ॥ ७६
रहैं दिगम्बर १ वा धरैं, पट कौपीन पिधान२ ॥
वस्तु कमंडलु१ दंड२ बिनु, न इतर जास निधान ॥ ७७
बिधिध्न सिखा१ सूत्र२हु बहन, तो को बिधि खिल तास
मिटन अहं१ ममता२ अवधि, अटैं असंग उदास ॥ ७८

॥ षट्पात् ॥

संगति भिच्छा समय करैं खिन वसैंति अटन क्रम ॥
आप१ ब्रह्म२ जग३ इक्क१ भेद बिनु पिक्खि छोरि भ्रम ॥

इसप्रकार अपनी आयु का तीसरा भाग वन में रहकर बितावै वह ५।
समय पाकर सन्न्यास साधै ॥७४॥ यदि वानप्रस्थ अवस्था में १उपराम ३
नहीं होजावै तो अथवा जिनको वानप्रस्थ अवस्था में ही वैराग्य होजावै तो
वहीं पर २ अन्न जल का त्याग करके ४वह समर्थ तत्वों में तत्व मिलाकर
के साथ३शरीर छोड़ै ॥७५॥ यदि ब्रह्मचर्य से वा गृहस्थ से ही ५वैराग्य
होजावै तो दो वा एक आश्रम बीचमें छोड़कर वहींसे६शीघ्र सन्न्यासी
॥७६॥ सन्न्यासी या तो नग्न रहै या ७ढाकने को कौपीन (लंगोटी) ९
सन्न्यासी के कमंडलु और दंड, इन दो वस्तुओं के बिना और कोई८धन नह.
॥ ७७ ॥ उसको चोटी और ६ जनेऊ धारण करने की भी विधि
फिर बाकी की उसके लिये कौनसी विधि होसकती है अर्थात् कोई
ने की विधि नहीं है, जहां तक १०अहंता और ममता नहीं मिटै ७
(सन्न्यासी) ११ संग रहित और उदास होकर विचरै (फिरै) ॥७८॥ १३
की १२ संगति(साथ)भिक्षा मांगने के समय क्षण मात्र करै, आत्मा, ब्रह्म

ज्ञानकांड३ जो गदित धरहिं चर्या अवधूत सु ॥
जोजो जहँ जहँ जास पाय परसैं व्है पूत सु ॥
सुप्ति१ प्रबोध२ बिच संधिमैं जो थिति सो निज जानिकैं ॥
जो रहैं मुक्ति१ बंधन२ जुगरहि मायामात्र प्रमानिकैं॥७९॥

॥ दोहा ॥

नहि निरोध१ उतपत्ति२ नहि, बलिं न साधक३ न बद्ध४ ॥
अरु न मुमुक्षु५ न मुक्त६ इह, लब्धहि विस्मृत लद्ध ॥८०॥
ए वरना४श्रम४धर्म१ इम, सुभ सामान्य१ बिसेस२ ॥
अर्थ२ राजनय सुनहु अब, नयपटु राम२०१५ नरेस ॥८१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्र रामसिंहचरित्रे रावराजारामसिंहार्थज्ञानकाण्डोपासनाकाण्डकर्म काण्डसहितवर्णाश्रमधर्मश्रावणं द्वितीयो मयूखः ॥२॥

आदितः चतुःषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥३६४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

जगत, इनको भ्रम छोडकर भेद भाव रहित एक जानै १ जो ज्ञानकांड में कही है उस क्रिया को धारण करै वही अवधूत (संन्यासी) है, उस संन्यासी के जहां जहां जो जो चरणों का स्पर्श करता है वह वह २ पवित्र होता है, सुषुप्ति और जाग्रत् अवस्था की २ संधि में जो स्थिति है वही अपनी स्थिति जानकर बंधन और मोक्ष दोनों को माया मात्र मानकर रहता है ॥ ७९ ॥ नहीं तो नाश है, नहीं उत्पत्ति है ४और न साधन करनेवाला है, न कोई बंधन है, न मुक्ति की इच्छा करनेवाला है और न मुक्ति है, जो मिलता है वह केवल विस्मृति (आत्मस्वरूप को भूलना अर्थात् अज्ञान) से मिलता है ॥८०॥ इस प्रकार सामान्य और विशेष दो प्रकार के श्रेष्ठ वर्णाश्रम धर्म हैं हे नीति चतुर राजा रामसिंह अब पुरुषार्थवाली ४ राजनीति सुनो ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, रावराजा रामसिंह को ज्ञानकांड, उपासनाकांड और कर्मकांड सहित वर्णाश्रम धर्म सुनाने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥२॥ और आदि से तीन सौ चौसठ ३६४ मयूख हुए ॥

(दोहा)

नृप१ अमात्य२ मंत्री३ रु निधि४, देस५दुर्ग६ बल७ बुद्ध॥
अंग सप्त७ बपु राज्य ए, स्वामी१ अब तहँ सुद्ध ॥ १ ॥
सक्ति तीन३ खट६ गुन समुझि, च्यारि४ उपाय बिचारि॥
नृप१ जु वहै इन१३कों नियतैं, रहैं अजेय सु रारि ॥ २ ॥
निज बस१ सो उत्तम१ निपुन, मध्यम२दुव२ बस मान॥
बिक्खहु अधम३अमात्य बस३, स्वामी१ त्रि३विध सु जान॥३॥

पज्झटिका ॥

ए तीन३सक्ति समुझहु अधीस, इन३ करि जिम गंजत सबन ईस॥
सबसिर अमोघ सासन१बिसेस, अवनीमहेन्द्र प्रभुसक्ति१ एस॥४॥
उपजैं जहँ मंत्र५ जु पंच५ अंग, सो मंत्रसक्ति२ नृप नैय प्रसंग॥
उच्छाह होइ उद्यम३ असेस, उच्छाहसक्ति३ इम सो रसेस॥५॥
अब सुनहु मंत्रके पंच५ अंग, ॥
इक१ इष्ट काज साधन उपाय१, दूजो२समर्थ नस व्है सहाय॥६॥

राजा, अमात्य, मंत्री, १ कोश[खजाना], देश, गढ और २ सेना ये राज्य के सात अंग जानो. जिनमें प्रथम स्वामी [राजा] का शुद्ध लक्षण कहते हैं ॥ १ ॥ कि तीन शक्ति, छः गुण और चार उपाय, इनको विचारकर जो राजा धारण करता है वह ३ निश्चय ही ४युद्ध में अजेय रहता है ॥२॥ जो राजा५अपने ही वश में रहता है वह तो उत्तम है, और जो ६ अपने और अमात्य, दोनों के वश में रहता है वह मध्यम है, और जो केवल ७ अमात्य के ही वश में रहता है वह अधम है सो हे सुजान[रामसिंह]इसप्रकार स्वामी तीन प्रकार का जानो ॥ ३ ॥ हे स्वामी ये ही तीन शक्ति जानो. जिनसे स्वामी सब को दबाता है ८ सबके ऊपर अमोघ[पीछी नहीं फिरनेवाली] आज्ञा होवै उसका नाम९हे राजा रामसिंह, प्रभु शक्ति है अथवा राजा की वह प्रभु शक्ति है ॥ ४ ॥ जिस मंत्र [सलाह] में १०पांच अंग उत्पन्न होवैं उसको ११ नीति के प्रसंग से राजा की मंत्रशक्ति कहते हैं. और सम्पूर्ण उद्यमों में उत्साह होवै उसको १२ राजा की उत्साह शक्ति कहते हैं॥५॥ अब मंत्रके पांचों अंगों का सुनो कि प्रथम तो अनुकूल [इच्छानुसार]कार्य साधने का उपाय है, दूसरा अंग समर्थ होने का है जो कार्य

बलि देस१ काल२ संगति बिचार३, है चोथो४ अवयव बिघनहार४
सुखहै अमोघ कर्मावसान५, पंचम५ प्रतीके सो मंत्र मान ॥ ७ ॥
नरनाह सुनहु खट६ गुनन नाम, तँहँ संधि रु बिग्रह यान तामें॥
आसन४तिम द्वैधीभाव५ आँहि, जहँ छुट्ठो६ आश्रय कहत जाहि।८।

॥ दोहा ॥

संधि१ मैत्र२ संबंधज३ रु, इतरेतर उपकार ॥
अरु उपहार४ स नाम इम, चउ४ तस भेद बिचार ॥ ९ ॥

॥ षट्पात् ॥

पैलेमैं गुन पिक्खि आप गुन रागी व्है इम ॥
छोरि लोभ छर्म संधि करैं१ मैत्र१ सु जानहुँ जिम ॥
कन्या दे रु करै२ सु संधि संबंधज२ धारहु ॥
माँहिं माँहिं उपकार व्है २ सु उपकार३ निहारहु ॥
पुहवि१ रु रत्न२ गज३ हय४प्रमुख दै करैं४ सु उपहार४यह
चउ४ भेद संधि१ इम अब सुनहु अट्ठ८ भेद बिग्रह असह१०

॥ दोहा ॥

साधन का सहायक है, तीसरा अंग देश काल के १ साथ विचार करने का है, चौथा अंग कार्य के २ अंगों का विघ्न मिटाना है, और अंतका पांचवां अंग कर्म[कार्य] खाली नहीं जाने का सुखकारी है; सो मंत्रके येही पांच ३ अंग मानो ॥ ७ ॥ आगे गुणों के नाम मूल में स्पष्ट हैं ४ तहां ५ है ॥ ८ ॥ प्रथम गुण संधि के चार भेद हैं. इनमें मित्रता से, संबंध से, ६ परस्पर के उपकार से और भूमि आदि देकर उपहार [नजराना] करने से होता है. जिसके लक्षण आगे के छंद में स्पष्ट कहते हैं ॥ ९ ॥ दूसरे (शत्रु) में गुण देखकर आप गुणों में ७प्रीति करके लोभ छोडकर ८ समर्थता से संधि करै वह संधि मैत्रेयज है. और कन्या देकर संधि करै उसको संबंधज संधि जानो. और परस्पर उपकार करके संधि करै सो उपकारक संधि है. और भूमि, रत्न, हाथी, घोड़ा ९ आदि देकर संधि करै उसका नाम उपहार संधि है. इस प्रकार संधि के चार भेद हैं. अब आगे नहीं सहन करने योग्य विग्रह के आठ भेद कहते हैं ॥ १० ॥

विक्रम१ मंत्र२ सहाय३ बल४ रत्न५ दुर्ग६ आरोग्य७ ॥
इत्यादिक करि हीन है, जो नृप बिग्रह जोग्य ॥ ११ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अष्ट८हि विग्रह२भेद सुनो इम, जे कामज१लोभज२भूमिज३जिम॥
मानज४अभय५इष्टज६रु मदभव७, एक द्रव्य अभिलाख८धराधव॥१२
स्त्रीनिमित्त१ इनमें कामज२ सो, श्रीनिमित्त२लोभज२जानहु सो॥
भूनिमित्तभूमिज३ पहिचानौं, बिरुद निमित्त४ मानभव४ मानौं१३
बिजय निमित्त५जु अभय सु५विग्रह, सरन निमित्त६नाम इष्टज६सह
विद्या१धन२जुव्वन३मदिरावस, रचैं७हु विग्रह२मदज७बीत रस।१४।

॥ दोहा ॥

माँहिंमाँहिं विग्रह२ मचैं, एक१हि अर्थ निमित्त८ ॥
एकद्रव्य अभिलाख८ वह, चिंतहु भूपति चित्त ॥ १५ ॥
मंत्री१मंत्र२ रु कोस३बल४, मित्र५हु न भजतं जाहि ॥

---

१ पराक्रम, मंत्र, सहाय, २ सेना, रत्न, गढ, ३ नैरोग्यता आदि से हीन होवै वह राजा विग्रह करने योग्य है ॥ ११ ॥ इस विग्रह के आठ भेद ये हैं. काम से उत्पन्न, लोभ से उत्पन्न, भूमि से उत्पन्न, मान से उत्पन्न, भय से उत्पन्न, इष्टवांछा से उत्पन्न, मद से उत्पन्न, एक द्रव्य की अभिलाषा होने से ४ राजाओं में विग्रह होता है सो सुनो ॥ १२ ॥ ५ इनमें जो विग्रह स्त्री के कारण से होवैं उसको कामज कहते हैं. और ६ लक्ष्मी (धन) के कारण विग्रह होवै वह लोभज है. ७ भूमि के कारण होनेवाला विग्रह भूमिज है. और ८ यश [स्तुति] के कारण विग्रह होवै वह मानज है ॥१३॥ विजय करने के कारण होवै जो मानभव, और किसी को शरण रखने के कारण से होवै वह इष्टज कहाता है. विद्या, धन, यौवन और मद्य के वश से जो विग्रह करै वह बिना रसवाला मदज विग्रह कहाता है ॥१४॥ ९ एक ही अर्थ के लिये परस्पर विग्रह होवै वह एकद्रव्यअभिलाष कहलाता है ॥ १५ ॥ जिस राजा को मंत्री, सलाह, खजाना, सेना और मित्र १० नहीं सेवन करते होवैं अर्थात् ये जिसके नहीं होवैं और जो मनु में कहे अठारह व्यसनों में से किसी में युक्त और

ठहै व्यसनी१ बीरुआ२ सुही, यान३ उचित नृप आहि ॥१६॥

॥ पादाकुलकम् ॥

यात्रा३इह तीजो३गुन अक्खिय, ऋषिन भेद सप्त७हि तस रक्खिय
संधानजा१ पार्ष्णिरोधा२ जिम, नाम मित्रविग्रहिनी३ है तिम१७
द्वंद्व२जा४ रु कुल्या५ निर्व्याजा६, शीघ्रगा७हु रंजत जिन्ह राजा ॥
श्रुति धारहु लच्छन अब सत्त७न,पहु जिन कारि पहुँ होइ प्रमत्त न१८

दोहा—पार्ष्णिग्राहसौं संधि करि, जु इतर अरिपर जात१ ॥
जो यात्रा३ संधानजा१, कहत नीति निष्णात॥१९॥
पार्ष्णिग्राहके रोध पर, जु बल रक्खि पुनि जाइ२ ॥
ताहि पार्ष्णिरोधा२ कहत, पटु नयआगम पाइ ॥२०॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम कलह अरि१ मित्रं२न पारैं, ताहि सत्रुपर सु पुनि सिधारैं३
एह मित्रविग्रहिनी३ यात्रा, मिलि दुव२ जँहँ छिन्नैं अरि मात्रा॥२१॥
जाँपर यात्रा सोहु समुख जब, ताकै जाइ४ द्वंद्वजा४ है तब ॥
सत्रु बंधु लै संग सत्रुपर, जाइ५ सु है कुल्या५ बसुधावर ॥ २२ ॥

१मद्यपी होवै वह राजा यान (चढाई) के योग्य है अर्थात् ऐसे राजा पर चढाई करनी चाहिये ॥१६॥ इस यात्रा(यान)को तीसरा गुण कहा है जिसके ऋषियों ने सात भेद कहे हैं २इस शीघ्रगासे राजा लोग प्रीति करते हैं ३हे प्रभुरामसिंह अब इन सातों के लक्षण सुनो कि जिनसे ४ राजा प्रमत्त नहीं होवै ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ५ पीठ पर से चढाई करके जीतने की इच्छा करनेवाले शत्रु से सन्धि करके जो अन्य शत्रु पर जावै उसको ६ नीतिनिपुण संधानजा यात्रा (यान) कहते हैं ॥ १९ ॥ पीठ पर से चढाई करनेवाले शत्रुको रोकने के अर्थ ७सेना रख कर जो अन्य शत्रु पर जाता है उसको ८नीति शास्त्रको प्राप्त होनेवाले ९चतुर पार्ष्णिरोधा यात्रा कहते हैं ॥ २० ॥ प्रथम शत्रु से और १० शत्रुके मित्रों से कलह कराकर फिर उस शत्रु पर चढाई करै और ११दोनों मिलकर उसका धन छीनैं उसको मित्रविग्रहनी यात्रा कहते हैं ॥ २१ ॥ १२ जिस पर यात्रा करैं वह शत्रु युद्ध करनेको सन्मुख आवै उस यात्रा को द्वंद्वजा कहते हैं और १३ हे राजा रामसिंह शत्रु के सम्बन्धियों को साथ लेकर शत्रुपर जा

स्वस्थभाव सन अरिसिर*संक्रमद, निर्व्याजाद्दकहियत यह उत्तम
सत्रुहिं हनन †प्रमाद छोरि सब, ‡सहसा जाइ७सीघ्रगा७ तो तव२३

॥ घनाक्षरी ॥

आसन चतुर्थ४ गुन भेद दस१० ताके अब,
स्वस्थ१ रु उपेक्षा सन२ मार्गअवरोध३ नाम ॥
देस स्वीकरन४ रमनीय तैसैं दुर्गासन६,
निकट७ रु दूर८ पराधीन९ रु प्रलोभ१० ताम ॥
अरि सब मारि राज्य अप्पन अकंटक कैं,
स्वस्थपनसौं जो रहैं१ स्वस्थासन१ सो ललाम ॥
बैरिन निबल जानि अप्पहिं प्रबल मानि,
३सदय जनावैं२ सो उपेक्षासन२ कित्ति धाम ॥ २४
तटिनी प्रवाह१ दवदाह२ आदि कारनकैं,
राह रुकैं३ आसन४०हे मार्ग अवरोध३ गेय ॥
जीति अरि देसकौं करैं जो ताँहँ४ आसन४ सो,
राम२०१४ नरनाह देस स्वीकरन४ नामधेय ॥
सत्रुनकौं मारि तिन्ह नैर धन१ धान्य२ करि,

उस यात्रा का नाम कुल्या है ॥ २२ ॥ स्वस्थभाव से शत्रु पर*चढाई करै जिस उत्तम यात्रा को निर्व्याजा कहते हैं और शत्रु को मारने के लिये † आलस्य तथा असावधानी को छोडकर ‡ अचानक यात्रा करै वह शीघ्रगा है ॥ २३ ॥ चौथा गुण आसन है जिसके दस भेद कहते हैं १ तहां, सब शत्रुओं को मारकर २ राज्य को निष्कंटक करके आप चिन्ता रहित होकर रहै उसको स्वस्थासन कहते हैं वह सब से सुन्दर है और शत्रुको निर्बल और आप को प्रबल मानकर ३दया जनावै वह उपेक्षा नामक आसन कीर्तिका घर है ॥२४॥ ४नदी के प्रवाह से वा अग्नि लग जाने आदि कारणों से मार्ग रुककर मुकाम होजावै उसको मार्गअवरोध आसन ५ कहते हैं, शत्रु के देशको जीतकर वहां निवास करै उसको हे राजा रामसिंह ६ देशस्वीकरण नामक आसन कहते हैं शत्रुओं को मारकर उनके नगरको धन से और धान्य से

रम्य[1] गिनि तत्थहि रहैं५ सो रमनीय५ श्रेय ॥
जीति दुर्ग अरिको तहाँसौं खिल जीतिबेकी,
अच्छी गिनि जो रहैं६ सु दुर्गासन६ है अजेय[3] ॥ २५ ॥

दोहा–बल[4] सह रिपु ढिग जाइ बलि, करन महर्घ[6] क्रयान ॥
राज्य बिगारन तस रहैं७, वहै निकट७ अभिधान ॥२६॥
निज देसहिँ गिनि दूर नृप, आयो पाउस इक्खि ॥
रचैं सिबिर८ दूरासन८ सु, सद्धत हित नय सिक्खि ॥२७॥
वैरी बस१ वा सुहृद बस२, नृप जो निकसि सकै न ॥
पराधीन९ नामक प्रथित, यह आसन४ नय औनै[11] ॥ २८ ॥
कंटक[12] जास बहु देन कहि, रिपु गंजन रक्खैं१० सु ॥
नाम प्रलोभासन१० नृपति, सूरि[13] दसम१० अक्खैं सु ॥२९॥
बली रिपुन बस करि निबल, काढ्हिसकै जु न काल[14] ॥
तक्कैं द्वैधीभाव५ तब, पंचम५ गुन छितिपाल ॥ ३० ॥
मिथ्यामन१ मिथ्याबचन२, मिथ्याकर्म३ उदार ॥
जुगर बेतन४ जुगर प्राभृतक५, पंच५हि द्वैध५ प्रकार ॥३१॥

१सुन्दर जानकर वहां रहै सो सुंदर रमणीय आसन है, शत्रु का गढ जीतकर वहां से ही२बाकी के देशको जीतना अच्छा जानकर वहीं पर रहै उसको ३ हे अजेय रामसिंह दुर्गासन कहतेहैं॥२५॥४बलपूर्वक तथा सेना सहित शत्रुके समीप जाकर५फिर६मोललेने की वस्तु को महंगी करने और राज्य बिगाड़ने को रहै उसका७नाम निकट आसनहै॥२६॥ जो राजा अपने देश को दूर जानकर और ८वर्षाको आया देखकर रहने को डेरे रचै और नीति की शिक्षा से हित साधन करै वह दूरासन है ॥२७॥ शत्रु के वश में होकर वा ९ मित्र के वश में होकर जो राजा नहीं निकल सकै वह ११ नीति का घर पराधीन नामक १० प्रसिद्ध आसन है ॥ २८ ॥ शत्रु को मारने के लिये १२ सेना को बहुत देना कहकर रक्खै उसको १३ पंडित लोग दसमा प्रलोभासन कहते हैं ॥ २९ ॥ बलवान् शत्रुओं के वश में होकर जो निर्बल १४ समय को नहीं निकाल सकने की अवस्था में द्वैधीभाव को देखै वह राजा का पांचवां गुण है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

पादाकुलकम्

बैंनन हित मनमैं बिरोध बहि१, मिथ्यामन१ यह द्वैध५रूयात महि
बैंनन हितरु विरोध कर्म बिधि२,बरनत मिथ्याबचन२नीति निधि३२
लघु१अरि काज करैं गुरु२लोपन३, मिथ्याकर्म३सु द्वैध५धरहु मन
इक१ सन प्रकट रु छन्न अपर२ सन, बेतनलैं ४ सु बजत जुग बेतन४ ॥ ३३ ॥
रिपुहिं मरावन दै सु वित्त लहि, तस अरिसौंहु लहैं तिमं वित्त५हि
जुग२प्राभृतक५ नाम तस जानहु, अब छठो६ आश्रय६हिय आनहु ॥ ३४ ॥
अप्प निबल दंम भीत अनाश्रय, आश्रय सबल लै सु गुन आश्रय
जास त्रि३भेद सदाश्रय१ जैसैं, अन्याश्रय२ दुर्गाश्रय३ ऐसैं ।३५।
बली सत्रुकों जानि धर्मधर, निबल मिलै१ सु सदाश्रय१ नर्य पर॥
रिपुसौंभीत बलिष्टअपरं लहि, व्है तसबस अन्याश्रय२सो कहि३६
भज्जि निबल जो सबल सत्रु भय, सेवहिं दुर्ग६ है सु दुर्गाश्रय३॥

वचनों में हित और मनमें विरोध धारण करै वह भूमि पर मिथ्यामन नामका द्वैधीभाव प्रसिद्ध है, इसी प्रकार वचनों में हित और १ कार्य(काम) में विरोध होवै उसको नीति ही है धन जिनके ऐसे विद्वान् मिथ्यावचन नामक द्वैधीभाव कहते हैं ॥ ३२ ॥ छोटे शत्रु से २ बडे के नाश कराने का कार्य करना मिथ्या नाम का द्वैधी भाव है, एक से प्रसिद्ध और दूसरे से छाने ३ तनखाह लेवै उसको जुगवेतन द्वैधीभाव कहते हैं ॥ ३३ ॥ शत्रु को मरवाने को देवै सो ४ धन लेकर ५ इसी प्रकार उसके शत्रु से भी धन लेवै उसका नाम जुगप्राभृत द्वैधीभाव है. अब आगे आश्रय नामक छठा गुण कहते हैं ॥३४॥ आप निर्बल और ७ आश्रय रहित होकर ६ दंड के भय से बलवान् का आश्रय लेवें उस छठे गुण का नाम आश्रय है ॥ ३५ ॥ बलवान् शत्रु को धर्म धारण करनेवाला जानकर निर्बल उससे मिलै उसको ८ नीति के तत्पर लोग सदाश्रय कहते हैं, शत्रु से डरकर ६ दूसरे बलवान को बीच में लेकर उस शत्रु के वश में हो वै जिसको अन्याश्रय कहते हैं ॥ ३६ ॥ बलवान् शत्रु से भागकर जो निर्बल १० गढ का आश्रय लेवै वह दुर्गाश्रय है. अब उपाय के चार भेद कहते हैं सो

अब उपाय चउ४ भेद सुनहु यह, साम१भेद२उपदाम३दंड४सह३७
जानहु भूप चउ४हि क्रमतैं जिम, उत्तम१मध्यम२अधम३कंष्ट इम
इनच्यारि४नकेभेदमानअब, सहलच्छनप्रभुराम२०१।४सुनौं सब३८

॥ दोहा ॥

कर्णसुभग१ दैविक२ कथित, स्मारक३ लोभज४ सार ॥
बहुरि आप्प अर्पन५ विदित, पंच५हि साम१ प्रकार ॥ ३९ ॥
परचित्तहिं करि प्रीति बस, हित संलाप गहाइ ॥
साम१ व्है जु दुहुँ२घाँ सुखद१, कर्णसुभग१ सु कहाइ ॥४०॥
सपथादिक करि परस्पर, बिरचै जँह बिस्वास२ ॥
समुझहु दैविक२ साम१ सो, पावहिं नीति प्रकास ॥ ४१ ॥
संबंधहिं सुमिराइकैं, व्है३ सो स्मारक३ होहि ॥
इष्ट परस्पर अप्पि व्है४, सांत्वन१ लोभज४ सोहि ॥ ४२ ॥
मम बपु है तव अर्थ इम, जंपि रु बिरचै५ जाहि ॥
पंचम५ सांत्वन१ भेद पहु, आत्मअर्पन५ सु आंहि ॥ ४३ ॥
सिद्धिव्है न जहँ साम१सौं, तहँ भेद२हि करतव्य ॥
जल१ पय२ सगुन हंस जिम, भिन्न किये व्है भव्य ॥ ४४ ॥

सुनो ॥ ३७ ॥ १ अधमाधम ॥ ३८ ॥ २ अपने आपको अर्पण करना, ये साम उपाय के पांच भेद हैं ॥ ३९ ॥ ३ दूसरे (शत्रु) के चित्तको प्रीति के वश करके ४ हित के वार्तालाप से साम होवै वह दोनों ओर सुखदाई है जिसको कर्णसुभग कहते हैं ॥ ४० ॥ ५ परस्पर सौगन आदि करके विश्वास कराकर साम करै उसको दैविक साम कहते हैं ॥ ४१ ॥ ६ सम्बन्ध को याद कराकर साम करै उसको स्मारक कहते हैं ७परस्पर वांछा होवै सो देकर ८ साम करै वह लोभज साम है ॥ ४२ ॥ मेरा शरीर तेरे अर्थ है यह ९ कहकर करै वह हे राजा पांचवां आत्मसमर्पण साम१०हैं ॥ ४३ ॥ जहां साम से कार्य सिद्ध नहीं होवै तहां ११ करने योग्य भेद उपाय है सो जैसे हंस पानी और १२ दूधको भिन्न भिन्न करदेवै तैसे शत्रुओं को भिन्न भिन्न कर देने से१३कल्याण(शुभ) होता है ॥ ४४ ॥

त्रस्त१ अनादृत२ क्रुद्ध३ तिम, भेद२ उचित व्है भूप ॥
रिपुगत निजजन गुप्त रहि, रचैं भेद२ अनुरूप ॥ ४५ ॥

(मनोहरम्)

प्रानभंग१ मानभंग२ वित्तभंग३ वंधक४ त्यौं,
दारलाभ५ अंगभंग६ आद१ भेद खट६ है ॥
प्रानभय देकैं भेद२ व्है१सो प्रानभंग मान,
हानि भय देकैं व्है२सो मानभंग२ बटहै ॥
तीजो२ वित्तभंग३ वित्तहानि भय देकैं व्है३ सु,
कारा२ भय देकैं व्है४ सु वंधक४ विकटहै ॥
पच्छ दुव२पत्नी भय दे व्है५ दारलाभ५अंग-
भंग भय व्है६सो अंगभंग आति भेदहै ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिद्धि जो न भेदैं२ सन जबहि उपदा३ प्रयोग जिम ॥
सोलह१६ विध नृप सोहु कहत क्रमतैं अभीष्ट१ इम ॥
देश्य२ आब्द३ कर४ द्विरद५ सचिह्न६ निवसथ७ पट८ सासन९
पुरट१० कनी११ पननारि१२ खानि१३ वेलाकर१४भूखन १५
सोलहम१६ भेद प्रतिपत्तिज१६ सु अर्थ नामँ अनुसार इन ॥
नहि बोध प्रकट जिनको न पति ते कति कहियत सुनहु तिन ॥४७॥

डराहुआ, अनादर पाया हुआ और क्रोधी राजा भेद करने के उचित है सो अपने लोग १ शत्रुके पास जाकर अपने सदृश भेद रचैं ॥ ४५ ॥ २कैद का भय देकर करैं सो ३भयंकर वंधक नाम भेद है और दोनों पक्ष में४स्त्री को छीनने का भय देकर भेद करैं उसका नाम दारलाभ है और शरीर के नाश का भय होवै वह अंगभंग नामक भेद है ॥ ४६ ॥ ५ भेद करने से कार्य सिद्धि नहीं होवै तब ६नजराना देनेका प्रयोग करैं सो सोलह प्रकार का है ७इनके अर्थ इनके नामों के ही अनुसार है परन्तु नामों मे जिनके अर्थ का ८ ज्ञान (समझ) प्रकट नहीं होता है उनको कहता हूं सो ९ हे पति रामसिंह सुनो ॥ ४७ ॥

(पादाकुलकम्)

मंगैंसुहिदैबो१ अभीष्ट१ मत, दैबो देस२ सु देश्य२ कहावत॥
सह कुटुंब निबहैं जिहिं धन सन, अब्द इक्क१।३वह आब्द३महामन४८
देसहिं रक्खि तास कर दैबो४, कर४ नामक उपदा३ वह कैबो॥
सप्तिदान६ जह तुरग समप्पाहिं६, अरु निवसथ७ सु ग्राम जह अ-
प्पाहिं७॥ ४९॥
जबलग व्हैं ग्राहक सपिंड जन, तबलग जो न लुपत९सो सासन॥
कांचन१० पुरट१० कनी११ कन्या११ कहि, वेश्या१२ तिम पन-
नारि१२ नाम वहि॥ ५०॥
रत्न१ सुवर्ण २ रजत३ निकसैं जहँ, तिहिं दैबो १३ खनिदान १३
ख्यात तहँ॥
जहँ बहित्र जीवन उतरैं धन, वेलाकर१४ कहियत तस बितरन५१
पीठ१ चमर२छत्रा३दि दान पहु, मान बढन१६प्रतिपत्तिज१६मन्नहु॥
गज५पट८भूखन१५अर्थपंकटगहि, लेहुसमुझिसँत्वरप्रबोधलहि५२

जो मांगैं सोही देवैं उसका नाम अभीष्ट हैं, देशका देना है उसको देश्य कहते हैं. जिस धन से १एक वर्ष पर्यन्त सब कुटुम्ब का निर्वाह होजावै उस दान को बड़े लोग आब्ददान कहते हैं॥ ४८॥ देश को रखकर उस देश के २ हासिल को देना है उस भेट का नाम कर है, जिस नजराने में ३ घोड़े देवैं उसको सप्तिदान कहते हैं और जिससें ग्राम दियेजावैं उसको निवसथ दान कहते हैं॥ ४९॥ लेनेवाले के ४ सापिण्डी (सातपीढी) तक के मनुष्य रहैं तबतक नहीं लुपै उस दान को सासन कहते हैं ५ सुवर्ण देने को पुरटदान और कन्या देने को कनीदान कहते हैं, वेश्या देने को पननारि नामक दान कहते हैं॥५०॥ जहां पर रत्न, सोना ६चांदी निकलै उसका देना खानि देना प्रसिद्ध है, जहां ७ जहाज (नाव) की उतराई के धन से जीवन होता होवै उसको ८ देना वेला कर कताहा है॥ ५१॥ ९ सिंहासन, चमर, छत्र आदि मान बढानेवाला राजा का देना है उसको प्रतिपत्तिज कहते हैं और हाथी देने से द्विरद दान, वस्त्र देने से पटदान, गहना देने से भूषण दान कहाता है सो इन के १० नामों से ही अर्थ प्रसिद्ध है वह ११ शीघ्र प्रबोध लेकर समझलो॥ ५२॥

सिद्ध काज जो व्है न दान३ सन, पंदह१५ भेद दंड४तहँ प्रेरन ॥
देसनास १ अरु अंगछेद २ जिम, गोग्रह३ धान्य हरन ४ बंधन तिम ॥ ५३ ॥
देसहरन६ अरु धन आदान७ हु, पुनि सर्वस्वहरन ८ पहिचानहु ॥
दुर्गभंग९सहस्थानदाह१० श्रुत, देसनिकास११जुद्धघातन१२जुत५४
अवविसदंड१।१३ आभिचारिक२।१४ इम, अनुचित छद्मघात ३।१५ जहँ अंतिम३ ॥
पहिले दम बारह१२ प्रबलनके, अग्ग तीन३निंदित अबलनके५५

॥ घनाक्षरी ॥

बेल१ बन२ छेदैं१ त्यौं निवाननकौं भेदैं२लूटि,
जारैं पुर१ ग्रामन२ कौं३ सोतो दंम४ देसनास१ ॥
छेदैं पैरपाच्छिनके अंग२ वह अंगछेद२,
सर्व पसु आनैं घेरि३ गोग्रह३ दुख दुरास ॥
धान्य सब लूटैं४ धान्य हरन सु जानौं बंधैं,
धनकैं कुटुंबी५ नाम बंधन५ विदित तास ॥
सत्रुकी प्रजाकौं बिसवासबढैं तैसैं रहि,
आपुनी करैं६ सो देसहरन६ बलिष्ठ बास ॥ ५६ ॥
बलतैं दबाइ दंडि सत्रु धनलै७सो धन–

जहां दानसे कार्य सिद्ध नहीं होसके तहां पन्द्रह भेदवाले दण्ड की प्रेरणाकी जातीहै॥५३॥५४॥प्रथम कहेहुए बारह दंड१प्रबल लोगोंके करनेकेहैं और२आगे (अन्त)वाले निन्दनीय तीन दण्ड निर्बलों के करने के हैं ॥५५॥ बाग को और वनको काटना, जलाशयों को फोड़ना और नगरोंको व ग्रामों को लूटना और जलाना, इस ३ दंडको तो देशनाश कहते हैं ४ शत्रुओं के अंग छेदना अंगछेद है और सब पशुओंको घेरकर लाना यह खोटी आशावाला दुःखदायक गोग्रह नामका दंडहै, सब धान्यको लूटना धान्य हरण दंडहै५धनवानों और कुटुंबियों को बांधना इसका नाम बंधन प्रसिद्ध है, शत्रुकी प्रजा का विश्वास बढ़े तैसे रखकर अपनी करै उसबलवान् बास करनेवाले दण्डको देशहरण कहतेहैं॥५६॥

दान७ सरबस्वलैं८ सो जानौं सरबस्वहार८ ॥
गढन गिरावैं९ दुर्गभंग९ सो त्यौं *खंधावार,
सत्रुकौं प्रजारैं१० सो है स्थानदाह१० नाम धार ॥
देसतैं निकासैं११ देसनिर्बासक११ नाम ताको,
जुद्धकरि मारैं१२ जुद्ध घातन१२ सो है उदार ॥
राम२०।१४ प्रभु ऐसैं बलवान होइ ताके करि-
बेके कहे द्वादश१२ ही ए तो दंड४ के प्रकार ॥ ५७ ॥

॥ प्रकृतिः ॥

निबल उचित अब दम त्रय३ भनैं, है बिषदंड जु गेर करि हनैं१ ॥
आभिचारिक२जु आभिचारिसौं२, छद्मघात३तिम छल वारसौं३ ५८

(मनोहरम्)

सावधान ऐसैं प्रभुतादिक त्रि३ सक्तिनमैं,
संधि मुख छ६ गुन प्रपंच पटुता धरैं ॥
साम१ आदि च्यारि४ हु उपाय अनपाय जानैं,
भेदन सहित सप्त७ प्रकृति हिये हरैं ॥
वर्णा१ऽऽश्रम२ राज३धर्म राजनय४ नेता न्याय५,

सेना से दबाकर शत्रुको दंड देकर धन लेवें उसका नाम धनदंड है, और सर्वस्व छीनने को सर्वस्व कहते हैं, गढ के गिराने को दुर्गभंग और शत्रुकी *राजधानी को जलावैं उसका नाम स्थानदाह है, देशसे निकालने को देशनिर्वास और युद्ध करके शत्रुको मारैं उसका नाम युद्धघात है, सो हे प्रभु रामसिंह ये बारह प्रकार के दण्ड तो बलवान् शत्रुके करने के कहे हैं ॥५७॥ अब निर्बल के करने के तीन दंड कहते हैं कि १जहर देकर मारैं उसका नामविष दंड है, और यंत्रमंत्र से मारैं उसको २आभिचारिक दंड कहते हैं ३छलके वार(घात) से मारैं उसका नाम छद्मघातहै ॥५८॥ इसप्रकार४प्रभुता आदि तीन शक्तियोंमें सावधान५संधि आदि छहों गुणों के रचने में चतुर,६नाश रहित साम आदि चारों उपायों को जानैं और भेदोंके साथ राज्य के सातों अंगों को हृदय में धारण करैं, वर्ण धर्म, आश्रम धर्म, राज धर्म और राजनीतिको ७प्रवृत्त करनेवाला, न्यायचतुर, उदार,

निपुन उदार६ कोस कुधन नहीं भरैं७ ॥
ऐसो नृप आपुनैं स्वतंत्र८ आप ह्वै सो एक१९,
उद्यमी१० असेस अवनीकों अपनी करैं ॥ ५९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सप्त७ राज्य अंगन बिच स्वामी१, नँयपटु१ सूर२ होत इम नामी ॥
अंग द्वितीय२अमात्य२सुनहु अव, सह लच्छन शेष५हु प्रतीक सब६०
श्रुतसंपन्न१कुलीन२धीर३सुचि४, रागद्वेष२बर्जित५आस्तिकरुचि६॥
बाग्मी७सम्मत८सास्त्रबिसारद९,नयप्रगल्भ१०अनुकारक११निर्गद.
आय१व्यय२पटु१ ३सत्यसंघ१४इम,सूर१५अबैर१६महासत्व१७हुतिम
उपधाँसुद्ध१८कुलक्रम ऐंधित१९, होत सचिव२ऐसे स्वामिनहित६१
अंग तृतीय३ सुनहु मंत्री१अब, साध्य१असाध्य२बिबेक धरैं सब१
देस१सुदिष्ट२अपोहँन१ऊँहन२,निपुन२।३धीर४स्वाकारनिगूहन५ ६
स्वीय देस संभूत६ महामति७, गहैं सबन आकृति१ इंगित२गति८॥

१ खजाने में खोटे धन को नहीं धरनेवाला २ संपूर्ण भूमि को अपनी करता है ॥ ५९ ॥ राज्य के सात अंगों में स्वामी (राजा) है वह इसप्रकार ३ नीति चतुर और धीर नामी होता है ४ बाकी के सब अंगों को भी अब लक्षण पूर्व सुनो ॥ ६० ॥ ५ वेद की सम्पत्तिवाला अर्थात् वेद शास्त्र जाननेवाला कु० धीर पवित्र राग द्वेष से वर्जित ६परमेश्वर को मानने में रुचि रखनेवाला उत्तम बोलनेवाला, सन्मानपात्र, शास्त्रों का जाननेवाला ८नीति में बु० ९ अपने सदृश कार्य करनेवाला१०रोग रहित ॥६१॥ ११आमद खरच के में चतुर १२ सत्य प्रतिज्ञावाला, इसी प्रकार वीर, वैर रहित१३बड़ा पराक्रमी १४ धर्मार्थ आदि चारों पुरुषार्थों की परीक्षा करने में शुद्ध १५ कुल के क्रम से बढाहुआ, ऐसा सचिव होवे सो स्वामी का हित करनेवाला होता है ॥ राज्य का तीसरा अंग मंत्री है सो सुनो १६ होनेवाले और नहीं होनेवाले कार्यों के विचार (ज्ञान) को धारण करनेवाला देश काल १७ काम क्रोध शोक आदि से व्याकुल चित्तवाले को १८ तर्कना करनेवाला, निपुण, धीर १९ अपने आकार को गूढ रखनेवाला ॥ ६२ ॥ २० अपने ही देश का उत्पन्न हुआ बुद्धिमान, सब की आकृति और २१ चेष्टा से गति को जाननेवाला

प्रथित[१]अलुब्ध[२]१०मंत्ररक्खनपर११,कुपथभूपप्रातिंप्यसुपथकर[३]१२ ६४
पंच५हिमंत्रअंगपरिचार्यक[४]१३, आप्त१४कुलीन१५दूरदृग[५] दायक१६॥
असे ठहै मंत्री[६]३ अवनीपन१, पैरन गांजि प्रभु सुजस प्रदीपन ॥६५॥
अंग चतुर्थ४कोस४कहियत अब, संचित जह रत्ना१दि द्रव्य सब॥
पंच५ रत्न तह पुब्ब प्रमानहु, जिनमैं प्रथम१ बज्र१ मनि जानहु ६६
तास पंच५ गुन पंच५ दोस तिम, जंपिय चउ४ छाया बृद्धन जिम॥
लघु१छ६कोन२वसु८कोन३रुनिर्मल४,अग्रातिग्म५ए५तोगुनअतिफल
त्रास१ बिंदु२ मल३ रेख४ काकपद५, हीरकं१मैं ए पंच५दोसहद ॥
छाया स्वेत१अरुन२पीत३असित४,है क्रमतैं चउ४बर्नउचितहित६८
मनि दूजो२ मुक्ता२ सु धैराधव[१२], तस इभ[१३]१ अहि[१४]२ किटि[१५]३ तिमि[१६]४
सिर संभव ॥
उपजत संख५ सुक्ति[१७]६बंस७न उर, धाराधर[१८] बिंदुज८अष्टम८धुर६९

१ प्रसिद्ध २ निर्लोभी, शत्रुओं से अथवा किसी अन्य से मंत्र(सलाह) की रक्षा करनेवाला, कुमार्ग में चलनेवाले ३ प्रतिकूल राजा को शिक्षा देकर सुमार्ग में चलानेवाला॥६४॥ मंत्र (सलाह) के पांचों अंगों को ४ जाननेवाला, सत्यवादी, कुलवान ५दूरदर्शी ६राजाओं के ऐसे मंत्री(सलाहकार)होवें वेही७शत्रुओं को मारकर स्वामी के यश का प्रकाश करतेहैं ॥६५॥ राज्य का चौथा अंग खजाना है जिसको कहते हैं जिसमें रत्न आदि सब द्रव्य संचय रहता है तहां प्रथम पांच रत्न हैं जिनमें भी प्रथम ८ हीरे को जानो ॥६६॥ जिस हीरे में पांच गुण, पांच दोष और पांच छाया वृद्धों ने कही हैं, इनमें हलका (भार रहित) होना, छकोन, अटकोन, मल रहित और आगे का भाग तीखा होवे ये पांच तो ९ अत्यन्त फल देनेवाले गुण हैं॥६७॥त्रास(मणिदोष विशेष)अन्य रंग का छिड़का मैल,लकीर, काकचरणके समान चिन्ह१०हीरेमें ये पांच ही दोषहैं और श्वेत, लाल, पीली, काली ये चार छाया क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र११वर्ण हैं सो अपने अपने उचित हित करनेवाली हैं अर्थात् जिसवर्ण की छाया होवे वह उसी वर्ण को हित करनेवाली है ॥ ६८ ॥ १२ हे राजा दूसरा मणि मोती है जिसका जन्म १३ हाथी १४ सर्प १५ सूवर १६ मच्छ इन के मस्तकों में होता है और शंख, १७ सीप और बांस के भीतर भी उत्पन्न होते हैं और आठवीं उत्पत्ति १८ मेघ धारा के बिंदु में भी होती है ॥ ६९ ॥

गुनसर५ज्योति१वृत्तपन२गुरुपन३, अरुबिमलत्व४स्नि० ७
दोसदस१०हि चउ४ बडे छ६ छोटे, मन्नहु तहँ पहिले चउ४मोटे७०
सिमिहंग१सुक्तिलग्न२ अरु तीजो३, जरठ३ दीप्ति१ छायाबिनुहीजो
बिद्रुमकांति४ चतुर्थ४ दोस बहि, लघु छ६दोस सुनिये अब क्रम लहि ॥ ७१ ॥

जुबलीबलित१ त्रिवृत्त१ सो तर्जित, बलि चर्पट२बर्तुलता बर्जित२
व्है प्रलंब३ कृस३नाम कहावैं, पुनि जु त्रि३कोन४ त्र्यस्र४पद पावैं
खंड५नाम सपिटक अवृत्त५ खिल, कहुँक भुग्न६ कृपापार्श्व६ छ ठो६ किल ॥
पीत१ मधुर२ सित३ सिति४ चउ४ छाया, इनमैं चोथी४ असुभ अनाया ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

तीजो३ मनि मानिक्य३ तहँ, गुन चउ४ औगुन अष्ट८ ॥
बहुसिता१दि धूम्रा२दि छवि, करैं तथा सुख१ कष्ट२ ॥ ७४ ॥

जिनमें १ गोल २ भारीपन (बोझल) ३ निर्मलता ४ सचिक्कणता और ५ मोटा (बड़ा)पन ये पांच तो गुण हैं और दश दोष हैं जिनमें पहिले के चार बड़े और पिछले छः छोटे हैं ॥७०॥ ६ बड़े छिद्रवाला अथवा जिसके छिद्र में कीड़ा लगा हुआ होवे वह ७ जिसमें सीप का टुकड़ा लगा होवे ८ बिना छाया, जिसकी मंद कांति होवे ९ मूंगा के समान कान्तिवाला ये चार तो बड़े दोष हैं और अब छः दोष छोटे हैं सो सुनो ॥ ७१ ॥ झुरियों (सलों) से घिराहुआ १० तीन गोलाईवाला होवे सो डरानेवाला भयदायक है, फिर चपटा ११ गोलाई रहित १२लंबा होवे उसको कृश कहते हैं, १३और तीन कोनेवालेको त्र्यस्रपद कहते हैं ॥ ७२ ॥ जो खंडित होवे उसका नाम १४ सपिटक है, वह खंडित होने से बाकी का भाग गोलाई रहित होता है १५ कुछ टेढा बांका होवे उसको १६ निश्चय ही कृपापार्श्व कहते हैं, पीली १७महुवा के रंग के समान १८श्वेत १९ काली, ये चार छाया होती हैं इन में चौथी श्याम छाया अशुभ और २०पीड़ाकारी है ॥ ७३ ॥ तीसरा रत्न माणिक्य है जिसमें चार गुण और आठ औगुण हैं और श्वेत आदि व धूम्र आदि बहुत छवि हैं वे २१गुणतो सुख करते हैं और

निर्मलपन१ अतिरक्तपन२, स्निग्धछवित्व३ गुरुत्व४ ॥
गदितें च्यारि४ मानिक्य गुन, ए जिन्ह भद्र उरुत्व ॥ ७५

॥ पादाकुलकम् ॥

द्विर छबिर दोषहैं जहँ छाया दुवरा१, व्है द्विररूपर तस नाम द्वि २ पदर हुव ॥
भिन्न जु व्है३सु दोस भेदा व्हयं३, रेनुंजुत४सु कर्कर निरखहुनय७६
जुपटदोस पयं रंग लसुनँ५ जहँ, तिम जड़६ नाम रंगबिनु व्है तहँ
मधुं निभ कांति७सु कोमल७मानहु, धूमकांति८धूम्र८सु उरआनहु
मन्नहु इंदनील४ चोथो४ मनि, तहँ गुन पंच५ छ६ दोस दये तनि
छाया अष्ट८ कहिय छितिनायक, देखहु गुन५जे अब सुभदायक

॥ दोहा ॥

स्निग्धछवित्व१ सुरंगपन२, रंजन पासपदेस३ ॥
गुरु४ता अरु तृनग्रांहिता५।७९, इहि गुन पंचक५ एस ॥ ७९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनहु दोस जहँ पटल११ अभ्रसम१, अभ्र१२हि तस अभिधान अनुत्तम

अवगुन दुःख करते हैं ॥ ७४ ॥ निर्मलपना, बहुत लालपना, सचिक्कण छवि और भारीपन १ ये माणिक्य के चार गुण कहते हैं सो ये जिनके होते हैं २पड़ा कल्याण होता है ॥ ७५ ॥ जिसमें दो छाया होवै उसका नाम द्विछवि दोष है ३ जो दो रूप रंगवाला होवे उसका नाम द्विपद दोष है, जो माणिक्य फूटा होवे ४ उसका नाम भेद है ५ रेणु[रेत] युक्त होवे उस दोष का नाम कर्कर है ॥ ७६ ॥ ६ दूध के समान श्वेत रंग का जिससें ७ चिन्ह होवे उसको पट दोष कहते हैं, जो बिना रंग का होता है उसका नाम जड़ है ८ महुवे के सदृश जिसकी कान्ति होवे उसको कोमल नाम का दोष मानो और जिसका रंग धूम्र के समान होवे उसका नाम धूम्र दोषजानो ॥ ७७ ॥ ९चौथा मणि नीलम है ॥ ७८ ॥ सचिक्कण छवि, श्रेष्ठ रंग, समीप के प्रदेश को रंग युक्त करना, भारीपन १०आकर्षण शक्ति से तृण को अपने में चिपका लेना, नीलमणि में ये पांच गुण हैं ॥ ७९ ॥ जिसमें बादल के समान ११ जाला होवे उसका १२ नाम ही अभ्र है सो उत्तम नहीं है,

व्है सह रेनु[1] सर्करीर[2] आठहय, दै जु भिन्न[3] भ्रम[3] त्रास[3] सु हठ दय ॥ ८० ॥

भिन्न[3] हि व्है जु भिन्न[4] तिहिं भाखत, मृद्गर्भ[5] जु मृत्तिका[4] गर्भ[5] मत ॥

असमगर्भ[6] असमाहि जब अंतर[6], बसु[8] छाया अब सुनहु धरावर[८१]
नीलीरस[1] वैष्णवी[1]सुमन[2] निभ, लवणी[3]सुम[3] इंदीवर[4] घन[5] निभ॥

मननिभ[1] घननिभ[2] अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सिवगल[6] विष्णुसरीर[7] उमासुम[8], तिन[12] सन्निभ इम अष्ट[8] गिनहु तुम ॥ ८२ ॥

सिखिगल[13][9] मधुकर[14]पच्छ[2][10] समहु तस, द्वै पुनि धरि कति कहत कांति दस[10] ॥

पय[15]में नील[4] गेरि पिक्खहु पय, नील होइ सुहि नील[4] सत्य नय[८३]
मनि पंचम[5] मरकत[16][5] इम मन्नहु, पंच[5] हि गुन तस दोस सप्त[7] पहु
बसु[8] छबि अब पंच[5] हिं गुन बरनत, सुराग[17]त्व[1] नीरेनुक[2] सम्मत[८४]
पुनि गुरुता[3] स्निग्धता[4] विमलपन[5], देखहु पैहु सप्त[7] हि अब दूखन

जो[1]रेत सहित होवे उसका नाम शर्करी है, हे हठदयावाले रामसिंह[2]फूटे हुए का भ्रम देवें उसका नाम त्रास है ॥ ८० ॥ और जो यथार्थ में [3]टूटा होवे उसको भिन्न कहते हैं, जिसके भीतर [4] मिट्टी होवे उसको मृद्गर्भ कहते हैं [5] जिसके भीतर पत्थर होवे उसको असमगर्भ ही कहते हैं, हे राजा अब आठ छाया सुनो ॥ ८१ ॥ नीलके रस और [6] तुलसी के पुष्प के सदृश [7] लोणीनामक वृक्ष विशेष के पुष्प [8] नीलकमल और मेघ के सदृश [9] शिव के कंठ [10] विष्णुके शरीर [11] हलदी के पुष्प [12] इनके सदृश आठ छाया जानो ॥ ८२ ॥ और कितने ही लोग [13] मयूर के कंठ [14] भ्रमरके पंख के समान दो छाया फिर रखकर सब दस छाया कहते हैं [15] नीलमणि को दूध में डालकर देखो सो वह दूध नीला होजावे सोही सच्चा नीलम है ॥ ८३ ॥ पांचवां मणि [16] पन्ना है उसके हे राजा पांच गुण और सात दोष हैं और आठ कान्ति हैं [17] श्रेष्ट रंग [18] बिना रेण(रेत) ॥ ८४ ॥ भारीपन, सचिक्कणता निर्मलपना, ये पांच तो पन्नाके गुण हैं और [19] हे राजा अब इसके सात दूषण हैं सो देखो कि जिसमें

होइ रूक्षता[1]१रूक्ष१कहावत, पिटक[2]२नजुत सपिटक२पद पावत८५
छायाहीन३ सु मलिन३ महीबर[3], अस्मगर्भ४ अस्मांहि[4] जब अंतर ॥
रजजुत[5]५नाम सकर्कर५शङ्खिय, दीप्तिहीन[6]६—ज इम आखिय८६
पुनि कल्माष७जहाँ कर्बुर[7] पन७, बसु८ छाया अब सुनहु धराधन
सुकसिसु[8]१ केकि[9]२ किकीदिवि[10]३ छद सम, काच हरित ४ सैवल[11]
सोद्वल[12]६ क्रम ॥ ८७ ॥
सिरीषसुम[13]७खद्योत[14]पृष्ठ८सह, इन[15] सान्निभ बसु८ छबि मरकत यह
कृत्रिम मनिन परिच्छा कहियत, लाभ उचित निश्चै जिम लहियत

॥ षट्पात् ॥

कृत्रिम बज्र[16]१ जु करत बज्र बिद्धहि वह बिगरत१ ॥
कृत्रिम मुक्ता[17]२कर मिटन जल१ लवन२ धोइ२ मत ॥
कृत्रिम ठहै[18] मानिक्य१।३ नील[19]२।४ मरकत[20]३।५ मुख तौ तब॥
इन३कौं घिसि१ औटाइ२ सत्य२ मिथ्या१ परखत सब ॥

---

१ रूखापन होवे वह रूक्ष कहलाता है और जो २छालों [जालों] सहित होवे वह सपिटक पद को प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥ ३ हे राजा जो पन्ना कान्ति से हीन होवे उसको मलिन कहते हैं ४ जिसके भीतर पत्थर होवे वह अश्मगर्भ है ५ जो रेत से युक्त होता है उसका नाम सकर्कर है ६ जिस में कांति नहीं होवे उसको दीप्ति हीन कहते हैं ॥ ८६ ॥ जिसमें ७ काबरा (रंग बिरंग पन) होवे उसका नाम कल्माषपाद है, इस पन्ने में आठ प्रकार की कान्ति होती है सो हे राजा अब सुनो ८ शुक (सुवा) पक्षी के बच्चे की ९ मयूर की १० चातक (पपीहे) की पंखों के समान, हराकाच ११ कुमोदनी (कांजी) १२ बालतृण (उगता हुआ घास) के समान ॥८७॥१३ शिरीष(वृक्ष विशेष)के पुष्प के और १४ जुगनू (आगिया) की पीठके समान १५ ऊपर कहीहुई के सदृश आठ कान्ति पन्ने की हैं ॥ ८८ ॥ १६झूठा हीरा है वह तो सच्चेहीरे से बेधने पर बिगड़ जाता है और झूठे १७ मोती की शोभा(जिलह) नमक से धोने से मिटजाती है. झूठे माणिक्य १८ नीलम१९ पन्ना २०आदि नगों (मणियों) को घिसकर जल में उबालकर सच्चे झूठे की परीक्षा करते हैं सो औटाने से

हैं कथित१ कुराग२ रु घृष्ट१ मृदु२ ते सबै कृत्रिम जानिये॥
इह रत्न पंच५ ए मुख्य अब मनि सप्तक७ लघु मानिये८९
सूर्यकांत१ जो सूर्यकिरन लहि बन्हि प्रकासत१॥
चन्द्रकांत२ जो चन्द्रअंस छवि स्राव उपासत२॥
पुष्पराग३ वैडूर्य४ स्फटिक५ गोमेद६ रु विद्रुम७॥
यह सप्तक७ लघु आहि सकल द्वादस१२ तकहु तुम॥
गुन तीन३ सब१२हि रत्नन गिनहु कांति१ कठिनपन२ स्वच्छपन३॥
तजि पवि१गुरुत्व४गुन ग्यारहम११गुन पवि१गत लाघव४ लखन९०

(दोहा)

इन१ रत्न१न करिकैं अधिप, करैं निचित निज कोस४॥
हाटक३ सोलह१६ वर्णहैं, इनमैं अंत्य१ अदोस॥९१॥
पावक तपि न घटैं पुरट२, सोलह१६वर्ण सु जानि॥
नवरवि१ बिज्जु२ प्रकास निभ, अर्जहिं कोस४न आनि॥९२॥
रजत३ नाग मिश्रित रुचिर, सुचि ज्वालित बिच सुद्ध॥

१रंग बिगड़जावे और२घिसने में कोमल होजावे उसको झूठा जानो, ये पांच तो मुख्य रत्न हैं और अब सात छोटी मणियों को कहते हैं॥८९॥ सूर्य की किरणों से जिससे ३ अग्नि उत्पन्न होजावै वह सूर्यकान्तमणि है, और चंद्रमा के किरणों से शोभा सहित ४ टपकनेलगे वह उसी की उपासना करने वाली चद्रकान्तमणि है ५ पुखराज, वैडूर्यमणि (लहसनिया) स्फटिकमणि, गोमेदमणि और मूँगा ये सात छोटी मणियां ६ हैं ७ हीरे को छोड़कर बाकी की ग्यारह मणियों में भारीपन गुण है और एक हीरे में ही ८ हलका होना गुण है॥९०॥ ९ अपने खजाने में संग्रह करैं, इन मणियों के अंत में सोलह वर्ण का १० निर्दोष सुवर्ण इकट्ठा करैं॥९१॥ सोलह बार अग्नि में तपाने से कुन्दन होता है वह ११सुवर्ण अग्नि में तपाने से नहीं घटे तब उसको कुन्दन जानो जो १२ प्रभात के सूर्य और बिजुली के प्रकाश के १३ सदृश होता है ऐसे सुवर्ण को खजाने में १४ संग्रह करै॥९२॥ १५सीसा मिलाकर १६अग्नि में जलाने से चांदी शुद्ध होती है

ऐंका ससि संकासरुचि, परिचित करहिं प्रबुद्ध ॥ ९३ ॥
रत्न१ रु द्रुव२ हाटक१।२ रजत२।३,अघटित१।२घटित२।३असेस
कोस४ अंग चोथो४ करैं, नय चित निपुन नरेस ॥ ९४ ॥
करके च्यारि४ बिभाग करि, धर्म्म१ अर्थ२ अरु काम३ ॥
तीन३नमैं त्रय३ बंट तजि, धरै चतुर्थ४हिं धाम४ ॥ ९५ ॥
सस्त्र१ बस्त्र२ धान्यादि३ सब, संचय इतरहु सज्जि ॥
पूरन रक्खै कोस४पहु१, गिनैं सुकर सब गज्जि ॥९६॥भेकप्लुतिः
मुक्त१ अमुक्त२ रु मुक्तामुक्त३, यंत्रमुक्त४ प्रहरन१ चउ४ उक्त॥
अरि१असि२सक्ति३रुसर४इत्यादि,बिक्खहु९४क्रमकरि रनबादि९७
बादर१ रांकव२ क्षौम३ बखानि, जिम कौशेय४ बसन२चउ४जानि
सूत१रु रोम२सन३सु पुनिपट्ट४, वस्त्र१न भवक्रम करि चउ४बट्ट९८
सूक१अनगु२अणु३धूर्त्रय३धान्य३,महितसजातिहुसबहमान्य॥

जिसकी कांति१पार्वती[गौरी]और चन्द्रमाकी उज्वलता की शंका करातो होवे ऐसी चांदीकी चतुर लोग२परीक्षा(पहचान)करके संग्रह करैं ॥९३॥ रत्न, सुवर्ण, चांदी,४घडेहुए औरश्विनाघड़े इन पदार्थोंसे१राज्यकेचौथे अंग(खजाने)को नीति चतुर राजा पूर्ण करै ॥ ९४ ॥ ६हासिल के चार बंट करके तीन बंट तो धर्म, अर्थ और काम में लगावें और चौथा बंट(हिस्सा)खजाने में रक्खे ॥९५॥ अन्य संचय से भी खजाने को पूर्ण करके राजा उसको ७ सुख करनेवाला मानकर तथा उसको अपने हाथ में(स्वाधीन) किया जानकर सब पर गर्जना करै ॥९६॥ चार प्रकार के ८ शस्त्र कहे हैं जिनमें हाथ से छोडकर चलायाजावै उस चक्र आदि को मुक्त कहते हैं, और हाथसे विना छोडे चलायेजावैं उन तलवार आदि को अमुक्त कहते हैं, और हाथसे छोडकरभी चलायेजातेहैं और विना छोडे हाथ में रखकर भी चलायेजाते हैं वे भाला, बरछी आदि मुक्तामुक्त कहाते हैं, और जो यन्त्रसे प्रेरेजाते हैं उन बाण और गोली आदिको यन्त्रमुक्तकहते हैं, जिन को युद्ध में वाद [हठ] करनेवाले (वीर) ९चक्र, तरवार, बरछी और तीर आदि क्रम से देखो ॥९७॥१०सूतके वस्त्र ११ऊनके वस्त्र १२सणके वस्त्र १३रेशमके वस्त्र ये चार प्रकारके वस्त्र होते हैं ॥ ९८ ॥ १४ मुख्य करके धान्य तीन प्रकार का है, जिनमें चावल,जव, गेहूं आदिको सूकधान्य कहतेहैं और चना,उड़द,मूंग, मोठ,

सालि१ चनक२ कोदव३ क्रम साहि, इनबिच समुझहु अखिल१७ उमाहि ॥ ९९ ॥
तैल१४ रु *तूल१५घृत१६ दिहु तत्थ, सोर४७ रु सीसक५८ यंत्र६९ समत्थ ॥
इति९सुख संचय बिरचि असेस, रक्खहिं संभृत कोस४नरेस १०० ॥
दोहा—अंग पंचम५ सु देस५ अब, भनिय चतु४र्विध भूप ॥
इक१ अनूप१ दूजोर२ उत्रिल२, नदीजीव२अनुरूप ॥ १०१ ॥
वृष्टिजीव३ तीजो३ बहुरि, जंगल४ चोथो जानि ॥
उत्तर२ उत्तर२ है अधम२, पूरब१ सुखद१ प्रमानि ॥१०२॥
जिहिं प्रदेश उफनाइ जल, ऊपर ऊपर आइ१ ॥
जु अनूप१ रु दूजो२ जहां, जीवननदि जल पाइ२ ॥१०३॥
जहँ जीवन लहि वृष्टि जल३, वह तृतीय३ अभिधान ॥
जंगल चोथो४ वृष्टिजल, सुखहिं सद्य सो थान४॥ १०४ ॥

आदि को अनणु कहते हैं और कोदूं, चिणा को अणु धान्य कहते हैं, भूमि इनकी जाति सत्रह है परन्तु चावल, चणा और कोदूं, इन में क्रम करके समझो अर्थात् शुरू में चावल आदि जिसमें जव, गेहूँ सामिल हैं अनणु में चणा आदि जिसमें उड़द, मूँग आदि सब हैं. और अणु में कोदूं जिस में चिणा आदि युक्त हैं ॥ ९९ ॥ तेल * रूई, घृत आदि तथा सीसा बन्दूक तोप आदि समर्थ यंत्र १ इत्यादि सब संचय करके राजा अपने खजाने को २ भरकर रक्खे ॥ १०० ॥ राज्यका पांचवां अंग देश है, हे राजा वह चार प्रकार का कहाता है जिनमें एक जलमई, दूसरा नदी जीनेवाला तीसरा वृष्टि से जीनेवाला और चौथा जंगल है. जिनमें सुख देनेवाले पिछले पिछले अधम हैं ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ इन में जहां भूमि ऊपर आकर जल उफनता होवे उसका नाम अनूप देश है और जहां के जल से जीवन होता होवे उस देश का नाम नदीजीवन है ॥ १०३ ॥ जिस देश में वर्षा के जल से ही जीवन होता है उसका नाम वृष्टिजीवन और जंगल देश वह है कि जहां वृष्टि का पानी ३ शीघ्र सूखजाता है ॥ १०४ ॥

जो इन४सौं कर आय लखि, छमहूकौं कछु छोरि ॥
जोतैं कृषि हल हरखि जिम, रहैं कुलोभहिं मोरि ॥ १०५ ॥
रत्न१ कनक२ अरु रजत३ के, जहँ आकरं जे३ देस ॥
पोतजीव४ जहँ पोतसौं, उतरैं बसु चय४ एस ॥ १०६ ॥
अठ८हि जनपद५ मुख्य ए, महि तिम पंच५ अमुख्य ॥
उपवन१बन२गोचर३अग४रु, खिल खनि५ए सब मुख्य १०७

पादाकुलकम् ॥

इन तेरह१३ देसनके आश्रित, होइ प्रजा जितनी चाहत हित॥
तस्कर१ घोटि २ आदि दुख तिनके, सकल हरैं सीमा बासिनके
तब सब देस रहैं घन बरसत, देस५ अंग पंचम५ यह दरसत ॥
अंगछठो६दुर्ग६भिधअक्खिय, ऋपिनतरी भेदनव९रक्खिय १०९

( )

महिपति दुर्ग६सलिलमय१गिरिमय२, अस्ममय३रु इष्टामय४अत्थ
बनमय५ बिदित मृत्तिकामय६ बलि, सो मरुमय७रु मर्त्यमय८सत्थ

इन देशों की जैसी आमद देखैं वैसा ही उनका हासिल लेवैं और १ जो खेती करने में समर्थ होवैं उनसे कुछ छोडकर हासिल लेवैं जिस कारण खेती करने वाले प्रसन्न होकर हल जोतैं और खोटे लोभ को मिटाकर रहैं ॥ १०५ ॥ रत्न, सुवर्ण, चांदी की जहां खानि होवैं २ उस देश का नाम आकर है, और जहां उतराई का ४ धन देकर नाव से उतरते हैं उस देश को ३ पोतजीवी कहते हैं ॥ १०६ ॥ इस प्रकार चार देश तो अनूप आदि और तीन देश खानवाले और चौथा पोतजीवी ये आठ८देश तो मुख्य हैं, और भूमि के पांच प्रदेश गौण हैं जिनमें ६ बाग, बन७गउओं के चरने की भूमि ८ पर्वत और उपरोक्त तीनों ६खानों के सिवाय बाकी की खानें ये अमुख्य हैं ॥ १०७ ॥ १० चोरों का ११ धाड़ायतियों का ॥ १०८ ॥ राज्य का छठा अंग १२ दुर्ग नामक है १३ जिसके ऋपियों ने नव भेद रक्खे हैं ॥ १०९ ॥ हे राजा ■ दुर्ग जलमई, पर्वतमई, १४ पत्थरमई (पत्थरों से चुनाहुआ) १५ ईंटों से रचाहुआ, १६ निर्जल भूमिमय १७मनुष्यमई (मनुष्यों के समूह का बनाहुआ)

बरनत नवम ९ दारुमय ९ इन ९ बिच, पहिले दुव २ उत्तम पहिचानि ॥
अग्गे छ ६ मित मध्यम२ सुवे इक्खहु, जो अंतिम९ सु अधम४ इक१ जानि ॥ ११० ॥
तहँ अन्न १ रु उदक २ रु घृत३ तैल४रु, तूल५ दारु६ गोलक ७ तिम तोप८ ॥
सीसक९ सोर१० सूत्र११ सन१२सस्त्र१३न, रक्खहि गढद्दन निंचय आरोप ॥
छट्ठो६ अंग दुर्ग६ यह छोनिप, जो छोनिप सज्जैं इहिं६ जुद्ध ॥
मुदित रहैं सु बलिष्ठहुसों मुरि१, पुनि दब्बैं पर अवनि२ प्रबुद्ध ॥
भनित अंग सप्तम ७ बल ७ भेदहु, मनुज१ गज २ रु हय३ रथ ४ चउ४ मान ॥
मनुज१ छ६ भेद प्रथम१ तहँ मौल१सु, पीढिनतैं सु बिसास प्रधान१
दूजो२ भृत्य२ बस जु लहि बेतन२, तीजो३ मैत्र३ जु लहि मित्रत्व ॥
श्रेणि ४ सु ठहै जु समय बस आश्रित४, सो आटविक ५ बन्यजा सत्व ॥ ११२ ॥

नवमादुर्ग काष्ठमई कहतेहैं इनमें प्रथमकहेहुए दुर्ग[जलका और पर्वतका]उत्तमहैं १ और आगे के छः दुर्ग मध्यम हैं २ ये आठ दुर्ग तो श्रेष्ठ वास करने योग्य हैं और अन्तका काष्ठ(लकड़ी)का दुर्ग अधम है ॥११०॥ ३जल ४रूई ५पलीता[ईंधन]६ शीशा ७ इन का संचय करके रक्खैं, ८ हे राजा रामसिंह राज्य के छठे अंग इस दुर्ग को जो राजा युद्ध में सज्जित करता है वह ९ बलवान से भी मुड़कर प्रसन्न रहता है और वह चतुर पराई १० भूमि को दबाता है ॥१११॥ राज्य का सातवां अंग ११ सेना है जिसके मनुष्य, हाथी घोड़ा, रथ ये चार भेद हैं इनमें प्रथम मनुष्य के छः भेद हैं, जिनमें पीढियों से १२ मोल लिया हुआ होवे वह विश्वास में मुख्य है, दूसरा सेवक वह है जो १३ तनखाह लेकर वश हुआ होवे, तीसरा मित्रता से वश हुआ होवे, चौथा सेवक जो समय के वश से आश्रित हुआ होवे उसको श्रेणि कहते हैं १५ वनके उत्पन्न हुए सत्व से जो आश्रित हुआ होवे उसको १४ आटवी कहते हैं ॥ ११२ ॥

त्यत्थ१ सत्व२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥

अरि ह्वै स्ववस दबायो इतरन६, सो अमित्र६ समुझहु नरनाह॥
उत्तम१त्रय३चोथो४मध्यम२ इह, पुनि अंतिम५।६दुव२ अधम३सिपाह
बल७ को अंग द्वितिय[2]जु वारन२, सुहु चउ४विध नामन अनुसार॥
भद्र१मंद२मृग३मिश्र४भिदा[3]भनि. पुनि मुनि सूचित[4] सुनहु प्रकार११३
मधुनिभ[5] दंत१जघन[6]सूकर सम३, उन्नत३ वंस[7]धनुख आकार३
सुंडा४ वृत्त४ लोम५ मृदु५ संजुत, ह्वै गर्जित६ वारिद[10] अनुहार६॥
रंग हरित७सुरभित[11]७मद राजत, ओठ८ रु मुख८ काकुद[12]८ आरक्त[13]
मत्त९हु वाह्य[14]९नयन१०मधुपिंगल[15]१०,——वृत्त११ग्रीवा११ सु बिभक्त
जो करसप्त७।१२उच्छ्रित[16]१२रु जाकै, अठारह१८।१३कि बीसनख्य आहि
इभ२ जिहिँ भूप चतुर ह्वै ऐरिस[17], भाखत भद्र१ जाति करि जाहि
सिंह[18]१नयन१ कक्षा२ उर२सिथिल[19]२ रु, लंब३थूल१ पेचक[20]३गलपेट
जास चतुर ऐसो इभ२ जाकै, भनि बुध करत मंद[21]२ पन भेट ११५

१ हे राजा जो अन्य लोगों का दबाया हुआ शत्रु अपने वश में होजावै उसको अमित्र समझो, इनसे पहिले कहेहुए तीनतो उत्तमहैं और चौथा सेवक मध्यम है और अन्त के दोनों(पांचवां और छठा)अधमहैं२सेना का दूसरा अंग हाथी है सो भी नामों के अनुसार चार प्रकारका है३भेद कहकर ४ मुनियों के सूचना किये हुए प्रकार सुनो ॥ ११३ ॥ ५ दूधके अथवा महुवे के समान जिसके दांत होवैं और सूवर के समान (पुष्ट) ६जंघा होवैं और धनुष के आकार७उठी हुई पीठकी हड्डी (बांसेका हाड) होवै ८ गोल सुंड कोमल ९ केशों सहित होवै १० मेघ के समान गर्जना, हरे रंग का और ११ सुगंधिवाला जिसका मद शोभा देता होवै और जिसके होठ, मुख १२ तालुवा १३ लाल होवैं मस्त होने पर भी १४ सवारी देता होवै, जिसके नेत्र १५महुवा के समान पीले होवैं और श्रेष्ठ भाग में बंटी हुई गोल गरदन होवै ॥ ११४ ॥ जो हाथी सात हाथ १६ ऊंचा और जिसके अठारह अथवा बीस नख होवैं १७ ईदृश[ऐसा] हाथी जिस राजाकी हस्तिशालामें होवै उसको भद्रजाति कहते हैं १८जिस हाथी के नेत्र सिंह के समान होवैं कूख और छाती १९ढीली होवै २० पूंछ का मूलभाग, गला और पेट लंबा और मोटा होवै ऐसा हाथी जिसकी गजशाला में होवैं उसको २१ मंदजाति का हाथी कहते हैं ॥ ११५ ॥

कर्ण१उदर१मेढ़न१पय१कंठ रु, केर१ रद१ लोम१=ह्रस्व जिहिं केर
सो मृग१जाति गज२रु मिश्रित सब, बहि लच्छन मिश्र४सु इम बर
बल७को अंग तुरग३ तीजो२ बलि, सूचित तास भिदा बहु सूरि
बल१रय२ रूप३ आयु४ तिम बिक्रम५, पानिप६ खेत७अर्घ८क्रमपूरि

॥ षट्पात् ॥

खुरासान१ ताजिक२ तुखार३ भाड़ज४खेत भव ॥
बाँलि बनायु५ कांबोज६ जात बाल्हिक७ उत्तम१ जव ॥
योजिकान१ केकान२ पौढहर३ राजसूल ४ अब ॥
मध्य२ रु गव्हर१ सिंधुपार२ साकुर३ कनिष्ट४ सब ॥
तिम इतर देस भव जे तुरंग नीच४ कहे पांडव नकुल१ ॥
मुनि सालिहोत्र२ पुब्बहु सुमति बाजितंत्र बरनिय बिपुल

॥ दोहा ॥

जल भव१कति कति ज्वलन भव२, बात प्रभव३कति बाजि
येन१ घूक२ भव३ क्रम इहाँ, रहत बर्ण चउ४ राजि॥११

॥ षट्पात् ॥

कुसुमगंध१ मत्सर२ बिबेक३ त्रिगेश१ हयकै देखहु ॥

कान पद १लिंग चरवा कंठ २खुर दन्त और केश जिसके छोटे होवें वह हाथी मृगजाति का है और जो अपने४शरीर पर ये लक्षण मिलेहुए धारण उसको मिश्र कहते हैं. फिर सेना का तीसरा अंग घोड़ा है जिसके ५पा त्रोन बहुत भेद कहते हैं ॥११५॥६इन खेतों के जन्मेहुए७पुनि [फिर]८उपरोक्त देशों के पैदा हुए तो उत्तम वेग वाले होते हैं ९ उपरोक्त चार देशों के मध्यम होते हैं१०इन दो देशों के घोड़े अधम और११अन्य देशों के उत्पन्न घोड़े पांडव नकुल ने अधमाधम कहे हैं।१२नकुल से पहिले ही बुद्धिमान शालि होत्र मुनिने १३ घोड़ों के शास्त्र शालिहोत्र में बहुत वर्णन किये हैं ॥११७॥ जल से उत्पन्नहुए घोड़े सुग१४अग्नि से उत्पन्न हुए उलूक (घूघू) और१५पवन से पैदाहुए घोड़े क्रम पूर्वक मंगल करनेवाले मानेजाते हैं जो चार वर्णो कर के शोभायमान रहते हैं ॥११८॥ १६ ब्राह्मण जाति के घोड़े के शरीर

अगरु गंध१ रय२ ओज३ प्रान४ बाहुज२ गत पेखहु ॥
सर्पिगंध१ मन सभय२ अरु ऊरुज३ अवगाहत ॥
सठ१ तिमिगंध२ असत्व३ चकित४ घोड़ो४ जु न चाहत ॥
सित१रक्त२पीत३हरित४रु असित५कपिस६सबल७ तिन्ह वर्ण क्रम
पीत१जु तुरंग२सित१नेत्र२पय३चक्रवाक२सुभ छत्र छम११९
स्वेत१चरन२मुख३सोप्ति अंग१जंबूफल आकृति२ ॥
मल्लिकाक्ष१ वह मङ्गल भद्र२ वर्द्धक नृप भाँ१क्षति ॥
स्वेत१ अंग२ जो सोप्ति स्याम१कर्ण२ सु अति सुभ फल॥
पय१।२।३।४मुख५केसर६पुच्छ७अरु छाती८सित१सो वसुमंगल४ ॥
भौंगोधि चरन१अरु चउ४चरन सित१सु पंच५कल्यान हय५ ॥
ए५सुभ२रु सित७जँघ४पयअसित७जमदूत१सु गेरतअजय२ १२०

पुष्प की सुगन्ध नासिका स्वल्पकी कार्यों में कंप करना और ज्ञान [विचार] होता है ३ क्षत्रिय जाति के घोड़े के शरीर में १ अगर (काष्ठ विशेष) की गन्ध वेग तेज २ पराक्रम [पराक्रम] होता है ३ वैश्य जाति के घोड़े में ४ घृत की गन्ध और मन में भय होता है ८ शूद्र जाति के घोड़े में मूर्खता ९ मच्छी की गंध ७ पराक्रम हीन और भय युक्त होता है सो नहीं रखना चाहिये, इन घोड़ों के रंग वर्ण के क्रम से श्वेत (सुकरा) लाल (कुमैत) पीला, हरा (सीला), काला (मुश्की), ६ दो रंगका अबलख १० अनेक रंग मिला हुआ अबलक जानो और पीले रंग के घोड़े के चरण और नेत्र श्वेत होवें उस का नाम ११ चक्रवाक है सो रखनेवाला यह १२ समर्थ घोड़ा शुभ है ॥११९॥ १३ जिस घोड़ेके चरण और मुख तो श्वेत होवें और शरीरका रंग १४ जम्बू (जामुन) के फलके समान होवे उस पुष्प घोड़ेको १५ मल्लिकाक्ष कहते हैं सो १६ मंगल [शुभ] और राजा की १७ कान्ति बढ़ानेवाला है १८ जो घोड़ा श्वेत रंगका होवे और उसके कान काले होवें यह [श्यामकर्ण] अत्यन्त शुभ फलदेनेवाला है और जिस घोड़े के चारों चरण, मुख १९ केशवाला, पूंछ २० छाती ये आठ अंग श्वेत होवें उसको अष्टमंगल कहते हैं सो शुभ है और जिसके चारों चरण और २१ ललाट श्वेत रंगके होवें सो शुभदायक २२ पंचकल्याणनामक घोड़ा है, इनने घोड़ेसो २३ शुभ नहीं और २४ श्वेत रंगके घोड़ेके चारों चरण २५ काले होवें उसको

॥ दोहा ॥

रोम१ भिन्न२०है रंगमैं, असुभ२ सु पुष्पित२ आहि ॥
भस्मवर्णा२तुरगहु भयद, तजत महीपति ताहि ॥ १२१ ॥

॥ षट्पात् ॥

ग्रीवा१सिर२हिय३गोधि४कुक्षि५मणिबंध६नाभि७क्रम ॥
अंसपार्श्व८त्रिक९आस्य१०गलख११पंच्छति१२सुभ१रवि१२भ्रम ॥
गोधिअग्र१नासाग्र२संख३लिर४कंठ५पंच५पुनि२ ॥
अरु गल इक१ आवर्त२गँदित चिंतामनि३नि भँ३गुनि ॥
जिहिं तालु१मध्य आवर्त जुग२सुकल४नाम सुभ४जानिये ॥
इक१बाहुमूल१थनबिच१अँपर२नामविजय५सुभमानिये१२२

॥ दोहा ॥

भाल१ उभय२ तीजो३ सिर१ सु, नाम पूर्ण६सुभ६निरख ॥
जिहिं ललाट१भ्रम जुग्म२सो, चन्द्रकोस७सुख चिरख७ १२३

जमदूत कहते हैं सो अजय करता है ॥ १२० ॥ जिस घोड़े के शरीर के रंग में अन्य रंग के केश होवैं उसको १फूलाछुआ कहते हैं सो अशुभ है और भस्मी रंग का घोडा भी भय देनेवाला है ॥ १२१ ॥ अब आगे घोडों के शरीर पर बालों [केशों] की शुभाशुभ भमरियों का वर्णन करते हैं कि गरदन, मस्तक, हृदय २ ललाट, कूँख ३ अगले पगों के मुरम्मे [गाळों] पर, नाभी, ४ कन्धेका पसवाड़ा ५ कमर ६ मुख ७ गला ८ पसवाड़े पर, इन ९ बारह अंगों पर भमरियों का होना शुभ है और फिर१०ललाट के अग्र भाग पर, नासिका के अग्र पर ११ ललाट की हड्डी के ऊपर "ललाटकी भमरियों को तीन बार बताचुके हैं जो ललाट के अवयवों का भेद जानना चाहिये" १२गले की एक भमरी को चिन्तामणि १३ कहते हैं जिस का गुण भी चिंतामणि के १४ सदृश ही है दूसरी भमरी स्तनों के बीच में होवै उसको१५विजय कहते हैं ॥१२२॥ ललाट परदो भमरी होवे और इन दो के मस्तक पर तीसरी भमरी होवे उसको पूर्ण कहते हैं जो शुभ है और जिसके ललाट पर दो ही भमरी होवैं उसका नाम १६ चन्द्रकोश है सो शुभ जानो ॥१२३॥

दक्खिन भ्रम१ जिहिं कंठ२ दुव२, इन्द्र८ नाम तस आंहि ॥
सुभ८जनपद् वर्द्धक सदा, बामांवर्त२ वृथाहि ॥ १२४ ॥
अंसपार्श्व१ आवर्त इक१२, पद्मलच्छन९सु पुराय९ ॥
नक्रमध्य१ इक१ वा दुव२ सु, चक्रवर्ति१०सुभ१० गुराय१२५
उत्तम१ ए दस१० अर्व अब, अंस१ रु गल२भ्रम आनि ॥
कुक्षि३नाभि४हिय५पार्श्व६कटि७, जे क्रम मध्यम२जानि१२६

॥ षट्पात् ॥

इक१ पृष्ट१ आवर्त१ असुभ१ यह भनित भयंकर१ ॥
भाल१ इक१ हु बाम२ भ्रम१ कलह द्रुत स्वामि स्वयंकर२॥
इक१ बदन१ आवर्त१ अपर२ कचांत२ सु अर्दक३ ॥
जानुदेस१ भ्रम१ जोहु बाजि खल४ अध्वं बिमर्दक४ ॥
आवर्त१ जास सेफ१ सु असुभ५ प्रभुनासक५पहिचानिये ॥
आवर्त३लि३बलि१जाके वहहु नृप लि३वर्ग हयदमानिये१२७

॥ दोहा ॥

पृष्ठ१ बंस१ इक१ भ्रम१ असुभ७, धूमकेतु७ अभिधान ॥
नाभि१पुच्छ२गुद३त्रय३भ्रमन, सो८जमराज समान८॥१२८॥

वाली दो भमरियें होवें उसका नाम इन्द्र है सो शुभ १ है, और वे सदैव २ देश को बढानेवाली हैं और वे ही भमरियें ३ बाम मुखवाली होवें तो वृथा हैं ॥ १२४ ॥ ४ कंधे के पलवाड़े पर एक भमरी होवे उसका नाम पद्म लक्षण है सो ५ शुभ है, और ६ नासिका में एक वा दो भमरियें होवें उसका नाम चक्रवर्ती है सो शुभ जानो ॥१२५॥ ७ उपरोक्त दश घोड़े तो उत्तम हैं ॥ १२६ ॥ ८पीठ की भमरी अशुभ है और ललाट पर बामसुख की एक भमरी होवे वह ९ अपने स्वामी से शीघ्र कलह करानेवाली है १०एक भमरी मुख पर और दूसरी ११आंखके अंत में होवे सो १२पीड़ाकारी है, और घुटनों पर भमरी होवे वह दुष्ट घोड़ा भी १३मार्ग में ही मारनेवाला है १४जिसघोड़े के लिंग पर भमरी होवे सो भी स्वामी को मारनेवाला अशुभ जानो और जिस घोड़े के लिंग पर तीन भमरी होवें उस घोड़े को भी हे राजा त्रिवर्ग (वृद्धि का नाश करनेवाला) जानो ॥ १२७ ॥ १५ पीठ की लंबी हड्डी पर ॥ १२८ ॥

॥ रोला ॥

अध१ ऊरध२ आवर्त२ जुगर न परसैं जमदूत९ तु२ ॥
ओगुन खिल अवनीस सुनहु अब हय संभूत सु ॥
अधिक१हीन२ रद१ अंड२असित काकुद३मुसली४इम ॥
वँदन५करालीद्दबहुरि घंटी७ शृंगी८त्रि३कर्णी९तिम ॥१२९॥
सह कंकोली१० दिर सँफ११ पंच५ जट२अंजनी१३हु पुनि
सँथन१४ चउद्दह १४ असुभ१४आदित वृन्दन स्वबुद्धि गुनि
इंदिंदिर सम१ असित१ तालु१ व्है तो वह असुभ न ॥
सब भ्रम दक्खिन१ससुभ१सव्य२अँतों कहुँ ससुभ नर १३०

॥ दोहा ॥

इम बाजि३न लखि सुभ१ असुभ२, समुचित संग्रहि संमि३
सह पोटव रक्खैं सुद्दी, बाढैं अरिन बिलासि ॥ १३१ ॥
कँटक७ अंग तीजो३ कहिय, यह हय३ नाम उदार ॥

१ऊपर नीचे दो भमरियें होवें उसको जमदूत स्पर्श करता है २ हे राजा आदि के अवगुण भी घोड़ोंसे३उत्पन्न होनेवाले हैं सो सुनो. अधिकदंता ४और हीन दन्ता इसी प्रकार हीन अण्ड और अधिक अण्ड अशुभ है ५श्याम ता॰॥४॥ ६ सब शरीर एक रंग का और एक परगा अन्य रंगका होवे उसको मुसली कहते हैं, इसीप्रकार ७ मुखकी अशुभ भमरी विशेषवाला ८ और के ओठ से बाहर दंत निकला हुआ होवे उसको कराली कहते हैं ९ यह और गले की भमरीवाला जिसको कंठभंजन कहते हैं यह और १०मस्तक पर और गका चिन्ह होवे वह ११ तीन कानवाला॥ १२९ ॥ १२ कंकोली ([illegible]) सहित १३ दो खुरवाला १४ मस्तक पर केसवाली में पांच भमरियें होवें उसको पंचजट कहते हैं यह और फिर १५नेत्र के नीचे भमरीवाला १६ और कञ्जन (बांक) वाला इन चौदह प्रकार के घोड़ों को बुध लोगों ने अपनी बुद्धि को फैलाकर अशुभ १७ कहे हैं, इन में १८नील कमल (गहुड) के समान श्याम तालुवाला होवे वह अशुभ नहीं है और ऊपर कही हुई सब भमरियें दक्षिण मुखवाली शुभ और १९वाम मुखवाली अशुभ हैं ॥१३०॥२०घोड़े [illegible] और २१अनुराहे में रक्खे सो ही शत्रुओं को रुलाता है ॥१३१॥२२अंग

स्पंदन[1]४ अब चोथो४ सुनहु, प्रस्तुत[2] च्यारि४ प्रकार॥१३२॥
कर्म उचित च्यारि४ न कथित, चउ४ छ६ अठ्ठ८दस१०चक्र[3]
ठहै चक्रन मित४।६।८।१०जुत्तहय,सुभ१सवेग२छितिसक्र१३३
रन समुचित चउ४ चक्र रथ, चउ४ हय सुखद बिचारि॥
रक्खिय अरु अब रथरनहु, धरनि लुप्त कलि४धारि॥१३४॥
अंग राजयके सप्त७ ए, मुख्य बैला७वधि मानि॥
इतरहु अंग अवस्य इम, जेहु लेहु प्रभु जानि॥१३५॥

॥ घनाक्षरी ॥

त्रयी[10]३।१ त्यौं अथर्व२ दंडनीति[11]३ सांति४ पुष्टि५कर्म,
कोविद[12] ठहै एरिसें[13] पुरोहित१ प्रमान्यौं जात॥
संहिता१ गनित२ होरा३ केरल४ सकुन५ पंच५,
भेद जानैं ज्योतिष सो गणार्क[14]३ बखान्यौं जात॥
पीढिनतैं सील१ कुल२ वारो१ धीर२ बाजि१ गज२,
सस्त्र३ सास्त्र४ बिद्याबुध ३ सेनापति ३ जान्यौं जात॥
बेद१ स्मृति२ कुसल औराग[15]३ द्वेष४ चेष्टाबुध[16]५,

१ सेना का चौथा अंग रथ है वह २सेना के इस प्रकरण से चार प्रकार का है ३ ऊपर कहे हुए पहियें के होते हैं सो४हे पृथ्वी के इन्द्र (रामसिंह) इन रथों में जितने ४ पहिये होवें उतने ही घोड़े जुतने से शुभ वेगवाले होते हैं ॥ १३३ ॥ इनमें युद्धके ६ उचित चार पहियों का रथ ही है और चार घोड़ों का जोतना ही सुख देनेवाले विचार कर रक्खे हैं परन्तु अब ७ कलियुग में युद्ध के रथ भूमि पर छिपगये जानो ॥ १३४ ॥ राज्य के सात अंग ८ सेना पर्यन्त मानो परन्तु ९ और भी अवश्य अंग हैं वे भी हे प्रभु सुनो ॥ १३५ ॥ १०ऋक्, यजु, साम, इन तीन वेदों और मोहन, वशीकरण, उचाटन आदि अभिचार जंत्र मंत्र में ११ नीति शास्त्र, शान्ति और पुष्टि कर्म में १२पंडित १३ऐसा पुरोहित चाहिये १४ऊपर कहे हुए पांच भेद युक्त ज्योतिष को जाननेवाला ज्योतिषी कहाता है १५किसी से प्रीति और द्वेष नहीं करनेवाला १६ चेष्टा से अभिप्राय को जाननेवाला

अष्टक८ दसक१० वा यों न्यायकर्म[३]४ आन्यौं जात१३
सर्व रनकोबिद[४]१ परीच्छित२रु सिद्धसस्त्र३,
हस्ती४ हय५ यंता[७]४।५ दुष्टदंडक६ ऐसे जोधं५ जोहि ॥
चो४उपाय[९]१छ६गुन[१०]२मपंचो१।२ देस३ काल४छुप३।४,
मंडलसे[११]मान्य५ आप्त[१२]६सांधिविग्रहिक[१३]९ सोहि ॥
सर्व[१४] चयकारी१ यंत्र[१५]योधीर आप्त[१६]३ स्वामीके,
दिवायैंहू मरैं दैं गढ४ दुर्गपति[१७]७ ऐसो होहि ॥
आप्त१ रु अलुब्ध[१८]२सर्व भाषा लिपि वेदी[१९] ३ कूट,
गनित बिबेकी[२०]४ अधिकारी लेखसाला[२१]को८हि ॥१३७॥
स्मार्तकर्म कोविद१जथा उचित दंडदाता२,
धर्मधुर धीर३ सत्यवादी४ होइ दंडधर[२२]९ ॥
सुश्रुता[२३]१दि आयुर्वेद अभ्यासी१निदान[२४]पर२,

१मनुस्मृतिमें कहेहुए क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले आठ दोष "पैशून्यं साहसं द्रोह ईर्ष्याऽसूयार्थदूषणम्॥ वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोपि गणोष्टकः" ॥ २ कामसे उत्पन्न होनेवाले दश दोष "मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः॥ तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः" ॥ इन सब के जानने में कुशल होवे ऐसा ३न्याय करनेवाला रखना चाहिये ॥१३६॥४सब प्रकारके युद्धों में चतुर ५ परीक्षा कियेहुए ६ जिनके शस्त्र खाली नहीं जावैं ऐसे ७ हाथी घोडों के उत्तम चलाने (शिक्षादेने) वाले, दुष्टों को दंड देनेवाले ऐसे ८ योद्धा (वीर) रखने चाहिये ९ साम आदि चारों उपाय १० संधि आदि छहों गुणों को रचजाननेवाला, देश काल में चतुर ऐसा ११ देशाधिप (हाकिम) मान १२ पाने योग्य और १३ सही सन्धि विग्रहका कार्य करनेवाला होना चाहिये और सब १४ संचय का करनेवाला १५ तोप आदि यन्त्रों से युद्ध करनेवाला १६सत्यवादी १७ ऐसा किल्लादार होवे, सत्यवादी १८ निर्लोभी १९ सब भाषाओं के लेखको जाननेवाला २० कूटगणित को जाननेवाला २१ दफतर का अधिकारी होवे ॥ १३७ ॥ धर्म शास्त्र का पंडित, उचित दंडका देनेवाला २२ ऐसा कोतवाल होना चाहिये २३ सुश्रुत आदि आयुर्वेद का अभ्यास किया हुआ २४ रोग का कारण पहिचानने में श्रेष्ठ,

धर्मधर३ धीर४ क्रिया कोविद५ सो वैद्य१० बर ॥
रत्न१ हेम२ रजत३ पटा४दिक बिधान बुध१,
आप्त२ रु कुटुंबी३त्यौं अलुब्ध४ सो११ है भांडघर ॥
लेखन कुसल१ सर्वदेसलिपि१ बानी२ बुध१।३,
आप्त४ अग्रवाची५तेर ठहै बांचक१।१२रु लेखकर २।१।३ ॥१३८॥
पीढिनतैं आप्त१ स्वादुपाची२ सूदसास्त्र बुध३,
लोभहीन४ वैद्यक बिसारद५ठहै सूपकार१४ ॥
मेधावी१ अलोभी२ परचित्तवेदी३ व्यक्तवाक्य४,
निर्भय५ प्रगल्भ६ सत्यवादी७ठहै संदेसहार१५ ॥
स्थानदंडपाती१ गजसिच्छा१ हयसिच्छा२ दच्छ१।३,
सिद्धसस्त्र४ आप्त४ठहै गजो१५चर२अधिकारवार१६।१७ ॥
लोहभेद बोधी१ चित्रयोधी२ सानकर्मपटु३,
सूर४ सस्त्रसाधक५ समाश्रित६ठहै सस्त्रधार१८॥१३९॥
कान१ खंज२ वृद्ध३ कुब्ज४ बामन५ खलति६ पंगु७,

रत्न, सुवर्ण, चांदी, १वस्त्र आदि के विधान में चतुर, सत्यवादी, कुटुंबवाला २ निर्लोभी ऐसा ३ भंडारी (भंडार का दरोगा). सर्वदेश की लिपि लिखने में कुशल, बोलने में चतुर, सत्यवादी, पढने में कहीं रुकै नहीं ऐसा आगे से आगे बांचनेवाला, इस प्रकार का ४ बांचनेवाला और लिखनेवाला (अहलकार, मुनशी) चाहिये ॥ १३८ ॥ पीढियों से सत्यवक्ता ५ स्वाद भोजन पकानेवाला ६ रसोई के शास्त्र में पंडित ७ वैद्यक में निपुण ऐसा ८ रसोई पकानेवाला होवै ९ बुद्धिमान् १० दूसरे के मनकी बात को जाननेवाला ११ स्पष्ट बोलनेवाला १२उपस्थित बुद्धिवाला (हाजर जवाब) १३ ऐसा दूत होवै १४ दंड के स्थान पर दंड देनेवाला, हाथियों की और घोड़े की शिक्षा में चतुर, शस्त्र विद्या में कुशल(शस्त्रों के पूर्ण अभ्यासवाला)सत्यवादी ऐसा हाथी १५घोड़ोंका अधिकारी होना चाहिये, लोहे के भेदों को १६ जाननेवाला १७ आश्चर्य युक्त युद्ध करनेवाला, खुरशाण के कार्य में चतुर, वीर, शस्त्रों का साधन कियाहुआ १८ श्रेष्ठ रीति से आश्रित होवे वह १९ सकलीघर होना चाहिये ॥ १३९ ॥ २० काणा, २१ लोड़ा, बुड्ढा २२ कुबड़ा, ठिंगना २३खलवाट (टाटला)पांगला, कोढी,

कुष्ट१ खैन२वारे८।९ अवरोध द्वारवासी१९एहि ॥
आप्त१ रु अरूप२ लोभहीन३ जितइंद्रिय४०है,
चेष्टा१ऽऽकार२वेदी५।६ अवरोध अधिकारी२०जेहि ॥
सर्वचित्तग्राही१ दर्पवर्जित२ मधुरवाची३,
रूप१ तेज२ वारे४।५ वैत्रवारे६प्रतिहार२१ तेहि ॥
औरहु अनेक राज्यवारे उपअंग ऐसैं,
जानौं प्रभुराम२०१४ उपयोगी जे नृपनकेहि ॥ १४० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशौ रामसिंहचरित्रे राज्ञे राजनीतिश्रावणं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥
आदितः पंचषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६५ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तहँ ऐसैं पंडित जनन, सब मग बरनि सुरीति ॥
पुहवीपहुँ पहुराम२०१४प्रति, प्रथितं कहे सहप्रीति ॥ १ ॥
सूरि कथित सब मति समुझि, जोग्य१ अजोग्यहि जानि ॥
नास्तिक मग खट६ताजि निपत, आस्तिक मग पग आनि२॥२॥
सहित धर्म१ तिम भक्ति२ सह, आत्मबोध३ उपदेस ॥
पथ यह मन्न्यों सिसुपनहु, निज गिनि राम२०१४नरेस॥३॥

१क्षय (थेसिस) रोगवाला, ये २ जनाने द्वार पर रहनेवाले होवें ३ चेष्टा और आकार से अभिप्राय को जाननेवाला ४ जनानी डोढी का दरोगा होना चाहिये ५ उपरोक्त लक्षणोंवाले छड़ीदार और ६ द्वारपाल होवैं ॥ १४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशि में रामसिंह के चरित्र में राजा को राजनीति सुनाने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥३॥ और आदि से तीन सौ पैंसठ ३६५मयूख हुए ॥

तहां इसप्रकार पण्डितों ने ७ राजा के सब मार्गों का श्रेष्ठ रीति से वर्णन करके ८ राजा रामसिंह प्रति प्रीति सहित ९ प्रसिद्ध कहे ॥ १ ॥ १० पण्डितों के कहे हुए ११ निश्चय ही ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

दस१० सम वय इम दिपत सकल स्वविधेय भूप सुनि ॥
दिये सभा बुध द्विजन पुरट३ भू२ पट३ भूखन पुनि ॥
रक्खि निकट अनुरूप भनित कवि१ सूरि२ मंत्रि३ भट४ ॥
लग्गिय सिच्छा लेन सवन समुचित बीरन बट ॥
जगि१ ब्राह्मयमुहूरत१नित्य जिम करि मंगल दरसन२कथित॥
दैंशद्विजन अर्थ१भोजन२बदन स्वलखि आज्य भोजन४सहित॥४॥
हय१ गज२ सुरभि३ निहारि४ सौच आचरि६ सौचालय ॥
कर१ पय२ रद३ करि७ सुद्ध नियत बिधि न्हाइ८ निपुन नय॥
संध्या बिरचि९ सअंग अष्टि१६ भेदन प्रभु अर्चन१० ॥
श्राद्ध१० रु तर्पन२ सद्धि११श्रवन सुकथा जु सपर्चन१२॥
संध्या द्वितीय२लगतहि करि१३सु पुनि सुनि१४भारत भागवत२
अध्ययन धारि१५अप्पन उचित द्रुत अरोहि गज१हय२द्रवत१६॥५॥

गवत१ द्रवत२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इनहिं फेरि वय उचित अस्त्र अनुक्रम अभ्यासहिं१७ ॥
बैश्वदेवकरि१८ बहुरि असन मध्यान्ह२ उपासहिं१९ ॥
मंत्रिन सह रचि मंत्र२० करहिं नय मर्म बिलोकन२१ ॥
सुनि व्यय१ आय समस्त२२ साद्धि खेल२३हु सखिलोकन ॥
अपरान्ह३ समय संध्याहु इम रचि२४गज१हय२ फेरत रहत२५॥

१ दश वर्ष की अवस्था में इसप्रकार शोभायमान होकर राजा ने २ अपना कर्तव्य सुनकर सभा में विद्वान् ब्राह्मणों को ३सुवर्ण, भूमि, वस्त्र दिये ४अपने सदृश ५ पण्डित ६ चार घड़ी रात्रि बाकी रहते उठकर ७ ब्राह्मणों को सुवर्ण देकर ८ घृत के पात्र में अपना मुख देख कर ॥ ४ ॥ ९ वार्तों में श्रेष्ठ कथा का संयोग करते हैं १० अपने उचित पढने को धारण करके शीघ्र हाथी घोड़े पर चढ़कर ११ चलते हैं ॥ ५ ॥ १२ सखा लोकों से १३ सन्ध्या के समय भी "तीसरे पहर से सूर्यास्त पर्यन्त के समय को अपराह्न कहते हैं"

सरत्रहु समस्त४पुनि सद्धिकैं२६लै*अचवन१भोजन२लहत२७॥६॥
बिलोकन१ खिलोकन२ अंत्यानुप्रासः १ ॥

॥ दोहा ॥

जननी१ गुरु२ कुलवृद्ध३ जे, बंदि चरन तिन्ह२८ बीर ॥
मित्रन रमि२९ निद्रा समय, धरैं सयन पय३० धीर ॥ ७ ॥
ब्राह्मयमुहूरत१ही बहुरि, ऐसैं जागि अवनीस ॥
चर्या प्रतिदिन आचरैं, श्रुति निदेस बहि सीस ॥ ८ ॥
ऐसे क्रम बुंदी अधिप, हायन दस१० बय होत ॥
सद्धि बढ्यो स्वाबिधेय सब, इन कि मकर२ उद्योत ॥ ९ ॥
महाराव कोटा महिप, जो इत दिल्लिय जाइ ॥
विफल होत चिंतत बिबिध, भयो बिमन खिन भाइ ॥१०॥
बिष्णुसिंह२००१२नृप सिक्खनिधि, चिंति सकल अब चित्त॥
पछितावत महि बिरतपनैं, बिरह पिक्खि भुव४ बित्त ॥११॥
अंगरेज अनुकूल इक१, मिल्यो तदुक्त६ न मानि ॥
मत्त अनुज७ सिखयो सुरयो, जुज्झत द्रुत बल जानि ॥१२॥
सब खिल सासक समयके, अंगरेज मति इद्ध ॥
जालम दिस अनुकूल जे, सज्ज भये बल सिद्ध ॥१३॥

॥ षट्पात् ॥

करन जुद्ध कोटेस सज्जि सानुज दिल्ली सन ॥
आयो सरद४ अनेह१० मज्झि देसहि स्वकीय मन ॥

---

* आचमन करके ॥ ६ ॥ ७ ॥ १ आचरण ॥ ८ ॥ २ मानों मकर संक्रान्ति का सूर्य बढे जैसे बढा ॥ ९ ॥ १० ॥ ३ बुंदी के राजा विष्णुसिंह ने पहिले शिक्षा दी थी उस सब को याद करके भूमि को ४ छोडकर ऊसर भूमि रूपी ५ धन से विरह देखकर अब पछताता है ॥ ११ ॥ ६ उस अंगरेज का कहना नहीं मानकर ७ अपने मस्त छोटे भाई को सिखाया हुआ ॥ १२ ॥ ८ यहां के इस समय के सब हाकिम ९ बडे बुद्धिमान् अंगरेज जालमसिंह की तरफ अनुकूल थे वे ॥ १३ ॥ १० शरद ऋतु के समय में

कति छन्न[१] रु कति प्रकट[२] मिले बंधव माधानी ॥
इतरहु कोटा [२]अनुग मिले इहिं क्रम जय मानी ॥
परदेस सुभट[१] जिनमैं [३]प्रचुर कहत देस सुभट[२]हु कतिक॥
जालम अधीन जे सब जुरे मन भूपहि मारन मतिक॥१४॥
तबहि [५]गोठपुर तजि रु तानि साहस बलवंत[२००।२]हु ॥
प्रभु पितृव्य[६] सजि सत्थ लरन जावन लग्गो [७]लहु ॥
[८]पहु माता तब पत्र कलित नय भेजि कहाई ॥
लखहु कालगति लाल इकिल्ल [१०]आलय अधिकाई ॥
तुमरो अधीस बय बाल तिहिं सिक्ख देहु हित अनुसरहु ॥
भार जो परैं अप्पन भवन [११]कोबिद तस [१२]उपसम करहु॥१५॥
बिन्नति लिखि इम बिबिध [१३]प्रसू प्रभुकी देवर प्रति ॥
समुझायो सुमिराइ गेह[१] कुल[२] कर्म[१] धर्म[२] गति ॥
बढत दर्प बलवंत[२००।२] सोहु मन्नी न जथा सठ ॥
महाराव सन मिलि रु भयो तस भीर हेरि हठ ॥
अंग्रेज[१] झल्ल[२] उत ए[१]हि इत मंगरोलपुर ढिग मिले ॥
पटकेहि [१४]झल्ल निज स्वामिपर गुरु गोले तोपन गिले॥१६॥
इतके हंकन [१५]अर्ब कहत थाके कोटेसहिं ॥
कह्यो [१६]तदपि कोटेस सचिव करिहै न कलेसहिं ॥

---

१ माधवसिंह के वंश के हाडे २ और भी कोटा के सेवक ३परदेशी वीर बहुत थे ४ राजा किशोरसिंह को मारने की बुद्धि से ॥ १४ ॥ तभी बलवंतसिंह ६ रावराजा रामसिंह का काका हठ फैलाकर ५ गोठड़ा नगर को छोड़कर सेना सजकर ७ शीघ्र जाने लगा तब ८रामसिंह की माता ने नीति का ९प्रसिद्ध पत्र भेजकर कहलाया १०अपने घर (बुंदी) की ११हे चतुर१२उस सभा को मिटावो ॥ १५ ॥ १३ प्रभु (रामसिंह) की माता ने १४झाला जालिमसिंह ने ॥१६॥ १५ इधर के वीर घोड़े चढाने के लिये कहकर थक गये १६ तोभी कोटा के पति ने कहा कि हमारा सचिव झाला जालिमसिंह क्लेश नहीं करैगा

इहिँ अंतर सहसाँहि फेर जालम२००।२ तोपन फवि ॥
नृप किसोर ।१ दल निखिल२ छोरि नंठो३ कातर छवि ॥
सुनि फेर४ बाजिँ न रह्यो स्वबस गहि पसुत्व५ इक१दिस गयो
असवार तास नृपको अनुज६ भीत उतहि जावत भयो॥१७॥
मन औरहि मग मुरत अँब७ भजिगो मग औरहि ॥
कुंट१कुसा२८दुहुँ२ करन जुरे इकत१ बरजोरहि ॥
आयुध१ हय२ अभ्यास न दिय सिक्खन जालम जिम ॥
चमकत हय हुव चकित अनुज नृपको परबस इम ॥
जालम बरूथ९ बिच जावतहि पृथ्वीसिंह सु जानि पर१० ॥
मल्लार नाम इक१ आयुधिक धर पटक्यो दै कुंत११ धर ॥१८॥
कछु न हुतो नृपकौँहु१२ बाजि१ आयुध२ बिद्या बल ॥
अँब१३ खर्ब आरूढ देखि तोपन बिखरत दल ॥
भाखी अब मैं भजि रु कहां दुरिहौं अपजस करि ॥
अब मरनहि मम अच्छ धुँत्त१४ अरि सम्मुह पैंड धरि ॥
प्रभुके पितृव्य१ मुख रनपटुन तहँ जंपिय नय ताकि तिम ॥
हम कह्यो तब न हंके हय रु अग्र न बिगारहु मिच्चु१६ इम१९

१ अचानक २ सब सेना को छोडकर ३ कायर की तरह भागा ४ तोपों के फेर सुनकर घोड़ा अपने वश में नहीं रहा और ५ पशुपना ग्रहण करके एक तरफ भागगया ६ उस घोड़े का सवार राजा का छोटा भाई डरकर उधर ही गया ॥ १७ ॥ सवार का मन तो और ही तरफ जाता था और ७ घोड़ा और ही तरफ भगगया, दोनों हाथों से ८ बाग के दोनों कोने जबरी से मिलगये ९ जालिमसिंह की सेना में जाते ही १०शत्रुओं ने पृथ्वीसिंह को जानकर शरीर में ११भाला मारकर भूमि पर गिरादिया॥ १८ ॥१२राजा किशोरसिंह को भी घोड़े का और शस्त्र का विद्याबल कुछ नहीं था १३ छोटे घोड़े पर चढ़कर १४धूर्त शत्रु (जालमसिंह) के सन्मुख कदम देकर मेरा मरना ही अच्छा है !१५ रावराजा रामसिंह के काका (बलवंतसिंह) आदि युद्ध के चतुरों ने कहा १६ इस प्रकार मृत्यु मत बिगाड़ो ॥ १९ ॥

कहि इम सह कोटेस दुमनें नट्ठो हड्ड्[1]हि दल ॥
पथ कछु तिहिँ पहुचाइ बिजय करि मुरिग[2] झल्ल बल ॥
अंधकार मचि अतुल धूम तोपन अंबर[1] धरं ॥
कति कोसन संक्रमत भये सँगत[3] बिछुरे भर ॥
अनुगहिँ[4] न इक्खि कोटाअधिप कहिय राहियापिथल[3] कहाँ॥
बढि अग्ग चलत संगिनबदिय[4] त्वरित आहु मिलिहै तहाँ॥२०॥
नगर बरोदा निकट भूप पहुंच्यो गोरन[5] भुव ॥
पुच्छत तहँ अति प्रसभ[6] हन्यौं अनुज सु जानतहुव[7] ॥
भनिय रोइ खिल भ्रात[8] मरहु जिन तजहु संग मम ॥
जालम कोटा जाइ राज्य निज करहु मनोरम[9] ॥
श्रीहार जाइ में अब सदा प्रभुको करिहों अनुगपन[10] ॥
पन सोहि रक्खि कोटेस पुनि जाइ तत्थ किय हरि जँजन[11]॥२१॥
पीछैं चिर[12]करि पट्ट आनि रक्ख्यो जालम यह ॥
सून्य तखत ति[13]हिँ समय तास कतिदिन रक्ख्यो तह॥
आक्खिय सुत माधवहुँ[14] बिष्णुसिंह२००।२ हिँ बैठारन ॥
जालम तउ तस जँनक[15] कुमर बरज्यो कहि कारन ॥
आवन किसोर—॥१कोटा अवधि[16] पँट्ट निकट धरि पावरी ॥

कोटा के पति सहित १ उदास होकर हाडाओं की सेना भागी २ झाला की सेना कितने ही कोस चलने पर बिछड़े हुए वीर १ साथ हुए ४ साथवालों ने कहा ॥२०॥ ५ गौड़ क्षत्रियों की भूमि में ६ हठ करके पूछने पर ७ छोटे भाई का मारा जाना जाना ८ बाकी के भाई मत मरो और मेरा साथ छोडदो ९ सुंदर राज्य करो १० विष्णु भगवान् का सेवकपन करूंगा सोही नाथद्वारे में जाकर ११ विष्णु भगवान् का पूजन किया "मेवाड़ देशमें नाथद्वारा नामक तीर्थस्थान है" ॥ २१ ॥ १२ बहुत समय पीछे महाराव किशोरसिंह को नाथद्वारे से कोटे में लाकर पीछा पाट बिठाया १३ तख्त शून्य रहा उस समय जालमसिंह के पुत्र १४ माधवसिंह ने कहा कि किशोरसिंह के छोटे भाई विष्णुसिंह को पाट देवें तोभी १५ माधवसिंह ने कारण बताकर अपने पुत्रको मना किया और १६ किशोरसिंह के पीछा कोटे में आने पर्यन्त १७ गादीके समीप किशोरसिंह की

तिन्ह अग्ग प्रनामि किय काम तिहिँ रैसा सकल कहि रावरी॥२२॥

॥अष्टपात्॥

मंगरोल रन मचिग समय बसु हय धृति१८७८संबत ॥
निधि हय धृति१८७९ सक नियत इतहु सेना सजि उद्धत ॥
जुज्झन सिख रनजीत प्रबल हंक्किय लवपुरपति ॥
पुर१ सदुर्ग२ पेसोर अनखि घेरयो आग्रह अति ॥
चँक्र सहँस चौबीस२४०००अरिन पंचहि हजार५०००उत ॥
भयक्कर संगर भयउ जदिन दुहुँ२०ओर जोर जुत ॥
कँलि परयो मुख्य रनजीतको भोलासिंह१ स नाम भट ॥
इक सहँस१०००कतल१घायल२ इहाँ बिदित परे सिख बीरवट२३
जहँ काबल सन जित्ति प्रहत करि कथित पठानन ॥
प्रतिभट लहि पेसोर उहाँ थानाँ धारि अप्पन ॥
हुव अजेय लाहोर बाहु बल करि पंजाबहि ॥
कोउन हुव जट्ट कुल महिप दब्बत इतीक महि ॥
स्वीय सचिव इत सुपहु नैर बुन्दिय मृत नागर ॥
संभूराम स नाम जगत नय मत उज्जागर ॥
द्विज तुलाराम१ संभू२ दुव२हि भ्राता बर मंत्री भये ॥
तिनके अभाव धात्रेय तकि गेरन भँर जग द्दग गये ॥२४॥

॥ दोहा ॥

पावड़ी रखकर उस (पावड़ा) के आगे प्रणाम करके १ सब भूमि आपकी है यह कहकर कोटाका काम करता रहा ॥ २२ ॥ २ निश्चय ही सेना सजकर ३ लाहोर के पति सिख रणजीतसिंहने क्रोध करके गढ सहित पेसोर पुरको घेरा ४रणजीतसिंह की सेना ५ युद्ध में रणजीतसिंह का मुख्य उमराव भोलासिंह मारागया ॥ २३ ॥ ६ कहेहुए पठानों को मारकर पेसोर को अपना शत्रु समझ कर ७ तुलाराम और शंभु, इन दोनों के अभाव (नहीं रहने) में धायभाई पर राज्य कार्य का भार डालने को संसार के नेत्र गये ॥ २४ ॥

ग्राम सूहरीको गदितं, गैंदा गुज्जर गंग१ ॥
धावर नृप उम्मेद१९८४के, जो हुव पुव्व प्रसंग ॥ २५ ॥
तस नेत्ती धात्रेय यह, कृष्णाराम अभिधान ॥
तारागढको दुर्गपति, मन्न्यौं नय मति मान ॥ २६ ॥
पंचनमत प्रभुकी प्रसू, अप्पहिं समुचित अक्खि ॥
सचिव किन्न धात्रेय सो, राज्य भार भुज रक्खि ॥ २७ ॥
किय मोहन१ तस ज्येष्ठ सुत, तारागढपति तत्थ ॥
सुखर मंगल३ याके अनुज, स्वामिभक्त हित सत्थ ॥ २८ ॥
कृष्णाराम१ कोविद अनुज, रामकृष्ण२ धात्रेय ॥
दुर्ग अजितगढको हुतो, सासक जो रन श्रेय ॥ २९ ॥
तास तनय जेठो१ रतन११४, भट सोपै प्रभु भक्त ॥
बाजि१ सस्त्र२ अभ्यास बुध, सब अधीस हित सक्त ॥३०॥
सुभटनके पुत्रहु सवय, हुव सब भूप हजूर ॥
सार्म्य जु बानन संग्रहैं, सिसुपन बहैं न सूर ॥ ३१ ॥
षट्पात्-कृष्णाराम धात्रेय सु इम हुव सुख्य सुसाहव ॥
सब प्रभु राज्य सम्हारि ताकि व्यय१ आय२ तुला तव ॥
मेटि असेस प्रमाद कोस धन१ अन्न२ रासि करि ॥

सूहरी नामक ग्राम का गैंदा गोत्र का गूजर गंगाराम उम्मेदसिंह की धाय का पति हुआ १कहते हैं ॥२५॥ २उसका पोता ॥२६॥ ३ महाराव राजा रामसिंह की माताने ४ आप (रामसिंह) को उस कृष्णराम धाय भाई का सचिव होना उचित कहकर उसको सचिव किया ॥२७॥ कृष्णराम का छोटाभाई ५ चतुर ॥२८॥२९॥ ६घोड़े और शस्त्र के अभ्यास में चतुर ७ स्वामी के हित में आसक्त अथवा समर्थ॥३०॥ अपनी अवस्थावाले उमराओंके पुत्र राजाकी हजूरमें हाजिर हुए ८यह राजा अपने तुल्य युवा पुरुषोंका संग्रह करता है और बालकपनको धारण नहीं करता ॥३१॥ ९आमद खरच को बराबर देखकर १० सब भूलों को मेटकर (अनुचित खरचको घटाकर) खजाने में धन और अन्नका ११समूह करके

कुनय करज दूर किय भूप आलय लच्छी भरि ॥
अरु किय समाढ्य देसहु अखिल बसुधा किय जस ख्यात बहु ॥
सुखराम सोहु बढिगो सचिव पहु अप्पहिँ लहि राम२०१४ पहु३२

( )

नभअहिगजससि१९८०सककृतनिपुनन अंग्रेजनदिनदिनजय आस॥
लरत लरत हायन दुवरतैं लगि पंचसहँस५०००निज बल लहि पास
प्राची१ ओर बिलायत बर्मा आवा१पुर तस खंधावार ॥
अरु दूजो२जिहिँ नाम अइन्वा२रत्नपुर३हु तीजो३रुचिकार ॥३३॥
अब तस निकट पहुँचि अंग्रेजन मंजिल दुव२पर मंडि मुकाम ॥
बढि आवा१ लैबोहि बिचारिय तोपन लास धुजावत धाम ॥
तब करि संधि चकित बर्मापति दम्म कोटि१०००००००१बलव्यय
हित दिन्न ॥
दूजो२ मोलमीनको जनपद२ कहि उँपदा इनके बस किन्न ॥३४॥
इत कोटा जालम बपु उज्झिय प्रतिमा तुल्य नृपहि धरि पट्ट ॥
माधव तब हुव मुख्य मुसाहब बहल जनकँ जालम गत बट्ट ॥
बिष्णुसिंह२०१२कोटेस मध्य२सुत जालमसौँ जु मिल्यो द्रुत जाइ॥
आय लक्ख१०००००दम्मनपुरअनतादियताकहँमन अभयहढाइ ३५

१ राजा के घर को लक्ष्मी से भरकर सब देश को २ धनवान् कर दिया ॥ ३२ ॥ ३ लड़ते लड़ते दो वर्ष लगने पर, पूर्व दिशा की बर्मा नामक बिलायत और उसकी ४राजधानी आवापुर जिसका दूसरा नाम अइन्वा और तीसरा सुंदर नाम रत्नपुर है ॥ ३३ ॥ उसके समीप पहुंच कर ५ फौज खरच के लिये क्रोड़ रुपये दिये ६ देश ७ भेट कहकर अंगरेजों के अधिकार में किया ॥ ३४ ॥ ९ मूर्ति के समान महाराव किशोरसिंह को गद्दी पर रखकर कोटा में झाला जालिमसिंह ने ८ शरीर छोड़ा १० मरेहुए पिता जालिमसिंह के मार्ग पर चलकर उसका पुत्र झाला माधवसिंह कोटा का मुसाहब हुआ, कोटा के पति के मध्य पुत्र विष्णुसिंह को जो जालिमसिंह से शीघ्र जा मिला था ११लाख रुपयोंकी आमदका अणता नामक पुर दिया॥३५॥

मार्‍यो जिहिँ पित्थल—।३ हनि तोमर सो बाहुजे मल्लार स नाम ॥
करि सत दुव२००सादिनको सासक धुरि गिनि ताहि दये धन१धाम
भ्रात१ भयो अनतापुर आधिप रु जिहिँ इक भ्रात हन्यो बरजोर ॥
अभय सु पै मल्लार२ बढ्यो इम कहिनसक्यो कछु भप किसोर ३६
माधव अब जालम जिम मालिक अंग अखिल करि अप्प अधीन॥
देस१कोस२सेना३दुर्गादिक४कोटा सब सासन बसकीन ॥
बिष्णुसिंह२००१२बुन्दीस ।बिराजत नरपति मान जोधपुर नाह ॥
स्वसुताको प्रभुसौं किय सगपन कुमरपनहि सुनि सबन सराह।३७।
यातैं ब्याह त्वरा करिबे अब भट बिक्कम१थानांपति भ्रात ॥
दूजो२ चंदकुमर बिरुदेस२हु खँगारज कूरम जस ख्यात ॥
ए दुव२ तबहि जोधपुर पठये बलि आये तहँ मंडि बिवाह ॥
प्रभु बय इत हायन बारह१२पर सज्जिय सब राजन नय राह ॥३८॥

मनोहरम् ॥

खेलत खलूरिकामैं खुरली सरासनकी,
पानि धरि पाटवँ यौं राम२००१२ छितिपालके ॥
ऊंचे अभ्र उडत पतत्रिनकौं पारिदेत,
और न उतारिदेत बेध्धा चिरकालके ॥
दीठि जो परै तो दूर बेधनमैं हालहाल,

---

१ मल्लार नामक जिस क्षत्रिय ने भाला मारकर महाराव किशोरसिंह के छोटे भाई पृथ्वीसिंहको मारा था॥३९॥ उसको २ जोधपुरके महाराजा मानसिंह ने बुंदीपति विष्णुसिंह था तब ३ अपनी पुत्री का सम्बन्ध रामसिंह से किया था ॥ ३७ ॥ ४ खंगारोत कछवाहा जो जसमें प्रसिद्ध था ॥ ३८ ॥ ५ अखाड़े में धनुष का ६ शस्त्राभ्यास करता है जहां महाराव राजा रामसिंह के हाथ ऐसा ७ चतुराई धारण करते हैं कि ८ आकाश में ऊंचे उडते हुए ९ पंछियों को गिरा देते हैं और दूसरों के बहुत समय के ठहरे हुए १० निसाने को गिरादेते हैं और जो दृष्टि में आजावैं तो हिलते हुए केशों को केशके अंतर से

बालबाल अंतर बचै न बट *बालके ॥
केही चित्र क्रमतैं तयेमैं करि छेकछेक,
एकएक बेधैं मनि मोतिनकी मालके ॥ ३९ ॥
ऐसैं नरनायक अनेक क्रम आनि आनि,
साधि सर१ विद्या पानि तुपक२प्रमानकी ॥
फैंकि नभ निंबू बेधडारत विविध रीति,
दोलाजंल१ त्यौं तंति२ उतारत बटानकी ॥
कवि रविमल्ल३ बुद्धि बिसत कितीक बात,
सैरिभ४मैं सहित पखाल५ कढिजानकी ॥
चोंचा१दल२ चनक१ खुमा२दिनके खंडिदेत,
मोचाँ७दल मंडिदेत माला गुटिकानकी ॥ ४० ॥
यौं धनु१ तुपक२ साधि बारहँ१२ बरस आप,
कार्सू३ कुंत४ पट्टिस५ कृपान६ कला पकरी ॥
हायन छ६वारे पीन कायन लुलायनके,
कंधर८ कठोरन ज्यौं काटिदेत ककरी ॥

---

*केशके टुकड़े भी नहीं बचते हैं, कितनेही आश्चर्यके क्रमसे तवेमें छिद्रही छिद्र करदेते हैं तथा छिद्र करके फिर उस छिद्रको छेक देते हैं और मोतियोंकी माला का एक मणिया वेध देते हैं ॥३९॥ १हींडते हुए (झूले में झूलते हुए) २काष्ठ के गोलों (लट्टुओं) की पंक्तिको गिरादेते हैं ३ कवि सूर्यमल्ल कहते हैं कि इन कामों में बुद्धिके प्रवेश होनेकी तो क्या बात है किन्तु पखाल सहित ४भैंसे में तीर कढजाता है और ५ तेजपात, चणा और देवारिपर्णी अथवा लता विशेष के पत्तों को काटदेते हैं और ७ केलके पत्ते में गोलियों की माला रचदेते हैं 'केलकी पत्ता सामान्य चोट से फटजाता है इस कारण उस में गोलियों की माला रचने में विशेषता है' तथा नील और शाल्मली (सालर) के वृत्तों के नाम भी मोचा है जिनके पत्तों में ॥ ४० ॥ ८ बरछी, भाला ९ कटारी, तरवार की १०कलाको धारण की ११छः वर्ष के पुष्ट भैंसों के कठोर कंधों को काकड़ी के समान काटदेते हैं,

सायगत माघहोत निस्सह निदाघहोत,
अच्छनको आघहोत बाघहोत बकरी ॥
टक्करी टराइ करी आवजाव अस्वनकौं,
बीथी सकरी बिच चलात जैसैं चकरी ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

गत१ प्रत्यागत२ साचिगत३, पाटन४ शोध५ प्रहार६ ॥
हयारूढ सद्दे हुलासि, ए खट६ तोमर वार ॥ ४२ ॥
बाईस२हि असि मग्ग बलि, खुरली साद्दि स खेल ॥
बेधन लग्गो सबन बढि, सादी सिंहन सेल ॥ ४३ ॥
सूचित बय सबगुन गहत, बहत वृकोदर बेस ॥
प्रथित नियुद्ध१ पटैतपन२, सिक्ख्यो नृपति असेस ॥ ४४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सूकल१ तुरंगनकौं बाहन बिनीत करि,
आरोहत१ मैंगल२ मतंगन धराइ धीर ॥
काननके मैंह१ रु बराह२ खैड्ग३ कंठीरव४,
फांदन फलंगैं तिनके तनु रुकैं न तीर ॥
निखिल नियुद्धमैं न समबय साम्हैं होत,
तत्त्वबोध१ भक्ति२ धर्म३ नीति४ सम साधि सीर ॥

इस शस्त्र विद्या में नहीं सहने योग्य १अग्रगत [आगे गया हुआ] पौष सहित माघ मास और इसी प्रकार नहीं सहन किये जानेवाली ग्रीष्म ऋतु में भी शत्रुओं का आघ होता है और जिनके सन्मुख सिंह बकरी के समान होता है २टक्कर से हाथियों को टलाकर ३सकड़ी गलियों में आवजाव करके घोड़ों को चकरी के समान चलाते हैं ॥४१॥४ घोड़ों पर सवार होकर ५ भालेके ॥ ४२ ॥ ६ घोड़े पर चढ़े हुए भाले से सिंहों को मारनेलगा ॥ ४३ ॥ ७ भीमसेन की भांति ८ बाहुयुद्ध ॥४४॥ ९अशिक्षित घोड़ों (पछेरों) को शिक्षित करके १० हाथियों पर ११ वन में जंगली (आरणे) भैंसो को १२ गैंडा, सिंह १३ इनके शरीरों में भी तीर नहीं रुकता १४ सम्पूर्ण बाहुयुद्ध में

*पाटव जितोक †पटु पायो पुहवीप ताहि,
‡आसु अपनायो एक बुंदी अधिराज वीर ॥ ४५ ॥
§सूरि१ सूर२ खोजनमैं आलंबन आदि१ बनैं,
सोहत समज्यामैं सरोजनमैं गंध सम ॥
जागैं जस जाको भू पचास५०कोटि जोजनमैं,
रैस्य रुचि रम्यतैं मनोजनमैं ३अंध सम ॥
ओजनमैं भोजन४मैं पावै पर मोजन१मैं,
फोजन५मैं को जन कहावैं बलाबंध सम॥
॥ ४६ ॥

॥ चूडालदोहा ॥

अखिल हेय१ आदेय२ इम, ध्रुव धीक्रम तजि१ धारि२धराधन॥
नाम निकास्यो नृपनमैं, डग राघव मग डारि महामन ॥४७॥
जिहिं बतरावैं सोहि जन, मन्त्रैं मोहन सब पढ्यो मति ॥
कवि१बुध२भट३सचिवा४दिकन,त्वरित करेनिजतंत्र पढ्यो मति
प्रभु पितृव्य इत गोठपुर, सुनि बाहुल८सित१अंत१५पुराय
पट्टनि तीरथ न्हान पर, रुचि धारिय बलवंत२००१२ताहि रुख४९
॥ ॥

कन्या निज उपयम पहिलैं किय दुर्गापुर सासक सरदार१९६॥४॥
सोपुर अधिप राधिकादासहिं बुल्लिय व्याहन सविधि विचार ॥

*चतुराई †चतुर रामसिंहने ‡शीघ्र॥४५॥ §पंडितों के खोजने में १फूलों में सुगन्ध के समान सभा में शोभित होता है २सुन्दर क्रांति में ३कामदेव और कामदेव के अवतार प्रद्युम्न इन दोनों की गणना करने को यहां बहु वचन में नकार का प्रयोग किया है अर्थात् रामसिंह की सुन्दरता से उन दोनों की सुंदरता भी नहीं दीखती थी ४प्रताप में और दान में भोज भी ऐसा नहीं था और फोजों में ५ आडावला नामक पर्वत के पति के समान कौन मनुष्य सुहाता है ॥४६॥ संपूर्ण छोडने और ६ग्रहण करने को ७बुद्धि के क्रम से निश्चय ही छोडा और धारण किया ८ रामचन्द्र के मार्ग में चरण देकर ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ९रामसिंह का काका १० कार्तिक शुदि पूर्णिमा को ॥ ४९ ॥ ११अपनी कन्या का विवाह

संध्यापति ताको सह सोपुर दोलतराव लयो सब देस ॥
बैठनहित दिय ताहि बरोधा सासन बस रंचक सुब सेस ॥ ५० ॥
दुर्गापुर आयउ वह दुल्लहु तिहिं *मह गो बलवंत२००२हु तत्थ॥
सोपुर लैन मंत्र किय तासन सूचिय हम जुज्झहिं अब सत्थ ॥
सर हुल्लकर१ संध्या संध्या२ जुग२ मालव बंटि अनीक अमान ॥
भू जितलित दब्बी बहु भूपन पटकि त्रास †प्रबलत्व प्रमान ॥५१॥
कूरम१ गोर२तथा खिच्ची३ कुल पुनि जद्दव४ बुंदेल५पमार६ ॥
गढ नरउर१सोपुर२राघवगढ३भूमि करोलिय४ झांसिय५ धार६ ॥
संध्या लिय इनकी अवनी सब बिन्नतिपर कछु रक्खि निबाह ॥
बुंदेल१न खिच्चि२न तब गहि बल दिय जुरि जुरि संध्या उर दाह ५२
जत्थहु बीर रचाहिं जुज्झय रन रन रन इक१ जयसिंघ१ नरेस॥
बहु बेरहि लक्खन अरिदल बिच इत१सन उत२काढिकाढि गयएस॥
जिहिं ईस्वर न हनैं तिहिं को जन महत बरूथ हनैं रनमांहिं ॥
इम खिच्चि२प राघवगढको ईन निर्भय भिरत मरयो कहु नांहिं५३॥
बहुवेरन इहिं नृप किय व्याकुल रुद्ध स्वासित सम दोलतराव ॥
तोपन ईस फिरंगिन तीन३न दहि रनरन बन जिम तप दाव ॥
जे भट मुख्य सिकंदर१ जेकम२ निडर ज्यानबत्तीस३२ स नाम॥
ए त्रय फ्रांस बिलायत उद्भव तिन बल अधिप लहैं जय ताम॥५४॥
तोप१न भारि२सतत तरकावहिं ए३ हरिसिंघ१अरि२न रन ऐन ॥
तूनजिम गिनि जयसिंह१सु तीन३न निजबल जुग्गि मिचावत नैन

॥५०॥*इस उत्सवमें बलवंतसिंह भी गया।†बलवानपन से त्रास पटककर॥५१॥ १ सिंधियाने इनके लोकों की भूमि छीन ली थी ॥५२॥ २सेना में बलको कौन सार लगाता है ३ राघोगढ का पति लड़कर कहीं नहीं मारा गया ॥ ५३ ॥ ग्रीष्म ऋतु की अग्नि बनको जलावै जैसे४युद्ध युद्धमें जयसिंहको जलाया ५तहां इनके बलसे॥५४॥६निरंतर तोपोंकी आड़ में शत्रुओं रूपा ७चणों को तड़काते थे

आयु बिताइय समय बपु उज्झिय राघवगढ जयसिंह१नरेस ॥
ध्रुव सुव तास नामकरि धोंकल२अंक२स्थित भुवहित हुव एस ५५
संगर सोहु ३जनक जिम सत्रुन व्याकुल करत भयो बहुबेर ॥
मावत असह कह्यो तिहिं मारन दौलतराव न करि छिन देर ॥
परिचर४ रक्खि सिकंदर५ प्रमुख न धारत हुव अप्पहु६ अवधान ॥
चरन७ पठाइ कहां इम चाहत धोंकल सुद्धि सुनत व्यवधान ॥५६॥

अवधान१ व्यवधान२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

लिखि छंद तब धोंकल पठयो लघु गोठ८नगर अनुचर निज गूढ ॥
तामैं लिपि सोदर उभय२ हि तुम आहव धीर१ प्रवीर२अमूढ ॥
संध्या रिपु हमरी भुव१ लै सब प्रान२हु लैन चहत अब पाप ॥
हम खिची १०भ्राता तुम हड्ड११न दलपति २००१३ देहु सहाय दुराप ॥ ५७ ॥
दलै१२ यह बंचि भीर गय दलपति २००१३ जो बलवंत २००१२ सहोदर जोध ॥
सन्ध्या सह जनजन मन सालत बालत हुव दुवर स्वभुव बिरो।
सुद्धि दुहुँ२न इक १३अह सुनि बलसह चपल ज्यानबत्तीस चलाइ ॥
स्वल्पहि सुनि परिगह इन्ह संग रू जुग२ बंधुहि बेढे तहँ जाइ ५८
मिलि सम्मुह दलपति२००१३ रन मंडिय भाजि निकसन जस भंग ॥

१उस राघवगढके राजा जयसिंहने आयु बिताकर शरीर छोड़ा, पृथ्वीके कारण निश्चय ही उसके धोकलसिंह नामक पुत्र २गोद बैठा ॥५५॥ वह भी युद्ध में ३पिता जयसिंह के समान, दौलतराव ने४सिकंदर आदिको ४सेनापति रखकर ६दौलतराव ने भी सावधानी धारण की७हलकारों को भेजकर धोकलसिंहकी गुप्त खबर सुनता था॥५६॥८धोकलसिंह ने पत्र लिखकर शीघ्र ९गोठड़ा नामक पुर में भेजा १० तुम हाडाओं के हम भाई हैं इस कारण हे दलपतसिंह ११ दुर्लभ सहाय दो॥५७॥१२यह पत्र पढकर१३एक दिन दोनोंकी खबर सुनकर

तुरगारूढ सह्वि भुज तोमर जुज्झत बहुत हने अरि जंग ॥
परत तुरंग पदाति अभै पन पैंड धरत हयमेध प्रभाव ॥
बारह १२ बीर हनें असि बाहत दलित तुरंग पंच५ धरि दाव॥५९॥
तुट्टत खग्ग कटार गह्यो तिम कलह किलेकन बच्छ बिदारि ॥
तिलतिल रन दलपति २००।३ बपु तुट्टिग धोंकल कढिग लरन
पुनि धारि ॥
सोदर वैर इक्क१ यह सालत बलि जाँमिप तुम अवनि विहीन ॥
सोपुर लैन१ राधिकादासहिं दुसहन हनन२ बचन इम दीन॥६०॥
प्रथम भई सु कही दुर्गापुर भूत१हुमैं सु कथा इम भूत१॥
संगर हनन ज्यानबतीसहिं अनुज बैर बालन अरि ऊत ॥
सह्वि अभीष्ट राधिकादास सु भाम करन सोपुर भूपाल ॥
उभपर कज्ज बलवंत२००।२करन इम किय रहस्य ताप्रति तिहिं
काल॥ ६१ ॥
अब वह बत्त सुमिरि मन अंतर इक अहि बसु ससि १८८१ सँम
सक आत ॥
प्रसलैं१।१सिसिर१।२भावी ऋतु खिनपर सोपुरसमरविचारियबात॥
मातुल स्वीय सवाई१ लछमन२ जदुकुल दुर्ग अमरगढ जत्थ ॥
तिनप्रति इम छंद लिखि सूचिय तुम सब भेदहु सोपुरगढ सत्थ६२

१घोड़े पर चढकर हाथमें भाला लेकर२घोड़ा मरने पर पैदल होकर ३ अश्वमेध के ॥५८॥४छाती फाड़कर ५एक जो छोटे भाई दलपतिसिंह का वैर सालता है, फिर तुम बहिन के पति भूमि बिना हो रहे हो इसकारण सोपुर को लेने और शत्रुको मारने का वलवंतसिंह ने राधिकादास को वचन दिया॥६०॥ ६यह गये समय में भी गये समय की कथा है ७ छोटे भाई का वैर लेने और शत्रुको ८ वंश रहित करने को९बहिनोई राधिकादासको सोपुरका राजा करने को॥६१॥ १०विक्रम के शाक का उक्त सम्वत आने पर आगे आनेवाली ११ हेमन्त और शिशिर ऋतुके समय१२पत्र लिखकर। १३सोपुरवालोंको फोड़ो(अपनेमें मिलाओ

सुनि यह तब चिंतिय जदुबंसिन जिन संहरि दलपति २००।३ जामेय१॥
अतिबलपन दच्छिय छिति२अप्पन हुन अब त्रास अरिन तिन्ह दप
भानि इम भेजि पिहित जन भेदन लिय सोपुर भट कतिक लुभाइ
इहिं अंतर बलवंत २००।२ चह्यो इत पट्टनि गमन श्रवन सुध पाइ ॥ ६३ ॥
जिहिं पहिलैं बिरचहिं बहु जंग रु निज प्रभुको दब्यो हगनैर१ ॥
जित्तिलयो बुंदीस बहै जब तिहिं बंधिय जितातित बहु बैर ॥
लै पुर नगर२ अवस पुनि लुट्टिय चहि व्याकुल किय नागरचाल३
बिंझोली४ मंडिलगढ५ बेढत बस न भये तउ चकित बिहाल६॥
झल्लन पर पहुँच्यो आसि झारन मंगरोल कोटापति मेल६ ॥
सत्रु करे चहुँ४ घाँ भूधन सब खग्गन अतुल मचावत खेल ॥
इहिं कारन पट्टनि सुनि आवत बलवंत२००।२हिं मारन चहि बंट॥
साधन१ झल्ल रहस्य मिलागउ अंगरेज कलफिल्ड७ अजंट ॥६४॥
साजि दल पिहित रुद्ध किय मग सब इक्क आहि बसु ससि १८८९ सम सक एस ॥
प्रस्थित तित१ बाहुल८ तेरसि१३ पर दिन तीजे२गय गम्य प्रदेस॥
करि तहँ न्हाँन पूजि प्रभु केसव इक्क आलय पट्टनि बिच आइ ॥
अप्प रह्यो राका११निसआगम इतर निलय हयगन पठवाइ१२ ॥६६॥

।६३।१भानजे दलपतिसिंह को जिन्होंने मारा है २छाने ॥६३॥१गैणावा नगर को दबाया था ४ डांगधारे के प्रान्त को ॥ ६४ ॥ ५ चारों ओर के राजाओं को शत्रु कर दिये ६बलवंतसिंह को मारकर उसकी भूमिके बंट(हिस्से)करना चाह कर ७ सलाह मिलाकर ८ अजंट का नाम है ॥ ६५ ॥ ६ छाने सेना सजकर सब मार्ग रोकदिये१०कार्तिक के तेरसके दिन प्रस्थान करके जाने योग्य स्थान (पाटन) गये ११पूर्णिमासी की रात्रिके आगम पर घोड़ों के समूह को १२अन्य मकान में भेजकर आप(बलवंतसिंह)केशोराय भगवान् के मंदिर में रहा॥६६॥

देवकरन अनुचर इक निज दल स्वल्प बिच सु मालिक करि संग
चलि माधव साहब बल अतिबल भेजिय करन नाम बल२००१अंग
रहत मुहूर्त उभय२ खल रोका दुजनन ताहि लयो गरदाइ ॥
लरतरह्यो स जाम सप्तक ७ लग सोदर १ सुत २ भट ३ सबन सजाइ ॥ ६७ ॥

प्रतिपद४ रत्ति निसीथ कढ्यो पुनि पारि कुंडय गृह चरम प्रतीक ॥
जानत कढत हक्क पुक्किय जब उत झुक्किय सब मेटि अनीक ॥
सेरसिंह २००५ अभिधान सहोदर सुत धोंकल २०११ फतमल्ल २०१२ समेत ॥
सैंतालीस४७ प्रमित भट संगर खग्गन रमत चले बिच खेत ॥ ६८ ॥

बितत कारि पिपासा बिकलन जल पिन्नों चम्मलि तट जाइ ॥
तुट्ट सब तिलतिल तरवारिन पुनि रुपि खेत सुजस प्रकटाइ ॥
पानिन तुपक१चाप२असि३पट्टिस४सज्जिय सब बलवंत२००१२सधीर
पट्टिस फेंकि जवन इक१० जठर बिधिसु गिराइ दयो वह बीर॥६९॥
सोदर अनुज१ उभय२ जेठे सुत अप१ तिमहि भटवर्ग४७ असेस
सतकनै हनि घायल करि सतकन गिद्धरनाम अंस धरि गूढ ॥

१ झाला माधवसिंह और कर्नल फोरड अजंटने बलवंतसिंह को मारने को बड़ी सेना भेजी २ पूनम की चार घड़ी रात बाकी रहते शत्रुओं ने बलवंतसिंह को घेरलिया ३ सात पहर तक लड़ता रहा ॥ ६७ ॥ ४ पड़िवा (एकम) की आधी रात को ५ घर के पिछली भीत (दीवार) के हिस्से को गिराकर निकला ६ भागनेवाले ॥ ६८ ॥ पानी छूट जाने पर ७ प्यासके घबराये लोगों ने चामल नदी के किनारे जाकर पानी पिया ८ कटारी ९ कटारी १० एक यवन के पेट में लगाकर मारडाला ॥६९॥ ११(क)सैकड़ों को मारकर १२ गीधा नामक चारण १३ अपने कंधे पर बलवंतसिंह के बालक को लेकर

(क) [illegible]

निकस्यो लै सु स्वामिकुल १ नाम २ हिँ रक्खन सिसु वह जनन प्ररूढ ॥ ७० ॥
प्रभु कवि जनक रचिय तिहिँ रनपर बल २०९१२ विग्रह १ अभिधान प्रबंध ॥
उद्धत गुँफ वीररस आलय सह बल२००१२ लरन१ मरन२हढसंध ॥
प्रकटत सुद्धि इम सु बुन्दीपुर सुनि प्रभु अप्प असह किय सोक॥
आप्लँल ठानि दई जलअंजलि अब ऋतु प्रसर्ल्य५छयो सबओक७१
सो वित्तत प्रकटयो सिसिराऽगम जहँ प्रभु ब्याह प्रथम१मह जात॥
घरघर हरख नगर बुन्दी घन बहुजन हुलसत चलन बरात ॥
ससि पन्नग बसु इक १८८१ सूचित सक अविसद २ फग्गुन १२ नवमि९ अनेह ॥
दुवरदिस थप्पि लगनकेंग्गर दिय आवन दुलह समय सुभएह७२

॥ दोहा ॥

इम नवमी९ फग्गुन१२ असित२, समै लगन थपि सुद्ध ॥
मचन लग्यो पुर१ देस२ मह, दिसदिस पटह प्रबुद्ध ॥ ७३ ॥
कृष्णाराम१ धात्रेय कुल, सचिव मुख्य सब साज ॥
सज्ज करे समुचित सुमति, करन स्वामि जस काज ॥७४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशौ रामसिंहचरित्रे झल्लजालमसिंहसमरस्वसोदरपृथ्वीसिंहमरणापलायित

अपने स्वामी के वंश का नाम रखने को १ वह बुड्ढा छाने निकला ॥ ७० ॥
हे प्रभु रामसिंह २ आपके कवि (सूर्यमल्ल) के पिता चंडीदान ने उस युद्ध पर उद्धत वीर रसके ४ गुंथेहुए घर रूपी बलविग्रह नामक ३ ग्रन्थ बनाया जो बलवंतसिंह के लड़ने और मरने की दृढ ५प्रतिज्ञावाला है देखकर ७आपने भी स्नान करके जलांजलि दी ८ अब सब घरों में हेमंत ऋतु छाई ॥ ७१ ॥
रावराजा रामसिंह के प्रथम विवाह का ९ उत्सव हुआ १० फाल्गुन के कृष्ण पचकी ११ समय १२ पत्र दिये ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, रामसिंहके चरित्र

नाथद्वारगतकोटापतिकिशोरसिंहविष्णुपूजनसमासंजन १ नाथद्वारस्थकिशोरसिंहपादुकाज्ञयाझल्लजालमसिंहकोटाराज्यकार्यकरण २ विजितकाबुलजनपदलवपुरपतिसिखरणजीतसिंहपेसोरविजयन ३ विजितबर्माराष्ट्रांगरेजकोटिद्रम्मसहितदेशैकभागग्रहण ४ कोटासिंहासनसंस्थापितकिशोरसिंहजालमसिंहमरण ५ किशोरसिंहानुजविष्णुसिंहलक्षद्रम्मपट्टमापण झल्लमाधवसिंहकोटामहामात्यीभवन ६ सिंधियाहुलकरकतिपयलघुराज्यहरणसूचनसाहितराघवदुर्गाधिपजयसिंहवीरत्वसूचन ७ बुन्दीपतिरामसिंहपितृव्यबलवंतसिंहपट्टनप्रधननिधनरामसिंहप्रथमविवाहप्रारम्भसूचनं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः षट्षष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

(उपदोहा)

में कोटाके महाराव किशोरसिंह का अपने भाई पृथ्वीसिंह को मरवाकर झाला जालमसिंह के युद्ध से भागना और नाथद्वारे में विष्णु भगवान् के पूजन में लगकर रहना १ किशोरसिंह के नाथद्वारे रहने के समय किशोरसिंह की पादुकाओं से आज्ञा लेकर झाला जालिमसिंह का कोटाका राज्यकार्य करना २ लाहोर के राजा सिख रणजीतसिंह का काबलको विजय किये पीछे पेसोरको विजय करना ३ अंगरेजों का बर्माकी वलायत को जीतकर क्रोड़ रुपयों के साथ देश का एक भाग लेना ४ महाराव किशोरसिंह को कोटा की गद्दी पर पीछा बिठाये पीछे झाला जालिमसिंह का मरना५ किशोरसिंह के छोटे भाई विष्णुसिंहको लाख रुपयोंका पट्टा मिलना और झाला माधवसिंह का कोटा का मुसाहिब होना ६ सिंधिया और हुलकर का कई छोटे छोटे राजाओं के राज्य छीनने की सूचना के साथ राघवगढ के राजा जयसिंह की वीरता की सूचना करना ७ बुंदीके पति रामसिंह के काका बलवंतसिंह का पाटण के युद्ध में माराजाना और रामसिंह के प्रथम विवाह के प्रारंभ की सूचना का चौथा मयूख ४ समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से तीन सौ छासठ ३६६ मयूख हुए ॥

हड्डवती[1] भुव समह हुव, अधिपति उपयम[2] उचित ॥
निखिल भये उपहार[3] नव, चित जन मन रुचित ॥ १ ॥
लग्गि निमंत्रन दिसन लग, द्यौस१ निस२ न मह दुरत[4] ॥
सद्द तुमुल भेरिन सतत, फैलि प्रतत[6] जस फुरत ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

सचिव भरत बेसर१न भोर्लि२ सकट३न सु चित्त भर ॥
दिसदिस देस बिदेस व्यावहारिक[9] क्रमि कग्गर ॥
समय अंत सब सुभट होइ हाजरि सुख संधिय ॥
हुव पूजित हेरंब[10]१ बिहित क्रम कंकन२ बंधिय ॥
जजि माइ देव३भजि तैल४जव५फबि बरातजस सर फबि
इम अप्प बरस तेरह१३उदित चित्त मुदित व्याहन चलिय॥३॥

(मुक्तादाम)

चढ्यो प्रभु चक्क[11] बिशिष्ट[12] बरात, सबै जन कुंकुम[13] चैल सुहात ॥
करी[14] मदमत्त चले सह केक, सजे जनु कज्जल अद्रि सटेक ॥४॥
जथाकुल भद्र१मृगा२दिक जात, झरैं मद ज्यों झरनाँ गिरिगात
चलेकतिमकुन१उद्धत[15]व्याल२,कितेकल[16]भा३भिधविक्क[17]४बिसाल॥५॥

हाडोती की भूमि १ उत्सव सहित हुई २ राजा के विवाह के उचित सम्पूर्ण सामग्री नवीन हुई ॥ १ ॥ दिनरात्रि उत्सव में ४ छिपते हैं ५ नौ शब्द निरन्तर भरगया ६ निरंतर फैलकर यश फुरा ॥२॥ ७ खच्चरों, ८ व छकड़ों पर ९ व्यवहार के पत्र चले १० गणेश का पूजन होकर उचित रीति से कंकन बंधा और माईदेव (मांयां) का पूजन होकर तेलबान चढा ॥ ३ ॥ १२ जानके सहित राजा की ११ सेना चढी वहां सब मनुष्य १३ केसरिया रंग वस्त्रों सहित शोभायमान हुए १४ कितने ही मस्त हाथी साथ चले सो हठ सहित कज्जन के पर्वत सज्जित हुए ॥ ४ ॥ जो हाथी भद्र, मृग आदि कुलों में उत्पन्न और पर्वत के झरनों के समान जिनका मद झरता हुआ, हाथियों में कितनेही मुकने (बिना दांतवाले) और कितने ही उद्धत १५ तिरछी घात करनेवाले १६ कितने ही कलभ नामके (बच्चे) १७ कितने ही बड़े बड़े ॥ ५ ॥

महाजव जुत्थप१ मैगल६ मत्त७, रहैं मग इष्ट*वसा८।१ सुख रत्त॥
अयोमय †अंदुक लंब लगाइ, जरे डगवेरिन जेर न जाइ ॥ ६ ॥
गहैं नर ‡वेखुक प्रेरत गैल, डिगै डग §डाकन चैंक चरैल ॥
अपष्ठन घात सुसुज्जुर अंग, सजे हुव हाटक हौदन संग ॥ ७ ॥
महावत वीर्तै घुमावत मत्थ, हठी फट कारत भोरन हत्थ ॥
परे कुथपट१ जरी२ मय पिट्ठि, हवाइन हाकन नोदत निट्ठि ॥ ८ ॥
बहैं खग सिंचत जे वमथून, जगैं जिन लोचन खून जनून ॥
कलापक कंठ मिले मखतूल, मरोरत आखिन साखिन मूल ॥९॥
दुरदंतन कंचनके वंगर बेस, बजैं लगि घंटन घोर बिसेस॥
तनैं तनुहिंगुलु१त्यौं हरिताल२,जथाऽवर१गात२न भातजँगाल३॥१०॥

कितने ही बड़े वेगवाले यूथपति, कितने ही मदकल (मद में कलेहुए) कितने ही सामान्य मस्त * कितने ही हाथी मार्ग में हथनियों के सुख में प्रसन्न रहने वाले अर्थात् आगे हथनी होने से मार्ग में चलनेवाले जो † लोहे की लंबी जंजीरों से जड़े हैं तो भी बंधे नहीं होने के समान जाते हैं ॥ ६ ॥ जिनके पीछे ‡ भाले लिये हुए मनुष्य प्रेरणा करते हैं और § क्रोध दिलानेवाले छोटे घाव लगाते हैं तब वे चिड़नेवाले हाथी क्रोध करके आगे पैंड (पग) देते हैं १अंकुश के अग्रभाग की घात से २अंग को उठाकर सुवर्ण के हौदों के साथ सज्जित हुए ॥ ७ ॥ ३महावत के हूलने (पगों की ठोकर देकर प्रेरणा करने) से मस्तक को हिलाते हैं और वे हठी ४ शुंड मस्तक के भमरों को फटकारते हैं जिन पर रेसम की और जरी की ५ झूलें पड़ी हैं वे हवाइयों (बारूद के अग्नियन्त्रों) से और ललकारों से कठिनाई से ६ प्रेरणा कियेजाते हैं ॥ ८ ॥ जो हाथी ७सुंडके जलकणों से उड़ते हुए पक्षियों को सींचते हैं और जिनके नेत्रों में ८ क्रोध का खून जगता है "फारसी भाषा में जनून का अर्थ बावलापन है परन्तु यहां लोकरूढी से क्रोधके अर्थ में प्रयोग किया है" कंठों में १० रेसम के ९ कलाव लगे हुए हैं और ११ वृक्ष को मरोड़तेजाते हैं ॥ ९ ॥ दोनों दंतों में १२ सुवर्ण के उत्तम वंगड़ लगे हैं और घंटाओं का विशेष शब्द होकर बजती हैं १३ जिनके शरीर पर हिंगलू और हरताल फैलायेहुए हैं और इसी प्रकार अन्य शरीरों पर जंगाल १४ शोभित है ॥ १० ॥

उठावत पोगर दान अमान, पटावत पच्छिन लैन प्रमान ॥
बढे अँग उच्छ्रय मेचक बर्ग, करैं चल सुप्प समाकृति कर्ग ॥११॥
अगद्दंग वानि चले अतिकाय, चले इम सामज कामज चाय ॥
खरे रचि राजिय बाजिय खेल, मलंगत ताजिय राजिय मेल ॥१२॥
भये भुव बाल्हिक कच्छ बनायु, सअर्ब इरान हिरातज सायु ॥
तुखार इराक रु तिब्बत चीन, किते घट कच्छ रु बंग कुलीन ॥ १३ ॥
किते सित नील हलाह कुलाह, सुनावत सादिनै औरन वाह॥
नचैं बजि प्रोथन आनिल नाद, बढैं गति पंचक अंचक बाद ॥१४॥
लसैं छबि चम्मर डम्मर लूम, घलैं कर मंडत घुम्मर घूम ॥
घनैं रय ठहै न कसा अवघात, भरैं खुरतारन अग्गि अलात॥१५॥
समीर करैं जिनतैं अनुसार, परैं उडि पानि पचीसन पार ॥

अमाप मद में १शुंडके अग्रभागको उठाते हैं सो मानों उसको पक्षियोंको लेने को भेजते हैं २वे काले वर्ण के ऊंचे पर्वत ३छाजलेकी आकृतिके कानोंको चपल करके बढे॥११॥ वे बडे शरीरवाले हाथी महावत और सांटमारों की ४ अगद्दंग वाणी से फिरे "यह हाथी को बढाने का सांकेतिक शब्द है" ५ इस प्रकार के हाथी कामना की चाह से चले, उधर खेल करते हुए घोड़ों की ६ पंक्ति खड़ी हुई और ७ कूदते हुए घोड़ों का उस पंक्ति से मिलाप हुआ ॥ १२ ॥ ८ बाल्हिक शब्द से लेकर बंग शब्द पर्यन्त देशों के नाम हैं जिनमें उत्पन्न हुए घोड़े ॥ १३ ॥ कितने ही श्वेत, नीले, ९ अबलख १० कुछ पीले रंग और काले घुटनोंवाले जो दूसरों से ११सवारों की प्रशंसा सुनानेवाले १२नचतेहुए घोड़ों के फुरणों (नासिका) में १३ पवन का शब्द होता है सो मानों घोड़ों की पांचों गतियों में बढने का १४ पवन से वाद करते हैं ॥ १४ ॥ जिनका बालधी (पूंछ) चमर के १५आडम्बर से शोभा देता है सो घूमर में घूमकर हाथ में लिये चमर के समान रचता है, बडे वेग के कारण जिन पर १६चाबुक का प्रहार नहीं होसकता और खुरतालों से १७ धूम रहित अग्नि गिरती है ॥ १५ ॥ १८ पवन भी जिनके पीछे ही चलता है बराबरी नहीं करसकता क्योंकि जब ये घोड़े उड़ते

सजे कसि खंध *कबी मुख सच्च, नचैं पय चातुरि पातुरि नच्च१६
तुले समभाग †कुसा मखतूल, फबैं गल चोसर हाटक फूल ॥
खरे मुख आयस पक्क खलीन, जरे जरजाल बिराजत जीन॥१७॥
बनी पय नाल ठनी गजबेल, खनंकत नेउर तंडव खेल ॥
गुथे घन घुम्म उडैं गजगाह, बनैं स्वरगच्युत गंग प्रवाह ॥ १८ ॥
किते अहिपेच१पटी२गति३काव४, फिरैं पटु आदसफूल५फिराव॥
भुजंगन साव१ सटा तति२ भास, करैं मनि१ ज्यों मनिगुंफ२ प्र-
काम ॥ १६ ॥
लसैं बपु बोधितरू छद१लोल, कनीनिय कैं२गनिका हगगोल
करैं छबि नोंक कढे जुग२कर्ण, प्रदीप सिखा१किंमु केतकपर्ण२
अमेय तरोगति निम्न अलीक, भुलावत जे सिबिका भरि भीक॥

हैं तो पवन ले बीस हाथ आगे जापड़ते हैं, जिनके कंधे कसकर सजेहुए और मुख में * लगाम के सचे और पगोंकी चतुराई से पातुर (वेश्या) के समान नाचनेवाले † रेशम की बाग में बराबर से तुलेहुए जिनके गले में १ सुवर्ण के फूलों की चोसरें शोभा देती हैं, जिनके सच्चे मुख में पक्के २ लोहे की लगामें और जरी की जालीवाले जीनों से शोभायमान ॥ १७ ॥ गजबेल (लोहा विशेष) की बनीहुई पगों में नालें लगी हुई और ३ नाचने में नेवर बजते हुए, जिनमें बहुत घूमने से गुथे हुए गजगाव उडते हैं सो मानों स्वर्ग से ४ गिरती हुई गंगाका प्रवाह है ॥ १८ ॥ कितने ही ५ नागपेच, पटी (सीधदौड़) ६सर्पट तथा समान सीधी दौड़, कावा(गोलकुण्डा) ७फूलआदस (घीरीदौड़) में चतुराई से फिरते हैं ८ सर्पों के बच्चों की भांति ६ केसवाली शोभा देती है और उस केसवाली में १० गुथीहुई मणियां हैं सो ही सर्प की मणिका प्रकाश करती हैं ॥ १६ ॥ जिनके शरीर चपलता में ११ पीपल के पत्ते के समान शोभा देते हैं १२ किना गणिकाके नेत्रों के गोलेकी पुतली के समान है, दोनों कानों की कढी हुई नोकें दीपक की शिखाकी १३ किना केतकी के पत्तें की शोभा करते हैं ॥ २० ॥ १४ शीघ्रता की गति में अमाप १५ गहरा ललाट (बैठाहुआ तवा) जो ल्हीक भरकर १६ पालखी को भुलानेवाले

महामृदु लोम[1] जथा पसमीन, वैटा[2] नटके जिम झंप प्रवीन॥२१॥
अटैं झुकि बक्र हयचंछट[3] अच्छ, मुरैं छक्क विज्जक[4] ज्यों दक[5] मच्छ
किंधौं सफ[6]१ आयस कांत[7] कटोर, उडैं अति अंबर जुब्बन जोर२२
थरक्कहिं[8] अक्कहिं संभ्रम थप्पि, वहैं सुख बग्गहिं मग्गहिं नप्पि॥
जवाधिक[9] रथ्थ[10] किते जुग जुत्त, मनोरथ पानिय१ पावक२ पुत्त२३
सुहात चले इम अर्व्वर[11]२ समूह, जथा सुख मंद न स्यंदन[12]३ जूह॥
वैरप्राधि[13]१ नाभि२ सकूवर[14]३ चक्क[15]४, वनैं जुग[16]५ चंदन संभव वक्क२४
प्रभाकर[17] जे जर जाल पिनद्ध[18], वहैं धुर उंछुर[19]६ रेसम बद्ध॥
लगे अनुकर्ष[20]७ वरूथ[21]८ विधेय, रजे पथ यों रथ३।१ गोरथ[22]३।२ गेय२५
चली बहुधा सिबिका३।१ सुखपाल३।२, चले बहु भोलि[23]१ बजावत गाल
क्रमें सह जन्य४ सु धन्य कुलीन, हजारन दान१ कृपान२ न हीन[24]२६

और पसमीना के समान बडे कोमल १ केशोंवाले २ नटके पट्ठे [छोकरे] के समान कूदने में चतुर ॥ २१ ॥ उत्तम झुकेहुए टेढे ३ कन्धे से फिरते हैं और छक को ४ जनानेवाले ५ जल में मच्छी के समान पलटते हैं किंवा ७सुंदर लोहेवाले कटोरों रूपी ६खुरों से यौवन के जोर से आकाश की तरफ उडते हैं ॥ २२ ॥ ८सूर्य को भ्रम कराकर ठहरते हैं और बागों में मार्ग को मापकर चलते हैं ९ अधिक वेगवाले कितने ही दो दो घोड़े १० रथों में जुते सो मानों वेग में जल और अग्नि के पुत्र हैं ॥ २३ ॥ इस प्रकार ११ घोड़ों के समूह शोभित होकर चले और तिसी प्रकार बडे सुखवाले १२ रथों के समूह चले जिनके उत्तम १३ पूठियें, नाही और १४ पीनसी सहित १५ पहिये हैं १६चंदन के बनेहुए जूवे (जूड़े) ॥ २४ ॥ १७कान्ति करनेवाली जरीकी जालियों [खोलियों] से १८ बंधे हुए, १९रथ का अग्रभाग और जूवा रेसम की रस्सी से बंधेहुए, जिनमें उचित २०ओदण [रथके नीचे का आधार भूत काष्ट] और २१ रथ कवच (शत्रु के शस्त्रों से बचानेवाली लोहे की जालीयुक्त खोली) लगेहुए इस प्रकार के रथ मार्ग में शोभायमान हुए और कहेहुए २२ बैलों के रथ भी चले ॥ २५ ॥ बहुतसी पालखियें और सुखपालें भी चलीं और २३ बहुत कट गाल बजानेहुए चले और धन्यता योग्य कुलवान हजारों जानेती(बराती) साथ चले जो तरवारों से और दान से २४ हीन नहीं हैं ॥ २६ ॥ और ज्योतिवाले

भरैं नग भूखन जोति जराय, कसैं सब हेतिं गिनैं तृन काय[2] ॥
भले भुज१हत्थिन ठिल्लनहार२, अहो[3] कर१आसुग२पाय[4]१पहार२७
नहार१ पहार२ अंत्यानुप्रासः ॥१॥
कहै अृत तूटिपरो किन सीस, निहारत ईक्क[6]१ बकारत बीस२० ॥
सजे कछवाह१कमंधज२सत्थ, तृना१हित ता२दंव जादव३तत्थ२८
मिले बडगुज्जर४ झल्ल५पमार६, हिले गहिलोत७तथा प्रतिहार८॥
उमंगत चालुक९ के चहुवान१०, स जावल११ सैंगर१२ बैस १३
सुजान ॥ २९ ॥
चली धनुउत्कट१४ गोर१५ रु बिंद१६, महारन सत्रु गइंद मइंद ॥
रमैं खुरली पटु सज्झि कृपान, बढे बिंन बेधत के नभबान२ ॥३०॥
लहैं कति लच्छय तुपक्क३न तक्कि, छजैं कति कुंत४न संगि५न छक्कि
कटार६ गदा७ इलिका८छुरिकादि, बढे रमते इम सस्त्रन बादि३१
चले झपटावत बाजि नचाय, किते उडि लंघत हत्थिन काय ॥
टरैं झपटावत है पलटाइ, जैंवी कति हत्थिनपैं कढिजाइ ॥३२॥
सजे इम सूर चले प्रभु संग, बन्यौं बर भूँबर[12] ओप अनंग ॥
सजी सिर कुंकुम[13] पुंजित पग्घ१,नव९ग्रह[14] गो५सिखपट्ट२अनग्घ[15]३२
महामनि पंच५सिखी तिम मोर३, जर्यो तूररा४१ रु किलंगि५१२
य जोर ॥

नगों के जड़ेहुए भूषणों से भरेहुए १सब शस्त्रोंको कसेहुए २शरीर को तृण के समान जाननेवाले और उत्तम भुजों से हाथियों को हटानेवाले ३आश्चर्य करानेवाले पवन के समान शीघ्रता करनेवाले हाथ और पर्वत के समान अचल ४ चरणोंवाले ॥ २७ ॥ ५ सत्य ही कहते हैं ६ अकेले होने पर भी बीसों शत्रुओं को ललकारनेवाले ७ तृण रूपी शत्रुओं को जलानेवाला अग्नि रूपी ॥२८॥२९॥ ८चापोत्कट [चावड़ा] ये सब क्षत्रियों के वंशोंके नाम हैं बडे युद्ध में शत्रु रूपी हाथियों के ९ सिंह १० बाणों से आकाश में पक्षियों को बेधन करनेवाले ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ११ कितने ही वेगवाले ॥ ३२ ॥ १२ भूपति १३ केसर के रंग की पाघ १४ नव रत्नों का जड़ाहुआ पांच कलंगीका १५अमूल्य शिरपेच ॥ ३३ ॥

लगी मृगनाभि१ त्रि३ रेख६ ललाट, लसैं श्रुति२ कुंडल२।७ झल्ल तलाट३ ॥ ३४ ॥

हसैं मनि पंच५ प्रपंचक हार८, दिपैं भुज४ अंगद२।९ ओज अपार बन मनिबंध५ अनर्घ अवाप६२।१०, छजैं कर७साख १० महोर्मिक८ छाप ॥ ३५ ॥

रह्यो फबि कंचुक१२ जोगुड९ रंग, सटी१० सेमलंक कस्यो अधिकंग१३ धरयो सित१सानघुप्यो ईक१२धार,कस्यो निज पैत्तनजात कटार३६ बन्यौं बर खेटक१६ पिट्ठि बिसाल, मनौं कनकाचलपैं घनमाल ॥ सु शृंखल२।१७ सोहिरे गोहिर२ संग, अलंकृत१८ अंघ्रिन अंगुलि१० अंग ॥ ३७ ॥

छयो मनिमंडित दंडित छल१९, मैंबीजित चामर२।२०बड़े२।२१पतल चल्यो बनि रूच्य इभेंद्र अरोहि, सु ज्यों सतसलैं घनद्विप सोहि ३८ समै सिसिरोद्धत्तर पक्कत सस्य,तपा११गत कैलप २ गम्य तपस्य१२॥ नकीबन संकुल लग्गि ललक्क, चल्यो इस राम२०।१४धराधवचक्क

१कस्तूरी २कानों में कुंडल ३गालों के नीचे तक ॥३४॥ ४ भुजबन्ध ५पूंचे ६कड़े (कंकण)७अंगुलियोंमें ८बड़ी अंगूठियां ॥३५॥१०केसर के रंग का ९जामा(वागा) शोभायमान होरहा है ११सिंहके जैसी कमर पर "सटा विद्यते यस्य स सटी" १२कमरबंधा बांधा साण से घिसाहुआ तीक्ष्ण १३ खांडा (खड्ग विशेष)धारण किया १४ अपने पुर (बुंदी) का बनाहुआ कटार बांधा ॥ ३६ ॥ १५ सुंदर बड़ी ढाल बांधी सो मानों १६ सुमेरु पर्वत पर मेघमाला है १९पगों के गिरियों पर १७सुन्दर पगसांकले १८ सुवर्ण के लंगर शोभित हैं २० चरणों की दस ही अंगुलियां भूषण युक्त हैं ॥३७॥ चमर २२मोरछलों से२१पवन ढोला हुआ, बड़े हाथी पर सवार होकर २३ दुल्लह चला सो मानों २४ इन्द्र २५ ऐरावत पर सवार होकर शोभा युक्त हुआ ॥३८॥ २६शिशिर ऋतु के उतरते २७ खेती के पकते २८ माघ मास के उतरते और गमन करने योग्य ३० फाल्गुन मास के २९समय छड़ीदारों से३१भरीहुई ललक लग कर इसप्रकार३२भूपति रामसिंह

दिसा१ विदिसा२न निसानन¹ नद्द, बजे सिर भेरिन² कोन³ बिहद्द ॥
दुघाँ२दल अग्ग१रु पिट्ठि२दिपात, बनैं अति ओपन तोपन⁴ व्रात ४०
नटीनट१५ भंड२६ नटी३ बहुरूप४७, भये गन गैल रिझावन भूप ॥
धधोसहु दै तिन्ह इष्ट अछेह, मद्दा⁸ वसु बिंदुन बुट्ठत मेह ॥४१॥

॥ षट्पात् ॥

प्रतिमुकाम क्रम प्रचुर सुकवि पंडित सनमानिय ॥
सह बरात मह सुलह दिपत प्रस्थित तह दानिय ॥
पणव१ स दुंदुभि२ पटह३ मुरज४ ढक्का५ गोमुख६ मुख¹¹ ॥
वृंहित¹²१ हेसा¹³२ बिबिध तुमुल घन तनित¹⁴ रनित रुख ॥
रुचि भाग राग गायक रचत भनत बंदि¹⁵ भोगावलिय ॥
मारीच¹⁶ हिरद आतहि महिप चतुर रूचय उपाहन चलिय ॥४२॥
फुट्टि फुट्टि हय खुरन गिरिन पाखान गरद मिलि ॥
छुट्टि छुट्टि छितिसंधि सिथिल भोगीस¹⁷ सीस झिलि ॥
तुट्टि तुट्टि तरु दुगम पृथुल पद्धति¹⁸ हुव पद्धर ॥
कुट्टि कुट्टि बंत¹⁹ बज्ज कोन गत गज्ज दिगंतर ॥
बित्थरि बखान²⁰ जस दिस१ बिदिस२ बिदित बत्त हुव नर नरन
बुंदीस बिंद पहु जोधपुर क्रमत अज्ज उपयम²¹ करन ॥४३॥

की सेना चली ॥ ३९ ॥ १ नगारों का शब्द २ नोवतों के ऊपर बेहद ३ डंके [डाके] बजे ४ तोपों का समूह ॥ ४० ॥ ५ नट विशेष ६ भांड ७ स्वांग लानेवाला ये सब नटों के भेद हैं ८ बडे घन की बुंदों से ॥ ४१ ॥ ९ बहुत १० ये सब बाद्यों के भेद हैं ११ आदि १२ हाथियों की गर्जना १३ घोड़ों का हींसना १४ मेघ गर्जना के समान १५ भाट लोग स्तुति करते हैं १६ पालकी (राजा की सवारी के) हाथी के होदे पर आते ही ॥ ४२ ॥ १७शेष नाग १८सीधे मार्ग होगये १९ डाकों से कूट कूट कर नोवतों का बजना और हाथियों की गर्जना दिशाओं में गई २० दिशा दिशाओं में यश के वाखाण [व्याख्यान] होकर, २१ विवाह करने को जोधपुर के राजा के घर जाता है ॥ ४३ ॥

[1]गजन फरकि [2]बहरक थरकि गन गगन बिराजत ॥
छोनी [3]बमथुन छिरकि झर कि भद्दव घन साजत ॥
बरकि दह्व बाराह लरकि फनमाल नाग [4]ईन ॥
धरकि धरकि भय धुज्जि दरकि उर असह [5]अरातिन ॥
गढ गढ़न संक अंतर उपजि करत मंत्र मंत्रिन कतिक ॥
कुलरीति गीति इह्ह६१न कहत [6]समिति१ब्याह२उच्छाह इक१॥४४॥
गरद [7]अर्क अच्छादिय सरद घन जरद [8]सोम जिम ॥
तो[9]म गगन तोमरन [10]मंदर पुंखन कलाप तिम ॥
भजत भजत बनजंतु कटक अंतर थकि छुट्टत ॥
कति कमनैतन करन सरन [11]बिकिरैन बपु फुट्टत ॥
इभ पिट्ठि अप्प बिरुदन सुनत भनत दैन रंकन बिभव ॥
[12]सुरनाह राह अतिछबि अटत रटत जलेब नकीब [13]रव ॥४५॥
उलटि उलटि [14]दल ओट पवन मंडत [15]प्रत्यागम ॥
सुगम हरोल१न सलिल दुगम चंदोल१न [16]कर्दमर ॥
आसपास इहिँ [17]चाँस त्रास [18]मेवासन पत्तिय ॥
[19]हेतुँन हास हुलास बास [20]सेतुँन गुन वत्तिय ॥

१हाथियों पर२ध्वजाओंके समूह उडकर३हाथियोंकी शुंडके जलकणोंसे भूमि छिड़की जाती है सो मानों भादवाका झड़ लगता है४शेष नागके फणोंकी माला झुकती है५शत्रुओंके हृदय फटकर६युद्धका और विवाह का उत्सव एकसा ही होता है॥४४॥ जैसे शरद ऋतु के बदल ८चन्द्रमाको जड़ देवें तैसे रजने७सूर्यको ढक दिया और जैसे १०बाणों के पंखों से आकाश भरजाता है तैसे भालों के ९समूह से आकाश भरगया ११बाणों से पक्षियों के शरीर फूटते हैं १२इन्द्र के मार्ग से १३नकीब शब्द करते हैं ॥ ४५ ॥१४सेना की ओट से १५ उलटा गमन करता है १६ सेना के पिछले भाग को कीचड़ मिलता है १७इस खबर से १८ लुटेरों और चोरों के घरों में त्रास पहुंची १९ मित्रों को प्रसन्नता पूर्वक हास्य होता है और रामसिंह के गुणों की वार्ता का वास २० मर्यादा पर्यंत होता अर्थात् भूमि की मर्यादा (सीमा) समुद्र है वहां तक गुणों की वार्ता होती है

सुनि धन्य धन्य सूचक सुजस जन्य जनन अति मोद इत॥
प्रति ग्राम गाम बंधत कलस धाम धाम मंगल [1]महित।४६।
[2]भागधेय भौमिकन निकर लैलै प्रताप नत ॥
[3]उपहित अंजलि आत नात सिर भेट निवेदत ॥
कहत नाथ किंकरन पूत [5]करि ओदन[4]१ पानिय२ ॥
मंडहु उचित सुकाम लखि स्वीकृत महमानिय ॥
बिसवासि सिद्ध बैनन बरहु मन्नी इम सूचत मुदित ॥
मगजाल जुरत [6]आवरि मनुज होत निछावरि परम हित।४७।

॥ दोहा ॥

प्रतिसुकाम सचिवन [7]प्रकर, गोनिन रुप्पय१ गेरि ॥
पट२ भूखन३ हय४ मय५ प्रचुर, हाजरि रक्खत हेरि ॥४८॥
जहँ [9]मिश्रन प्रभुकवि जनक, चारन मनि कवि चंड ।१
भट्ट रतन२ बंटत भये, ए दुवर त्याग अखंड ॥ ४९ ॥
इच्छित धन इम कविकुलन, मिलत सुकाम सुकाम ॥
सुनत त्याग जस [10]संक्रमिय, [11]रूप्प मुकुटप्रभुराम२०१।४।५०

॥ घनाक्षरी ॥

प्रथम१ पगारौं१ दिय देवली२ सुकाम दूजो२,
केकरी३ तृतीय३ सरवार४ चोथो४ जसकाम ॥
रामसर५ श्रीनगर६ कावरि७ यौं बीच रहि,

---

१ पूजनीय तथा बड़ा मंगल होता है ॥४६॥ प्रताप से नम्र होकर भौमियों के समूह २ हासिल (खिराज) लेलेकर आते हैं और ३ हाथ जोड़कर (अञ्जलि सहित) मस्तक नमाकर नजर करते हैं ४ अन्न जल ५ पवित्र करके मनुष्यों के समूह की ६ आवलि (पंक्ति) जुड़कर ॥ ४७ ॥ ७ गोनियों में रुपयोंका समूह डालकर ८ ऊंट ॥ ४८ ॥ हे प्रभु रामसिंह आपके कवि सूर्यमल्ल के पिता ९ मिश्रण शाखा का चारण चंडीदान ॥ ४९ ॥ १० चले ११ दूल्हों के मुकुट रामसिंह का यश सुनकर॥ ५० ॥

अष्टम८ सु पुष्कर८ मो न्हान दान अभिराम॥
अल्हनादिआवास९ रु मेरता१० निबसि ऐसैं,
बोरूंदा११ पीपाड़१२नैर बीसलपुर१३स नाम॥
अध्व इम खंधावारैं तेरह१३ बिरचि आप,
धन्यता धुरंधर निरायो नृप मानं धाम॥५१॥

॥ षट्पात्॥

किय मग बिच कासार इक्क १ रानिय सेखाउति।
आवन सम्मुह अवधि सौंहि निश्चित उक्ति१ रु श्रुति२॥
अब तासौं बढि अधिक पैंड संख्या असीति८० पर॥
समुह आइ नृप स्वसुर मिल्यो मान सु बसुधाबर॥
नालकी जान आरूढ नृप जुग२ हि कुलक्रम रीति जिम॥
बिरचित बिधेय मोदित मिलि रु आये गंम्प निकेत इम५२

॥ सौराष्ट्री दोहा॥

प्रथित जोधपुर पास, राईको उपबनं रहत॥
नृप बल जन्य निवास, किय तिहिं सिबिरं प्रबंधकरि॥५३॥
महलन गो नृप मान, सिक्ख बहुरि करि मग्गसन॥
अंबरघर चहुवान, ठ्है कृत दान प्रविष्ट हुव॥५४॥
मिले स्वसुर१ जामातं२, सूचित क्रम जवतैं सरनि॥
तबतैं द्विगुन दिपात, जर भर बुट्ठो इंद्र जिम॥५५॥
महुर१ द्रम्म अति मान, असे बिधि नभ उच्छलिय॥

---

१ सुंदर २ आल्हणयावास ३ इसप्रकार मार्ग में तेरह मुकाम करके ४ मानसिंह के धाम ४ राजधानी (जोधपुर) को समीप ली॥५१॥ ६ तलाव ७ निश्चय ही कही और सुनी है ८ उचित रीति करके ९ जहां जाना था वहां आगये॥५२॥ १० बाग ११ राजाकी सेना और जान के लिये डेरों का प्रबंध किया था वहां निवास किया॥५३॥ १२मार्ग में से १३ डेरों में॥५४॥ १४जमाई १५ मार्ग में॥५५॥

देखि पिहित[1] जिम दान, कर लिय झेलि अजाचकहु[2] ॥५६॥
इत संध्यादिक अंग, नित्य क्रियाके बिरचि नृप ॥
पावत समय प्रसंग, सज्ज भयो पुर संक्रमन ॥ ५७ ॥
भरि जो लग अति भीर, रुँच्य[3] सदन बाहिर रही ॥
पाई संकट पीर, जिम तरउप्पर लब्ध जन ॥ ५८ ॥
इभ मारीच[4] अरोहि, पहु सज्जित अब समय पर ॥
मनमन जनजन मोहि, चल्यो बिवाहन लग्न चहि ॥ ५९ ॥
जत्थ रिझावन जानि, सामग्री समुचित सहित ॥
अभिमुख[5] मंडिय आनि, नट१न गान२ पातुरि[6] निकर ॥६०॥
षट्पात्-प्रथुल[7] दारु[8] पट्टिरिय कमनं[9] चित्रित लिपिकारिनं[10] ॥
अंसं[11] नरन थित अटन नच्च उप्पर पननारिनं[12] ॥
तंडव[13] पटु वय तरुन झोक रागन झुम्मावत ॥
चंडातक[14] चल चरन घेर घुम्मर घुम्मावत ॥
श्रुति[15]१ जाति२ ताल३ बादन४ कुसल मोहत तत गीतन सुमति ॥
आरोह ग्राम अंतिम३ अवधि ग्राम प्रथम१ अवरोह गति६१

१गुप्तदान२याचना नहीं करनेवालों ने भी लेलिया ॥५६॥५७॥३दुल्हह के डेरे से बाहर॥ ५८ ॥ ४राजा की मुख्य सवारी के हाथी का नाम मारीच है जिस पर चढकर ॥५९॥ ५ सन्मुख आकर ६ पातुरियों के समूह ने ॥६०॥ ८ काष्ट की ७ बडी पटड़ी (तख्ते) १० चितेरों की ९ सुंदर चित्राम की हुई ११ मनुष्यों के कंधों पर चलती है उस पर १२ वेश्या का नाच हुआ १३ नृत्य करने में चतुर और तरुण वेश्या झोक के साथ राग को झुकाकर चपल चरणों से घूमर में १४ लहँगे के घेर को घुमाने लगी और तीव्रा से लेकर छोहनी पर्यन्त तक के१५स्वरों के बाईसों ही भेदों में राग की जाति ताल और वाद्य बजाने में कुशल वह वेश्या अंतिम ग्राम तक आरोह करके प्रथम ग्राम पर उतारने लगी [सात स्वरोंमें षड्ज, मध्यम और गान्धार, ये तीन ग्राम हैं यथा—"षड्जग्रामो भवेदादौ मध्यमग्राम एव च । गांधारग्राम इत्येतद्ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥" इनमें मतान्तर से गांधार के स्थान में पंचम को भी ग्राम मानते हैं] ॥ ६१ ॥

घुरि नेउरि घंटकिन झमकि सिंजित झहनावत ॥
विधि क्रम ताल बढाइ बहुरि प्रतिलोम बनावत ॥
मिलि संक्रम मुच्छनन मोद निकसंत नाद मय ॥
कंदुक१ अहि२ गति क्रमन चढत उतरत अलाप चय ॥
आनद्ध१ वितत२ वादन उचित मादन मुदित नरेस मन ॥
वसि बास आइ सायकविसम निज निवास गावन१नटन२ ६२

॥ नाराच ॥

तहाँ अलाप जाल बाल रुद्रतालतैं तन्यौं ॥
अदोस घोसँ तोस पोस मालकोसर उप्फन्यौं ॥
भुजंग जाइ ज्यौं धुनाइ ऊंद्ध छाइ थंभयो ॥

...की १ घुघरियें बजकर २ भूषणों का शब्द हुआ, विधि पूर्वक क्रम से ता... को दुहरी, तिहरी, चोहरी यथाशक्ति बढाकर फिर चोहरी, तिहरी, दुहरी ... क्रम से प्रतिलोम बनाने लगी, जिसके ३मूर्छना पर मिलकर चलने से ...मय मोद निकलता है "सात स्वरों में उत्तर मंद्रा से लेकर ज्वाला पर्यन्त ...मूर्छना हैं" अलापका ४समूह कंदुक और अहिगतिसे चलकर चढता है, उतरता है अर्थात् गेंद की गति से आरोह, स्थिति और अवरोह, तथा अहि-गति से आरोह, स्थिति और अवरोह करती है; तहां ५चर्म से मढे हुए (मृदंग आदि) वाद्य विस्तृत होकर तांत के वाद्य (सारंगी आदि) उदित हुए जिन ६ मदन (कामदेव) सम्बन्धी कार्यों से राजा का मन प्रसन्न हुआ और ७ विषम सायक(कामदेव)ने नृत्य और गान रूपी अपने निवास के स्थानों में वास किया ॥ ६२ ॥ वहां पर उस नायिका ने अलापों के ८ समूह ९रुद्र ताल से उस राग को फैलाया "रुद्र ताल का यह लक्षण है कि जिसमें छठा ताल सम पर होवै और आगे के पांच ताल विषम होवैं जिनके आगे के पांच स्थान शून्य होवैं फिर पांच ताल विषम होवैं इस क्रम से ग्यारह ताल होवैं उसको रुद्रताल कहते हैं" यह १०निर्दोष शब्दवाला और सन्तोष के साथ पोषण किया हुआ मालकोश नामक राग बढा "मालकोश राग की ऋतु शिशिर है और विवाह भी शिशिर ऋतुमें ही हुआ इसकारण मालकोश राग का ही वर्णन कियाहै" भुजंग की स्त्री [नागिनी] जावै जैसे जाकर, धुनाकर ११ ऊपर छाकर ठहराया।

पिकारवा प५ टारि उच्चरयो छ६ मैं अंचभयो ॥ ६३ ॥
बढाइ मंजु मुच्छना मिलाप माप विस्थरयो ॥
अधीन ग्राम तीन३ पीन इक्क१ इक्क१ उच्चरयो ॥
भनंकि जंत्र तंत्र गोन भारि कोन भभ्भटैं ॥
अलीन आवलीन लीन मीनकेतु उप्पटैं ॥६४॥
स१ रे२ ग३ मे४ध५ा६ने६ा७निवेस छक्क६ छक्क संचरयो ॥
पकार५ दीन भो प्रलीन पंतिहीन ज्यों परयो ॥
स्वरच्छटाऽनुलोम१ ह्वै बिलोम२ तान संकरी ॥
भिदा अपोह सोहनी समस्त मोहनी भरी ॥ ६५ ॥
स्वलोकधाँ दिपात छात जात राग श्रेणिका ॥

कोयल के समान शब्द करनेवाली उस वेश्या ने १ पंचम स्वर को टाल [छोड़] कर बाकी के छः स्वरों में उच्चारण किया [मालकोश राग छः स्वरोंवाला ही है] यह अचंभा [आश्चर्य] है क्योंकि "कोकिलो रौति पंचमम्" कोयल पंचम स्वर में बोलती है तो पिकारवा अर्थात् पिकके समान आरव (शब्द)वाली पंचम स्वरको छोडकर गाई यही आश्चर्य है और मालकोश राग में पंचम स्वर नहीं है ॥६३॥ २ सुन्दर मूर्छना मिलाकर उनके मिलाप से राग के मापको फैलाया, एक एक स्वर के साथ तीन तीन ग्राम हैं सो निकाले और ३ कोण (नजराव) से तारों को भंजटे कह सखियों की ४ पंक्ति में अन्तर्गत होकर ५ कामदेव बढा ॥६४॥ संगीत शास्त्र में स षड्ज, रे ऋषभ, ग गांधार, मे मध्यम, प पञ्चम, ध धैवत, नी निषाद, ये सात ही स्वरों की संज्ञा है जिन में पञ्चम को छोडकर बाकी के छहों रागों का छठे राग [मालकोश] में प्रवेश करके चला, वहां ६ पञ्चम स्वर दीन और अत्यन्त लीन होकर पंक्ति बाहर होवे तैसे पड़ा रहा और स्वरकी शोभा अनुलोम और विलोम तानों से चली ७ अपोहनी नाम से शोभा देनेवाली अथवा अपोहनी आदि भेदों से शोभा देनेवाली सबको उस मोहनी (नायिका) ने भरदी ॥ ६५ ॥ रागों की पंक्ति है सो ८ अपने लोक [गन्धर्व लोक] की ओर शोभा देती जाती है और तीनों ग्रामों की रेल तथा मन्द्र, मध्य, तार, इन तीनों स्वर भेद की रेल

त्रिक३ प्ररोह रेल तीन३ मेलज्यौं त्रि३ वीणिका ॥
घुरंत पाय घुम्मरी घमंकि घोर घंटिका ॥
उपंग१ चंग२ के बजैं मृदंग३ अंग अंटिका ॥ ६६ ॥
तथुंग थुंग तत्त थेइ थेइ लेइ तालपैं ॥
क्रमैं मतानु चुक्कि मान पैं बिधान कालपैं ॥
बनाव हाव भावमैं रनंकि हत्थ वंगरी ॥
किधौं पिकादि चंप झंप शोर सोरकी करी ॥६७॥
तती सुखेंदुतैं कढैं सती सिंगार तारसी ॥
ढरी बिनिद्रं कंजतैं मनौं मरंद ढारसी ॥
पलट्टि अंग के झुकैं लचक्क लंकपैं परैं ॥
उरोज भार निठ्ठि जो बली त्रि३बंध उद्धरैं ॥६८॥
क्रमैं अधोदुकूल फेर घुम्म घेर केशिका ॥
अपांग गोल लोल ज्यौं बिछोह टोल एणिका ॥
उरोज अग्रचार हार इंदछंद उच्छटैं ॥

...णी के मेल के समान १ अंकुर [खड़ी] हुई २ घूघुरों का शब्द ३ वाद्य ...षि ४ नक्खी [नज़राब] अर्थात् वीणा आदि वाद्य बजाने की वस्तु॥ ६६ ॥ ... सब शब्द नृत्य के अनुकरण के हैं ६ राग के मत के साथ चलती है ७ पगों को उचित प्रमाणसे नहीं चूककर समय पर, हावभाव के बनाव में हाथ की वंगड़ी [भूषण विशेष] बजती है सो मानों कोयल आदि पक्षियों ने ८ चम्पे के वृक्ष की शाखा से, शब्द करने की ९ केलि [क्रीड़ा] की है ॥ ६७ ॥ १० मुख रूपी चन्द्रमा से स्वरों की पंक्ति ११ श्रेष्ठ शृंगार रसके तार जैसी निकलती है सो मानों १२ प्रफुल्लित कमल पर मकरन्द [पुष्परस] की ढाली जैसी है पलटने कई अंग झुककर कमर पर लचक पड़ती है १४ कुचोंका भार कठिनाई से पेटकी त्रिवलि [तीनसल] उठाती है ॥६८॥ १५ चलनेसे लँहगेका विस्तार घेर [वर्तुल अर्थात् गोलाई] घूमर में १६ छोटे डेरे के आकार होता है और उस वेश्याके १७ नेत्रों के कोये और गोले टोल से बिछुड़ी हुई १८ हिरणी के सदृश हैं, कुचों के आगे चलनेवाला १९ इन्दछन्द नामक हार "जिस हार में १००८ मूँगे होवैं उसका नाम

अगार इक१ थान क्यौं न तान संगही अटैं ॥ ६९ ॥
लुठंत पिट्ठि केसपास आस रासमैं लगी ॥
पसारि गत्त जानि मत्त केलिपत्त पन्नगी ॥
छुटी अलक्क अंसपैं लसैं अतीव तच्छटा ॥
रहे कि लुब्भि कालनाग बाल रागकी रटा ॥ ७० ॥
सु नीर छाँह वक्रव्है रचैं दु२ चक्र रंगसौं ॥
मही रहै समीप हत्थ इक१ उत्तमंगसौं ॥
समीर चक्र नच्चमैं लखै समस्त सम्मुही ॥
सु चित्त माधुरी झरैं स्मरेच्छु जंत्र व्है सुही ॥ ७१ ॥
जु अंग जास दिट्ठिगो सु दैव अंकव्है जुरयो ॥
अलाप आनके उफान पंच५ बान अंकुरयो ॥
धुन्यौं घुमाइ टोडिका१दि पंच५ नारिको धनी ॥
त्रि३ अंग उत्तमा१दि संग इक्क१ लै तंती तनी ॥ ७२ ॥

इन्द छन्द है" उछटता है १जिसका घर और स्थान एकही है अर्थात् तानभी गले में रहती है और हार भी गले में रहता है इस कारण वह हार तान के साथ क्यों नहीं चलै, अर्थात् तानका वियोग नहीं सहने के कारण साथ ही अटन करता है ॥ ६९ ॥ २ चोटी ३ नृत्य की आशा में लगी हुई पीठ पर लोटती है सो मानों, मस्त हुई सर्पिणीने ४ अपने शरीर को केलके पत्ते पर फैलायाहै ५ कंधे पर अलक छुटी हुई दीखती है ६ जिसकी अत्यन्त शोभा दीखती है सो मानों उस स्त्री के रागकी ध्वनि पर काले सर्प ७ लुभारहे हैं ॥ ७० ॥ श्रेष्ट नीर में जैसी छाया टेढी दीखै तैसी वक्र होकर रंग[रस]पूर्वक दुचक्र नाच नचती है जिस में ८ मस्तक से भूमि एक हाथ रहजाती है ९ पवन के चक्र के जैसी अर्थात् गोलाकर नाच में इतनी शीघ्र फिरती है कि सबको सम्मुख ही दीखती है १० उस कामदेव के यंत्र (चरखी) में चित्त रूपी गन्ना मिठास को टपकाता है ॥७१॥ जो अंग जिसको दीख गया वह उसके आगे ११अटल होगया अर्थात् उसको वही दीखता रहा और अन्य अलापों के उफान से कामदेव उदय हुआ, टोडी, खंभावती, गौरी, गुनकली और ककुभ, इनके पति मालकोशको धुना, तहां उत्तमा आदि तीनों अंगोंमें सबकी एक१२पंक्ति

धरैं प्रतीति यौं न तान कोन थानतैं धपी ॥
करैं पिधाने[2] गान जानि बानि पानि कच्छपी[3] ॥
निखंग१ चाप२ आदि हेतिं[4] रूप मंडती नचैं ॥
बिलोकिबे त्रिलोक ओक[5] नैन कोनके बचैं ॥ ७३ ॥
[6]स्वरावली समुद्रमैं तिरैं निसंक सुंदरी ॥
तरंग तान रंग बीण तुंबिका धरी तरी[7] ॥
जु मंद्र१मैं सु मध्य२मैं जु मध्य२मैं सु तारमैं ॥
मजे तथापि भिन्नदेत सारमैं सु मार[9]मैं ॥ ७४ ॥
[10]तंजैं कुभ्भैं क्कुभ्भैं कुतत्थ धित्थधित्थ तंडई ॥
[11]छटा अनुद्रुतादि१तैं प्लुत५ प्रमानलौं छई ॥
[12]ग्रह१ प्रकास अंस२ न्यास३ व्है बिलास गानमैं ॥
तुलैं न इक्क इक्कसौं असंख्य कूट[13] तानमैं ॥ ७५ ॥

तथापि ॥ ७२ ॥ यह प्रतीत नहीं हुई कि तान किस स्थान से १ चली है उस वेश्याकी वाणी है सो मानों २ छिपा हुआ गान ३ सरस्वती की वीणा कर रही है ४ शस्त्रों का रूप रचती हुई अर्थात् इनको चरणों के न्यास से रचती हुई नचती है जिसको देखने के लिये ५ तीनों लोक के स्थानों में किसके नेत्र बचें ॥ ७३ ॥ ६ स्वरों की पंक्ति रूपी समुद्र में वह सुन्दरी रस की तानें रूपी तरंगों में वीणा के तुंबों रूपी ७ नाव करके निशंक तिरती है जो रस मंद्र स्वर में है वही मध्य स्वर में है, और जो रस मध्य स्वर में है वही तार (उच्च) स्वर में है, तोभी तार (वीणा आदि के तार) में और ९कामदेव में आनन्द भिन्न भिन्न देता है ॥ ७४ ॥ १० ये सब शब्द नृत्यके अनुकरण के हैं ११ अनुद्रुत से लेकर प्लुत पर्यन्त शोभा छागई अर्थात् अनुद्रुत, द्रुत, द्र-विराम, लघु, ल-विराम, गुरु और प्लुत, ये सातही तालकी कलाके अंग हैं, जिन सब में शोभा छागई १२ जिस स्वरसे राग उठावे उसको ग्रह कहते हैं और स्वर में रागको स्थिर करै उसको अंश कहते हैं तैसे ही जिस स्वर में राग की समाप्ति करै उसको न्यास कहते हैं, जिनका प्रकाश और विलास गानमें हुआ और १३कूटतान(मूर्छना आदि के क्रम बिना तान होवे उसको कूटतान कहते हैं) असंख्य हैं जो एक एक से नहीं मिलती ॥ ७५ ॥ उसकी चोटी कमर का

बितस्ति दोइ२ मध्य लीन मध्य३ खीन यों बन्यों ॥
तुटै४ घुटैं रुटैं मुटैं छुटैं प्रवाद यों तन्यों ॥
क्रम प्रमान ध्वान यों अनोट१ फुल्लरी२ करैं ॥
उदार५ मार चट्टसार भा प्रकार उद्धरैं ॥ ७६ ॥
दुकूल ओट भास्य आस्य६ लास्य७ यों कढै१ दुरैं२ ॥
बिछंद८ कंद फंद ज्यों अमंद चंद बिप्फुरैं ॥
कढेपरैं उरोज पीन चीन अंगिका कसे ॥
फबैं सरोज पत्त रोक मत्त कोक१० ज्यों फसे ॥ ७७ ॥
पलट्टि ताल तालमैं अनेक कालमैं प्रमा११ ॥
बढैं१ घटैं२ घटैं१ बढैं२ तुलैं तुलों१२ तुलैं समा ॥
श्रुती दुबीस२२ तीव्रिका१३ादि छोहिनी१४ २२ वैसानलों ॥
मिलीं स४।१मैं म४।२मैं प४।३मैं ति१५चारि४चारि४मानलों ॥७८॥
रि३।१मैं ध३।२मैं त्रि३रु ति३द्वै२रु द्वैग३।१मैं नि७।२मैं रहैं॥

नृत्य दो १ बैंत (बिलस्त) के २ भीतर बनगया ३ वह कमर तूटती है इधर उधर घुटती [घूमती] है, रुकती है, मुड़ती है, परन्तु उसमें लय आदिका किसीको कोई प्रवाद (सहस) नहीं रहा. इसप्रकार वह राग अथवा नृत्य फैजा ४ उसके चालने के क्रम के प्रमाण से अणवट और फोलरी (भूषण विशेष) शब्द करते हैं सो ५ उदार कामदेव की पाठशाला की क्रान्ति के प्रकार निकलते हैं॥७६॥ वस्त्रकी आडसे ६ उसके मुखकी क्रान्ति ७ नृत्यमें निकलती और छिपती है सो मानों ८ बादलों के फंदके आधीन होकर मंदता रहित चंद्रमा कढता छिपता है, उस नायिका के पुष्ट कुच ९ झीणी कंचुकी में कसे हुए निकले पडते हैं सो मानों कमल के पत्रकी रोक से १० मस्त दो चकवे फसे हैं ॥ ७७ ॥ ताल ताल के साथ पलट कर अनेक समय में ११ उस रागका निश्चय ज्ञान चढने उतरने से बढता और घटता तथा घटता और बढता है परन्तु लय रूपी १२ तराजू में बराबर तुलता है १३ तीव्रका को आदि लेकर १४ छोहनी के अन्त तक बाईस श्रुतियें हैं, सो षड्ज में, मध्यम में, पंचम में, १५ ते(वे) श्रुतियें, चार चार के प्रमाण से मिली (रहती) हैं ॥ ७८ ॥ वे (श्रुतियां) ऋषभ में, धैवत में क्रम से

बिचारि जो पं१५ टारि नारि तास च्यारि४ क्यौं वहैं ॥
रु जाति पंच५दीप्तिका१दि१अंत५मध्यमा५ रजैं ॥
श्रुतित्व जाति२ संग प्रान राग अंग उप्पजैं ॥ ७९ ॥
चला१हि१ उच्चला१हि२द्वै२हि अल कोशिकोश्चिता ॥
समाइदेत भिन्न भिन्न रुद्रताल सम्मिता ॥
समस्त चित्त१ भान२ कान३ नैन४ बैन५ संग्रहे ॥
रुके निनाद ब्रह्ममैं प्रलै जड़त्व लैरहे ॥ ८० ॥
अलंक्रिया१ कपाल२ प्रास३ ग्रामका४ दि अंगजे ॥
समाप्ति५ सूड६ मेल७ बर्ण८ भाग९ रागसंगजे ॥
स्वरूप१ वै२ रु काल३ नाम४ लिंग जाति५ सूचनी
मुनीन धीनके अधीन भिन्न भिन्न जोभनी ॥ ८१ ॥
सुतो बिचार रागलार बुद्धिफार साध्यहै ॥
बिगूढ ऊढ बादरूढ मूढ उक्ति बाध्यहै ॥

तीन तीन और गान्धार में, निषाद में, दो दो रहती हैं सो विचार पूर्वक १ पंचम को टालकर वह वेश्या पंचम की चार श्रुतियों को कैसे धारण करे अर्थात् पंचम की श्रुतियों को छोडदी और राग की पांच जातियां हैं जिनमें आदिमें दीप्तिका और अन्त में मध्यमा शोभायमान है, श्रुति और जाति ये दोनों राग के प्राण और अंग हैं सो यहां उत्पन्न होती हैं ॥ ७९ ॥ पांच जातियों में यहां चला और उच्चला ये दोनों २ मालकोशकी उचित स्त्रियें हैं जिनसें सब ग्यारह तालों को भिन्न भिन्न समा देती हैं, सब के चित्त ३ ज्ञान कान नेत्र और वचन रोक लिये सो ४ शब्द रूपी ब्रह्म में रुककर प्रलय के समान जड़पना लेरहे ॥ ८० ॥ ५ अलंक्रिया को आदि लेकर भाग पर्यन्त राग के अंग हैं ६ स्वरूप से लेकर लिंग पर्यन्त रागकी जाति है, इनकी सूचना मुनियों की बुद्धि के आधीन भिन्न भिन्न कही है ॥ ८१ ॥ वह विचार तो राग के साथ ७ बुद्धि के फैलाव से साध्य है अथवा बुद्धि के समूहवाले (विद्वानों) से साध्य है, विशेष गुप्त [छिपेहुए] को धारण करनेवाले और ८ यथार्थ बोध की इच्छावाले वचनोंपर चढेहुओं(विद्वानों)से मूर्खोंकी उक्तिका बोध होता है

सुरिंद बिंद संक्रम्यो नरिंद मान[2] नैरमैं ॥
बहे[3] अपार तोप बार[4] फार फैरफैरमैं ॥८२॥
चलैं दुरपास ह्वै प्रकास चंद्रभास१ भैंचपा२ ॥
छई[5] प्रभा सु द्योंसलौं दई छिपाइ सो[6] छपा ॥
अपास दोर ओरओर नि[7]ष्क१ द्रम्म२ उच्छरैं ॥
किते बिहाल ह्वै निहाल माल जाल चैं[8] करैं ॥ ८३ ॥
बदैं निहारि द्रंग नारि लोंन वारि बिंदपैं ॥
अहो निकाम कोटि काम राम२०१४छोनिइंदपैं ॥
अहो सु धन्य दुल्लही लहो बिसिष्ट इष्टकौं ॥
दहो अनिष्ट रि[11]ष्ट त्यों बहो अभी[12]ष्ट दिष्टकौं ॥ ८४ ॥
नरेस यों सुरेस रूप देत रीझ नृत्यपैं ॥
प्रयान मुख्य द्वारलों करयो बिबाह कृत्यपैं ॥
[13]कसा प्रहार रूप द्वार रीति लौकिकी करी॥
उहां अपार फैर[14] हेम१ तार[15]२बुष्टि उच्छरी ॥ ८५ ॥

(दोहा)

सुपहु बिंद मारीचैं[16] सन, कारि लौकिक मत कैं[17]ज्ज ।
इँभ[18] सन तोरन उत्तरिय, श्रुति[19]मत साधन सज्ज ॥ ८६ ॥

इस प्रकार इन्द्र के समान दुल्लह रामसिंह २ महाराजा मानसिंह के नगर (जोधपुर) में १ गया तहां तोपों के ४ समूह के ३ अपार फैर चले ॥ ८२ ॥ दोनों ओर प्रकाश होकर चन्द्रज्योति और भैंचपे आदि अग्निक्रीड़ा (आतश बाजी) चलने से दिन के समान ५ कान्ति छागई और उस ६ रात्रि को छिपादी ७ मोहरें और रुपये उछलने से चारों ओर परिश्रम से दौड़ दौड़ कर कितने ही विहाल होते हैं और कितने ही निहाल होकर धन के समूह का ८ संचय करते हैं ॥ ८३ ॥ ९ पृथ्वी के इन्द्र रामसिंह पर १० दुलहन धन्य है सो विशेष वांछित फल को लो ११ विना इच्छावाले दुःखोंको १२ इच्छानुसार भाग्य को धारण करो ॥ ८४ ॥ १३ तोरण पर चावुक मारना आदि १४ समूह १५ चांदी ॥ ८५ ॥ १६ सचारी के हाथी से १७ कार्य १८ हाथी से १९ वेद का मत ॥ ८६ ॥

॥ पद्धतिः ॥

इम दुल्लह तोरन मुख्य आइ, वंदन१ नीरोजन क्रम बनाइ ॥
मंडप थल जावनहुव समोद,बिष्टर४रु पाद्य५बनि बिधि बिनोद८७
बिष्टर६रु अर्घ७अँचवन८बहोरि, जहँ मधुपर्क९रु गोहान१०जोरि ॥
कन्याऽऽगम ११ उपवहित वसन १२ काम, बर१ बरनि २ परस्पर
तिलक१३ ताम ॥ ८८ ॥

बलि प्रवर१ गोत्र२ आख्या१४ बिधान, बर पूजन१५ भूषन१ वस्त्र
२ दान१६ ॥

कन्या करग्रहन समय किन्न १७, दै कनक १८ दक्खिना १९
तदनु दिन्न ॥ ८९ ॥

क्रम गौ प्रदान२०तांबूल कर्म२१, पुनि दंपति२सपमेलन२२ सधर्म
वरमाला२३ अँचल गंठि२४बंध, खिन तदनु धरन दैककुंभ खंध२५
बर१ बरनि१ मिथो दरसन२६ बिधेय, पुनि अग्गि परिक्रम२७
सद्धि श्रेय ॥

पावकैं सन पँश्चा३५ऽऽसन प्रविष्ट२८, आचार्य बरन२९ कुंसकंडि
३० इष्ट ॥ ९१ ॥

क्रम बिहित होमं तहँ चउ४प्रकार, धुर१तत्थ राष्ट्रभृतै१।२१नामधार

१ आरती २ आसन और पैर धोना ॥ ८७ ॥ ३ आचमन ४ दधि मधु घृत मिली हुई वस्तु का निवेदन करना ५गोदान "यहां हान शब्द को दान के अर्थ में ग्रन्थकर्ता ने विचार पूर्वक लिखा है परन्तु गोशब्द के योग में यह प्रयोग करना दोष है" ६ वस्त्रों से छिपी हुई कन्या का आना ७ दुलहे दुलही (बींद बिंदनी) का ८ तहां पर परस्पर तिलक करना ॥ ८८ ॥ ९ हथलेवा जोड़ना १० जिस पीछे सुवर्ण की दक्षिणा दी॥८९॥ ११ फिर गोदान करके बीड़ी चबाना १२ स्त्री पुरुष का हाथ मिलाना १३ वस्त्र गंठ (गंठजोड़ा) करना १४ जल का घड़ा ॥ ९० ॥ १५ परस्पर दर्शन कराना १६ अग्नि से १७पश्चिम दिशा के आसन पर बैठना १८ होम के प्रारम्भ की विधी ॥ ९१ ॥ ८ ये विवाह

सुजया३२ रु प्रणीता३३ नाम सत्थ, तिम लाजहवन४[1] ३४
हुव चउम४ तत्थ ॥ ९२ ॥

बहुरिहु करग्राहन३५ विधि बिलास, दुलही पय दक्खिन१ उँपल[2]
२ न्यास३६ ॥

बनि गाथा गावन३७तहँ बिधेय, करि अग्गि परिक्रम३८पुनिहु प्रेय
सालक संतुष्टि३९ रु होम शिष्ट४०, पुनि सप्त७पदी विधि४१
क्रम प्रदिष्ट ॥

इह कन्या निविसन बाम[3]२अंग४२, अभिसेचन घटजल करि ४३
अभंग ॥ ९४ ॥

क्रम हृदयाऽऽलभन[4]४४ रु तिलक कर्म४५, चहि बैठन वृखभव
अरुन चर्म[5]४६ ॥

किय तिम ध्रुवदरसन४७ रत्ति[6] काल, बलि अप्पिय गुरु हित
बसु[7]४८ बिसाल ॥ ९५ ॥

इत्यादि वेदविधि भजि असेस, नवबय बिशिष्ट ब्याहिय नरेस ॥
दै इष्ट नेग नेगिन उदार, फैलाइ दयो जस दिसन फार ॥९६॥

॥ दोहा ॥

जोरी लखि अवरोध[9] जन, कहन लगे बलि कज्ज ॥
रुचि दंपति२ पर काम१ रति२, वारैं कोटिन अज्ज ॥९७॥
निस बित्तत रहि नालकी[10], गत प्रच्छद पटगूढ[11] ॥
पट गृह[12] जन्य निवास प्रति, आये दंपति२ ऊढ[13] ॥ ९८ ॥

के समय होनेवाले चारों होमों के नाम हैं १ संस्कार किये हुए चावलों का होम ॥ ९२ ॥ १ दुलही के दहिने पैर नीचे पत्थर रखना ॥ ९३ ॥ ३ यहां कन्या का वर के बाम ओर बैठना ॥ ९४ ॥ ४ हृदय का स्पर्श करना ५ बैलके लाल रंग के चर्म पर बैठना ६ रात्रि के समय ७ धन ॥९५॥ ८ समूह ॥९६॥ ९ जनाने के लोग ॥ ९७ ॥ १० नरयान विशेष ११ वस्त्र से ढकीहुई १२ जानके डेरों में १३ ब्याहे हुए ॥ ९८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ रामसिंहचरित्रे रामसिंहप्रथमविवाहवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥

आदितः सप्तषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥३६७॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हेम१ रजत२ मय वुठ्ठि हुव, इम जन्पालय आत ॥
धन्य धन्य जय जय ध्वनित, खुलि ठाँठाँ हुव ख्यात ॥१॥
वैदिक१ लौकिक२ सब्बि बिधि, बद्दि सम्मति निर्वाद ॥
पिता जनन दुलही सु पुनि, पधराई प्रासाद ॥२॥
संग सखि१न दासि२न संतन, नंद१ जीव२ छम३ नद्द ॥
भो तिम सहचर्र भूखनन, सिंजित कलकल सद्द ॥ ३ ॥
पधराई दुलही पिहित, इमि जो जनक अगार ॥
पति दासी जन बिबिध पटु, लगे सतन गन लार ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत डेरन खिंन इक्खि अतुल आरंभि त्याग अब ॥
कृष्णाराम इत कह्यि सुरूप नरनाह सुसाहब ॥
चतुर मुकुट कवि चंड१ जनक कवि१२के बुलाइ जब ॥
वंदी रतन१ बहोरि पुच्छि संभव दोउ२न पहँ ॥
कह्यि त्याग ठ्यय१३ कातिक कातिक परिमान कविन कहँ

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में रामसिंहके चरित्र में राजा रामसिंहका प्रथम विवाह होने के वर्णन का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीनसौ सड़सठ ३६७ मयूख हुए ॥

१जानके डेरे आते ही सोने चांदी की वर्षा हुई २ ठाम ठाम प्रसिद्ध हुआ ॥१॥ ३ याद रहित ४ पिता के वंशवालों ने दुलही को महलों में पधराई ॥ २ ॥ ५ सैकड़ों ६ जीवको आनन्द देनेवाला ७ समर्थ शब्द हुआ ८ साथ जानेवाली स्त्रियों के भूषणों के बाजे का ९ कोलाहल शब्द हुआ ॥३॥ १० पिता के घर में ॥ ४ ॥ ११समय देख कर १२ ग्रन्थकर्ता के पिता चंडीदान को १३त्यागका खर्च

नृप मान कृपापात्रहु कितिक मुख्य सुकवि इह मानियत ॥
करियत तदीय सतकार किम जिम अच्छुत जस जानियत५

॥ दोहा ॥

कवि अक्खिय चउ४ मुख्य कवि, अतिसय प्रीति अमल्ल ॥
मानैं जे नृप मानके, अतुलित वैभव अल्ल ॥६॥

॥ षट्पात् ॥

प्रथम प्रतोलीपात्र अवनिपति वृत्ति उपासक ॥
नाम जास अवनाड१ सु पुर सुंध्याहर१ सासक ॥
कथित जाति रोहड़िक पट्ट पंचायुत५०००० पावत ॥
इहिँ५०००० प्रमान पति अधिप सुभट बहु तंत्र सुहावत ॥
इम लक्ख१००००० अधिप चारन यहु रु छिदतर्जति नृप उदय छत॥
आउवा मरयो जबतैं अक्खय बीसरुसत१२० सासक बजत।७।
बलि द्वितीय२ कवि बंक२ धीर सब गुनन धुरंधर ॥
अयुतक१०००० सासन ईस बिदित छक्षगिरा गनिका बर ॥
बानि सु न्याय१ व्याकरन२ सर३।१ रु साहित्य१ समुद्रहि॥

कितना है और कवियोंका प्रमाण कितना है १और राजा मानसिंहके कृपापात्र कितने हैं २उनका सत्कार कैसे करना चाहिये जिससे अछूता यश जानाजावै. [इस छप्पय में एक चरण अधिक है सो भूल से बनाया जाना पाया जाता है और यह भूल भी अधिक मद्य पानके कारण जानी जाती है] ॥५॥ ३ अत्यन्त प्रीतिपात्र ॥६॥४पोलपाल "गोपुरं हि प्रतोल्यां तु नगरद्वारयोरपीति महीपः॥" महीप कोश में नगर के द्वार का नाम प्रतोली लिखा है जिससे ग्रन्थकर्ता ने यहां सामान्य दृष्टि से द्वार मात्र का ग्रहण किया है ५ राजा की वृत्ति की उपासना करनेवाला ६ सूंध्याड़ नामक पुरका पति ७ रोहड़िया शाखा का चारण ८ स्वामी (राजा) के उमरावों के आधीन ९ राजा उदयसिंह के समय आउवा पुर में चारणों ने धरणा दिया तब १० उसमें अखयसिंह मरा जब से रोहड़िया बारहठों को चारणों की एक सौ बीस शाखा के ११ पति कहते हैं ॥ ७ ॥ १२ पुनि १३ बांकीदास १४ छः भाषा रूपी नायिकाओं का पति

जो यह*आसिक जाति बत्त कत्ति भूत रूयाति बहि ॥
†जगतेस१‡मान२किय मेल जब बुध यह हुव सब जग विदित॥
कछवाह बिप्र भाखा सुकवि जो पदमाकर किन्न जित॥८॥
महादान३ महडू तृतीय३ जो भूप कृपाजुत ॥
जुरत मान१ जगतेस२ बन्यौं कर्मध्वज बिद्रुत ॥
रिपु हुव सब रठोर काव्य तिनको महडू किय ॥
सूचनबिनु निज सदन निखिल मारव भट निंदिय ॥
सो कवि बुलाइ मेवार सन तिहिं उत्थान१ नृजान२तह ॥
दियमानअयुत१००००आपकद्रविनसासनसोढावास३सह॥९॥
भीम जोधपुर भूप आजि दूजो२ आरंभिय॥
जुरत मान जालोर दइव अनसन बिपत्ति दिय ॥
सो चारन बनसूर जुगत१ नामक आश्रित जब ॥
अप्पतहुव तँहँ आनि स्वतिय भूखन समेत सब ॥
पहु मान ताहि लहि जोधपुर जहँ उत्थान१ नृजान२ जुत ॥
दिय तिथि सहस्र१५०००सासन दिपत प्रथित पाडलाऊ३पँनुत॥१०॥

॥ दोहा ॥

इन४मैं आदि१ सु आदितैं, सूचित बिभव समत्थ ॥

---

* आशिया शाखा का चारण † जयपुर के राजा जगतसिंह और ‡ जोधपुर के राजा मानसिंह मिले थे तब १ पदमाकर को विजय किया ॥ ८ ॥ जगतसिंह और मानसिंह जुड़े जब २ राठोड़ भाग गया ३ मानसिंह की बिना ही सूचना किये ४ अपने घर पर काव्य बनाया और सब ५ मारवाड़ के ६ की निन्दा की १ ताजीम ७ पालखी ८ धनकी आमदनी वाला ॥ ९ ॥ ९ भीमसिंह १० युद्ध ११ भाग्यने मानसिंह को निराहार रहनेकी विपत्ति दी तब बणसूर शाखा के १२ जुगता नामक चारण ने १३ अपनी स्त्री के भूषण सब धन मानसिंह को लाकर दिया १५ विशेष स्तुतियोग्य ॥ १० ॥ १५ मूंपाड़ का पति तो पहिले से ही कहेहुए वैभव सहित है और बाकी

भाखे हेतुन करि भये, ए त्रय३ प्रविदित अत्थ ॥ ११ ॥
अभिउत्थान१ नृजान२ इम३, संजुत त्रय३हि सुबाद ॥
बांढि इनमैं दुव२ बंक१नैं, पाये लक्ख१००००० प्रसाद ॥१२॥
षट्पात्-इनच्यारि४नहितउचितग्राम१इक१इक१इक१इक१गज२॥
पंचसहँस५००० प्रत्येक बिहित बितरन मुद्रा३ब्रज ॥
खास बिभूखन४ खिलत५ सुल्वपत्रर्क६ लिपि सासन ॥
पठवहु च्यारि४न पास स्वल्प अक्खि रु पटुता सन ॥
ए च्यारि४ मुख्य तिनकै इहाँ क्रम जानहु यह मुख्य१करि॥
बलि सेस कृपाभाजन बहुत पच्छहु मध्य२ कनिष्ठ३परि १३
पट१हय२कुंडल३कटक४पंचसत५००द्रम्म मध्य२ प्रति ॥
सेप्ति१कटक२पट३दुसत२००गनित मुद्रा४कनिष्ठ३गति ॥
इम नृप सेवी अत्र सुकवि द्वैसत२००पावहिं सब ॥
सोतो अधिक न सुनहु अधिक बसु व्यय निदान अब ॥
सोरठ१कच्छ२गुज्जर३सहित मरु४जंगल५ए पंच५ मति ॥
कुल खानिदेस पौरानिकन इम अयुतन अेकत्र प्रति ॥१४॥
दुलह हड्ड६१ बुन्दीस इहाँ व्याहन बलि आवत ॥
लक्खन उप्पर लग्गि मिले कुल कविन नमावत ॥

तानों १ ऊपर कहे हुए कारणों से यहां प्रसिद्ध हुए हैं ॥ ११ ॥ २ ताजीम ३ श्रेष्ठ वचनों से ४ बांकीदास ने ५ लाखपसाव ॥ १२ ॥ ६ दान के रुपयों का ७ समूह ८ ताम्र पत्र पर लिखेहुए उदक ग्राम ९ इनको न्यून कहकर अर्थात् आप के योग्य नहीं है ऐसा कहकर चतुराई से भेजो १० फिर बाकी के कृपापात्र भी बहुत हैं ॥ १३ ॥ मध्य श्रेणी के चारणों को वस्त्र, घोड़ा, मोती, कड़े और पांच सौ रुपये और कनिष्ट श्रेणी के चारणों को ११ घोड़ा, कड़ा, वस्त्र (सरपाव) और दोसौ रुपये, इस प्रकार प्रति मनुष्य देना चाहिये १२ अधिक धन के खरच का कारण सुनो १३ ऊपर कहे पांच देश चारणों के कुल की खान है इस कारण हजारों इकट्ठे हुए हैं ॥ १४ ॥

सहमहडू३वनसूर४ मिले च्यारि४न हित मंजुल ॥
पंचसहँस५००० प्रत्येक अग्ग रुप्पय१ इक१ इक१ इभर२ ॥
शासनपत्र३ समेत निखिल रक्खे पद सन्निभ ॥
भूखन४ पटा५दि जे लखि भये सब प्रसन्न सूचित सुजस॥
नृप सत्रुसल्ल१९४११नत्तिय दुलह क्यौंन धरहिं जस गृह कलस२१
चित्त सबन हुव चाह धन सु आदान करन ध्रुव ॥
भूप मान दिय बिभव हृदय सोपै चिंतितहुव ॥
लैबे मंगि निलज्ज धनी हेरि सु कर्मध्वजँ ॥
नलये च्यारि४न नटि रु ग्राम१ पट२धन३भूखन४गज५॥
क्रम सोहि मान सेवी कविन लखि इतर न काहु न लयो॥
तकि गित्त चित्त ललचें तदपि द्वैहिसत२००न उत्तर दयो२२
दृढ साहसदानीय निखिल कवि जदपि निहोरे ॥
ललचि मनन धन लैन जनन तदपि न हँग जोरे ॥
साहस बस प्रभु सुकवि जतन बहु प्रेरिचुके जब ॥
इन जन्योलय आइ सचिव संबोधि कह्यो सब ॥
नृप मान कृपाभाजन निखिल लचे मनहु त्याग न लहत ॥

रोहड़िया, आशिया, महडू और बणसूर इन चारों कुलों के चार चारणों से सुन्दर हित के साथ मिले १ हाथी २ तांबापत्रों के ३ सदृश सामग्री अपने अपने पदोंके सदृश उनके समीप रक्खी ४ इन चारों ने कहा कि यह दुलहा शत्रुशाल का पोता है सो अपने घर पर यश का कलश क्यों नहीं धरै अर्थात् धरना उचित ही है ॥ २१ ॥ ५ धन लेने की चाहना हुई परन्तु ६ राजा मानसिंह ने जो वैभव दिया था उसको सोचा कि ७राठोड़ जैसा स्वामी होने पर दूसरों का दान लेना निर्लज्जता है ८राजा मानसिंह की सेवा करनेवाले अन्य कवियोंने भी किसीने नहीं लिया ॥ २२ ॥ तोभी दृढ दानी (रामसिंह) ने ९ सब कवियों को त्याग लेने के अर्थ बारम्बार निवेदन किया १०परन्तु उन्होंने उनसे नेत्रही नहीं मिलाये ११ जानके डेरे आकर १२ सचिव कृष्णराम (धायभाई) को समझाकर सब कहा

न बिरत्त[1] तोहु सबके नयन स्वामि स्वसुर कानिहिं कहत॥२३॥
प्रभु[2] आसय मानप्रति हुनहि साचिव सु जमाइ दिय ॥
मनबिनु अक्खिय मान लेहु तदपि न तिनतो लिय ॥
प्रभुके सुकविन प्रसभ[3] जानि नाहक जंपिय जब ॥
द्वैसत२०० लेहुन देय[4] इहाँ ग्राहक अयुतन अब ॥
इम अक्खि भिन्न पटगेह[5] इक थिर बहु थंभन थंभयो ॥
तहँ बैठि स्वामि स्वकविन अतुल अब बितरन[6] आरंभयो ॥२४॥
सतन स्वीय कवि१ सचिव२लिखन सब दिस पठये लहु[7] ॥
जे बटि बटि बसु८ जाम बनैं जामिक लेखन बहु ॥
आवन लग्गे अमित पत्र लिपिकृत चित पुस्तक ॥
हुव अंहति[8] आरंभ सोम बसु धृति१८८१संगत सक ॥
अंतर तपस्य१२दसमी१०असित२गारन[9] अंह तह मेघ गति॥
रचयो[10] अंजस्र[11] झर रुप्पयन त्याग प्रगुन सब देय तति॥२५॥
जाचक अनुचर[12] जनन दम्म पंचास५० अवधि दिय ॥
सतजुग२००सोलह सहँस१६०००कविन उपहार[13] पृथा किय ॥
मुद्रा[14]१ लक्खन प्रमित बसन[15]२ अयुतन मित बिस्तारि ॥
क्रम सहँसन मित कटक[16]३ सतन सम्मित कुंडल[17]४ करि ॥

१सबके नेत्र विरक्त नहीं हैं तोभी ॥२३॥ २ रावराजा रामसिंह का त्याग देने का आशय. रामसिंह के कवियों ने मानसिंहके कवियोंका ३हठ जानकर कहा कि तुम दोसौ चारण भले हो ४ दान मत लो यहां और हजारों लेनेवाले हैं, इसप्रकार कहकर बहुत थम्भोंवाला ५ डेरा तनाकर ६ त्याग देने का आरंभ किया ॥२४॥ ७शीघ्र लेख(निमन्त्रण पत्र)भेजे ८दानका आरंभ हुआ ९फाल्गुन वदि१०गोरण के दिन मेघ की भांति रुपयों का ११ निरन्तर झड़ रचकर बहु विशेष गुणवाला त्याग सब पंक्तियों को दिया ॥२५॥ १२चारणोंके चाकरों को प्रत्येक मनुष्यको पचास रुपयों तक दिये और प्रत्येक चारण को दोसौ लेकर सोलहसौ रुपये१३भेट करनेका कार्य प्रसिद्ध किया जिसमें१४लाखों रुपयों१५ हजारों शिरोपाव१६सैकड़ों कड़े१७कानोंमें पहिननेके सैकड़ों मोती और इसी

ताही प्रमान हय१ मेघ२ वितरि सब देसन तर्कुक३ सकल॥
किन्नैं निहाल सादर कथन बादर३ पथन स्वबुद्धि बल॥२६॥

(दोहा)

द्रविंन बुद्धि विधि इम दुलह, प्रस्तरि त्याग प्रवाह ॥
उभय२ घटी मित रहत अह, चढ्यो स्वसुर गृह चाह ॥२७॥

[उपदोहा]

जितंतित सब जाचक जनन, सुजस स्व संचित सुनत ॥
गोरन भोजन स्वसुर गृह, चल्यो नगर सर चुनत ॥२८॥
कर्मध्वज हकारैं क्रम, लघु१ गुरु२ मानव लहत ॥
महासुभट१ सचिव२न मिलित, चल्यो स्वसुर मन चहत२९

(पद्धतिका)

प्रभु दुलह जोधपुरके प्रवेस, अधिरूप१ कमनँ२पन लहि असेस॥
साखापुर१ बहुविध लखि समत्थ, तकि भरत१ कुसीलव२ भट३ न तत्थ ॥ ३० ॥
बुद्धन स्वबुद्धि मघवो बनाव, भूपाल लखत मग सबन भाव३ ॥
दोलाअरँघट्टक४ कहुँ दिपात, पावत तिन प्रेरक बसुनँ व्रात॥३१॥
गावत कहुँ वंसि५न धमि गवार, पावत प्रसाद धन प्रकटि प्यार॥

प्रमाणसे घोड़े१ऊंट देकर२याचकों को आदर के साथ कथन करके३मेघके सदृश वृष्टि के बल से निहाल करदिये ॥२६॥४इसप्रकार धनकी वर्षा करके और त्याग का प्रवाह फैलाकर दो घड़ी दिन बाकी रहते ॥२७॥ अपना संचय किया हुआ यश सुनकर गोरवा के दिनका भोजन करने को ॥२८॥ राठोड़ राजा मानसिंह के ५ बुलाने के क्रम से ६ छोटे बड़े सब मनुष्यों को साथ लेकर ॥ २९ ॥ अधिक रूप और लघु ७ सुन्दरपना धारण करके शहर के बाहर के पुर सब देखकर वहां ८ नाटक करनेवाले नटों और ९ कत्थक (नटविशेष) १० भाट तथा नट विशेष को देखकर ॥ ३० ॥११ इन्द्र के समान धनकी वर्षा करता हुआ १२ मार्ग में सबका भाव (अभिप्राय) देखता हुआ १३कहीं डोलरहिंडे शोभा देते हैं जिनके प्रेरणा करनेवाले (झुलानेवाले] १४ धनका समूह पाते हैं ॥ ३१ ॥

बहुचित्र६ भांड१ नर्तक२ बनाइ, लावत बसु३ पावत प्रमद४ लाइ३२
मंदिरमहा१दि उदयादि२ मान७, निरखत स्वसुरार्चित नय निधान
लघुवाटि८न कहुँलघु मनुज२लीन, पिक्खत प्रसन्नबर बहुप्रवीन३३
मालिक१०न सुमन उपहार मेल, हाटक११ चय बुल्लत गनित हेल१२॥
कंजर११न कहुँक तंडव प्रकार, दु२हरी१ ति३हरी२ तिन्ह रचत
दार ॥ ३४ ॥
जोजोहि रिझावत जिम जथाहि, सोसोहि स्वसंगत१३तिम तथाहि
कहुँ कहुँ खेट१४ इंधन१५ निचय कार, पहिलैंहि पटकि बरदल१६
प्रसार ॥ ३५ ॥
लै रीझ१४बहुरि लेवे लबार१७, पावत धन१५करि अति नुति प्रसार
जुरि फिरिफिरि सम्मुह नट१६न जूह, सु रिझाइ लेत बहु बसु
समूह ॥ ३६ ॥
गन निप१९ कुंमारि१७न बसु गिराइ, पुनि कहुँ बागुरिक१८न
मृग२न पाइ ॥
दैबहुबसु२१बखसततिन्ह निदेस, अबसोंन करहु तुम कर्मऐस२२॥३७॥

१बहुरूपिया, भांड[मुखसे भंडाई करनेवाले]नाचनेवाले अपने पनावों से २धन लेकर३हर्ष प्राप्त करते हैं ॥ ३२ ॥ ४ महामंदिर ५ उदयमंदिर दोनों अपने ६ श्वसुर [मानसिंह] के पूजन किये हुए स्थानों को ७ नीतिनिपुण [रामसिंह] ८ छोटा बगीचियों के छोटे मनुष्य ९ बहुत चतुर दुल्लहको लीन होकर देखते हैं ॥३३॥१०मालियों के पुष्प भेट करने पर ११ सुवर्णका समूह १२ खेल के समान देता है कहीं कांजर १३नाचते हैं और कहीं पर उनकी स्त्रियां दोदो तीन तीन कुलाटें लेती हैं॥३४॥ कहीं पर १४खड़(घास) और १५बलीता संचय करनेवाले १६ दुल्लह की सेना में डालकर ॥ ३५ ॥ रीझ लेकर फिर लेने के लिये वे १७ लापर(झूठे) नम्रता करके धन पाते हैं १८नटों का समूह राजा से धन का समूह लेता है ॥ ३६ ॥ कुंभारियों के १९ कलशों के समूह में धन डालकर २० मृग पकड़नेवाले बागरियों (व्याध विशेषों) को २१ धन देकर आज्ञा देते हैं कि २२ ऐसा काम फिर मत करो अर्थात् मृगों को मत पकड़ो ॥ ३७ ॥

इम देत जनन धन घन अछेह, प्रविस्यो पुर *गोपुर उचित ग्रेह॥
नृप गोपुर पाल१न करि निहाल, बिक्खत पुर२ जन जुव१ वृद्ध२
बाल३ ॥ ३८ ॥
कहुँ नट३न नटन उछ्लन‡कुरंग, भजि कहुँ§नरेन्द्र४दिखवत भुजंग॥
कहुँ द्यूत द्यूतदेविध्न निकार,समपन२कहुँ जय३कहुँ रय प्रसार३९
प्रवहतकुल्लयाजल२कहुँ दुरपास, मरुछितिहुलसतजिमभाद्रमास॥
वैतालिक१७ चाक्रिक२८ विविध व्रात, जय१ जीव२ जल्प साबि-
रुद३ सुनात ॥ ४० ॥
नच्चत बहु बारन बारनारि९, पटु धाव१ हाव२ भाव३न प्रसारि ॥
कहुँ सान ृमासक्त१०न सनंकि,झारत फुलिंग सस्त्रन भनंकि४१
बिरहुँदिसन असीसत द्विज११न बार, स्वेहासम पावत बसु प्रसार
कहुँ उघरि चित्रसालन कपाट,बिक्खत तिय१२बिंदहिं नयन बाट४२
उत्तारन उद्ध१३हि कहुँ करंत, बलि१४ करन प्रान हित बिस्थरंत॥

*नगर के द्वार में प्रवेश किया जहां पर नगर के द्वारपालों को निहाल करके, पुर के जवान, वृद्ध और बालक को देखता हुआ नगर में गया ॥३८॥ तहां कहीं पर तो ‡ हिरणों के समान नट † नृत्य करके उछलते हैं और कहीं पर § विष वैद्य (कालबेलिये) सर्प दिखाते हैं और कहीं द्यूत खेलनेवाले द्यूत देवी को निकाल कर कोई तो बराबर का दाव लगाते हैं, कोई जीतते हैं और कोई अपना वेग फैलाते हैं ॥३९॥ कहीं पर दोनों ओर विशेष मार्ग में १जलकी नहरें हैं जिनसे २मारवाड़ की भूमि भाद्रपद मासमें प्रसन्न होती है "वहतः पान्थे" इतिशब्दार्थचिन्तामणिः ॥ ३ स्तुति करके राजा को जगानेवाले भाट और ४ घंटा बजाकर राजाकी स्तुति करनेवाले भाट विशेष "वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः" इत्यमरः॥ जय होओ, जीवो, बढो ऐसा ५ कह कर स्तुति करते हैं ॥ ४० ॥ ६ घरों के बहुत द्वारों पर ८ चतुर दौड़ से हाव भाव करके ७ वेश्यायें नचती हैं ९ कहीं पर सकलीगर शाण पर शस्त्रों को भणकाकर १० अग्नि कण झाड़ते हैं ॥४१॥ ११दोनों ओर ब्राह्मणों का १२ समूह आशीर्वाद देता है जो १३ अपनी इच्छानुसार धनका फैलाव पाता है ॥ ४२ ॥ १४ कहीं पर ऊपर से ही नोछावर करते हैं १५ पुनि प्राण नोछावर करने का हित

बिखरत नोछावरि बसु१५ बजार, अति रंक होत तिन्ह लहि उ-
दार१६ ॥ ४३ ॥
प्रभु१ आदि जन्य जन२ गजन पिट्ठि, द्रुत परत निछावरि द्रविन दिट्ठि१७ ॥
सोसो आधोरन१मुख२समेटि, मग गेरिदेत१८दुख दुखिन मेटि४४
समेटि१ नमेटि२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
कहुँ अन्नरासि१९ नाना प्रकार, मप्पत२० द्रोणा१दिन बिनु सुमार
कहुँ आढक२ प्रस्थ३न मपन कर्म२१, मुसियत अधमर्णा२१न पि-
हित मर्म ॥ ४५ ॥
रचि व्रीहि सुगंधिक१ कुलथ२ रासि२३, पावत कहुँ बिक्रय१ क्रय२
प्रकासि२४ ॥
जव३ सुमन४ मदन५ हरिमंथ६ जात, भरमुद्ग७ राजमुद्ग८न बि-
भात२५ ॥ ४६ ॥
जवनाल९ बीजपुष्पि१०न जथा२६हि, अति रासिन इतिमुख सीत्य
आहि२७ ॥

फैलाते हैं, बजार में नोछावरका धन बिखरता है जिसको लेकर रंकभी उदार होते हैं ॥४३॥ दुलह रामसिंह आदि १बरात के लोग हाथियोंकी पीठके ऊपर नोछावर का २ धन पड़ाहुआ देखते हैं उसको ३ महावत आदि शीघ्र सिमेट कर दुखी मनुष्यों का दुःख मिटाने को मार्ग में गिरादेते हैं ॥ ४४ ॥ कहीं पर नानाप्रकार के अन्न के ढेर (समूह) होरहे हैं जिनको ४ द्रोण (बत्तीस सेरके तोल का नाम द्रोण है) आदि तोलों से ५गणना रहित तोल रहे हैं और कहीं पर ६ आढक (लीलावती में द्रोण के चतुर्थ भाग अर्थात् आठ सेरको आढक लिखा है) और ७ प्रस्थों [आढक के चतुर्थ भाग का नाम प्रस्थ है] से नापने का काम होता है और कहीं पर ९ ऋण लेनेवालों को छिपेहुए कामों से बहोरे लोग ८ ठगते हैं ॥ ४५ ॥ कहीं पर १० धान्य में ११ चावल १२ कुलथों [धान्य विशेष] की राशि करके प्रसिद्ध १३ बेचते और १४ मोल लेतेहुए पाते हैं और कहीं पर जव १५ गेहूँ १६ उड़द १७ चणा १८ मूँग १९ मोठ तथा चँवला ॥ ४६ ॥ २० जवार २१ बाजरा २३ इत्यादि २४धान्य के २२समूह

भासत कहुँ हट्ट२८न भ्रमर भीर २९, पीतन १ कपूर२ मृगमद३ पटीर४ ॥ ४७ ॥

कहुँ कुसुम निकर३०नाना प्रकार, अधिपतिपर वारत३१विविध बार ।
नृप करत रीझि मालि३२न निहाल, चल्लत१ खिन रहि२ खिन सिथिल२ चाल३३ ॥४८॥

प्रभु द्विरद अग्ग बहु दारुपट्ट३४, बहि१ढवत२कहारन अंस बट्ट ॥
गनिका जन३६ तिनपर नटन१ गान२, बज्ज३न सह बिरचित३७ बहु बिधान ॥ ४९ ॥

उनपैंहु महुर१रुप्पय२उछारि३८, कुट्टहिं जन जन्य कि भाद्र बारि॥
तहतह तिन्ह बादक लोभ तानि, लचिलेतै ३९ होत लय ताल हानि४० ॥ ५० ॥

अधिकारी तिनके तिन्ह उतारि४१, पुनि इतर चढावत४२न खिन पारि ॥
बिखरत ४३ पट्टन सन द्रविन ब्रात, बहु लुट्टत ४४ बहु पप रज दबात४५ ॥ ५१ ॥

पुरलोकबहुरिजिन्हढुंढि४६पात, बनिबिबिधगये बहु आढ्य४७ब्रात
बिक्खतकहुँइत१उत२मनिनबार४८,क्रमबिबिधअर्घ४९नानाप्रकार५०

शोभा देते हैं, कहीं पर दुकानों में भ्रमरों की भीड़ होरही है और कहीं पर १कुंकुम तथा हरताल तथा आमला, कपूर २ कस्तूरी, चंदन ॥ ४७ ॥ ३पुष्पोंके समूह ४समूह ५चण मात्र ठहर जाते हैं और चण मात्र धीरी चाल से चलते हैं ॥ ४८ ॥ दुल्लह के हाथी के आगे कहारों के ७कंधे पर रक्खा हुआ ६ काष्ठ का बड़ा तखता है उस पर वेश्याओं का ८ नाचना गाना होता है सो वे वेश्याएं वाद्य के साथ अनेक विधान रचती हैं ॥ ४९ ॥ ९ बरात के मनुष्य भादवाके जलके समान मोहर और रुपये वर्षते हैं तहां उन वेश्याओंके१०बाद्य बजानेवाले लोभ करके ११ झुककर उनको लेते हैं जिससे लय और ताल चूकजाते हैं ॥ ५० ॥१२ धन का समूह ॥ ५१ ॥ १३ धनवानों के समूह होगये १४मणियों के समूह को देखते हैं १५ मूल्य के विविध क्रम से ॥ ५२ ॥

पवि१ नील[2]२ मुक्तिभव[3]३ पद्मराग४, बैडूर्य५ बहुरि चउ४५० खिल बिभाग५१ ॥
दुहुँ२ओर बहुल कहुँ पट[6]५२दिपाल, जे राङ्कव[7]१ बादर२ क्षौम[9]३ जात५३
कौसेय[10]४ सहित इम चउ४ प्रकार, बिछवत५३ दुर२ओर वर बिबिध बार ॥
कहुँ कुंकुम[11]१ मृगमद[12]२ सुमं[13]३ प्रकीर्ण[14]५४, सब ठाम अगुरु[15]४ चंदन५ बिशीर्ण[16]५५ ॥ ५४ ॥
दुल्लह सुगंध प्रथम१हि दिपात५६, पुनि२ नगर जनन सौरभ लिपात५७ ॥
फग्गुन१२ खिन उच्छव फाग५८ फौर[17], कति बिध तस खेलन ५९ मरु प्रकार ॥ ५५ ॥
प्रभु हगन कहुँक कर्पूर पूर, हितपुव्व डारि६० रिझवत हजूर ॥
बलि[18]बलि सुगंधमयद्रव्य६१ज्ञात, जनप्रीतजनन[19]जैन्यनजमात६२॥५६॥
बंचि[20] आक्खि१न डारत६३ सुरभि[21] बारि, नृप दुल्लह हित सह अति निहारि ॥
जागुडं[22]१ मृगनाभि२न जानि जानि, प्रभु जन्यन सिंचित ६४ हित प्रतानि ॥ ५७ ॥
दुहुँ२ओर नारि१नर२लखि दुरूह[23], आनत६५अनेक बिध सुजस[24]ऊह
कहुँ गंधिनि१मालिनि२बहुप्रकार, फैलावत६६बरासिरसुरभिफार५८

१ हीरा २ नीलम ३ मोती ४ माणक ५ बाकी के चार प्रकार के रत्न ६ वस्त्र ७ ऊन ८ सूत ९ सण से उत्पन्न ॥५३॥ १० रेशम सहित चार प्रकार के ११ केसर १२ कस्तूरी १३ पुष्प १४ फैले हुए १५ अगर, चंदन १६ बिखरे हुए ॥ ५४ ॥ १७ फाग का समूह ॥ ५५ ॥ १८ फिर फिर (बारंबार) १९ बरात के लोगों को प्रीति जनाते हैं ॥ ५६ ॥ २० नेत्र बचाकर २१ गुलाबजल आदि सुगंधि का जल डालते हैं २२ केसर, कस्तूरी ॥ ५७ ॥ २३ कठिनाई से तकना में आवें ऐसे दुल्ह को २४ तकना करते हैं ॥ ५८ ॥

बहु कहत६७ अम्ह नृप मति बिचार, सुभ बिधि गय६८ बुंदिप समुझि सार ॥
यह जोग दुलह१ दुलहिन२ अपुब्ब, बिरचिय६९ कबंध दै दहि१ रु दुब्ब२ ॥ ५९ ॥

कहुँ कहत७० स्वपत गिंघोलि खेत, दुल्लह जनक न जो भीर देत
होतो७१ अनर्थ तो हाइहाइ, पै हुव७२सुभ दुलहिनि१दुलह२पाइ६०
इम लखत७३ नगर सोभा असेस, पहु पत्त७४ मुख्य तोरन प्रदेस
इम दुल्लह लोहापोरि१ अंत, बुट्ठतगो७५ बसु चय सुम बसंत ।६१
मृगमद१पटीर२कुंकुम३मिलाप,छिरक्यो७६बर फग्गुन समयछाप॥
बुट्ठिय७७ पहु तह बहु बसु बिसेस, अंदर लिय७८ सह बिधि सुघर एस ॥६२॥

बहुबिध बहुदासि१न सखि२न बार, किय ७९ पुनि नीराजन सह प्रकार ॥
त्रिक १ नाड़िन जावत रजनि जत्थ, पहुँच्यो ८० मह दुल्लह स्वपुर पत्थ ॥ ६३ ॥
पहुमान आइ पहिले१पैंउठ, तक्किय८१मिलि सम्मुह अधिक तुट्ठ॥
जावत घटिका चउ ४ रजनि जामें, किय ८२ समिति फतैमहल सु१प्रकाम ॥ ६४ ॥

---

१ हमारे राजा (मानसिंह) की बुद्धि का विचार ॥ ५९ ॥ गींघोली के चेत्र में २ हमारे स्वामी को दुल्लह का ३ पिता सहायता नहीं देता तो ॥ ६० ॥ दुल्लह ४ मुख्य द्वार के स्थान पर गया ५ वसंत ऋतु में पुष्पों की वर्षा होवे जैसे लोहापोल (जोधपुर के गढ पर महलों के मुख्य द्वार का नाम है) पर्यन्त धन के समूह की वर्षा करता गया ॥ ६१ ॥ वहां दुल्लह पर कस्तूरी ६ चंदन और केसर मिलाकर फागुन मास का समय होने से छिड़का वहां भी राजा ने विशेष धन की वर्षा करी ७ इस श्रेष्ठ घर को ॥ ६२ ॥ ८ आरती की ९ तीन घड़ी रात्रि जाने पर ॥ ६३ ॥ १०प्रथम सीढी पर आकर ११अधिकतुष्ट (प्रसन्न) हुआ १२ जहांपर १३ फतहमहल में सभा की ॥६४॥

कापरनि ईस सामंत काज, दिय गद्दि आदि८३ रट्ठोरराज ॥
बैठारयो ८४ नृपदिस इम सु बीर, ध्रुव बैठे८५ सम थित दुव २ हि धीर ॥ ६५ ॥
ईसान ८ नृपन मुख दुहुँ २ न आस ८६, सामंत अनिल दिस मुख ८७ सुभास ॥
थित सव्य १ मान २ दाहिन१ थिरेसै२, इम हुव ८८ समाजँ कछु काल एस ॥ ६६ ॥
रहि इक मुहूर्त संसद८९ रसेस, पुनि परिग९० पंति भोजन प्रदेस
पश्चिम ३।५ मुख बैठे ९१ तहँ नृपाल, थित पट्टन चउ ४ बिध अँसन९२थाल ॥ ६७ ॥
जुरि पंतिन९३ पंचम५ पेर्य५ जुत्त, बिस्तारिय९४ भिधा सूदन बहुत्त
जल२ थल२ भव दुव २ बिध अन्न ९५ जात, पँल ९६ त्रिशबिधि खँचर३ जुत बिधि दिपात ॥ ६८ ॥
प्रतिथाल साकगन ९७ दस १० प्रकार, बिस्तरि पुनि तेमँन ९८ बिबिध बार ॥
इम बारि परिवेसँन ९९ हुत असेस, रस छ ६ जुत पत्तहुव१००दुवर

१दोनों राजा बराबर स्थित होकर बैठे ।६५। २दोनों राजाओं का मुख ईशान दिशा को हुआ और सब उमरावों के मुख वायु कोण में प्रकाशित हुए वहां राजा मानसिंह वाम हाथ को और ३ राजा रामसिंह दहिना बैठा ४ कुछ समय यह सभा हुई ॥६६॥ ५भूपति के दो घड़ी तक सभा में रहे पीछे भोजन के स्थान पर पांत (पांतिया) हुई ६ चार बाजोटों पर विधि पूर्वक ७ भोजन के थाल रक्खेगये ॥ ६७ ॥ ८ पांचमी पंक्ति मद्य सहित जुड़ी जहां ९ रसोई पकाने वालों ने बहुत भेद फैलाये जिनमें जलसे और स्थल से पैदा हुए दो प्रकार के अन्न (जल से उत्पन्न चावल आदि और स्थल से उत्पन्न गेहूं आदि) और ११ पक्षियों सहित तीन प्रकार के१०मांस (एक तो बकरे आदि ग्रामपशु, दूसरे सूवर आदि वनपशु और तीसरे पक्षियों का) ॥ ६८ ॥ और थाल थाल प्रति दश प्रकार के शाकों के अनेक प्रकार के १३ समूह के१२तीवणों (व्यंजनों) की श्रेष्ठ १४ परूसगारी हुई.

रसेस ॥ ६९ ॥

जहँ *चसक१ चसक २ मनुहारि जात१०१, प्रभु रूचप नट्यो १ सनियम दिपात ॥

रत्तपान बुद्ध दिय १०३ हारि राज्य, तस सुत उम्मेद सु किय उ १०४ त्याज्य ॥ ७० ॥

बर १ अक्खिय १०५ स्वसुर १ हिँ इम प्रवीन, सामंत तदपि किय पान सीर१०६ ॥

पुनि लहि अदेस सब असन पाइ १०७, उठिय १०८ लहि बीटक जल अचाइँ ॥ ७१ ॥

कछुखिन रहि १०९ संसद हित प्रकाम, तब दिय११० सब जन्पन सिक्ख ताम ॥

पधराइ प्रभुहिँ अवरोध१११प्रीत, गावत गन बंदिन बिरुद गीत ७२

कुलदेवि कबंधन नागनेचि, पूजाइ ११२ प्रभुहिँ सुम निकर सेचि

सज्जा पोढासे११३ नृप स्वगेह, अभिलाखिन सुरतरु रजनि एह७३

इह बर स्वासुर कुल तियन आइ, लहि कछुक काल अतिहित लडाइ११४ ॥

लखि समय किय उ दंपति २ मिलाप ११५, इहिँ काल बुद्धि बघ हुव ११६ अमाप७४

॥ ६९ ॥ जहां * मद्यकी † चुसकी की मनुहार हुई तहां ‡ दुल्लह ने इनकार किया और यह इनकार १ नियम के साथ दिखाया कि २ बुधसिंह ने मद्य पीने में प्रीति करके बुंदी का राज्य गुमा दिया था उसके पुत्र उम्मेदसिंह ने मद्य पीने का त्याग कर दिया ॥ ७० ॥ तो भी ३ उमरावों ने मद्य पीने में ४ सीर (सामिल हुए) किया ५ आदेश (आज्ञा) लेकर भोजन किया ६ पान बीड़े लेकर ७ आचमन किया (आचमन लेने से पहिले पंक्ति में पान बीड़े देनेका राजपूताने में कायदा है) ॥ ७१ ॥ ८ तहां बरातवालों को सीख दी ९ दुल्लह को जनाने में पधराया ॥ ७२ ॥ १० फूलों के समूह चढाकर ॥ ७३ ॥ ११ इस समय स्वसुर के कुलकी स्त्रियोंने आकर ॥ ७४ ॥

बहुरीति चतुर बर रचि विधेय ११७, साधिय सब लौकिक ११८
सहित श्रेय ॥
रहि ११९ सुख सह बित्तत उचित रत्ति, धन गानाजीविन द्रविन
घत्ति१२० ॥ ७५ ॥
नृप आइ १२१ प्रात निज पटनिकाय, राजस सुख बिलसत हड्ड
६१ राय ॥
तिम निवासि १२२ दिवस बावीस २२ सत्थ, सब तर्कुक जन करि
बसु समत्थ१२३ ॥ ७६ ॥
बहु अप्पि हरनं १२४ सबविधि बिसेस, नृप मानं तुष्टकरि१२५
बर निसेस ॥
ग्रामक१ उपेतं केकीन्द्रदंग, पुनि मान सुता हित हित प्रसंग७७
अतिकृति सहस्र २५००० मित दम्म आय, दै१२६ दुवर लडाइ
पठये१२७ सदायं ॥
रइयाँ पुरेस सिवनाथसीह१, मेरतियन मालिक बल अबीह॥७८॥
रुचिभाजन नाजर अमृतराम२, तिन दुहुँन सिक्ख दिय १२८
संग ताम ॥
लक्खन मित सबसैन१ धन२ लुटाइ१२९, भूखन३ गंय४ हय५
मैंय६ दान भाइ१३० ॥ ७९ ॥
सब चुक्किसके न तब कति स्वसंग, आयो लै१३१ जाचक छबि
अनंग ॥

---

१ गान से जीवन करनेवाले कलावत आदि को धन देकर ॥ ७५ ॥ २ अपने डेरे में आकर ३ याचक लोगों को धनवान् करके ॥७६॥ ४ बहुत दहेज देकर ५ राजा मानसिंह ने वरको पूर्ण प्रसन्न किया ६ ग्रामों सहित ७ केकीन्द्र नामक नगर ८ राजा मानसिंह ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री को दिया ॥ ७७ ॥ दुलह दुलहनका प्यार करके ९ दहेज सहित भेजे १० निर्भय ॥ ७८ ॥ ११ प्रीतिपात्र १२ वस्त्रों सहित १३ हाथी १४ ऊंट रीति पूर्वक दिये ॥ ७९ ॥ १५ कितने ही

मधु१ असित२ आदि१ तिथि१ चढि१३२ महीप, दरकुंचन प्रस्थित १३३ वंसदीप ॥ ८० ॥

मीनाऽर्क बिसनं पुर न सुभ मानि१३४,पटगृह केदारेश्वर प्रतानि इह करि१३६ वनीपकन खिलन आढय, संसद बुलाइ१३७ सब जस समाढय ॥ ८१ ॥

सह मह१ आस्वासन२ तिन्ह सराहि, दिय१३८ सिक्ख सबन दारिद्र दाहि ॥

निवसन करि बहुदिन तह नरेस,आरंभिय१३९अवसरपुर प्रवेस८२

॥ दोहा ॥

आमराध२ गत पक्ख सित२, तिथि——दिन तत्थ ॥८३॥
प्रविसे१४० दिन पच्छिम४ पहर, सहर सकल बल सत्थ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ रामसिंहचरित्रे महारावराजरामसिंहयोधपुरविवाहानन्तरबुंदीपुरप्रवेशनं षष्टो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितः अष्टषष्ट्युत्तरत्रिशततमः ॥ ३६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

याचकों को अपने साथ ले आया १ चैत्र वदि एकम के दिन ॥ ८० ॥ मीन संक्रांति के सूर्यमें पुरमें २प्रवेश करना अशुभ मानकर केदारेश्वर शिवके स्थान पर ३ डेरे तनाये, इसी स्थान पर सब ४ याचकों को धनवान् किये और उनको ५ सभा में बुलाकर सबसे आप यशयुक्त (यशसे धनवान्) हुआ ॥ ८१ ॥ ६ उत्सव सहित उन (याचकों) का आश्वासन करके प्रशंसा के साथ सब का दरिद्र जलाकर सीखदी ॥ ८२ ॥ ७ वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तीसरे पहर पीछे ८ सब सेना सहित पुर में प्रवेश किया॥८३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में, रामसिंहके चरित्र में, महारावराजा रामसिंह का जोधपुर में विवाह करके पीछा बुंदी आनेका छठा मयूख समाप्त हुआ॥६॥ और आदि से तीनसौ अड़सठ ३६८मयूख हुए॥

पुर प्रविसन पुरजन प्रचुर, स्वामि लखन हित संग ॥
कहिहु करत दरसन किते, *अय१ चुंबक२ बिध अंग ॥१॥
अटत जाय बन ताल तट, दिपत †उदीची४।७द्वार ॥
बिसि ‡गोपुर विकस्यो सु बर, पुर निज विविध प्रकार॥२॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

उदीची४।७दिसा द्वार यों भूपआयो,प्रवेस्योपुरी सज्ज सेना सुहायो
दिप्यो अप्पनौंद्रंगशृंगारसज्ज्यो,लखैं इंद्र१को श्रीद२को नैरलज्ज्यो ३
पइट्ठो तहाँ द्रंग यों जब पायो, अकस्मात ज्यों कायमैं प्रान आयो ॥
कहाँ बप्र१प्राकार२सोहैं सुधारैं, कहाँ कंगुरे३मंजु ऊंचे अटारैं४।४।
कहाँ ग्रावपैं टंक मां मंजु मंडैं५, कहाँ भोन चक्री धरैं चक्र भंडैं६॥
कहाँ सार त्योंकारके कूटबज्जैं७, कहाँ वर्णचंचूनके लेख८रज्जैं५
कहाँ वर्द्धकी स्यंदनाली सुधारैं९, कहाँ कंदुजीवी हवी कंदु डारैं१०
कहाँ चैल चंगे बनै तंतुबाई११,कहाँ उब्बटै अंग अंतावसाई१२।६।

* लोहे और चुंबक के मिलने की भांति ॥ १ ॥ † उत्तर दिशा के द्वार से ‡ नगर के द्वार में घुसकर अपने पुर को नाना प्रकार का देखा ॥ २ ॥ इसप्रकार वह राजा उत्तर दिशाके द्वारसे आया और सुहावनी सजीहुई सेनासे प्रवेशकिया वहां अपना नगर शृंगार किया हुआ ऐसा दीखा जिससे इन्द्र की पुरी (अमरावती) और १ कुबेर की पुरी(अलका) लज्जित हुई ॥ ३ ॥ राजा भीतर घुसा उस समय वह नगर ऐसी शोभा को प्राप्त हुआ कि जैसे मृतक शरीर में अचानक प्राण आया, जिसमें कहीं तो २ धूल कोट कहीं ३ पक्का कोट सुधारा हुआ शोभायमान है, कहीं पर कांगरे और कहीं सुन्दर छतें हैं ॥ ४ ॥ ४ पत्थर पर टांकी से ५ लक्ष्मी की सुंदर मूर्तियें मांडते हैं और कहीं घरों में ६ कुंभार चाक पर भांडे (मिट्टी के पात्र) धरते हैं, कहीं लोहे पर ७ लुहार के घण बजते हैं और कहीं पर ८ चित्रकारों (चितेरों) के लेख (चित्राम) शोभा देते हैं ॥ ५ ॥ कहीं पर ९ सुथार रथों की पंक्ति को सुधारते हैं और कहीं पर १० कंदोई कड़ाह में घृत डालते हैं ११ कहीं पर जुलाहे उत्तम वस्त्र बुनते हैं १२ कहीं पर नाई शरीर पर उबटन मालिश करते हैं ॥ ६ ॥

भ्रमा[1]सक्त मंजैं कहीं हेति१३भारी, धरैं सान झंझान फुलिं[2]ग धारी
वढे वस्त्रजोरैं कहीं तुंन्नवाई[3]१४, छमंकैं कहीं पिंजरी तूलं[4]१५छाई॥७॥
कहीं सूत[5]१ कांसी[6] २ चिंतीभूत चोरैं[7]१६, कहीं सीस[8]३ कत्थीर४ के
जाल जोरैं१७ ॥
कहीं चित्र आ[9]वास मंडैं चितारे १८, कहीं स्तोत्र बंदी पढैं नव्यं[10]१९
न्यारे ॥ ८ ॥
कहीं केकरैं मालिनी [11]माल्य भंगैं२०, कहीं रंगरेजा[12]वली चैल रंगैं२१
कहीं धा[13]न्य१गोधूम[14]२के गंजर२भारी, कहीं राासि मप्पैंर३गहैं द्रोन[15]
१ खारीर२ ॥ ९ ॥
कहीं रक्त[16]१ री[17]तीर२नके गंज डारे२४, कहीं नैर नाना रुपय्ये३ वि
थारे२५ ॥
कहीं स्वर्ण[18]कारावली हेम४तुल्लैं२६, कहीं धामें गंधी[19]नके गंध५खुल्लैं
कहीं थंभ६संबंद्ध[20] तुल्लैं तराजू२८, कहीं हेम हिंडोल बंधे दुब्बाजू२९
कहीं निक्खसैं नीर कुल्या[21]१ प्रणाली[22]२।३०, कहीं बच्छ सोहैं बनैं

१कहीं पर सिकलीगर उत्तम शस्त्र मांजते हैं और साणको फेरनेवाला २अग्नि कणों को धारण करता है ३ कहीं पर तूनगर कटेहुए वस्त्रों को जोड़ते हैं और कहीं पर ४ रूई से छाई हुई पींजण बजती है ॥ ७ ॥ कहीं पर ५ पारा ६ कांसी के ७ समूह चोड़े पड़े हुए हैं और कहीं पर ८ सीसा और कथीर के समूह को जोड़ते हैं, कहीं चितेरे ९ मकानों को रंगते हैं, कहीं पर भाट लोग जुदी १० नवीन स्तुति पढते हैं ॥ ८ ॥ कहीं पर कितनी ही मालनियें ११ मालाओं के भेद करती हैं १२ कहीं रंगरेजों की पंक्ति वस्त्र रंगती है १३कहीं पर धान्य के १४ गेहूँ के बड़े ढेर लगे हुए हैं सो १५द्रोण और खारी नाम के तोलों से राशियों को नापते हैं [बत्तीस सेर का एक द्रोण और सोलह द्रोण की एक खारी होती है] ॥ ९ ॥ कहीं १६ तांबा १७ पीतल के समूह पड़े हैं और कहीं पर नगर में अनेक सिक्कों के रुपये फैलाये हुए हैं १८ कहीं पर सुनारों की पंक्ति सुवर्ण तोल रही है और कहीं गंधियों के १९समूह गंध खोल रहे हैं॥१०॥ कहीं पर थंभों से २०बंधीहुई तराजू से तोल रहे हैं और कहीं दोनों ओर सुवर्ण के झूले (हिंडोले) बंधे हैं २१कहीं नहरों और २२नालियों से पानी बहता है

आलबालौं३१ ॥ ११ ॥

कहौंके घटीजंत्र चल्लैं चठ्ठैं३२,कहौं नीतिकी प्रीतिधी भीतिनट्ठैं३३
खलूरी कहौं खग्गके मग्ग सद्धैं३४, कहौं तोंवरके राहमैं लाह
लद्धैं३५ ॥ १२ ॥

कहौंबान२संधानपंच्छीन पारैं३६,कहौं भारि बंदूक४गुंजा उतारैं३७
पटेबाज के ढालतैं वारपेलैं३८, कहौं मल्लविद्या बढै दावमेलैं३९ १३
कहौं बाल१ हुल्लासकै रास रच्चैं४०, कहौं भट्ट१ झुल्लैं४१ कहौं न
ट्ट२ नच्चैं४२ ॥

कहौं खंजरी१ झज्झरी२ ढोल३ गज्जैं४३, कहौं डिंडिमी४दुंदुभी५
चंग६ बज्जैं४४ ॥ १४ ॥

कहौंतंति७की पंतिपैं कोनलग्गैं४५,कहौं बारनारीनचैं द्वारअग्गैं४६
कहौंसुद्धशृंगार१की धार चल्लैं४७,कहौं हास२उल्लासआभाउझल्लैं४८
मचैं४९ क्वाँपि कारुण्य३ के उग्र४ मंडैं५०, कहौं बीर५ आतंक ६
अखंडैं५१ अखंडैं ॥

वनैं५२ क्वापि बीभत्स७के चित्र८ बल्लौं५३, कहौं सांत९मैं कांत

१कहीं पर थांवले बने हुए वृक्ष शोभा देते हैं ॥ ११ ॥ कहीं कितनी ही घरटियें चलती हैं और कहीं नीति की प्रीति से २ बुद्धिका भय नष्ट होता है अर्थात् नीति की चरचा होती है ३ कहीं पर अखाड़े में खड्ग के मार्ग साधते हैं और कहीं ४ भाला फेरने के मार्ग में लाभ प्राप्त करते हैं ॥१२॥ कहीं पर बाणों का सन्धान करके ५ पक्षियों को गिराते हैं और कहीं बंदूक चलाकर ६ चिरमी उडाते हैं ॥ १३ ॥ कहीं पर ७बालक हर्ष करके ८ नाचते हैं ॥ १४ ॥ ९कहीं पर तांतके बाजों पर नजराफ[नक्खी]लगती है और कहीं द्वार पर वेश्यायें नचती हैं कहीं पर शुद्ध शृंगार रसकी धार चलती है और कहीं प्रसन्नता से हास्य रसकी कांति बढती है ॥१५॥१०कहीं पर ११करुणरस मचता है और कहीं १२ रौद्ररस रचते हैं, कहीं पर वीर रस और कहीं पर पूर्ण १३भयानक रस उचार ते हैं, कहीं पर बीभत्स रस बनता है और कहीं १४ अद्भुत रस कहते हैं और कहीं पर१५सुन्दर निर्वेद है स्थायीभाव जिसका ऐसा शांत रस प्रकाशित करते हैं "निर्वेदस्थायिभावोस्ति शान्तोपि नवमो रसः" बहुधा आचार्य रस आठ

निर्वेद खुल्लैं५४ ॥ १६ ॥
कहौं भारती१ सात्वती२वृत्ति आनैं५५, कहौं कौसिकी३ आरभ-
ट्टी४ बखानैं५६ ॥

कहौं नाटक१ प्रक्रिया२ भाण३ कहैं५७,

ही मानते हैं तहां कोई कोई ऋषियों का मत है कि वैराग्य है स्थायीभाव जिसका ऐसा शान्त भी नवमा रस है ॥ १६ ॥ अब यहां भारती से लेकर भाणिका पर्यन्त नाटक वृत्तियें(नाटकोंके भेद)हैं जिनके लक्षण साहित्यदर्पण के मतानुसार लिखते हैं सो जिनको इनका विस्तार देखना होवै वे साहित्यदर्पण में देखैं १ जिसमें प्रायः संस्कृत के वचनों का व्यापार होवे और वह स्त्री के आश्रित नहीं किन्तु पुरुष के आश्रय होवै उसे भारती वृत्ति कहते हैं. जिसका सविस्तर वर्णन साहित्यदर्पण की २८५कारिका से देखो. २महानुभावता शौर्य दान, शक्ति, दया और सरलता से पूर्ण, हर्ष सहित, अल्प शृंगारवाली, शोक रहित और आश्चर्य सहित होवे उसको सात्वती वृत्ति कहते हैं. जिसके अधिक भेद देखने की इच्छावाले ४१६ वीं कारिका से देखें ३ नायिकाओं के भूषणों का मनोहर वर्णन जिसमें होवे उसको कौशिकी वृत्ति कहते हैं. जिसका पूरा वर्णन ४११ वीं कारिका से है. ४ माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध और घबराना आदि चेष्टाओं से युक्त, तथा वध और बन्धन आदि से बहुत वृत्तिका नाम आरभटी है, इसके चार भेद हैं सो साहित्यदर्पण की४२०वीं कारिका से देखो. ५ जिसका वृत्तान्त प्रसिद्ध होवे, मुख आदि पांच संधियां होवैं, विलास और ऋद्धि आदि गुणवाला होवे, नानाप्रकारकी विभूतियों से युक्त होवै, सुखदुःख की उत्पत्ति से नानाप्रकारके रसों से परिपूर्ण होवे, इस में पांच से लेकर दस तक अंक होते हैं, प्रसिद्ध वंशवाला राजऋषि, धीर, उदार, प्रतापी, दिव्य, अथवा दिव्य गुणवान् नायक होता है अंगी रस एकही होता है शृंगार अथवा वीर रस प्रधान होता है, अन्य रस अंगभूत होते हैं, निर्वहण नामक संधियें, बहुत रस होते हैं, चार मुख्य कर्म करनेवाले नट होते हैं और गोपुच्छ के अग्र के समान जिसकी रचना हो उसको नाटक कहते हैं ६ प्रक्रिया नामका कोई जुदा भेद नहीं है परंतु प्रकरण को प्रक्रिया माना है सो इसका लक्षण ५११ की कारिका में है कि वृत्तान्त लौकिक और कविकल्पित होवै, शृंगार अंगी, नायक ब्राह्मण अथवा वनियां होवे, जो धर्म अर्थ काम आदि संकाम साधन में परायण होवै उसको प्रकरण कहते हैं ७ जिस में धूर्त नायक का चरित्र होवै, बीच

प्रहासा४रूप डिंवा५रूप व्यायोगे६ पञ्चं५८ ॥१७॥
समवकारादिं७कारात७ को कापि सद्वे ५९, कहौं अंक८ बीथी९नसौं

बीच में अनेक प्रकार की अवस्थायें बदलती रहें, एकही अंक होवे, निपुण और पण्डित विट एकही पात्र होवे, अनेक अनुभव किये हुए अथवा अन्यके अनुभव किये हुए पदार्थ को रंग भूमि में प्रकाशित करै, संबंध और उक्ति प्रत्युक्ति आकाश की ओर मुख करके करै, शौर्य और सौभाग्य के वर्णन से वीर और शृंगाररस को सूचितकरै, इतिहासकल्पित होवे, मुख और निर्वहण नामक दो संधियां होवें और दशों लास्य[नृत्य]अंग होवें जिसको भाण कहते हैं. १ भाण के समान संधि, संधियों के अंग, लास्य के अंग, और अंक से जिस की रचना होवे, निंदनीय पुरुष का जिस में वृत्तांत होवे, और कविकल्पित होवे, जिसको प्रहास [प्रहसन] कहते हैं. इसका अधिक वर्णन देखना होवे तो ५३४ की कारिका से देखें. २ जिसमें माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, घबराना आदि चेष्टायें और सूर्य चन्द्र के ग्रहण विशेष कर होवैं, जिस में पुराण आदि से प्रसिद्ध इतिहास होवे, अंगी रौद्र रस होवै और अन्य रस अंग होवैं, चार अंक होवैं, विष्कम्भक और प्रवेशक न होवैं देवता गन्धर्व यक्ष राक्षस बडे सर्प भूत प्रेत पिशाच आदि उत्पन्न उद्धत सोलह नायक होवैं वृत्तियों में से कौशिकी नहीं होवै, संधियों में से विमर्ष संधि न होवे, हास्य शांत शृंगार रसों को छोडकर बाकी के छः रस उज्वल होवैं जिसका नाम डिम है ३ जिस में प्रसिद्ध इतिहास होवै, स्त्रीजन अल्प होवैं, गर्भ और विमर्ष संधि न होवै, बहुतसे मनुष्य होवैं, एक अंक होवै, युद्धका उदय स्त्री के निमित्त विना होवै, कौशिकी वृत्ति नहीं होवै, प्रख्यात नायक होवै, वह राज-ऋषि, दिव्य व धीर उद्धत होवैं, हास्य शृंगार और शांत इन रसों को छोडकर अन्य रस अंगी होवैं, जिसको व्यायोग कहते हैं ॥ १७ ॥ ४ समव है आदि में जिस के और कार है अंत में जिसके ऐसे "समवकार" का लक्षण यह है कि देवता और दैत्यों के आश्रित प्रसिद्ध वृत्तान्त होता है, विमर्ष रहित सन्धियां होती हैं तीन अंक होते हैं उनमें से पहिले अंक में दो सन्धियां होती हैं और पिछले दो अंकों में एक एक सन्धि होती है, प्रसिद्ध देवता और दानव उदात्त बारह नायक होते हैं इसका सविस्तर लक्षण ५१५ की कारिका में देखो. ५कहीं पर ६ जिस में उत्सृष्टिक नाम अंक होवै प्रयोग करनेवाले मनुष्य सा-मान्य होवैं, करुणरस स्थायी होवै, बहुत सी स्त्रियों का रुदन होवै, प्रसिद्ध वृत्तान्त को कवि अपनी बुद्धि से बढावै, भाण के समान सन्धि वृत्तान्त और

नैर नचैं६० ॥
कहौं केक ईहामृगैं१० अच्छ आनैं ६१, बढे पंक्ति१० संख्याहि
एकैं बखानैं६२ ॥ १८ ॥
कहौं रूपकैं अंतलौं यौं उपादी, बदैं अंग संख्या समाक्षेप वादी ॥
मुखे१ नाटिका२ भाणिका१८ अंतर मप्पी, थिरा पंक्ति१०ओ अष्ट
८ ए सर्व१८ थप्पी ॥ १९ ॥

अङ्क होवैं, हार जीत होवे, वाणी से युद्ध होवे, और बहुत दुःखोत्पादक वचन होवे उसे अङ्क कहते हैं. जिस में एक अङ्क होवे, नायक चाहे सो कल्पनाकर लियाजावै, विचित्र प्रत्युक्ति का आश्रय लेकर आकाशभाषित के वचनों से अधिकतर शृंगार को और कुछ और रसोंको भी सूचित करै, मुखऔर निर्वहण ये दो सन्धियां होवैं, और समग्र पांचों ही बीज आदि अर्थप्रकृतियोंका प्रयोग होवै, नगर को बांधते हैं अर्थात् ऊपर कही हुई वृत्तियों से नगर को बांधते हैं. १जिसमें मिश्रित वृत्तान्त होवै, चार अंक होवैं, मुख प्रति मुख और निर्वहण ये तीन सन्धियां होवैं, नायक और प्रतिनायक प्रसिद्ध और धीरोद्धत मनुष्य तथा दिव्य होवे परन्तु यह नियम नहीं कि नायक अमुक ही होवै और प्रतिनायक अमुक ही होवै, नायक प्रतिनायक के सिवाय दूसरा एक अनुचित कार्य करने वाला होवै, यह इच्छा रहित दिव्य स्त्री को हरण करने आदिसे चाहता है इस कारण इसका शृंगाराभासभी कुछ कुछ दिखायाजावै, इत्यादि विशेष विस्तार ५१८ की कारिका में देखो. २पंक्ति नाम का कोई भिन्न भेद नहीं मिलता परन्तु आगे के २०के छंद से रूपक को ही पंक्ति मानना लिखा है ॥ १८ ॥ इन सबको रूपक (दृश्यकाव्य) कहते हैं जिनमें ३ समाक्षेपवादी, मुख, नाटिका, भाणिका को अन्त में लेकर उसीके अंग कहते हैं. इनमें मुख का लक्षण यह है, जिस में नानाप्रकार के अर्थ और रसकी उत्पत्ति होवै, बीजकी उत्पत्ति होवै, प्रारम्भ होवै. नाटिका का लक्षण है कि वृत्तांत कल्पित होवै, पात्र प्रायः स्त्रियां होवैं, चार अंक होवैं, नायक प्रसिद्ध धीरललित राजा होवै, नायिका अन्तःपुर से संबंध रखनेवाली, संगीत में तत्पर, नवीन अनुरागवाली, राजवंश से उत्पन्न कन्या होवै. इसका विशेष वृत्त ५२९ की कारिका में देखो. भाणिका का यह लक्षण है कि जिसमें उत्तम सामग्री होवै मुख और निर्वहण संधि होवै, कौशिकी और भारती वृत्ति होवै, एक अंक होवै, उदात्त नायिका होवै, नायक हीन होवै इसके उपन्यास आदि सात अंग हैं ॥ १९ ॥ साहित्य में दश प्रकार के रूपक हैं

मिती पंक्ति१०ह्याँ रूपकाख्या प्रमानी, जथा अष्ठ भू१८ ते उपा-
व्याहुजानी ॥

कहीं स्तंभ१ प्रस्वेद२ रोमांच३ कत्थैं६३, स्वराभोट४ लैं६४ अश्रु५
बैवर्ण्य६ सत्थैं ॥ २० ॥

कहीं कंप७ केठां प्रलै८भाव भासैं६५, कहीं पीठमर्द१ प्रहासी२
बिलासैं६६ ॥

सजैं६७कापि संगीत१कालानुसारी,भलेवत्तिके जातके भेदभारी२१
मचे ह्याँ श्रुती भेद बाईस२२मोहैं६८, स१मैं चो४ म४मैं चो४ प५मैं चो
४हिँ सोहैं६९ ॥

गिने७० रे२ रु धे६ त्रि३ त्रि३ द्वै२ ग३ नी७ मैं, सुबै१तीव्रिका१
छोहिनी२२ अंत२२ श्रीमैं ॥ २२ ॥

लसैं७१ पंच५ही जाति दीप्ता१दि लैकैं, छुटैं७२ जे जथा भाग सों
राग छैकैं ॥

मचे मोद त्रि३ ग्घाम खड्ज१दि मंडैं७३, मिलीं७४ मूर्छना इकवीसी
२१ अखंडैं ॥ २३ ॥

क्रिया१ गीत्य२ लंकार३ औ गामका४ऽऽदी, बदैं७५ रम्पता जुष्ट
के पुष्ट बादी ॥

<u>कहीं सैंधवी१ कैंम्भ आलाप आनैं७६, सुखारी२ कहीं गौड़३</u>

कियागया है सो यहां पर ग्रन्थकर्ता ने इसी रूपक को पंक्ति लिखा है १स्वर भंग 'यहां पर स्तम्भ आदि सब भाव हैं जिनके अर्थ प्रसिद्ध हैं इस कारण इन की भिन्न भिन्न टीका लिखना अनावश्यक है'॥२०॥२कहीं पर समय के अनुसार संगीत सजते हैं ॥ २१ ॥ ३ षड्ज में चार ४ मध्यम में चार ५ पंचम में चार ६ ऋषभ में तीन ७धैवत में तीन, गांधार में और निषाद में दो दो श्रुतियां हैं सो तीव्रा को आदि लेकर छोहनी के अन्त तक शोभा देती हैं ॥ २२ ॥ दीप्ति आदि लेकर राग की पांचों ही जातियां शोभा देती हैं, षड्ज को आदि देकर तीनों ग्राम रचते हैं और इकीस ही मूर्छना त्रुटि रहित मिली हुई हैं ॥ २३ ॥ ८ तालक आदि ९ सुन्दरता से युक्त हैं १० यहांसे लेकर छब्बीस के छंद तक

सालंग४ मानैं७७ ॥ २४ ॥
कहीं राग घंटा५ रमा६ टक्क७ कहैं७८, पहाडी८ विहंगा९ख्य सा
मंत१० पहैं७९ ॥
कहीं कोकिलैं ११ कोकिलालाप कूजैं८०, प्रगाता कहीं क ८
१२ मारु१३ पूजैं८१॥२५॥
कहीं नाट१४ कल्ल्यान१५ गौरी१६ कुरंगी१७, स सौदामिनी १८
कौमुदी१९ चक्रि२० संगी८२ ॥
बराली२१ कहीं एल२२ पट्टा२३ऽऽदि बंधैं८३, सबैठाँ ग्रह१ न्यास
अंसा३दि संधैं८४ ॥ २६ ॥
अहो एकसो अग्ग बावीस१२२ अैसैं, पुरी मुख्य रागावली प्रान
पैसैं८५ ॥
निबद्धा१ निबद्धा१ऽऽख्य द्वै भेद न्यारे८६, अनुप्रासलैं८७ आदि१
मध्या२न्त३ वारे ॥२७॥
गहैं८८ क्वापि ठाँ पंक्ति१० संख्या गुणा१०ऽऽली, सजैं ८९ क्वापि
त्रेता३ प्रबंधा३ऽऽख्य साली ॥
कहीं ताल चंचत्पुटैं१ लै क्रमावैं९०, कहीं चाचपुटैं लै पुटैं२
लावैं९१ ॥ २८ ॥
कहीं षट् पितापुत्र३ उद्घट्ट४ कहैं९२, बनैं मार्ग१ तालाख्य या
सर्व बहैं९३ ॥
कहींतालदेशीय२लैमैंक्रमावैं९४,लखोजेजथासंभवीछंदलावैं९५॥२९॥
कहींतालश्रीरंग१लैमैंनिकासैं९६,भलेमंठिके२चञ्चरी३मंठभासैं९७

रागनियों के नाम हैं ॥ २४ ॥ १ कोयल की अलाप से शब्द करती है ॥२५॥ ॥ २६ ॥ २ रागों की पंक्ति में ॥ २७ ॥ ३ चञ्चुपुट से लेकर इकतीस के छंद पर्यन्त तालों के नाम हैं जिनके लक्षणों का संगीतरत्नाकर के तालाध्याय में सविस्तर वर्णन है सो वहां देखो. यहां इनकी अत्यन्त विस्तारवाली व्याख्या नहीं की जासकती ॥ २८ ॥ २९ ॥

कहाँ मल्लिकामोद५में मोद कहैं९८, पगे पूर्ण६ कंकाल७ त्यौं म-
ल्ल८ पहैं९९ ॥ ३० ॥

कहाँ झुम्मरी९ हंस१० झंपा११ कमावैं१००, सु लौ स्कंद१२ त्यौं
सिंह१३ घत्ता१४ समावैं१०१ ॥

तथा चित्र१५ कुंता१६रूप१०२ लौ एकताली१७, मचैं१०३ ब्रह्म १८
ज्यौं रुद्र१९ त्यौं बिंदुमाली२० ॥ ३१ ॥

कहाँ इक्क१ लौ१सर्बही ताल सद्धैं१०४, बिधा ०पाइके राइके ला-
ह१ लद्धैं१०५ ॥

ठनैं देव आगार घंटा१ठनंकैं१०६, कहाँ झल्लरी२ *कंबु३झंझा४
झनंकैं१०७ ॥ ३२ ॥

कहाँधामआरामआमोद१खुल्लैं१०८,कहाँदारुके२लोलहिंडोलझुल्लैं१०९
कहाँ द्वार१ बाजार२ हट्टा३ कँवारी४, सुढारी सजी११०चित्रकारी
१११ सँवारी ॥ ३३ ॥

कहाँ कुट्टिमागार५ भंडार६ भासैं११२, नये ओकं४७ बासोक ८ के
सोक नासैं११३ ॥

कहाँ संधिला९ मग्ग १० शृंगाट११सोहैं११४, कहाँ चत्वरा१२८ली
मिली चित्त मोहैं११५ ॥ ३४ ॥

कहाँ गोख१३ जाली १४ लगे ११६ तोखकारी, कहाँ ११७ सौध
१५ संधानिका१६ चित्रसारी१७ ॥

कहाँ सुभ्र११८संदा१२निनी१८हस्तिसाला१९,कहाँ मंदुरा२०भाँति१३माला

॥३०॥३१॥*शंख ॥३२॥कहीं पर घरोंमें और १ बागों में सुगंधि खोलते हैं "दूर तक जानेवाली सुगंधि का नाम आमोद है" २काष्ठके चपल हिंडोले ॥३३॥कहीं पर ३छोटे घर और कहीं पर भंडार शोभा देते हैं ४कितने ही नवीन घर और ५शयन घर शोक का नाश करते हैं ६ कहीं गुप्त मार्ग(सुरंग)और कहीं ७चौहटे शोभा देते हैं ८चबूतरोंकी मिली हुई पंक्तियां मनको मोहती हैं ॥३४॥९संतोष कारी १०राज सदन (महल) ११मदिरा गृह १२ गोशाला १३हयशाला में घोड़ों

बिसाला१९ ॥ ३५ ॥

कहीं भित्ति२१लै किति वेदी२२बिलासैं१२०, कहीं अंगना अङ्ग-
नार३भा प्रकासैं१२१॥

कहीं पुराणप्रासाद २४ खुल्लैं १२२ पताका२५, रजैं १२३ हेमके
कुंभ२६ज्यों चंद राका ॥ ३६ ॥

कहीं राजतीं देहलीं२७ गेह पक्की१२४, कहीं अर्गला २८ ताल २९
खासा१२५ खडक्की३० ॥

सुधामैं सने धामके थंभ३१ धारैं१२६, बने तीव्र ३२ गोपानसी ३३
भा बिथारैं१२७ ॥ ३७ ॥

कहीं१२८ दंतें३४ प्रग्रीवें३५ अट्टी३६ अलिंदी३७, भिधीं सर्वतोभद्र
३८ लैकैं बिछिंदी१२९

भनैं सिलिप सोभा१३० कहीं सालभंजी३९, कहीं अंजली कारि-
का४०रंगरंजी१३१ ॥३८॥

की बिशाल पंक्तियां हैं ॥ ३५ ॥ कहीं पर दीवारें और १ चबूतरियां बड़ी कीर्ति लेकर प्रकाश करतीहैं "।विलासः प्रकाशे" इति शब्दार्थचिन्तामणिः॥ कहीं पर घर के आंगन (चौक) में २ स्त्रियां कान्ति प्रकाश करती हैं ३ सुन्दर महलों पर ध्वजायें खुली हैं और जैसे शरद ५ पूर्णिमासी में चंद्रमा शोभा देवै तैसे श्वेत महलों पर ४ सुवर्ण के कलश शोभा देते हैं "शरद की । की रात्रि में जल विंब के कारण चंद्रमा का रंग लाल होता है" ॥ ३६ ॥ कहीं घर की पक्की देहलियां ६ शोभा देती हैं तथा चांदी की पक्की देहलियां हैं आगल (भागल) ताले और उत्तम खिड़कियां हैं ८ चूना में भीगे हुए ६ तीर "तीव्र नाम तीर का है और देश भाषा में सीधे लंबे काष्टको भी तीर कहते हैं इसकारण यह शब्द पलींडेके अर्थमें प्रतीत होता है"१०मियालें(छादनाधार वक्र काष्ट) शोभा देती हैं ॥ ३७ ॥ ११ खूंटियां १२ झरोखे १३ महलों के ऊपर की अटारियां १४ द्वार के बाहर का चौक १६ चौमुखा (चौपाड़) १५ नामवाले स्थान से लेकर १७ अभिलाषा युक्त परमेश्वर के मंदिर पर्यन्त १८ हाथी दांत आदि की रची हुई पुतलियां १९रंग से रंगी हुई लज्जा युक्त पुतलियां ॥३८

सजे१३२कापि सोपान४१ श्रेढी४२ निसैनी४३, नटैं१३३ नट्टसाला
४४ कहौं कंजनैंनी ॥
कहौं केणिका४५।१ थूल४६।२ उल्लोच४७।३कच्छे१३४, कहौं
पीठ४८।४पल्ल्यंक४९।५ आस्तीर्ण५०।६अच्छे१३५॥३९॥
कहौंविप्रमंडैं१३६कथावेद१बादी,कृतीकापिअद्वैत२अप्पैं१३७अनादी
कहौं सत्थ साहित्य३के अंत्थ कढ्ढैं१३८, कहौं न्याय४की कोटिपैं
चाप चढ्ढैं१३९॥ ४० ॥
दिपैं१४० द्यूतबिद्या५ कहौं अन्तदेवी, कहौं मोहमाया६ करैं १४१
सौठ्यसेवी ॥
कहौं १४२ बापिका१ कुंड२ कासार ३ कूपी४, रुचे नीर नारी भरैं
१४३ आनुरूपी ॥ ४१ ॥
धरे१४४ ग्लौ१ कहौं धीरं२ त्यौं गंधधूली३, फबैं१४५ केतकी ४।१
मल्लिका५।२ कापि फूली ॥
कहौं धूप धूमावली६।३जाल कढ्ढैं१४६, चहे सेवती७।४ तंब रोलंब
चढ्ढैं१४७ ॥ ४२ ॥
कहौं ब्रह्मचारी१ क्रमैं१४८रीति राणी, कहौं दान अप्पैं १४९ गृही

१पत्थरोंके रचेहुए जीने (पगथिये) २ काष्टके रचेहुए जीने और नीसरनियां, ये सब पदार्थ सिल्पियों (कारीगरों) की शोभा बताते हैं और कहीं नृत्य शालाओं में ३ कमलनयनी स्त्रियां नृत्य करती हैं ४ कहीं पर छोटे डेरों ५ बडे डेरों और ६ चंदवों (शामियानों) के समूह हैं ७ सिंहासन तथा पाजोट, ढोलिये (पिलंग) और उत्तम ८ बिछोने हैं ॥ ३९ ॥ ९ कहीं पर पण्डित लोग वेदांत के अनादि अद्वैत मत का उपदेश करते हैं. १० साहित्य का अर्थ निकालते हैं ॥ ४० ॥ कहीं पर द्यूत करनेवाले द्यूत करते हैं ११ छली मनुष्य अविद्या की माया फैलाते हैं १२ तालावों में १३ अपने अपने सदृश पानी भरते हैं ॥ ४१ ॥ कहीं १४ कपूर १५ कुंकुम १६ कस्तूरी रक्खीहुई है १७ घेला १८ सेवती के गुच्छों पर भ्रमर चढते हैं ॥ ४२ ॥ १९ मुक्ति में प्रीति

पंच ५ पागी ॥

जुरे अग्निहोत्री जुहू अग्नि अंचैं१५०, सुधी के कहीं नव्य अन्वाष्टि संचैं१५१ ॥ ४३ ॥

कहीं आल१ जंगाल२ सिंदूर३ केरे१५२, कहीं हेम१ हीरे २ सके रासि हेरे१५३ ॥

कहा नील३ गारुत्मती ४ चैं प्रकासैं १५४, भले पद्मरागा५ख्य मुक्ता६ख्य भासैं१५५ ॥ ४४ ॥

प्रवाली१७ रसोनी१८ कहीं रंग पट्टै१५६, कहीं पुष्पवंता२ऽऽदिकां तां२ त३।९।४।१०कट्टै१५७ ॥

कहीं १५८ तैल १ छीरा २ दि लौ स्फाटिका ५।११।६।१२ऽऽख्या, सगोमेद७।१३ इत्यादि केही समाऽऽख्या१५९ ॥४५॥

सुहाये कहीं सिठ्ठ बानिज्य साजैं१६०, रचे चे कहीं हुंन्न१ निष्कौं२ दि राजैं१६१ ॥

कहीं लै कला१[12] नीवि २[13] बित्तैं बढावैं १६२, प्रमा क्रय१ क्रय्या२ऽऽवली क्वापि पावैं१६३ ॥ ४६ ॥

कहीं बोहरे१ क्वापि छोरैं१६४ धुरेरकौं, कहीं के१न रक्खैं १६५ स्वधौं[16] बाहुरेरकौं ॥

करनेवाले ब्रह्मचारी फिरते हैं १ होम की अग्नि का पूजन करते हैं २ कितने ही श्रेष्ठ बुद्धिवाले ३ नवीन विलक्षण यज्ञ का संचय करते हैं ॥ ४३ ॥ ४ पन्ना १५ माणक नामक ॥ ४४ ॥ मूँगा और ६ लहसनियां ७ पुखराज आदि सुन्दर ८ इत्यादि कितने ही नामवाले रत्नों से ॥ ४५ ॥ शोभायमान ९ सेठ वणज करते हैं १०कहीं पर संचय किये हुए मोहर और ११ रुपये "निष्कः व्यवहाररूपके" इतिशब्दार्थचिन्तामणिः॥ आदि शोभा देते हैं, कहीं पर १२ व्याज (सूद) लेकर १३ मूलधन को बढाते हैं और कहीं पर मोल लेने और १४ बेचने की वस्तुओं की पंक्तियां शोभा पाती हैं ॥ ४६ ॥ कितने ही बहोरे धुरको १५सूद छोडते हैं और कहीं पर कितनेही बहोरे १६अपनी और अधिक

परार्द्ध१००००००००००००००००००ऽऽदिके गराय गोये प्रकासैं१६६,
कहीं श्रेढि१ त्रैरगशिकीर२ भंति भासैं१६७ ॥ ४७ ॥
कहीं चैल चो४ भेद चै चैलकेता, जथा हट्टसोभा रचैं१६८लाभ जेता
उर्मा१ पंट्ट२ कार्पास३ रोमा४दि वारे, बनैं यों चतुर्द्धा४ कहीं के
बिथारे १६९ ॥ ४८ ॥
लसैं१७० आम्र१ मोचा २ कहीं द्वार लग्गे, प्रभा दारिमी३ निंबु४
नारंग५ पग्गे१७१ ॥
कहीं लांगली ६ पूर्ग ७ एंला८ निकाईं १७२, छजै १७३ छत्रिका
गोस्तनी९ लोंग१० छाईं ॥ ४९ ॥
झरैं१७४केकहींसौरभीबिंदु१झोनैं,भरैं१७५केकहींत्तोदंश्रामोदभौनैं
दुरघौं रूचपपै द्रव्य१ यों के उतारैं१७६, कहीं गोखतैं पुष्प२ के
डौनैं डारैं१७७ ॥ ५० ॥
रहे रीझि वारे१७८ कहीं लोन१ राई२, कहीं बिक्खिके बिंद बंटैं
१७९ बधाई ॥
लसैं१८० मग्ग गेरे दही१ दुब्ब२ लाजा३, रिझावैं१८१ सिंचे सौर
भी बारि४ राजा ॥ ५१ ॥

आये हुए धनको पीछा देते हैं १ परार्ध आदि छिपी हुई गिनती का प्रकाश करते हैं २ लीलावती में कहा हुआ गणित विशेष ॥ ४७ ॥ ३ वस्त्र मोल लेने वाले चार भांति के वस्त्रों का संचय करके दुकानों की शोभा बढाते हैं और उनसे होनेवाले जितने लाभ हैं वे रचते हैं, ये चार प्रकार के वस्त्र ४ सण ५ रेसम, सूत और ऊनके बनते हैं जिनको फैलायेहुए हैं ॥ ४८ ॥ कहीं द्वार पर लगेहुए सुन्दर ६ केल ७ नारियल ८ सुपारी ९ इलायची १० द्राक्ष छाये हुए शोभा देते हैं ॥ ४९ ॥ कहीं पर सुगंधिवाले बारीक बारीक बुंद गिरते हैं और कहीं दूर जानेवाली १२ सुगन्धि के भीगे हुए ११ चूर्ण भरते हैं सो दोनों ओर से इसप्रकार के द्रव्य १३ दुल्लह पर डालते हैं १४ फूलों के पुड़े डालते हैं ॥ ५० ॥ १५ पके हुए चावल "दही, दूध और पके हुए चावलों का डालना मंगलीक मानते हैं" और सुगंधि के जल से सींचकर राजा को प्रसन्न

बिरचो भूप बुंदीपुरी इक्खि ऐसी, कहीजाइ जोलाइ सामस्त्य कैसी
बिधा बैदिकी१ लौकिकी२योग्य लद्धी, सबै भूप जे प्रीतिकी रीति सद्धी ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

परिकर द्विरदपतोलितैं, सबिधि भिन्न हुव सर्ब ॥
जंपति२ अंचलपर्ब जुत, पेठे सद्धत पर्ब ॥ ५३ ॥
उपयम देव१न अर्चि इम, बलि गुरु२जन पय बंदि ॥
अंचल छुटि निज निज अयन, आये उभय२ अनंदि॥५४॥
निज परिकर सब हित निरत, बलि प्रासाद बुलाइ ॥
कवि१बुध२भट३सचिवा४दिकन, खिन लिय सिक्खखुलाइ५५
करि भोजन नर्तन क्रिया, लखि कछुकाल ललाम ॥
इम अवसर सद्धिय सयन, राजराज प्रभु राम२०१४ ॥५६॥
जग्गि समय सूचित जथा, नित्य१ असन२ करि नाह ॥
बुध१कवि२भट३सचिव४नबिलासि, लिय संसद रसलाह५७

॥ षट्पात् ॥

सुनि१लखि२संसद सुपहु काव्य१ नर्तन२ आदिक क्रम ॥
राय[10] बिबिध दै रीझ राय[11] बढि चाय मनोरम ॥
सभा अनंतर सबन कानि लोकन व्यवहित[12] करि ॥

करते हैं ॥ ५१ ॥ १ उस सब पुरी का वर्णन कैसे किया जासकता है "यहां लेखक दोष से सामर्थ्य के स्थान में सामस्त्य होजाना पाया जाता है जिसका अर्थ है कि सब पुरी का वर्णन किस शक्ति से कहा जावै अर्थात् इस के वर्णन की शक्ति नहीं है" ॥ ५२ ॥ परगह के लोग २ हाथीपोल से जुदे हुए ३ पति पत्नी दोनों ४ वस्त्र के ग गठजोड़ सहित ५ समय साधकर भीतर प्रवेश ॥ ५३ ॥ ६ व्याह के देवताओं का पूजन करके ॥ ५४ ॥ फिर हित में ७ नियुक्त होकर अपनी परगह के सब लोगों को महल में बुलाकर ८पंडित ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ९ सभा के रस का लाभ लिया ॥ ५७ ॥ १० धन ११ राजा को सुन्दर उत्साह बढकर ५ अदब (संकोच) वाले लोगों को दूर करके

सकलवयस्यन[1] सहित सकल गुन पठन समुद्धारि ॥
बलि इम प्रदोस संध्या३विरचि रत्ति कछुक सेवयस्य[2] रहि॥
लहि असन जाइ जननी निलय[3] जोग्यसयन बिलसैं जुगरहि
इत धात्रेय[4] अमात्य कृष्णाराम सु बढते क्रम ॥
रचि सिवनाथ१रु अमृतराम२२ संम्मद[5] संभव सम ॥
पंतिन सह आपान[6]१असन२ बिहरन३ आखेट४न ॥
सर१उपवन२ प्रासाद३ सु[7]प दिखवन भुकाइ मन ॥
सब स्वीय अधिप परिकर सहित प्राघुन[7] गन इम घस्र प्रति
बिलसन बढाइ रक्खे विविध कति मासन करि लाड कति॥५९॥
रूपराम१ सरदार२ बिप्र१ ऊरुज२ अमात्य बिय२ ॥
स्वसुता[10] दायज सत्थ देय पैंहु[11] मान संग दिय ॥
तिनहिं बुल्लि धात्रेय सुमति सिवनाथ१अमृत२सह ॥
किय पट्टा लिपि[12] कलित महारानिय हित अति मह ॥
पुर हिंडउली१नवगाम२ पुनि इत पुर बच्छोला३दि इत ॥
कर अयुत पंच५००००सह ग्राम कतिसचिवनतिन्हअप्पियसहित६०
उन मंडिय तह अमल पट्ट रानिय१ सासन पागि ॥
इत प्राघुन[13] गन अखिल लोक मारव[14] सम्मद लागि ॥
प्रभु भट१ सचिव२न प्रथित लाड अतिसीम लडाये ॥
कतिक पंच्छ[15] इम कहि प्रीति मरुपुर[16] पहुँचाये ॥
इत भूप सकल गुन सक्ष्प सन उन्नति लहि प्रत्यह[17] अधिक

१समान अवस्थावालों सहित२अपनी समान अवस्थावाले३माता के स्थान में ॥५८॥४धायभाई ५हर्ष उत्पन्न होने से ६पानगोष्टी (मलपाल)७पाहुनों के समूह को ८ प्रतिदिन ॥ ५९ ॥ ९ वैश्य १० अपनी पुत्री के साथ ११राजा मानसिंह ने दहेज में भेजे थे १२पट्टा लिखकर विदित किया ॥६०॥ सब १३पाहुने लोग १४ मारवाड़ियों ने १५ कितने ही पक्ष ऐसे निकालकर १६ जोधपुर में १७ प्रतिदिन

बुधपन वयस्य[1] गनतेँहु बढि सब पटु हुव मति साहसिक ६१
करन अग्घ बुध३ कविन२ बहुत हित पटु३न बिवेचन ॥
स्वगुन सिद्ध भट४ सचिव५ सद्धि हित रस अभिसेचन ॥
माधव[2]२ इम गत सहत शुक्र[3]३ आगत समाज सह ॥
उचित समय उपहारें विभव विलसत दिनदुल्लह ॥
प्रति जन वदान्य रीझत मगुन मुष्ट सगुन मन घन मुदित
इम अस्थिपाल अन्वय अरुन उदय आदि बुंदिय उदित ६२

घनाक्षरी॥ सेखाउत्त स्यामसिंह झुंझुन नगर नाह,
कूरम कुहकं[8] मुख्य भ्रात१ रु भतीज मारि ॥
आप पाइ पत्तन बसाऊ गल अंगमि रु,
धिग्[9] चित धीठ भयो धूतन धुराहिँ धारि ॥
ही गुलाबकुमारि[10][11]२ तनूजा तास ज्ञात गुन,
सगपन ताको कर्यो प्रभुसौं ह्रित पसारि ॥
जोधपुर जाइ बर बिदाले सिधारे सुनि,
बुल्ले गृह ब्याहिबे बडे जब मेह बिथारि ॥ ६३ ॥
तब शुचि[12]४ शुक्ल६ मध्य२ रिक्ता९ पैं सुमह तानि,
ब्याह पुब्ब[13]१ बरने सबै बिधि सधाइ सिवँ[14] ॥
केदारेस थान ढिग श्रीजित रचित कम्र[15],
आन्हय सिकार अट्ट[16]१ निवासि सुरेसँ[17] इव ॥

---

१ समान अवस्थावालों से ॥ ६१ ॥ २ वैशाख काल गया ३ ज्येष्ठ आते ही ४ सामग्री ५ अपने गुणों से सब के मन चुराकर ६ अस्थिपाल कुल का सूर्य ७ बुंदी रूपी उदयाचल पर उदय हुआ ॥ ६२ ॥ ८ ठग है ने ९ धिक्कार योग्य १० गुणों को जाननेवाली उसकी पुत्री का ११ ब्याहकर ॥ ६३ ॥ १२ आषाढ सुदि १३ पहिले विवाह में वर्णन किये हुए सब १४ मांगलिक कार्य १५ सुन्दर १६ जिसका सिकारबुरज नाम है वहां निवास था १७ इन्द्रकी भांति

कज्ज बिधि साधि प्रात बहुरि बिधेय करि,
*चक्र लै चलत देखिबेकों जुरे देव †दिव ॥
थैलिन खुलाइ ताही थानसौं ‡बसुन लुट्टि,
सिंचे कबि कृष्णराम सुमति महासचिव ॥ ६४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ रामसिंह चरित्रे विहितयोधपुरविवाहरामसिंहबुन्दीपुरप्रवेशसमयबुन्दीवर्णन सेखावाटीबिसाऊविवाहार्थप्रयाणवर्णनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ आर्या ॥

बिधि सब साहि बिबेकी, किय सिव केदार पैंत दल पहिलो१ ॥
कबिजन घन२ जनु केकी३, हासि सम्मदै रीझ लैन लगे ॥ १ ॥
बेतालः ॥ केदार ईस निकेत४ प्रभु कहँ सब बिधेय सधाइ ॥
धात्रेय कृष्ण अमात्य धुरधर मह५ अमेय मचाइ॥
पौगंड६ जात किसोर७ प्रकटत अर्ह सब उपहार॥
बय तुल्लि लुल्लि दिखाइ बहु बिधि देय दैन उदार ॥ २ ॥

---

* सेना लेकर चलते समय † आकाश में ‡ धन बांटकर॥६४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में रामसिंह के जोधपुर विवाह करके पीछे बुंदी में प्रवेश होते समय बुन्दी के वर्णन का और सेखावाटी में बसाऊ विवाह करने के अर्थ प्रयाण करने के वर्णन का सातवां ७मयूख समाप्त हुआ॥७॥ और आदि से तीन सौ उनसठ ३६९ मयूख हुए ॥

१ सेना का पहला पड़ाव किया २ मेघ से मयूरों के ३समान कविलोग हर्ष युक्त होकर रीझ लेने लगे ॥१॥ ४केदारेश्वर नामक शिव के स्थान में ५प्रमाण उत्सव करके, पौगण्ड अवस्था (पांच वर्ष से लेकर दश वर्षकी अवस्था का नाम पौगण्डहै)जाकर७किशोर अवस्था(दश वर्षसे लेकर सोलह वर्ष पर्यन्तकी अव स्थाका नाम किशोरहै)के प्रकटहोने पर७पूजनीय तथा योग्य सामग्रीकरके दहान

बहुरीति इम बसु बिंद बुद्धिन पात्र जन मन पूरि ॥
रचि भा द्वितीय२बिबाह बिरचन सज्जहुव सब सूरि ॥
बुध बिप्र१ सूत[2]२ रु मागध[3]३न बंज सुमति बंदि[5]४न सत्य ॥
इह दै अनेक बिधान उल्लसि इक्क इक्कहिं अत्थ ॥ ३ ॥
निज रं[6]ठ जोलग संक्रमैं नृप चाहि तोलग चित्र ॥
पिक्खाइ भाइ अनेक पाँ[7]टव मान चाँटव मित्र ॥
बुंदीपुरी सन त्याग बंटत संक्रम्यों पहु सूरि ॥
मग लोनहारन तर्कुकन मचि भीर जस रव भूरि ॥ ४ ॥
जसलेत देत अनेक बिध वसु संक्रमें तिम जन्य ॥
इन१ भिदा ई[10]न२ छत्र१ चामर२ अं[11]क अंकन अन्य ।
सब वस्त्र१बाहन२भूखना३दिन और रीति समान ॥
करते चले प्रभु ब्याह कौतुक कित्ति कानन कान ॥ ५ ॥
जे सूत१ मागध२ बंदि३ लै बं[12]सु१ सिक्ख२ गेहन जात ॥
उनतैं अतीव प्रसार औरन अं[13]ध्वमैं अधिकात ॥
नमि सेस जाचक जीत बाचक पंथ होत निहाल ॥
प्रतिपाँ[14]त यौं बं[15]सुव्रात पूरन संक्रम्यौं छितिपाल ॥ ६ ॥
[16]मंय१ [17]के चले हय२ के चले गय३ के चले बय मत्त ॥
पहिलैं कहे मं[18]य१ अंग उन्नत जंगली जयपत्त ॥

॥ २ ॥ १ पण्डित २ चारण ३ बड़वा भाट ५ स्तुति करनेवाले भाटों से ४ चले ॥ ३ ॥ ६ अपने राष्ट्र (राज्य में चले तहां तक ७ चतुराई से मान और मित्रता के प्रिय वचन बोलकर, याचकों की भीड़ होकर बड़ा बहुत ९ शब्द हुआ ॥ ४ ॥ इन बरातवालों की भिन्नता दिखाने के कारण १० राजा छत्र, चमरों के ११ चिन्हों से चिन्हित रहा ॥ ५ ॥ १२ धन लेकर १३ मार्ग में १४ मुकाम मुकाम प्रति १५ धन का समूह देता हुआ ॥ ६ ॥ मैं मस्त १७ कितने ही १८ऊंट, घोड़े और हाथी चले जिनमें प्रथम कहेहुए शरीरवाले जंगल (बीकानेर के) देशके पैदाहुए जय को प्राप्त करानेवाले १८

कतिबेग पूर१ चलाक बासर इक्क१में सत१००कोस ॥
परिविष्ट दुंदुभि सिष्ट मस्तक छच्छदे सिरपोस ॥ ७ ॥
जुगर कन्न बायन बाह पावन छन्न जेवर जाल ॥
थल उच्च१ नीच२हु नाँ ढरैं जिनपैं भरे जलथाल ॥
गोधेर आनन तिक्खता गुन पीत अंजलि अंभ ॥
थकिबो न जानत ढानँ तानत बाहु देउल थंभ ॥ ८ ॥
आरूढ अंक लगाइ मस्तक जाइ बान उडान ॥
मिलि अग्गि सोर घने चले जनु बान इक१ दिस मान ॥
मग सूचनी ललि बाहु बज्जत तीर घुग्घरमाल ॥
बहु दूर जानत जावते तिन्ह बेग धाव बिसाल ॥९॥
लघु लूम संहित यों लसैं परि पट्ट रज्जुव पास ॥
अटक्यो समीर कि ताहि ऐंचत अध्व पहुँचन आस ॥

वेग से पूर्ण १ एक दिन में सौ कोस चलनेवाले जिनकी पीठ पर नगारे २ बन्धे हुए और मस्तक ३ श्रेष्ट शिरपोषों से ४ छायेहुए ॥ ७ ॥ जिनके दोनों ५ छोटे कान प्रशंसा पाने योग्य जेवर से ढके हुए, जिन ऊंटों पर ऊंचे नीचे स्थलों पर भी थाल में भराहुआ जल नहीं गिरता ६ जो गोह (गोहिली) के समान तीखे मुखके गुण से अन्जली (धोवा तथा खुवाचिया) में पानी पी लेते हैं ७ जो ढाण (ऊंट की शीघ्र चाल विशेष) को फैलाकर थकना नहीं जानते वे मंदिर के थंभों के समान भुजोंवाले ॥ ८ ॥ ८ सवार की गोद में मस्तक लगाकर तीर के समान उडे जाते हैं और जैसे बारूद का भराहुआ बाण ९ अग्नि के मिलने से एक दिशा में जावे तैसे जाते हैं मार्ग की सूचना करनेवाली १० ललित (सुन्दर) घूघरमाल भुजों में ११ ऊंचे स्वर से बजती है, वे ऊँट विशाल वेग की दोड़ से जाते हुए दूर जाकर नजर आते हैं ॥९॥ १३रेसम की डोरी से बंधी हुई छोटी १२ लूम (तंग के पास बंधा हुआ रेसम या ऊन का गुच्छा) ऐसी शोभा देती है कि मानों ऊंट को १५ मार्ग में पहुँचने की आशा से रुका हुआ १४ पवन उसको खैंचता है [ऊंट जब वेग से जाता है तब लूम पीछे को रहती जाती है सो मानों ऊंटसे पीछे रहजानेवाला पवन उसको पकड़कर उसके सहारे से ऊंटकी बराबर होना चाहता है इसीसे वह लूम पीछे रहती है] भूमि पर ऊंटके चरणों के चिन्ह होते जाते हैं सो मानों अपनी कोमल और छोटी

मृदु ह्रस्व पायतलीन मंडत छोनि सप्पन छाप ॥
अति लोल बाजिन लज्ज आनत आवजाव अमाप ॥ १० ॥
उपविष्ट इङ्कर१ बाहु२ अंगन मध्य के अवकास ॥
मूस धावते कढिजाइ सूलिक मोक संदुक भास ॥
लगि पट्ट लूम दुपास लंबित सुंड के गजगाह ॥
प्रतिपास पव्वयकै कि रंजित बारि च्यारि४ प्रवाह ॥ ११ ॥
मढि तोर१ पिट्ठि पलान दारव२ कृत्ति३ कंबल४ मेल ॥
ककुदंग लो बिच जे कसे मखतूल तंगन मेल ॥
कृत कांति रांजत नक्कईलन राजती कंटि कान ॥
पगि बंध पट्ट बिचित्र रस्सिन जे इचे अतिमान ॥ १२ ॥
जमेल१ नमेल२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गन घंटिका बजि तोर हार१ हमेल२ शृंखल३ ग्रीव ॥

१पगतलियों से २ भूमि को नापने की छाप लगाना है कि जहां तक की भूमि नापली गई, वे ऊंट अमाप आवजावसे अत्यन्त ३चपल घोड़ों को लज्जित करते हैं ॥ १० ॥ ४ आसण में और हैंडर व भुजों के बीच में जिनके अवकाश (छेटी) है अर्थात् जिनकी पीठ के आसण लम्बे और भुजों व हैंडर के बीचका भाग छेटा वाला है और जैसे ७ बिलको छोड़कर ६ खरगोस निकसे तैसे शोभायमान होकर ५ शीघ्र दौड़ते हुए निकलजाते हैं ६ जिनकी पीठ पर दोनों ओर लटकती हुई ८ रेसम की लूमें और कितने ही १० सुंडेहुए गजगाह लटकते हैं सो मानों ११ पर्वत के दोनों ओर जल का प्रवाह गिरता है ॥ ११ ॥ १३ काठ १४ कोमल चर्म और कंबल के मेल से बने हुए १२ चांदी के पलानों से जिनकी पीठ ढकीहुई है, वे पलान १५ ढुंभी (पोरों के ऊपर के मांसपिंड) को बीच में लेकर १६ रेसम के तंगों के मिलाप के साथ कसे हुए हैं और नाकों में १७ चांदी की १८ नकेलें (मुरचाणें) और कानों में चांदी की १९ कड़ियां शोभा देती हैं, वे बड़े पलवान (ऊंट) २० रेसम की विचित्र रस्सियों से कसेहुए जाते हैं ॥ १२ ॥ गले में २२ उत्तरदार से २१ घुघरू बजते हैं और गरदन में हार, २३ हमेल (हारविशेष) और सांकलियां बजतीं

सह भेक१ झिल्लिन जोर सोर कि ओरओर अतीव ॥
जिनपैं सु बाजिन[2]के चढाकनके लुभे मन जाइ ॥
[3]छम हाल कौतुक काल चाल अनेक चित्रन छाइ ॥ १३ ॥
[4]पृथुभाल१ वेग२ बिसाल उच्छ्रित अक्षिकूट३ प्रदेस ॥
बतरात गात दिपात वातन [6]बाततेंहु बिसेस ॥
बलमैं क्रमेलक यों चले कति जान छुट्टत बान ॥
बिलसंत बाहन दबि बाहन भुम्मि१ व्योम२ बिमान ॥१४॥
कति भारबाहक धार लाहक पार गाहक पंथ ॥
नहि लारबाहक [12]औरनाहक जे सहैं गति ग्रंथ ॥
मुख मध्य१ [13]मेल्लन फुल्ल [14]गल्लन आनि बाह्य२ [15]प्रतीक ॥
घटना कवर्ग१ [16]चतुर्थ४की घन ठानि गज्जत ठीक ॥ १५ ॥
धवली करैं [17]अवली अटे धर लुट्टि फेनन [18]वार ॥

हैं सो मानों चारों ओर १ मैंडक और झिल्लियों का अत्यन्त कोलाहल होता है, जिन ऊंटों पर चढनेको२घोड़ों पर चढनेवालों के मनजाते हैं ३उनकी समर्थ हाल में क्रीड़ा के समय की चाल से अनेक आश्चर्य छाते (होते) हैं ॥ १३ ॥ ४ जिनके बड़े ललाट, बड़ा वेग और ५ नेत्रों के गोलों का स्थान ऊंचा उठा हुआ है उनके शरीर बतलाने से शोभा देते हैं (मस्त ऊंट को चलाने से वह गर्जना किया करता है) और चलने में ६ पवन से भी विशेष हैं "वा गतिगंधनयोः" इस धातु से वात शब्द का अर्थ चलना है. उस सेना में कितने ही ७ ऊंट ऐसे चले ८ मानों बाण छूटा, वे ऊंट भूमि के वाहनों को और आकाश के विमानों को दबाकर विशेष शोभायमान हुए ॥ १४ ॥ उन ऊंटों में कितने ही ९ लाभ धारण करनेवाले भारको उठानेवाले और मार्ग के पार होने के १० ग्राहकी ११ जिनके साथ में कोई नहीं चलसका, वे चलने में छुवे (लगे) हुए १२ वृथा प्रेरणा को नहीं सहन करते और मुख में १३ दांतोंके भीतर १४ गालोंको फुलाकर १५ शरीरके अवयव (गालों के एक हिस्से) को मुखके बाहर लाकर कवर्ग के १६चौथे अक्षर 'घ' की घटना कर के गाजते हैं(घ घ शब्द करके, और उस अंगका आकार भाग घ के समानही होता है)॥१५॥ जिस भूमि में उन ऊंटों की१७पंक्ति चलती है उसको मुखके झागों के१८समूह

अनखे लगैं मग उट्ठि अप्पहि पिट्ठि धारि पहार ॥
जिनके दुपास कसे सलीतन भार हिंडत जाइ ॥
असुमंत[3] तोलत अल्प अद्रिन ज्यों तुला अधिकाइ ॥ १६ ॥
उँरुचार[4]में गुरुभार उच्छलि यों लगैं प्रतिअंग ॥
करि१ कुम्भ२ पच्छन लै तुलै परखैं कि राजपतंग ॥
अंपटी१ कनात२ बितान३ थूल४रु कोथिका५ चिकद्व आदि
विनु[10] खिद्धि पिट्ठि वहैं रहैं रय नाद उद्धत नादि ॥ १७ ॥
लहि मंच१ आदि१ सैमूहनी२ लग२ अध्व[13]के उपहार ॥
लदयाइ सर्ब अँखर्ब गर्ब तजैन स्वामिन लार ॥
जिन संगको खिंनें कुंचके तिनकोहुँ क्यों रहिजाइ ॥
बहिजाइ अतिभर१ श्रांतपत्तर२नँ ततो बाहय बनाइ ॥१८॥
जिनतैं बसैं पुर रत्ति पँति सु प्रातलों उठिजाँहिं ॥
बासि सोहिसोहि बहोरि मंगल होत जंगलमाँहिं ॥

की वर्षा करके श्वेत कर देते हैं २ पीठके ऊपर पर्वत रूपी बोझको धारण करके १ क्रोधित होकर आपसेआप उठकर मार्ग लगजाते हैं, उन ऊंटों के दोनों ओर कसे हुए सलीतों का भार हींदता जाता है सो मानों ३ प्राण धारण करनेवाला तराजू पर्वतों को तोलता है ॥ १६ ॥ ४ लंबी (शीघ्र) चाल में उनके ऊपर लदा हुआ बड़ा भार उछलकर ऐसा शोभा देता है मानों हाथी और कच्छपको अपनी पांखों में लेकर ५ पक्षिराज (गरुड़) उनकी परीक्षा करता है [वाल्मीकि रामायण में यह एक कथा है कि लड़ते हुए एक हाथी और कछुएको, गरुड़ अपनी पांखों में लेकर उड़गया था] ६ पड़दा ७ ७ चंदवा (शामियाना) ८ बड़ा डेरा ९ छोटा डेरा आदि को १० भार उठाने के बिना ही क्लेश के उस भार को पीठ पर उठाकर वेग में उद्धत ११शब्द करते रहते हैं ॥ १७ ॥ मांचा (पिलंग) से आदि लेकर १२ बुहारी तक १३ मार्ग की सामग्री १४ बड़ा गर्व करते हैं १५ कूंच करने के समय १६ तृण भी बाकी पड़ा नहीं रहता१७वे ऊंट श्रम युक्त होने पर भी अत्यन्त भारको उठाकर बाहर नगर बनादेते हैं ॥ १८ ॥ १८ रात्रि का पड़ाव होने पर जिनसे पुर बस जाता है और प्रभात तक वह पुर उठजाता है १९ वहीं पर बारंबार बस कर

बहु यों चले मय१नारबाह१ रु भारबाह२ दुर भेद ॥
पहु त्यों चले हय२ मानके पवमानके छकछेद ॥१९॥
घट१ अंग२ बंग३ कलिंग४ गुर्जर५ कच्छ६ जंगल७धाम ॥
कंबोज८बाल्हिक९पारसीक१० बनायु११ भवँ जवकाम ॥
तातार१२चीन१३तुखार१४ताजिक१५अर्ब१६रूम१७इरान१८
खुरसान१९रूस२०फिरंग२१खेत भये नये बय भान॥२०॥
जिनतैं प्रयोजन भिन्नहै जयधार पंचक५धाव ॥
आखेट१ आहव२ अद्रि३ बन४ मग५ साध्य सिद्धिप्रभाव ॥
मुख वेंजू गुंफित केसरावलि भिन्न भिन्न समान ॥
इक है अधोगत लंब अहि मनिमंत बहुफन मान ॥२१॥
समान१ नमान२ अंत्यानुप्रासः १॥
जिनके प्रफुल्ल मुरे बहिर्नुत नासिकाग्र जनात ॥
मनु ह्रीत है जित ताहिमैं घुसिजात बात नमात ॥
क्रम पत्र तिच्छन कर्तरी कि करैं गंतागत कर्ण ॥
मनबेग कट्टत जानि सत्रुहिं ठानि सत्व मंहर्ण ॥२२॥
नुत पाइ नाइ हयच्छटा कृत जेरबंध निरत्थ ॥
सिथिलत्व धारत सिंजनी जनु उत्तरे धनु सत्थ ॥
जर गुंफ नेत्र पिधानिका तिरहरी लसैं छवि जुत्त ॥

जगत में मंगल होजाता है, इस प्रकार के १मनुष्यों को और भार को लेजाने वाले दो तरह के ऊंट चले और इसी प्रकार पवनके घमंडको काटनेवाले राजा के २ बलवान घोड़े चले ॥ १९ ॥ ३ इन देशों के जन्मे हुए ॥ २० ॥ ४ पांचों गतियों में जयको धारण करनेवाले ५ छोरों आदि से गुथी हुई केसवालियां ६ मणि युक्त बहुत से फणोंवाले सर्प के समान ॥२१॥ बाहर झुके और ७ फूलेहुए फुरणों के अग्रभाग जनाते हैं ८ लज्जित होकर ९ पवन नम्र होकर घुसता है १० तीखी करतणी के पानों के समान कान गतागत करते हैं ११ पराक्रम का समुद्र ॥ २२ ॥ स्तुति योग्य १२ कंधे को नमाकर १३ ढीलापन १४ जेरबंध रूपी प्रत्यंचा १५ नेत्रों के ढंकने का वस्त्र (छजाळी)

जवनीनके छिउकतैं करे जनु गेल्लकी हरि जुत्त ॥ २३ ॥
पाँवि गंड१ भंडरन भा करैं नत१ वृत्त२ गोधिं प्रदेस ॥
जयलेख पट्ट कि जानि जो उपदा धरैं मन एस ॥
जिन्ह हिट्ठ हिंदत जेबदै लरलूम मुत्तिप जाल ॥
मनु मूर्तही जव द्वार अर्थिन बद्ध बंदनमाल ॥ २४ ॥
बप जोर तोर मरोर मंडत मात खंधन पास ॥
छक्क जानि ख़ुम्मनकों भरैं बढि पारि प्रतिबल्ल छोम॥
जिन्ह पास पट्ट कुंसा लसैं भ्रकुटी भिरी अधिजीन ॥
खर पक्व आयस शृंखला सह लास्य आस्य खलीन॥ २
कलनों बिसाल कुलाल चक्र कि द्वैरहि पुट्ठन दोर ॥
अधिपिट्ठि सन्नतैं मध्य आसन जेब भासन जोर ॥
नतभाव यों सहजैं लसैं तस ज्यों दुरतंगन नैद्ध ॥
पसमीन पीन अधीन बैठक लीन जीन प्रबद्ध ॥ २६ ॥
बढि व्योम झंपत होत चामर नाचि साँचि बिसेस ॥
गति अच्छके गुनज्यों उडैं चउ४ पच्छके पतगेस ॥
चैल बेरैं नच्चत बेर नच्चत लुम्म भार चउक्क४॥

१ तीन पड़दों की ओट में २ शालिग्राम विष्णु सहित ॥ २३ ॥ कपोलों के ऊपर ३ हीरों के कलश और ४ ललाट के झुके हुए भाग पर भूषण का गोलाकार पत्र शोभा देता है सो मानों मनके वेग को जीतकर मन के भेट कियेहुए ५ विजय पत्र को धारण करते हैं, जिसके नीचे मोतियों की जाली शोभा देकर झूलती है सो मानों वेगने मूर्तिमान् होकर ७ याचकों के अर्थ बंदनमाल बांधा है ॥ २४ ॥ ८ गरदन बाथ में नहीं समाती ९ समर्थों को दुर्बल करके १० रेशम की बाग का मस्तक औंगा के ऊपर भिड़ाहुआ ११ पक्के लोहे की सांकलियां सहित १२ मुखमें नृत्य करती हुई लगाम ॥ २५ ॥ १४ कुम्भार के चाककी मोटाई की १३ गणना के समान जिनके दोनों पुट्ठोंका फैलाव १५पीठके ऊपर आसण का मध्यभाग झुकाहुआ१६बंधा हुआ ॥२६॥१७ विशेष वक्र होता है १८ चार पांखोंवाला गरुड़ उड़ता है २० नचने के समय चारों गजगाहों के भार सहित १९ चपल शरीर भी नचता है

मतजानि सिक्खत नच्चको जड एहु आनि मउक्क ॥ २७ ॥
प्रतिफाल केकि कलाप फुल्लन बालहस्त प्रसार ॥
फबि के रहे छबि के गहे बनि तेहु चामर फार ॥
खुर पक्क लोह कटाहसों खर यों भिरी खुरताल ॥
किमु सत्रुके सुत मंद१ कों तम२नैं ग्रस्यो ततकाल ॥२८॥
इम लग्गि अंघ्रि छुवैं इला जिम आग्गि दज्झत जात ॥
बलि होत त्यों चपलत्त्व निर्जित चंचला१ मन२ बात३ ॥
जित साथि सूचन ठहे मुरैं तित नांत्थि देर जनाइ ॥
जव मग्ग ठानत बग्गकों सिथिलत्त्व आनन जाइ ॥ २९ ॥
चपलत्व चंक्रमके चलैं चिरैं बातचक्र१ चलाव ॥
धरनी घुजावत धारि केंचन नागपेच२न धाव ॥
लासि के कुविंदन बान भान अटैं अटेरनि३ लेत ॥
बयपैं चढे जयपैं बढे कति भीक४ क्रम संमवेत ॥ ३० ॥
भरि फूलआदस ५ के१ तिरैं धर२ ज्यों फिरैं सर१ भंगर२ ॥
इम लै पटो६ कति ऐनैं श्रीसन दैन दीसन अंग ॥
कतिभ्कंप७ धारन लै तरारन जात बारन कुंहि ॥
जिन्ह बेग मारुत जोर हिठ्ठिहु दै महावत मुंहि ॥ ३१ ॥

१कथन किये हुए मंगलीक समय को लेकर मानों ये जड़ गजगाव भी नृत्य को सीखते हैं "यहां 'म'मंगलीकका और उक्त कथन किये हुए का वाचक है" ॥२७॥ २पलंग पलंग प्रति मयूर पुच्छके समान ३ बालका फूलता है ४चमरों के समूह के समान बनकर ५ पक्के लोहे की खुरताल, मानों अपने शत्रु (सूर्य) के पुत्र शनैश्चर को ६ राहुने पकड़ा है ॥ २८ ॥ ७ भूमिको चरण ऐसे छूते हैं ८पुनि चपलता में विद्युत्, मन और पवन पराजित होते हैं ९ देरी नहीं लगाते ॥ २९ ॥ पवन के गोटे (घघूलिये) के समान १० चपलता के कारण इधर उधर फिरते जाते हैं ११ कितने ही नागपेचों से दौड़ते हैं १२ जुलाहे [वस्त्र बुनने वाले] के तीर के समान अटेरने फिरते हैं १३ मिले हुए ॥ ३० ॥१४तूटे हुए तीर के समान फूलआदस फिर कर भूमि को तिरते हैं १५ हिरणों की १६शोभा से १७ हाथियों को कूदजाते हैं १८ जिनके पवन के जोर से महावत के नेत्र मिच

खुरतार मारन ग्रावं[1] बारन खेरि फार फुल्लिंग[2] ॥
प्रकटात तास प्रकास पास प्रदेस भासन पिंग[3] ॥
पखराल चातुरि देत के नखराल पातुरि पाय ॥
कति साचि कट्ठत तेगकीगति बेगकीगति काय ॥३२॥
पलटाति छाइ छटा करैं कुलटा[4] कँडच्छ प्रमान ॥
मिटिजाइ जो लखि मीन१ दर्पन बिंब२अंबक३ मान ॥
सननंकि नत्थत दंम्पलों[5] फबि फुल्लि प्रोथन स्वास ॥
कर कँन्ह[6] नत्थित याल जाल कि काल व्याल प्रकास३
प्रमान१कमान२अन्त्यानुप्रासः १ ॥
त्रिंककों[7] नमाइ कितेक उद्धत ऐंडे[8] अंग तुरंग ॥
कमनैत कित्ति गिनैं न जिन्ह जब रोकि रंकंकुरंग[9] ॥
हरते हिंडोरन हौंसदोरन और घोरन दाहि ॥
गति एक मंडत केक डौंकर[10] टेक मौंकर[11] गाहि ॥ ३४ ॥
इत१ की मुरी इत२ मानवे तन आन देतन अंखि ॥
पट्टु मग्ग अग्गल जान देतन प्रौंन[12] एतन पंखि ॥
मन सादिके[13] जित जात छुट्टि गुलाल मुट्ठिय मान ॥
उततैं तथा इत बाह अंचित आत बात उडान ॥ ३५ ॥

जाते हैं ॥ ३१ ॥ १पत्थरों के समूह से २अग्नि कणों का समूह खेरते हैं जिन कांति से समीर का प्रदेश ३ पीला दीखता है ॥ ३२ ॥ ४ कटाक्ष के समान नेत्रों का घमंड ५ जैसे नाथने के समय वृषभ (बैल) की नासिका बोलै फूलेहुए फुरणों में श्वास बोलता है ७ कृष्ण के हाथ से नाथेहुए का नाग के समान ॥ ३३ ॥ ८ कमर को झुकाकर ९ शरीर के घमंड से १०जिन वेग से दीन हिरणों को रोकने में कमनैत कुछ कीर्ति नहीं गिनते ११ कू में हठ करके १२ अंगुरों को दबाते हैं ॥ ३४ ॥ शरीर के इधर से उधर मु में नेत्रों को भी नहीं आने देते अर्थात् उनका मुड़ना दीखता ही नहीं और चतुर घोड़े मार्ग में किसी को आगे नहीं जाने देते और पक्षियों के प्रा का १३ निसासा लेते हैं १४ जिधर सवार का मन जावे उधर ॥ ३५ ॥

विधि बग्ग[1] मोटॅन व्योम जात दिखात[2] ओटन बट्ट ॥
पटरी सहायक लौ टरी नटरी कि उद्धव[2] लट्ट ॥
जिन्ह भेट लग्गत फेट चकित केट[3] गे रहि जाइ ॥
जिनकी कटीपॅर[4] पै पटी पर जे छदित्व[5] जनाइ ॥ ३६ ॥
कति[6] लेत कच्छिय मोर मच्छिय वेर बरच्छिस[7] ग्राम ॥
प्रतिधाव आवत पाव जे धरि पाव चिन्हन धाम ॥
जुरिजात द्वैर कति ज्यौं कि संद्दिय[8] संग तक्किय[9] जीह ॥
जिन्ह लाह हान्त होइ आनंत अक्क[10] सक्क[11] हु ईह[12] ॥ ३७ ॥
बिसि चक्क संकट[13] जात बीथिन चॅक्क[14] संक्रम सिद्ध ॥
इम केक बॅट्ट[15] बिबेक ठकत छोनि छेकत इद्ध ॥
मृधमैं[16] मतंगन[17] पिट्ठि अंगन आनिकैं असवार ॥
हनि ते निषादिनै[18] बच्छ जे छुरिका बहावन हार ॥ ३८ ॥
क्रमके बढे जयके पढे भटभेरदै ततकाल ॥
सरकात जे रयके[19] चढे जयके चढे दृढसाल ॥
कति तोप गोलन संगकैं परखे स्वधावैं[20] प्रमान ॥

आकाश में जाते समय १ बाग मोड़ने में पक्षियों की भांति दीखते हैं २ मानों ऊपर को नटनी उलटती है ३ हाथी पीछे (नीचे) रह जाते हैं ४ शीघ्रता की दौड़ में जिनके चरण हाथियों की कमर पर ५ छायेहुए दीखते हैं ॥ ३६ ॥ ६ कितने ही घोड़े मच्छी के समान मुड़कर दो बरछियों के अंतर को फांदकर ७ विश्राम लेते हैं, प्रत्येक दौड़ में जहां चरण चलते हैं उन्हीं चिन्हों पर फिर चरण रखते हुए दौड़ते हैं और कितने ही घोड़े ऐसे जुड़जाते हैं जैसे ८ शाब्दिक (व्याकरणवाले) के साथ ९ तार्किक न्यायशास्त्रवाले की जिव्हा जुड़ जाती है और जिनके लाभ पर नम्र होकर सूर्य और ११ इन्द्र भी १२ इच्छा १० लाते हैं ॥ ३७ ॥ सेना की १३ सकड़ी गलियों में घुस कर १४ चकरी के समान फिरना सिद्ध करते हैं १५ मार्ग में विचार पूर्वक कूदकर बड़ी भूमि छेकते हैं १६ युद्ध में १७ हाथियों की पीठ पर १८ हाथियों के सवारों की छाती में ॥ ३८ ॥ १९ वेग के २० अपने दौड़ने का प्रमाण

उरखे बढ़ैं करके गढ़ैं सिथिलत्व संक्रम हान ॥ ३९ ॥
सित१ के उडैं जिम सूत२ नालन ग्राव पावक संग ॥
हिमबालुका३ जित आलुका किंमु ठहै अनावृत अंग ॥
मनि नील१ सच्छविके उडैं मिलवे कि व्योम२हि मित्र ॥
कति बालवायुज१ रंग क्रीडन पोन१ मित्र पवित्र ॥ ४० ॥
कति पद्मराग१ सराग भिटन ज्यों रजोगुन२ कज्ज ॥
सुरराज१ सच्छवि केक पीवर२ सत्रु जीवल सज्ज ॥
द्विक२ वाजि रूप चउक्क२ सच्छनि सेलमित्र नदैन ॥
इम जे बिनीतै बिनीत क्रीडत अनेके क्रम अनै ॥ ४१ ॥
जलजात१ के कति बन्हिजात२ किते प्रभंजन जात३ ॥
द्विज१ आदि वर्ण त्रई३ जई पन तत्तई सुदिपात ॥

१उडनेमें शिथिलता की हानि करके ॥३९॥ नालों और २पत्थरोंके संगसे अग्नि उत्पन्न होकर कितने ही श्वेत रंग के घोड़े २ पारे के समान उडते हैं ४ उडने कपूर को जीतनेवाले ५ मानों एलवालुक (गन्धद्रव्य विशेष) को जीतनेवा बिना छिपेहुए शरीर से उड़ते हैं अर्थात् कपूर तो छिपाहुआ उड़ता है और दीखते हुए शरीर से उडते हैं ६ नीलम मणिके समान (नीले) रंगवाले घो मानों अपने मित्र आकाश से मिलने को उडते हैं "आकाश का रंगनीला जिस में मिलने को" कितने ही ७ वैडूर्य मणि के समान रंगवाले घोड़े मा अपने पवित्र मित्र पवन से क्रीड़ा करने को उडते हैं ॥ ४० ॥ कितने ही माणिक के रंगवाले (कुमैत) घोड़े अपने समान रंगवाले रजोगुण से मिलने कार्य करते हैं "रजोगुण का रंग लाल है" कितने ही पन्ना के समान रंगवा १०और शत्रुओं के जीव लेनेवाले ६ पीवर (पुष्ट, ताजा) सजे ११ शिक्षा पा हुए विशेष नम्र घोड़े १३ मार्ग में १२ हिरणों के क्रम से क्रीड़ा करते हैं ॥ ४१ १४ पवन(*) से उत्पन्न

(*)उम्मेदसिंह चरित्र से लेकर रामसिंह चरित्र के इस स्थान पर्यन्त युद्ध घोड़े हाथी संगीत और वेद आदि के प्रकरणों पर सविस्तर टीका कर दी गई परन्तु यहां से आगे इन्हीं प्रकरणों के वर्णन फिर आते हैं जिन पर सविस्तर व्याख्या करना पिष्टपेषण के सिवाय निरर्थक विस्तार बढता है इस कारण स्तार वाली टीका करना छोड़कर कठिन शब्दोंकी संक्षेपसे टिप्पणी ही करेंगे जिसको पाठक लोग त्रुटि समझें और फिर भी कोई विशेष वर्णन आवेगा वहां पर टीका कर दी जावेगी परन्त पीसेको नहीं पीसें

कति पंच५ मंगल अष्ट८ मंगल मल्लिकाक्ष३ कहाइ ॥
कति चक्रवाक४ कजाक मंडत मान पान न माइ॥ ४२ ॥
मनिबंध१ नाभि२ रु वच्छ३मस्तक४आस्य५गोधि६रु अंस७
त्रिक८ देस कंठ९ पिचंड१० रंध्र११ न भद भ्रम अवतंस ॥
आवर्त ए दसइक्क११ उत्तम भिन्न दै अभिधान ॥
तहँ इंद्र१ पद्म२ रु चक्रवर्तिक३ चिंतितार्थ प्रतान४ ॥ ४३ ॥
बिजया५ रुप शुक्ला६ रु चंदकोसक७ आदि जे इहिं बट्ट ॥
पगि पुष्प१ चंदन२ आज्य३ गंधक राज्य संधक पट्ट ॥
चउ४ दक्ख बारह१२ दंत१ सु स्थित रोचि मेचक चारु ॥
कठिनत्वमैं प्रभुता तनात बनात बज्जहिं कारु ॥ ४४ ॥
मुख१ मान सत्त रु बीस२७ अंगुल कान२ मान छ६ मान॥
सत१० मान अंगुल उच्च बिग्रह३ पिट्ठि४ जिन२४ अवसान
ललितत्व उल्लासि कंधरा५ बसुबेद४८ लंब ललाम ॥
तिहिं मान४लूम६रु मध्य७ल त्रय३०संख्य अंगुल ताम॥४५॥
इह च्यारि४ंदिग्घ१रु च्यारि४लोहित२च्यारि४सन्नत३ अंग ॥
सुभ च्यारि४ उन्नत४च्यारि४सुच्छम५च्यारि४ह्रस्व६ प्रसंग॥
इम भव्य आयत च्यारि४ आयत७ पाइ मंजु प्रतीक ॥
मन१ नैंन२ चोर मरोर मंडत ठानि संगति ठीक ॥ ४६ ॥
अब दिग्घ१ आदि गुनत्व अंगन सूचना क्रम आनि ॥
मुख१ बाहु२ केस३ निगाल४ देस प्रलंब१ता गुन मानि ॥
क्रम सेफ१ आठ२ रु जीह३ काकुद४ लोहितत्व लसावँ॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ मुख का प्रमाण (माप) २ छः अंगुल का माप है ३ शरीर ४ गरदन ५ वालछा ६ कमर "यहां घोड़े के शरीरके अवयवों के नामों के आगे अंक रक्खे हैं वही उन अंगोंके मापके प्रमाण(माप)के अंगुल हैं अर्थात् यह अंग इतने अंगुलों का होना उत्तम है" ॥ ४५ ॥ ७ अंग ॥ ४६ ॥ ८ गरदन. ये चार अंग लंबे ९ लिंग १० तालुवा. ये चार अंग लाल

भरि कच्छ१कुक्षि[२]२रु जानु३पिट्ठि४प्रतीक[३] सन्नत३भाव॥४७॥
सर्फ१ भालकोसिर२ प्रोथ३ पायु[४]४ समुन्नत४त्व समान ॥
पय१ कोप[६]२ बालधि३कर्ण[७]४सोभित सुच्छम५त्व प्रमान ॥
श्रुति१।२ ओ तदंतर[१०]२ वंस[११]३ आसन४ बाँमन[१२]६त्त्व प्रसिद्ध ॥
नलकीलि[१३]१ बंक्रि[१४]२ रु खंध३ आनन[१५]४ ए बिसंकट[१६]७इद्ध॥४८॥
कहुँ वै बिसेस जवान१ नच्चत जै बिसेस जनात ॥
कहुँ जोर दोर किसोर२ तंडव[१७] मोरतैं अधिकात ॥
स्वच्छंद[१८]पत्ति१न मान सत्ति२नैं मेल ठानत श्रेय ॥
इंभ[२०] मानलो डडिजान उद्ध[२१] दिपात सौं[२२]दिन देय ॥ ४९ ॥
प्रभु१को वयस्य[२३]२नैं दान१ मोदित२ दान सूचक२ पाइ ॥
असवार१कों बहि स्वामि२ अंतिक[२४] देय देत दिवाइ ॥
सुचि[२५]४मास घर्म प्रकासके कारि सेक बारि सुगंध ॥
प्रभुसों अभीष्ट[२६] प्रसाद पावत स्वामिधर्मित संध ॥ ५० ॥
क्रम[२७]१मैं गहे गुनहि[२८] २ रुहे अब[२९] गै३ लहे अवकास ॥
वरं[३०] वै१ लहे तन जै[३१] २ लहे रन रै३ लहे पन वास॥
संमवेत[३२] उत्तम खेत[३३] संभव जे तनै जस जूह ॥

१ कांख २ तार. ये चार ३ अंग झुके हुए ॥ ४७ ॥ ४ खुर ५ गुदा, ये उठे हुए ६ पगों के गाखे ७ बालछा ८ छोटे होवें ९ कान १० दोनों कानों के बीच का अंतर [छिटी] ११ बांसे की हड्डी १२ ये छोटे होवें १३नली १४मदद्द १५मुख इन का १६ लंबा होना उत्तम है ॥ ४८ ॥ १७ पछेरे नृत्य करते हैं १८ स्वतंत्र पैदलों का १९ घोड़ों से २० हाथी के बराबर २१ ऊपर २२ सवारों का ॥ ४९ ॥ २३समान अवस्थावालों२४समीप२५आषाढ मास की गरमी में२६वांछित ॥५०॥ २७ क्रम के अनुसार २८ घोड़ों के गुण कहे "इस छन्द के प्रारंभ में प्रथम ऊंटों फिर घोड़ों और जिस पीछे हाथियों का चलना कहा, उसी क्रम से प्रथम ऊंटों का वर्णन करके फिर घोड़ों का वर्णन किया" और अब २९ हाथियों के वर्णन ने अवकाश लिया ३० श्रेष्ठ अवस्थावाले ३१ शरीर से जय लेनेवाले ३२युद्ध में वेगवाले ३३ मिले हुए (साथ)

दिपती छटा जिनकी घटा घुमडी घटा कि दुरूह ॥ ५१ ॥
चलि भद्र१मंद२मृगा३रूप मिश्रक४ जात जात चउक्क४ ॥
श्रम अच्छके परपच्छके गेय जे करैं मय सुक्क ॥
मधुरोचि१ दंत२ बराइ१ जघन२ रु चाप१ रीढक१ मान ॥
द्युति१में हरित्व२ झरित्व सालि३सुगंध सोभित४दान५ ५२
मधुमास१ पिंगल२ नैन२ अो मृदु१ लोम२ अंग३ ललाम ॥
तिम तास आनन१ ओठ२ आकुद३ रोचि रोहित४ ताम ॥
सम१ वृत्त२ पीवर३ कंधरा४ कर५ मेघ१ बृंहित२ सद्द॥
व१बीस२०।२कै धृति१८।३नेम ७हैकर१सत्त७।२उच्छ्रय३हद्द॥५३॥
जिन्ह मत्थ१ सुत्तिय२ जुद्ध१में जय२ अो सदा१अनुकूल२॥
इम भद्र१ लच्छन सूचना अब मंद२ बोधन मूल ॥
गज१ कुक्खि२ पेचक३ थूल४लंबित५दिढि१इढि मृगेस२ ॥
पुनि कच्छ१वच्छ२उभैर कहे सिथिलत्व जुत्त३ प्रदेस ॥५४॥
मृग३कै बडे१हग२तत्थ ए बसु८ अंग१ खर्ब२ प्रमान ॥
कर१दंत२अंघ्रि३पिचंड४मोहन५कंठ६लोम७ रु कान८॥
सब चिन्ह१ सिाश्रित२ मिश्र४ जाति चउक्क४यौं गज३ सज्ज॥
गति मेघ१बिग्रह२बिज्जु१ भूखन२ गाढ गर्ज्जित१ सज्ज५५
अरि राहु१के सनि२केक सोदर ध्वांत३के धवअंग ॥
प्रसरे तमोगुनके कुटुंब कि अन्य जुग्म२ प्रसंग॥
पथ सेक[12] पूरत निर्झरैं बपुसौं प्रवृत्ति प्रवाह ॥
लसि ज्यौं मनोरम अद्रि जंगम[13] श्रोत संगम लाह ॥ ५६ ॥

[क]ठिनाई से तर्कना में आनेवाली ॥५१॥ शत्रुओं के १ मदको सुखानेवाले २ [हा]थी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ४ भद्र जाति के हाथी के ५मन्द जाति के हाथी के लक्षण [जा]नो ॥ ५४ ॥ ६ मृग जाति के हाथी के ७ मिश्र जाति के हाथी के ८ मेघ [के] समान शरीर औरद९बिजुली के समान भूषणोंवाले ॥५५॥१०शनैश्चर के सगे [भा]ई ११ अंधेरे के पति १२ मार्ग को सींचते हुए१३चलते हुए पर्वतों के ॥५६॥

तृनमान[1]दै मग तुंग[2] साखिन बाम दक्खिनर तोरि ॥
मनके बिचारत डिग्घ डारत मेरुशृंग[3] मरोरि ॥
घन कुंभिके[4] उर दाहघल्लत राह चल्लत रोहि ॥
जब ओघ मोघ जनाइ[5] सत्तिन ईस्थ[6] कत्तिन सोहि ॥ ५७ ॥
हठ दंभि के खिन थंभि दोरत ठ्है समग्र हरोल ॥
लवहू लगाल न सत्रु[7] सातनँ तोप गोलक लोल ॥
पय लंब लंगर पाइ जंग रचाइ चित्र[8] प्रतीति ॥
रद१ हेम[9] बंगर२ रोचि दै ससि१ सूर२[10] संगर रीति ॥ ५८ ॥
मचलै हमल्लन भू हलावत के चलावत मग्ग ॥
वट्ट[11]१ लेत उब्बट२ उज्झि के असु आनि अंकुस अग्ग॥
उलटान इच्छत अंभकेइभ[12] फौंकि सुंडिन उद्ध ॥
रप अँड उद्धर के कढै तिरछे उपाय अँरुद्ध[13] ॥ ५९ ॥
चल कोक बान१ रु भैचपा२ चिरखी चटच्चट चौंकि ॥
बहुधा बिचित्र[14] तनैं गैंतागत[15] बीति रीति बनैं कि ॥
छिरकैं पतग्गिन[16] के बली बमथून[17] ठपोम झपाइ ॥
उलटे[18] के बुठन जानि सिक्खत मेघ सेचक आइ ॥ ६० ॥
मचिजात अंदुक[19] अग्ग ऐंचत मग्ग१ जंगल मग्ग२ ॥
दिपि[20] बिंदुपंक्ति१ ज्यौं जरे बपु पद्मराग[21]२ उदग्ग ॥

१तृण के समान २ ऊंचे वृक्षों को ३ सुमेरु के शिखरों को मरोड़ना ४ऐरावत के उर में ५ घोड़ों के वेगको निरर्थक जनाकर ६ सुण्डों में तरवारें शोभायमान हैं ॥ ५७ ॥ ७ शत्रु के मारने में ८ आश्चर्य युक्त युद्ध करके ९ दांतों में सुवर्ण के बंगड़ १० सूर्य चन्द्रमा के युद्धकी रीति से ॥ ५८ ॥ ११उब्बट लगना छोडकर मार्ग लेते हैं १२ ऐरावतको उलटाना चाहते हैं १३ नहीं रुककर ॥ ५९ ॥ १४वि-चित्र आवजाव करके मानों १५ घोड़े की भांति बनते हैं १७ सुण्डके जलकणों से ढककर १६पक्षियों को छांटते हैं सो मानों काले मेघ उलटा १८जल बर्षाना सीखते हैं ॥ ६० ॥ १९ जञ्जीर खैंचने से २१माणिक्य के समान शरीर पर २० बिन्दुजाल (घीरघंर) जले हैं

कति मग्ग लग्ग रहैं करे बस अग्ग लग्ग *करेनु ॥
बहु मत्त१ †डाक लगे२ रहैं बहुगत्त१ बेधत ‡बेनुर ॥ ६१ ॥
जरि रत्न §सीस१सिरी सिरी२ उदयाद्रि ज्यौं उडुजाल ॥
त्रि२३पदी जरे त्रि३पदी तथापि चलैं ३अनर्गल चाल ॥
मचलैं महावत बीत पायत के घुमावत मत्थ ॥
जनु छुत्त ५अंबर छत्ति२कों बिखरात श्रो घसि जत्थ ॥६२॥
६मखतूल फूल१ कपाल२ मंडित जो अखंडित जोर ॥
मृधमल्ल खंडित खोम पंडित जोम तोम मरोर ॥
१०कैंर कुंडली करि लंब अंबर क्रुद्ध के फटकारि॥
बट खेत अंखिन देत पंखिन बेग बेते११ बिडारि ॥६३॥
जंगाल१ हिंगुलु२ताल१२३ जालित सीस१सुंडि२सुहाइ ॥
बुध१ अर२ जीव३ कि चारबक्रन १५आक्रम्यो सनि१ आइ ॥
१६कुंध रत्त१ पै गुड कांत १७आयस२ हेम३ रत्न४अमुल्ल ।
फबि ज्यौं रहे रवि१गोद मंद१८र२ रु चक्र१९३ लै उडु४फुल्ल ॥६४॥
बहुधा सुखासन१ पिट्ठि सोहत नद्ध पट्ट बैं२०रत्त ॥

---

* हथनियों को आगे करने से वश में होकर चलते हैं † क्रोध दिलानेवाले छोटे घाव लगने से ‡भालों से शरीर को बेधने से ॥ ६१ ॥ रत्नों से जड़ीहुई सिरी (मस्तक भूषण) § मस्तक से भिड़ीहुई है सो मानों सुमेरु पर्वत पर १ नक्षत्रों का समूह है २ तीनों पैर डगवेड़ा से बंधे हैं तोभी ३ विना रुकावटकी चाल से चलते हैं ४ महावत के हूलने को पाकर मस्तक घुमाते हैं सो मानों ५ आकाश रूपी छाते को मस्तक से घिसकर बिखेरते हैं ॥ ६२ ॥ ६ रेसमकी ७ युद्ध के मल्ल ८ बुरजों को गिराने में चतुर ९ बल के समूह की मरोड़वाले १० सुंड की कुण्डली करके ११ आकाश में पक्षियों के बेग को विखेर देते हैं ॥ ६३ ॥ १२ हरताल के समूह से रंगाहुआ मस्तक और सुंड शोभित हैं सो मानों बुध १३ मंगल और १४ बृहस्पति ने शनैश्चर को १५ घेरा है १६ लाल झूल पर सुवर्ण और रत्नों से जड़ीहुई सुंदर १७लोहे की खिलह लगीहुई है सो मानों सूर्य की गोद में१८शनैश्चर और १९ शिशुमार चक्र में तारे फूलरहे हैं ॥ ६४ ॥ २० रेसम के रस्सों से बंधेहुए

कति झंड१झुंडन अग्ग संक्रमि मग्ग छेकत मत्त ॥
सब हेवि होदन मज्झ१ बंज्झ२ असंज्झ स्वोचित सज्ज ॥
करिबे निसादिन बीर बादिन सर्वथा जय कज्ज ॥६५॥
बढिकै महावत बोलदै जिम जाति लै बिरुदाइ ॥
जवमैं हठी तिम सत्ति१ पत्ति२न पंति पिल्लत जाइ ॥
मनधाव ज्यौं चलभाव दोरनमैं सु घोरनमैं न ॥
प्रतिकाल१ चाल२ बिभिन्नता इभ ओघ ओरनमैं न ॥ ६६ ॥
घोरनमैंन१ ओरनमैंन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गंभीरबेदि१ कितेक मंगल२ केक परिग्गात३ गाढ ॥
कति ठ्याल४ चाल अंराल कारि करि बेग धारतबाढ॥
कति फीतं बाहक नीत कल्पित५ बीतं अंकुस१बीतं२ ॥
उपबाह्य६ के कति दंतईषिक७ दंतिपंति अतीतं॥६७॥
आटोप के अहिभोगं सन्निभ उद्ध पोग्गर आनि ॥
पलटा गता१गत२ के करैं मतके प्रमान प्रमानि॥
लघुनैन१ दिग्घ निहारिबे२ करि के रचैं गति लीहं ॥
आगामि१ गामि२ प्रकार आनत जे अनर्गल ईहं ॥ ६८ ॥
पटु पालकाप्य प्रणीत तंत्रेन हत्थिपालक हुल्लि॥

१ सब शास्त्र २ बंधेहुए ३ असह्य [नहीं सहने योग्य] ४हाथियों के सवारों के ॥ ६५ ॥ ५ घोड़ों और पैदलों की पंक्ति को हटाते जाते हैं ॥ ६६ ॥ ६ भाले आदि के घाव को नहीं माननेवाले ७मदकल [मस्त] ८पकेहुए दृढ ९दुष्ट हाथी १०टेढी चाल से वेग को धारण करते हैं १२अंकुश की प्रेरणा और १३महावत के पैरों के हलने से ११ प्रसन्न होकर चलनेवाले साजित हाथी १४ कितने ही राजाकी सवारी के, कितने ही लंबे दांतोंवाले १५ दांतों की पंक्ति १६व्यतीत होगई ऐसे [मुकने] हाथी ॥ ६७ ॥१७ सर्प के फणके सदृश १८सुंडके अग्रभाग को ऊपर करके छत्र करते हैं १९दौड़ने की लकीर रखते हैं २० आना और जाना २१ विना रोक टोक वाली इच्छा से करते हैं ॥ ६८ ॥ पालकाप्य मुनि के बनाये २२ शास्त्र (हस्त्यायुर्वेद) में चतुर महावत कूटबोली [दगदग आदि]

बिरुदाइ लाइ अनीक बिस्मय झुल्ल कूटिकझुल्लि॥
जिम जाइ जितजित आनि इतइत बानि१ अंकुस२बोध ॥
बलजेबढात रिझातविंदहिँ जुद्धजै जिम जोध ॥ ६९ ॥
इभपाल१ आसन२ पैं प्रभा इक३ सम्मुहे न लखाइ॥
जनु पिट्ठि जे थित बीर तेहि निसंक पिल्लत जाइ ॥
इभपाल अंगन व्है न भूखन रोचि जो अभिराम ॥
तो उक्त अर्थ प्रबोध व्है तिनके चढाकन ताम ॥७०॥
झननंकि शृंखल ज्यों बजें तिम पिट्ठि बिस्मित झंकि ॥
अति सेन संकट अग्ग सादिय वट्ट बिक्खत संकि ॥
मारीचगज१ ढिग के मतंगज२ यों निषादन आनि ॥
प्रभु पानि रीझ दिवान पिल्लत जात किल्लित जानि ॥७१॥
कति हत्थि होदन भौंर संक्रम गत्त पत्तनगोपि ॥
अति लास कज्जल भास आनत आसनावधि ओपि ॥
गज३ यों अनेक अनीक संगत देत खेत दिपाइ ॥
रथ४।१के सजे पथके मनोरम जे मनोरम जाइ ॥७२॥
कति पारियानिक२ केक पुष्परथा३रुप वैनायिका४रुप ॥

चोळकर सेना में लाते हैं ॥६९॥ उन हाथियोंके ऊंचे कुंभस्थलों के कारण सामने से महावतों की १ कान्ति नहीं दीखती सो मानों पीठ ऊपर के सवार ही उनको २ बढाते जाते हैं, महावत के शरीर पर भूषणों की सुन्दर ३ कान्ति नहीं होवे तो ५ यहां उन पर चढनेवालों का ४ऊपर कहे हुए अर्थ का ही बोध होता है ॥ ७० ॥ ६ घोड़ों के सवार ७ राजा की सवारी के हाथी के समीप ॥ ७१ ॥ कितने ही हाथियों के होदों में ८ भ्रमर चलकर अपनी पांखों से ९ सवारों के शरीरों को छिपा देते और १०नृत्य करते हुए ११आसन की अवधि पर्यन्त शोभित होकर अत्यन्त कज्जल की शोभा को लाते हैं १२सेनाके साथ १३ मार्ग में सुन्दर चलनेवाले १४ मन में रमते जाते हैं ॥ ७२ ॥ १५ चौतरफ से खुलेहुए रथ १६ विना युक्त (हवाखोरी) के रथ १७ यात्राभ्यास करने के रथ, जिनके पहिये

अरिनेमि[१]अक्ष[२]अरु पिंडिका[३]अरि[४] पेसलत्व[५] प्रथाख्य ॥
सम्या[६]धुरा[७]जुग[८]अो जुगंधर[९]गुप्ति[१०] आदि सुहात ॥
सबही प्रतीकन[११] सज्ज स्यंदन यों बढे बहु व्रात[१२] ॥७३ ॥
हुव सज्ज आरुहि पट्ट हास्थिय इष्ट सात्थिय अप्प ॥
द्युति देखि दुर्लभ देवकी[१३] दुरिजात दर्पक[१४] दप्प॥
उष्णीष[१५]१ सीस२ कुसुंभ अंचित स्वीय बंध सुघट्ट ॥
सह सालप[१६]२लोल्प किरीट[१७]३सेखर४पंच५रत्नक[१८] पट्ट ॥ ७४ ॥
लगि मुत्ति अच्छत१धीर२चंदन३चंद्र४हाड ललाट२ ॥
तिम रत्न कुंडल१।२ कर्ण३ जामल२ लाल गल्ल तलाट ॥
हद रोचि गुंफित रत्न पंच५क कंठ४ हिंडत हार१ ॥
बहुधा बिचित्र अनेक आवलि जो जें अोज बिथार ॥७५॥
लहा ललाम सु काय५कंचुंक[२०]१ बिप्फुरैं जर बान२ ॥
सौयंतनारुण[२१] अभ्र१ सीम कि बिज्जु२ पंति बितान ॥
कटिबंध१ मध्य६ लसैं करयो पगि पग्ग राचि२ प्रकास ॥
केयूर[२२]१।१कटक१।२अंवाप[२३]१।३भुज७।१कर८।२भ७पमनि९।३मनिभास
बहु मुद्रिका१बहुरत्न बेढ२दु२पंच५।१०पल्लव[२४]१० पाइ ॥
अहिद्वै२ कि कर फनपंच५ पंच५ उरुत्व[२५] मानि अधिकाइ ॥

१धुठियां २पाघर ३ नाभी (नाही) ४ अरों के ऊपर लगाने के काष्ठ (आंवल) ५ सुंदरपन में प्रसिद्ध हैं ६ जूए की कील (सोल) ७ अोदण ८ जूआ (जूड़ा) ९ जूआ बांधने की जगह १० रथकवच (शत्रु के शस्त्रों से बचानेवाली लोहे की खोली) आदि से शोभायमान है, इस प्रकार रथ के सब ही ११ अंगों को सज्जित करके रथों के बहुत १२ समूह बढे ॥ ७३ ॥ १३राजा की कान्ति देखकर १४कामदेव का घमंड छिपता है १५ कसूमल रंग की पाघ १६बड़ा मोड़ (मुकुट) १७ शिखाबंधन (लटकण) १८पांच रत्नों का शिरपेच ॥७४॥ १९ जय को और प्रताप को फैलाते हैं ॥ ७५ ॥ २० जामा (झगा) २१ संध्या समय के लाल बाद लों के समान किंवा बिजुली की पंक्ति के फैलाव के समान २२ भुजबंध २३ पूँचा तथा कोई अन्य कर भूषण विशेष ॥७६॥२४दसों अंगुलियों में२५मणियों

कटिद्व१ [1]सान सुद्ध कृपान१पट्टिस२कत्तिका३छुरिका४ऽऽदि
चउ४पुष्प [2]अंहुन१अष्ट८चंद्रक पिट्ठि१२ दिट्ठि प्रसादि ॥७७॥
उपवीत[3]१प्रतिपंथ[4]१३मेखला[5]१इत रत्न रोचि२अपुब्ब ॥
उर१२देस१जानि अगाध अर्णव[6]२ एस१ बेस कि उब्बर[7]२ ॥
सह धोत[8]१ आवृत अंघ्रि१४ कंचुक२ लंब आघुट३ साजि
बनि जुग्म२ गोहिर[9]१५रत्नशृंखल१।२लेम हेम बिराजि ॥७८॥
अभिरूप[10] यों बर भूप प्रस्थित पट्ट पीलु[11] अरोहि ॥
सहचार[12] जन्य बयस्य सत्थिय संक्रम्यों तिम सोहि ॥
नृपनाग[13]१के चहुँ४ओर जोर मरोर मंडत नाग२ ॥
परिवेस[14]१ भेस२ सवेस प्रस्थित बेस१ देस२ बिभाग ॥ ७९ ॥
इभ व्यूह१ बाह्य[15] समूह२ अर्वन ऊह[16] यों अधिकात ॥
जनु पच्छछेद अभेद अद्रिन बेढि सख्य[17] जनात ॥
गजव्यूह१मैं गजपट्ट२कों गन पत्ति[18]२ के गरदाइ ॥
प्रभुके प्रसाद प्रसन्न प्रस्थित चक्र चंक्रम[19] पाइ ॥ ८० ॥
सिर कूच्पके सह रत्न१ हाटक२ आतपत्र[20]१ सुहाइ ॥
जनु रत्नसानु[21]रहि भानुको तव ताप टारत जाइ ॥

से बड़प्पन बढ़ाते हैं १ कटारी २ चार फूलोंवाली ढाल ॥ ७७ ॥ ३ जनेऊ ४ उदर पर ५ कांची (करधनी, कणगती) ६ उदर के प्रदेश को अगाध समुद्र जानकर यह वेस मानों ७ वड़वाग्नि है ८ धोवती से ढकेहुए चरण ९ दोनों गिरियों (चरण ग्रंथियों) पर सुवर्ण के पगसांकले ॥ ७८ ॥ १० सुंदर ११पाटवी हाथी पर चढ़कर, समान अवस्थावाले पशलियों के १२ साथ शोभित होकर चला १३ राजा की सवारी के हाथी के चारों ओर १४ सूर्य के चारों ओर कुण्डली होवे जैसे ॥७९॥ हाथियों के व्यूह के १५ बाहर घोड़ों का समूह है जिनकी ऐसी १६तर्कना होती है कि मानों विना पंख कटेहुए पर्वतों को घेर कर वे घोड़े१७मित्रता जनाते हैं १८पैदलों का समूह१९सेना इधर उधर चलती है ॥ ८० ॥ दुलह के मस्तक पर रत्नों का जड़ाहुआ सुवर्ण का २० छत्र ऐसा सुहाता है मानों २१ सुमेरु पर सूर्य के ताप को बचाता जाता है,

दुहुँ१ओर बीजत सोमसुच्छ कि रोमगुच्छ२।२ दिपात ॥
पुरटाद्रि सूचित छत्र ज्यों पगि द्वैध गंग निपात ॥ ८१ ॥
इम अर्ह१बर्ह२।३अगर्ह बीजत बित्थरे दुहुँ२ओर ॥
मनु चोर१ अभ्र२ अदभ्र३ मोदित मंडि तंडव मोर ॥
द्विसती२०० नकीबन दंड१ प्रेरित हत्थ हाटक दंड२ ॥
अतिसीम अर्णाव फौज बाडव ओज२ जानि अखंड ॥८२॥
पहु पत्त यों दरकुंच जैपुर मंडि चक्क मुकाम ॥
तह भूप सिसु जयसिंह१तैं नन रीति सद्धिय ताम ॥
इह बैरिसल्ल१ स नाम राउल कुम्म नाथकुलीन ॥
कछवाह भूप प्रधान व्हाँ सतकार स्वोचित कीन ॥८३॥
तहँ भूप कूरमकेर मुख्य प्रकोष्ठ पालक ताम ॥
प्रति द्वारपालन जीन१ जैन२ स्वरूपचंद्र१ सनाम ॥
जिहिं भेजि राउल भूप१ द्वार स्वरूप२ बाल्य जनाइ ॥
भनि ऐन सद्धिय बैन स्वागत औन आगत भाइ ॥ ८४ ॥
इम जैन जो प्रभुबिंद तोरन दूर बाहन उज्झि ॥
वय अब्द सत्तरि७० लंघि औरन मंदलोचन बुज्झि ॥
कहि बुल्लि मुख्य प्रकोष्ठपालक इह्ढ६१ भूपति केर ॥
अवधान हानि दिखाइ अप्पन बाढ स्वागत बेर ॥ ८५ ॥

१दोनों ओर चन्द्रमाकी किरणों रूपी चमरों से पवन होता जाता है सो मानों ऊपर सूचना कियेहुए छत्र रूपी२सुमेरु पर्वतसे गंगाकी दो धारें पड़ती हैं ॥८१॥ इसी प्रकार ३ पूजनीय ४ मयूरपंखों (मोरछलों) से दोनों ओर ५ अनिन्दनीय पवन होता है सो मानों चमरों रूपी बादलों से ६ बहुत प्रसन्न होकर मयूर ७ नाचते हैं ८ सुवर्ण की छड़ियां हैं सो मानों सीमा रहित सेना रूपी समुद्र में बड़वाग्नि है ॥ ८२ ॥ ९ सेना का मुकाम किया ॥ ८३ ॥ १० कछवाहे राजा का मुख्य द्वारपाल ११ वृद्ध जैनी १२यह आप का घर है ऐसा कहकर वचनों से स्वागत किया ॥ ८४ ॥ १३ बाहर के द्वार से १४ वाहन छोड़कर १५ सित्तर वर्ष की अवस्था और मंद दृष्टिवाला दूसरों से पूछकर १६ हाडा राजाके द्वारपाल को १७अपने आने के समय अपनी सावधानी की

जिम भूप बालक प्रमाद व्है तिम सर्व देर जनाइ ॥
आहूत[1] हड्ड्[1] इलेस[2] अंतिक एस एकक[3] आइ ॥
सपजोरि[4] अक्खिय एह बिन्नति बैरिसल्ल[5] समुक्त ॥
जो कल्हि व्है रहिबो ततो बनिजाइ स्वागत[6] जुक्त ॥ ८६ ॥
क्रम सज्ज संसद[7] व्है मिलाप[1] उभै[2] अधीसन केर ॥
विधि सह्वि दो[2]उन नेहसौं सहभुक्ति[8] व्है मह बेर ॥
धात्रेय[9] मुख्यन व्हाँ कही नरनाह सम्मति[10] धारि ॥
सम संगमान[11] प्रमान जानहु लग्न बिन अनुसारि ॥ ८७ ॥
इम व्है न नैंक बिलंब[1] औ इम व्है हठी[2] इत आत ॥
बनिजाइतो कछवाइ[1] कै यह लाह नाह[2] बरात ॥
जो अंधकल्प[12] चल्यो यहै सचिवादि[13] सूचित जानि ॥
प्रतिहारसौं[14] इतकेन अक्खिय जाहु लै गहि पानि[15] ॥ ८८ ॥
चहि जो अनर्म[16] हु[1] नर्म[2] बुल्लिय जैन[17] जो हित चोर ॥
आमेरनाथ गह्यो यहै कर को गहैं तिहिं ओर ॥
जड दंभ[18] खानि हसाइ हड्डु[1] न जाइ यौं उत जैन ॥
आकूत[19] अक्खिय औन[20] सत्वर व्हैन थंभन औन[21] ॥ ८९ ॥
इम जात व्याहन ईस भो जयनैर एह उदंत[22] ॥
दरकुंच हंक्किय जुज्झना[1] दिस सज्ज जन्य सुमंत ॥

---

१ बुलाया हुआ २ हाडा राजा के समीप ३ यह अकेला आया ४ हाथ जोड़कर ५ रावल वैरीसाल की कहीहुई विनती ६ आपका आदर सहित ॥ ८६ ॥ ७ सभा में ८ शामिल भोजन ९ धायभाई आदि १० राजा रामसिंह की सम्मति देखकर ११ मार्ग के प्रमाण के साथ ॥ ८७ ॥ १२ अंध के सदृश १३ सचिव आदि का कहाहुआ जानकर १४ बुंदीवालों ने अपने द्वारपाल से कहा १५ इस का हाथ पकड़ कर ले जा ॥ ८८ ॥ १६ यह हंसी नहीं थी तोभी इसको हंसी मानकर १७ यह हित का चोर जैनो बोला १८ कपट की खान १९ अभिप्राय कहा २० मार्ग की शीघ्रता से २१ अपने घरमें (यहां) ठहरना नहीं होसकता ॥ ८९ ॥ २२ वृत्तान्त

पुर *गम्य अंतिक जात अंतर कोस द्वै२ परिमान ॥
तह कुम्म †सेखकुलीन सम्मुह संजुरे बलतान ॥ ९० ॥
सब मुख्य सेखनमैं मनोहरद्रंग१ ‡बै हनुमंत२॥
सहसत्थ तहँ खंडेल२ वै१।२ सुत२ वातदा जुहि संत ॥
बखतेस३ कूरम खेतरी३पति बाहबाहन लुद्ध ॥
इक१ खंजपैहु विपर्यलखन४ सीकरेस४अलुद्ध ॥९१॥
प्रभु रूच्यके स्वसुरत्व उद्धत स्याम५जुज्झनपाल ॥
जिहिं दुष्ट भ्रात१ भतीज२ मुख्य दलै दगा अघजाल ॥
सँहदंत६ रामगढा७दि इम सब कुम्म सेख कुलीन ॥
करिकैं महामद बिंद सम्मुह आइ स्वागत कीन ॥ ९२ ॥
उँपदा१ निछावरि२ सद्धि सादर संग जे सब आइ॥
प्रभुकों पटालय मुख्य अंतर प्रीतिसों प्रविसाइ ॥
लहि सिक्ख अप्पन ऐन संक्रमि भ्रात अंतिक लग्न ॥
मिलि सर्ब मंडपके महामहँ मोद अर्णवै मग्न ॥ ९३ ॥
चहुवान इंद्रहिं लौचलो पधराइ व्याहन प्रीत ॥
गजपट्ट आरुहि हट्ट६१ इंकिय होत मंगल गीत ॥
सुचि४ मासके सुचि१ पक्ख द्वै अहि अठ भू१८८शमितसाक
दसमी१०दिपी पैंतनी जहाँ पति सँद७ छंद मिलाक॥९४॥
निज लग्न पुब्ब अनेह यों तहँ संक्रम्यो नरनाह ॥

* जिस पुर में जाना था उसके समीप † सेखावत ॥ ९० ॥ ‡ १ (पति) १ घोड़े को चलाने (फेरने) में चतुर २ एक पैर से खोड़ा ३ विपरीत लक्षण वाला ४ निर्लोभी ॥ ९१ ॥ ५ जूंझनों का पति श्यामसिंह ६ दांता नामक पुर के पति सहित ॥ ९२ ॥ ७ नजर ८ डेरे में ९ लग्न के समीप आने पर अपने घर गये १० उस बड़े उत्सव में सब मांडावाले ११ हर्ष के समुद्र में डूबे ॥ ९३ ॥ १२ आषाढ मास के १३ शुक्लपक्ष की दशमी रूपी १४ स्त्री शोभायमान हुई तहां १५ शनैश्चर वार रूपी पति स्वतंत्र होकर मिला ॥ ९४ ॥

चउ४दंत१ पै मघवा२ कि सोभित ह्वै सची[1]हित चाह ॥
इमि अग्ग तोप१न पंति ओपन कंति भंति अनेक ॥
बहि तास पिठ्ठि निसान धारन इष्ठि[2] बारन२ केक॥ ९५ ॥
तिन पिठ्ठि गाहन ब्यूह बाहन३ लै तरारन तत्थ ॥
चहुँ४ ओर ह्वै तिन दोर चंक्रमें जोर संक्रम सत्थ ॥
तिनमध्य पत्ति४न ब्यूह तक्खिन[6] ह्वै सहस्रन संग ॥
इनमध्य हत्थि५न ब्यूह सत्थिन जूह ऊह उमंग ॥९६॥
तिनमैं तथा परिबेस पत्ति६न ह्वै बिसेस मतान ॥
बिच१ यों लस्यो बरनाग२ मेरु२ कि द्वीप जंबुव२मान ॥
गज अग्ग ह्वै कछु चोक ता बिच नच्च१बादन२ गेय३ ॥
पननारि१ सज्ज भई कहार२न खंध पट्ट३न मेय ॥ ९७ ॥
बनि अग्ग१थेइं२तथुंग३धुंकट१घ्रुंकर२पिठ्ठि३ बिभाग ॥
रस प्रीति बास बिलास मंडिय मेघद्दा१ मंजुल राग ॥
सा१रंभ मूर्छन ता१हिसों गृह१ अंस२न्यास३ग्रहीत ॥
गं[12]३।१नि७।२हीन ओडव३जो अहोबल१हनुमत२मत गीत९८
संगीत आदिक[13] पारिजातक१ग्रंथमैं सुर२ प्रसिद्ध ॥
बरखा३ समागममैं मनोज्ञ करैं[14]मरासुग बिद्ध ॥

१ इन्द्राणी के हित की चाहसे मानों १ऐरावत पर इन्द्र शोभायमान हुआ २ इष्ट (अभिलाष) युक्त कितने ही हाथी चले ॥ ९५ ॥ ४ इधर उधर दौड़ना ५ पैदलों का समूह ६ उस समय ॥ ९६ ॥ ७ पैदलों के घेरे में ८ राजा की सवारी का श्रेष्ट हाथी ऐसा शोभित हुआ जैसे जंबूद्वीप में सुमेरु पर्वत ९ गाना ॥ ९७ ॥ १०ये सब नृत्य और वाद्य के अनुकरण के शब्द हैं ११सुन्दर मेघराग ने "यह विवाह आषाढ मासमें हुआ इसकारण इसी समय के मेघरागका वर्णन किया है॥" आरंभ सहित जो मूर्छना उसी से गृह, अंश, और न्यास ग्रहण किये १२ गंधार और निषाद से हीन(ये दोनों स्वर मेघराग में नहीं लगते हैं) जो अहोबल और हनुमानके मतसे औडव[पांच स्वरवाला]राग है वह गाया ॥९८॥ १३संगीतपारिजातक नाम ग्रन्थमें १४कामदेवके बाणोंसे बेधन करता है

रागार्णवा१दिक तंत्र गत संपूर्ण१ आदि२ जु राग ॥
बपु रूप धद्भ्रप३ उत्तरायत१ मूर्छना२ प्रविभाग ॥ ९९ ॥
मत बैज्जविग्रह१को प्रमानत बर्तमान बिशेष ॥
इम पुब्ब१ उक्त२ हि उद्धरयो सबिलास लासित श्रेय ॥
दिपि नीलउत्पल१ आभ बिग्रह२ इंदु१गोर२दुकूल३ ॥
सपिपार्स चातक१पञ्चपमान२ सु मत्त जुव्वन१मूल॥१००॥
पीयूष१ मंदस्मिता२ऽऽर्दपल्लव ओठ३ अंबुद१ ऐन२ ॥
गन धीर बीर१न जुट्ठ२ तुट्ठत३ वारि१ बुट्ठत गैन२ ॥
कलकेक कोकि१ रुचा२ रचावन३ ठहै नचावनहार४ ॥
इहिरूप राग लयो उठाइ सु सर्वराग अगार ॥ १०१ ॥
मल्लारको१दिक पंच५ तिय पति उप्फन्यो बय मत्त ॥
अतिमोद ठानत रूप१ आदिन रीझमैं अनुरत्त ॥
श्रुति१ जाति२ग्राम३रु मूर्छना४ सब थप्पि संभव थान ॥
तिय मंजु माप अलाप मंडिय ब्रह्मताल५ मतान ॥ १०२ ॥

१रागार्णव आदि ग्रन्थों में यह राग सम्पूर्ण(सात स्वरवाला) और आदि राग है जिसके शरीरकारूप ॥९९॥२[ ]वर्तमानमें गानेवाले बहुत लोग३हनु मानके मतको ही प्रमाण करते हैं ४श्रेष्ठ नृत्यमें इसी मेघरागको ४उठाया, इस रागका शरीर ६ गद्भूज (रात्रिविकाशी कमल)के समान और चन्द्रमा जैसे श्वेत ७ वस्त्र हैं, ऐसे यौवनवाले मुख्य मेघराग की याचना करनेवाला ८ प्यासयुक्त चातक(पपीहा) है ॥ १०० ॥ ९ अमृत रूपी जिसका मंदहास्य १० गीले पत्ते रूपी ओठ और मेघ ही जिसका घर ११ धीर वीरों के समूह से युक्त, प्रसन्न होकर आकाश में जल बरसानेवाला १३ मयूरों को १२ मधुर ध्वनि की १४ इच्छा कराकर नचानेवाला, इस रूप के मेघराग को उठाया जो सब रागों का १५ घर है ॥ १०१ ॥ १६ मल्लार, भूपाली, टंक, सारंग और गुजरी, इन पांच स्त्रियों का पति यौवन में मस्त होकर यहां १७ दुल्हह आदि को रीझ में प्रीति कराकर हर्ष कराती हुई उन वेश्याओं ने बाईस श्रुति, पांच जाति, तीन ग्राम और इक्कीस मूर्छना को संभावित स्थानों पर स्थापन करके सुन्दर मापसे आला प रचकर १८ब्रह्मताल (इकताला) फैलाया ॥ १०२ ॥

चउ४कोन पट्ट१न तास यौं पयन्यास२ मंडित चित्र ॥
मनु बाटिका१ बहु पुष्प भौंर२न भास३ भौंरन मित्र ॥
किंमु पत्र१ पैं बहुचित्र२ सोभित चित्रकारन केर ॥
इम अंघ्रि उठ्ठत इष्ट आकृति दैन भा कृति देर ॥१०३॥
पयफेर अंकुस घेर१ घुम्मत कैंणिका कि मतान२॥
मुरिजात ज्यों लचकात लंक बिंक तुट्टन मान ॥
फबिजात तंडव यों गता१गत२ सौंचि३ चक्र४ फिराव ॥
भ्रमिजात मैंच्छरि भावमैं गुमिजात अच्छरिभाव ॥ १०४ ॥
तत१ आदि बादन च्यारि४ नँादन धारि रारिहु तत्थ ॥
सब भैंकु१ धित्थ२पिपी३ ठनंक४ न सान मेलत सत्थ ॥
उद्ग्राहक१ रु मेलापक२ ध्रुव३ अंतर४रु आभोग५ ॥
जहँ लहि गीतक पंच५ भागन सह्हि संभव जोग ॥१०५॥
पद१ ताल२ अो स्वर३ पाट४ तेन५ बहोरि बिरुदक६हु तत्थ ॥
इम गीत अंग छ६ संग आश्रित संभवी क्रम सत्थ ॥
मिलि देस ताल१ रु बानि२ मानुज३ गीत जो हुव गीत ॥

चार कोनेवाले१वस्त्र(बिछायत,पर अथवा चार कोनेवाले उस पाटिये(तखत) पर चरणोंसे विचित्र२विन्यास रचा सो मानों३बगीचेमें पुष्पोंके बहुत गुच्छों पर उनकेमित्र भ्रमरोंने प्रकाश किया है४किंवा पत्रके ऊपर चितेरोंने शोभाय मान चित्र किये हैं ५ इस प्रकार उन नायिकाओं के चरण अनुकूल आकृति से उठते हैं सो ६शोभा करने में देरी नहीं करते ॥१०३॥ पैरों के फेरसे ७ लहँगे का घेर घूमता है सो मानों ८ छोटा डेरा फैला है ९ विशेष बांक वाली कमर को लचकातीहुई टूटीहुई (कमर) के समान मुड़ती है १० नृत्य में जाने आने और ११टेढी होकर गोलाकार फिरनेमें ऐसी शोभा पाती है कि जिसके भावमें१२ मच्छी भी भ्रम जाती है और अप्सरा का भाव भी गुम जाता है ॥१०४॥ १३ तांत आदि के चारों वाद्यों ने १४शब्द करके तहां पर युद्ध किया, यहां भैंकु आदि उन चारों वाद्यों के अनुकरण के शब्द हैं १५ गीत के इन पांच भागों को लेकर जहां जिसका संभव था वहां उसको मिलाया ॥ १०५ ॥ १६ ये राग के छः संग हैं १७ वह गीत गाने योग्य हुआ, स्वर के घुजाने को गमक कहते

स्वरकंप जो गमका१रूप पंद्रह१५भेद तास प्रतीत ॥१०६॥
*तिरपा१रूप आदि१म लै तथा इम सर्व१५नामित१६अंत॥
जिम अष्टि१६ सम्मित एहि मिश्रित१६सोलहैं१६परजंत ॥
आरोह१मैं अवरोह२मैं थिति३ मैंहु ए१६ इम आनि॥
लहरी मनों रचिबेलगी स्वर सिंधु †तानन तानि॥१०७॥
जाति१ ग्रास२ प्रापित गीत१ दस१०गुन रुपकता१दिक जुत्त॥
त्रि३बिधत्व भिन्न प्रबंध३ जे तनु इक्क१इक्क१अछुत्त ॥
तिन्ह नाम ए सूडस्थ१ अलिभ्रित२ बिप्रकीर्ण तथाहि ॥
एला१दि रूपोंपित अंग अष्ट८न सूड१ नामक आहि॥१०८॥
वर्ण१दि मित चउवीस२४सों अलिसंश्रया२रूप बखान ॥
श्रीरंग१आदि१छतीस३६सों वपु बिप्रकीर्ण३बिधान ॥
जहँ पंच५ मान प्रबंध जातिहु आदि तत्थ छ६ अंग ॥
पुनि अंग इक१इक१ हानि जे पगि सिद्ध ठहै क्रम संग१०९
अभिधान ए तिन्ह मेदिनी१ अरु नंदिनी२ अभिराम ॥
पुनि दीपनी३तिम पावनी४ तारावली५ जुत ताम ॥
तिन्ह ठानि संभव१आनि संभव२में असंभव३ त्यागि ॥

है उसके पन्द्रह भेद हैं ॥ १०६ ॥ जो * तिरपा को आदि लेकर सब पर्यन्त पन्द्रह हैं और नामितको अंत में लेने से सब मिलाकर सोलह भेद हैं जिनको चढाने, उतारने और ठहरानेमें, इन सोलहों गमकों को लाकर स्वर रूपी समुद्र में † तानों को फैलाकर मानों लहरें रचने लगी ॥ १०७ ॥ जाती और ग्रामको लेकर रूपक आदि राग के दश गुण हैं वे भिन्न प्रबंधों से १ तीन प्रकार के हैं वे एक एक से नहीं मिलते जिनके नाम आगे कहते हैं इनमें एलाको आदि लेकर आठ अंगवाला सूड नामक २ प्रसिद्ध ३ है ॥ १०८ ॥ वर्ण से आदि लेकर चौबीस के प्रमाणवाला आलिसंश्रय नामका कहते हैं और श्रीरंग को आदि लेकर भेदवाला विप्रकीर्ण है तहाँ पांच प्रमाण. जाति में प्रथम के छः अंग हैं जिनमें से एक एक कम करने से क्रम सहित सिद्ध होते हैं ॥ १०९ ॥ ४ जिनके नाम आगे कहते हैं ५ सुंदर ६ तहां, इनको जहां जिसका संभव

रस प्रीति आलय१वोर दै सब रंजये अनुरागि ॥११०॥
सिव१ सक्ति२ संभव ताल देसिय२ उक्त व्है किय सज्ज ।
तस वर्ण पंच५ अनुद्रुता१दिक हेर ह्वैलय कज्ज ॥
लघु इक्क१कैं सु सपादलघु मत भेदतैं दुव२ मान ।
उच्चारिबे मित व्है अनुद्रुत१ बर्ण१ तस अभिधान ॥१११॥
मिलि द्वै२अनुद्रुत इक्क१व्है द्रुत१।२बर्ण काल प्रमेय ।
मिलिकैं द्रुतद्वय२इक्क१लघु१।३लघु द्वै२मिले गुरु१।४ गेय ॥
लघुतीन३तैं प्लुत१।५बर्ण व्है इक्क१ ताहि मान ललाम ।
रहि तालमैं मिलि पंच५ भेदक बर्ण ए५ अभिराम ॥११२॥
अब तालके दस१० मान व्है तहँ काल१ उक्तहि एस ।
मिलि मोह्य मग्ग२क्रिया३रु अंग४ग्रहा५लय जाति६बिसेस॥
पुनि है कला७लय८त्यौं गिनोजाति९दसम१०तहँ प्रस्तार१०।
इहिं दसक१०कारि असुमंत सङ्किप ब्रह्मताल उदार ॥११३॥
ता१नाम दक्खिन१पानि जानिल२नाम बामकर२तत्थ ।
सिव१ सक्ति२ ए मिलि ताल संभव व्है कहे क्रम सत्थ ॥
सिव१तैं समाहत सक्ति२ व्है विधि३अन्यथा१विधि हानि२।

था वहां उनको लाकर असंभव को छोड़कर प्रीति रस के घर में डुबोकर सब प्रेमियों को प्रसन्न किये ॥ ११० ॥ एक शिव से और दूसरा शक्ति से उत्पन्न हुए दो प्रकार के देशी ताल कहते हैं सो वहां सज्जित किये इनके अनुद्रुत को आदि लेकर लयके लिये पांच वर्ण कहे हैं यहां मत भेद से कोई एक लघु और कोई १ सवा को अनुद्रुत वर्ण कहते हैं ॥ १११ ॥ दो अनुद्रुत मिलकर एक द्रुत होता है जिससे वर्ण के समय का २यथार्थ ज्ञान होता है, दो द्रुत मिलकर एक लघु और दो लघु मिलने से गुरु ३ कहते हैं और तीन लघु से एक प्लुत नामक वर्ण का ४सुंदर प्रमाण होता है सो ताल में ऐसी वर्ण नामके सुंदर पांच भेद हैं ॥११२॥ अब आगे तालके दश प्राण कहते हैं इन दश प्राणों से ५ प्राणधारी ब्रह्मताल साधा ॥ ११३ ॥ इन में दक्षिण हाथ से बजनेवाला ताल शिव से और वामहाथ से बजनेवाला शक्ति से उत्पन्न हुआ कहते हैं जिनमें प्रथम ६ दाहिने हाथ से बजाकर फिर वाम हाथ से बजावें यह विधि

संपा१ रु ताल२ रु सन्निपात३ अघात बेद प्रमानि ॥११४॥
इम नर्तकी जन जूह पट्टनपैं कहारन अंस ॥
रचिवेलगी नृत्य गीत सुँचि१ रस अन्य तिय अवतंस ॥
करि हाव१भाव२कटाच्छ३के क्रम अच्छरिन अनुकार ॥
हुव मोहिनी मन जन्य१मंडप२ लोक मोहन हार ॥ ११५ ॥
त्रिक३गान१बादन२नाट्य३संतत मान मेलित मोहि ॥
इक१लै प्रसारिय राग२ आदिक रोहि१ त्यौं अवरोहि२॥
सह घेर अंसुक फेर घुट्टन लंक तुट्टन संक ॥
बिरचैं जथातथ आनि संभ्रम ठानि बंक१अबंक२ ॥ ११६
लसि मोद लंभहिं इक्खि अंभहिं जन्य१ मंडप२ लोक ॥
शृंगार१मैं सनिभाव जे भनि इष्ट चाहत ओक ॥
इम बिंद बुट्ठत बित्त संचय गम्य स्वासुर अैन ॥
पहुँच्यो पुरीजन लाजके निधि पाल ठानत नैन ॥ ११७ ॥
अति प्यार कार बजारके जन वारके दुहुँ२ओर ॥
लखिबे अनारतकार लग्गिय चंद्र१ जानि चकोर२ ॥
उपदा१ निजोचित उद्धैं रु करैं निछावरि२ केक ॥
दानीय जे खिनपैं दिपे इनमेंहु आढ्य अनेक ॥११८॥

युक्त है और ऐसा नहीं करने से रीति बिगड़ती है ॥ ११४ ॥ १ इस प्रकार वेश्याओं का समूह २ कहारों के कंधे के पाटिये के ऊपर ३ शृंगार रस में ४ अन्य स्त्रियों का मुकुट ५ अप्सराओं के सदृश ६ मांढा और जानके लोकों के मनको मोहने के लिये वह मोहन करनेवाली हुई ॥ ११५ ॥ ७ चढाकर और उतारकर, घुटनों से ८लहँगे के घेरको फेरकर ९कमर टूटने की शंका से ॥११ ११ आकाश में इस १० लाभ को देखकर जान और मांढा के लोक प्रसन्न होते हैं (कहारों के कंधे पर आकाश में नचती थी इस कारण आकाश में देखना कहा है) १२शृंगार रस में भीजकर १३वांछित घर को चाहते हैं १ समूह की वर्षा करता हुआ जाने योग्य श्वसुर के घर पर गया ॥११७॥१५ १६ अपने उचित भेट निकालते हैं १७ अनेक धनवान शोभायमान हुए ॥११८॥

इम जाइ तोरन सद्धि लौकिक दै कसा[1] अवघात,
बलि बंदि[2]कै बलि दीपपंतिय कोर बेरै विभात ॥
प्रविसाइ त्यों अवरोध भूपहिं थप्पि उद्वह[3] थान,
[4]बरन्यों अनुक्रम ठानि ब्याहिय पुब्ब१ ब्याह प्रमान ॥११९॥
बिधि बेद सूचित सद्धि दुल्लह१ दुल्लही२ बपु वाम,
बपु वाम२ नेमें वरी करी बपु बाम२ प्रेम प्रकाम ॥
कुल सेखके अभिजात[6] कूरम स्यामसिंह सुताजु,
कहिये गुलाबकुमारि २०२।२ कोविद नामधेय नुताजु ॥१२०॥
गुन१ रूप२ उत्तम चाहि ताहि बिवाहि कैं पटगेह,
अभिराम राम२०२।४ नरेस आइउ ओज१ मोज२ अछेह ॥
निज कृष्ण१ धीसख बुल्लि बंटन त्याग अप्पि निदेस,
प्रारंभ मंडिय किति पूरन बाढ देस१ बिदेस२ ॥ १२१ ॥
[11]कविके पिता कविराज चंड१ रु भट्ट रत्न२ सुकज्ज,
करिबे लगे सब द्रव्य चै करि स्वामि जे करि सज्ज ॥
रजनी द्वितीयरहु सद्धि लौकिक रीझिकैं अधिराज,
किय इभ्य[12] गाइक१गाइका२ कुल सर्व साज समाज ॥१२२॥
रहि यों किते दिन त्यों [13]वनीपक वर्गकों अनुरत्त,
[14]द्विप१वाजि२भूषन३वस्त्र४रुप्पय५आदि उत्तम दत्त ॥
पुर जुज्झनाँ सन सिक्ख१संग सु दाय२ओसर पाइ,

---

१ तोरण पर चाबुक का प्रहार करके २ शरीर विशेष शोभा युक्त हुआ ३ विवाह के स्थान पर स्थापन करके ४ जोधपुर में प्रथम विवाह हुआ उसमें वर्णन किये अनुक्रम से ॥ ११९ ॥ उस स्त्री के शरीर को प्रेम सहित धरकर अपने वाम शरीर में उसको ५अर्धांगी बनाई ६सेखावत कछवाहे स्यामसिंह की पुत्री ७ स्तुतियोग्य ॥ १२० ॥ ८ डेरों में ९ मंत्री १० आरंभ रचा (क्रिया) ॥ १२१ ॥ ११ ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल के पिता १२ धनवान् ॥ १२२ ॥ १३ याचकों के समूह को प्रीति युक्त होकर १४ हाथी, चहुवान रामसिंह के चलने पर

चहुवान चल्लत मंडपी[1] हदतैं मुरे[2] चहुँआइ ॥१२३॥
तहँ सेख नत्तिय खेतरीपति नामतैं बखतेस,
उँपदा[3] कर्‌यो तिहिं खास अप्पन बाज१ बेग बिसेस ॥
अति ईच्छ[4] उड्डन कच्छ संभव[5] लाडिया१ अभिधान[6],
बर अंग रंग कुमैत२ अंगन जंग गैन बिमान ॥ १२४ ॥
लहि निट्ठि सप्ति सु व्है दुरघाँ हठ सप्त[7]सप्ति लुभाइ,
प्रतिमग्ग प्रस्थित टारि जैपुर यौं बिस्यो[9] पुर आइ ॥
बिरचे असेस बिसेस उपाहृत[10] वेद१लोक२ बिधेय,
दिय पट्ट१[11] तत्वहजार२५०००दस्मन दुल्लही हित देय॥१२५॥

॥ दोहा ॥

स्यामसिंहदास जु सचिव, स्वसुता[12]कै दिय सत्थ ॥
सिविविराम१ नामक सुपै, आकारित[13] हुव अत्थ ॥ १२६ ॥
सम्मति करि तस तंत्रसौं, माटुंदा१ पुर मुख्य ॥
कृष्णराम१ धात्रेय किय, स्वामि हुकम चाहि सुख्य ॥१२७॥

॥ मत्तमयूरः ॥

यौंही बिंदो[14]१ जाहि प्रधानी करि अप्पो, माटुंदा१ पच्चीससहस्री २५००० बोलि[15] मप्पो ॥
ताहूनैं तच्छंदैं[16] बढायो बसु तामैं, सारो[17] पट्टा फुल्लनछायो सुखमामैं[18]१२८

१ मांडा के लोग अपनी हद से २ चारों ओर से पीछे फिरे ॥ १२३ ॥ ३ नजर ४ उड़ने में चतुर ५ कच्छ का पैदा हुआ ६ लाडिया नामक घोड़ा युद्ध क्षेत्र में ७ आकाश का विमान ॥ १२४ ॥ दोनों ओर हठ होकर यह घोड़ा कठिनाई से लिया जिस पर ८ सात घोड़ोंवाला (सूर्य) भी लोभ करता था ६ बुंदी में प्रवेश किया १० उक्त (कहेहुए) ११ पट्टा ॥ १२५ ॥ १२ अपनी पुत्री के साथ शिवराम नामवाले को यहां १३ बुलाया ॥१२६॥१२७॥ १४ दुलहन ने उसी को प्रधान करके १५ हासिल १६ उसने अपने अधिकार में और भी धन (हासिल) बढाया १७ सब पट्टा १८ परम शोभा से फूलोंछाया होगया ॥१२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रे रामसिंहकुम्भाणाँनामकनगरद्वितीयविवाहकरणानन्तरबुन्दीप्रत्यागमनवर्णनमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥

आदितः सप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३७० ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—इम बिलसत बुंदिय अधिप, वैभव अतुल बिलास ॥
जुगर रानिन अनुरत्त जहँ, प्रस्तरि स्वजस प्रकास ॥ १ ॥
सूरि१ सुकवि२ सुभट३न सहित, बिहरत रहित बिकार ॥
सर१ घर२ बन३ उपवन४ सदन५, संतद६ सगिधैं७ सिकार ॥ २ ॥
ऋतु पाउस अंतर रसिक, राजत अतुल रसेस ॥
सगनुंगून संगीत१ सह, समुचित कुतुक असेस ॥ ३ ॥
पाउस३ सुख इम भुग्गिपहु, बिलसत सरद४ बहार ॥
इसँ७ प्रति अह बिलासिय अखिल, सह कत्तिय८ महसारा९ ॥ ४ ॥
सूचित हुव गज धृति१९८२ सकहि, अर्ज्जुनरस्मगतिथि१२ उँज्ज ॥
प्रभु प्रयाण कोटापुरहि, प्रस्थित हुव गुनपुञ्ज ॥ ५ ॥

(   )

कृष्णराम अमात्यकोबिद स्वामि सत्रुनसाल,
कालफिलड१२ अजबटसों मिलिवे चल्यो तिहिँ काल ॥
सो हुतो तहँ थान सूचित दंग बाले प्रदेस ॥
बंगला१ जहँ बन्द बिस्तृत लाल लाभ बिसेस ॥ ६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, बूंदी के रावराजा रामसिंह के चरित्र में, रामसिंह का कुंभाणाँ नामक नगर में द्वितीय विवाह करके पीछे बूंदी आने के वर्णन का आठवाँ ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से तीनसौ सत्तर ३७० मयूख हुए ॥

१ पंडित २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] भोजन करने में ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ सुनाने ६ [illegible] किया ॥ ३ ॥ ७ आश्विन मास में ८ कार्तिक का मास ॥ ४ ॥ १० कार्तिक ११ सुदि तेरस के दिन [illegible] १२ नगर के बाहर ॥ ६ ॥

॥ उद्धुरः ॥

जब सक बेद हय धृति १८७४ जात, बढि इत अंगरेजन *व्रात॥
छिति कर दक्खिनीन छुराइ, इन लिय प्रांत यह अपनाइ ॥७॥
जैपुर१ जोधपुर२ धुर जोरि, बुंदिय३ उदयद्रंग४ बहोरि ॥
करि बस त्यौंहि खिल कोटा५दि, छिति सब स्वीय सासन छादि८
इतिसुख थान थप्पि अजंट, बिरच्चिय तंत्र निज निज बंट ॥
सहरन बाह्य सासन संधि, बहुविध बंगला लिय बंधि ॥ ९ ॥
करि इक१ सासिता सब केर, मालिक थप्पि दिय अजमेर ॥
बुंदियनैर तब लहि बंट, आइउ पुब्ब१ टाड अजंट ॥ १० ॥
तिम हुव काल्लफिल्डर२ द्वितीय, सजि इन्ह अन्यतर१ घर स्वीय ॥
किय तहँ बंगला१ चितिकाम, पुरसन पुब्ब१धर सिर धाम ॥११॥
सो हुव पीठमाल समाप्त, पुनि रहि रुद्ध नहि चँपप्राप्त ॥
तजि कछु हेतु करि इम ताहि, चर्य तस नंदगामहि चाहि ॥१२॥
तिहिं पुरतैं सु उत्तर४।७ ओर, दिय तस अस्त दिस३।५ नदि दोर
पगि कछु दूर नदि सन पुब्ब, परिचितं बंगला१ जु अपुब्ब ॥१३॥
॥ नपुब्ब१अपुब्ब२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
तबसन हो अजंटहु तत्थ, प्रभु पुर आत अवसर अत्थ ॥
इहि प्रति मिलन उक्त अनेहँ, आदरि कछु प्रयोजन एह ॥ १४ ॥
तकि हिल प्रभु मुसाहब ताम, नयपटु कृष्णाराम स नाम ॥

*अंगरेजोंके समूहने बढकर दक्खिणियोंके हाथसे भूमि छुडाकर इस प्रान्तको अपने अधिकार में करलिया ॥७॥ १राजपूतानेकी सब भूमिको अपनी आज्ञासे छाई ॥ ८ ॥ २ इत्यादि स्थानों पर ३ नगरों के बाहर ॥ ९ ॥ ४ सब पर आज्ञा करनेवाला अर्थात् सब के ऊपर एक हाकिम करके उसको अजमेर में रक्खा ॥ १० ॥ ५ बंगले की नींव (बुनियाद) डाली ॥ ११ ॥ ६ पीठा (थाला) मात्र तयार हुआ ७ काम रुककर संचय को प्राप्त नहीं हुआ अर्थात् पूरा बन नहीं सका ६ कोटे में उसको ८ बनाना चाहा ॥ १२ ॥ १० जानने योग्य अपूर्व बंगला हुआ ॥ १३ ॥ ११ कहे हुए समय में ॥ १४ ॥ १५ ॥

सुमति सु पाइ प्रभु सन सिक्ख, तानि प्रभु राज्य बैभव तिक्ख१५
पत्तन *नंदग्रामहि पत्त, तक्कि नय बंगला गय तत्त ॥
भिंटिय कालफिल्ड२ सु भाइ, वह जह रीति सम्मुह आइ ॥ १६ ॥
मंदिर लैगयो सनमानि, तक्कि हित उचित स्वागत तानि ॥
बिरचन बिबिध†अवस्यनवस्य, रचि कछु मंत्र ‡बिजन रहस्य॥१७॥
पुनि लहि गंधतैल१रु पान२, दुव२रहि दुश्दिस नेह निदान॥
पुनि करि सिक्ख सिबिरहिं पत्त, अर्थिन बितरि बसु अनुरत्त॥१८॥
इम तिथि असित१ मग्ग९ उपादि२, बिरचन मिलन झल्लहिं बादि
बिदित जु माधवादि बिलास१, उपबन झल्ल कृत जहँ आस॥१९॥
जब तहँ हो सु जालम जात, माधव बिफल दर्प सघात ॥
दंमि निज नृपहिं मासिक देत, अप्पहि बनि नृपत्व उपेत ॥२०॥
प्रतिबल कथनमात्र प्रधान, सबबिधि स्वामिभाव समान ॥
कुंदिय सचिव तब तिहिं बेल, मंडन दुश्दिस नेप मय मेल ॥२१॥
माधवसोंहु चहत मिलाप, इम गय तास उपबन आप ॥
अभिमुख झल्ल सुनतहि आइ, बाहिर बेल बैलज बिहाइ ॥२२॥
बढि मग पंचसत५०० मित बंस, सम्मुह भिंटि अधिक प्रसंस ॥
पुनि दुव२ उक्त उपबन पत्त, बिरचिय काल कछु हित बत्त ॥२३॥
दिय१ लिय२ अतर१ बीटक२ देय, पटकुटें पत्त पुनि सह श्रेय ॥
हुव यह दोजिर दिन व्यवहार, बलि करि भूप भेट बिचार ॥२४॥
अंतर त्रिश्दिन दे तस अग्ग, मेचक१ मिलत गुहतिथि६ मग्ग९ ॥

* कोटा पुर में गया ॥१६॥ † कई प्रकार से बश में नहीं थे उनको बश में करने को ‡ एकांत में सलाह की ॥ १७ ॥ १ अतर पान लेकर ॥ १८ ॥ २ माधव बिलास नामक झाला का किया हुआ ३ बाग ४ है ॥ १९ ॥ ५ जालमसिंह का पुत्र ६ माधवसिंह ७अपने राजा को दंड देकर तनखाह देता था ॥ २० ॥ ८ उस बाग में ९ नीतिमय मिलाप करने को ॥ २१ ॥ १० सन्मुख ११ बाप के कोट को छोड़कर बाहर आया ॥ २२ ॥ २३ ॥ १२ डेरे में ॥ २४ ॥

माधव स्वीय नृपहिं मनाइ, डुल्लन उतहु *श्रील बनाइ॥ २५॥
परिकर सज्ज नृप ढिक पेलि, मनिगन आभरन१ पट२ मेलि॥
बुंदिय सचिव तहँ बुलवाइ, सब विधि मिलन रीति सधाइ॥२६॥
वर हय१ खिलत२ अर्घ विसाल, मनिमय पट्ट३ मुत्तियमाल४॥
निज नृप पानि प्रति पहुँचाइ, इह दित वस्तु चयारि४ दिवाइ॥२७॥
आदरि नंदग्राम अधीस, सूचित ठानि इम बखसीस॥
सेद दिय कृष्णरामहि सिक्ख, तुलि मति स्फल सम्मति तिक्ख२८
इम वलि भिंटि उक्त अजंट, कृत दुव२ राज्य सुव गत कंट॥
इम मुरि हड्ड६१इंद अमात्य, बुंदिय भू बहिष्कृत ज्ञात्य॥ २९॥
सासन स्वसिर निवहन सूर, हुव नत आइ स्वामि हजूर॥
विदलित विश्विख प्रतिबल बाद, प्रभु किय कज्ज सिद्धि प्रसाद३०
मेचक१ तदनु उतरत मग्ग९, अधिगत पक्ख धवलित२ अग्ग॥
चलि जहँ तीज३ तिथि ससि वार२, विरचिय गोठदगोन विचार३१
करि दुविलान१ इक्क१ मुकाम, रुचि गय गोठपुर२ प्रभु राम२०॥
साहब कालफिल्डरहु संग, दल सह पत्त सूचित ढंग॥ ३२॥
पट्टनिनेर रन करि पुव्व, अरिदहि अंबुगसि१ किं उव्व२॥
खिरि बलवंत२०१तिलतिल खेत, सूचित भ्रात१ सूनु२ समेत३३
तिहिं किय सभ्य निज त्रिदिवेस, सुत लघु भोमं२०२ तस रहि सेस॥
तब दिय तातें आसन ताहि, नृपवर प्रीति१ रीति२ निबाहि॥३४॥

*अपने राजा को लक्ष्मीवान् बनाकर॥२५॥२६॥ १ पहले मुल्क के [illegible] सभा से ॥ २८ ॥ २ फिर अजंट से मिलकर, बुंदी की भूमि के बाहर ने गए ३ उक्त (कृष्णराम) ॥ २९ ॥ ३० ॥ ४ शुक्लपक्ष के प्राप्त होने पर ५ गोठड़ा नगर में जाने का विचार किया ॥३१॥ ६ सेना सहित ॥३२॥ ७ समुद्र में ८ वड़वाग्नि के समान ॥ ३३ ॥ ९ इन्होंने उस बलवंतसिंह को अपना सभासद किया जिसका छोटा पुत्र १० भोमसिंह बाकी रहा जिसको ११ पिता का पाट दिया ॥ ३४ ॥

लहि जस आइ पुनि दुबिलान, अहै कछु रमि सिकार अमान ॥
परतट[२] जो अजंट पठाइ, इत पुर अप्प बिलासिय आइ ॥३५॥
समुझहु यह१८८२हि लग्गत साक, जट्टन खंडि मंडि कजाक[३] ॥
तोपन भरतपुर गढ तोरि, मृध[४] जय सबन मान मरोरि ॥३६॥
थिर सब देस१ पुर२ बस थप्पि, अर्भक[५] नृपहिं सो पुनि अप्पि ॥
करि यह कंपनी[६] जय काम, नृप१ अयर[७] उद्धरिय जस१नाम२ ३७
भाकत कतिक इहिं १८८२ सक भाव, बर्मा नृपहु तास बढाव ॥
सूबा अराकान१ स्वकीय, तिम बलि तनासरम२ द्वितीय२ ॥३८॥
द्विकर२ यह अंगरेज७न दिन्न, कतिकन[८] यत्र संसय किन्न ॥
समुझहु ता१८८२हि सूचित साक, जैपुर ठानि कपट कजाक ३९
श्रावक इक्क१ झूंत[१०]१ सनाम, करि तिहिं धुत्त[११] धुत्तन काम ॥
अंतर भेदि सब अवरोध[१२], बहु दल छलि रानिन बोध ॥ ४० ॥
मुख्य जु भट्टिनी[१३] तिन माँहिं, निस्त्रप[१४] नाँहिं जिहिं किय नाँहिं ॥
तिय वह भट्टियानिय१ तास, हुव करि द्वैशहि कुल उपहास ॥४१॥
रूपा किंकरिय अघरत्त, तस हुव मुख्य मंत्रिय तत्त ॥
इत राहि झूंत२ बाहिर ईस, उत द्वैव[१५]२ उक्त मध्य अधीस ॥ ४२ ॥
श्रावक छुद्धि फंद पसारि, राउल बैरिसल्ल बिदारि[१६] ॥
बाहिर मुख्य झूंत१ हुबोध, रूपां१ धाँसखी[१७] अवरोध ॥ ४३ ॥

१कुछदिन २चम्बल नदी के पल्ले किनारे ॥३५॥ ३ युद्ध करके जाटों को मारकर ४युद्ध में ॥३६॥ ५बालक राजा को भरतपुर पीछा देकर ६ ईष्ट इंडिया कंपनी ने जय का काम करके भरतपुर के राजा और ७ आगे आनेवाले समय के शुभ भाग्य के यश और नाम का उद्धार किया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ कितने ही लोग इसमें संदेह करते हैं ॥ ३९ ॥ १० झूंताराम नामक ११ धूर्त ९ सरावगी वैश्यने धूर्तों का काम करके १२ सब जनाने को अपने में मिलाकर ॥ ४० ॥ १४निर्लज्ज १३ भटियानी राणी ने नाहीं नहीं की ॥ ४१ ॥ भीतर राणी भटियानी और रूपां बडारन ये १५ दोनों ही मालिक रहीं ॥ ४२ ॥ १६ निकाल कर १७ जनाने में रूपां बडारन उसकी मंत्री रही ॥ ४३ ॥

मन जिहिँ भ्रूंत१ रानिश्न मेलि, खलपन खेल अद्भुत खेलि ॥
महलन छन्न द्वैरहि मिलाइ, समुचितं राउलहिँ निकसाइ । ४४ ।
बहु वसुं२ अंगरेजनश्रप्पि, थिर सब तंत्र३ अप्पन थप्पि ॥
कति अवरोधजन४ प्रतिकूल, सह हठ जे लखे हिय सूल । ४५ ।
जे सब नारि१ नाजर२ जूह, आये न लखि निज मति ऊह५॥
गहि तिन्ह पटकि कैद६ अगार, दुष्टन रुद्ध करि करि द्वार । ४६ ।
गन बहु ठानि अनसन७ गूढ, मारे सतन८ जन करि मूढ ॥
सिसु बय पिक्खि नृप जयसीह, बहि त्रिक३ नास तास अबीह९ ४७
मिलि तह स्यामसिंह४।१प्रमत्त, प्रभु स्वसुरत्व१० चाहि जिहि पत्त॥
सठ इक चिमनसिंह५।१ सनाम, धरि भव मनोहरपुर धाम ।४८।
जो खल हो खवासिमजात११, यह द्विक२ सेख कुल इत ख्यात ॥
मालिक उक्त रानिय१ माँहिँ, अभिमत किंकरी२ जुत आँहि४९
इत हुव उक्त जुग२ जुत एस, बाहिर भ्रूंत१वैश्य१३ बिसेस ॥
तँहँ इम नारि दुव२ नर तीन३, इम मिलि मुक्त राज्य अधीन ॥५०॥
हठ वस भ्रूंत१ रानिय२ द्वैरहि, हाकिम उग्र सब सिर ठहहि ॥
असहन१५ जे लखे भट ओर, जिन्ह दिय काढ्ढि घर बरजोर१६ ॥ ५१ ॥

१ राउल बैरीशाल उचित था जिसको निकाल दिया ॥ ४४ ॥ २ अंगरेजों को बहुत धन देकर सबको अपने ३ आधीन कर लिया ४ कितने ही जनाने लोग विरुद्ध थे ॥ ४५ ॥ ५ इनकी बुद्धि की तर्कना से नहीं आये ६ कैद घर में ॥ ४६ ॥ ७ छाने निराहार रखकर ८ सैकड़ों मनुष्यों को मार डाले, राजा जयसिंह को बालक जानकर इन तीनों (एक भ्रूंताराम और दोनों उपरोक्त स्त्रियों) की ९ निर्भय त्रास बही ॥४७॥ १० रावराजा रामसिंह का स्वसुर ॥ ४८ ॥ ११ पासवान स्त्री से उत्पन्न १२ रूपां नामक दासी सहित तीनों आदर पायेहुए तथा उस रानी का अभीष्ट साधनेवाले थे ॥ ४९ ॥ १३ भ्रूंताराम वैश्य १४ इस प्रकार दो स्त्रियां भटियानी और रूपां और तीन पुरुष (भ्रूंताराम और दोनों सेखावत) इन पांचों ने मिलकर सब राज्य को अपने अधीन करके भोगा ॥ ५० ॥ १५ नहीं सहने योग्य १६ जबरी से निकाल दिये ॥ ५१ ॥

नतसिर जे रहे बल नासि, मुरुपहु ते लयेहि बिसासि ॥
जयपुर ईस१ तजि भजि जार२, इम हुव अंधकार अगार ॥५२॥
राउल जो प्रधान बिरत्त, प्रेरित मान बिनु गृह पत्त ॥
सो रहि द्रंग निज सामोद, कट्टहि काल पत्त प्रमोद ॥५३॥
मिलि सक अग्ग अहि धृति१८८३ मान, थिर गिनि अज्जभुव नि-
ज थान ॥
हो इह नवम९ जनरल हंत, जिहिं कहिं सिंधु जुग२ परजंत॥५४॥
अवहित कंपनीजन आनि, मन निज छंद अज्जन मानि ॥
अब दिय यह निदेस, अभंग, स्त्री जिन१ दहहु निजपति२संग॥५५॥
थित पुनि नवम९जनरल थान, अह कछु मटकलप१०१अभिधान
अज्जन रोध मेटि असेस, दिय जिहिं सुद्धि लेख निदेस ॥ ५६ ॥
तिम लिखि खबर छंद तब तेहि, हुव मिथं प्रइत जित तित हेहि ॥
सक इत उक्त १८८३ मिति अनुसार, बनि जहँ छद्मुख तिथि६
बुध वार ४ ॥ ५७ ॥
पगि सित२ पक्ख श्राम सहस्य१०, रुचि मन कोहु कज्ज रहस्य ॥
पिप्पललंब जहँ तहँ प्रात, अह चढि पंच५ नाडियँ आत ॥५८॥
गदियत खेरला१ जहँ ग्राम, आवत मटकलप१०१ अभिराम ॥

१ मस्तक झुकाकर ॥ ५२ ॥ २ प्रधानपन से विरक्त ३ विना मान होकर घर गया ॥ ५३ ॥ ४ आर्यावर्त्त को अपना निश्चल स्थान समझ कर. खेद है कि जिसका कथन पूर्व और पश्चिम के दोनों समुद्रों तक था उस नवमें गवरनर जनरल ने ॥ ५४ ॥ ५ कंपनी के लोकों को सावधान करके यह आज्ञा दी कि स्त्रियों को अपने पतियों के साथ ६ मत जलाओ अर्थात् सती होना बंध किया ॥ ५५ ॥ ७ कुछ दिन ८ आर्य लोकों की सम्पूर्ण रोक मेट कर खबर के लेखों (अखबारों) की आज्ञा दी ॥ ५६ ॥ उसी समय से ९समाचार पत्र लिखे जाकर १० परस्पर प्रेरित हुए जो अब तक हैं ११ स्वामिकार्तिक की तिथि (ज्योतिष में छठ तिथि का स्वामी स्वामिकार्तिक है) ॥ ५७ ॥ १२ पौष सुदि १३ पांच घड़ी दिन चढे ॥ ५८ ॥

इतसिंग धूम्रशिराम१ अमात्य, जिहिं जस जातरूप कि जात्य२ ॥५९॥
पहुँचि सु खेरला हद पास, मिलि जिम पंगु३सन कइमास२॥
इम तिहिं लै मुरयो मग आस, सज्जिय ताल१ तालहरा१ स ॥६०॥
जनरल नवम९ प्रतिनिधिजो१हि, संभर मंत्रि पटु१ इत सोहि॥
ख्यात जु जवन अमियतखान३।१, थित ढिग सो वकीलहु थान६१
जहँ इम जाम त्रिक३ निस जात, परि खिल जाम इक१हि प्रात ॥
व्हाँसन होइ प्रस्थित प्रीत, आवत ग्राम१ तीन३ अतीत ॥६२॥
गहि नवग्राम३।१ उत्तर४।७ ओक, चहि जह रम्य आयत चोक ॥
प्रभु उत आइ सम्मुह पत्त, रहि थित रीतिक्रम अनुरत्त ॥६३॥
मिलि तहँ मटकलप१०।१ महिपाल२, बाहुरि तुष्ट नेह बिसाल॥
रहि वह१ चैलगृह अनुरत्त, प्रभु२ इत सुभ्र सौधन पत्त ॥६४॥
इह गुरु५ सप्तमिय७ अवदात, जहँ निस इक१ नाडिय जात॥
भिटन भूप१ सूरि१ सतेज२, आइउ उक्त तहँ अंग्रेज२ ॥६५॥
सु बिसत छत्रसौध समाज, अभिमुख उठि तब अधिराज ॥
जिम बिधि अद्ध अंगन जाइ, आनि सु संग हित अधिकाइ ॥६६॥
बैठिय इक१ पीठं१ बिसेस, अभिहित अंगरेज१ इलेस२ ॥
जहँ कछु बिजन मंत्रहु जोरि, बखासिय अतर१ पान२ वहोरि६७
जनरल दसम१० सम्मत जोहि, हाकिम सबन सिरपर होहि ॥
तिहिं क्रम अधिक आदर तास, करि दिय सिक्ख प्रीतिप्रकास६८
जिहिं पुनि अजिर दल लग जाइ, प्रभु इस बाहुरिय पहुँचाइ ॥

जिसका यश १श्रेष्ठ २चांदी के समान था ॥५९॥ ३ जयचन्द्र से कैमास मिला जैसे ॥ ६० ॥ ४ कायम मुकाम ॥ ६१ ॥ ५ एक पहर रात्रि बाकी रहते ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ६ डेरे में ७ श्वेत महलों में ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ८ छत्रमहल की सभा घुसते ही ९ पेसवाई को ॥ ६६ ॥ १० एक आसन पर ११ कहाहुआ अंगरेज और भूपति १२ एकांत सलाह करके ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १३ आधे चौक तक

वह गय तिंदनु जनपदं इष्ट, संभर बिभव बिलसत सिष्ट ॥ ६९ ॥
सुचित१८८३ सकहि तनि गृह सोक, लिय इत संधिया परलोक॥
रहि अवलों सु दोलतराव, पावत पद पटेल पसाव ॥ ७० ॥
जितजिय वेरैं तिहि इहिं वेर, गृह गृह हंत हुव ग्वालेर ॥
इहिं सुत कृतक तात अभाव, रहि तस पट्ट जनकुव१राव ॥ ७१ ॥
माहजि१ पुग२ पुग३ सु मानिं, किय तिम अंगरेजन कानि ॥
इत प्रभु अप्प हड्ड६१न अर्क, सज्जन सिद्ध इद्ध उदर्क ॥ ७२ ॥
सत्थिन सत्थ उक्त १८८३हि साक, काननं मंडि दोर कजाक ॥
वड्डिय घात पात बिभक्ति, सक्किन कोल वेधन सक्ति ॥७३॥
दोरत पिट्ठि बाजिन देत, लघु वढि अप्प किरि हनि लेत ॥
वढि वढि दें पटी इक१ वीच, करि करि मग्ग सोनित कीच॥७४॥
हुव२ अप२ बेधि इम छितिदोर, भूपति बंटि सत्थिन भार ॥
अंगामि अप्प किति अछुत्त, जहँ पुरि तोलें अरुघान जुत्त ॥ ७५ ॥
आवहिं सिद्ध सस्त्र अगार, बत्सर पंद्रह१५ वय वार ॥
मिति चउ अट्ठ धृति१८८४ सक माप, इत पुर नंदग्राम इलाप७६
जनजाम आयु लहि विधि जोर, किय निज देह हानि किसोर ॥
पितृव्यत३१ मंगरोल प्रघात, गय नृप भ्रात लघु तजि गात ॥७७॥
तस सुत पट्टपाति किय तीम, रचिवहिं रामसिंह सनाम ॥

१जिसप्रकार जहां जानेकी इच्छा थी उस देशमें गया और नहुवाव(रामसिंह) ने ऐश्वर्य वैभव का विलास किया ॥६९॥७०॥ उसने इस समय १ मारीर छोड़ा ५ कृतक (गोद लिये हुए) ने पिता के अभाव में ग्वालेर का पाट लिया ॥७१॥ ६ आगामि शुभ कर्म फल सो॥७२॥७ जनमंद८ पराक्रियों के सूवरों को वेधनेकी शक्ति ॥७३॥ ६ और पटके सूवरों को मारलेते हैं ॥७४॥१०सूवरों को ११रस्ते में खाल जातों सहित सूवरे हैं ॥७५॥ कोटाके १२नृपति ॥७६॥१३किशोरसिंह ने शरीर छोड़ा १५ मंगरोल के युद्ध में राजा किशोरसिंह का छोटा भाई १४ पृथ्वी-सिंह मरा था ॥ ७७ ॥ उसके पुत्र को १६ यहां पाट का पति किया

हिंसत नाग१८८४हि सक समकाल, मृतइत उदयपुरमहिपाल७८
*रतजस भीमसिंह जु१ रान, जिहिं सुत भो अधीस जवान२ ॥
बलि अब लखनेउव वात, जहँ सुत लघु सहादत१ जात ॥ ७९ ॥
दिय असु गाजिमुखयुद्दीन२, रहि इम तह नसीरुद्दीन ॥
सूचित१८८४सकहि बाहुल८स्वेतर, प्रतिपद१वीर१रवि संमुपेत ८०
निजकवि जनक चंड सनाम, तुम प्रभु पूज्य मन्निय ताम ॥
करि इक बैठि अग्ग कुमंत, अंबकद्रंग लिय बलवंत२०१ ॥८१॥
तबसन राबरे प्रभु तात, खिजि हुव भ्रात सिर अनखात ॥
कविबर चंड तदपि लुकेन, रुचि बस गोठ जात रुकेन ॥ ८२ ॥
तब नृप इतहु भासत भीम, तिन्ह प्रति बंध किय ताजीम ॥
सो अब उक्त१८८४खिन अनुसार, प्रभु पुनि अप्पदिय करिप्यार८३
सत्थहि खास हय२ सिरुपाव४, भूधव तुष्ट दिय हित भाव ॥
आदरि चंड कवि इम अप्प, दलि किय नष्ट कृपनन दप्प८४
इत सर नाग धृति१८८५ सक्क आत, अह जह नवमि९मधु१ अव-
दात१ ॥
विक्रमनैर लहि बिधि वाम, नृप मृत सुरतसिंह१ सनाम ॥ ८५ ॥
तस सुत रत्नसिंह२सु तत्थ, हुव नृप राज्य करि निज हत्थ॥
सकतिहि१८८५बिसद२फग्गुन१२मामें,इतपुरकापरनिअभिराम ८६

॥७८॥*यशमें अनुरक्त रहनेवाले महाराणा भीमसिंहका देहान्त हुआ जिनका पुत्र जवानसिंह उदयपुर का पति हुआ॥७९॥१लखनेऊ का नवाब गाजियुद्दीन मरा २ कार्तिक सुदि पक्ष में ३ रवि वार सहित ॥८०॥ ४ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल के पिता चंडीदान को हे प्रभु (रामसिंह) तुमने उनको पूज्य माना ५ बलवंतसिंह ने खोटी सलाह से नैणवा नगर लेलिया था ॥ ८१ ॥ ६ गोठके जाते नहीं रुके ॥ ८२ ॥ ७ आपने प्यार करके वह ताजीम पीछी दी ॥ ८३ ॥ ८ भूपति ने प्रसन्न होकर ९ दर्प (घमंड) ॥ ८४ ॥ १० चैत्र सुदि नवमी के दिन ११ बीकानेर में ॥ ८५ ॥ फाल्गुन १२ मास के शुक्ल पक्ष में ॥ ८६ ॥

हव लहि बंधु *परिणाय हेत, नृप गय निज †पितृव्य निकेत ॥
करि तहँ कज्ज बिधि सतकार, आगत कित्ति जित्ति अगार ॥८७॥
बनि सामंत सुत उत बिंद, ‡अंहति उचित ठानि आनंद ॥
सरसथुरा१रूप नैर सिधारि, सोधित लग्न खिन अनुसारि ॥ ८८ ॥
कुमरिय जो मनोहर केर, बनि आनंदकुमारि सु बेर॥
बासर कतिक्क तत्थ बिहाइ, छिति थिति अमिति चिंतिजसछाइ८९
सुत बलदेव१ इम बल सत्थ, जनकहु जाइ व्याहि सु जत्थ॥
लालित लै बधू१ बर२ लार, आगत रम्य गम्य अगार ॥ ९० ॥
इत हय हत्थि धृति १८८७ सक आत, सिति१ दल१ सुक्र३ मास सुहात ॥
प्रभु तहँ अनुज निज गोपाल२०२।४।१, सानुज बिनैपहरि२ आरि साल ॥ ९१ ॥
भेजिय दुवरहि व्याहन भ्रात, बल साजि भिन्न भिन्न बरात ॥
गागरनी पुरी पति गेह, अग्रज१ बिंद गो इत एह ॥ ९२ ॥
तिहिं रघुनाथ व्याहिय ताम, नंदिनि चंदकुमरि२०२।१ सनाम ॥
बारिबर१ रहअरि२ बिनीत, अह कछु किन्न तत्थ अतीत४ ॥ ९३ ॥
पित्थल१ रान बँश्य प्रधान, सह तह खाँहमीद२ सुजान ॥
किय जुगर सुरूप तहँ जस कम्म, दिय तिन त्याग सहँसन दम्म१
भूखन१ बस्त्र२गय३हय४मोलि५, खिल सब द्रव्य को सन खोलि॥
अंहति भट्ट लहि अधिकार, हुव ब्रजलाल बंटनहार ॥ ९५ ॥
इम करि आढय जाचक जात, बहुरिय गम्य बट्ट बरात ॥

---

*विवाह के कारण † काका के घर गये ॥ ८७ ॥ ‡ दान ॥ ८८ ॥ १ यश का समूह छाकर ॥ ८९ ॥ ९० ॥ २ ज्येष्ट मास के आधे शुक्ल पक्ष में ३ विनयसिंह ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ४ तहां कितने ही दिन वितीत किये ॥ ९३ ॥ ५ राणा के वंश में प्रधान (राणावत) ॥ ९४ ॥ ६ ऊंट ७ दान का अधिकार ॥ ९५ ॥

इत पुर पहुँचि उनियाराहु, लिप यरि बिनयसिंह नृप लाहु॥९६॥
सुत तहँ भीम भव *दासेय, गुन पटु नाम जालिम गेय ॥
तनुजा रूप१ गुन२ जुत तास, आनंदिकुमरिय१ तास ॥ ९७ ॥
बिधि सह बिनयसिंह१ उव्याहि, गनबसुदत्त जस अवगाहि ॥
कूरम बिरदसिंह१ कुमार, इत हुव मुख्यपन अधिकार ॥ ९८ ॥
कहि तहँ रत्न१ भट्ट कुलीन, क्रम हित त्याग बंटन कीन॥
सद स्वामिपन गत सल्ल, मन्त्रि सु जान सुत फतमल्ल ॥ ९९ ॥
निज करि स्वामि तिहिं जुत नेह, अरु हुव सचिव जालिम एह ॥
जिहिं जामात हित बसु जाल, बहुबिध हेरन दत्त बिसाल ॥१००॥
इत इन बंटि बहु बसु भ्रात, हंकिय हुलसि बट्ट बरात ॥
इन कँहँ स्वसुर नारव आइ, चल्लिय सरनि हद पहुँचाइ ॥१०१॥
इम हुव उभय२दिस उपयाम, किय बिधि बिचहि असहन काम॥
इत नृप मान ताहि अनेह, बाढन बहुल सद्वि सनेह ॥१०२॥
निज लिपि पत्र प्रीति निकेत, सतदुव२०० सादि संघर समेत ॥
चारन इक१ जिहिं नृप चित्त, मानस खास खिलिबत मित्त ।१०३॥
जो सुत जुगत नामक जात, भैरव स्वीय नाम भनात ॥
सो इत पठ्यो बँनसूर, हित हित हड्ड६१ हेलि हजूर॥ १०४ ॥
दक्खिन३३ द्रंग बाह्य प्रदेस, आतहि उत्तरिय तहँ एस ॥
वहुबलँ दुश्दिस प्रस्थित बिक्खि, सठ इत दुरित छल बल सिक्खि

॥९६॥*दासी का पुत्र ॥९७॥९८॥९९॥१दहेज ॥१००॥२नरुका ३मार्ग में ॥१०१॥ ४ विवाह ५ नहीं सहन करने योग्य ६ उसी समय जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने ७ बहुत स्नेह बढाने के लिये ॥ १०२ ॥ ८ दो सौ सवारों के समूह सहित ॥ १०३ ॥ ९ जुगता का पुत्र १० भैरवदान नामवाले ११ बधसूर शाखा के चारण को १२ हाडाओं के सूर्य (रामसिंह) की हजूर में भेजा ॥ १०४ ॥ १३ नगर के बाहर दक्षिण दिशा में उतरा. १४बुंदी की सेनाको विवाहों में दोनों ओर गईहुई देखकर ॥ १०५ ॥

कुसोचित पट्टरानिय केर, बिच पुर जे जुरे तिहिँ बेर॥
मिलि तह कृपराम१ अमात्य, बलि सरदारमल्ल२हु भ्रात्य ॥१०६॥
निस इक१ बिप्र१ पोखरनीय१, बानिज ओसवाल२ बिईय२॥
इन बिच तीसरो३ अघऊत, बाहुज३ सिंह३अंत बिभूत३ ॥१०७॥
यह रट्ठोर मेरतियाहु, बलि हुव भीर कहि भल बाहु ॥
इम द्विज१एक१ ऊरुज३ एक१, बाहुज२ एक१ हीन बिबेक ।१०८।
मिलि त्रिक३ एह मंडिय मंत्र, तनि छल प्रात होहु स्वतंत्र ॥
मारहु कृष्णराम१ अमात्य, प्रतिभट होहु लेहु निपात्य ॥ १०९ ॥
इन्ह बल ठपाज जुग गत आँहिँ, निरखहु कोहु रोधक नाँहिँ ॥
बिलसहिँ राज्य करि निज बश्य, रक्खहु रत्ति गूढ रहस्य ॥ ११० ॥
भूपति चहै इक सुख भोग, नकरहिँ नैक जास बिजोग ॥
जन इम रीझि प्रभु जामात, मन्नहिँ मुदित बिलसन बात ॥१११॥
जो कछु बिघ्न बिच परिजाइ, प्रेरहि भूप भट हठ भाइ ॥
जुब्बहु जानि हैं भय भार, तो निज तंत्र दक्खिन२।३ द्वार ॥११२॥
दुवसत२०० सादि भट समुदाय, समुझहु अप्पनैंहि सहाय ॥
जिन्ह बल दंग बाहिर जोरि, बस निज द्वार पेठि बहोरि ॥ ११३ ॥
करि इम निश्चतैं इच्छित कज्ज, अंगमि लेहु लुंठिय अज्ज ॥
जैपुर जो करी हम जाइ, पुनि इह क्यों न संभव पाइ ॥११४॥
सुनि द्विज१ मंत्र यह दृढ संधँ, कृतघन ओसवाल२ कबंध३॥

१ पाटवी रानी के खोटे सधिघनं २ शूद्र ॥ १०६ ॥ ३ वैश्य ४ क्षत्रिय ५ विभूतसिंह ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ ६ जो मुकाबला करनेवाला होवे उसको भी मारो ॥ १०९ ॥ दोनों सेना गई हुई है. इस कारण अपने ७ छलको ८ रोकनेवाला कोई नहीं है ९ राज्य को वश में करके भोगेंगे १० इस सलाह को रात्रि में गुप्त रक्खो ॥ ११० ॥ ११ राजा अपना जमाई है सो ॥ १११ ॥ १२ दक्षिण का द्वार आपने स्वाधीन है ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ १३ निश्चय ही चाहा हुआ कार्य करके ॥ ११४ ॥ १४ दृढ प्रतिज्ञा

तिहिँ निस तीन३ ठहे इक१ ..त्र, सदनन सुप्त मंडिय मंत्र ॥११५॥
प्रेरिय सुद्धि हित चर प्रात, जदपि न नेक अवसर जात ॥
जहँ गत अंघ्रि१ऊन दुर२जाम, तहँ लखि इष्ट संभव ताम ॥ ११६ ॥
अग गज अह ससि१८८७सक आहि, अधिगत सुक्र५मास अमा३०हि
तहँ तिथि उक्त भुक्त अनेह, अनुचित एह तकि त्रिक३ एह॥११७॥
ाहुजं२ नाम सालुव१ बुल्लि, खलपन मंत्र तिहिँप्रति खुल्लि ॥
आक्खिय कृष्णाराम१ अमात्य, घर अब है जु इकल१ घात्य ११८
आवहु ताहि जो हनि अज्ज, कृत मत होत सब निज कज्ज ॥
तो भट ग्राम दे दस१० तोहि, करिहैं ईस सब बेल कोहि ॥११९॥
सुनतहि एह सालुव सज्जि, मन तस बीररस बस मंज्जि ॥
लेय गहि सानसित खैर खग्ग,मुरि लिय सचिव पैरिखद मग्ग॥१२०
त जिहिँ सचिव संसद द्वार, पहुँचत ठानि दंभ प्रसार ॥
पठई कहि मुसाहब पास, बिन्नति करन संधिय१ ठपास२ ॥१२१॥
भेजिय मोहि सत्वर भाखि, अप्पहिँ सूचिबे अभिलाखि ॥
जो मुहिँ बिजँन खिन मिल जाइ, तुमकहँ तो सु गोप्य सुनाइ१२२
करिहो सिष्ट जो इहिँकाल, कहिहौं सोहि जाइ कृपाल ॥
बिगरहिँ कज्ज होइ बिलंब, बज्जहिँ तो अंपष्ठुर बंब ॥ १२३ ॥

१घरोंमें सोते हुओं ने यह सलाहकी ॥११५॥ प्रभात ही२खबरके लिये हलकारे को भेजा ३पौने दो पहर जाने पर४तहां ॥११६॥५ज्येष्ठ मासकी अमावास्या के प्राप्त होने पर ६उक्त तिथि के भोगने के समय ॥११७॥७सालू नामक क्षत्रिय को बुलाकर ८ घात करने (मारने) योग्य ॥११८॥ ९ सब सेना का सेनापति करेंगे ॥ ११९ ॥ उसका मन वीर रस में १० डूबगया ११ हाथ में साण से तीक्ष्ण कियाहुआ १२तीक्ष्ण खड्ग लेकर१३सचिव की सभाका मार्ग लिया ॥१२०॥ १४ सभा के द्वारपर ॥१२१॥ १५ शीघ्रता कहकर १६ आपको सूचना करने को भेजा है १७ एकान्त समय मिलजावे तो तुमको वह १८ गुप्त वार्ता सुनाऊं ॥ १२२ ॥ १९ इस समय जैसा शिष्टाचार करोगे वैसा ही जा कहूंगा २० निन्दा के तथा विपरीत नगारे बजेंगे ॥ १२३ ॥

सुनियत धाइभ्रात असेस, जो पटु जदपि दिष्ट१ रु देस२ ॥
पै परि गहन कुक्कुटि पास, हुव बहु पटुन पुब्बहु ३हास ॥१२४॥
मन ऋजु४१ सत्यबैन२ अमूढ३, गहत न कुमति कुहकन गूढ ॥
जु कहै सत्य सुहि दृढ जानि, उरझत पास मग पग हानि ।१२५।
चतुरहु सचिव इम हित चाहि, तिहिंखिन निकट बुल्लिय ताहि ॥
इम ढिग सचिव सालुव१ आइ, सकुसल सब उदंत सुनाइ ।१२६।
लघुगति बिप्र आसिख१ लार, जिहिं कहि ओसवाल जुहार२ ॥
खल हनि पास पहुँचत खग्ग, इक१कर किन्न छिन्न अलग्ग१२७
असि सुहि झारि पुनि तस अंस, बल्लिय साचिउर१ सह६ बंस२ ॥
परिजन दभ्र७ तहँबिस३।१पज्ज४।२,कछुरहिदूर निबहत कज्ज१२८
जितजित ते दुरे भय जानि, सचिवहिं सत्रु इत मृत मानि ॥

वह चतुर था तोभी १ देश काल के कारण २ उस छली की पाश में पड़गया सो इसी प्रकार पहिले भी बहुत चतुरों का ३ नाश होगया है ॥ १२४ ॥ ४ सरल (सीधे) मनवाले और सत्य बोलनेवाले चतुर छली लोगों की छिपीहुई बुरी बुद्धिको नहीं जान सकते और जो वह कहै उसीको सत्य जानकर उसकी पाश में उलझ जाते हैं ॥ १२५ ॥ इस प्रकार उस चतुर सचिव ने भी हितकी चाह से उस समय उसको पास बुला लिया ॥ १२६ ॥ ५ छोटा कहै जैसे उस ब्राह्मण का आशीर्वाद कहकर ओसवाल वैश्य (सिंघी) का जुहार कहा और उस दुष्टने समीप पहुँचते ही तरवार मारकर उस धाय भाई का एक हाथ काट कर अलग करदिया॥ १२७ ॥ उसी तरवार को फिर उसके कंधे पर मारी सो ६ तिरछी होकर छाती सहित पीठ की बांसे की हड्डी को काट डाली ७ उस समय पास के लोग कम ही थे एक वैश्य और दूसरा ८ शूद्र था जो भी कुछ काम करते हुए दूरही थे ॥ १२८ ॥ ९ (*) मराहुआ जानकर

(*)यहनोट लिखतेहुए हमको बहुत खेद होताहै क्योंकि इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने इसग्रन्थमें इतिहासलिखने में अपूर्व रीति से सत्यका निर्वाह किया है जिसमें यहां आकर इस नोट से उस सत्यता पर कलंक आताहै, परंतु सत्यके अनुरोध से हमको लिखना पड़ता है, अर्थात् महारावराजा रामसिंह के विवाह और कृष्णराम धायभाईके मारेजानेमें जो वृत्तान्त जोधपुरकी ख्यातमें लिखा है उसमें और सूर्यमल्ल के कथनमें बहुत अन्तर है और यह ख्यात उसी समय की लिखी हुई होने से विश्वासनीय है इसके अतिरिक्त इस ख्यात का

लिखना अनेक ख्यातों के लेखों से प्रामाणिक सिद्ध होगया है इस कारण जोधपुर की ख्यात का सारांश नीचे लिखाजाता है कि रावराजा रामसिंह के विवाहके व्ययके अर्थ कृष्णराम धायभाईने कोटाके सेठ दानमल जोरावरमल से दो लाख रुपये ऋण लेकर खत लिख दिया जिसकी खबर जोधपुर के महाराजा मानसिंहको हुई तब अपने भले आदमी भेजकर उक्त सेठ के रुपये चुकाकर वह खत असल ही अपने पास मंगवा लिया और विवाह के समय वह खत, पचास हजार रुपये नकद और पचास हजार रुपयों की मोल्यकी मोतियोंकी कंठी इनके साथ अपनी पुत्रीके हतलेवेमें रख दिया, इस खतके हतलेवेमें रखनेके कारण कृष्णराम धायभाई बहुत अप्रसन्न हुआ कि महाराजा मानसिंहने असली खत हतलेवे में रखकर हमारे राज्य का हतक कर दिया और इसी अप्रसन्नता के कारण यह प्रसिद्ध किया कि इसी बरात से वहां से ही सीधे झूंझनूं जाकर रावराजा साहिबका दूसरा विवाह किया जावेगा, इस बात से महाराजा मानसिंह भी बहुत अप्रसन्न होगये और आज्ञा की कि एक बार जोड़े सहित बुंदी में जाकर पीछे जो चाहै जहां विवाह करै परन्तु बाईको मार्ग में छोडकर जाना अनुचित है इसीकारण बाईको पहुँचाने के नाम से सिंघी मेघराज आदिके साथ अपनी सेना देकर पहुँचाने को भेजे जिन्होंने रावराजा को परभारे झूंझनूं नहीं जाने दिया और बुंदी लेगये और कंकनडोरे खोले पीछे दूसरे विवाह के अर्थ जाने दिया.

कुछ समय पीछे महारावराजा रामसिंह की माता जो कृष्णगढ के महाराजा कल्याणसिंह की बहिन थी उससे और उक्त रावराजा की महारानी (महाराजा मानसिंह की पुत्री) से बहुत बिगाड़ होगया और कृष्णराम धायभाई उक्त माजीसाहिबा का कृपापात्र था जिसको बाईजी साहिबा (जोधपुर के महाराजा मानसिंह की पुत्री) ने अपने पीहरवालों के द्वारा मरवाडाला उस समय महाराजा मानसिंह ने अपनी पुत्रीको लानेके लिये बणसूर शाखाके चारण भैरवदानको जमइयत के साथ भेजा था उसके वहां पहुँचने पर उक्त धायभाई मारागया तब रावराजा साहिब की माताकी आज्ञासे जोधपुरवालों पर तोप चलना प्रारम्भ होकर लड़ाई होनेलगी तब भैरवदान अपने लोगों सहित कोटाके राज्य नानते में चलागया और अभूतसिंह आदि नौहरे के लोग मारेगये जिसपीछे महारानी राठोडी को मारनेके लिये उनका महल घेर लिया गया परन्तु महारानी की लौंडियां बंदूक आदि शस्त्र लेकर खड़ीहोगई और किंवाड़ बंद करलिये इससे बचगई और यह खबर कोटा में बूड़सू के ठाकुर प्रतापसिंह के पास भेजी सो उक्त ठाकुर और भैरवदान पांच सौ सवारों से बुंदी गये और अपनी बाईके महल का घेरा उठाकर चार दिन से अन्नजल रोक रक्खा था सो पहुँचाया और उसी समय पर अजंट साहिबने आकर दोनों ओर का बखेड़ा मिटादिया, यह वृत्तांत सुनकर जोधपुरके महाराजा मानसिंह ने ठाकुर प्रतापसिंह का बूड़सू का ठिकाना पीछा बखश दिया अर्थात् बूड़सू का ठिकाना खालसा होजाने के कारण ठाकुर प्रतापसिंह कोटे में जा नौकर हुआ था सो उक्त सेवा के कारण बूड़सू का ठिकाना पीछा बखश दिया गया. बुंदी और मेवाड़वालों के द्वेष है इसी प्रकार बुंदी और जयपुरवालों के भी द्वेष चला आता है इसी कारण इन राज्योंवाले परस्पर एक दूसरे की अनेक निन्दनीय बातें उडा दिया करते हैं जैसे बुंदीवालों ने जयपुर के झूंताराम आदि की निन्दा उड़ा रक्खी है जो इस ग्रन्थ में भी ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) ने लिख दी है वैसे ही उक्त राज्योंवालों ने बुन्दी की घड़ंतें करखी हैं परंतु मूर्खता से इर्षा द्वेष करके अनेक लोग अनेक घड़ंतें किया करते हैं वे विद्वान्

बाहुरि छिप चोर बिधान, सो लगि उत्तरन सोपान ॥१२९॥
कायथ सासिता बल केर, बिच भिरि सम्मुहो तिहिँ बेर ॥
लगि हठ नामकारि सिवलाल, कर तस नग्ग लखि करवाल१३०
बखसी ताहि धरि निज वत्थ, जुज्झिय रक्खि हानि न जत्थ ॥
सत्रुहु जो सिटयो भय भार, परसिर दै सक्यो न प्रहार ॥१३१॥
इम तहँ लुत्थिबत्थन आइ, जुज्झत द्वैर गिरे अध जाइ ॥
रचि जन जामिकन तह रीस, सालुव१ सो करयो गतसीस१३२
उपयम करन इत अनुजात, भूपति भेजि इम दुव२ भ्रात ॥
तहँ कुल पक्ख जुग२ सम तुल्लि, बीकानैर पति सुत बुल्लि१३३
जीवनसिंह१ नाम सु जाहि, वहिनिय रूपकुमारि१।२ बिवाहि ॥
रक्खन गेह तिहिँ नरराय, दिय दुवर आढ्य ग्राम१ सु दाय१३४

१ शीघ्र चोर की भांति २ सीढ़ियां उतरने लगा ॥ १२९ ॥ ३ सेनापति ४साल् के हाथ में नागी तरवार देखकर ॥१३०॥ ५शत्रु के ऊपर तरवार का प्रहार नहीं करसका ॥ १३१ ॥ ६दोनों नीचे जागिरे तहां ७पहरायतों ने क्रोध करके साल् का मस्तक काट लिया ॥ १३२ ॥ ८ दोनों छोटे भाइयों को विवाह करने के लिये ९ दोनों पक्ष बराबर तोलकर ॥ १३३ ॥ १० राजाने ११ दहेज में ॥१४३॥

लोगों को ग्राह्य नहीं होतीं इसी कारण हमने भी निंदनीय किम्वदन्तियों को छोडकर जहां तहां प्रामाणिक लेखों को ही ग्रहण किया है इसी कारण यहां पर भी जोधपुर की ख्यात की नकल कर दी गई है.

अब रहा यह कि जोधपुर की ख्यात में लिखे हुए विषय को इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने छिपा दिया यह उनकी सत्यता पर कलंक आता है परंतु सामान्यतया विचार किया जावे तो कैसा ही सत्यवक्ता होने पर भी वर्तमान समयका सच्चा इतिहास लिखना दुर्घट है यदि कोई लिखभी देवे तो भी बरनियर जैसा विदेशी ही लिख सकता है किंतु सेवक होकर वर्तमान स्वामी की सच्ची निंदा कदापि नहीं लिखसकता सो ही इस ग्रंथकर्ता के लिये जान लेना चाहिये. सूर्यमल्ल के समीप रहनेवालों से हमने सुना है कि महाराव राजा रामसिंह की निंदा लिखने से उक्त रावराजा ने सूर्यमल्ल को मना किया. इसी कारण ग्रंथकर्ता ने यह ग्रंथ बनाना छोडदिया इसीसे यह ग्रंथ अपूर्ण रहगया सो यह भी समझमें नहीं आता क्योंकि यहां सत्य का विषय छोडगये और जहां तहां प्रशंसा ही की गई तो फिर आगे जाकर इसी बात पर अड़ना समझ में नहीं आता परंतु ऐसी बातों की छान बीन करना हमको भी आवश्यकीय और अभीप्सित नहीं है ॥

भूषन२ बस्त्र३गय४ हय५ भ०प, दिय रथ६ दास७ दासिय८द०प॥
सह मह ताहि समय बिसेस, ब्याहिय जो स्वसा बसुधेस ॥१३५॥
हे इम हिठ्ठ महलन माल, मुत्तियसौध१ थित महिपाल ॥
पगि इत छद्म खग्ग प्रहारि, सालुव१सचिवमनि२ लिय मारि१३६
सुनतहि भूप इत यह सुद्धि, बिस्तरि बीरपन१ नय२ बुद्धि ॥
जँहँ पुर पत्ति संघ जितेक, तिन्ह कारि मग्ग मग्ग तितेक ॥१३७॥
चउ४ भट भेजि गोपुर च्यारि४, बस किय जे कपाट बिथारि ॥
पुब्ब१हि रोकि दक्खिन२।३पोरि, ज्यों पुनि सेस रोधक जोरि१३८
रन द्रुव२ दुग्ग सज्ज कराइ, असहन मंतुपर अनखाइ ॥
बलि केलि अप्प कसि कटिबंध, संसँद सज्ज रहि दृढ संध१३९
प्रभुढिग रहनहार प्रबीर, सब किय सज्ज कज्ज सधीर ॥
आतप उष्ण१२ऋतु अधिकात, जहँ सुत ज्येष्ट१ कृष्ण१३प्रजात१४०
मोहन१ रमन सिंह मृग०य, भूधव सिक्ख लहि चहि भ०प ॥
उत्तर४।७ गहन सह अवधान, मग वह गो त्रि३जोजन मान१४१
लघु तस भ्रात मंगललाल२, संगर अजिर पर बल साल ॥
नल निभ बाजि बिधि मतिमान, नरबर स्वामिधर्म निधान॥१४२॥
सूर रु सरलपन मन सुद्ध, बैरिहु जास मित्रहि बुद्ध ॥
तिम यह कृष्णाराम तनूज, प्रापित स्वामि सेवन पूज ॥१४३॥

राजाने १ बहिन का विवाह किया ॥१३५॥ २इस कारण राजा नीचे के महलों में ३ मोतीमहल में थे ४छल से तरवार के प्रहार को पाकर ५ सालू ने सचिवों के मणि रूपी कृष्णराम धायभाई को मार लिया ॥१३६॥ ६ राजाने यह खबर सुनते ही ७ पुर में जितनेक पैदलों के समूह थे ॥ १३७ ॥ ८ शहर के चारों दरवाजों पर ॥ १३८ ॥ ९नहीं सहने योग्य अपराध पर क्रोध करके १० युद्ध पर आपने कमर बांधकर ११ सभा में दृढ प्रतिज्ञा से सज्जित रहा ॥ १३९ ॥ १२ ग्रीष्म ऋतु की अधिक गरमी में १३ कृष्णराम का बडा पुत्र ॥ १४० ॥ सिंहकी १४ शिकार खेलने को १५ राजा की आज्ञा लेकर ॥ १४१ ॥ १६ युद्ध के चौक में १७ नलके सदृश ॥ १४२ ॥ १८ पुत्र ॥ १४३ ॥

इह पर लोहिता अभिधान, थानौ रक्खि नृप तिहिँ थान ॥
*सादिन संघ सासक मुख्य, मंगल२ तत्थ किय प्रभु मुख्य१४४
काका तनय तस जस काम, सो पुनि रत्नलाल१।३ सनाम ॥
विद्या तुपक मय जिहिँ बीर, सद्दिय बर्म मुख्य सधीर ॥ १४५ ॥
ए दुव भ्रात तिहिँ दिन अत्थ, सज्जित स्वीय हय१ भट२ सत्थ ॥
तिन्ह मन लोहितापुर जाइ, उत्सुक हनन सिंघ अघाइ ॥ १४६ ॥
पिय मद अमल वितरत पान, जिन्ह हुव देर गह चढ़िजान ॥
तत्थहि बुल्लिलिय कवितात, खिलबालि कतिक भटबरख्यात१४७
प्रभुढिग रहनहार प्रबीर, सब तहँ मिलित बिछुरन सीर ॥
तपसुं हुव सचिव इत तिहिँबार, परि सब ओर हक्क पुकार॥१४८॥
सुनतहि रत्न१ मंगल२ सत्थ, हंकिय सर्ब भट असि हत्थ ॥
इनकहँ सिंहचत्वर आत, बुल्लिय भूप ढिग सुहि व्रात ॥ १४९ ॥
ए तबै सत्रुदिस मग उज्झि, सब गय स्वामिढिग हित सुज्झि ॥
ससुभट रत्न१ मंगल२ संग, प्रभु काति रक्खि विघ्न प्रसंग ।१५०।

लसंग१ प्रसंग२ अंत्यानुप्रासः १ ॥

सचिवहिँ देहनदत्त सहाय, पठये पुत्र२ सह समुदाय ॥
दाहन जाइ पच्छिम३।५ द्वार, इन गिनि इष्ट प्रेत अगार ॥ १५१ ॥
अब्बुर्वेनाथ सिव जहँ आहि, दिय तहँ जो मुसाहब दाहि ॥
पुनि सब न्हाइ प्रभुढिग पत्त, हुव प्रभु भृत्यहित अनुरत्त ॥१५२॥

* सवारों के समूह का हाकिम करके ॥ १४४ ॥ १ कवच पहना ॥ १४५ ॥ २ सिंह मारने को उत्कंठित हुए ॥ १४६ ॥ ३ सूर्यमल्ल के पिता को बुला लिया ॥ १४७ ॥ ४ उस समय इधर कृष्णराम मारागया ॥ १४८ ॥ ५ तरवारें हाथों में लेकर चले ६ सिंहचौक में आने पर ७ उस समूह को ॥ १४९ ॥ ८ शत्रु की दिशा का मार्ग छोड़कर ॥ १५० ॥ ९ सचिव को जलाने में सहायता देने को ॥ १५१ ॥ १० जहां आबुनाथ शिव है ॥ १५२ ॥

सब लहि मंतु कारन सुद्धि, रचेहु छिद्र निकसन रुद्धि ॥
ठाँ जुग२जे रहे थिति ठानि, तुपकन जंग बिच बिच तानि॥१५३॥
सुनि नृप दै निदेंस प्रसस्त, बंधन धूर्त ठानि बिहस्त ॥
तव उड्डुदुर्गकी दुव२ तोप, अभिमुख राक्खि जमपुख ओप ॥१५४॥
जुग२ जुग२ देह चल्लन जंपि, कहहिं छुद्र गोलन कंपि ॥
पट्टभट दानसिंह१ पुरोग, जुरि तहँ पिक्खि प्रध्वर जोग ॥१५५॥
चुटकिन ओप तोप चलात, बिगरत वेध्प आलयं व्रात ॥
मतिगति मंडि फैरन फैर, निर्मित ऽपग्र्य मन जन नैर ॥ १५६ ॥
ऽपवाहित भूंहर१न कति वैठि, कति गय कंदर२न प्रति पैठि ॥
हुव यह दरित पूरन हाल, जय रस फुरित सूर२न जाल ॥१५७॥
अद्रिन खोह फुट्टि अवाज, गिरि गृह१ जात पोतन गाज ॥
तरकत थंभ१ मंडप२ तात्र, लरकत फुट्टि छित्ति४ लदाव५॥१५८॥
बिखरत गोख६ जालिन७ व्रात, उड्डत प्रजरि पट्ट८ अलात ॥
वलज९ रु कुडय१० प्रघन११ बितर्दि१२, उंबुर१३ अजिर१४ कु-
ट्टिम१५ अर्दि ॥ १५९ ॥
सह अधिरोहिनिय१६ सोपान१७, बिदहत कोशिका१८ रु बितान
परिघ२० रु उत्तरंग२१ कपाट २२, वलभिप २३ नीध्र २४ प्रसरत
बाट ॥ १६० ॥
तिम दहि नागदंत२५ तमंग२६, पिट२७ पुट२८पेटिका२९जंगिंग

१ अपराध के कारण की खबर मंगाई सो २ कुछ भी छिद्र नहीं निकला ३ दो जगह पर ॥१५३॥४उत्तम आज्ञा ५धूर्तों को व्याकुल करके बांधने की ६तारागढ़ की ७ शत्रुओं के सम्मुख ॥ १५४ ॥ ८ दानसिंह आदि ९ पाथरी (मोंगी) ॥१५५॥ १०घरों का समूह ११ व्याकुल ॥ १५६ ॥ १२ कितने ही लोग भोहरों (तहखानों) में तथा भूधरों (पर्वतों) में छिपकर बैठे ॥ १५७ ॥ यहां से आगे का जो वर्णन है इस में उपमा आदि कोई चमत्कार नहीं है केवल स्थानों के नाम हैं सो इस प्रकरण की सविस्तर टीका करना पिष्टपेषण है ॥ १५८ ॥१३आंगन से ॥ १५९ ॥ १४ विशेष जलते हैं ॥ १६० ॥

कुट३० फुट मलबारन३१ केतु३२, हुत हुव दहन असहन हेतु१६१
खिरि खिरि थट्ट हट्ट३३न खंड, खिरत बट्ट अट्ट३४ बरंड३५ ॥
जितितित सालभंजि३६न जुंड, दहियत मंच३७ पट्ट३८ दुरूह२॥१६२॥
उडिउडि ओघ गुपटन आव, बिरचित व्योम पटल बनाव ॥
प्रजरत डीन पत्रिन पत्र, अव्म कि चंग राल अमत्र ॥ १६३ ॥
तजि तजि तीर नीर निपान, छिन छिन छिज्जि मेटत मान ॥
कापिसिर१ साल२ खोम३कलाप, धुज्जत लोल गोलन धाप१६४
प्रतिभट पूर सूरहु संकि, झारत तुपक छिद्दन झंकि ॥
जिनदिन१धूम२लखिनिस१ज्वाल२, सुग्न न देत गोलन माल१६५
भेदत भयद बहु पुन भित्ति, अदिन असनि कड्ढन कित्ति ॥
बीथिय१त्रिक२रु चत्वर३बार, बिस्तरि जग्गि जग्गि बजार४॥१६६
बनिजन बिबिध किय क्रय बंध, गन ससि१ धीर२ मृगमद३गंध॥
छिति छकि अन्न१ रासिन छार, इतउत मजारि तैल२अगार॥१६७॥
बिदलि१ तरकि मानि२ गन ज्ञात, जारि बहु बिपनि औषध४जात॥
हुत ढुरि बंग१ नाग२ अदभ्र, उडि उडि चढत पारद३ अभ्र॥१६८॥
मचि पुर ध्वांत निभ करमाल, जिहिं सिति१भून सित२गृह जाल
मिलि मिलि धूम१सार२समेत, लागि दृग लेत घन जन लेत॥१६९॥
इम हुव जाम सत्त७ अतीत, गोलन कोस दस१० गत गीत ॥
बिस्सन सचिव करि श्रुति बंट, इत तब नंदग्राम अजंट ॥ १७० ॥
सुनतहि सेगनि लागि त्रिउ लौन१, आगत अंस करि गन अौन ॥

---

१ आगन ॥ १६१ ॥ २. काठनाई से तर्कना कियेजाने योग्य ॥ १६२ ॥ ३ उडते हुए पक्षियों के पंख ४ पात्र ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ५ इस प्रकार सात पहर व्यतीत हुई ६ दश कोश पर्यन्त गोलों का शब्द गया ७ विश्वास योग्य सचिव का आगा जाना सुनकर ८ कोटा से ॥ १७० ॥ ९ मार्ग लगा "यहां जो त्रिउ शब्द है यह कहीं नहीं मिला सो मालूम नहीं अशुद्ध है या क्या है" १० घोड़े पर चढकर

दिन इन जात जाम द्वितीय२. गय यह तत्थ पुर*गमनीय॥१७१॥
खिरकिय सौम्य४।७ द्वार खुलाइ, पुरबिच लिन्न इन खिन पाइ॥
सूचित सचिव सुत जुहि †जिठ्ठ, सुहु यह सुनत उग्र अनिठ्ठ॥१७२॥
मोहन१ ताहि निस द्रुत मग्ग, आगत स्वामि सबिध उदग्ग॥
साहब समुख जिहिं तब जाइ, आनिय उक्त पथ प्रविसाइ॥१७३॥
जमियतखान२ संगहि जास, निर्भय चिंति रहन निवास॥
अधिपहु खास महलन आइ, स्वनिकट जालिनी९ सु बसाइ॥१७४॥
जानिय इम अजंट१ जनेस, धाइउ समर अटकन एस॥
पै तिहिं कहिय प्रत्युत पेरि, गिनि खल गहहु१हनसुरक्कि हेरि१५७
अहँ त्रिक३ असह तोपन त्रस्त, ——हुव अब अहित बिहस्त॥
सीसक१ सोर२ उदक४ रु अन्न४, बित्तन घोर कष्ट बिपन्न॥१७६॥
इत सुनि सचिव हत मग आत, बुंदिय पत्त ह्वै२हि बरात॥
हाजरि सकल बल८ तब होइ, दब्बिय बेढि अरि गृहदोइ२॥१७७॥
जानहु श्रीचतुर्भुज१ तत्थ, तिनसन बारुनी३।५ दिस तत्थ॥
परिमित दंड बिंसति२० पास, आयंत जो हवेलिय१ आस॥१७८॥
थिर हुव स्वामिनी बस थान, परिखद तत्थ रहन प्रधान॥
द्विजकहँ जो हवेलिय दत्त, हाजरि सो हुतो तिम तत्त॥१७९॥
गोलनसौं बँ बिगरत गेह, आतुर रूपरामहु एह॥
लै सब स्वीय अप्पन लार, कढि निस छिन्न खुल्लि किंवार१८०

---

१ जहां जाना था उस पुर (बुंदी) में ॥ १७१ ॥ † कृष्णराम का ज्येष्ठ पुत्र १ पड़ा अनिष्ट (प्रतिकूलवर्त्ता) सुनकर ॥१७२॥१७३॥ २ चित्रशाला में ॥ १७४ ॥ ३राजा ने यह जाना कि ४ उलटी प्रेरणा करके कहा ॥१७५॥५तीन दिन ६ शत्रु ६व्याकुल हुए ७ आपदा से घिरे ॥ १७६ ॥ ८ सब सेना ने हाजर होकर ॥१७७॥ ९ पश्चिम दिशा में १०बीस दंड के अंतर पर ११ मोटी हवेली है ॥१७८॥१२वह स्थान पाटवी रानी के आधीन हुआ था १३ दीथी ॥ १७९ ॥ १४ सब ॥ १८० ॥

*बिपनि सु पुब्ब१ दिस लगि बट्ट, हरि बसु लुट्टि मग इक१ हट्ट ॥
†जमदिस२।२ उक्क गोपुर जाइ, परबस ‡रुद्ध ताकहँ पाइ ॥ १८१ ॥
हैं ढिक ठहाँ पुरोहित हर्म्य१, गजमुख गढित कौलन कर्म्य२ ॥
तब सरदारमल्लहु तत्थ, ऊरुज३।२ हो सु ठानि अनत्थ ॥ १८२ ॥
भनित जु सिंहअंतबिभूत२।३, संगहि सोहु पर रजपूत ॥
द्विज तिन्ह कहिय बिघटन५ द्वार, उन लिय एहु मध्य अगार १८३
महल सु जदपि दुर्ग्ग६ समान, हुव तहँ तदपि जल मुख हान७ ॥
रहि द्विज१ बनिक२ तहँ दिन१ रत्ति२, पुनि दुव२ निक्खसिय निस पत्ति८ ॥ १८४ ॥
बाहुज रहिय तत्थहि बध्य९, ते लड़ि संचरत मग मध्य ॥
बनि भय१भूख२प्यास बिहाल, जुग२भ्रमि परिग नागन जाल १८५
तिन लखि बिष्णुस्वामि मतीय१०, सिंचिय उदक११ रक्खन जीय ॥
जुग२ तिन भोजि१ पेय पिबाइ२, जोगिन१२ रक्खि रत्ति जिवाइ १८६
हुव खिल रत्ति जहँ दुरमुहूर्त१३, ध्रुव प्रभु सुनत पकरन धूर्त ॥
बिप्र१हु बनिक२ सह हठ बाद, मारिय बय किसोर प्रमाद ।१८७।
संभु१४ तिहिं दोष अब पछिताइ, भाखत दुरित१५ एह न भाइ ॥
महिसुर१६बनिक२इम जुग२मारि, निज पटु सचिव बैर निकारि १८८

* बजार में पूर्व दिशा के मार्ग लगकर † दक्षिण दिशा के ‡ रुका हुआ (बंद) पाकर ॥ १८१ ॥ १ मकान २ गजमुख नामक पुरोहित का बनाया यामियों के काम का ३ बनियां ॥ १८२ ॥ ४ अभूतसिंह ५ किवाड़ खोलने को कहा ॥ १८३ ॥ ६ गढ के समान था ७ जल आदि सामान खूटगया ८ रात्रि में पैदल निकले ॥ १८४ ॥ ९ मारने योग्य क्षत्रिय अभूतसिंह वहीं रहा ॥ १८५ ॥ १० विष्णुस्वामी के मतवाले देखकर ११ पानी पिलाया १२ उन नागा जोगियों ने ॥ १८६ ॥ १३ चार घड़ी रात्रि बाकी रहते राजा ने किशोर अवस्था के प्रमाद से हठ करके उन ब्राह्मण और वैश्य को मारडाले ॥ १८७ ॥ उस दोष से १४ रावराजा रामसिंह अब पछताते हैं और कहते हैं कि यह १५ पाप हमको अब अच्छा नहीं लगता १६ ब्राह्मण ॥ १८८ ॥

तिम पुनि होत *घस्र द्वितीय२, गिनि जमदंग निज †गमनीय ॥
कातर जो रह्यो सु कबंध३, सस्त्रन डारि ह्वै हत‡संध ॥ १८९ ॥
पप्पिय पत्त२ द्वार प्रवेस, आदरि पत्त बाहिर एस ॥
जमदिस१।३द्वार जुग२बिच जाहि, रोचक भोजि१पाइ३सराहि१९०
मंद सु जवन इक लिय मारि, तिन्ह खल सस्त्र लहि दियतारि ॥
इक१ द्विज अंगतैंहु अवध्य, मन्निय सेस अरिजुग१ मध्य।१९१
बाहुज१ बनिक२ सस्त्र विहीन, करि हम अनसु अनुचित कीन॥
इम अब करत सासन आप, पै तव बय बिसेस प्रताप ॥ १९२ ॥
त्रिक३ हनि हेतु बिनु खिल तारि, उद्धारि वैर विजय उबारि ॥
इत सब कह्हि मागध दिन्न, कंटक रहित पुर इम किन्न ॥१९३॥
चारनैं चिंति इष्ट बिचार, आइउ द्विसत२०० लहि असवार ॥
तिहिँ सुनि सचिव तिम मृत तामँ,किय भाजि कोस पंचमुकाम१९४
रहि तहँ मरत त्रिक३ लगि राह, प्रनमिय पहुँचि निज नरनाह ॥
बुंदिय त्रिश्दिन बासि इत एह, गो इम अंगरेजहु गेह ॥ १९५ ॥
इत प्रभु सचिव सुत आकारि, मोहन१ मत्थ ध्रुव कर धारि ॥
पुनि दिय सचिवपन सिरुपाव, आदरि अधिक वृत्ति बढाव॥१९६॥
अनुजनु मंगल२ जु तस आहि, तारादुर्ग पति किय ताहि ॥
पुब्बहि आत गृह प्रविसाइ, लिय चउ४ बरनि२ बिंद२ लहाइ१९७

॥ केकिरवम् ॥

महिपाल१यों मोहन२थप्पि मंत्री, जग कित्ति बिस्तारि दिगंतगंत्री

---

* दूसरे दिन यमराज के नगरको अपने † जाने योग्य जानकर ‡ हतप्रतिज्ञ होकर ॥१८९॥ १दक्षिण दिशाके ॥१९०॥१९१॥ २रावराजा रामसिंह कहते हैं कि इनको मारकर हमने अनुचित किया ॥१९२॥१९३॥ १ भैरवदान नामक चारण ४गदा सचिव को मराहुआ सुनकर ॥१९४॥ ५ अपने राजा मानसिंह से प्रणाम किया ॥१९५॥ ६कृष्णाराम के पुत्र को बुलाकर ॥१९६॥ ७उसके छोटे भाई ८चारों ९ब्राह्मन ब्राह्मणों को ॥ १९७ ॥ ८ दिशाओं के अंत में जानेवाली कीर्ति फैला

वय वर्ष अट्ठारह१८अग्ग१६बर्त्तीं, अभिरूप दूरीकृत देसअर्त्तीं१९८
कुसलत्व आच्छोटनं अग्रकर्मा, खुरलीर खलूरी धृत धुर्यधर्मा ॥
विविधत्वविद्या३रनबुद्धि बर्म्मा,मितसत्व४संसीदितदस्युमर्मा५।१९९
अवधानता सज्जित अंग६ अंगी, सब साख्र७ ऊहा पटु सूरिसंगी
रुचिमग्गबेदोदित८एकरंगी,जितजुद्ध९खड्गी१कवची२निखंगी३।२००
करिबे लग्यो कज्ज१०सु तीन३ सक्किसौं, धरिबे लग्यो धी धुर राज्य रक्ति२सौं ॥
बरिबे लग्यो बीर१३न बीर व्यक्तिसौं, भरिबे लग्यो श्रीप्रभु रंग भक्तिसौं ॥ २०१ ॥
बिसिष्ट१४ जो हय१ गय२ बाहि वेवली, भनैं सदा सबहित१५लै बिधा भली ॥
अधीसिता बुध१भट२मंत्रि३आदरैं१६, हठैंन१७सौं इतर सभा प्रभा हरैं ॥ २०२॥

॥ त्रिष्टुबुपजातिः॥

---

१ सुन्दर २ देश की पीड़ाको दूर करी ॥ १९८ ॥ ३ शिकार में कुशल होकर अग्रणी हुआ ४अखाड़े में शस्त्राभ्यास करके धर्म के धुर को धारण किया और नाना प्रकार की विद्या और युद्ध का कवच और निश्चय ही शत्रुओं के मर्म को ५ कंपानेवाला हुआ ॥ १९९ ॥ राज्य के सात अंगों में एक तो स्वयं आप और बाकी के छः अंग और अंगियों में सावधानी करके पण्डितों की संगति से शास्त्रों की ६तर्कना में चतुर हुआ और वेद के कहे मार्ग में एक रंग होकर रुचि की; युद्ध जीतनेको खड्ग, कवच और भाथे को धारण किया ॥२००॥ श्रेष्ठ नीति और राजा की तीनों शक्तियों से कार्य करने लगा; राज्य में ७ प्रीति करके मुख्य बुद्धि को धारण करने लगा और वीर व्यक्ति से वीरों को अपने करने लगा ८ अपने मनको श्रीरंग नामक परमेश्वर की भक्ति से भरनेलगा (बुन्दीवालों के इष्टदेव का नाम श्रीरंग है) ॥ २०१ ॥ जो बलवान् हाथी, घोड़ों के चलाने में अत्यन्त श्रेष्ठ और सदैव भले प्रकार से सब के हितको कहनेवाला, स्वामिपन से पण्डित, उमराव और मंत्रियों का आदर करनेलगा ९ बहुत हठ से अन्य सभाओं की कांति हरनेलगा ॥ २०२ ॥

इलेस ऐसैं सु वयस्य संगी, संगीत१नाट्यार२दि कला प्रसंगी॥
संगीयमान स्तव भानु संगी, संगीर्ण अंधार ससी पिसंगी ॥२०३॥
न दानवेला कबहू नकारी, सपत्न सेना कुल घातकारी ॥
साहित्य आस्वाद कवि प्रकारी, प्रमाद व्यापार बकी बंकारी२०४

( )

बुंदियपुर बैभव इम बिलसत, हड्ड ६१न हेलि अधिप पटु एस ॥
ललित अखंड सुधर्मा कि लसत, सहपुर अहमति समह सुरेस२०५

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रेहृतदाक्षिणात्यक्षोणिकांगरेजराजपुत्रस्थानस्वाजंटस्थापन१ विजितभरतपुरजट्टांगरेजपुनर्भरतपुरजट्टवितरण२ ब्रह्माराजसकाशांगरेजप्रान्तद्वयग्रहणसूचन ३ जयपुरराज्यराज्ञीभाट्टियानीझूंतारामवैश्यदुराचारसूचन ४ पतिसगहमनार्यावर्तप्राचीनप्रणालीवारणापूर्वां

इस प्रकार १ राजा रामसिंह अपनी समान अवस्थावालोंके साथ संगीत को आदि लेकर नृत्य आदि की कलाके प्रसंग में ३ प्राप्त की है स्तुति योग्य २ सुख से गाईजानेवाली, सूर्य का साथ करनेवाली और अंधेरे पर चन्द्रमा को ४ पीला दिखानेवाली उज्ज्वल कीर्ति जिसने "यहां उज्ज्वलता और चन्द्रमा आदि के प्रसंग से कीर्ति का अध्याहार ऊपरसे होता है"॥२०३॥ दान के समय कभी इनकार नहीं करनेवाला ५ शत्रुओं की सेना को कुल सहित मारनेवाला, कवियों के प्रकार से साहित्य का स्वाद लेनेवाला और प्रमाद के व्यापार रूपी बकासुर के ऊपर ६ श्रीकृष्ण रूपी ॥२०४॥ हाडाओं का सूर्य चतुर स्वामी रामसिंह इसप्रकार बुंदी में वैभवका विलास करता है सो मानों अमरावती पुरी सहित ७ देवसभामें ८ प्रतिदिन इन्द्र उत्सव करता है ॥२०५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, अंगरेजों का दक्षिणियों से भूमि छुड़ाकर राजपूताने के राज्यों में अपने अजंटों को स्थापन करना १ अंगरेजों का भरतपुर को विजय करके पीछा जाटों को देना २ ब्रह्मा के राजा से अंगरेजों का दो सूबा लेने की सूचना करना३ जयपुर के राज्य में राणी भाटियाणी और वैश्य झूंताराम के दुराचार की सूचना करना४ अंगरेजों का आर्यावर्त में सती होने की रीति

गरेजसमाचारपत्रप्रचारण ५ जनरलमटकलफबुन्द्यागमन ६ कोटापतिकिशोरसिंहदेहांतरामसिंहपट्टसमासादन ७ उदयपुरमहाराणाभीमसिंहपरासुताजवानसिंहसिंहासनाधिरोहण ८ लखनेऊनवाबगाजियुद्दीनपरेतभावनसूरुद्दीनगद्दिकोपविशन ९ विक्रमनगरेशमहाराजसुरतसिंहासुहानिरत्नसिंहराजतिलककरण १० बुन्दीसचिवधालेयकृष्णारामच्छलघातवधवर्णनं नवमो मयूखः॥ ९ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरात्रिशततमो मयूखः ॥ ३७१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ ॥

अग्ग दीधितिमैं बडो१ अब भूप नंदन भूप ॥
भीमसिंह२०३।१ कुमार सूखन पट्टरानि प्रसूत ॥
पुव्व अब्द८६ सहस्य१०मैं तस गर्भ दिष्ट प्रसाव ॥
भव्य धारन स्वामिनी२०।२।१ किय भानु१ प्राचिय२भाव॥१॥
कर्क४।१नक्र१०।२ पतंगके क्रम रत्ति१ वासर२ रीति ॥

को बंद करना और आर्यावर्त में समाचारपत्रों (अखबारों) का जारी होना ५ जनरल मटकलाफ का बुंदी आना ६ कोटा के महाराव किशोरसिंह का देहांत होकर रामसिंह का पाट बैठना ७ उदयपुर के महाराना भीमसिंह का देहान्त होकर जवानसिंह का पाट बैठना ८ लखनऊ के नवाब गाजियुद्दीन के मरने पर नसुरुद्दीन का गद्दी बैठना ९ बीकानेर के महाराजा सुरतसिंह का देहांत होकर रत्नसिंह का गद्दी बैठना १० बुन्दी के सचिव कृष्णाराम धायभाई के छलघात से मारेजाने के वर्णन का नवम ९ मयूख समाप्त हुआ ॥९॥ और आदि से तीन सौ इकहत्तर ३७१मयूख हुए ॥

अब आगे १ किरणों में बडा (बडेतेजवाला) राजा रामसिंहका पुत्र, कुमरों का भूषण भीमसिंह पाटवी रानी से हुआ सो कहते हैं २ पहले वर्ष के पौष मास में भाग्य की प्रसन्नता से उसके शुभ गर्भ को, जैसे पूर्व दिशा सूर्य को धारण करती है तैसे स्वामिनी ने धारण किया ॥ १ ॥ कर्क और मकर संक्रांति के १ सूर्य के क्रम से जैसे रात्रि और दिन बढता है और शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा

पक्ख उज्जल१ इंदु२ ज्यों हुव एधमान प्रतीति ॥
पाइ सुर्जन १९१।१ भोज१९२।२ रत्न१९३।३ सता१९५।१ रु भाउ-
व१९६।१ पुराय ॥
गर्भ१ जो महिषी गह्यो अनला१ऽरणी अनु गुराय ॥ २ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम तनय जनन१ जस२ जन अगर्भ, गत अब्द८६ प्रसर्ल५ ऋतु
गहिय गर्भ ॥
आधान१ बिहित संस्कार इद्ध, सीमंत२ पुंसवन३ तदनु सिद्ध॥३॥
रानीय अदोहद१ बिबिध रक्खि, संपूरन पावत२ स्वमन सक्खि ॥
पहुँचत३ ढिग गम्यहु सखिन पानि, उत्थान२ अटन३ अवलंब४
आनि ॥ ४ ॥
प्रतिदिन गति५मंथर६--प्रसंग, उच्छ्वास७क्रम२हु श्रम८असह अंग९
रवि बिंबह३ गौरव१० हरितराग११, भासन लगि गोचर१२ मध्य
भाग४ ॥ ५ ॥
जिमनिम परि-- घन३ कठिन जोट२, उन्नत१४ उठि चिबुक१५हु

बढता है तैसे १ बढना प्रतीत हुआ २ दासवी रानीने ३ अरणी की अग्नि की गणना से (दो लकड़ियों को परस्पर घिसकर यज्ञ के अर्थ अग्नि निकालते हैं उनका नाम अरणी है) ॥२॥ ४ हेमन्त ऋतु में गर्भ धारण किया ५ जिस पीछे गर्भ के उचित सीमंत और पुंसवन बडे संस्कार किये ॥ ३ ॥ रानी को १ गर्भ नहीं होवै ऐसे नाना प्रकार से छिपाकर रक्खा, अथवा रानी स्वयं छिपाकर रही. उस गर्भका संपूर्ण साची अपना मनही पाता है, समीप जानेवाली सखियों के हाथ का आधार लेकर ७ उठती और फिरती है ॥४॥ यहां छिपाने पर भी गर्भ के लक्षण जानलिये जाते हैं उन्ही को दिखाते हैं कि ८प्रतिदिन चाल धीरी होती जाती है ९ श्वास लेने का और चलने का श्रम शरीर में असह होता है १०सूर्य के समान कान्तिवाला शरीर भारी और ११हरे रंग का होता जाता है और पेट १२दीखने लगा(ऊंचाउठगया)॥५॥ शरीर की जोडें(संधियां) बहुत कठिन होकर १३ ठोडी और कुच ऊंचे उठगये जो वस्त्र के समूह से

कुसुमन अोट ॥
इन दुरहुन अगोचर१५बानि बिचाल६, जिम घन१ससि२न दुरत१६ चोल जाल॥६॥
व्यापार१हलुव२मित३नत बैन१७, क्रीड़ा१ब्रीड़ा२करि नमत१८नैन
लहँगा१ बिवर्तलघु१९ चैल२ चीन२०, चोली२१ जुत चीर४हु धृति अधीन२१ ॥ ७ ॥
सौभाग्य चिन्ह द्विक२हि सुहाइ२२, भर अल्प बलय१ निष्का१दि भाइ२३
अर्चित खिल भूखन सब उतारि२४,धवँ मंगल सूचक नियतधारि८
असनादि नियम सब सद्धि २५ आप, अहपति सुख बिलसिय मह अमाप ॥
अववर्तन आश्विन७मास आइ, बैजननँ बेर तह मह तनाइ ॥ ९ ॥
नव९ रात्र अवधि९ निज आय उदर्क, अस्ताचल पहुँचत पाँथअर्क

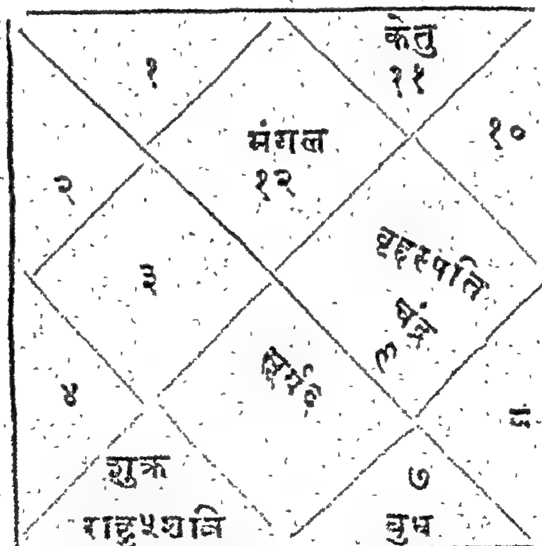
ढककर १ नहीं दिखाने पर भी उनके विशेष रहने से नहीं छिप सकते जैसे बादलों से २चंद्रमा नहीं छिपता है ॥ ६ ॥ बोलने की क्रिया हलवै (धीरै) और कमती होती है ३ क्रीड़ा करने में लज्जा से नेत्र नीचे होते हैं ४ छोटे घेरवाला लहँगा और कांचली सहित ओढने का वस्त्र ५ बारीक वस्त्र के धारण तथा सन्तोष दायक होते हैं ॥ ७ ॥ सौभाग्य के दो चिन्ह अल्प भार के रक्खे ६ चूड़ा "यहां तिमणियों का नाम नहीं है, परन्तु सुहाग के दो चिन्ह कहने से तिमणियों का ग्रहण है, क्योंकि स्त्रियोंके सुहागका चिन्ह चूड़ा और तिमणियां ही माना जाता है" ७ स्वर्ण आदि के सुहाते हैं "यहां आदि शब्द से मोती आदि का ग्रहण है" ९ बाकी के सब भूषण उतार दिये और ८ ये दो भूषण पूज्य और १०पतिके मंगलकी सूचना करनेवाले होने के कारण निश्चय ही धारण किये ॥८॥ ११भोजन आदि १२दिन प्रति १३जीविका प्राप्त करानेवाला "यहां अव शब्द प्राप्त करानेका और वर्तन शब्द वृत्ति(जीविका)का वाचक है" अर्थात् राजकुमार के जन्म से सबको जीविका दिलानेवाला आश्विन मास आकर १४ तहां गर्भ के जन्म समय का उत्सव फैला ॥९॥ १५आगे आनेवाले अपने शुभ कर्म फलसे १६ चन्द्रमा के अस्ताचल पहुँचते समय महाराव

प्रभु सजि अनीक चोगान पत्त, देविय निमित्त बलि१अजन२दत्त१०
रुचि बिविध सद्धि प्रहरन दुरूह, जहँ दत्त परिच्छा भटन जूह ॥
चल१ अचल२ बेध्य गन सफल चोट, जितजित कहुँ सादिन द्रवत जोट ॥ ११ ॥
तोपन चिंति चलत असह ताप, मिलि सम्मुह हंकत हय अमाप॥
इम कृत्रिम आहव बल बिधान, वलि चढत बस्त१ महर२ सुरन मान ॥ १२ ॥
सुत प्रसव सुद्धि तहँ पहुँचि तामँ, किय बिधि मन जनजन सफल काम ॥
सक मुनि भुजंग बसु ससि १८८७ समान, ईस७ मास पक्ख इह बिसद२बान ॥ १३ ॥
वर्तत नवमी९ तिथि मिहिर१ वार, पैंतीस३५ घटी पल द्विचउ ४२ पार ॥
पू०षा० २०उडु विकृति२३ रु तिथि१५ प्रमेय, सौभाग्य४ धृति१८ रु पल प्रकृति२१ श्रेय ॥ १४ ॥

राजा रामसिंह सेना सजकर चौगान में गये और देवीको बलिदान व पूजन दिया ॥ १० ॥ १ कठिनाई से तर्कना की जावै ऐसी शस्त्रों की परीक्षा रखिलते हुए और ठहरे हुए निसानों को ३ सवार घोड़ों की जोड़ियां दौड़ाते हैं ॥ ११ ॥ ४ तोपों के समूह, देवताओं के बलिदान में ५ बकरे और ६ भैंसे चढते हैं ॥ १२ ॥ ७ तहां रावराजा के (*)पुत्र होनेकी खबर पहुँची ८ आसोज मासके शुक्ल पक्षकी नवमी ॥१३॥९रविवार पैंतीस घड़ी बयालीस पल, पूर्वाषाढा नक्षत्र तेईस घड़ी पंद्रह पल, सौभाग्य नाम योग अठारह घड़ी इकीस

(*)इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने राजकुमार भीमसिंह की मृत्यु तक का इतिहास नहीं लिखा इसकारण नहीं मालूम कि वे इस विषय में क्या लिखते परंतु हमने बहुधा मनुष्यों की जबान से सुना है कि महाराजकुमार भीमसिंह अपनी युवावस्था के घमंड में महारावराजा रामसिंह की आज्ञा को नहीं मानते थे और यवनों का संग बहुत रखते थे इसकारण रावराजा ने उक्त राजकुमार को विश्वास घात से मरवाडाला। इन राजकुमार भीमसिंह के शारीरक बल और बाणविद्या व वीरता की हमने बहुत प्रशंसा सुनी है ॥

बान५ रु तिथि१५ बालव२ मिति बिभात, तीस३० रु छतीस३६ इष्ट इष्टआत ॥
रवि१ सर५ रु हर११ रु आधिपति १६ रु आष्टि१६, सिव ११ रासि दु२ लव लग्नहु समष्टि ॥ १५ ॥
मंगल३ सफर१२ स्थित लग्न१ माँहिं, अरिगृह६ कवि६ सनि७तम ८ सिंह२ आँहिं ॥
दयिता७ गृह७ कन्या६ थित दिनेस१, अंतालय८ ससिसुत४ घटग एस ॥ १६ ॥
ससि२ गुरु कर्मालय१० चाप९ सत्थ, आहिक९ सकुंभ११ व्यय मीन१२ अत्थ ॥



पल ॥ १४ ॥ बालव करण पांच घड़ी पन्द्रह पल, इष्ट तीस घड़ी और छत्तीस पल, सूर्य पांच राशि ग्यारह अंश, सोलह कला और सोलह विकला, लग्न ग्यारह राशि, दो अंश ॥ १५ ॥ मीनका मंगल लग्न में है, और शुक्र, शनि, राहु तीनों ग्रह छठे भवन में सिंह के हैं, कन्या राशिका सूर्य सातवें भवन में, और तुलका बुध आठवें भवनमें गया है ॥१६॥ चन्द्रमा और बृहस्पति दसवें स्थान में धन राशि के हैं, और कुंभ राशि का

इम ग्रह९न भोग्य राशि१२न अधीन, क्रम कथित छ६ गेहन बास कीन ॥ १७ ॥

जँहँ हड्ड६१पुरंदर१ कुमर२ जात, केसव१ गृह दर्पक२सम सुहात॥

ऋतु मथन१ गृह कि कार्तिक२ कुमार, इन१ गृह बैवस्वत२किमु उदार ॥ १८ ॥

बिधु१कै बुध२ बिधि१कै मनु२ महंत, जंभाहित१कै जय२ कै जयंत३ ॥

आसुग१कैभीम२किअसनिअंग३,अप्पति१कै---२किमुअभंग१९

कुह१ कुल नलकूबर२ किमु कुमार, किमु राम१ सदन कुस२ सुजसकार ॥

श्रीप्रभु ऋषभा१लय भरत२ श्रेय, कृतबीर्य१ कुट कि अर्जुन२ अमेय ॥ २० ॥

दुक्खंत१ सदन भरत३ कि द्वितीय२, बुध१ बसति ऐल२ इन हरि द्वितीय ॥

धर्मा१लय ज्यौं अजमीढ२ धीर, बल१ निलय उल्मुक२क निसठ३ बीर ॥ २१ ॥

केतु बारहवें स्थान में है, ये ऊपर कहे हुए नव ग्रह छः भवनों में वास करते और छः भवन खाली हैं ॥ १७ ॥ जहां हाडाओं के १ इन्द्र के कुमर हुआ सो मानों श्रीकृष्णके घर में कामदेव (प्रद्युम्न) के समान शोभा देता है, इसीप्रकार शिव के घर में मानों स्वामिकार्तिक, २ सूर्य के घर में मानों उदार वैवस्वत मनु ॥ १८ ॥ ३चन्द्रमा के बुध, ४ ब्रह्मा के मनु, ५ इन्द्र के अर्जुन किंवा जयन्त, ६ पवन के भीमसेन और ७ हनुमान, वरुण के मानों अभंग ॥ १९ ॥ मानों कुबेर के घर में नलकूबर, रामचन्द्र के घर में सुयश के करने वाले लव कुश, ऋषभ के घर में श्रेष्ठ भरत, कृतवीर्य के घर में मानों तुलना रहित सहस्रार्जुन ॥ २० ॥ दुष्यन्त के घर में मानों दूसरा भरत, बुध के घर में परमेश्वर का भक्त राजा एल, जिसप्रकार धर्म के घर में धीर अजमीढ, बल के घर में धीर उल्मुक और निसठ ॥ २१ ॥ अर्जुन के मानों युद्ध में नहीं रहने

जय१कै अभिमन्यु२कि असह जुद्ध,*स्मर१सुआँ†उषावर वरमबुद्ध
नरपति नल१ सद्म कि इंदसेन२, नाहुष१ निकेत पूरू२‡अनेन२२
मनु१कै कि प्रियव्रत२ गुन अमेय, ध्रुव१कै किमु उत्कल२ नाम-
धेय ॥
वैवस्वत१ गृह इक्ष्वाकु२बुद्ध, ——————१२ §अलुद्ध ॥ २३ ॥
कलिदमन परिच्छत१ नृप निकेत, पनधन जनमेजय२ जयउपेत
उदयनन्नृप१ गृह इत गृहसराह, नरबाहन दत्त२ कि कुमरनाह२४
पहु चंड महासेना१रुय पस्त्य, गोपालकुमर अरिकाधि१अगस्त्य२॥
विक्रम१ निकाय क्रम चित्र२बीर, हुवभोज१ निलय २ गहीर ॥२५॥
संभर पिथ्थल१७।१।१ गृह रत्नसीह२, विजपा१लय करन किरन
अबीह ॥
जयचंद१ महोदयपुर जनेन, सुत किंमु तदीय वरदायसेन२ ॥ २६ ॥
नृप सिद्धराज जयसिंह१ नाम, सुत गोभिलराज२ कि तस सुधाम॥
सरबंधिक कर्णा१रैवत रसेसं, सुत तस कैवर्त२कि जस असेस२७

जिपजानेवाला अभिमन्यु, * प्रद्युम्न के बुद्धिमान् † उषा का पति अनिरुद्ध, राजा नल के घर में इन्द्रसेन, नहुष के घर में ‡ पाप रहित पूरु ॥ २२ ॥ मनुके मानों अमाप गुणोंवाला प्रियव्रत, ध्रुव के मानों उत्कल नामक पुत्र, वैवस्वतके घर में चतुर इक्ष्वाकु § निर्लोभी ॥ २३ ॥ १ कलियुग को दंड देनेवाले परीक्षित् के घर में २ प्रण ही है धन जिसके ऐसा जय सहित जनमेजय, राजा उदयन के घर में घर की प्रशंसा करानेवाला कुमरों का पति मानों नरवाहनदत्त ॥ २४ ॥ ४ महासेन नामक ५ प्रचंड राजा के घर में कुमर गोपाल, अरिकाधि के अगस्त्य ५ विक्रम के घर में चित्रवीर ॥ २५ ॥ ६ चहुवा-ना पृथ्वीराज के घर में रत्नसिंह ७ सत्यवादिया विजय के घर में युद्ध में नहीं डरनेवाला करण, महोदयपुर के राजा जयचंद के घर में ८ मानों उसका पुत्र वरदाईसेन ॥२६॥ राजा सिद्धराज सोलंकी के श्रेष्ठ घर में मानों गोभिलराज १० रैवत के राजा ९ सरवहिया करण के घर में मानों सम्पूर्ण गुणोंवाला उसका पुत्र ११ कैवर्त हुआ॥ २७ ॥ इस प्रकार गुणों की खान दादाओं के

गुन आकर हड्ड्६१न हेलि गेह, इहिँ तुल्ल कुमार हुव तिहिँ अनेह
नर पहुँचि सुद्धि दायक अनेक अधिगत अभीष्ट हुव एक एक२८
भू१ धन२ गृह ३ भूषन ४ बसन ५वाह६, सतकार पगे सब लह्व लाह ॥
बांधव१ बयस्य२ भट३ सचिव४ बर्ग, सुनि कुमर जन्म अंहति निसर्ग ॥ २९ ॥
वृत्तिहिँ बचाइ सर्बस्व२ स्वीय, बहु देत भये रुचि जस बरीय ॥
कति संघ दत्त भूखन दुकूल२, मुदा३ दिय कतिकन प्रमदमूल३०
आँब्दिक४ दिय कतिकन अवनि आय, कतिकन दिय मासिक५ निज निकाय ॥
महि६ दत्त कतिन श्रद्धा प्रमान, दिय हो ढिग जो सु७हि कतिन दान ॥ ३१ ॥
इम दत्त कतिन भूखन८ अगार, बसनालय९ कतिकन बसन बार
लुटवाइ मँदुरा१० कति अलुद्ध, सल११ महिषी१२सुरभी१३ वृषभ १४ सुद्ध ॥ ३२ ॥
कतिकन दिय सस्त्र१५हि प्रमद काल, बटि द्रंग बधाई बसु बिसाल ॥
रीझहिँ सक्यो न कहुँ कोहु रोकि, बिग्रह१ अंसु २ आगम मह बिलोकि ॥ ३३ ॥

सूर्य (रामसिंह) के घर में १ इनकी बराबरी करनवाला कुमर उस (ऊपर कहे) समय में हुआ सो राजाको खबर देनेवाले अनेक मनुष्य पहुँचे उन सबको वांछित फल २ प्राप्त हुए ॥ २८ ॥ ३ दान के ४ स्वभाव से सत्कार को प्राप्त हुए ॥ २९ ॥ अपनी वृत्ति को छोड़कर अपना सर्वस्व ॥ ३० ॥ ५ अपनी भूमि की सालियाना आमद और कितनोंने ६ घर की माहवारी आय (आमद) दी ॥ ३१ ॥ कितने ही निर्लोभियों ने ७ हयशाला लुटा दी ८ ऊंट ॥ ३२ ॥ ९ शरीर में १० प्राण आने के समान उत्सव देखकर ॥ ३३ ॥

प्रभु बिहित कृत्य महलन पधारि, पोढे पुनि दुस्थन दुक्ख दारि ॥
सज्जिय दसमी१० दिन बिधि असेस, अवसर निगमोदित बिरचि एस३४
क्रम जातकर्म ४।१ सह बिधि कराइ, किय नाम कर्म ५।२ पुनि समय पाइ ॥
कवि चंड³ । पत्त दानाधिकार, सह सचिव बुल्लि तहँ मह प्रसार३५
अधिराज दुहु२न दिय हुकम एहु, दिन समह बधाई बंटिदेहु ॥
भरि तब बहु थैलिन धन अभंग, करि कर्म सचिव कति सुकवि संग ॥ ३६ ॥
जब अखिल दान संभार जोरि, पीतांबर श्रीहरि निलय पोरि ॥
निज ठानि अधोमहलन निवास, पट्ठ उचित बंधु१ कवि रक्खि पास ॥ ३७ ॥
तिहिं थान बधाई१ नाम त्याग, भनिहित प्रारंभिय क्रम बिभाग ॥
भूखन१पट२हय३ गय४ भर्म५ भुम्मि६, घन द्रम्म७दइन जसछाक घुम्मि ॥ ३८ ॥
बुध१ कवि२ द्विज१विद्या२समर सूर, पौरानिक३मागध३ बंदि४पूर
वैतालिक५ चाक्रिक६भांड ब्रात, जंगर८बिरुदब्रत भट्ट९जात॥३९॥
बहुरूप१० भरत११ चारन१२ बहोरि, जिम नांदी१३ सूचक१४जूह जोरि ॥
पुनि पीठमर्द१५ पार्श्विक१६ प्रबीन, प्रीतिद१७ बिट१८ चेटक १९

१दरिद्रियों का दुःख काटकर २चंद का कहाहुआ ॥३४॥३इस ग्रंथ के कर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान को दान का अधिकार दिया ॥ ३५ ॥३६॥ ४सामग्री ५ मंदिर की पोळ[द्वार] में ६नीचे के महलों में ॥३७॥ ७सुवर्ण॥३८॥८चारण९भाट विशेष १० जांगड़ (ढोली)॥३९॥ ११नट १२कत्थक(नाचनेवाले नट विशेष) १३ नाटक के आदि में मंगल पाठ करनेवाले नट १४सूत्रधार (नाटक करनेवाले नट विशेष)१५नाटक के नायक विशेष१६माया कारक नट विशेष और १७ विदूषक १८ विट, चेटक (ये तीनों कामी पुरुष के सखाओं के भेद हैं)

रेचगुन पीन ॥ ४० ॥

पात्र२० रु पत्रकुंसल२१ पैनजुत्ति२२ जत्थ, बंदन१ चउ४ वादक२३ श्रेनि२४ सत्थ ॥

पहिले१ अधिकारी१ चउ४प्रधान, मोताजदार२पुनि मध्य२ मान४१

उपटंक वैनायक वृंद एस, गुन वेतन ग्राहक३ श्रेनि३ सेस३ ॥

इन्ह अन्यहि चारन१ भट्ट२ उक्त, पौरानिक१ वंदी२पनप्रयुक्त ॥४२॥

तक्कुंक विदेश्य१ अरु देश्य२ तत्थ, आये जुरि सहसन अर्थ अत्थ

इम मंगल१अवधि जुग२मास अंत, द्विप वंटि वधाई जस दिपंत४३

चटि भैंप१ हय२ भूखन३ रतन व्रात, सिरुपाव्रन४ सहसन मित सुहात ॥

वितरत अयुतन मित हैम्म वार, सिंधुन विलंघि हुव जस प्रसार४४

उत्सव१ यह जान्यो दिसन अंत, क्रम संसकार सोभित सुमंत ॥

निस्कासन१ प्रासन२ विधि बनाइ, पुनि अवसर छुरिकों३ बंध पाइ ॥ ४५ ॥

सह चौलि४ उपनयन५ व्याह६ सिद्ध, दिपि है सच इतिमुख भांविरिद्ध

१अपने अपने गुणों में पुष्ट ॥४०॥ २नाट्यकला [illegible] ३[illegible] का [illegible] बाजे बजानेवाले [illegible] ४वेश्याएं ५चार प्रकार के बाजे (तत, आनद्ध, [७]सुषिर, घन) बजानेवालों की २पंक्ति सहित ॥४१॥ इन नटादिकों के ७ [illegible] और [illegible] गुणों के साथ [illegible] पानेवालों की पंक्ति ८ इन से भिन्न [illegible] हुए चारण और भाट जिनको पौराणिक और बंदी कहते हैं ॥ ४२ ॥ [illegible] १० [illegible] ११ [illegible] ॥ ४३ ॥ [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] संस्कारों के नाम [illegible] बाहर निकालना [illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible]

---

[७] [illegible]

अब बर्तमान क्रम करि उदंत, कोबिद श्रुति धारहु अवनिकंत ४६
बलि ऊर्ज८ मग्ग९ अह मह बिताइ, अवलच्छ२ पच्छ अब पौ-
स१० आइ ॥
बर्तत तिथिपंचमि५तरनि१बार,क्रम लहिय जन्म अर्जुन१कुमार४७
खनि१ मनि स्वरूपलतिका२ खवासि, जो रत्न १ जन्यौं २ रुचि१
रूप२ रासि ॥
कविजनक किन्न बलि कवि बिबाह, सक भावी१८८८मधु सि-
ति१ लग्न लाह ॥ ४८ ॥
कोटेस प्रतोली पात्रकेर, बहिनी सन सगपन किय सु बेर ॥
जहँ बिद्यमान कवि मालजास,श्रुत बिजयसिंह१अभिधानआस४९
जो मालिक महियारियन जात, कविराज मोघं उपपद कहात ॥
सासन थोहनपुर१प्रमुख सत्त७, पूरन१कति कातिकन बंट२पत्त५०
सब कुल माधानि न नेग सत्थ, आजीवन कोटा ज्ञात अत्थ
तस जौंमि बधू हित मंगि तात, प्रारंभिय उच्छव समय पात॥५१॥
सक इय अहि बसु इक १८८७ पकत रूप, तिथि बारसि ससि
सुत४ सित२ तपस्य१२ ॥
अप्पँहि निमंत्रि कवि निज अगार,बुल्ले सह परिगह मह बिथार५२
समुपेत पत्ति१सादि२न सहस्र, घटिका दस१०जावत कथित घस्र

समय में शोभा पावेंगे [होवेंगे] १ हे चतुर राजा सुनो अथवा हे राजा के पंडितो सुनो ॥ ४६ ॥ २ कार्तिक ३ पौष मास का कृष्णपक्ष ४ रविवार ॥ ४७ ॥ भायियों की ५ खान ६ सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान ने ७ इस ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल का विवाह किया ८ चैत्र सुदि ॥ ४८ ॥ ९ पोळपात्र की ॥४९॥ १० कवि नहीं होने पर भी कविराजकी झूठी पदवी कहाता था ११शुह शपुर आदि ॥ ५० ॥ १२उसकी बहिन को १३पिताने ॥५१॥ १४ खेती के पकते समय १५ बुधवार १६ फाल्गुन सुदि १७ कविने आपको न्यूँता देकर परगह सहित अपने घर बुलाये ॥ ५२ ॥ १८ कहेहुए दिन

प्रभु निवसथ हरिना१ निकट पत्त, अभिमुख कवि१आगत त्वरित
तत्त ॥ ५३ ॥

पहुँचे न कास द्रोनिय१ प्रदेस, सोदागर भैरव२ पहुँचि सेस ॥
सह बिरुद१ दत्त आसिखर सुहाइ, उँपदा किय हय इक१ प्रमद
पाइ ॥ ५४ ॥

रक्ख्यो न तुरंग१ सु हड्ड६१राज, क्रमि अग्ग मग्ग१ लखि सम-
य काज ॥

बाहलि कारुंड२सु संकट बट्ट३, उत्तरि इत आये थरक्कि थट्ट॥५५॥
क्रमि मग डुंडुम द्रह४ रु दुड़कूप५, दै छलियद६ दक्खिन१ भुजहिँ
भूप ॥

जिम सब करि दक्खिन १ ईच्छुजंत्र ७, तजि तुरग रुंडतट ८ पुनि
स्वतंत्र ॥ ५६ ॥

थित देवी चालकनेचि थान९, तहँ बहु तनाइ पँटगृह बितान १०॥
अंतर प्रवेसि ११ कटिबंध उज्झि १२, समयानुसार सब कज्ज
सुज्झि ॥ ५७ ॥

दै सैन्य जिमावन तहँ निदेस१४, पठये नियोगि जन१५निपुन पेस
जिल्ला निज लैलैं १६ तिनहु जाइ, जे सब कवि आलय दिय जि-
माइ१७ ॥ ५८ ॥

आदरके भट१ खिल रहि उदार, रहिकैं अधीस ढिग रहनहार२॥
वल आत जिम्मि जनजन बिवेक, अवसेस रहत दिन जाम एक१

१हरणा नामक सूर्यमल्लके ग्रामके समीप पहुंच वहां कवि चंडीदान २सम्मुख [पेशवाई] को आया ॥५३॥३पर्वत की संधि के स्थान पर ४ नजर ॥५४॥ ५गाड़ा [छकड़ा] के मार्ग से ॥ ५५ ॥ ६गन्ना पीलने की चरखी [जंत्र] को दाहिने हाथ रखकर ॥५६॥७डेरे और ८ चंदवे तनाकर ९कमरबंध खोला ॥५७॥ १०जीमनेका हुक्म देनेवाले मनुष्यों को भेजे ॥ ५८ ॥११एक पहर दिन बाकी रहते ॥ ५९ ॥

सह सौच१ बिर२ संध्या २ साद्धि सूर, आरोहि३अर्व हय मृग१ हजूर
गृहती गोबाटी१ मुख प्रबिष्ट४, आवत४ निवसथ२ बिच स्वकवि
इष्ट ॥ ६० ॥

तबतैं पामंडे६ पट१न तानि, अति अर्घं पट्टमय२ अग्ग आनि७ ॥
तिम अग्ग ८ मिलित जर १ तार २ तार३, अधिराज पत्त ९ इम
कवि अगार ॥ ६१ ॥

गनपति१ सिव२ थान जु चतुर गोल१०, तजि११हय तहँ लालित
१ ललित२ लोल३ ॥
चतुर १२ जु आव्हय करि रामचोक ३, अनि चउ ४ जुत करनी
सँक्कि ओक१३ ॥ ६२ ॥

पैठे१४ तहँ संसदँ प्रभु बनाइ, प्रविसे१५ पुनि अंदर समय पाइ। ॥
कवि आलय चत्वर बिबिध कंति, परि चो ४ सर चत्वर भंति
पंति१६ ॥ ६३ ॥

प्रभु तत्थ सखा१ सुभटन उपेत, हड्ड६१न इनँ बैठे१७ असन हेत॥
आचांत अंबु १८ स्वदनाँवसान, पानिय पवित्र लहि १९ अप्प
पान२० ॥ ६४ ॥

पुनि इम अपनं१तर अयन पत्त, महिला कविकुलकी जहँ संमत्त॥
भट दुजनसल्ल १ गोकुल २ भुँवाल, लहि संग करी३ तिम रत्न-
लाल४।१ ॥ ६५ ॥

त्रय३आदि महासिंहोत्त तत्थ, स्व सचिव काका——चउ४समत्थ

॥६०॥१ चांदी और मोतियों सहित ॥ ६१ ॥ २ चपल घोड़े को छोडा ३ करनी माता के स्थान में ॥ ६२ ॥ ४ सभा करके बैठे ५ चौक में ॥ ६३ ॥ ६ हाडों का पति भोजन करने को बैठा ७ भोजन के अंत में आचमन लेकर ॥ ६४ ॥ ८ घर के भीतर के घर में पहुंचे जहां कवि के कुल की १० सब ९ स्त्रियां थीं ११ रावराजा रामसिंह ने जिनकी लाज वे स्त्रियां नहीं करती थीं ॥६५॥ उन चार

ए ४ स्वामि १ संग चउ ४ बीर आस, पंचम ५ लहि मो१कहँ अप्प पास ॥ ६६ ॥

पंच५न जुत अंतर गृह प्रविष्ट, पहिचानी सबतिय कवि प्रदिष्ट॥
कवि[2] जननि नजर इक द्रम्म किन्न, लहि सो१ रु न इतरन[3] भेट लिन्न ॥ ६७ ॥

उत्तारँन[4] कारि तब तिय असेस, अक्खिय पवित्र किय सद्म[5] एस॥
प्रभु आसिख इम कवि तियनपाइ,उपविष्ट[6] सभा जह पुब्बआइ६८
सिरुपाव जँकुट २ बर १ बरानि २ सीर, मुद्रा सतसह १०० हय बितारि बीर ॥
॥ ६९ ॥

दासि१न घट२ मुद्रा पंच५ दत्त, पुनि इक्क१ पुरोहित२कलस३ पत्त॥
इक्क१हि निपँ मोतीसर३न आइ, पँयधावक[11] नापित४उभय२पाइ७०
इक१दम्म भेजि श्रीहरि१ अगार, दुग्गाँवीर[12]२ मंदिर इक१उदार ॥
उपदा इक१चालकनेचि३अत्थ, साह्विय इक१करनी४ भेट सत्थ७१
इततैं इक१ इक्क१ सिरुपाव १ अर्ब१, कवि जनक १ किन्न प्राभृत[13] २ सुपर्ब ॥

रक्ख्यो न उपायन वह रसेसँ[14], मोताज मिलिय इततैं असेस॥७२॥
चैलालँय[15] १ अधिकृत दम्म च्यार, धुव चउ४हि फरासरन निकँर[16] धारि ॥

आइयों को और पांचवें १ ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल को पास लेकर ॥६६॥२सूर्यमल्ल की माता ने ३ दूसरी स्त्रियों की भेट नहीं ली ॥ ६७ ॥ ४ न्यौछावर ५ हमारे इस घर को पवित्र किया ६ सभा में जहां पहिले बैठे थे तहां आये ॥ ६८ ॥ दुल्लह दुलहन के लिये ७ दो शिरोपाव ८ देकर ॥६९॥ ९दासियों के कलश में १० मोतीसरों के कलश में ११ पग धोनेवाले नाई ने ॥ ७० ॥ १२ देवी के मंदिर ॥ ७१ ॥ १३ श्रेष्ठ समय पर कविने भेट किये १४राजा ने वह नजराना नहीं रक्खा। ॥ ७२ ॥ १५फरासखाने के दरोगे को १६ फरासों के समूह को

दुव २ दम्म द्वारपाल३न दिवाइ, पुनि दुव२हि नकीब४न
निकर पाइ ॥ ७३ ॥
तांबूलकार५ इपभृत्य६ ताम, दुव२ दुव२ इत्यादिन लहिय दाम ॥
लहि सेसन इक१इक१दम्म लाह, अक्खिय पाक[1]स्तव सबन वाह७४
पुहवीस व्याह मह इम पधारि, बहु पोलिपात्र गौरव बधारि ॥
तिम सद्धि निमंत्रन हड्ड६१हेलि, किय आइ पुं[2]पसर१बेल२केलि७५
खिन पुब्ब भोज१९२।२ भूपति खवासि, रुचि सुजस ठानि व्यय
बित्त रासि ॥
नि[3]यतार्थ फुल्ललतिका१ स नाम, जिहिं नरन१ [4]भरन२ करि अठ्ठ८
जाम ॥ ७६ ॥
भुव सोधि प[5]वनदिस३।६ कोस१ भाग, तहँ नाम फुल्लसागर१तड़ाग
बिरच्यो बिसाल जहँ तहँ सुबेस, [6]आराम१।२ रचिय भाऊ१९६
इलेसँ[7] ॥ ७७ ॥
सबसाखी दल१ फल२ फुल्ल३ सालि, चद्दरि१ नला२दि जलजंत्र
चालि ॥
सुभसिल्प कुंड१बापिय२सुहात, प्रासाद३ बरन४ छबिप्रचुर पात७८
लहिकाल भयो उपवन सु लुप्त, गुरूं[10]१बिरल तरू२न रहिगो अगुप्त
अप्पहु प्रभु बिहरत कबहु आइ, लखि ताहिसज्ज बिरचन लुभाइ७९
दिय कृष्णाराम१ सचिवहिं निदेस, अभि[11]नव बलि बिरचहु बलं[12] एस
सुत जेठा१ मोहन१ प्रीति सत्थ, तारागढ अधिकृत बुद्धि तत्थ।८०।
इम कहिय सचिव वचं[13] बेल एस, नृप किपउ नव्य बिरचन निदेस

॥७३॥ १पकवान की स्तुति करके सबने प्रशंसा की ॥७४॥ २ फूलसागर नामक तालाब के बाग में क्रीड़ा की ॥ ७५ ॥ फूललताने अपना नाम ३निश्चय रखने के अर्थ ४ भरण पोषण करके ॥ ७६ ॥ ५ वायु कोण में ७ राजा भाऊने वहां ६ बाग बनाया ॥ ७७ ॥ ८वृक्ष, महल और ९कोट ॥७८॥ १० थोड़े से बड़े वृक्षों से प्रसिद्ध रहा ॥७९॥ १२इस बाग को फिर ११नवीन रचो ॥८०॥ १३ वचन कहा

सासन सु पुत्र सुहि धरहु सीस, मतिगति अरुद्ध मन्नहु महीस८१
सुनि जनक वैन प्रभु हुकम सद्य,इक्खि सु मुहूर्त तजि सब*अवद्य
प्रारंभिय उपबन नियम पारि, प्राकार †सुधा धवलित प्रसारि।८२
नवधातु ‡उदुंबर के बनाइ नलिका१§उखा२दि बहुबिध तनाइ३ ॥
तब गत छिति अंतर रक्खि ताम,जलजंत्र१जाल लगिगय ललाम८३
चद्दरि२ तिम चल्लत तनत चित्र, परिवाह सुद्धजल भृत पवित्र ॥
सरसेतु १ बेल २ बिच अति बिसाल, किय कुंड ३ किलोलन
उष्णाकाल ॥ ८४ ॥
तत श्रेढि४न सबदिस जहँ तनाइ, बिच तास पृथुल छत्री५ बनाइ॥
दिस उत्तर ४।७ तस तट रम्य देस, प्रासाद पंति ६ बिरचिय बि-
सेस ॥ ८५ ॥
चद्दरि७ जलजंत्र८ हु तहँ चलंत, छत्तिन लगि नल जल उच्छलंत॥
महलन उदीचि ४।७ दिस रुचिन मेल, बिस्तारिय सब ऋतु तरु९
न बेल ॥ ८६ ॥
सब कूप १० कुंड११ बापी१२ सुधारि, चउ४ कोन बरनें१३ किय
द्वार१४ च्यारि४॥
उत्तर तरु संभृत अखिल ऐन, दल१५फल१६ प्रसून१७ सबका-
ल देन १८ ॥ ८७ ॥
प्राची१ आसा भव द्वार पास, अभिराम राम प्रासाद१९आस ॥
दक्खिन २।३ सन ध्रुवदिस ४।७ रुचिर राह, बिच नहर २० बहत
चद्दरि प्रवाह ॥ ८८ ॥

॥ ८१ ॥ * सब अशुभों को छोडकर † चूने का उज्ज्वल कोट ॥ ८२ ॥ नवीन धातु की कितनी ही ‡ देहलियां बनाकर नलियां और फुहारों के नीचे की § हांडियां आदि उनको भूमि के भीतर रखकर तहां १ फुहारों के समूह ॥ ८३ ॥ २ आश्चर्य फैला कर ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ३ उत्तर दिशा में ॥८६॥ ४ कोट ॥ ८७ ॥ ५ पूर्व दिशा में ॥ ८८ ॥

बिच तास चलत जलजंत्र जात, जिन अवधि कुंड२१ नव९ नलन जात ॥

अतिबेग अंबु चढि तरुन उच्च२२, बरखा ३ दिखात बिनुकाल बुद्द२३ ॥ ८९ ॥

प्रतिबाटी१ *इच्छु२४न सुमर२५न पाइ, छत्री२ लवंग २६ द्राक्षा२७दि छाइ ॥

इत उपबन नैर्ऋत२१४कोन †अट्ट२८,बहु रमन सिंह आखेट बट्ट२९ निकटहि तस बाहिर कृत ‡निपान३०, तस दु २ दिस चोक३१ परिमित बितान ॥

अंतहपुर सह तहं रहि उदार, प्रभु रमत प्रचुर सिंहन सिकार ९१ सर सेतु सिरहु बाटिन सुढार, बहु कुसुम३२नागबल्लि३३न बिथार कुंड१ रु तड़ाग२ बिच बिबिध कंज३४, गुन सौरभ बिकसत कुसुम गंज ॥ ९२ ॥

अति तुंग गिरिन चहुँ४ ओर ओघ३५, सुख१ अंत्य ४ जाम२ रवि रहत मोघ३६ ॥

अति जीरन१नव२इमबिरचिबाग, सद्दिय प्रभु सासनरक्खिराग ९३ यह भूतकाल१ उपबन उदंत, समुझहु हुव पहिले सचिव संत ॥ अब बर्तमान२क्रम बत्त आहि,कविगृह पवित्र करि इम उमाहि९४ नृप तहँ बिबाह गौरव मनाइ, आये इहिं उपबन प्रमद पाइ ॥ इत जाइ ब्याहि सूचित अनेह, बहु त्याग बंटि गय सुकवि गेह९५ इत सक्क अहि गज धृति १८८८ सरद ४ अंत, मनसिज तिथि १३ बाहुल८सित२मिलंत ॥

॥८९॥*इच्छु (गन्ना) †बुर्ज॥९०॥‡प्रपा(खेली) ॥९१॥१तलाव की पाल पर २नागर बेल ॥९२॥३ऊंचे पर्वतों के समूह से ४आदि और अंत की दो पहर में सूर्य नहीं दीखता ॥९३॥९४॥५सूचना कियेहुए समय में ॥९५॥६कामदेव की तिथि७कार्तिक

भूपति सुत अर्जुन१मध्य भ्रात,जो सिसु स्वरूपलतिका१प्रजात९६
न सक्यो पारि नामहु तत्र तास, बिधि बाम बिचहि बिरचिय बिनास
सक तिहिं१८८८ तदनंतर माघ१२आम, ध्रुव मिलन थप्पि अज-
मेर१ धाम ॥ ९७ ॥

अंग्रेज७न अनुसारि मंत्र एस, एकल किन्न भूपति असेस॥
तहँ उदयनैर१ जयनैर२ ताम, सह जोधदंग३ बुन्दिय४ सनाम।९८
कोटा५ रु कृष्णगढ६ प्रमुख केक, बुल्लिय नरेस प्रभुपन बिवेक
महिपति जवान३ १ सीसोद १ मोर, कूरम २ जयसिंह २ सु बय
किसोर ॥ ९९ ॥

कुल हड्ड६१न दिनकर उक्त काल , प्रभु राम २०२।४।३ पत्त
अप्पहु कृपाल ॥

पुनि पत्त राम४ कोटा पुरेस, इह्न सचिव झल्ल आयत्त एस।१००।
कल्ल्याँन५ कृष्णगढ बिभु कहात, बिभु६ करि सुत १ कढ्ढिय जु
२ भट ब्रात ॥

इत्यादि अधिप सब बल सजाइ, आहूत७ निगम अजमेर आइ१०१
पै इक्क१ जोधपुर३ नृप प्रमत्त, पति अलस नरन नहि मान३ पत्त ॥
मुररयो गिन्यौं सु जग मद मरोर, जिहिं फल पुनि पैहैं कुबिधि जोर
सूचित १८८८ सक मेचक१ माघ११ आम, तिथि नवमि९ आंगिर
स५ बार ताम ॥

तहँ नाड़ी चउदह१४निस बिताइ,पुनि सुभमुहूर्त तस अग्गपाइ१०३

सुदि॥ ९६ ॥ १माघमास में ॥९७॥९८॥ २आदि ३ जवानसिंह ॥ ९९ ॥ ४सचिव झाला माधवसिंह के वश में था ॥ १०० ॥ ५ कल्याणसिंह ६ प्रभु (राजा) पुत्र को किसनगढ में मालिक करके उमरावों सहित निकला ७ अंगरेजों के बुलाये हुए अजमेर नगर में आये ॥ १०१ ॥ ८ आलस्य करके नरनाथ मान सिंह नहीं आये ॥ १०२ ॥ ९ मास में १० गुरुवार ॥ १०३ ॥

वह लहि प्रभु प्रस्थित बल्ल सुहात, पगि प्रथम१पगाँरा१सिविर पात
दल पात देवली२किय द्वितीय२,तीजा३सु केकरी३अस्थितीय१०४
सरबाट४रामपुर५बीर६ सीम, किय क्रम मुकाम भट अरिन भीम ॥
सप्तम७मुकाम कछु देर संग,दल पहुँचि सक्यो नहि गम्य ढंग१०५
परिमग्ग बिपिन बिच कटक पात, भुग्गि सु निस सप्तम ७ हुव
प्रभात ॥
अष्टम८दिन दु२पहर लंघिअप्प, आरुहि इभ दुजनन दलतदप्प१०६
दुंदुभि १ पटह२दिक बिरच बज्जि, सब भट १ बयस्य २ कवि ३
सचिव४ सज्जि ॥
भप्पत लगिडेरिन गमनमग्ग,बलहंकिय हद ढिग सिथिलबग्ग१०७
उततैं अंग्रेजहु पर्व पाइ, अधिकारी पंचक५समुख आइ ॥
मातंगारूढन हुव मिलाप, इम मुदित पटालय पत्त आप ॥ १०८ ॥
गोरेहु गये लहि सिक्ख गेह, अष्टम८ मुकाम अजमेर८ एह ॥
तहँ पुर सन उत्तर४।७लालताम,अभिधान अन्नसागर१ सनाम१०९
उत्तर४।७ प्रपात तस रचिय आत, जैपुर जन सर पृतना प्रपात ॥
तिम जानहु दक्खिन२।३ तीर तास, परि बल प्रभु अप्पन सिविर
आस ॥ ११० ॥
दक्खिन२।३दिस पुर सन कछुक दूर, तहँ रान तंत्र परि तंत्र पूर॥
बलिरान१के रु पुर२केबिचाल,जोरिय कोटावल सिविरजाल१११
इत्यादि अधिप उत्तरि असेस, पटकुटन रहे परिसर प्रदेस ॥
लगि ललित कलित बंसा१वलंब, पटबरन१ सरन२ आयत१ प्र-

॥१०४॥१०५॥१०६॥१०७॥१समय पाकर२हाथियोंपर चढ़ेहुए ॥१०८॥१०९॥३पड़ाव (मुकाम)॥११०॥ ४ महाराणा के अधिकार में गृहों(डेरों)का समूह हुआ ॥१११॥ ५नगर के समीप डेरों में रहे, सुंदर मोटे और लंबे बांसों की ६प्रसिद्ध ७कनात

लंबर ॥ ११२ ॥

वलंब१मलंबर२अंत्यानुपासः ॥ १ ॥

शूल१न प्रति उच्छ्रित थूल थंभर२, सिर कनक कलस३ खचि म-
नि सदंभ४ ॥

बनि अग्र अजिर५ नाना बितान६, सब ठां बनि स्रस्तर७ बिबिध
बान ॥ ११३ ॥

लगि बेणु इसीकन चिक८ ललाम, चिलन बिचित्र धृत धाम धाम
सिचय१ रु जवफलँ२ मय कृत सुढार, परदा९अपटी१० दिपि द्वार
द्वार ॥ ११४ ॥

सब कृत्य सदन११ वसु८ दिस बिभाग, पल्लयंक१२ पीठ१३ रुचि
रम्य राग ॥

गन तलिन१४न मलिन न निचुंल१ गुप्त, ऊधस्य फेन छबि फबि
अछुप्त ॥ ११५ ॥

प्रति थूल चूल१५ सध्वज पताकि १६, लहरात बात बेणु१न ल
तारकि ॥

क्रम करि प्रभुबिलसनअप्पकज्ज, सिचयालय ऐसे बिहितसज्ज११६

का कोट लगा ॥ ११२ ॥ १ डेरों के थंभ ऊंची चोबों के लगे जिन पर मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के कलश लगे २ जिनके आगे चौक रहकर अनेक प्रकार के ३चंदवे (सामियाने) तने ४अनेक प्रकार के शयन के तथा खसके डेरे बने "यह माघ मास था इस कारण खसके डेरे नहीं संभवते किन्तु शयन के डेरे ही जानो" ॥ ११३ ॥ ५ बांस की सुन्दर तूलियों की चिकें लगीं ६ वस्त्र और ७ घांसोंमई श्रेष्ट पड़दे और डेरों की ८ कनातें द्वार द्वार पर शोभित हुई ॥ ११४ ॥ भीतर मलिनता रहित १० वस्त्र की ९ बिछायत हुई जो ११ स्तनों से निकले हुए दूधके झागों के समान अस्पर्श कीहुई शोभा देती थी ॥ ११५ ॥ प्रत्येक डेरे पर १२ थंभो थंभों(चोबचोब] पर ध्वजा और पताका "अनेक वस्त्रों वाली ध्वजा और एकवस्त्रवाली पताका कहलाती है" उड़ती है सो मानों बासों की लता को पवन हिलाता है १३ उचित डेरे सजे ॥ ११६ ॥

प्राकार१७ कील१ मरक्कर२प्रविद्ध, संपुट त्रिक३ जवनि३न वला-
ज१८ सिद्ध ॥
रहि तत्थ रुचिर बिलसतबिलास,पुनिसज्जिय जावन लाठपास११७
चलि अग्ग चक्क चरख१न चठक्कि, तोप१न गन लोपन गढन तक्कि॥
थहरात हेतु झंडन थरक्कि, फहरात केतु१ दंडन फरक्कि ॥११८॥
बहि कतिन जुत्त हय२ कतिन बैल४, गुनैं रत्त रत्त५ द्रव पत्त गैल
तिन्हपिट्ठि तरल नागद्न।निसान७,रुचिपीवल रोचन दिपिदिसान११९
सज्जित कति हौद८न निबहि सिंक्कि, परि मेघाडंबर९ कतिन पिट्ठि
बहि पिट्ठि पलट्टनि१०बिहित व्यूह, जहँ सद्धत प्रहरन पंत्ति जूह१२०
इन्ह केटँ आयुधिक पत्ति११ओर, जिन्ह केट सादि१२गन नियति
जोर ॥
पुनिकेट चोक१३रंज्जुनप्रमेय, सादिन प्रवेक गुन१४पिट्ठिश्रेय१२१
तिन्ह केटँ प्रमित पुनि चारु चोक१५, अति मुख्य पत्ति१६ तिन्ह
मध्य ओक ॥
रहि पास सामि तहँ अंतरंग १७, तहँ पदग मुख्य तिम१८ स्वामि
संग ॥ १२२ ॥
आरूढ तुरग तिन बिच अधीस १९, सहदंड१ खचितँ मनि २ छ-
त्र२० सीस ॥
पांडुरँ रुचि चामर२१ढुरि दुरपास, ससिपर कि दुरघन सितँ रचत

१प्रसिद्ध बांसों की कीलें२कनातों के तीन घेरों का कोट और द्वार॥११७॥३गढों का नाश करने को तक्ष [कुठार]रूपी॥११८॥ ४लाल लाल रंग को मार्गमें बहा-नेवाली ५ चपल हाथियों के निसान ६ पीले रंग के ॥११९॥ ८ शिष्टि [आज्ञा] को ७ निबाहकर १० पैदलों का समूह ९ शस्त्रों को साधते हैं ॥ १२० ॥ ११ इन के पीछे १२ डोरियों का नापा हुआ चोक ॥ १२१ ॥१३ जिनके पीछे इसी प्रमाण का सुंदर चोक ॥ १२१ ॥ १४ मणियों के जड़े हुए दंड सहित १५ श्वेत रंग के चमर ढुलते हैं सो मानों १६ चन्द्रमा पर दो १७श्वेत बादल नृत्य करते

रास ॥ १२३ ॥

मोरछल्ल२२ *पुरट१ मनि२ दंड३ मेल, खिल्ल ग्रह६ जनु †सनि७ सन करत खेल ॥

नरनाह१ बाह हय मनि२ नचात, पेक्खकन पंथ मेदुर मचात ॥१२४॥

संक्रमिय सज्ज बल दंभ्र बीर, उरझात अस्त्रि सेलन समीर॥

नागन१क्रम ओमि१जिम उदधि नाव, भुव भजत कंप२ तजि अचल भाव ॥ १२५ ॥

फिरि लेत तरारन तुरग२ फाल, भिरि देत दरारन उरग भाल ॥

सिर अगन डिगन लगि लरज संग, चिर्भट कि चरन चिपि भजत भंग ॥ १२६ ॥

दुव२ दुव२ भट कुंतन करत दाव, पटु घात देन१ टारन२ प्रभाव॥

बहु खगन खगन गनगगनबेधि, समलगन दैन तुपकन निसेधि१२

संगिन कति भंगिन करत सिद्ध, सद्धत कति तुपकन मन

मंडत कति दुद्धर असिन मग्ग, अभ्यासत हेतिन इन उदग्ग ।१२

प्रस्थित इम संभर धरनिपाल, बिधि क्रम पथ पहुँचत हद बिचाल

उततैंहु साठ१ प्रभु२ समुख आइ, लैगो सु निलय बल जिाद बिसाइ ॥ १२९ ॥

हैं ॥ १२३ ॥ मणियों के मिलाप सहित * सुवर्ण के दंडवाले मोरछल हैं सो मानों बाकी के ग्रह † शनैश्चर से खेलते हैं, राजा रामसिंह बाहनों के मणि रूपी घोड़े को नचाता है सो मार्ग में देखनेवालों को अत्यन्त स्निग्ध करता है ॥ १२४ ॥ १ अल्प सेना समझकर चला २ भालों की अणियों [नोकों]में पवनको उलझाता हुआ, हाथियों के चलनेसे समुद्रकी ऊर्मि[भमर] में नाव के समान भूमि घुजती है ॥ १२५ ॥ ३ पर्वतों के शिखर डिगकर धूजनेलगे सो मानों चरणों से चिपकर ४ काकड़ी तूटती है ॥ १२६ ॥ तरवारों से आकाश में उडते हुए ५ पक्षियों के समूह को बेधते हैं ॥ १२७ ॥ कितने ही साथी बरछियों से ६ लहरों को सिद्ध करते हैं ७ शस्त्रों का अभ्यास करते हैं ॥ १२८ ॥ ८ मकान के द्वार में प्रवेश कराकर ॥ १२९ ॥

निज सबय सुभट कति सूचि नाम, धरनीस संग लिय गम्य धाम
क्रम करि तहँ दुर्ज्जनसल्ल१ कर्ण्ण२, पर अहि१न बिजय३ गिरि
धर४ सुपर्ण्ण२ ॥ १३० ॥

बलि ईश्वर५ मंगल१।६रत्न२।७ बीर, धात्रेयज अंतिम इह दु२धीर ॥
थितिसत्त७स्वभ्रृत्यन बलजथप्पि,इन्हसत्त७न भृत्यन कर्मअप्पि१३१

दोउ२न कर इक१ इक१ चमर२ दत्त, पुनि दोउ२न इक१ इक१
बार्ह्२स्पत्त ॥

खिल तीन३न ३पज्जन१।५ रु चर्म४२।६ खग्ग३।७, इन्ह थप्पि अनुग
इम पिट्ठि१ अग्ग२ ॥ १३२ ॥

छबि सारद कादंबिनि छटा१कि, घनगज कुलीन कुंभिन घटा२कि
जनु प्रालेयाचल६ सिखर३ जाल, सिवसैल सानु४ बिसद कि बि-
साल ॥ १३३ ॥

अद्भुत पटआलय ओरओर, ठनि बित्त रहे बनि ठोरठोर ॥
निज निपत लाठ पटकुट निवास, पांडुर८ अनेक इमआसपास१३४

सचिवाग्रग मोहन१ सह सुसील, इन तंव खान जामियत२ वकील
ए दुव२गत पुब्बहि लाठ औन, लाये तिहिँ सम्मुह प्रभुहिँ लैन१३५

सह प्रीति१ रीति२ नृप नीति३ संग, अच्छय सब नय मय रक्खि
अंग ॥

इन दुहुँ२न लाठ१के संगआइ, बिभु१जुक्त उक्तपटगृहबिसाइ१३६
तत चारु दारुमय पीठ तत्थ, उपविष्ट अधिप१ सह मुख्य सत्थ२

॥१३०॥१धायभाई ॥१३१॥२मोरछल ३पंखा ४ढाल ॥१३२॥ मानों शरदऋतु की मेघमाला की शोभा किंवा ५ ऐरावत के कुल के हाथियों की घटा है (ऐरावत का रंग श्वेत है)६मानों हिमालय पर्वत पर शिखरों का समूह है ७किंवा कैलास पर्वत पर श्वेत रंग के बड़े शिखर हैं ॥ १३३ ॥ इस प्रकार के अद्भुत डेरे चारों ओर हैं८ श्वेत रंग के ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ ९ काष्टमय सुंदर सिंहासन कुरसी पर १०राजा बैठा

हितजुत बिधेय व्यवहार होइ, प्रतिहित१ गुनें२ गुन१ सुमर२ मा-
ल्य पोइ ॥ १३७ ॥

दलनाग³१ अतर२ आदत्त१ दत्त२, रस१ रुचित रक्खि बदि उचित
बत्त२ ॥

नृप आतत सिक्खहिं कारि निकेत,पहुँचान आय लाठहुउपेत१३८
सिबिर मुख खरे हय स्वासें सर्व, आरुहि तहँ नृप हयमृग१ सु अर्व॥
लहि लाठ हार्द फेरिय इँलेस,बलि तिहिं तजि आरुहि हय बिसेस२
—————— धाम, नर्तिन सु मदनमतवार२ नाम ॥
तजि ताहि बहुरि आरुहि तृतीय३, हय मनि३ समारूप हय गुन
गरीय ॥ १४० ॥

तीय१रीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

गोपालसिंह २०२१५ निज अनुज गेय, जुरि उभय २ भल्लफेरिय
अजेय ॥

हय फेरि रहिय थित जबमहीप,मनमुदित लाठ गत हयसमीप१४१
हीप१ मीप२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

तसँ थप्पालि निजकर खंध ताहि, अक्खिय यह घोरन लाठ आहि
थित रहिय लाठ आदिक स्वधान,हंकिय निज डेरन चाहुवान१४२
सित १ माघ ११ चुत्थि ४ तिथि वार सूर१, प्रभु इम आये मिलि
प्रमद पूर ॥

अह त्रिक३बिताइ अष्टमि८अनेह,आयो प्रभु१पटगृह लाठ२एह१४३
अधिपहु सीमालग समुह आइ, लैगो पटआलय भय लसाइ ॥

---

१ डोरे में पोई हुई श्वेत रंग की माला ॥ १३७ ॥ २ नागरबेल के पान ३ लिया और दिया ॥ १३८ ॥ ४ अपने सब घोड़े ५ राजाने ॥ १३९ ॥ ६ नाम ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ अपने हाथ से ७उस घोड़े का कंधा थापकर ॥ १४२ ॥ ८रावराजा रामसिंह के डेरे पर ॥ १४३ ॥

सुचि मोहन १ जामिपतखान २ सत्थ, संलापि अनेह कछु मति
समत्थ ॥ १४४ ॥
थित रहिय सभा२ तिहिं सिबिर१ थान, इक१ मंत्र पटालय३पिछिआन
तिहिं प्रविसिय नृप१ सह लाठ२ तत्थ, साहब सिकत्तर ३ अजंट ४
सत्थ ॥ १४५ ॥
सचिव१ रु वकील २ दुव चलिय संग, इक१ मोहन १५ जामिपत
खाँ२१६ असंग ॥
थित खुरसिन६हुव सब६मंत्र थान,जंपिय नरेस लाठहिं सुजान१४६
केसवपट्टनि पुर पूर्वकाल, हमरो हुतो सु बिख्यात हाल ॥
दक्खिन अधीस वह किय दलेल४, मंडिय मरहट्ठन हिंतु मेल ।१४७॥
संबत श्रुति मुनि गिरि इक्क १८७४ सार, किन्नौं जु अप्प हमतैं
करार ॥
दिन्नोंहि लख्यो ताबिच सु ढंग,सो देहु हमहिं अब लेखसंग१४८
कोटरिय इंद्रगढ मुख६ कुचाल, जे परि सब जाल७मैं कपट जाल
प्रतिवार्षिक सूबा द्रम्म पूर, कोटा सम्मालि ठहै देत कूर ॥१४९॥
अब करहु सबन हमरे अधीन, क्यों अप्प राज्य यह अनय८ कीन२
पुनि रान हिंतु हम चहत प्रीति,रक्खैं वे हम सन द्वेष रीति॥१५०॥

१कुछ समय बात करके॥१४४॥२सभावाले वहीं स्थिर रहे३सलाह करनेका डेरा ॥१४५॥१४६॥४दलेलसिंहने वह नगर दाक्षिणियों को देकर ५उन दाक्षिणियों से मेल किया ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ ६ इन्द्रगढ आदि कोटाडियां खोटी चाल से ७ जालमसिंह झाला की जाल में पड़कर ॥ १४९ ॥ आप के राज्य में यह ८ अनीति क्यों की ९ उदयपुर के (*)महाराणा से हम प्रीति करना चाहते हैं ॥१५०॥

(*) पंचम राशि के अन्त में बुन्दी के राव सूर्यमल्ल के हाथ से महाराना रत्नसिंह के मारेजाने में जो कारण बुन्दीकी ख्यातके अनुसार इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) ने लिखा है वही कारण रावराजा अजितसिंह के हाथ से महाराना अरिसिंह के मारेजाने में उदयपुरवाले बताते हैं जिसको स्पष्ट रीति से लिखने की प्रतिज्ञा हमने वहीं पर की थी परन्तु भूलके कारण अरिसिंह के मारेजाने के प्रकरण में नहीं लिखागया सो प्रकरण

कछु द्वेस हेतु हुव पूर्वकाल, हम तिहिं न गिनत वे गिनत हाल ॥
किन्नों वे चहत सम्मिलन काम, सम अप्पमध्य रहि करहु साम[1]१५१
तहँ बिटक सुनि नृप बत्त तीन३, क्रमतैं प्रत्युत्तर३ लाठ कीन ॥
किय पूर्व ग्वालियर इस करार, दिय पट्टनिता बिच लेखद्वार१५२
बदलै सु लेख जब तबहि बत्त, तुमरो वकील यह कहहु तत्त ॥
कोटरिय तिमहि कोटा करार, बिच पुब्ब दई हम लेख बार१५३
सुहु जबहि लेख बदलैं सु सील, कारित[2] चिंतन तब ठहै वकील ॥
तब होत होन संभवप्रतीति, नहि बिचहि बचन बदलैं सु नीति२।१५४
अरु रान मिलन जो चहत आप, मन्नत सु हमहु उचितहि मिलाप
पै पुच्छि रान सम्मतहिं पाइ, जो हार्द सु हम दैहैं जनाइ ॥१५५॥
तदनंतर स्वागत[3] पर्व तत्त, द्विप१ इक१ अखर्व[4] दुव२ अर्व२ दत्त ॥
मंजुल महर्घ[5] सिरुपाव१।३श्रेय, महि बेद४१संख्यतखती।प्रमेय१५६

१ अब हम उनसे मिलाप करना चाहते हैं ॥ १५१ ॥ उस डेरे में राजा की तीनों बातें सुनकर ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ २ याद करानेवाला ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ ३ स्वागत करने के समय ४ एक बडा हाथी ५ बहुमूल्य ॥ १५६ ॥

बरात यहां लिखाजाता है कि कृष्णगढ के महाराजा बहादुरसिंह की बडी पुत्रीके साथ रावराजा अजितसिंह और छोटी पुत्रीके साथ महाराना अरिसिंह व्याहे थे, और उदयपुर में सिंधी यवनों के बखेडे से घबराकर महाराना अरिसिंह कृष्णगढ में रहे वहांसे मेवाडके फरेबी राना रत्नसिंह के पक्षवाले उमराव जो महाराना अरिसिंह से विरुद्ध थे उन्होंने रावराजा अजितसिंहके नाम ऐसा पत्र लिख भेजा कि जिससे क्रोध में आकर महाराजा अजितसिंह ने अरिसिंह को छलघात से मारडाला. बुंदीवालों ने जो कारण महाराणा अरिसिंह के मारेजाने में बताया है इस पर करनल टाडने भी अपनी किताब (टाडराजस्थान) में शंका प्रकट की है और मेवाड के इतिहास (वीरविनोद) में स्पष्ट ही इसारा किया है, जिनसे भी यही सिद्ध होता है कि यह मेवाडके उन उमरावों की ही दुष्टता थी कि एक कल्पित अपराध पर अपने स्वामीको मरवाडाला और इसी कल्पित अपराध पर मारेजाने के कारण उदयपुरवाले बुंदीवाला से कभी मिलना नहीं चाहते और बुन्दीवाले वारंवार महाराना से मिलाप करने का उपाय करते रहते हैं जिनमें यह पहला ही प्रयत्न था जो लाठसाहिब के द्वारा कियागया. इस पीछे तो अनेक यत्न हुए वे खालीगये किंतु सबसे पीछेका यत्न जोधपुर के मुसाहिब आला करनल सर प्रतापसिंह साहिबने इस टीकाकार[बारहठ कृष्णसिंह]के द्वारा किया था वह भी निरर्थक हो गया ॥

हढ इक१ जटित मनि मुट्ठिदार, कमनीय प्रतन बुन्दिय कटार१।१४
अभिनव दुस्सह बल तुपक १।५ एक१, ए उक्त उभय२ मेहरन
प्रवेक ॥ १५७ ॥
इत्यादि अप्पि लाठहिं इलेस, दिय सिक्ख आइ सीमा प्रदेस ॥
दूजे३अहँ नवमी९भोग्य दिष्ट, अप्पहुपहु बिरचन सिक्ख इष्ट१५८
पुनि लाठ पँटालय प्रगुन पत्त, बिधि आनि ठानि हित तानि बत्त
तीन३हि मिलाप भट सत्त७तेहि, हितपुञ्ज अनुगोपन रतरहेहि१५९
इक१ दंती१ इक१ हय१जव अमान, सिरुपाव १।३ इक्क १ सुचि
बर बितान ॥
तखती मिति निधि गुन ३९ सरूप तास, इत्यादि आदि प्रभु भेट
आस ॥ १६० ॥
दीरघ दुरनालि१ हुक१ नालिँ२दार, बिनु अनल१ उपल२ फल१
बल बिथार२ ॥
इम तुपक१ बिधा अद्भुत अनेक, कटितंत्र तमँचा२ जंत्र केक१६१
पुनि दूरबीन१ घटिका२ पुरोग, बिस्मय करि बस्तुन जोरि जोग॥
उपदा इत्यादिक पुनि अनेक, पुनि भेट लाठ किय गुन प्रवेक१६२
करि सिक्ख आइ प्रभु पटनिकेत, चिंतिय पुनि पुष्कर गमन चेत
इत उदयनेर१जयनेर२ईस,हुव मिलन उत्कँ जिम कुल हदीस१६३
पै कुम्म १ झूंत २ सिंघी प्रगोय, गुनँ ६।१ सक्ति ३।२ रहित जु न
प्रभु गणोय ॥

१सुंदर २शस्त्र ॥१५७॥ ३दूसरे दिन ॥१५८॥ ४डेरे में ५सेवकपन में तत्पर होकर ॥१५९॥६अमाप वेग वाला ॥१६०॥७ बंदूक ८ पत्थरकला ९ पिस्तोल ॥१६१॥१० घड़ी आदि ॥ १६२ ॥११डेरों में १२मिलने को उत्कंठित हुए ॥ १६३ ॥ जयपुर का राजा कछवाहा जयसिंह १३झूंनाराम सिंघी के वशीभूत और १४ संधि आदि छहों गुण और मंत्र आदि तीनों शक्तियों से रहित था इस कारण वह प्रभु (स्वामी) गिनेजाने योग्य नहीं था ॥ १६४ ॥

इत तदपि झुंत सम्मति अधीन, कछवाह श्रावक न सज्जकीन १६४
सामजं चढाइ दल दभ्र सत्थ, प्रस्थित किय कुम्म१हिं रान२ पत्थ
जहँ हुकमचंद१ झूंतां२ग्रजात, नृप पिट्ठि खवासी थिति निभात १६५
सह दंड१ जटित मनि छत्र२ सीस, मोरछल्ल१ चमर२ बीजित म-
हीस ॥
इम रान सिबिर जयसिंह आइ, कछु वढि गज हुल्लिय क्रम चु-
काइ ॥ १६६ ॥
प्रतिहार मुख्य तहँ रान पोरि, निज जनन पिल्लि गजपहँ निहोरि॥
कछवाह करी करि राह रुद्ध, उतराइ अधिप सीमा अबुद्ध ॥१६७॥
पटबरन पुटन अंतर पेउट्ठ, जयहारि१ इम पहुँचत स्वजन जुट्ठ ॥
उततैं तिम तदवधि समुह आइ, सीसोद राजकुल क्रम सधाइ १६८
कर १ तास अप्प कर २ रक्खि तान, जग बिदित जनन आन्हप
जवान२ ॥
बिष्टर इक पुनि किय थिति बिसेस, दाहिन१ जवान१ जैपर२ बा-
म२ देस ॥ १६९ ॥
इम बैठि सभाऽऽसन कछु अनेह, संलाप आप करि भारि सनेह ॥

---

१ हाथी पर चढाकर २ अल्प सेना सहित कछवाहे को राजा के पस्त्य (घर) को रवाना किया ३ झूंताराम का बड़ा भाई ॥ १६५ ॥ ४ पवन होता हुआ ५ हाथी को हूलकर उतरने की सीमा से क्रम चूककर आगे बढाया ॥१६६॥ राना के मुख्य द्वार पर ६ द्वारपालने अपने लोगों को ७ महावत को बार बार कहकर कछवाहे के हाथी का मार्ग रोककर ८ उतरने की सीमा नहीं जाननेवाले राजा को अथवा राजा को उतरने की सीमा समझाकर हाथी से उतारा ॥ १६७ ॥ कनात के पुडों के कोटके भीतर अपने लोगों से १० सेवित राजा जयसिंह ९प्रविष्ट हुआ ११अवधि पर्यन्त १२रावल कुलवाला ॥१६८॥ जयसिंह के हाथ पर अपना हाथ रखकर, संसार में प्रसिद्ध १३ वंशवाला महाराणा जवानसिंह१४गद्दी पर दाहिना जवानसिंह और वाम ओर जय-सिंह बैठे ॥ १६९ ॥

वलि अतर१पान२मुखबनिबिधेय,पटकुट गो कूरम भट प्रमेय१७०
रहि क्रम लहि अवसर तदनु रान, जयसिंह१पटालय२गय जवान॥
कुल रीति साढि किय मिथ मिलाप, दक्खिन१ दिस उपविसि इतहु आप ॥ १७१ ॥
तंबोल१ अतर२लै१ दै२ तथाहि, स्वसिबिर गय रानहु नय समाहि
प्रभु १ चहि निज मातुल मिलन प्रीति, कल्यान कृष्णगढ नृप पुनीति ॥ १७२ ॥
बुल्लिय स्व पटालय क्रम बिधान, मातुल२ तहँ अनुचित गहिय मान ॥
भाखिय तुम लघुबय १ भागिनेय २, गुरु वृद्ध१ रु मातुल २ हम गणेय ॥ १७३ ॥
तकि तारतम्य कारन तदीय, इम बाढहु गौरव अस्मदीय ॥
उल्लंघि रीति बिधि कज्ज एस, न गिन्यों हित ससचिव१ भट २ नरेस ॥ १७४ ॥
जहँ इम इतरेतर दर्प जोर, अवनीस मिले जाने न ओर ॥
मिच्छननिदेस सब धरतमत्थ, न मिले ति परस्पर मदअनत्थ१७५
इत प्रभुहु तीर्थगुरु गम्य आइ, किय न्हान१ दान२ क्रम मह मचाइ
द्विज चिमनराम१मुख गुरु उदार,कियश्राद्धसर्वकुल१बंधु२वार१७६
नर१ नारि२ सिसु३न भूषन१ निचोल२, अखिलन अधीस अप्पिय अमोल ॥

उमरावों के साथ २ यथार्थ ज्ञान लेकर १ कछवाहा अपने डेरे गया ॥१७०॥ ३ परस्पर ४ यहां भी महाराना जवानसिंह ही दाहिनी ओर बैठे ॥ १७१ ॥ राव-राजा रामसिंह ने अपने ५ मामा कल्याणसिंह से मिलना चाहा ॥ १७२ ॥ अवस्था में छोटे और ६ भानेज हो ॥१७३॥ आप के ७छोटे बडे होने का कारण देखकर ८ हमारा गौरव (बड़प्पन) बढाओ ॥ १७४ ॥ ९ परस्पर घमंड करके ॥ १७५ ॥ १० जहां जाना था वहां पुष्कर आकर ॥ १७६ ॥ ११वस्त्र १२ सबको

इभ १ हय २ रथ३ मंडित एक१ एक १, इम धेनु४ निकर अप्पिय अनेक ॥ १७७ ॥

रूप्पय सोलहसत१६०० दै रसेस, अजमेर आइ रहि रत्ति एस ॥
बुंदिय दिस प्रस्थित हुव बहोरि, पहिले१मुकामपुनि२जातजोरि१७८
तिथितीज३असित२असित७रु*तपस्य, बुंदियबिसेससहमह१संदस्य२
पुर१ पुर२ अमात्य १ जुव्वन २ प्रदिष्ट, बिलसिय बिलास प्रभु अप्पि इष्ट ॥ १७९ ॥

॥ दोहा ॥

दिनदुल्लह होरिय जनन, सह मह कौतुक साहि ॥
सचिव१सुहृद२भट३बुध४सभा५, लिय क्रीडन रस लाहि१८०
कुसुम१ रु रंग२ गुलाल३ क्रम, करि बाहिर१ बहु केलि ॥
सह रानिन अंतर२ सभा, होरिय किय कुल हेलि ॥१८१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रे महारावराजारामसिंहराजकुमारभीमसिंहजनन१ ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लप्रथमविवाहतन्महसूर्यमल्लहरणाग्रामरामसिंहगमन२ योधपुरेशमानसिंहातिरिक्तोदयपुरमहाराणजवानसिंहादिराजस्थानभूपाललाडाभिधांगरेजप्रधानाधिकारिसंमिलनाजमेरगजसभागमन

दिये ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ * फाल्गुन वदि तीज को १ सभासदों सहित विशेष उत्सव से बुंदी में गये २ अमात्य रूपी यौवन ने शरीर रूपी पुर में प्रवेश करके स्वामी को वांछित फल देकर विलास किये ॥१७९॥ ३ मित्र ४ पण्डितों के साथ सभा में ॥ १८० ॥ ५ कुलके सूर्य ने होली खेली ॥ १८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के रामसिंह के चरित्र में, महारावराजा रामसिंह के राज कुमार भीमसिंह का जन्म होना १ इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल का प्रथम विवाह और सूर्यमल्ल के ग्राम हरणा में रावराजा रामसिंह का महमान होना २ अजमेर में आम दरबार होकर जोधपुर के महाराजा मानसिंह के विना उदयपुर के महाराणा जवानसिंह आदि राजपूताना के रईसों का लाठ साहब की मुलाकात को अजमेर

इअजमेरमत्यावृत्तपुष्करस्नातरामसिंहबुन्दीप्रत्यागमनवर्णानंदशमो मयूखः ॥ १० ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

समरसिंह१८२७ नृप चरित सन, लहि आरंभ१ उदंत ॥
रु अजमेर सन रावरे, आगम लग जिहिं अंत२ ॥ १ ॥
इते ग्रंथ बिच किय अनिस, बिदित बैरन संबंध ॥
त्यागि मनोहर१ आदि त्रिक३, सबहि छंद दृढ संध ॥ २ ॥
मनोहरा१रुप घनच्छरी२, सरूपक३ हु इन माँहिं ॥
दृत्ति१ छेक१ बहु पै नियत, बरनसगाई३नाँहिं ॥ ३ ॥
सब खिल छंदन नियम सह, बिहित बरन संबंध ॥

जाना३ अजमेर से पुष्कर स्नान करके रावराजा रामसिंहके बुंदीमें पीछे आने के वर्णन का दसवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥ १० ॥ और आदि से तीनसौ बहत्तर३७२ मयूख हुए ॥

राजा समरसिंहके चरित्र १से प्रारंभ का २ वृत्तान्त लेकर रावराजा रामसिंहके अजमेर से पीछे बुंदी ३ आने पर्यन्त ॥ १ ॥ इतने ग्रन्थ में ४निरंतर ५ [*]वर्ण सम्बन्ध (वरणसगाई) नामक अलंकार रक्खा है जिसमें ६मनोहर ८ घनाचरी और रूपक इन तीन छन्दों को छोड़कर बाकी सभी छन्दों में दृढ ७ प्रतिज्ञा से वर्णसंबंध है और उपरोक्त तीनों छन्दों में भी ६ छेकानुप्रास तो बहुत है परंतु वर्ण संबंध नहीं है ॥ २ ॥ ३ ॥

---

[*]वर्णसम्बन्ध [वरणसगाई] नामक अलंकार केवल चारणों की कविता में ही है अन्य कवियों की कवितामें यह अलंकार नहीं है सो अन्य जातिके कवियोंके ग्रंथोंसे स्पष्ट सिद्ध है, इस अलंकारका सर्वोत्तम नियम यह है कि जो अक्षर चरण के आदि में आवे वही अक्षर चरण के अंतिम शब्द के आदि में होना चाहिये जिसके उदाहरणमें इसी ग्रंथका यह दोहा है "चांमाके सिरकी चटक, खोज कटक रनखेत ॥ हारयो कर आयास हर, हारयो तदपि न हेत॥" परन्तु इतने बड़े ग्रंथमें कहीं परभी कोई अशुद्ध शब्द नहीं आने देकर इस नियमका निर्वाह करना कठिन था, इस अवस्था में अशुद्ध शब्द के प्रयोग नहीं करने के नियमकी पूर्ण रक्षा करके बरणसगाई का जो नियम सूर्यमल्लने इस ग्रंथमें रक्खा है यह भी प्रशंसनीय है ॥

इक१ चरन१ गत इक१ अरु, द्वि२ त्रा३दिहु श्रुत संध ॥४॥
चरन१/४ केर अद्ध१/२रु चरन३/४, इनके अल्पहु अंस ॥
तिन्हलौं आदि१ रु अंत४ तक, सुहि संबंध प्रसंस ॥ ५ ॥
स्मृत न भयो कहुँ तो सुबुध, न गिनहु कठिन बनै न ॥
मनको धर्म्महि बिस्मरन, यहहि सनैन१ अनैन२ ॥ ६ ॥
कथित प्रपत्न २ प्रबंध कारि, अच्छर सगपन आनि ॥
अब प्रयत्न तजि आक्खियत, ठांठां नियम न ठानि॥ ७ ॥
कँवि के सविता चंड कवि, अति प्रभु प्रीति अमत्र
लैन सिक्ख तिन किय अरज, तीरथ सेवन तत्र ॥ ८ ॥
षट्पात्॥सुकवि चंड तिहिं समय बरस चालीस इक४१ वय ॥
भाखा१ त्रिकं३१ साहित्य२ तुपक बिद्या३रु स्वरोदय४॥
सकुना५दिक जय सद्धि अब जु श्रुति सिर६ आलोचिय ॥
सक सत्तरि७० सन संतत रमन मृगया२ रस रोचिय ॥
पहिले समै सु७ दस१० अब्द प्रति मृगया७ इम रुचिमें रहिय
मारे छ६ सिंह१ महि रोकि रहि अमित बराह२ न असु गहिय ॥९॥

१कहीं तो एक चरणमें एक ही वरणसगाई है और कहीं एक एक चरण में २दो दो तीन तीन वर्णोंके संबंध है ॥४॥ कहीं पर ३चरण की चौथाई में और आधे चरणमें है और कहीं कहीं इनसे भी अल्प अंशोंमें है सो इनको आदि लेकर अंत तक यह वर्णसंबंध ४ प्रशंसा योग्य है ॥ ५ ॥ ५ जहां कहीं उपरों वर्णसंबंध रखना याद नहीं रहा वहां पण्डित लोग ऐसा नहीं जानें । यह कठिन था इससे नहीं बना किंतु नेत्रवाले और बिना नेत्रवालें स मनका धर्म भूलने का है ॥ ६ ॥ ऊपर कहेहुए ग्रन्थ में प्रयत्न करके ६ संबंध रक्खा है परन्तु अब इसका प्रयत्न छोड़कर जगह जगह नियम न रखकर कहते (बनाते) हैं ॥ ७ ॥ ७ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के ८ पिता चंडी ९ रावराजा रामसिंह के अत्यन्त प्रीतिपात्र थे ॥ ८ ॥ १० संस्कृत, प्राकृत और देशभाषा में ११वेद के मार्ग को शिर पर रखना विचारा १२निरंतर भूमि में खुदी हुई ओदियों (खड्डों) में रहकर १४ अगणित सूवर मारे ॥ ९

सिंह१ न सन कछु खर्व सिंह२ आहये तदीय अब॥
द्वीपि[2]१ बग्घ[3]२ सद्दूल[4]३ सुनहु इति[5]मुख बाचक सब ॥
वृक[6]३ -- त्रिक३ मुख बहुत ह्रस्व तिनमैं अति हिंसक ॥
हनें प्रकट भुव बैठि१ कतिक ठहैं२हि छये छक ॥
सूकर१ अँदम्र२ खिल१दभ्र२सब हायन दस१०मृग संहरिय
आरंभि१ऊर्ज्ज८फग्गुन१२अवधि२काल पललह्रास न करिय॥१०॥
आबा१न करि आखेट सुपहु[10]२ सांढ्रिय रस सेलन ॥
सांढ्रिय अँवट[11]१ सिकार सुकवि२ स्वतुपक३ सम्मेलन ॥
इम असीति८० सक अंत अतुल१ इक्कल२कटैल३ किटि[12] ॥
सीमा निज सँवँसथ[13] महाबल४ निडर५ गये मिटि ॥
अबतैंहि दया१ अंकुरि हृदय बलि रँगा[14]र२दिक करि बिजय॥
प्रभुके समीप निबसन प्रथित भुव भावित[15] हुव बीत भय११
अप्पाहि प्रमुदित अप्प किन्न कवि अरज जोरि कर ॥
तीरथ सेवन सांढ्रि नसत मो कृत अघ निर्भर ॥
देहु सिक्ख प्रभु सदय त्वरित ऐहौं करि तीरथ ॥
बनिहै अघ न बहोरि पाइ कुमतिन सु संग पथ ॥

१सिंहसे कुछ छोटे सिंह मारे उनके ये २ नाम हैं२चीता ३ व्याघ्र(बघेरा)४शार्दूल चौफूलया (बघेरा विशेष) ५ इत्यादि कहेजाते हैं ६ तीन भेड़िये(ल्याळी) आदि हिंसा करनेवाले बहुत छोटे जानवर मारे ७ बड़े सूवर और बाकी के छोटे सूवर, इस प्रकार के मृगों को दश वर्ष तक मारे ८ कार्तिक से लेकर फाल्गुन मास पर्यन्त ९ सूवर के मांस खाने का क्षय नहीं किया अर्थात् इसका कभी अंतर नहीं किया (बराबर खाते रहे) ॥१०॥ १०हे राजा रामसिंह उनने बाणों से और भालों से और ११ भूमि में खुदी हुई ओदियों में बैठकर बंदूक से अठारह सौ अस्सी के संवत् तक १२ डाढोंवाले एकल सूवर १३ अपने ग्राम की सीमा में १४ स्नेह आदि को जीतकर, आपके (रामसिंह के) समीप रहने के कारण १५शुद्ध होकर निर्भय प्रसिद्ध हुए ॥११॥

प्रभु कहिय *बाह१सेवक२प्रमुख कतिक संग लैहौ कहहु
कवि कहिय हेरहि गृहजन बहुत प्रभु प्रसन्न रुचि करि रहहु॥१२॥
जंपिय प्रभु दुवर जनन१ काय सेवन२ सहिहिँ किम ॥
बलि न लेत तुम †बाह१ राह२अति कष्ट अहो इम॥
प्रभु१जुत मित्र२न प्रकर जदपि—— हठ जोरिय ॥
दोइ२ जनन चढि तदपि निखिल बिधि संग निहोरिय ॥
सक अंक अचल गज बिधु१८८९समय मास महद्द्पाउस३अमा३०
कविराज कढिय बुन्दि बितजि, बिधु रु वेद४१स्वक बय समा१३
अक्खिय पुनि अधिराज प्रीति अंतर पेर उप्पजि ॥
रथ१ न्रूजान२हय३रहित तुम न बिहरे मृगया१ तजि॥
भारबाह इक१ मोलि१ न्हस्व इक१लेहु किधौं हय१।२ ॥
इक१बाह१।३चढि अप्प जाहु बिरचत श्रमादि जय ॥
जामिक्क स्व संग लहि अट्ठ८जन अभय पुएय बिधि आचरहु
बालपन१ तैं जु अब२लग बन्यौं कलुखं भस्म वह सब करहु॥१४॥
स्वामि१हुकम२जिम सुहृदँजन१न तिम प्रसभ२जनायउ ॥
तजि हठ कवि हिय तदपि भृत्य तीजो३हु न भायउ॥
वनत असन इक१ वेर मद्य२ तव लै लि३चषक मित ॥
बलि लहियत चउ४बेर अरक भंगार२ सप अंचित ॥
अहिफेन३निसा दिन खिन उभय२हुक्का४जंत्र छ६जाम हित॥

---

* सवारी और सेवक आदि ॥ १२ ॥ † फिर तुम सवारी भी नहीं लेते हो १ बुंदी को छोड़कर अपनी इकतालीस वर्ष की अवस्था में निकले ॥ १३ ॥ २ परम प्रीति उपज कर रावराजा रामसिंह ने कहा ३ बिना शिकार के इन सवारियों को छोड़कर कभी नहीं फिरे ४ ऊंट ५ पहरायत ६ पाप को ॥ १४ ॥ ७ मित्रों ने भी ८ हठ किया, चंडीदान दिन में एक समय भोजन करते थे तब ९ मद्य की तीन चुसकियां पीते थे और दिन में चार वार भांग का १० पूज्य अरक और रात्रि दिन में दो वार ११ अमल (अफीम) लेते और छः पहर हुक्का

चढि बाह चलन५एँ५इह सुकवि सब उज्झिय बुंदिय[1]सहित।१५।
मदित१ सहित२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

को साहस इम करहिँ सूर तजि सब सरीर सुख ॥
चउ४ मादक[2] तजि चित्त दंमि[3] रु क्रमि पयन लहैं दुख ॥
स्वप्रभु१ सन लहि सिक्ख२ सुहृद१लोकन इम सम्मति२ ॥
कढि बुंदिय सन सुकवि पत्त हरिनाँ१ हरिनाँ[4]पति ॥
बाँधव१ कुटुंब२ सब बुल्लिकैं कहिय धाम चउ४मुख्य करि॥
तिन्ह[5]सरनि न्हाइ सब तीरथन एहौं अछल अजात[6] अरि१६
रुद्रदान१ अभिधान सुकवि सविता सोदर[7] सुत ॥
मम माता निजनारि२ जुगरहि हम तनय[9]२।४ बिनय जुत ॥
अप्पन जन इत्यादि बिरचि हारे सब बिन्नति ॥
पै तीजो३ जन पास दास न लयो मनस्विमति[10] ॥
पंथिदेव[11]१ पुज्जि इष्टरहिँ प्रनमि करि निज ग्राम परिक्रमन३
पिला१दि अस्थि४लै बिधि पथित[12] गम्य सरनि[13] मंडिय मनन१७
लीलावति१ निज लार भृत्य इक१ लिय स्वसद्मं[14] भव ॥
दूजो२ सेवक द्विज सु रामकृष्णा२ऽभिधेय रव ॥
सेवक ए२ दुव२ संग लै रु प्रास्थित कविंद लहु[15] ॥
जित चित मादक जात पयन[16] गंताहु अपन पहु ॥

पीते थे सो इनको और सवारी पर चढ़कर चलने का १ बुंदी के साथ ही छोड़े ॥ १५ ॥ २ चारों नशों को छोड़कर ३ अपने चित्तको दंड देकर, पैदल चलकर इस प्रकार कौन दुःख लेता है ४ हरणां नामक ग्राम के पति हरणां में प्राप्त हुए ५ चारों धाम "जगदीश्वर, बद्रीनाणायण, रामेश्वर और द्वारका" और इनके मार्ग में आनेवाले तीर्थों में स्नान करके छल रहित और ६ अजात शत्रु होकर आऊंगा ॥ १६ ॥ ७ सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान के सगे भाई का पुत्र ८ चंडीदानकी स्त्री ९ सूर्यमल्ल और जयलाल ये दोनों पुत्र १० उस वीरता की बुद्धिवाले तथा अभिमान की बुद्धिवाले ने ११पथवारी पूजकर १२प्रसिद्ध रीति से १३जाने योग्य मार्ग में गमन किया ॥ १७ ॥१४अपने घर का उत्पन्न (खानाजाद)१५शीघ्र, नशावाले चित्त को जीतकर १६ मार्ग में पैदल

पूरब१ प्रयान पूरब१ ककुभ करि सेवित ब्रजभूमि१ किय ॥
तिहि ठाम धाम क्रम तीरथन सुनहु राम२०१४प्रभु नाम प्रिय॥१८॥

॥ पद्धतिका ॥

गिरिराज१ रु गोकुल अनघ गम्य, मथुरा३ वृंदावन४ रुचिर रम्य
जमुना५ अघहरनी न्हाइ जत्थ, सुरबापी६ न्हाये प्रनति सत्थ १९
पुनि सेवित सूकर७ छत्र पास, इह रामघट्ट८ सह कर्णवास९ ॥
जमुना१ गंगा२ जुग२सुविधि सज्ज, करि मुंडन१ मज्जन२ श्राद्ध ३ कज्ज ॥ २० ॥

सेवक जे सूचित स्वामि सत्थ, तजि रत्ति सुप्त दुव२ तेहु तत्थ ॥
ऐकाकी१ व्है इम पथ पिधान, सूकर७सन हंकिय अव सुजान२१
पुनि प्राची१अभिमुख रक्खि राग, पहुँचे कवि तीरथ पति प्रयाग१०
सित१ असित२ संधि जल कृत सनान१, दितलोम२ न्हाइ३ कृत श्राद्ध४ दान५ ॥ २२ ॥

बिश्वेश्वर पालित पुर बहोरि, किय कासी११जिय तिम कृत्यजोरि
पुनि स्रोत कर्मनासा१२ प्रवाह१, इहिं आसय न्हाये धरि उछाह२३
सरासिंधुर भस्म किय दुरित २ सर्व, यह१ पुराय २ भस्म करिहों अखर्व ॥
तो सुगम मुक्तपन लभ्यताम,किय तहँ इम मज्जन मनअकाम२४

चलनेवाले प्रभु ने पहिले १ पूर्व दिशा में गमन करके ब्रजभूमि का सेवन किया ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ स्नान करके श्राद्ध किया ॥ २० ॥ साथ जानेवाले दोनों सेवक जो ऊपर सूचना किये गये हैं उनको रात्रि में वहीं ३ सोतेहुओं को छोडकर ४ अकेले ५ गुप्त (छिपे) मार्ग से ॥ २१ ॥ ६ पूर्व दिशा के सन्मुख प्रीति करके ७ गंगाकी श्वेत धारा और जमुना की श्याम धारा की संधि में स्नान करके ८मुण्डन कराकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ यहां की पवित्र भस्मों से सब ९ पाप भस्म होवेंगे तो मुक्ति पाना सहज है, इस प्रकार मनकी कामना करके तहां स्नान किया ॥ २४ ॥

बलि न्हाइ सोननद१३में बिसेस, पुनि करि पुनःपुना १४ धुनि
प्रवेस ॥
जिम उद्धरि गयपुर १५ पितर जात, प्रभु बिष्णु अंघ्रि १६ करि
पिंड पात ॥ २५ ॥
धरि भेट गदाधर१७ चरन धाम, कृत फल्गु१८ प्रेत गिरि१९ बल्गु
काम ॥
गंगो१दधि२ संगम२० पगि प्रबीन, कपिलाश्रम२१ बंदन१ न्हान
२ कीन ॥ २६ ॥
जगदीस द्रंग२२ चढि पोत जाइ, प्रभु को प्रसाद१बहु बिबिध पाइ
करि उदधि२३ न्हान२ दाना३दि कज्ज, सेये जगदीश्वर२४ प्रनति
सज्ज ॥ २७ ॥
रहि दक्खिन २।३ अभिमुख सिंधु रोध, संक्रमि रामेश्वर १ दिस
सुबोध ॥
संप्लुत चिलका१ नदि सिंधु१ संग२५, इम प्रास्थित इक्खत भ्रम-
न१ भंग३२ ॥ २८ ॥
द्रुत गौन अंग १ क्रमि बंग २ देस, बिसि इम कलिंग ३ जनपद
बिसेस ॥
गोदावरि२६ तटिनी जल गहीर, किय मंजन भंजन दुरत भीर२९
कृष्णा २७ धुनि न्हाये सह प्रकार, भस्मीकृत कलिमल४ असह
भार ॥
धर तहँ पनाह नरसिंह २८ धाम, निज बपु असक्त जंजि १ किय
प्रनाम२ ॥ ३० ॥

---

१ नदी में ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २ न्हाये ३ समुद्र की ऊर्मियाँ और तरंगों को देखकर ॥ २८ ॥ २९ ॥ ४ पापों को भस्म करके ५ अपने अशक्त शरीर से पूजन करके ॥ ३० ॥

इम भुवकलिंग३प्रविसत अनेह, दृढ *जग्ध ज्वर१ रु अतिसार२ देह ॥
मंजिल दु२कोस इक१कोस मान,पथ निठि निठि बिरचत पयान३१
इकग्राम जाइ बपु गद असक्त१, गृह द्वार गिरे नत२निबल२नक्त
गृहवासिन जानि सु कहियगच्छ,ए डिगिसकेन तउ बपुअनच्छ३२
मन मन धकि बढि हठ माँहिं माँहिं, न डिगत लखि अक्खिय गृहन नाँहिं ॥
हुव तदपि प्रसभं दुखदैनहार, गल१ पय२धरि ईसा छ्ल अगार३३
दृढ हठ उठाइ क्रमि ग्राम दूर, पल्वल इक तट तजि पाप पूर ॥
आये गृह अरु इत कवि उदास, वलि तहँ निस दस १० मित बिमति बास ॥ ३४ ॥
संतत दस १० लंघन करि सहाय, बपु चेति जित्ति ज्वर १ रेक२ वाय३ ॥
अति अदय देस ऐसे अतथ्य, पटु तदनु चले भजि सुलभ पथ्य३५
वलि पत्त सह्य २९ कुलगिरि बिसेस, भजि लछमन बाला ३० तहँ भगेस ॥
धर अधर पुरी त्रिपदी३१सुधाम, तहँ इंधन चंदन अरुन ताम ॥३६॥
भव १ हरि २ भट काँची ३२ पर दु २ भंति, पुर सप्त ७ मध्य

ज्वर और दस्तों के रोग से शरीर का अत्यन्त * चर्वण (कुचलना) होकर ॥ ३१ ॥ १ रोग से शरीर अशक्त होकर २ रात्रि में निर्बल होकर एक घर के द्वार पर जा गिरे ३ घरवालों ने कहा कि यहांसे चलेजाओ ॥ ३२ ॥ ४ हठ दुःख देनेवाला हुआ सो गला और पैरों को हल की हालों पर रखकर ॥ ३३ ॥ इन ऐसे पापियों ने एक १ तलाव की तीर पर छोडकर वे तो घर आये चंडीदान ने उदास होकर दस दिन तक मूर्छित दशा में वहीं वास किया ॥ ३४ ॥ ६ निरंतर दस लंघन करके ७ दस्त ॥ ३५ ॥ ८ विष्णु भगवान ९ लाल चंदन का ईंधन होता है ॥ ३६ ॥

हतपाप पंति ॥
धर लघु बेदाचल३३ नामधेय, सुहि पच्छी तीरथ३१२नाम श्रेय३७
क्रमि पत्त सलंबर३४ कुंभकोन, बाहिनि काबेरी३५ भद्रभोन ॥
कढि कढितस धारा भिन्नभास,बिसतार त्रि३जोजन जन बिलास३८
श्रीरंग छत्र३६ मंदिर१ सुढार, श्रीरंगनाथ३७ जहँ सेव्य सार ॥
पाखान स्याम सूरति२ प्रसिद्ध, अवनीतलसाई३ तल्प इद्ध ॥३९॥
प्राकार४ घेर गव्यूति१ पाय, श्रीरंग द्रंग५ ढिग प्रभु सहाय ॥
सु बिभीषन६सेवक जातुजात, श्रीरंग३७प्रनुत४ सबबिधि सुहात ४०
अग्गैं समुद्रतट३८ पुराय अैन, बिनु तरि तदग्ग पहुँचत बनैन ॥
जहँ नव नव पत्थर१ घटित जानि, पिक्खत इम जगदग लौं प्रमानि ॥ ४१ ॥
तरि करि तरि संकर सफल संध, बिक्खे रामेश्वर३९ सेतुबंध ॥
श्रीरामचंद लंघत समुद, रुचि कपिल मुट्ठि त्रय३ प्रमित रुद्र ।४२।
श्रीज्योतिर्लिंग नति१ नुति२ समेत, कृत दरसन३ सेवित४ जय निकेत ॥
तदनंतर व्है ज्वर असह ताप, पच्छिम प्रयान टारिय बिपाप॥४३॥
नाहितो जाजि पच्छिम ३१५ धाम धार ३, बदरीस४ प्रनमि आगम बिचार ॥

॥३७॥३८॥१श्यामरूपी बड़ी शय्या पर सोते हैं ॥३९॥२उसके कोट का घेरा प्रायः दो कोशका है३राक्षस बिभीषणका बनाया हुआ है ४विशेष स्तुति योग्य ॥४०॥ ५विना नाव जिसके आगे नहीं पहुंच सकते१सूर्यके प्रमाणसे दीखते हैं अर्थात् सूर्य की चमक से दीखते हैं ॥४१॥ नाव से तैर कर अपनी प्रतिज्ञा को सफल करके सेतुबंध रामेश्वर शिव के दर्शन किये ७कांतियुक्त अग्नि की तीन मुट्ठी रक्खी थी उतने ही शिवलिंग हैं ॥ ४२ ॥ ८स्तुति सहित नम्रता करके ॥ ४३ ॥ द्वारका और बदरीनारायण को नमस्कार करके ९ आने का विचार

पै बिचहि मोरि ज्वर इत प्रयान, दृढ हुव निकेत आगमनिदान४४
अग सह्य ४० ठहै रु दिस सौम्य४१७ आइ, पुनि कृष्णा४१ गोदा ४२ न्हान पाइ ॥

पूर्णा ४३ अरु तापी४४ बपु पखारि, रचि मज्जन रेवा४५ बिमल बारि ॥ ४५ ॥

रेवा१ काबेरी४६।२ मिलन रम्य, गहिरे न्हद न्हाये सहस गम्य ॥
सेवित मेकलजा पुलिन सीस, श्रीज्योतिर्लिंग ओंकार४७ ईस४६
सब ओर सिंधु पूरब१ प्रवाह, रेवा१ गति केवल बरुन राह३।५ ॥
उल्लंघ्य बिंध्य ४८ कुलगिरि अमान, पहुँचे भुवमालव४९ सिथिल प्रान ॥ ४७ ॥

बिच द्रंग बिसाला५०जहँ बिसिष्ट, अरु ईस महाकाला५१रुप इष्ट
गुरु सप्त७ पुरन पुर जो गणेय, श्रीकृष्ण अध्ययन धाम श्रेय४८
सिप्रा५२ सैबिलिनी पुराय श्रोत, साकिनि कृत प्रासन पाप पोत
तदनंतर प्रवणा ५३ सिंधु ५४ स्याम, तटिनी चर्मणवति ५५ न्हाइ ताम ॥ ४९ ॥

मिलि सक ख नंद बसु इंदु १८९० मेय, सित२ पच्छ जेठ३ नव-मी९ सु गेय ॥

बसु८दिवस मासनव९के बिचाल,कविआये बुंदिय उष्ण२काल५०
क्रम भुव त्रिसहस्र द्विसत३२०० कोस, दुव२ धाम परसि धुव हुव अदोस ॥

इकल१ पदाति२ सूचित अनेह, पुर बुंदिय प्रविसे दुबल देह ।५१।
दिनदुल्लह प्रभु सुनि न किय देर, बुल्लिय कवि परिखद प्रात बेर
इम ठानिकुसल पृच्छादु२ओर, मोदित ससभ्य प्रभु महिपमोर५२

था ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १ पश्चिम दिशा में ॥ ४७ ॥ २ उज्जैन ३ श्रीकृष्ण के पढने के कारण वह धाम श्रेष्ठ है ॥ ४८ ॥ ४ नदी ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

अक्खि सु असेस पद्धति उदंत, हरिनाँ निज निवसथ पत्त हंत ॥
तब निज प्रकार तजि चैरनचार, आलय गय रथहय अस्ववार५३
पथिदेव१ पूजि गुरुजन१ उपेत, कछु अह१ गंगामह२रहि निकेत
पत्ते बलि बुंदिय कविमबीर, श्रीस्वामि सक्ष्य१गुरु सुहृद३सीर५४
मन१तैंहु पर स्वेहा मिटाइ, अघ काइक१ वाचक३ दिय उठाइ ॥
बिनु सिह१ छोरि मृगया१ बिलास, हित समुझि नसा मद्यांरदि
न्हास ॥ ५५ ॥
सह मिथ्या संसन३ काम४ क्रोध५, मद ६ लोभ ७ मोह ८ संहरि
सुबोध ॥
असहत्व९ असूया१० ईरखा११ रु, सठता१२रदि उझि्झ छम भ्रम
१३ सरारु ॥ ५६ ॥
मायामय१ गोचर२ अखिल मानि, स्वा१ऽभिन्न२ अगोचर३ बिभु३
बखानि ॥
इम अप्प१ अवस्था लय३ अतीत२, पर१ बोध२ तुरीयौ ४ स्थिति
प्रतीत३ ॥ ५७ ॥
चउ४ वेदसीस बचनन बिचारि,जड़१ प्राकृत२ चेतन१सुचि२प्रजारि

१ सब मार्ग का वृत्तान्त कहा २ हरणा नामक अपने ग्राम में खेद के साथ पहुँचे ३पैदल चलना छोड़कर ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ४मन से भी पराई वस्तु की इच्छा मिटाकर शरीर से और वचन से होनेवाले पाप उडा [छोड] दिये ५मद्य आदि के नसे छोड़दिये ॥ ५५ ॥ ६ झूठ बोलना ७ उस श्रेष्ठ ज्ञानी ने छोड़ दिये और हिंसा करना भी छोड़ दिया ॥ ५६ ॥ ८ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, इन इन्द्रियों के विषयों को मायामय (झूठे) जानकर ९ अपने को अगोचर (इन्द्रियों से नहीं जाना जावे) ऐसे परमेश्वर से अभिन्न(भेद रहित) कह कर इस प्रकार १०अपनी तीन अवस्था बिताकर परम ज्ञानवाली ११ चौथी अवस्था में अपनी स्थिति प्रसिद्ध की ॥ ५७ ॥ चारों वेदों के उपनिषदों के वचनों को विचार कर प्रकृति संबंधी जड़ पदार्थों को चैतन्य रूपी१२अग्निमें जलाकर,

आनंद१ अप्प२ अव्यय३ असंग४, अक्खी१ समर शोचन३ एक१ रंग४ ॥ ५८ ॥

सुभ१ सत्व२ सत्प३ अनुभव४ अनंत५, सर्वोत१ प्रोत२ अज३ सतत अंत४ ॥

निष्टा यह कवि मनि गहि अनिच्छ, दुर्लभ स्वबोध १ मख २ प्राप्त दिच्छ ॥ ५९ ॥

प्रभुकै उत्तेजन तस प्रकासि, निर्णय जय संसय निचय नासि ॥

बोधन छ६ तर्क छम बुधन वार, देसीय१ बिदेसज१ के उदार६०

करि मति तदीय तत्त्वानुकूल, मत और जोर तंत दलि समूल ॥

कवि१जित बाहि१रंतर२ करन काम, निज सख द्विज आसानंद२ नाम ॥ ६१ ॥

तिन्ह मत उत्तेजित प्रभु३ तृतीय३, सन्नद्ध बाद रन सुभट स्वीय॥

परिपूर्ण सत्व १ चित २ सुख ३ प्रभाव, धी सुद्ध रुद्ध गन करन धाव ॥ ६२ ॥

१आनंदमय, आत्मरूप, नाश रहित, संग रहित, चय रहित, सम, प्रकाश रूप, एक रस॥५८॥ शुभ, सत्वरूप, सत्य, अनुभवरूप, अनंत, सबमें ओतपोत अर्थात् सर्वव्यापक, अजन्मा २सदा सत रूप ऐसे परमात्मा में उस कविशिरोमणि चंडीदानने इच्छा रहित होकर निष्ठा धारण की और दुर्लभ आत्मज्ञान रूपी यज्ञ की दीक्षा ली ॥ ५९ ॥ और देश विदेश के बड़े विद्वानों के समुदाय में छहों शास्त्रों का उपदेश करने में समर्थ ५उस कविचंडीदान ने राजा के मनमें उस निष्ठा का ३उत्तेजन करके निर्णयका जय और संशय के ४समूहका नाश किया॥६०॥ फैलेहुए अन्य मतों के बल का मूल सहित नाश करके ६उस राजा की बुद्धि को उत्तेजित की, और उस कविने बाहिर और भीतर की इंद्रियों की कामना जीत ली, इनका मित्र आशानंद नामक ब्राह्मण था ॥ ६१ ॥ इन दोनों के मत से तीसरा राजा रामसिंह उत्तेजित हुआ जो अपने सुभटों सहित शास्त्रार्थ रूपी रणमें सज्जित रहता था और सच्चिदानंद के प्रभाव से परिपूर्ण रहता था और उस शुद्ध बुद्धिवाले ने इन्द्रियों के समूह की दौड़ को

आस्थान१ गान२ तिम नटन३ तूर, परिहास४ संग्धि५ रस६ नव-
क७ पूर ॥
जय सिद्ध सस्त्र७ सय८ मल्ल जुद्ध९, आखेट १० फाग ११ क्रीड़न
अलुद्ध ॥ ६३ ॥
गज१२ बीति१३न बाहन रीति गैल, फटकारि बिडारत सठन फैल
इत्यादि रजोगुनके उफान, भुग्गैं पहु कौतुक बिबिध भान ॥६४॥
पै तत्त्व सत्त्व गुरु कवि प्रसाद, व्युत्थान१ समाहित२ सहस बाद ॥
इम पत्त राज्य तरु फल अलुद्ध, सब रीति १ प्रीति २ पटु नीति ३
सुद्ध ॥ ६५ ॥
संधा लौ बितरन जस प्रसक्त, उल्लंघि सक्कि रज१ सत्व२ अक्त॥
भंडार भूपके भर्म भूरि, पूरे धात्रेयन सुमह पूरि ॥ ६६ ॥
संधा जिन्ह सचिवन सह बिसेस, धन कोस नित्य धरि नुत निसेस
अन्न१दक२ पीछैं लहत आप, पटु स्वामिधर्म सेवन प्रताप॥६७॥
बिसेस१ निसेस२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रक्खिय प्रभु तहँ इम दान रीति, जगके उदार सब आधिप जीति

रोक दी ॥ ६२ ॥ १सभा, गान,नृत्य, २वाद्य, हसी, ३सहभोजन(गोठ)पूर्ण नव रस, शस्त्रों के साधने में जय, बाहुयुद्ध करना, मल्लयुद्ध देखना, शिकार, फाग खेलना ॥ ६३ ॥ हाथी ४घोड़े को रीति पूर्वक चलाना दुष्टोंके फैलको फटकार कर मिटाना, इत्यादिक रजोगुण के उफान रूप नाना प्रकार के कौतुकों को अनासक्त होकर वह राजा भोगता था ॥६४॥५परंतु गुरु(आशानंद ६और कवि चंडीदान की कृपा से ब्रह्मभाव की विद्यमानता से उक्त ७ विरुद्ध कार्य और समाधि ये दोनों बाद करके समान भाव से रहते थे. इस प्रकार सब भांति की रीतियों में और प्रीति में चतुर नीति से शुद्ध उस राजाने अनासक्त हो कर राज्य का फल पाया ॥ ६५ ॥ रजोगुण और सतोगुण में ८ आसक्त हो-कर जस में लगकर दान की प्रतिज्ञा ली और राजा के धायभाई मंत्री) ने उत्साह से पूर्ण होकर राजा के भंडार को स्वर्ण से भर दिया ॥ ६६ ॥ स्तुति योग्य सब धनको खजानेमें रखकर पीछे आप अन्न जल लेते हैं और स्वामिधर्म

जँहँ द्विज १ पौरानिक२ बंदि३ जात दिगबिजयी १ सबबुधर२ जो दिपात ॥६८॥
तिँहि अयुत १०००० दम्म अप्पत इलेसँ, पट १ भूखन २ हय ३ गज४ भू प्रदेस५ ॥
बादीन १ तदपि जो सब प्रबुद्ध २, लहत सु सहस्र पंचक ५००० अलुद्ध ॥ ६९ ॥
इक१ देस सूरि १ कल्पक २ अभंग ३, सो लहत सहँस १००० मुद्रा प्रसंग ॥
बादीन१ तदपि इक१ देस बीर२, सतपंच५००लहत मुद्रा सुधीर७०
सत१०० दम्म लहत जाहि अब्द सुद्धि१, बितँरन क्रम संस्कृत बुध१न बुद्धि ॥
भाखा छ ६ कोहि जिनको न भान१, प्राकृत१ मुख पंच५ हु हत प्रमान ॥ ७१ ॥
केवल नृगिरा कवि जे कहात, जानै न प्रकृत भव अब्दजात२ ॥
पै जिन्ह कवित्त्व हिय जाइपैठि३,बिकसाइ देत मन सबन बैठि७२
जे काव्य केर सब१० अंग जानि, अँचत श्रोता मन रीझि आनि
सत१० संख्य तदर्थहुं दम्म देय, सिरुपाव१ तुरंगम२ संग श्रेय ७३

के सेवन में चतुर ॥६७॥ ब्राह्मण १चारण २ भाट जो दिग्विजयी ३ और सर्व देशी होवे ॥ ६८ ॥ उस को ४ राजा दश हजार रुपये देता है ५ शास्त्रार्थ करनेवाला नहीं होने पर भी सब शास्त्रों का जाननेवाला होवे वह निर्लोभी होने पर भी पांच हजार रुपये पाता है ॥६९॥ ६ जो एकदेशी (एक ही शास्त्र को जाननेवाला पंडित होवे और उत्तम कल्पना करनेवाला, दूसरों से नहीं जीतने में आवे वह एक हजार रुपये लेता है और एक देशी पंडित शास्त्रार्थ नहीं करनेवाला) होने पर भी उस शास्त्रमें वीर कुशल होवे उसको पांच सौ रुपये मिलते हैं ॥ ७० ॥ बुंदी में सालियाना ७दान के क्रम से सौ रुपये मिलते हैं ८ प्राकृत आदि पांच भाषा में भी प्रमाण रहित है ॥ ७१ ॥ ९ केवल देश भाषा का कवि कहलाता है ॥ ७२ ॥ १० उसको भी सौ रुपये मिलते हैं ॥७३॥

सामान्य कवि१ रु बर्जित बिबाद२, संस्कृत ३ कवि लहत सु सत
१०० प्रसाद ॥
ऐसो भासाकवि१मति अनिंद२,पंचास५०द्रम्म लहत सु प्रसिद्ध७४
इत्यादिनतैं गुन घटि१अनेक, बिंतरन क्रम बहुबिध तिन्ह बिबेक॥
पचीस२५ आदि१ करि अंत२ पंच५, रोह्यो न चालिस१न घट
हु रंच ॥ ७५ ॥
हापन इक१ टारि१ रु लैनहार, पुनि लहत आइ सुहि सुहि प्रकार
इम खट६ऋतु बारह१२मासअंत,अंहति१ झर मंडिय जस२उदंत७६
दुव २००० दुव २००० सहस्र कोसन बिदूर, पुर लग्गे आवन
बुधन पूर ॥
उज्ज्वल रुचि बुंदिय तिहिंअनेह, गिनिये कि पुरंदर१धनद२गेह७७
तन मान सबन मन धन१ तुलंत, अंकुरि मह १ सब अह २ सादि
१ अंत२ ॥
ऐसे उदारपन करि इलेस, मलप्यो परिपालत देसदेस ॥ ७८ ॥
आयुध सब साधक बहु उपाय, मृगयादि कुतूहल रमत राय ॥
आनन कालिंदिका निलय इद्ध, सब ठाम तदपि अद्वैत सिद्ध॥७९॥
चोगान तुरग बाजी प्रचार, खेलैंहैं बिदग्ध बिजई खिलहार ॥
हठि कुसल सिकारिन ठिगनहार, किरि १ केहरि २ ऐसे छल
प्रकार ॥ ८० ॥
छलिकैं तिन्ह वेधत सर समूह, दै डाक थकावत गज दुरूह ॥
अवरोध जनन क्रीड़न अनेक,बिलसत बिदग्ध इम एक१एक१॥८१॥

---

१ यहां बुद्धिवाला नहीं होने पर भी ॥ ७४ ॥ २ दान के क्रम से ॥ ७५ ॥ ३ दान का झड़ रचा ॥ ७६ ॥ ४ इन्द्र का अथवा कुबेर का घर ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ५ यमुना नदी यमराजकी बहिन है इस कारण उस का और यमराज का घर एक ही है सो उपरोक्त कर्मों में तो रामसिंह का मुख यमुना का घर है तोभी सब जगह अद्वैत मत ही सिद्ध है ॥७९॥८०॥ ६ क्रोध दिलानेवाले छोटे घाव लगाकर ॥८१॥

व्युत्थानं बनत ऐसे अनेह, अन्यत्र अधिप चित बोध एह ॥
कवि चंड१ रु आसानंद२केर, सफली हुव सिच्छा स्वत्रय बेरा८२॥
पौरानिकं१ कै हुव सुख प्रबोध, रहिगो द्विज२कै तस तदपि रोध ॥
कवि चंडतैंहु हय अग्ग हंकि, अद्वय२ मय अंतहकरन अंकि॥८३॥
कवि१ सूरि२ सुभट३ सचिव४न कलाप, अखिलन रिझात मन गुनन आप ॥
जिहिं गुन प्रसार जन विदित जोहि, स्वामीकहँ समुझत पठित सोहि ॥ ८४ ॥
प्रभु मनु बसीकरन१ मनु प्रभाव, विद्या कि मोहिनी२ मनु बढाव॥
करि नैन१बैन२कारि ध्रुव धनेस१,जन जन मन पैठो जनु जनेस८५
पिक्खन१संलापन२के प्रसाद,बिनु वेतँन सेवन प्रकटि वाद॥
इम सबन चित्त कर गहि इलेस, देखत बलि हारत द्रंग१देस२॥८६
इम अब्द पंद्रहम१५ बय प्रबेस, बिलासिय बिलास वैभव बिसेस॥
हायन बिंसति२०तम लगबहार, सुख राजस लुट्टिय नीतिसार८७
अब सक नव गज वसु ससि १८८९ अनेह, सुरभि१ रु निदाघ २ बिलासिय सनेह ॥
क्रम निज तजि सावन१ भद्द २ काल, बदल्यो ऋतु पाउस ३ वह बिचाल ॥ ८८ ॥
बुट्ठिय जल ढिग ढिग त्रि३चउ४वेर, पै सो न समय घन प्रचुरघेर

ऐसे समय में तो १ विरोधाचरण बनता है, बाकी अन्य स्थानों में राजा के चित्त में एक ज्ञान ही रहता है ॥ ८२ ॥ ३ चारण चंडीदान के सुखकारी ज्ञान होगया तो भी आशानन्द ब्राह्मण के उस ज्ञानकी रोक रहगई अर्थात् आशानन्द को ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ ४अद्वैत मत से अपने अंतःकरण को चिन्ह युक्त करके ॥८३॥८४॥५मानों मनुके प्रभाव से मन वश करके, मानों कुबेर के समान ६ राजा निश्चय ही मनुष्य मनुष्य के मनमें घुसा ॥८५॥ देखने और बोलनेकी प्रसन्नता से ७ हठ करके बिना ही तनखा सेवा करते हैं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८वसन्त और ग्रीष्म ॥ ८८ ॥ ९ परंतु मेघ के अत्यन्त घेर से वर्षा नहीं हुई

खर कर दहि दिस दिस सस्य[2] १ खेत, अग किसलय[3] २ बीरुध ३ तृन४ उपेत ॥ ८९ ॥
अस्रप[4] अस्र४।२ रु पच्छिम५।३ दुअोर, रचि पोन गोन किय भोन रोर ॥
पप्पीह[5] १ प्यास खिन खिन बढात, घटि लास[6] मयूरन आस घात ९०
लालित्य बेल१ बन २ गिरिन ३ लोप, किय झंखर भंखर किरन कोपि ॥
हाकार मचिग गत इर्स७हु होत, ओत७न चंडन गय तुष्टि ओत ९१
गडि भेक १ कमठ २ झष ३ पंक गर्त, [9]यसु सम बिचेष्ट बर्तन बिबर्त ॥
तउ तजन नक्र४गन तरफरात, जल मति पल छिति तल१ बिसंत जात ॥ ९२ ॥
पवमान२ भान३ इत बिरचि पौन, नियरात करत हत छबि निपान
जलजात[12] १ रु कैरव २ कुमुद ३ जाल, सैवल ४ नल ५ संजुत हुत बिहाल ॥ ९३ ॥

चिपान१ निपान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जनपद[13] मरु१ जंगल२ सिंधु३ जत्थ, अभि सूरसेन४ हरियान५ सत्थ

१गरमी से दिशा दिशा में २खेती के खेत ३कोंपलें ४भूमि पर फैलनेवाली लता और तृणों सहित सब सूख गये ॥ ८९ ॥ ५दक्षिण कोण का और पश्चिम दिशा का इन दोनों ओर का पवन चलकर सब भवन भयंकर कर दिये ६ क्षण क्षण में पपीहे की प्यास बढकर मयूरों की आशा का नाश होकर उनका ७ नृत्य घट गया ॥ ९० ॥ ८आश्विन मास के जाते ही हाहाकार होगया ॥ ९१ ॥ ९मरे हुओं के समान चेष्टा रहित होगये १० भूमि के नीचे घुसजाते हैं ॥ ९२ ॥ पवन और सूर्य की किरणें ११पान करके समीप लेकर प्रपा (प्याउ, पो) आदि छोटे जलाशयों को शोभा रहित करते हैं १२ कमल, रात्रिविकासी कमल (गुड़हल तथा गडूल) श्वेत कमल विशेषों के समूह, जलनीली (कुमोदनी) और कमलिनी सहित उस घड़ी अग्नि में जलगये ॥ ९३ ॥ १३ देश

दुंढार६ सेखवट्टी७ कुढंग, मेवार८ मुलक सु पहार९ संग ॥९४॥
इत्यादि मनुज *उज्जट अगार, सकुटुंब कढे नत भूख भार ॥
इन्ह सूचित देसन अंतगाल, हड्डोतिय१०भुव हुव बिकल हाल९५
कंकाल करंकन निचित कोट, इम पसुन अस्थि प्रतिगाम ओट॥
तरु पत्र असन कबलग कराइ,पय नाम मिट्यो रव हाम पाइ९६
कनिकाशदि अठु ८ जल घोरि केक, बहिकात सिसुन जन पय बिबेक ॥
जिम मृत तंपादिक ग्रामजन्य१,बचि तिमहिं रहे कहुँ बिरलबन्य९७
पसु तृन१बुसाशदि प्रमितहु न पाइ, खिल ग्राम्य जियत कहुँ कीट खाइ ॥
नाकहिं जिम नाकुन ऋच्छ रक्खि, करखत छिति कीटन स्वास सक्खि ॥ ९८ ॥
इम चट्टि पिपीलिक १ दीम आदि, जीवत कहुँ गो १ महिषी २ अजाऽदि ॥
तिन्हँ थनन अँचि जन अधम ओहि, दित करुन लेत पय अरुन दोहि ॥ ९९ ॥
दधि तस बिलोरि तजि तँक्र दूर, कुभृतहु वह बेचन गहत कूर ॥

॥ ९४ ॥ * ऊजड़ घर ॥ ९५ ॥ १ हड्डियों और मस्तकों के समूह के कोट हो गये २ पशुओं की दुर्बलता के कारण दूध के नाम का शब्द ही मिटगया ॥ ९६ ॥ पानी में ३ गेहूँ का आटा घोलकर ४ जैसे वनके पशुओं में गऊ आदि कोई ही बचे तैसे ग्राम के लोग भी विरले ही बचे ॥ ९७ ॥ पशुओं ने तृण और ५ तुष आदि का ज्ञान भी नहीं पाया अर्थात् इनको जान ही नहीं सके और ग्रामों में ६ कीड़े खाकर कोई ही बाकी जीवित रहे ७ जैसे रीछ अपनी नासिका को उदेही (दीमक) के ऊपर रखकर खैंचता है तैसे पशु श्वास से भूमि के कीड़े खैंचते थे ॥ ९८ ॥ ८ कीड़ियां और दीमक आदि को चाटकर ९ करुणा हीन मनुष्य लाल रंग का दूध दोह लेते थे ॥ ९९ ॥ उस दही को बिलोकर १० छाछ को दूर रखकर खोटी वृत्ति करनेवाले उसको बेचते थे

निज सिसुन बेंचि कहुँ अन्न आनि, खल बहु असु धारत दुरित[1]
खानि ॥ १०० ॥

ऐसो प्रवृत्त संकट अनेह, संबंधिन ठहर्यो नन सनेह ॥
दयिता[2]१मारी२पति१इहिं दुरकाल, हाहारव बाढिय असह हाल॥१०१
अति व्याकुल तजि इम देस उक्त, आये इह्लोतिय मान मुक्त ॥
प्रभु बुल्लि सचिव धात्रेय पास, करुनापर सासन किय प्रकास१०२
अंबार[3] निचित अप्पन अगार, बरखनतैं चित सब धान्य बार ॥
उनके सबरुप्पय करनकाल, वँसुमति रस बिलसन जसबिसाल१०३
जन रंक१ कुटुंबिय२ दुस्थ जानि, आसन चहि ओडैं आनि पानि
अप्पहुतिन्ह भोजन अर्घउज्झि, सबभांतिबिसासहु पुण्यसुज्झि१०४
बसु आढ्य१ कुटुंबी२ जे बिपन्न३, उचितार्घ लै रु तिन्ह देहु अन्न ॥
नव कोस निकर भृत द्रम्म १ निष्क२, व्है अधिक गोप गृह जिम हविष्क ॥ १०५ ॥

सचिवहु निवेदि आकूत सोहि, अन्नालय खुल्लिय बिबिध ओहि ॥
प्रतिदेस पहुँचि तस जस प्रसार, द्रुत आये जे खिल तेहु द्वार ।१०६।
इम अल्प अर्घ किय कल्प अन्न, बसु दुर्बिध निबहे जिम बिपन्न॥
रहि मुल्लय आढ्य देसन परत्र, अष्टम्लव ता सन लहिपत्र१०७
इहिं मोल तोल जिम कोल ऊखें, भाजि भाजि जन आये भनत भूख
बेचे जे अर्भक[12] जननि१ बप्प२, उनकौं छुरा३ बसु अत्थि अप्प१०८

१ वे पापों की खान जीते थे ॥१००॥ २ स्त्री को ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ अपने घर में वर्षों से संचय किया हुआ धान्य के समूह का ३ ढेर पूरित है ४ भूमि पर ॥ १०३ ॥ ५ दरिद्री ६ कीमत छोड़कर ॥ १०४ ॥ ७ धनवान् कुटुम्बी व्याकुल हैं उनको ८ उचित मोल लेकर, नवीन खजाने में रुपये और मुहरों का समूह भरा है जिससे, श्रीकृष्ण की सम्मति से व्रज के गोपों के घर में ९होम हुआ था उससे भी अधिक होथे ॥ १०५ ॥ १०अभिप्राय ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ ११जैसे घाओं पर सूवर आवैं तैसे १२ बालकों को ॥ १०८ ॥

जानें जिम जाके बर्ण१ जाति२, ते भ्रष्ट होन दिय न सिव ताति ॥
कंटक दुकाल इम अन्नसत्र, अधिपति बिस्तारिय जस अमत्र१०९
प्रतिदिन चित सहसन दम्म पूर, दुख भूख जनन हुव जनन दूर ॥
जिन सिसुन लये कुल १ ग्राम २ जानि, तिनके संबंधिनहू ति
तानि ॥ ११० ॥
बुल्लि१ रु मिलाइ३ परिचय बिबेक, सह बास निबाहे इम अनेक॥
बिप्रा१दि बर्ण१।४ आश्रम२।४ बिधान, सब ब्रात्य न किय जिहिं
जो समान ॥ १११ ॥
जिनके बसुधा१ बसु२ निज निबाह, ते पहुँचे सु समय घरन ताह
जिन्ह रंकन रंचन वृत्ति जोग, प्रभु सीस बसे ते सुख पुरोग॥११२
लक्खन जमाइ इम पुराय १ पारि, बलि कोस दम्म २ लक्खन
बिथारि ॥
इम यह दुकाल अंक्रिय १ अधीस, सब द्वीप जनन जस २ बहिय
सीस ॥ ११३ ॥
निज जनन त्रि ३ हायन लखि निबाह, लिय खिल्ल करि दुर्लभ
पुराय लाह ॥
जस दूत बुलाये सुकबि जूह, आनायक कोटिन कोटि ऊह११४
मूढहु तदीय कुल बिरचि मान, जाचक सब पोखे तिम सुजान ॥
दलि दलि दयालु दुस्सह दुकाल, किय नृप सुभांड१८७।४पहिलें
सुकाल ॥ ११५ ॥
दब्बत तिहिं घन धन१ अन्न२ दान, ऐसो सुकाल किय चाहुवान
इहिं जस उफान दिस१ बिदिस२ ऐन, हतरोचि१ व्हीणा २ नत३

१ अन्न का यज्ञ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ २ शूद्र नहीं किये ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥
३ यश रूपी जाल में ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ४कान्ति रहित और लज्जित होकर
राजाओं ने नेत्र नीचे किये

नृपन नैन ॥ ११६ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसो असह्य दुकाल यह, दिनदुल्लह कुल दीप ॥
सु दुख दरिद्र पोखे सकल, हड्डह१न हेलि महीप ॥११७॥
जनपद हुव उज्जट¹ जिते, वचि हड्डोतिय वास ॥
स्वस्व बसाये ग्राम१ गृह२, पुनि तिन स्वर्घ² प्रकास॥११८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रे आगामिग्रन्थगुम्फनवर्णसंबन्धाख्यालंकारपरित्यागसूचन १ ग्रन्थकर्तृपितृचण्डीदानमृगयामद्यपानादिदुष्टाचरणसूचनपदातितीर्थयात्राविधानाखिलपापमुक्तवेदान्तज्ञानसमाधिगमन २ प्रतिवर्षनियतीकृतरामसिंहदानविवेचन ३ एकोननवत्युत्तराष्टदशशततमसंवत्सरदुर्भिक्षरामसिंहोदारत्ववर्णनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥
आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३७३ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अन्वय³ हड्डह१न इंद इम, देसन दलित दुकाल ॥
निवहे सब आपन्न⁴ नर, जे सीमागत जाल ॥ १ ॥

॥११६॥११७॥ १ देश में ऊजड़ होगये थे २ अपनी ओर से मूल्य देकर॥११८॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, आगे की ग्रन्थ रचना में वर्ण सम्बन्ध नामक अलंकार के छोड़नेकी सूचना करना १ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान के शिकार और मद्यपानादि दुष्टाचरणों की सूचना करने के पीछे पैदल तीर्थ करके सब पापों से मुक्त होकर वेदान्त के ज्ञान में प्राप्त होने का कथन २ प्रत्येक वर्ष में महारावराजा रामसिंह के दान नियम करने का विवेचन ३ अठारह सौ निवासी के दुर्भिक्ष में रामसिंह की उदारता के वर्णन का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ ॥११॥ और आदि से तीनसौ तिहत्तर ३७३ मयूख हुए ॥
३ हाडाओं के वंश के राजा ने ४ आपदा प्राप्त हुए मनुष्यों को निबाहे ॥ १ ॥

भूपति बिक्रम१ भोज२की, पद्धति लग्गि पवित्र ॥
दहि दुभिच्छ मदि मंडियो, चाहुवान जस चित्र ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

नभ नव बसु ससि १८९० नियत सुखद लग्गत सुकाल सक
बारिद अभिमत बरसि दरसि आसार महोदक ॥
औषधि गन अन्नादि बिबिध निपजे सीमा बढि ॥
कर्षुक कुल मन मुदित उदित कृषि ताव चाव चढि ॥
बहु बहुरि देस उज्जट बसे प्रान बारि बुंदीस पर ॥
निज सत्रु१आदि मंडल नृपहु पढन लगे नत थुति प्रसर।३।
बंदी इक१ तिहिं बेर सहर बुंदी पत्तो सजि ॥
सावन५ लग्गत समय भ्रमत अतिसीम दर्प भजि ॥
बाम मग्ग सठ वहत रहत रत पंच५मकारन ॥
तुलसी१ मालहिं तराजि रुद्र अक्ष२हिं करि धारन ॥
नैंकन छिपाइ बरतैं निलज स्वपचादिक सब कृत असन ॥
स्वपचीहु गम्य जाके सुरत दुरतन गज दरसन दंसन ॥ ४ ॥
चंडवाद कवि चंड इहां प्रभुके अनुकंपित ॥
तिनप्रति सुरि धावयँ सचिव मोहन अनख्यो इत ॥
भनि सहाय वह भट्ट बुल्लि बुंदिय रुचि रक्खिय ॥

१ मार्ग २ दुर्भिक्ष को मिटाकर ॥ २ ॥ ३ महात्मा मेघ ने अभीष्ट (वांछायोग्य) वर्षा करके मेघधारा दिखाई ४ तहां खेती का उत्साह बढा ५ नम्र होकर स्तुति का विस्तार पढने लगे ॥ ३ ॥ उस समय एक ६ भाट ७ रुद्राक्ष पहनकर ८ भंगी आदि का कियाहुआ भोजन खाता था ९ जिसके मैथुन करने में भंगिन भी जाने योग्य थी १० हाथी के दांतों के समान उसके पाप छिपे नहीं थे (हाथी के दांत किसी प्रकार छिपते नहीं हैं) ॥ ४ ॥ ११ रावराजा रामसिंह की कृपा में भयंकर शास्त्रार्थ करनेवाले, अथवा शास्त्रार्थ करने में भयंकर इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान थे जिनसे बुंदी के सचिव १२ मोहनराम धायभाई ने क्रोध किया

अप्प सचिव अवलंब भयो प्रभुकवि *परपक्खिय ॥
करि निज सु भट्ट दै छन्न कछु आधिपति प्रति किन्नीअरज
आशु प्रवीन कवि भट्ट इक गुनकी जो कहहिं गरज ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सुकवि चंड आदिक सदा, प्रचुर[१] रहैं प्रभु पास॥
तिन सबसों यह अधिकतम, बंदी स्वगुन बिलास ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

भूपहिं मोहन भनिय भट्ट यह अद्वितीय भव ॥
रामचंद्र अभिधान बाद[२] बादन बिजयी हुव ॥
तिन दिवसन कवि तात स्वीय प्रभुको लहि सासन ॥
किय भारत उद्योग५पर्व नरभाखा भासन ॥
कवि[३] तत्थ एह संधा करिय[४] सुर१ नर२ बानी सब्दमय ॥
इम अर्थ१ बिपुल२ अच्छर१अलप२जुहि आनैं सुहि लै बिजय
सुरबानिय१ भव सब्द बिदित जे पुनि नर बानिय२॥
इह द्विरबिधहि उद्योग५पर्व अंतर सब आनिय ॥
पंच५ [६]अनुष्टुप प्रमित अर्थ अँचिय इक१ अंतर ॥
संधा लिय तहँ सुकवि दिपत जस पूरि दिगंतर ॥
बहु१अर्थ२अलप१अच्छर२बिहित जो बिरचैं कहुँ अन्य जन॥

---

*आपके कवि चंडीदानका शत्रु हुआ, उस भाटको अपना करके मोहनराम ने रावराजा रामसिंह से अरज की ॥५॥ चंडीदान आदि श्रेष्ठ कवि आपके पास१ बहुत रहते हैं॥६॥ मोहन नामक धायभाईने राजासे कहा २शास्त्रार्थ करनेवालों से ३सूर्यमल्लके पिताने रावराजा रामसिंहकी आज्ञालेकर, उसमें कवि चंडीदान ने यह प्रतिज्ञा की कि४संस्कृत और देश भाषाके शब्दोंमें इसप्रकार थोड़े अक्षरों में बहुत अर्थ लावै वही मुझसे विजय पा सकता है ॥७॥५संस्कृतसे उत्पन्न हुए ६ महाभारत उद्योग पर्व के पांच पांच अनुष्टुप श्लोकों का अर्थ खेंचकर एक एक छंद में लाये वहां चंडीदानने ७यह प्रतिज्ञाली ८उचित अथवा रचकर

तो खुल्लि पाय टुड्डर[1]तजौं ध्रुवन बजौं अब[2] काव्यधन ॥८॥
करि संधा कवि चंड धीर लंगर पय धारिय ॥
कहिय जोहि इम करहु कवि सु जय[1] जस[2]अधिकारिय॥
अर्जुन[3] शृंखल्ल अग्ग द्विजन भोजन हितदैहैं ॥
जयपट्टहु[4] लिखि जाहि सोपि गुरु गिनि गुन गैहैं ॥
यह नियम धारि किय ग्रंथ वह नाम सारसागर नियत ॥
निर्भयनियोग प्रभुको स्वसिर जु किय सुजनमुख मुखजियत९
बंदी इक१ ब्रजलाल१ कृष्णधात्रेय आढ्य[6] क्रिय ॥
अधिराजहिं करि अरज ग्राम१ गौरव२ गज३ अप्पिय ॥
सचिव कृष्ण तनु[7] तजत अग्ग सहि साचि[8] खग्ग उर ॥
सुत तस मोहन सचिव धरयो अधिकार राज्य धुर ॥
प्रभुकेर कृपाभाजन परम जानें कवि चंडादि[9] जन ॥
तिन्ह मानहान मिटवान तिम मोरन लग्गो स्वामि मन १०
तब अक्खिय धात्रेय अरज इम प्रभुहि उपह्वरं[10] ॥
चिलें[11] बढत कवि चंड लहत जयमय पय लंगर ॥
कविअनेक भुवचक्र परत पैर[12] जुरत परिच्छा ॥
संसदें[13] बानिय समर सकल उघैरं धृत सिच्छा ॥
भारती[14] जुद्ध रस स्वाद भर एहु लेहु आनंद इन ॥

---

१ चरण में प्रतिज्ञा का लंगर है जिसको खोलकर इस का पहनना छोड़ दूंगा और २ काव्य ही है धन जिसके ऐसा कवि फिर निश्चय ही नहीं बजूंगा ॥८॥ ३ श्वेत रंग (चांदी) की सांकलियां ४ विजयपत्र ५ की आज्ञा से निर्भय होकर ॥ ९ ॥ ६ धनवान् किया, कृष्णराम धायभाई ने छाती में ८ तिरछी तरवार सहकर ७ शरीर छोड़ा तब ९ चंडीदान आदि मनुष्यों को ॥१०॥ १०एकान्त में अरज की ११चंडीदान आश्चर्य योग्य बढता है कि पैर में विजयी होने का लंगर पहनता है १२शत्रु आकर जुड़े जब परीक्षा होती है १३सभा में वचन के युद्ध में १४सरस्वती के युद्ध के रस का स्वाद

कवि चंड रचत संधा कुसल करिये बिभव बिलास किन॥११॥
प्रभु आक्खिय जहँ प्रीति सो न मेटहु कूट[1]श्रय ॥
सुहृदभाव जहँ सुनत तहँ न छल लेस कहन नय ॥
पुनि असहन यह पाप महत बिस्वासघात मय ॥
उज्झहु[2] स्वमति उपाय एह बिधि बलित[3] टारि रय ॥
तत्थ्य[4]१ रु अतत्थ्य२ न दुरैं तदपि जिहिं जैसो कहिदेत जग॥
दुख सहत चिंति करिकैं हुँरव मिलित द्रोह यह घोरमग॥१२॥
यातैं कपट उपाय कवि न कोऊ आकारहु[6] ॥
बहु आवत बिनु जतन बिबिध पावत बसु बारहु ॥
जो संभव बनिजाइ बिक्खिलैहैं बानी बल ॥
पर दुख चिंतन पाप त्वरित लैजाइ रसातल ॥
सुनि यह निदेस मोहन सचिव बिन्नति किय सब स्वामि बस
प्रभुके प्रसाद जो धर्मपथ सु सब गम्य रहिहैं सरस ॥ १३ ॥
आवन लागि तिन अहन प्रचुर भूसुर१ पौरानिक२ ॥
मागध३ बंदि[12]य४ सुमति बहुत बिरचहिं कवि बानिक ॥
पुब्ब कथित्त क्रम पाइ घरन जावत लै धन घन ॥
तिहिं अनेहँ[13] धात्रेय पाप प्रेरिय कपटीपन ॥
ब्रजलाल अट्ट वह बुल्लिकैं कुटिल उपह्वर[14] मंत्र किय ॥
बुन्दिय अधीन बंदिन बहुरि लै बिच सम्मति सबन लिय॥१४॥

॥ ११ ॥ १ दंभ (छल) के आश्रय से २ इस उपायवाली अपनी बुद्धि को छोड़ ...रीति से ३ टेढे मार्ग के वेग को ४ सत्य झूठ नहीं छिपता ५ गीदड़पन ...रके ॥ १२ ॥ ६ कपट करके किसी कवि को बुलाना ७धन का समूह पाते हैं ॥ १३ ॥ ८ इन दिनों में ९ बहुत ब्राह्मण १० चारण ११ बड़वाभाट १२ स्तुति ...नेवाले भाट १३ उस समय में धायभाई मोहन ने १४ एकांत में (गुप्त) ...लाह की ॥ १४ ॥

लंगर पय घृत लखत ईरखाको गिनि आकर ॥
लै ढिग वह ब्रजलाल चविय कवि चंड चंडतर ॥
या कविको उतकर्ष सह्यो नन जात सदस्यन ॥
हमहु रुद्ध मुख होहिं बनत उत्तर कहुँ वस्यन ॥
कविचंड मान निर्मूल कारि अप्पन रहहिं अभीत इम॥
तस अर्द्धः कविहु पावहिं ततो जयी करहिं निज पच्छ जिम॥१५॥
भन्यों सचिव सुनि भट्ट बदिय तुमरे सासन बस ॥
रामचन्द्र१ अभिधान इक्क१ बंदिय जाहिर जस ॥
छत्ति नाँहिं बाहुज२१न पंज्ज४।२ बर्द्धकि तस पालक ॥
पै सुनियत कवि निपुन व्यूह ऊहन उत्तालक ॥
जय आस प्रथम१ बिनुही जतन पच्छ२न तो तावक प्रबल
इक१तंतु१चटक२तोरै अलप मिलिबहु१गज२मोरै मिसल॥
स्वामी प्रति नटि सचिव ताहि न सक्यो बुलाइ तब ॥
व्याह व्याह बाहुजन अटन ब्रजलाल मिल्यो अब ॥
करि दुर मंत्र१ सांकूत२ पिहित समझाइ प्रयोजन३ ॥
सो तिहिं आवन सज्ज बिरचि आयो गृह अप्पन ॥
सक गगन अंक बसु सासि समय १८९० ॥

सूर्यमल्लस्य काव्यं समाप्तमिदम् ॥

१ चंडीदान कवि अत्यन्त भयंकर है जिसका २ बड़प्पन ३ सभासदों से नहीं जाता ॥ १५ ॥ सचिव का कहा हुआ सुनकर भाटों ने कहा कि हुकम में रामचंद्र नामक भाटप्रसिद्ध यशवाला है जिसके ४क्षत्रियों की नहीं है ५ शूद्र खाती (सुथार) उसको पालते हैं ६ तर्कना से समूह को ७० वाला है ७तुम्हारा प्रबल पक्ष है ८एक तंतुको तो छोटा चिड़ा भी तोड़ है और बहुत तंतु मिलकर हाथी को रोकदेते हैं ॥ १६ ॥ ९क्षत्रियों के विवाह में फिरते हुए ब्रजलालको वह रामचन्द्र मिला १० आ सहित खोटी सलाह करके उसको समझा कर ब्रजलाल अपने घर आगया

श्रीनीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपराय ण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाबारहठ-चारणकुलावतंस-शाहपु राप्रतोलीपात्र सुयोग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृङ्गा रनामजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽ ज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरिसिंह-किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगत भाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽ प्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोषादिसद्गुणसम्पन्नविद्वच्छिरोमणिपरमवैष्ण वरामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्यसीतारामाऽऽह्वयगुरोराऽऽसा दितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भवरघुवंशीयरणोत्तशाहपुराधिपराजो पटाङ्कनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकररविकुलशिरोरत्नरघुवंशीयगु हिलोत्तमेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारिमहाराणाफतैसिंहव

श्रीयुत नीति निपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्म मूर्ति वीर उदार सोदाबारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पो लपात सुयोग्यपिता ओनाड़सिंह के पुत्र ने, पंडिता सणगारबाई नाम माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरिसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवा ले समय में होनेवाली मनकी चिन्ता जिसकी पंडित कवि अपने मामा कवि राज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में उत्पन्न रघु वंशी राणावत शाहपुराके पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्योंके सूर्य सूर्यकुलके शिरोमणि रघुवंशीय गुहिलराजाके वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के अधीश सज्जनता आदि सद्गुणोंकी समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यकुल के भूषण राठोड़ कुलके मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर

मं, भानुवंशभूषण राष्ट्रकुलाऽवतंसमरुधराधिपजोधपुरेशराजराजेश्वरमहाराजयशवन्तसिंहवर्मभ्योलब्धाऽतीवदानमानस्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारितत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवरबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां समाप्तोयं सूर्यमल्लविरचितो वंशभास्करनामको ग्रन्थः ॥

के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवंतसिंह वर्मा से पाया है दान बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पालना करनेवाले मारवाड़ के पति श्री सरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्याको सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ट कवि बारहठ कृष्णसिंह की बनाई हुई उदधिमन्थनी नामक टीका में सूर्यमल्ल का रचाहुआ वंशभास्कर ग्रन्थ समाप्त हुआ ॥

॥ दोहा ॥

कविवर सूरजमल्लकी, यहँ लग कविता आहि ॥
तापर टीका बिस्तरी, संधाको हठ साहि ॥ १ ॥
अगेकी कविता यहाँ, रची मुरारीदान ॥
ताकी टीका तजतुहैं, देखत किते निदान ॥ २ ॥
जे निजबुद्धि विवेकजुत, हैं अधुना निजगेह ॥
तिनके विरचित काव्यके, जानो अधिकृत जेह ॥ ३ ॥
तजनेहीके व्यङ्गतैं, सुकवि समुझिहैं सार ॥
कुत्सितवचन प्रयोगको, विरचत नाहिं व्यापार ॥ ४ ॥
को उपकारी ग्रन्थकारि, परउपकार प्रचार ॥
अन्यहि हितसाधन उचित, भुजन उठावत भार ॥ ५ ॥

घनाक्षरी ॥

कवि रविमल्लको बनायो वंशभास्कर सो,
छायो कष्ट शब्द घन छोनीपैं दिखायो छाम ॥
बुद्धिबात बेगतैं विडारि मेघ मंडलकों,
निर्मल दिखाय दीनों रचि टीका अभिराम ॥
कृति कवि कोकनकों दापन अमोघ सुख,
ज्ञापन करायो हिय कंज बिकसैबो ताम॥
कूरन कुतर्कि घूक मूक कारि कृष्णकवि ॥
जीवन सफल जान्यों कारि उपकारी काम ॥ ६ ॥
रस व्योम ग्रह महि१९०६ पायो भव कृष्णसिंह,
शाहपुर भूपकों सुहायो सुखमा पसार ॥
मेदपाटभूपमनि सज्जन रिझायो पुनि,
फतैसिंहहूतैं पायो दान मान प्रीति फार ॥

जोधपुरभूप जशवंतनैं बढायो ज्यूँहीं,
चर्ननमें चामीकर भूषनको धरि भार॥
इभ सर नंद इन्दु१९५८ चैत्र श्याम सत्तमिकों,
परन बनाय टीका कीन्हों उपकारी कार ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

बावन वर्ष बिताय बराबर, सम्मदमैं न लह्योकहुँ अन्तर ॥
सासन जाको महीपनके सिर, होय अमोघ रह्यो सु अमंथर ॥
आयस मात पिता सिर आनिकैं, पुंगव पंथ निबाह्यो परंपर ॥
संसृतिभार सबैं तजिहों रु, अबैं भजिहों करतार निरंतर ॥८॥

॥ दोहा ॥

समय मिले पर सधिहों, पर उपकार पवित्र ॥
जाकों पुराय महर्षिजन, मन्नत जगको मित्र ॥ ९ ॥
वह डिंगलको कोस इक, रचि नव निज अनुरूप ॥
काव्य पुरातन अति कठिन, परे निकासहिं कूप ॥ १० ॥

उत्तरपीठिका

सूर्यमल्लकी कविताके लोभसे हमने इस परोपकारी कार्य का भार उठाया था वह लोभ यहीं पर समाप्त होता है इस कारण हम भी टीका बनाने के भारको इसके साथ ही छोड़ते हैं अर्थात् इससे आगेकी पूर्ति सूर्यमल्लके दत्तक पुत्र मुरारिदानने की है जो स्वयं इस समय विद्यमान हैं उनकी विद्यमानता में भी हमारा टीका बनाना अनावश्यक ही समझा गया इतना ही नहीं किन्तु यह अव्यापार है जिसमें व्यापार करना अनुचित है इसीकारण से आगेके काव्यमें हमने कुछभी हस्ताक्षेप नहीं किया है यहांतक कि कविवर सूर्यमल्लकी छोड़ीहुई मयूख की इतिश्रियां हमने बनाई हैं वह भी आगे की कवितामें बनाना उचित नहीं समझा किंतु जैसा कुछ लिखा हुआ मिला वैसाही छपवा दिया गया है

इस ग्रंथकी प्रथम राशिमें ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने प्रतिज्ञा की थी कि ग्रन्थ के अन्तिम चार राशिमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का वर्णन करूंगा परन्तु वह सूर्यमल्ल से नहीं होसका जिसके लिये हमारे कई मित्रोंने अनुरोध किया कि इस ग्रन्थकी उत्तरपीठिकामें उपरोक्त चारों पुरुषार्थों का वर्णन करके ग्रंथकर्ताके अभिप्रायको सफल करदेना चाहिये परन्तु प्रथमतो हमारे शरीर में पक्षाघात, मधुप्रमेह आदि रोगों के होजाने से इतनी शक्ति नहीं रही; इसके उपरान्त ग्रन्थकर्ता के समय में तो इन पुरुषार्थों के लिखने की आवश्यकता थी क्योंकि वे ग्रन्थ उस समय संस्कृत में होने के कारण सर्व साधारण को समझाना अवश्य था परन्तु अब तो वे ग्रन्थ भाषानुवाद सहित छप कर सब प्रसिद्ध होचुके हैं जिनका फिर यहां लिखाजाना केवल पिष्टपेषण है अतएव हमारे मित्रोंका भी इससे संतोष होजाने पर यह विचार छोडकर यहीं पर समाप्ति कर दी गई है. इस ग्रन्थ के अपूर्ण रहने का कारण हमने सूर्यमल्ल के शिष्यों से कई द्वारा सुना है परन्तु उस पर हमको विश्वास नहीं है जिसका सङ्केत रामसिंह चरित्र में जोधपुर में महारावराजा रामसिंहका विवाह होना और बुंदीके धायभाईके मारेजानेकी कथा पर नोट किया है वहां दिखा दिया है

सूर्यमल्ल के मरे पीछे महारावराजा रामसिंह ने सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान से इस ग्रन्थ की समाप्ति कराकर एक ग्राम मुरारिदान को देकर सूर्यमल्लकी जो स्त्रियां उस समय विद्यमानथीं उनको भी एक एक ग्राम उनके जीवन पर्यंत देकर सूर्यमल्लकी इस सेवाका फल दिया. अब हमारे पाठकों से सविनय प्रार्थना है कि इस टीका का बड़ा भाग हमारी रुग्णावस्था में बनने के कारण जहां कहीं अर्थदोष मिलै उसको कृपा पूर्वक सुधार कर हमारा दोष क्षमा करें. किमधिकं विज्ञेष्वलम् ॥

शाहपुरा के पोलपात सोदावारहठ शाखा के चारण कृष्णसिंह ने इस टीका को जोधपुर में समाप्त की ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

बसु नव गज भू १८९८ मित बरस, समय सोधि सुभ भूप॥
पहु यात्रा प्रारंभकों, निज मन किय अनुरूप ॥ १ ॥
श्रीभट्टजी महाराज सह, प्रभु दुवर सासन पाइ ॥
उमरावन पंचप्न अखिल, नरपति हार्द सुनाइ ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम बिचारि अजमेर पत्र मंडिय पुहवीपति ॥
बाहुल८ वदि तिथि तीज३ सोमवासर२ साहब प्रति ॥
रजीडंट अंग्रेज सदरलैनहु सब सासक ॥
अरु अजंट चारालिस रिचारडिस तिनको आसिक॥
कलकत्त नगर स्वामी सवन तहँ सु लार्ड प्रति पत्र तिम ॥
लिखि अट्ठ८कलम जग जस रहत अधिपहिं भेजिय छिप इम॥३॥

॥ पद्धतिः ॥

मम सेना सन्निधि पंथ मान, व्है नाँहिं धर्म१गो२ प्रान हान१॥
प्रतिपंथ मम सु दरजा प्रमान, व्है सलक सलामी न तहँ हान२॥
सेना अरु पुरजन सत्थ मोहि, जो नागभाग रत रहत जोहि॥
लखि ताहि पंथ मासूल लैन, व्है हत्थ अमल तो रोष व्हैन ॥५॥
पुनि दुग्ग१ थान२ जो व्है प्रसिद्ध, सब जन हम जावै सस्त्र सिद्ध
वलि चक्र माँहिं जो सस्त्रबंध, सो नाँहिं रोक पावै सु संध४ ॥६॥
पुनि पथ स्नानयात्रा प्रसंग, अंतेउर उतरैं जहँ उमंग ॥
जो नीच उच्च व्है पुहवि जत्थ, तो व्है प्रबंध हम तोर तत्थ ॥ ७ ॥
उतरैं जो हम जिहिं थान आय, पुनि स्नान निमित्तक पट्ट पाय॥
बनवावैं हम तापैंहि वात, रोधक नह बुल्लैं दिन रु रात ॥ ८ ॥
हमरेहि सत्थ व्है नयन२ नालि, आवैं इम भोलिन नालि नालि॥

तस सलक सलामी नित्य माग, जाकोहु हुकम व्है सर्व जाग ।६।
कष्टादि वस्तु सब प्रति मुकाम, दल मामकतैं लै सुविधि दाम ॥
दृढ चित्त अग्ग व्है थानदार, सबकों सु दिवावैं वस्तु सार ॥ १० ॥
खत बीच अष्ट८ कलमां लिखाइ, जो तूर्ण चार अजमेर जाइ ॥
अर्पित किय साहब हत्थ अैन, लै त्वरित बांचि दल सदरलैन११
प्रतिउत्तर भेजिय इम प्रजेस, अधिपति सु अन्यतर जिम असेस ॥
जो क्रम सु सनातन तिन जबाब, सो सब व्हैजैहैं तिहिं हिसाब१२
तिनदिवस जहाँ व्यवहार तत्थ, आसप दृढ भेजिय तहँ सु अत्थ॥
इम करि रु सर्व भूपति उदार, साज्यादि श्राद्ध सास्त्रानुसार ।१३
श्रीरंग सिष्टि लै पुनि रसेस, क्रमकरि रु परिक्रम पुर असेस ॥
सुद्धांत सहित पुनि किय पयान,दिय रंक रु भूसुर अमित दान१४
पहु लिपउ भीम पहप कुमार, तिम कियउ कुमर अर्जुन तयार ॥
गोवर्धन तदनुज गुन गरीय, बचना सु सिष्टि भूबर बरीय ॥ १५ ॥
पथि माता पूजन करि प्रजेस, बलि किय सिकार बुरजहि प्रवेस
सित२ पोष द्वितिया२ऽऽगिरस५ वार, नाड़ी त्रय३ मध्यहि रजनि
कार ॥ १६ ॥
कोटेस राम प्रति अब्द काज, भेजे पउसाक सु प्रीति भाज ॥
सो पत्र सहित लै रत्नलाल, आइउ पंचोली तहँ उताल ॥ १७ ॥
घटिका सब बित्तत जन्न सु घस्र, हाजरि बितर्द हुव अष्ट८ अस्र ॥
नजर रु निछावर करि सिरनाय, पढि कुसल तास कृत मिसल
पाय ॥ १८ ॥
आविक पुनि अंबर अरज आखि, किय नजर पत्र संमदकराखि॥
अरु कहिय जयश्रीकृष्ण आप, आदेस ममोपरि इम इलाप॥१९॥
पथि संग रहन यात्रा प्रसंग, तसमात चित्त ममहै उमंग ॥

सो अरज सुनि रु तस कुसल किन्न, दयपा सह ताकौं सीख दिन्न
सित१ पौष१० पंचमी५ सूर वार१, किय वर्षगांठि अर्जुन कुमार ॥
तदनंतर तहँ संबंध ताहि, मंदेस भल्ल नंदन उमाहि ॥ २१ ॥
हिंदूमल्ल जीवन भट हिताय, दिय तार भर्म लांगलि दुराय ॥
तिम पंच५ लांगली१ क्रमकर१५ त्यौंहिं२, सिरपेच१ जटित इक पुनि सुयौंहिं ॥ २२ ॥
तिम दिपउ२ इक१ उरसूत्रिका हि २, मौक्तिकय कर्णिका ३ दुव उमाहि ॥

काहि१ माहि२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सिरुपाव४ चतुर्दस१४ पुनि सप्रीति, राजत मतंग५।१ इक हय६।२ सुरीति ॥ २३ ॥
इत्यादिक दुव२ लै आजगाम, हुव अरज त्वरित तहँ हितहि काम
सित१ सोम२ षष्टिका६ पुहवि सक्क, अंबक२ सह घटिका रहत अक्क ॥ २४ ॥
रचि सभा चोक मानिक रसेस, आहूत सर्व उमरा असेस ॥
देव्या१दिसिंह दुर्गापुरेस, जय१ विजय२ सिंह आइउ जयेस ।२५।
सचिवा१दि ऊरुजा२ सर्व आइ, पाघुन हुव हाजरि प्रीति पाइ ॥
अरु अप्प कुमर अर्जुन उमाहि, रहि ब्रह्मघट्ट त्रि३ द्वार काहि।२६।
तिम कतिक तहाँ उमराव तत्थ, अर्चित करि नवग्रह कुमर अत्थ
पाघुनक प्रथम हे प्रीति पाय, तिन अंक कुमर अर्जुन हिताय२७
भरि किपउ तिलक कुंकुम सुभाल, इम महुर नजर करि तिन उताल ॥
पूर्वोक्त जवाहर वस्तु पेस, सब कियउ भूप हित तहँ असेस॥२८॥
करि सगपन तिन्ह दिन कतिक राखि, अप्पिय सु सीख पुनि कुसल आखि ॥

उग्गत रवि सप्तमि७ आरवार३, सामंतसिंह आइउ उदार ॥२९॥
धोउर पुरेस महिपाल धीर, बलि सम्मुह भेजिय तस प्रवीर ॥
जो उपवन मट्टजि अत्तजाइ,अति प्रीति मिलि रु पटगृह सुआइ३०
पुनि रहत वेद४ नाड़ी पतंग, कापरनि कांत आये उमंग ॥
बलि बेल बिलासहिँ देवमाँहिँ,अति स्वच्छ जलासय आवआँहिँ३१
सामंत पितृव्यक तहँ सचाह, आतहि प्रभु गौरव दिय उछाह ॥
मिलि बहुरि भुजांतर उर मिलाइ, किय मुजरा तिन्ह अति भवि-
क पाइ ॥ ३२ ॥
संलाप कुसल हुव पुनि सप्रीति, अरु कहिय रहहु रह अप्प रीति॥
कहि इम रु तास दसतूरकिन्न,सीतहि सु जानि स्थुलसीखदिन्न३३
आ धवल तप११पच्छाति१जीव५आत, हुव लाल नयनरविश्रामदात
रहि तत्थ द्वितीया२ सुक्र६वार, किय बहुरा जीवन कारदार ॥३४॥
तिम अंकित मुद्रा नाम तास, प्रभु दियउ निरंतर रहन पास ॥
हुव कुच्च तृतीया३सौरि७होत, हढ अप्प नयनपुर किय सु द्योत३५
वदि बासर पंचमि५ चंद्र बत्त, साहब रिचारडिस अर स पत्त॥
प्रेषित किय लंघन हर्ष पाइ, आदि सु अजंट गढ़इंद्र आइ ॥३६॥
करि साम कोटरिन तत्थ काज, रहतहि तस खबरि सु आत राज
प्रभु भेजिय सह दल अप्पपास, हुव राणी विकटोरियाहुलास३७
सुनि पत्त कियउ अति मेह प्रसारि, दारिद दिय सूरिन इम बिदारि
उग्गत बुध४ सत्तमि७ पुनि उदंत, भेजिय अजंट साहब भनंत३८

दंत१ नंत२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सेना १ अरु पुरजन २ सहँस दोइ २०००, सुहि जावैं भूपति सं-
गहोइ ॥
अरु दुग्ग१थान२ तहँ पंथ आत, जँहँ व्है असस्त्र सह सेन जात३९
साहब न जात जिम अप्प सत्थ, इम सुनि मुकाम क्रम कारि न

अत्थ ॥ ४० ॥

एकादसि११बदि दिन अर्क१ जात, प्रभु अप्प सिबिरतैं सौध पात
श्रीरंग दरस करि तहँ सप्रीति, संसद रचि तत्रहि प्रभु सनीति४१

प्रीति१ नीति२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

आंत्रद अधीस मुहुकम्म उत्त, आव्हान राम प्रति दियउ छुत्त ॥
हाजरि हुव सत्त७ सु जनहि आइ, प्रभुतैं सुहि अभ्युत्थान पाइ४२
किय मुजरा तिहिं अति भविक पात, दृढ अप्प पानि सुद्धहि दिखात
किय कुसल तास तिन नजर किन्न, दुव २ नाड़ी राखि रु सीख दिन्न ॥ ४३ ॥

सुदि होत प्रतिपद१ सुक्र६ वार, ॥
, तब कियउ पत्रानुरूप ॥ ४४ ॥

सित सौम्य ४ चतुर्दसि १४ सूर आत, व्यापृत चतुष्क ४ राखिय विख्यात ॥
इक १ ईस नंद जुत लाल १ आँहिं, तिम राखि पठान जु जमित खाँहिं ॥ ४५ ॥

बलि पन्नाजुतलालहिं भुवाल, इह मंगल राखिय अंतलाल ॥
थिरराज चतुष्क ४ न अत्थ अप्पि, महिपाल लख त्रिंसति ३० समप्पि ॥ ४६ ॥

क्रमतैं जु लेख सुनिये कृपाल, बल आदि सर्व बच आलबाल ॥
रजवार दसावर इतर पत्र, आवैं उदंत तामाँहिं अत्र॥ ४७ ॥
जो होइ आसु तो झटिति देय, न त्वरित जो सु मम प्रतिहि नेय
अरु स्तेयो १ व्यापृत २ अन्य आइ, करि दंड इतर विधि जुत कराइ२ ॥ ४८ ॥

जन स्वीय अन्यतर राज जाइ, इह स्तेय आदि करि जोहि आइ
तामैं प्रमान डारैं सु तत्थ्य, पूरब स्वदंड करि तास पत्थ्य२ ॥४९॥

मेवारज मैंनें जात मोसि, पूर्वोक्त लेख जिम स्तैन्य पोसि ॥
साहब अजंटतैं कहि सु लेय४, विधिजुत इत्यादिक तव विधेय५०
इम करत प्रबंध सु राज्य अंग, महिपाल लगत फग्गुन १२ उमंग
रविवार१तृतीया१रमत फग्ग, स्थलकमल गुलालादिक समग्ग५१
इम रमत फग्ग पुरिग्राम१५सु आत, प्रभु चलत सत्थ मागीन पात॥
मधु१ लगत मास पद्मति१पतंग१, साहब रिचारिडिस अर उमंग५२
तंग१ मंग२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
पट्टनितैं साहब अल्ल केर, मग बैठि डाक हय नां अबेर ॥
आराम नयनपुर राम आइ, तस अत्थ सिबिर प्रभुतैं तनाइ ॥५३॥
तस मिलन अत्थ प्रभु तहँ पधारि, साहब उदंत यात्रिक सु धारि॥
साहब सु उभयर लै अप्प सत्थ, प्रभु सौध पधारे पग्ग अत्थ५४
तहँ छत्रमहल विच रंग ताहि, अक्खत कवि आठहय तास आहि
कौसुंभि१ रु कुंकुम२नीर कारि, बर्णाक३अबीर४तोखीर५पारि५५
पत्तंग६नीर पुनि करि रु स्फीत, पिचकारिन साहब किय पुनीत ॥
साहब अजंट प्रभुपैं सु बारि, दृढ प्रीति बहुरि दिय तवहि डारि५६
प्रभु अप्प डारि पुनि सहँस १००० धार, किय बर्णाक जुत पट्टप
कुमार ॥
करिफग्ग अजंटहि सीखदिन्न, अरुअप्प स्नान२आदिक सु किन्न५७
आत्मीय शिबिर साहब उम्हात, अंगार३ तीज३ मध्यान्ह आत ॥
तस सम्मुह ड्योढी अप्प जाइ, आनंदित तासह माँहिँ आइ॥५८।
क्रमतैं जु बैठि पुनि तहँ कृपाल, किय सार्द्ध मुहूर्त२ रहस्यकाल॥
हुंडी१ अरु यात्रा कारि प्रबंध, तिन्ह अतर१पान२ दे पुनि सुसंध५९
इम सीख दे रु मग कुसल आखि, तँहँ अप्प नयन२ विश्राम राखि
उग्गत रवि पष्टी६कविद्गरीय, विश्राम समाधी दिय तृतीय३ ६०
किय चोरू सप्तमि ७ सनि ७ मुकाम, माधवपुर अष्टमि ८ दिय

विश्राम ॥
नवमी९मूकाम किय पुर पडान,दसमी१०अंगारक३करि निदान६१
डुंगरमलारने किय मुकाम, बाटोंदै एकादसि११ विश्राम ॥
पुनि जीव५द्वादसी१२घस्र आत, नवमो९कुशालगढ चक्र पात६२
पुनि असिता तेरसि१३ कवि६ प्रभात, पीलोंदै प्रभु किय सेन पात
हिंडोन चतुर्दसि१४ होत बास, परताप करोली पति हुलास॥६३॥
बलदेव१ बनिक दीवान रुपात, पुनि प्रियादास२ बाड़व उम्हात ॥
अरु ऊरुज चूनीलाल३ एम, गुरसाही रक्कीगर४ हि तेम ॥ ६४ ॥
सचिवा१दि सुजन चउ४ए पठाइ, मनुहारि बिबिध बिधि जुत कराइ
सतपंच५००रौप्य महमानि अत्थ, पक्वान्न मंथनी तास३०सत्थ६५
इत्यादि उहाँ लै त्वरित आइ, रहि रत्ति प्रात पहु हुकम पाइ ॥
हाजरि हुव पटग्रह होत कुच्च, आसिख सलाम करि प्रीति उच्च६६
अरु नजर निछावर अरज किन्न, भूपति जुहार भाखिय अभिन्न
अरु कहिय आगमन इह स्वकीय,गृह करहु पवित्रहि अस्मदीय६७
कीय१ दीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सतपंच५०० रौप्य पुनि ठहै प्रसन्न, ॥
तामैं सुदोइ२ नारंग एम डाल्याँ कंडोल चयारि४ फल कुसुम२।६८
कूष्मांड इक१ इक१ भूमिकंद, अहिवल्लिपत्र सत चउ४००अनंद
महमानिकरहु स्वीकार एह,सो अरज सुनि रु पुनि करि सनेह६९
करि माफ रौप्य कंडोल राखि, जय रंग कहहु नृपतैं इमाखि ॥
दै सीख ताहि पुनि कुच्च पाइ, विश्राम कियउ सूरैठ जाइ ॥ ७० ॥
पन्नति १ मुकाम सित दिय बियान, तहँ करत द्वितीया २ दिन॥
मिलान ॥
चूड़ामनि जटहि बंस जात, लवाल मुकुंदाऽऽतित्थ्य आत ॥७१॥
रचि सिबिर सभा लिय तिहिं बुलाइ, हाजरि हुवे तहँ सो हुकमपाइ

करि नजरिनिछावर पुनि सलाम,दुव२सचिवहेतु बैठि रु सुग्राम७२
किय अरज मुकुंदहि फौजदार, बलवंत कियउ मालुम जुहार ॥
अरु पंचसतक५००नाणकसु एह,स्वीकारकरहु प्रभु करि सनेह७३
विज्ञप्ति सुनि रु तस भव्य आखि, आतित्थ्य रौप्य आदिक सु राखि ॥
व्यवहार भरतपुर करि सुवत्त, दुव२घट्टि राखि तिन्ह सीख दत्त७४
पुनि सदरलैन साहब मिलाप, भेजिय हमीदखाँ सदल आप ॥
तिहिं जाय पत्र दिय करि सलाम, रुहि एह मिलन प्रभु चउ४ मुकाम ॥ ७५ ॥
पुनि दियउ तृतीया तहँ मिलान, सब जन दिय उत्सव गोरि दान
पुनि होत चतुर्थी४ दिन प्रभात, खांग्रंतहमीयद छदन आत ॥७६॥
तामाँहिं लेख पंचमि५ मिलाप, अरु सदरलैन व्है मुद अमाप ॥
कहि रामसिंह राजाधिराज, हढचित्त रु है वार्द्धक दराज ॥७७॥
तातैं हम चाहत मिलन तूर्ण, पुनि चहत भरतपुर ईस पूर्ण ॥
आवत हम सम्मुह उभय तत्थ,सुनि राम अरज करि कुच्चसत्थ७८

॥ दोहा ॥

पंचमि५ दिन करि कुच्च प्रभु, वैर मुकामन आत ॥
नगर कनावरतैं निकट, पिप्पलतरु इक पात ॥ ७९ ॥
उहां भरतपुर ईसके, बारीदारन आइ ॥
रंजित किन्न बिछात सम, मन बहु मोद मनाइ ॥ ८० ॥

॥ षट्पात् ॥

सदरलैन साहब१ रु भूप बलवंत२ भरतपुर ॥
बाजी४ रथ थित होइ उभय२ सम्मुह उमंगि उर ॥
तीन३ कोस लग आइ बहुरि ठह्है बिछात पर ॥
तब जीवन बहुरा रु हमिदखां तह वकील तर ॥

चहुवान तरनि सन्निधि त्वरित आइ निवेदिय अरज इम ॥
प्रभु वेर बिछात ठट्ठे उपरि अप्प पधारहु देर किम ॥ ८१ ॥
(दोहा)
यहै अरज सुनतहि अधिप, तहां हय स्थित्त आत ॥
अस्त्र बिछायत्तके उपरि, हुलासित तुरग बिछात ॥ ८२ ॥
सदरलैन साहब समुह, अरु बलवंतहु आइ ॥
सय इक१ भरत पुरेसहू, लिन्नों सीस लगाइ ॥ ८३ ॥
प्रभु तब अप्प सु पानि इक१, आनन द्वयस उठाइ ॥
कुसल परस्पर किन्न पुनि, मुद जुत खंध मिलाइ ॥८४॥
॥ षट्पात् ॥
उत्तमंग पुनि सदरलैन कर इक लगाइय ॥
तब पहु आनन निकट अप्प सुभ पानि उठाइय ॥
गाइय१ ठाइय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
खंध जुट्ट मिलि मुदित दुवश्हि रचि कुसल परस्पर ॥
तुच्छ समय तहँ बैठि बत्तकरि देस१ काल२ वर ॥
जेट्टस केर चउ४ तुरग रथ बैठे तीन३हि मुदित मन ॥
बलवंत बाम दक्खिन सदरलैनहु सम्मुह अप्प सन९ ॥८५॥
सिरैरहि रु प्रभु अप्प१ चले डेरन प्रति सत्वर ॥
हुव सु अग्ग जय१ बिजय२सिंह आरुहि तुरंग वर ॥
इम त्रय३ डेरन आइ अधिप सह तजि रु अस्व रथ ॥
बाजी स्यंदन चढि रु वे सु दुव२ चलिय वैर पथ ॥
इत होत सिबिर दाखिल अधिप ताप कीन नाली त्वरित॥
दसपंच१५ फैर उततैं चलत इत नालिय चालिय सहित ॥८६
रित१हित२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
हुव हाजर बलवंत बहुरि जन तहँ सु प्रतिष्टित ॥

अरज कराइय एह भूप महमानि सेनहित ॥
सासन करहु प्रसिद्ध लेहु पक्वान्न चक्र सब ॥
यह सुनि रु दियजु हुकम सचिव आवैं मामक जब ॥
मिलि सचिव चक्रपति आदि तहँ जाइ दिवाइय स्वच्छ मन ॥
आमोद तत्थ इम राखि पुनि आये व्यापृत सठ सदन॥८७॥

॥ पादाकुलकम् ॥

षष्ठीद् दिवस मिलान तहाँ दिय, पुनि बलवंत भविक जन आइय
तब प्रभु निकट हमिदखाँ जाइरु,किय्उ अरज प्रभुतैं मुदपाइरु८८
प्रभु बलवंत सुजन पठवाये, पधरावन अप्पहिं उत आये ॥
समय प्रजेस हार्द जो पाऊं, सो उनकौं मैं जाइ सुनाऊं ॥ ८९ ॥
सुनि इम अरज निदेस दयो जब, नाड़ी नयन२ रहैं दिनकर लब॥
इम क्रम क्रमन उहाँ तुम जानहु, पुनि तहँ साहब मिलन प्रमा-
नहु ॥ ९० ॥
इम वकील सासन सुनि आयो, सुजन त्वरित बलवंत सुनायो ॥
स्वनृप जाइ तिन वृत्तानवेदिय, तब सभ्य रु संसद तयारकिय९१
पट्टप भीम २०३१२ कुमार जुत्त पुनि, गोवर्द्धन कुमरहिं प्रभु लिय
चुनि ॥
सेना सर्व चार भट सारे, प्रभु नवलक्खा बाग पधारे॥ ९२ ॥
प्रथम जात बलवंत गेहपट, सम्मुह बिंसति२०पैंड वे सु अट ॥
तुच्छ समय पुनिवस्लसदन रहि,साहब शिबिर बरब्बर क्रमचहि९३
तहाँ अव्प१बलवंत२ सिधाये, रद३२पद सदरलैन समुहाऽऽये ॥
करि सँल्लाप भव्य मुद पाइउ,त्रय३हि सौध संसद जहँ आइउ९४
खुरसी अप्प मध्य आरुहि जहँ, भीम२०३१२कुमर दाच्छिन कुरसी
तहँ ॥
तदनंतर जग१ विजय१सिंह दुव२, उपवेसन गोवर्द्धन ततहुव॥९५॥

तातैं बक्र मिसल सम्मुह सन, खुरसिन लग्गिय तास सुभट जन॥
सठ्पहि सदरलैन साहब रहि, सान्निधि तास भरतपुर ईसहि ।९६।
समय मुहूर्त वृत्त तहँ जंपिय, अतर१ पान२ पुनि चरन निवेदिय॥
साहब उक्त१ सु अप्प लगाये, पानदान प्रभु नजर निराये ॥९७॥
संग्रहि कहिय सिबिर संजावन, प्रभुकों तब वे दुव२ पहुँचावन ॥
महलनतैं सु चौक लग आये, सदाचार तीन३हिं तहँ पाये॥ ९८ ॥
प्रभु पुनि अप्प सिबिर दाखिल हुव, तुरतहि तहां वे सु आये दुव
जब वहि सिबिर दुर२ दिस भट राखि रु, प्रभु पुनि मुख्य सिबिर रह चाहिरु ॥ ९९ ॥

खिरु१ हिरु२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रभु तहँ खुरसी मध्य बिराजिय, सदरलैन उपविष्ट सठ्प किय ॥

जिय१ किय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पुनि बलवंत असठ्पहि पाये, प्रभु तत लार्ड पल्लास दिखाये।२००।
तामें लेख कोल नामाँको, साहब देखि चविय नृप याको ॥
उत्तर झटिति अत्थ नहिं ऐहैं, बासर कतिक विचारिहु दैहैं॥२०१॥
अतर अप्प दोउ२न पुनि अप्पिय, पहुँचावन प्रभु तिन्हैं गमन किय
बाहिर सिबिर तनावहिं आइ रु,दियउ सिक्ख तिन्ह सुबच दृढाइ रु
बाजी स्पंदन चढि रु सिबिर प्रति, कियउ गमन प्रभु दुवरहि रक्खि रति ॥

इत पटआलय अप्प पधारिय, बलाधीस कटिबंध निवारिय।२०३।
षष्ठोद् दिन तहँ रत्ति बिहाई, सुज्जवार१ सप्तमि७ अब पाई ॥
सत्त७ कोस ह्वांतैं कवईपुर, हुव प्रभात दाखिल अंतेउर ॥१०४॥
करत कुच्च पुनि प्रभु तहँ भोजिय, सुजन प्रताप महीप करोलिय॥
इम विज्ञप्तिआइ तिन्हअक्खिय,भूप मदीयमिलन प्रभुभक्खिय१०५
पुनि निर्देस समयको पावैं, प्रभु मामक द्रुतही पधरावैं ॥

इम सुनि अरज नियोग दयोनृप, हमरो तुम जानहु दुतहीरूप१०६
इम सुनि सुजन पटालय आइ रु, प्रभु इत समय संध्यकों पाइ रु
कर्म नित्य आदिक सब किन्नों, संसद रचन निदेसहु दिन्नों १०७
यान१ घटी रजनी पुनि वित्तत, चढि इम भूप प्रताप सु चित्तत ॥
उतरयो द्वार पटालय आइ रु,पहु सुनि सम्मुह अप्प पधारिरु१०८
इरु१ रिरु२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
शस्त बहुरि मिलि किय परस्पर, बैठे इक आसन धरनीवर ॥
समय देस वृत्तांत सु जंपिय, नाहीं इक१ उपवेसन रक्खिय१०९
दै तिन्ह सिक्ख कियो पहुँचावन, अंगुक सदन द्वार लग आवन ॥
इम दै सिक्ख अप्प तुरगासहि, सिबिर प्रतापपालके आसुहि११०
किय कामन प्रभु रत्ति रक्खि रति, सुभट मुख्य---सह संहति ॥
तिन्हें तबहि आगमन रु सम्मुह, संलाप रु उपविष्ट आदि सुह १११
सुह१ सुह२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
प्रथम भांति जिम किय परावर, जंपिय सिक्ख अप्प तदनंतर ॥
इम सुनि सोहु पुगावन आये, पटगृह द्वार रूपसहीं पाये ॥ ११२ ॥

॥ दोहा ॥

सदाचरन करि तह सुमन, पुनि चल्लिय मुद पाइ ॥
नयन३ घटी रजनी रहत, हुव दाखिल रसुख आइ ॥११३॥
अपरदिन दिन पुनि तहँ अचिय, राखि रु धाम विश्राम ॥
आन्हिक पूजन सकल, रंजित किय प्रभु राम ॥ ११४ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

कियो नवमीं१ कुज३ वार प्रयान, दयो नु कुमेर सुकाम दिवान॥
यान१ यान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
तहां बरासन सुनाम पठाइ, जनी दृग नारि सिरी नु बनाइ ॥११५॥
सुनाम मंडित हंसन साजि, रसाल बरोरि नु पावनि राजि ॥

कियो तस लंच सु मानुस आइ, कर्यो मुररीकृत भाविक पाइ॥११६॥
दियो दशमी१० दिन डिग्घ मुकाम, रहे तहँ रुद्र११ तिथी प्रभु राम
तहां भवनाभिध सुंदर थान, तिन्है क्रिय देखन गोन क्षिवान॥११७
उहाँ ब्रजमोहन दुग्गप आइ, दये तिँहिँ भोन असेस बताइ ॥
बिताइ घटी बसु८उहाँ क्षण देस, कियो प्रभु अंबरओक प्रवेस॥११८
चले पुनि द्वादसि१२ लै चतुरंग, गिन्यो सु मुकामहि मानुसि गंग॥
तहां इक१ गोरधनाव्हय सैल, मिटैं जहँ जातहि मानुस मैल ॥११९॥
अनंग१३ तिथी दिन स्नान उमंग, सु गोन कियो प्रभु मानसिगंग
उहां करि आप्लव अंहति अत्थ, मगायउ नाग१तुरंगम२ तत्थ॥१२०
सिरी१कुथ२ताहि बनात सु साजि, बनाइ रु तादृश त्योंहि सुबाजि
महीप बहोरि सु द्रम्म पचास५०,तथासर५निष्क१रु चीर२सतास॥१२१
तुरंग१ बहोरि सनिष्क३हि तीन३, दये पुनि द्रम्म पचीस२५ सु दीन बलापति ॥ १२२ ॥
अंबर१ पिट्ठि रु तार खुराहिँ, उहाँ दस१० द्म्म दु२निष्क सु आहिँ॥
प्रदेसन दै इम प्रीति प्रजेस, कियो पुनि अंसुक ओक प्रवेस ॥१२३॥
मुकाम तहां करि पुरिग्राम दीह, अगेस परिक्रमको पुनि ईह ॥
प्रभू किय लै अवरोध प्रयान, कियो गिरिराज परिक्रम यान॥१२४

प्रयान१ मयान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

निसीथ घटी दुव२ उप्पर जात, प्रदेसन व्हां करि डेरन पात ॥
तिथी पडिवा१बदि माधव२मास,बली सत वै किय वाहिनिवास॥१२५

॥ दोहा ॥

कियउ द्वितीया२ दिन क्रमन, राजगज प्रभुराम २०२१४ ॥
साहब सुनि आयो समुह, मथुरा जानि मुकाम ॥ १२६ ॥
सुह डिपटी अभिधा विदित, पद रु किलट्टर पाइ ॥
मथुरा तजि सम्मुह मिल्यो, इक१ कोसलों आइ ॥ १२७ ॥

मिलत अनामय पुच्छि करि, सत्रह१७ नालिन फैर ॥
साहब सह आये उमँगि, वस्त्रसदन वह नैर ॥ १२८ ॥
पुनि वृंदाबन नैर पहु, मातामही मिलाप ॥
कियो तुरग आरुहि क्रमन, अल्प सत्थ करि आप ॥ १२९ ॥
जाइ अरज सुभ करि जहां, प्रसूमही पय बंदि ॥
आधघरी रहि सिक्ख करि, आये सिबिर अनंदि ॥ १३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे　　त्रयोदशो मयूखः ॥१३॥

॥ गीर्वाणभाषा अनुष्टुप् ॥

राधाकृष्णातृतीयायां कृत्वा श्राद्धादिकं नृपः ॥
पद्भ्यां विश्रामघट्टाय पञ्चम्यां सायमव्रजत् ॥ १ ॥

॥ गीतिः ॥

जयसिंहविजयसिंहेत्याख्यमहाराजसंयुतस्तत्र ॥
आचम्य षट्सुवर्णीमुपायनीकृत्य तस्थिवान् घटिकाम् ॥२॥

॥ उपजातिः ॥

विलोक्य नीराजनमत्र घट्टे नारायणं चापि गतश्रमाख्यम् ॥
नत्वोपहृत्य द्रविणं यथार्हं भूपो निवासं स्वमलंचकार ॥ ३ ॥

(*) राजा रामसिंह वैशाख वदि तीज को श्राद्ध आदि करके पंचमी के दिन पैदल विश्राम घाट गया ॥ १ ॥ महाराजा जयसिंह और विजयसिंह के साथ आचमन करके सुवर्ण की छः मोहर भेट करके घड़ीभर बैठा ॥ २ ॥ और आरती के दर्शन करके विश्राम नामक नारायणको पृथ्वी पर साष्टांग विधि

(*) हमारे नियमानुसार टीका की समाप्ति ऊपर करदी गई वहीं पर्यन्त हमारी रचीहुई टीका जाननी चाहिये परन्तु ऐसा सुना गया है कि रावराजा रामसिंह की तीर्थयात्रा के प्रकरण में ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने यह एक मयूख सावकाश के समय पहिले बना रक्खा था जिसको सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान ने अपनी रची कविता में मिला दिया इसकारण सामान्य पाठकों की सुगमता के अर्थ जोधपुरके कविराजा मुरारिदान के अनुरोध से इस एक मयूख का अर्थ फिर लिखदिया जाता है जिसको हमारी नियमानुसार टीका के बाहर जानो इससे आगे की कविता सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान की रचीहुई होने के कारण इस पर टीका बनाना छोड़ दिया गया है ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

सप्तम्यामुषसि परिक्रमाय पद्भ्यामायस्यन् दददथ तत्र तत्र वित्तम्॥
विश्रामं प्रथममथ प्रयागघट्टं संपश्यन्नथ बलदेवघट्टमागात् ॥४॥

॥ वसन्ततिलका ॥

श्यामाभिधं कनकनाख्यमथार्थघट्टं घट्टं ध्रुवस्य कलयन्नथ मोक्ष तीर्थम् ॥
रङ्गावनीं तदनु भूतपतिं महेशं दृष्ट्वातपे स्वशिबिरं पुनराजगाम ॥५॥

॥ उपजातिः ॥

अथो भुजिष्यातनये निवृत्तमसूरिरोगेऽर्जुनसिंहनाम्नि ॥
आचारतः प्राप्तसुदस्तविघ्नमकारयद्भूपतिरम्बुसेकम् ॥ ६ ॥
अश्वे स्थितोऽष्टमिभूतनाथपर्यन्तमेवाथ चलन् पदाभ्याम् ॥
विलोक्य रामं बलभद्रकुण्डेऽथ ज्ञानवापीमवलोकते स्म ॥७॥

॥ स्वागता ॥

बालकृष्णपटशोधनकुण्डं जन्मसद्म पितृबन्धनभूमिम् ॥
भूपतिस्तदनु केशवदेवं पश्यति स्म वनखण्डशिवं च ॥ ८ ॥

॥ शिखरिणी ॥

से नमस्कार करके अपने डेरे पीछा आया ॥ ३ ॥ सप्तमी के दिन प्रातःकाल में पैदल परिक्रमा करने को जहां तहां द्रव्य देता हुआ पहिले विश्राम घाट गया फिर प्रयाग घाट का दर्शन करके बलदेव घाट गया ॥ ४ ॥ वहांसे श्याम घाट, कनक घाट, अर्थ घाट, ध्रुव घाट और मोक्ष तीर्थ गया वहांसे भूतनाथ महादेव के दर्शन करके धूप में अपने डेरे पीछा आया ॥ ५ ॥ जिसपीछे राजा ने पास वानिये पुत्र अर्जुनसिंह को कुष्ट (कोढ) रोग मिटाने के अर्थ जल में स्नान कराया ॥ ६ ॥ अष्टमी के दिन भूतनाथ महादेव तक तो घोड़े पर चढकर गया और वहां से पैदल होकर बलभद्र कुंड पर राम (बलदेव) के दर्शन करके पीछे ज्ञानवापी का दर्शन किया ॥ ७ ॥ जिसपीछे राजा ने बालकृष्ण के वस्त्र धोने के कुंड जन्मघर भूमि और माता पिताके बंधनकी भूमि को देखकर केशवदेव और बनखंडी शिव के दर्शन किये ॥ ८ ॥

महाविद्यां देवीमगमददसीयां च सरसीं,
सरस्वत्याः कुण्डं तदनु च तदीयं झरमपि ॥
शिवं गोकर्णेशं तदनु गणपं दीर्घवदनं,
ततस्तीर्थं भूपो दशतुरगमेधाभिधमगात् ॥ ९ ॥

॥ उपजातिः ॥

सरस्वतीसङ्गमकृष्णगङ्गावैकुण्ठघट्टानथ सामघट्टम् ॥
ददर्श भूमीपतिरष्टकुण्डघट्टे हनूमन्तमथैकदन्तम्॥ १० ॥

उपजातिः

ततो द्वारकाधीशमालोक्य देवं पुनः प्राप विश्रान्तिघट्टं क्षितीशः॥
परिक्रान्तिमेतां यथार्हं विधाय निकेतं निजं भूषयामास भूपः।११।

उपजातिः

ततोभिधाय प्रभुणा नवम्यामाकारणां माथुरपण्डितानाम् ॥
प्रश्नानुवादेतररीतिचञ्चत्तर्कालिरश्रूयत शास्त्रचर्चा ॥ १२ ॥

॥ शालिनी ॥

एकादश्यां प्राप्य विश्रान्तिघट्टं तत्र स्नात्वा सावरोधः क्षितीशः ॥
स्तुत्वा भानोर्नन्दिनीं भक्तियुक्तः प्रादाद्दानं शास्त्ररीत्या द्विजेभ्यः१३

वहां से. महाविद्या देवी के दर्शन करके अदसिया नामक सरोवर पर, गया, वहां से सरस्वती कुंड और सरस्वती कुंड के झरने को भी देखा तिस पीछे गोकर्णेश्वर महादेव के दर्शन करके दीर्घवदन गणेश के दर्शन किये तिसपीछे दशाश्वमेध तीर्थ गया ॥ ९ ॥ सरस्वतीसंगम, कृष्णगंगा, वैकुण्ठ घाट और साम घाट के दर्शन करके राजा ने वैकुण्ठ घाट पर हनुमान् और गणपति के दर्शन किये ॥ १० ॥ जिसपीछे द्वारकाधीश के दर्शन करके राजा पीछा विश्राम घाट आया, इस परिक्रमा को यथायोग्य रचकर राजा अपने डेरे आया ॥ ११ जिसपीछे राजा ने नवमी के दिन मथुरानिवासी पंडितों को बुलाकर शास्त्रचर्चा सुनी ॥ १२ ॥ एकादशी के दिन राजा ने विश्राम घाट जाकर राणियों सहित स्नान करके और यमुना की भक्ति पूर्वक स्तुति करके

॥ उपेन्द्रवज्रा ॥

गजं शतद्रम्मयुतं विचित्रप्रवेणिपर्याणनिबद्धशोभम् ॥
ददौ महीशो दश१०निष्कयुक्तं द्विजाय सर्वाम्बरपूजिताय ॥ १४ ॥

॥ उपजातिः ॥

अश्वं शतद्रम्मयुतं सपञ्चनिष्कं स्फुरद्राजसुभाण्डशोभम् ॥
वस्त्रैः समस्तैः परिपूज्य भक्त्या ददौ द्विजेन्द्रा महीपतीन्द्रः ॥१५॥
एकैकनिष्कान्वितपञ्चपञ्चद्रम्मार्चिताः पञ्चदशाल गावः ॥
द्विजेश्वरेभ्योम्बरपूजितेभ्यो भक्त्यात्यसृज्यन्त महीश्वरेण ॥ १६ ॥
सुवर्णमूर्त्यादिकमर्चनाङ्गं वधूचितं श्रीयमुनाम्बरौघम् ॥
अष्टाधिकं विंशतिमत्र भूमेर्निवर्तमानामदिशत्प्रजेशः ॥ १७ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सम्पूज्य तं तीर्थगुरुं स्वमाघ्रिशौचादिना जीवनरामसंज्ञम् ॥
नानाम्बरैर्मौक्तिककर्णवेष्टहारान्वितैर्भूषयति स्म भूपः ॥ १८ ॥

॥ उपजातिः ॥

भोज्यं द्विजेभ्यो वसु भूरि चापि संकल्प्य सम्यग्गुरुदक्षिणां च ॥

शास्त्र के अनुसार ब्राह्मणों को दान दिया ॥ १३ ॥ राजाने सौ रुपये और दश मोहर के साथ हाथी दान, सम्पूर्ण वस्त्रों से पूजन करके ब्राह्मण को दिया॥१४॥ और सम्पूर्ण वस्त्रों से भक्ति पूर्वक पूजन करके ब्राह्मण को सौ रुपये और पांच मोहर के साथ घोड़ा दिया ॥ १५ ॥ श्रेष्ठ ब्राह्मणों का भक्ति से पूजन करके एक एक मोहर और पांच पांच रुपयों के साथ पन्द्रह गायें दीं ॥ १६ ॥ राजाने यमुना पर सुवर्ण की मूर्ति आदि का दान दिया. और उस पूजा के अंगभूत स्त्रियों के योग्य वस्त्र समुदाय दिये. और अट्ठाईस निवर्तन भूमि दी. बीस बांस का एक निवर्तन होता है. " निवर्तनं विंशतिवंशसंख्यैः " इति लीलावत्याम् ॥ १७ ॥ जीवनराम नामक तीर्थगुरु को अपने हाथ से चरण धोने आदि विधि से पूजन करके अनेक प्रकार के वस्त्र, मोतियों के कुंडल और हार से सुशोभित किया ॥ १८ ॥ दक्षिणा सहित ब्राह्मणभोजन और गुरुदक्षिणा का संकल्प करके थोड़ासा दिन बाकी रहने पर राजा ने राजकुमार को जनाने

दिनेल्पशेषे सकुमारमन्तःपुरं निकेताय समादिदेश ॥ १९ ॥
नीराजनानेहसि तत्र पुष्पवृष्टिं विधायाऽऽव्रजता नृपेण ॥
अकार्यत स्वानुगहस्तिनिष्ठजनेन वृष्टी रजतात्मिकापि ॥ २० ॥
परेद्युराहूय निजाऽनिजान्बुधान्पुरोधसाऽर्च्य प्रतिमूर्त्यदित्सत् ॥
द्रम्मं तथान्नादि च पञ्चभोज्यं द्विजान्सहस्रं च तदन्वभोजयत्॥२१॥

॥ अनुष्टुप् ॥

त्रयोदश्यां१३ दिगद्रयङ्गो६७१०न्मितान्स्त्रीसहितान्द्विजान् ॥
अभोजयच्चतुर्वेदान्सपाददम्मदक्षिणम् ॥ २२ ॥

॥ उपगीतिः ॥

राधारमणो भट्टाचार्योपाख्यव्रजकिशोरः ॥
पुत्रोस्य रामबाबूरेते वृन्दावननिवासाः ॥ २३ ॥

॥ गीतिः ॥

माथुरगङ्गारामश्चेतिबुधाः प्रागनागता मुख्याः ॥
आजग्मुर्नृपहूता यमुनातीर्थान्तिकोत्सगतसदसम् ॥ २४ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सूरिर्नरेन्द्रस्य वरेण्य आशानन्दस्तथा मैथिलबापुदेवः ॥

में जाने की आज्ञा दी ॥१९॥ सायंकाल की आरती के समय में वहां (विश्राम घाट) पर राजा ने पुष्पों की वृष्टि करके रजत (चांदी) की वृष्टि भी की ॥२०॥ दूसरे दिन अपने और दूसरे पंडितों को बुलाकर पुरोहित के द्वारा सब का जुदा जुदा पूजन करके एक एक रुपया दक्षिणा के साथ पांच पकान्न से एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २१ ॥ फिर त्रयोदशी के दिन सवा सवा रुपया दक्षिणा के साथ स्त्रियों सहित छः हजार सात सौ दश चौबे ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २२ ॥ वृन्दावन में रहनेवाले राधारमण भट्टाचार्य, व्रजकिशोर, व्रजकिशोर का पुत्र राम बाबू और मथुराका गंगाराम ये प्रधान चार पंडित पहिले नहीं आये थे सो राजा के बुलाने पर आये ॥२३॥ ॥ २४ ॥ जिनमें से गंगाराम के साथ राजा के श्रेष्ठ पण्डित आशानन्द और

शास्त्रार्थमातेनतुरत्र गङ्गारामेण सार्धं घटिकोनयामम् ॥२५॥

॥ वसन्ततिलका ॥

ते प्रेषिता निजगृहान्प्रति पंचपंचदम्मार्चिता अथ परत्र दिने तु पौरः॥
सद्रम्मदक्षिणमभोज्यत विप्रवर्गः शिष्टाप्यपूरि सहसत्कृतिदेयमात्रा२६

॥ वैतालीयम् ॥

अथ माधवशुक्लपक्षतावनुवृन्दाविपिनं व्रजन्नृपः ॥
निशि षड्घटिमाजि कालियन्हददेशे शिबिरं स्वमाविशत् २७

॥ वसन्ततिलका ॥

मातामहीसदनमेत्य परेद्युराप सार्द्धासु षट्सु घटिकासु निशि स्ववासम्
आचम्य कालियन्हदेथ तृतीयतिथ्यां वृंदावनस्य निरियाय परिक्रमाय

॥ इन्द्रवज्रा ॥

गोपालघट्टाद्यमुनाल्पधारापर्यन्ततीर्थानि समेत्य पद्भ्याम् ॥
अश्वेन वासं स्वमुपेत्य मातुः पुण्याय राज्ञार्पित गौस्सनिष्का।२९।

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ विहारिहरिं शिरसा नतो मदनमोहनमेत्य च संस्तुवन् ॥

मैथिल बापूदेव ने एक घड़ी कम एक पहर तक शास्त्रार्थ किया ॥ २५ ॥ तिस पीछे उन चारों पण्डितों को पांच पांच रुपयों के साथ पूजन करके घर पहुंचाए और दूसरे दिन पुरवासी ब्राह्मणों को एक एक रुपये के साथ भोजन कराया और बाकी रही यात्रा को सत्कार के साथ पूर्ण की ॥ २६ ॥ इसपीछे वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को वृन्दावन को जाते हुए राजा ने कालीदह प्रांत में लगेहुए अपने डेरों में प्रवेश किया ॥ २७ ॥ दूसरे दिन नानी के स्थान पर जाकर साढे छः घड़ी रात गये पीछा डेरे आया जिसपीछे तीज के दिन कालियद्रह में आचमन करके वृन्दावन की परिक्रमा करने को निकला ॥ २८ ॥ गोपाल घाट से लेकर यमुना की अल्प धारा तक पैदल होकर तीर्थोंकी परिक्रमा करके घोड़े से अपने डेरे आकर माता के पुण्य के अर्थ राजा ने एक मोहर के साथ एक गौ अर्पण की ॥२९॥ इसके अनन्तर श्रीकृष्ण विहारी को नमस्कार करके स्तुति करता हुआ मदनमोहन को प्राप्त होकर अपनी माता की माता (नानी) का

स्वजननीजननीस्तणाकृन्नृपः शिबिरमाप निशि प्रहरे गते ॥३०॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

चतुर्थ्यां४ कलिंदात्मजास्वल्पधारास्थलाच्छेषतीर्थानि पद्भ्यामुपेत्य
परेद्युर्ह्रदे कालियस्याप्लुतस्सन् गजानां जलक्रीडनान्यालुलोचे३१

॥ उपजातिः ॥

षष्ठ्यां नृपेणाद्भुतशास्त्रचर्चासभाजिताकारि सभा बुधानाम्॥
भूयः परेण द्व्युयुगेन सान्तःपुरेण तत्तीर्थपरिक्रमोपि ॥ ३२ ॥

॥ पुष्पिताग्रा ॥

तदनु सदरलैनमङ्गरेजं भरतपुरेड्बलवंतसिंहयुक्तम् ॥
प्रकटयितुमुदन्तमुर्व्यधीशप्रहित इयाय हमीदखाँ नवम्याम्॥३३॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दशम्यां ययौ राजमाता स्वमातुर्विलोकाय घस्रेर्द्धयामावशेषे ॥
धरेशस्तु मातामहीं वीक्ष्य नैजं निकेतं पुनः प्राप रात्रौ निशीथे॥३४॥

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

एकादश्यामकृत बहुलस्त्रीजनैर्देवयात्रा-
मध्वन्येवामिलदवनिपस्य प्रसूः स्वप्रसूयुक् ॥

दर्शन करता हुआ पहर रात गये अपने डेरे पहुंचा ॥३०॥ चौथे दिन यमुना की अल्पधारा के स्थल से लेकर बाकी के सब तीर्थ राजा ने पैदल होकर किये और दूसरे दिन कालियद्रह में स्नान करके हाथियों की जलक्रीड़ा देखी ॥ ३१ ॥ छठ के दिन सभा को जीतनेवाले राजा ने पण्डितों की विलक्षण शास्त्र चर्चावाली सभा कराई तिसपीछे दो दिन में जनाना सहित वृन्दावन की प्रदक्षिणा की ॥ ३२ ॥ जिसपीछे नवमी के दिन भरतपुर के पति बलवन्तसिंह के साथ सदरलैन अंगरेज को समाचार जनाने के अर्थ रावराजा का भेजा हुआ हमीदखां गया ॥ ३३ ॥ दशमी के दिन राजमाता चार घड़ी दिन बाकी रहे अपनी माता से मिलने को गई और राजा अपनी नानी से मिल कर अर्द्ध रात्रि को पीछा अपने डेरे आया ॥ ३४ ॥ एकादशी के दिन बहुत स्त्रियों के साथ देवयात्रा की और मार्ग में अपनी नानी से मिलकर राधारमण आदि

नत्वा राधाप्रियतममुखास्तत्र गोविन्दमूर्ती-
र्वाक्सार्द्धप्रहररजनेराजगाम स्वधाम ॥ ३५ ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

द्वादश्यां सदनमुपेत्य मातृमातुः प्रत्यागात्सपरिकरो निशि स्ववेश्म॥
अन्येद्युः सुरसदनेक्षणां भुजिष्यावर्गेणाकुल नृपतेः कनिष्ठमाता३६

॥ उपजातिः ॥

तीर्त्वा तरीभिर्यमुनां परेद्युः प्रतिस्थलं राजतपंचरूपैः ॥
रासस्थलीमानसतीर्थमानविहारिणः सत्कुरुते स्म भूपः ॥ ३७ ॥
संस्थानमापन्नपि वृष्टिरुद्धो मातामहीकेतनमेत्य भूपः ॥
संध्यादिकर्माशयशनं च तत्र विधाय रात्रौ निजवासमाप ॥३८॥
सेवानिकुञ्जादिषु पंचदश्यामुपेत्य राधारमणं विलोक्य ॥
द्रम्मान् शतं पंचसुवर्णयुक्तान्दत्वैक्षतान्या अपि देवमूर्तीः३९
दिने तृतीयांशमिते व्यतीते निकेतनं स्वीयमुपेत्य भूपः ॥
पितामहस्याथ महासतीना श्राद्धानि चक्रे प्रतिवर्षजानि ॥४०॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-

गोविन्दकी मूर्तियों को नमस्कार करके डेढ पहर रात्रि से पहिले अपने डेरे आया ॥३५॥ द्वादशीके दिन नानी के स्थान जाकर पीछा अपने परिवार के साथ अपने डेरे आया और दूसरे दिन पासवान स्त्रियोंके साथ राजाकी छोटी माता ने देव मंदिरों के दर्शन किये ॥३६॥ दूसरे दिन नावों से यमुना को तिरकर राजाने जगह,जगह पांच पांच रुपयों से रासथली, मानसथली और मान विहारी का सत्कार किया ॥३७॥ चौराहे पर पहुँच गया तो भी वृष्टिसे रुककर नानी के मकान पर पहुंच कर वह राजा सन्ध्या आदि सत्कर्म और भोजन वहीं करके रात्रि में अपने निवास स्थान आया ॥३८॥ पूर्णिमाके दिन सेवाकुंज आदि स्थानों में राधाकृष्णके दर्शन करके पांच मोहर के साथ सौ रुपये देकर और भी देवमूर्तियों के दर्शन किये ॥ ३९ ॥ और दिनके तृतीयांश (तीसरा) भाग व्यतीत होने पर राजाने पितामह (दादा) की पतिव्रता राणियों के वार्षिक श्राद्ध किये ॥ ४० ॥

सिंहचरित्रे चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तजि वृंदावन तीज३ तिथि, रहत घटी चउ सूर ॥
किय आरुहि बाहन क्रमन, द्विजन दुःख करि दूर ॥ १ ॥
पहर इक्क१ रजनी नृपति, गोकुल मग्ग बिहाइ ॥
हुव दाखिल डेरन्न हरखि, धीरन मोद बढाइ ॥ २ ॥

षट्पात्

भुजगतिथी५ सु प्रभात प्रथम अंतेउर चल्लिय ॥
आरुहि प्रभु पुनि अरव महाबन अप्पहि क्रम किय ॥
कन्ह चरित जो पुह्नवि तास प्रभु दरस उहाँ करि ॥
अंतेउर सह सिबिर होइ दाखिल सु ध्यान धरि ॥
आप्लवन अत्थ सुद्धान्त सह किय पुनि जमुनातट क्रमन ॥
महिपाल जोरि अंचल महिषि कियउ अप्प मोदित सबन२
मन१बन२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
तर्पन आदिक तत्थ बहुरि करि नित्यकर्म बलि ॥
अर्बारुहि किय अटन द्विजन दारिद वृत्तन दलि ॥
मंदिर गोकुलनाथ जाइ करि दर्स महामति ॥
प्रनमि प्रभू करि भेट बहुरि किय गमन श्रीजिपति ॥
करि दरस रौप्य दुव२सतक१००कर पंच५निष्क उच्चारन सु
इत्यादि सदन ईश्वर अखिल चालि इच्छन किय बहुत बसु४

दोहा

सुक्क६ असित२ षष्टी६ सुरहि, सत्तमि७ उग्गत सूर ॥
मुदजुत प्रभुहि मिलानहू, दिय बलदेव हजूर ॥५॥
राम राम करि दरस बलि, पुनि करि सिबिर प्रवेस ॥

भावितादि नैवेद्यहू, भेजिय भोग धरेस ॥ ६ ॥
करत कुच्च अष्टमि८ अहन, पुनि चहि दरस जरूर ॥
तुरगारुहि हाजरि त्वरित, हुव बलदेव हजूर ॥ ७ ॥

षट्पात्

करि इच्छन सत१०० दम्म पंच५ निष्क रु करिनी इक१ ॥
उरसुत्ती१ सिरुपेच२ जटित हीरक१ सौवर्णिक२ ॥
इम करि भेट सुजान ग्राम मइनाम अटन किय ॥
तहँ अवरोधन सहित महामति सिबिर प्रवेसिय ॥
करि कुच्च बहुरि नवमी९ अहन खंदोली सु मुकाम किय ॥
विश्राम बहुरि दशमी१०दिवस मिलन अत्थ तहँ लार्डदिय८
रहि एकादशि११ तत्थ बहुरि द्वादसि१२ धरनीवर ॥
तेरसि१३ दिन पुनि रहि रु कुच्च चउदसि१४ किय सत्वर॥
चल्लत अकबर नगर तास गव्यूति२ प्रभू रहि ॥
चउ४ इक१ ५ साहब त्वरित उत सु आये मेलन चहि ॥
इनकेहु नाम उपपद सहित भिन्न भिन्न इह आनिये॥
सम्मुह उदंत आवन सबै छप्पय छंद प्रमानिये ॥ ९ ॥
आजम नायब लार्ड सिकत्तर जाके उपपद ॥
हमलटीम१ इम नाम प्रथम१ हुव हाजरि संसद ॥
दूजो२ मौलन२ सोहु किलट्टर पद स मजष्टर ॥
डीपरसन३ पुनि राम३ तिमहि उपपद सु कमिश्नर ॥
पुनि जंटमजष्टर रेडल४ सु डिपटी नेट किलट्टरहि॥
जंगी अनीकपति जहँ हुलसि आयो जनरल५ मेल चहि१०

हरिगीतम्

तजि अन्न सव्वन गव्व वे५ द्रुतही बिछायत आइकैं ॥
जयसिंह औ तस भ्रात विजय सु सिंह पुत्र मिलाइकैं ॥

उमराव दुर्जनसल्ल१ गोकुलसिंह२द्वैर पुनि त्यों मिले ॥
तिम महासिंह पउत्त दुज्जनसल्ल३ मेलनकों मिले ॥११॥
पुनि खंधजुट्टि मिलाप आपहि हमलटनिहुतैं करयो ॥
जनरल१ रु मोलन३ आदितैं इक१ हत्थ भाविकपैं धरयो ॥
चढि बाह चल्लत चाह साहब वाम दक्खिन व्है चले ॥
रहि अप्प मध्य निसेसज्यों वसुधेस अकबरपुर हले ॥१२॥
इम शिबिर अकबरनैर उपवन राम नामक आइकैं ॥
चउ४इक्क१।५साहब नैर चल्लिय सिक्ख सासन पाइकैं ॥
तब दुग्गतैं दस१०तीन३।१३फैरहु नालि कागनके करे ॥
अरु अप्प तस प्रासाद आइ रु आन्हिकादिक आचरे॥१३॥
पुनि रहत चउ४ घटिका दिवापहि अप्प तरगनिन आरुहे ॥
प्रभु ताजबीबी मुकरबन क्रमि अप्प दिट्ठिनतैं छुहे ॥

रुहे१ छुहे अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

तस इक्खि उपवन१ तोपजंत्रन२ अप्प तुरगारुह भये ॥
जो जंत्र२ साहब सिष्टितैं तस किंकरन किय भ्फरमये॥१४॥
सवितास्त भूधरपैं गये हुव शिबिर दाखिल आइकैं ॥
रवि रहत घटिका नैन२ नवमी९ सोमबासर पाइकैं ॥
रथ तुरग आरुहि लार्ड ऐलनबरा शिबिरहि आइकैं ॥
तजि यान आवत तास सम्मुह अप्प२०।२१४सत्वर जाइकैं१५
करहू परस्पर सीस मात्र उठाइ भावुक त्यों भन्यूं ॥
बलि भीमसिंह२०४।१कुमार पट्टप लार्ड मेलनहू बन्यूं ॥
जयसिंह१विजय२सु सिंह सोदर कुमर अर्जुन त्यों मिले ॥
साहब सिकत्तर तास सन मिलि मोद पंकज मन खिले१६
तिमही सिकत्तर हमलटीन मिलाप इडविटहू करयो ॥

अरु लार्ड बाम अवाम इडविट रहि रु संसद पद धरयो ॥
खुरसी स्वकीया मध्य राखि रु लार्ड बाम बिराजयो ॥
पालि हमल्लटीन सिकत्तरादिक लार्ड बामक बैठयो ॥१७॥
अरु महाराजकुमार पट्टप अप्प२०३।४दक्खिन ओरमैं ॥
स्वक२०४।४बंधु जय ओ विजयसिंह सु तास सन्निधि रोरमैं॥
अध तास अर्जुनसिंह बाबा ताज कुमरन पालजो ॥
अरु महासिंह पउत्त गोकुलसिंह दुज्जनसालजो ॥ १८ ॥
तस हेठ दुज्जनसल्ल नाथाउत्त खुरसिनतैं ठयो ॥
इत्यादि भटवर मुख्य राखि घटोदु२पारिखद मंडयो ॥
लै अतर दुव२कर राम२०३।४पहु पुनि लार्ड अंगहि लाइकैं॥
दै पान सिक्ख बहोरि पूरब अप्प२०३।४ रीति पुगाइकैं ।१९।
दशमी१०बलाप हिताय अैलनबरा बस्तु समाजयो ॥
तरवारि इक१ गुजरात संभव मुट्ठि हाटक प्रेसयो ॥
अरु समरपट दल२ चर्म३इक१बाधी सु किस्वापल्लहरी ॥
इक१ वेणु मथ सिबिका४कनातिय टाटवाफिपकी करी२०
तिमही हयद५ सु तासको लालित्य कुंजर प्रेसयो ॥
अरु कुमर पट्टप भीम२०४।१हित हय१साज राजत साजयो॥
उरसूत्रिका२ सिरूपेच३इक१मंदील४ सिवपुर जो भयो ॥
वाणारसीज दुपट्ट५ नामक छुहि कासइहू दयो ॥ २१ ॥
दुस्साल६इक१त्यों गरमपोसक७ स्वर्णमय घटिका८दई ॥
ताकै हुती इक शृंखली पुनि सो सुबर्णमई नई ॥
दुव२ नैन मय दुरबीन९ इक१ सौवर्णमासि आदान१० जो ॥
अरु कलमदान११ ससाज ओ बन्नात१२ रंग दु२भोनजो२२
इम लार्ड प्रेषित बस्तु जो सब अप्प२०३।४स्वीकृतहू करयो

अरु तास मानुषकों पचत्तर७५भूप रुप्पय बिस्तर्‌यो ॥
भूपाल हरितिथि१२ भरतपुर बलवंत सहर सु थानभो ॥
तस द्वार जाइ तुरंग उज्झत सोहु सम्मुह आतभो २॥३॥
करिकैं परस्पर हत्थ मत्थ बहोरि भावुकहू भयो ॥
अरु तास करपर अप्प कर करि बामठहै परिखद गयो ॥
अरु राखि दक्खिन अप्प२०३१४ओ खुरसी अदक्खिनपैं ठयो
इक१ नाड़िका तहँ देसकाल उदंत मोदमई भयो ॥ २४ ॥
गहि अतर कर बलवंत हट्ठनईद२०३१४ अंग लगावनों ॥
बलि सिक्खदै अति मोद जुत करि पुब्बक्रमपहुँचावनों ॥
कर उभय२ उत्तमअंग भो बलवंत स्वक गृहमें गयो ॥
चहुवान अब्ज निसापको बलि आन डेरनहू भयो ॥२५॥
गणनाथ तिथि४ दिन आगरापुरतैं सु कुच्च प्रभू भयो ॥
अजमादपुर बलि विंधपईस मुकाम बाहिनिकों दयो ॥
तिथि५नाग पीरोजा सु बाद बिभावरी पुनि त्योंरहे ॥
तिम षष्टि६का बिश्राम सक्करबाद जाइ रु उम्महे ॥ २६ ॥
किय सत्तमी७ बुधवार४ वास धरोल नामक गाममैं ॥
तहँ आइ साहब टालबट सँग रहन पात्रा ग्राममैं॥
तब उट्ठि गद्दिपतैं प्रभू पयच्यारि४ सम्मुह जाइपैं ॥
पुनि हत्थ दोउ२न मत्थ माल उठाइ भावुक पाइकैं ॥२७॥
कथ टालवट नरपालतैं पुनि अमा जावनकों कह्यो ॥
चहुवान अब्ज दिवापनैं सुनि एह आपितहू चह्यो ॥
आदेस जीवनलालतैं तस संग भोलि सुजानकों ॥
जो कहैं साहब एह मिल्लनसों कथा सब आनकों ॥ २८ ॥
इम अग्ग साहबकों चलाइ रु अष्टमी८ सु प्रभातही ॥
करि कुच्च मैनपुरी समीप महीप सत्वर जातही ॥

पुरतैं सु साहब आइकैं विज्ञप्ति भूपतितैं कही ॥
प्रभु अप्पतैं पुर साहबन मिलनार्थ प्रीति घनी चही ॥२९॥
अरु अप्प सम्मुह आइबे सुहि ढंग परिसरपैं खरे ॥
तसमात चल्लहु वेगहू ब मिलाप आपहितैं बरे ॥
इम नालिकिस्थ प्रभू चले विज्ञप्ति साहब पाइकैं ॥
उततैंहु मैनपुरीस्थ साहब भूप सम्मुह आइकैं ॥ ३० ॥
मिलि मत्थ हत्थ लगाइ दोउश्न ओ अनामयहू करे ॥
अरु सत्थ साहब लै महीपति आइ डेरन उत्तरे ॥
करि सिक्ख साहब द्वारतैं चढि तुरग रथ पुरमैं गयो ॥
इत होइ दाखिल तूर्णही कटिबंध भूपति उज्झयो ॥ ३१ ॥
दिवसेस घटिका१ इक्क१ रहत सु शिविर साहब आतभो ॥
तस संग रीवाँनगरके सुभमनुज संसद पातभो ॥
कछवाह भेट गनेससिंहहिं पंच५ रुप्पयतैं करी ॥
अर नयन२ वर्तुलतैं निछावरि अक्खि सुभ प्रभु आचरी३२
भानेज बैठकपैं तिन्हैं प्रभु अग्ग बाम बिठाइकैं ॥
अरु धाइभ्राता रत्नलाल सलाम१ वलि२ किय आइकैं ॥
पुनि देसकाल उदंत साहब अक्खि पुरपति संक्रमे ॥
अरु रत्नलाल गनेससिंह स्वईस कथ इम कहि नमे ॥३३॥
प्रभु विश्वनाथ स्वईसहू ब जुहार मालुमहू करयो ॥
विज्ञप्ति सुनि तस भद्र आखि स्वसीस छोबन कर परयो ॥
दै सिक्ख डेरन तास ओ कटिबंध अप्प निवारयो ॥
करि नित्यकर्महि आदि सर्वरिहू मुकाम तहाँ दयो ॥ ३४ ॥
रयो१ दयो२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
कविवार८ नवमी९ अर्क उग्गत कुच सत्वर ओ करयो ॥
प्रभु विवर नामक ग्राममैं दलपात जामिनि भो परयो ॥

सनिवार७ दसमी१० दिवसछपरामहू जाइ रु त्यौंरहे,
एकादसी११ गुर१ साहिगंज मुकाम राखन उम्महे ॥ ३५ ॥
पुनि चंद्रबासर२ द्वादसी१२ मीरांसरायहि पाइकैं,
अरु व्हाँ फरुक्काबादतैं मिलनार्थ साहब आइकैं ॥
मिलि देसकाल उदंत अक्खि रु सिक्ख साहबकौं दई,
बिल्लोर होत मुकाम चउदसि१४ वृष्टि दिवनिस व्हाँ भई३६
पुनि तत्थ पुरिग्राम दीह सक्ति प्रसाद मेलनहू रहे,
शिविराजपुर पति सम्मुहाऽऽगम कोस इक१ रहि उम्महे ॥
तब मेघ वुट्ठिनतैं प्रभू तिनकोहु ढंग पयानभो,
आदेस तस सतकारकौं बलदेव अत्थहि दानभो ॥ ३७ ॥
बलदेवहू व प्रधान सत्वर तास पुरप्रति जाइकैं,
अनुशिष्टि जिम सतकार तस करि सिबिर अप्पन आइकैं
अरु तत्थ साहबतैं महीपति अग्ग जान कहातभो,
बलि मिलन कन्ह पुरत्थ साह--- सुनि तहँ पातभो ॥३८॥

॥ दोहा ॥

सुचि४मास रु पड़िवा१ असित, तजि बिल्लोरहि तात ॥
चढि चल्लिय शिविराजपुर, हरि जिम बिभव सुहात ॥३९॥
सुनि इम सक्तिप्रसादहू, प्रभु सम्मुह मुदपाइ ॥
पुरतैं बे गव्यूति२ पर, अधिप मिलन रहि आइ ॥४०॥

(षट्पात)

सम्मुह सक्तिप्रसाद आइ कर मत्थ लगाइय ॥
तब प्रभु आनन द्रपस अप्प सथ इक्कहि उठाइय ॥
कुसल परस्पर कहि रु क्रमिय डेरन [illegible] ॥
सिक्खहु सक्तिप्रसाद करि रु किय [illegible] पर ॥
वलि रहत अट्ठ८ घटिका दिवस म[illegible] [illegible] करिय ॥

प्रभु पंच सतक५००नाणक बहुरि पंचक५मन पक्कान्न दिय॥४१॥
कुच्च दोजिश्दिन करत सचिव तस आइ शिबिर तहँ ॥
भूपति भ्रातन माहिं नाम जहुवारसिंह जहँ ॥
करजोरि रु किय अरज प्रभू प्रासाद पधारहु ॥
मामक भूपति मिलि रु बहुत दुवर प्रीति दढारहु ॥
सुनि एह अरज चढि तुरग बलि पुरप्रति सत्वर संक्रमिय॥
सिवराजपुरप उततैं सुनि रु महिपति सम्मुह गमन किय॥४२॥

[दोहा]

पुर परिसर नृप पाइ पुनि, मिलि कर मत्थ मिलाइ ॥
कियउ अप्प उन जिम सु कर, अरु दुवर महलन आइ॥४३॥
पहु तहँ सक्तिप्रसादहू, बैठिय नृप दिस वाम ॥
स्वभट सर्व अपसव्यहू, इम क्रम राखिय आम॥ ४४ ॥
पुनि भट सक्तिप्रसादको, उग्रसिंह अभिधान ॥
अरु जुहारसिंहहिं नजर, किय माखन दीवान ॥ ४५ ॥

[षट्पात]

प्रभुकैं इक१ सिरुपाव पंच५ तखतीमय तिन किय ॥
असि इक१ पट्टिस एक१ स्वर्णमय मुट्ठि समप्पिय ॥
दंती इक१ कुथ सहित तास होदन सु कट्ठ मय ॥
तिम बनात कुथ साजि [illegible] किय भेट महारय ॥
पंचदश अधिक रुप्पय सतक११५ ये प्रभु नजर निवेदये ॥
महाराजकुमर अत्थसु बहुरि सिरुपावादि समप्पये ॥ ४६ ॥

इये१एये२अंत्यानुमासः ॥ १ ॥

पंचक५ [illegible] प्रमित दियउ सिरुपाव१ खड्ग२ पुनि ॥
पट्टिस३ [illegible] [illegible]क१ मुट्ठि२ किय नजर अच्छ चुनि ॥
तुपक [illegible] तिम तुरग५ रजत भूखन शृंगारित ॥

क्रियउ भेट तिम द्रम्म भूत५ भूपाल निष्क१ मित ॥
इम करत अप्प प्रभु उच्चरिय हमरो अब जालाअटन ॥
तसमात यहै दसतूर सब भूपति तुम रक्खहु भवन ॥४७॥

॥ दोहा ॥

पुनि प्रभु सक्तिप्रसादकौं, दृढ पय घोटक दिन्न ॥
राजत भूषन सहित रय, क्रम शिरुपावहिं किन्न ॥ ४८ ॥
तखती पंचक५ केरसहु, अरु तोमर सुभ तास ॥
तस नेउर करि रजत मय, ललित दिय रु हुल्लास ॥ ४९ ॥
करत कुच्च कल्ल्यानपुर, प्रभुकौं लब पहुँचान ॥
महिपति महलन द्वार लग, उमगि कियो उन आन ॥५०॥

॥ षट्पात् ॥

कुसल परस्पर करि रु दुवरहि कर मत्थ द्रपस दिय ॥
करि तस प्रभु सतकार क्रमन कल्ल्यानपुरहिं किय ॥
इम चल्लत पटसदन पंथ उपवन इक१ दिट्ठो ॥
प्रभु संध्यादिक कर्म करन तहँ जाइ पइट्ठो ॥
असनादि कर्म तहँ करि अधिप रहत घटी१ दिन संक्रमिय
सर्वरी पंच५ घटिका गयैं अंसुकसदन प्रवेस किय ॥५१॥

पद्धतिका ॥

किय कुच्च तृतीया३दिन दिवान, सुकथा जु एह साहब सुजान२
जनरल जग आव्हय कहत जाहि,आमय बहु वासर तास आहि५२
तातैं सु मजहर कालडीक, अधिपति मिलाप भेजिय सुठीक ॥
पुनि सुनि रु टालबट मोद पात, ए दुवरहि मिलि रु ताजि पुरहिं
आत ॥ ५३ ॥

कंपू रु कन्हपुर विच मिलाप, करि तत्थ [illegible] अमाप ॥
तहँ रहिय उभय२ साहब हिताय, प्रभु तास [illegible] अप्प पाय५४

जज आदि मजष्टर कालडीक, जानि रु प्रभु आगम अति नजीक
तब कालडीक तजि अश्वतात, अति प्रीति बिछायत प्रथमआत५५
तब अप्प टालबट तजि तुरंग, आइ रु बिछात मिलि तहँ उमंग ॥
करि कुसल परस्पर हित दिखाय, पुनि उभय२ प्रीति कर मत्थ
पाय ॥ ५६ ॥

जज आदि मजष्टर कहिय एह, जनरलहिँ अप्प शिव चविय नेह
प्रतिउत्तर दिय प्रभु पुनि पुनीत, व्यवहार तासतैं हम सुनीत५७
पुनीत१ सुनीत२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इम अक्खि तुरंगम चढि रु तीन३, साहब सह शिबिरहिँ क्रमन कीन
इक१कोस हुती नाली तुरंग, किय फैर त्रयोदश१३तिन्ह उमंग५८
कथ कालडीकतैं इम कहाइ, आतप बहु यातैं गेह जाइ ॥
इम कहि रु सिक्ख दै तास आप, लौं टालबटहिँ डेरन अचाप ५९
पुनि क्रमन चउत्थी४ किय प्रभात, सरसोल ग्राम दिय सन पात
कर कुच्च पंचमी५ दिवस राम२०२१४, कल्यानपुरैं दिय पुनि
मुकाम ॥ ६० ॥

विश्राम फतैपुर षष्ठि६कासु, तहँ रहत घटी दुव२ दिवस आसु ॥
साहब चउ४ आये मिलन काज, सुनिये तस आव्हय राजराज६१
उपपद सु मजष्टर सुहि थरंट१, नायब सु मजष्टर आदि जंट ॥
पलियम जु फिरासन२नाम ताहि,इम रीढ३नाम साहब सु आहि६२
साहब सु टालबट४सत्थ जोहि, मिलि च्यारिं४सभा आये सु मोहि
अरु अस्त्र बिछायत लग उताल,आतहि तब सम्मुह क्रमि नृपाल६३
मिलि सबन सत्थ कर तब मिलाइ, आनन तक प्रभु कर जबहि
आइ ॥

करि कुसल परस्पर हित बढारि, प्रभु बैठि तखत संसद पधारि६४
दिस वाम दुलीच हू बिछाइ, तिहिँ उप्पर साहब सब बिठाइ ॥

छाइ१ ठाइ२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

करि समय वृत्त गहि अतर दान, चवि सिक्ख लगायो चाहुवान ६५
किय क्रम पुरी साहब पुरत्थ, तत्रेव टालबट रहिय सत्थ ॥
इक सिविर अंत तारा स आहि, प्रभु अप्प१टालबट२दुव२उमाहि६६
अब बहुरा जीवनलाल आइ, पुनि हुकम हमीयदखाँ सु पाइ ॥
किय मंत्र अद्ध घाटिकादिवांन, दै सिक्ख ताहि किय तखतआंन६७
बलभद्र हुतो नागोध पट्ट, दिन दिवस सोहु लग्गो कुबट्ट ॥
साहब अनाम किय कैद जाहि, रक्खिय प्रयाग निवसथ रसाहि६८
तस राघवेंद्रसिंह जु अपत्य, दिय साहब तासहि राजकृत्य ॥
सुभ मनुज तिन्हैं भोजिय भुवाल, सोती सु मारफत कृष्णलाल६९
पौराणिक कासीनाथ२ पात, अरु पुरोधाहि नंदन उम्हात ॥
सो रामरसीले२ नाम ख्यात, पंडित३ अनाम मिलि सभा पात७०
दै आसिख आक्खि रु भद्र भूप, इक१ तुपक निवेदिय पुनि अनूप ॥
टहरी सु जात सौवर्ण अंग, अरु कुंद रजतमय कलि अभंग॥७१॥
त्यारी सु राजतो बहुरि सत्थ, बलि सम्मुह पैठि रु मिसल पत्थ ॥
अक्खिय जुहार नृप अस्मदीय, सुभ आक्खिय तिन्ह पुनि तस सुहीय
प्रभु पूछि राजवृत्तान्त सर्व, दिय सिक्ख सिविर हित करि अखर्व ॥
पट्टप सु भीम२०३।१ आयउ कुमार, आमय मसूरि सिंधूततार॥७३॥
करि नजर निछावरि मिसल लेत, तस पूछि अनामय सिक्ख देत ॥
किय कासमहू सप्तिम७ मुकाम, रीवाँपुर आगम सुनर राम२०२।४
मथुराप्रसाद१ भूसुर भुवाल, नारायन२ पाठक तिम उताल॥
संबंध रचन तहँ दुव२हि आइ, इनकी सु प्रभू पुनि अरज पाइ ।७५।
अरु बहुरा जीवनलाल थान, आरुहि गज उप्पर कियउ आन ॥
ताजिगजरु शिविर प्रविसे सु विप्र, मिलि कुसल आक्खि अरु मंत्रछिप्र
तब बहुरा जीवनलाल१ तत्थ, अरु अम्रतलाल२ भ्राता सु अत्थ ॥

तीजो३ वकील हम्मीदखाँहिं, आचारज आसानंद आँहिं ॥ ७७ ॥
नृप विश्वनाथ इम कथन गेय, ममगेह पुलिका तुमहिं देय ॥
सुनि मंत्र एह घटिका सु तीन३,पुनि जीवनलालहिं सिक्खकीन७८
अरु बत्त नाँहिं स्वीकार एह, बलि विप्र गये दुव२आसु गेह ॥
पुनि नयन२ सप्तमी७ दिन प्रभात, प्रभु सरैई सु किय सेन पात७९
करि कुच्च अष्टमी८दिन मुकाम, पहु दियउ कसीया नाम गाम ॥
इक१कोस हुती गंगा उहांसु,अवरोध सहित किय गमन व्हांसु८०
करि स्नान धेनु दुव२दियउ दान, हंकिय निज डेरन चाहुवान ॥
इम आइ शिविर सर्वरि बितात,पुनि करिय कुच्च नवमी९प्रभात८१
मँगतीपुरा सु प्रभु दिय मिलान, दसमी०१किय ढूमनगंज थान ॥
एकादशि११बासर सोम पात,अति उमगि प्रधान सु राज आत८
संमट१रु इलाहर२समट३नाम, कृपतान लय३हि उपपद सु काम
आइउ प्रभु सम्मुह अर्द्धकोस, जो जनरल साहबकै भरोस॥८३॥
मिलि क्रमन बरब्बर बाम भाग, प्रभु आइ शिविरसान्निधि प्रयाग॥
तस दुग्ग बरब्बर बाग ताहि, अवनीपति तामैं रहन आहि ॥८४॥
किय शिविर तत्थ प्रभु हुकम पाइ, अवरोध रु भट सब शिविर आइ
प्रभु सिक्ख साहबन पुनि समप्पि, कटिबंध निवारन बहुरि थप्पि

॥ दोहा ॥

श्रीप्रयाग संज्ञा किते, बदत इलाहाबाद ॥
किमहु होहु पै पाप गज, गज्जत सिंह निनाद ॥८६॥

॥षट्पात् ॥

चढि तुरंग किय क्रमन अप्प माधवबेनी पहँ ॥
करि मुंडन पुनि स्नान अस्थि पूजन प्रभु किय तहँ ॥
प्रनमि भूप उर हुलस मोद सह गमन नीर किय ॥
पितरन पुनि करि स्तवन अस्थि कर अप्प प्रवेसिय ॥

आप्लवन करि रु पुनि धेनु इक१उभयमुखी दिय भूसुरन,
बलि महुर पंच५दै नित्य करि किपउ प्रभू डेरन गमन।८७।
द्वादशि१२ दिन नृप सदन गवरनर जनरल लार्डहु,
नाम अलीनबराहु तास प्रतिहार आइ पहु ॥
अरज कराइय एह लार्ड पहु मिलन अज्ज चहि,
अरु वकील नरनाह हमिदखाँ वृत्त एह कहि ॥
सुनि एह अरज प्रतिहारप्रति उत्तर दिय तुम इम चवहु,
अज्ज करि पितर तर्प्पन बहुरि कल्हि मिलन हमरो चहहु॥८८॥
इम कहाइ चढि आधिप चालिय गंगा१मिलाप तहँ,
सरस्वती२जमुना३हु इक्क१ हुव नीर आइ जहँ ॥
पंचम५ नामक गुरुहि बहुरि बुधजनन बुलाइय,
शास्त्र उक्त विधि सहित श्राद्ध तिन प्रभुहिं कराइय ॥
दै दान द्विजन पंचम सु मुख रस६घटिका जावत रजनि,
आरुहि सु अर्व नमि द्विजनन शिविर प्रवेशिय महीपमनि८९
तेरसि१३ दिन पुनि रहत गमन साहब मिलाप सन,
नाम अलीनबराहु गवरनर जनरल कमरन ॥
भेजिय सम्मुह त्वरित इस्तरेजी सु सिकत्तर,
सचिव लार्ड१को बहुरि नाम नांहि सु साहबवर ॥
सकटी१तुरंग चढि पुनि दुव२सु आइ रु मिलि प्रभूतैं सुमन,
कर सत्थ करि रु सुभ लार्ड कृत अग्ग प्रभू सह किय अटन ॥९०॥

॥ दोहा ॥

पहुँचत कमरन आधिप तहँ, चोक अनायत पाइ ॥
अयमय नालिनके उतसु, तेरह१३ फैर कराइ ॥ ॥ ९१ ॥

॥ षट्पात् ॥

कमर लार्डसन क्रमत इस्तरेजी१ पुनि अ रु ॥

मैंडकर२ साहब आइ बहुरि अतिमोद बढाइरु ॥
करन परस्पर सीस कुसल करि कमर प्रवेसत ॥
उततैं सम्मुह लार्ड द्वारलग सत्वर आवत ॥
मिलि खंध जुट्ट भावुक भनि रु वलि लगाइ दुव२मत्थ कर॥
संसदहिं पाइ साहब सहित खुरसिन उप्पर बैठि बर ॥ ९२॥
बैठिय नृप दिस बाम अलीनबरा१ सु लार्ड तहँ ॥
मैंडकर२ बैठिय सव्य बहुरि जयसिंह१ विजय जहँ ॥
याके अध भट१ सचिव२ तीस३० अमुकेर मुदित मन ॥
मध्य विराजिय अप्प समप चवि कृत धाराधन ॥
घोटक१ मतंग२ भूखन३ तुपक४ बस्त्रादिक प्रभु भेट दिय
इम तुपक१ तास पुर जात पुनि नाम रफल करि नजरकिय९३

॥ दोहा ॥

किय अवरोधन सह क्रमन, गंगातट प्रभु न्हान ॥
मज्जन करि डेरन गमन, चउदसि१४ दिन चहुवान ॥ ९४॥
अमा३ दिवस पुनि गंगतट, अंतेउर सह आइ ॥
कियउ स्नान आदिक प्रथम, ग्रहन मगम तहँ पाइ॥ ९५ ॥
प्रसू दुव२हि किय दान पुनि, रजततुला प्रभुअप्पि ॥
अंबा अमानकुमरी उमगि, बैठि रु विप्र समप्पि ॥ ९६ ॥
महिषी स्वरूपकुमरी दियउ, द्विजन दान मुद पाइ ॥
कथन सस्त्रि पुनि अप्प करि, उमडित डेरन आइ ॥ ९७ ॥
पड़िवा१ सित पंचम मुरहिं, महिप बुलाइ मिलान ॥
पूजन करि तस प्रीति सह, दियउ अप्प कर दान ॥ ९८ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक१ मतंग बन्नात सिरी कुथ सहित समप्पिय ॥
हाटक भूखन१ तुरग२ बहुरि बन्नात जीन दिय ॥

सिरुपाव१।३रु सिरुपेच१।४कटक१।५उरसूलिका१।६हितिम
धेनू दुव२ शिविका१ रु निष्क८ पंचक५ रुप्पय९ जिम ॥
इखुख५०।९सोहु पंचक अरथ गाम१लोहली१।१०निष्कदुव२
इम करत बहुरि अवरोध सन भिन्न भिन्न तहँ दान हुव॥९९॥
दोजि२ दिवस उपवीत लियउ प्रभु ब्रह्मचर्य पुनि॥
पंचमि५ दिन लै अप्प भीम२०३।१ कुमरहि सुभटन चुनि॥
शास्त्रउक्त बिधि सद्धि भीम२०३।१ सह सुभ्भट सधाइय ॥
दियउ दान भू१ भर्म२ द्विजन बहु मोद बढाइय ॥
षष्टिका६ दिवस हुव मेघ झर सप्तमि७ बुधहिं मिलानरहि
अवरोध सहित एकादशिय११चलिय गंगतट न्हान चहि१००

मनोहरम्

भूप दशाश्वमेध उप्परि पधारि पुनि,
अप्प कर न्हाइ भरे दुव२ घट प्रवाहतैं ॥
तर्प्पन रु नित्यकर्म आइ करि तीर्थ द्विज,
दैकैं गो१ सनिष्क२।१ द्रम्म३।५ पंचक५ उछाहतैं ॥
पुनि प्रभु अश्वदश१०मेधके वितर्द पर,
जाइ रु प्रनाम कियो पर्बईके नाहतैं ॥
निष्क इक१ नाणक२।१ महीपति व्हाँ भेट करि,
भोजन द्विजन दये रुप्पय सलाहतैं ॥ १०१ ॥
शिबिर प्रवेसि पुनि द्वादशी१२ दिवस पात,
भोजिय हमीदखाँ वकील लार्ड घरकों ॥
जाइ तहँ मैंडक सिकत्तरसों आक्खि इम,
लैचलो डेरन हमारै गवरनरकों॥
जाइ तिन लार्ड अलीनबरातैं एह कही,
चाहहू मिलाप आप बुन्दीधराबरकों ॥

बहुरि हमीदखाँकी अरज यहही सुनि,
आवत शिविर प्रभू लैकैं सिकत्तरकों ॥ १०२ ॥
साहब सिकत्तर वजीर नाम डोरन१ औ,
कालविल्ल२ त्योंही हरीसन३ हलीहर४कों ॥
लार्ड अलीनबराको अमात्य मखन तोस,
समरढ६ नाम पैं कुहात सिकत्तर६कों ॥
अंसुकसदन ईस गाइव७ खुरम८ सोही,
स्यंदन सदन ईस आयो राम२०२४घरकों॥
टालबट९ आयो त्यों उमागि महिपाल पुनि,
जनरल१० जंगी ईस तजिकैं गुमरकों ॥ १०३ ॥
बैठक चउ४नको तुरंगरथ इक्क१ तापैं,
लार्ड चढि सिबिर महीपतिके आतभो ॥
एह सुनि लार्ड अलीनबराके सम्मुहकों,
जीवनसहितलाल१ सचिव पठातभो ॥
महासिंहउत्त भट धौंकल२ रु गोकुल३त्यों,
सासन भुवालकेतैं त्रिकन जातभो ॥
जाइ मिलि उक्त लार्ड साहब सहित सब,
सिबिर महीपतिके उमंगि सु आतभो ॥ १०४ ॥
शिबिका अरोहि प्रभु सम्मुह बहुरि जाइ,
मिलिकैं परस्पर लगायो सीस करकों ॥
कुसल दुहूँ२घाँ होइ साहब बहुरि कही,
भूप हम सन्निधि विराजैं बत्त बरकों ॥
सुनिकैं नृपाल लार्ड साहबके वामभाग,
वैठि रु कुसल कियो भूप सिकत्तरकों ॥
मोदसह लार्ड भूप२ मैंडकैं सिकत्तरहू,

बैठिकैं तुरंगरथ आये वस्त्रघरकों ॥१०५॥
शिविर प्रवेसि लार्ड साहब सहित आप,
संसद पधारि सब बैठे खुरासिनतैं ॥
खुरसी स्वकीया मध्य राजतीपैं बैठे अप्प,
मैंडक२हू सव्य बैठो— राम२०२१४ इनतैं ॥
वामभाग बैठो लार्ड साहब महीपतितैं,
समर जु आदि नव९ बैठे अध जिनतैं ॥
जीवन३ अमात्य हो हमिदखाँ४ वकील बैठे,
करन५ कल्यान६ आदि वीर अध तिनतैं ॥ १०६ ॥

(दोहा)

समय देस वृत्तांत चवि, करन मंत्र एकत्त ॥
शिविर अंत ए लार्ड सह, तिम मैंडक क्रमि तत्त ॥ १०७ ॥
जीवनलाल बुलाइ जहँ, अरु हमीदखां आइ ॥
कारि रहस्य इक१ नाड़िका, पुनि पहु संसद पाइ ॥ १०८ ॥
अतरपान पुनि अप्पिकैं,
शिरूपेच११२रु दुस्साल११३पुनि, जटित गिलंगी११४अप्पि१०९
मुत्तिनमय उरसूत्रिका११५, पट्टिस११६ निज पुरजात ॥
चोक स्वर्ण बलदार मय, तुपक इक१ दिय तात ॥ ११० ॥

(षट्पात्)

दंती इक११७ बन्नात सिरी कुथ सहित समप्पिय,
तुरग२१८ दोइ२ सौवर्ण वहुरि राजतखन——दिय ॥
इत दै सिक्ख सुजान बाहय डेरन लग आइ रु,
भनि भावुक प्रभु लार्ड मत्थ कर दुहुँरन लगाइ रु ॥
चढि लार्ड तुरगस्पंदन बहुरि मोदित बँगलन गमन किय,
इकबीस२१फैरनालिन अधिपकारि कटिबंध निवारिदिय१११

॥ निश्शाणी ॥

चउदसि दिन झर मेघतैं डेरन रहि पाया ॥
पुनि पुण्णिम नृप न्हानकों गंगातट आया ॥
जानि तिथि क्षय जनककी तर्पन उमगाया ॥
मज्जन करि बिधि सहित श्राद्ध द्विजदान मिलाया॥११२॥
रजनी बित्तत बान५ बहुरि डेरनपर आया ॥
सावन पड़िवा असित तत्थ प्रभु रहन उम्हाया ॥
दोजि२ दिवस नृप दत्त लार्ड शस्त्रादि भिजाया ॥
तब नृप सचिवन अक्खिकैं तस मोल कराया ॥११३॥
च्यारिसहँस४०००सत अट्ठ८००पंचन५०रौप्य मगाय॥
दै हमदिखां हत्थ लार्ड बँगलन भिजवाया ॥
कियउ नजर तहँ जाइ लार्ड लै मोद बढाया ॥
दिन चउत्थ४ दीवान शिबिर साहब छद आया ॥११४॥
कग्गर बंचि अमात्यहू सब वृत्त सुनाया ॥
उदयपुराधिप रान नाम सिरदार कहाया ॥
वृंदावन सेवन करन अग्गैं तहँ आया ॥
सो अट्ठारह१८ दिवस रहि रु परलोक पलाया ॥११५॥
पंचमि५ दिन पुनि पाइकैं चर एह सुनाया ॥
जैपुर गोकुलचंद्रमा जयसिंह थपाया ॥
सेवक वल्लभ ताहिको गुस्सांइ कहाया ॥
नंदन गिरिधर सहित उमँगि डेरन पहँ आया ॥ ११६ ॥
तब प्रभु सम्मुह तास बाहय डेरन लग पाया ॥
नमन करन करजोरि प्रीति सह सीस नमाया ॥
अंशुकसदनहि लाइ बहुरि तिन तखत बिछाया ॥
प्रभुको चोका तखततैं अपसव्य बिछाया ॥ ११७ ॥

वैठि रु चवि वृत्तांत समय दुहुँ२सन्न दिखाया ॥
नजर तीन३ किय निष्क प्रभू पट्टिस पुनि पाया ॥
चोक स्वर्णमय तास समन करि सिक्ख दिवाया ॥
बाह्य शिबिर लग बहुरि आइ तिन मुद पहुँचाया॥११८॥
वलि प्रभु डेरन प्रविसिकैँ कटिबंध विहाया ॥
षष्ठी६ दिन तिन सप्तमी७ अष्टमि८ तहँ पाया ॥
नवमी९ साहब मिलन कज्ज बांदापति आया ॥
अंल मुहम्मदजुलफक्कार नव्वाब कहाया ॥ ११९ ॥
आवत डेरन दुग्गतैं नालिन चलवाया ॥
पंच अधिक दश१० फेरहू मालुम करवाया ॥
दशमी१०दिन पुनि शिबिर भूप साहब चर आया ॥
मैंडककेर सलामहू मालुम करवाया॥ १२०॥
भावुक सहित सलाम भूपतिप्रति दरसाया ॥
एकादशि११ बाराणसी पढि द्विज इक१ आया ॥
गंधी केसवरामके सुत संसद पाया,
आव्हय सह हरवखस जो पढि नृप उमँगाया ॥ १२१ ॥
बैठक ताके गुननतैं पहु रीझि दिखाया,
द्वादसि१२ दिन बुधवार४कों चढि अश्व चलाया ॥
कोटेश्वर सिव दरस काज प्रभु पुनि उमँगाया,
करि दरसन मृडकेर बहुरि गंगाजल न्हाया ॥ १२२ ॥
नित्यकर्म करि सदर ईस इक१ निष्क चढाया,
गुन३ घटिका दिन रहत भूप डेरन पुनि पाया ॥
मक्खनतोस१ रु टालबट२ जु जात्रा सँग लाया,
पधरावन प्रभु लार्डगेह साहब दुवर आया ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

चढि तुरंग तिन सह चतुर, लार्डकेर लग जात ॥
आदि सिकत्तर मैंडकहु, अधिपति सम्मुह आत ॥ १२४ ॥

॥ षट्पात् ॥

भनि भावुक प्रभुकेर सीस कर मुदित समप्पिय ॥
प्रभु तव अप्प सु पानि मत्थ रक्खि रु सुभ अप्पिय ॥
साहब मैंडक सहित लार्डबँगलौं सु प्रवेसत ॥
उमँगि अलीनबराहु प्रभू सम्मुह तहँ आवत ॥
कर सीस परस्पर कुसल करि कमरुअंत राजाइ दुव२ ॥
खुरसीन बैठि बेला अलप हाकिम सह एकान्त हुव॥१२५॥

॥ दोहा ॥

तुच्छ समय एकांत रहि, कुसल जंपि करि सिक्ख ॥
आये प्रभु२०३ डेरन उमँगि, रक्खि हर्ष तहँ तिक्ख ॥१२६॥
चढि तरंड करि कुच्च पुनि, अमा३० तिथी दिन आप ॥
झूँसी नामक सहरहू, अंसुक सदन अवाप ॥ १२७ ॥

॥ पद्धतिका ॥

ज्यैष्ठाऽसित प्रतिपदि१ सोमवार२, सहिदादि बाद रहियत उदार ॥
करि बहुरि द्वितीया२दिवस कुच्च,विश्रामवरोटहि दियउउच्च१२८
इक रत्त सिविर चंक्रमन राम२०३, अति मुद कासीपुर आजगाम
दिय द्विजन तहाँ करि न्हांन दांन,इंग्रेजन मेलन करि दिवांन१२९
सप्तमी७धवल पुनि सुजवार१, लै क्रमन कियउ कछु भटन लार
उज्जा८ऽसित अष्टमि८जीव५आप,मुदसहित गया पत्तनमवाप१३०
करि सबन श्राद्ध तहँ भूरि दान, दै दंती अश्वादिक दिवान ॥
सह१।१०० साऽसित षष्ठी६ सौम्य२ वार, करि कुंच रहिय चरखी उदार ॥१३१ ॥
आधवल सहस्य९ पुनि दोजि२ आप, बारागासि नामक पुर अवाप

अविसदतपस्य१२सत्तमि७सआर३, राजातलाव रहि पटअगार१३२
इम करत कुच्च प्रभु२०३पुनि विश्राम, नागोध ढंग व्याहन जगाम
पुनि सुक्ला नवमी९ लग्न पाइ, व्याहिय निसीथ प्रासाद जाइ१३३
सो चंद्रभानु कुमरी स नाम, बामांग अप्प करि राम२०३ बाम ॥
अंसुकगृह आइ रु बहुरि आप, जाचकन अत्थ बहु धन ददाप१३४
नभ गगन नंद इक १९०० लगत साल, किय कुच्च मास मधु१ बलि कृपाल ॥
विश्राम कुच्च करि करि रसेस, बुंदीपुर सुभ दिन किय प्रवेस१३५

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशौ रामसिंहचरित्रे पञ्चदशो १५ मयूखः ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अभ्र गगन नव इंदु१९०० सक, अनँगतिथी१३ आषाढ ॥
पक्ख असित बुंदीस पुर, प्रविसे प्रभु गुन गाढ ॥ १ ॥
तदनंतर भट्टिप प्रथित, जैसलमेरु जनेस ॥
मूलराज बंधुन समुद, आनिय डोला एस ॥ २ ॥

षट्पात्

कन्या राउल विजयकुमारि जीवन गुनगोरिय ॥
राउल ज्ञान द्वितीय२ रिद्धिकुमरी तिम आनिय ॥
पट्टप भीम२०४।१ कुमारकेर संबंध दुहुँन भनि ॥
पोषित अक्खि रु नाग क्रियउ सतकार महिप मनि ॥
केदारनाथ शिवकेनिकट बुरजसिकारहिँ हित विजय ॥
उपवन बहोरि ज्ञानहिँ अधिप रक्खिप रूपविलास रय ॥३॥

॥ मनोहरम् ॥

ईसतिथिद उप्पर कुमार भीम लग्न काल,

ब्याहन पठायो पहु बुरज सिकारकों ॥
राउल विजयसिंह उत्त उपहार ठानि,
कन्या करग्राहन करायो कुमारकों ॥
अनल परिक्रम औ सप्तपदी आदि दैकैं,
वेदबिधि आये पुर तिहि बारकों ॥
नवमी९ दिवस रूपआदिक विलास जाइ,
ज्ञानसिंह तनया बिबाही गुरु५बारकों ॥ ४ ॥
ग्यारह सहस्र ऊन११०००लक्ख दुव२०००००रुप्पय औ,
तुरग द्विषष्टि६२ अरु कटक दुसत्त७२भो ॥
अप्प प्रभु सभ्य रविमल्ल कवि मास सुचि,
एकादसी११हूतैं बिजैदशमी१०लौं दत्तभो ॥
सुनिकैं उदंत यह जञ्चक विदेशहूके,
आये नैर बुंदी प्रभु द्रव्य अनुरत्तभो ॥
सुकवि समाज कति मिलिकैं निवाजे आप,
बाजे जस ताजे जेके बजाइकतिपत्तभो ॥ ५ ॥

॥ पज्झटिका ॥

अरु भ्रात कोटरिन करि उछाह, औ द्वादस वलि आये बिबाह ॥
सो नाम सहित सुनिये रसेस, यह भीमसिंह आय ससेस ॥ ६ ॥
सामंतसिंह कापरनिकेर, सकुटुम्ब रचिय आगम नफेर ॥
देव्यादिसिंह दुर्गापुरीस, सिवसिंह इंद्रगढके रईस ॥७॥
सकुटुंब कुमर सह अवर पाइ, आंनद अधीस पुनिराम आइ ॥
इत्यादिक आइ रु रहिय एस, आदरतैं रक्खिय सब इलेस ॥ ८ ॥
करि सभा तास सतकार जेय, दै सिक्ख ताहि दिय वस्त देय ॥
इमकरि बिबाह—राम२०३आप,मोदित किय कविबुधभटअमाप९
इहिं अब्द१९००जोधपुरके नृपाल, किय भाद्रैकादसि११मानकाल

पुरिग्राम१५दिन पैठो तखत पट्ट, थंभिय समस्त मरुराज थट्ट॥१०॥
इक बिंदु अंक ससि१९०१वर्ष माँहिं, साहब अजंट बर्टन सु आँहिं
साहब सन सम्मुह प्रभु पधारि,हुव महलन दाखिल हितवढारि११
जयवती ताल प्रासाद जाइ, उत्तरि अजंट पुनि प्रीति पाइ॥
तस सिबिर द्वितीपक २ अहन आप, किय क्रमन महीपालक मिलाप ॥ १२ ॥
उत साहब सम्मुह आजगाम, कढ़ि सीस परस्पर करन राम ॥
प्रभु किय उपबेसन तखत पाइ, उपबेसनं साहब सभ्य आइ।१३।
पुनि लैंन दैन किय अतर पान, हुव दाखिल महलन हड्ड भान ॥
महलन पुनि साहब हित अमाप, अर्जुन तपस्य षष्टीध्अवाप१४
--अभिमुख पायंदाज जत्थ, मिलि किपउ परस्पर हत्थ मत्थ ॥
तदनंतर बैठिय तखत राम, साहब सु दुलीचन रहिय बाम ॥ १५॥
बेलालप राखि करि अतर ताहि, पहुँचावन पायंदाज आहि ॥
दै सिक्ख ताहि दिय बस्तु देय, धरनीन्द्र अप्प २०३ किय जो बिधेय ॥ १६ ॥
अब सुनहु प्रभू२०३इहिं अब्द१९०१अंत, इंग्रेजन किय जो रन उदंत
ब्यासा१सतलज२रु बीच देस, आक्रमन सिखन करि लिय असेस
सय गगन निधी अरु इक १९०२ साल, तेरसि १३ तिथि भाद्राऽसित भुवाल ॥
महाराजकुमर लघु रंगनाथ२०४।२,उद्भवन भवन भव सर्व आथ१८
लाहोर ईस तिनदिन दिलीप, हुव सिष्टि कंपनी मनु महीप॥
जबकरि इंग्रेजन जुद्ध जास, नालिन तस सेना करि रु नास॥१९॥
बालि करि निरोध भेजिय बिलात, तस जननी चंदा नाम तात ॥
नैपालज अटवी रहन कीन, इंग्रेज राज्य तस किय अधीन ॥२०॥
गुन गगन अंक इक१९०३अब्द आत, भो तनय भुजिष्या जठर जात

अभिधा नारायनसिंह आइ, वय बहुरि बालय पंचत्व पाइ ॥ २१ ॥
पहु झल्ल मदनसिंहाभिधान, हायन इहिं१८०३ पट्टनि भयउ हान
तस बैठिय पृथ्वीसिंह पट्ट, बनि प्रभू चलिय सामान्य बट्ट ॥ २२ ॥
सक बेद सून्य ग्रह इक्क१८०४ आत, पट्टन दुरवंट पहु अप्प पात॥
वलि केसव उच्छव हित बढारि, सित राधमास पट्टनि पधारि२३
दर्शन करि केसवके दिवान, अक्खयतृतीय३ दिन पुनि विधान॥
उच्छव अरु पूजन करि रु आप,सब करि विधेय सिबिरहि अवाप
करि बहुरि तहाँ प्रभु न्हांनदांन, बर्टन अजंट बलि कियउ आंन॥
चर्मणवति घट्टोपरि बिछात, अधिराज प्रथम तहँ अप्प आत ।२५।
साहब सपुत्र आइउ उहांहि, अप्प२०३सु पहु सम्मुह छ६पद आँहिं
करि दुरदिस सीस कर भद्रभाखि,गालीचन साहब बाम राखि२६
बैठिय पहु गद्दी सित अवाम, अलपहि पुनि वेला रक्खि आम ॥
दैअतर पान तस सिक्ख दिन्न,क्रम छ६पद तस पहुंचान किन्न२७
राजेन्द्र राध सित नवमि९ राम, करि कुंच सु बुन्दी आजगाम ॥
सक बान गगन नव ससि १९०५ भुवाल, किय कुमर नरायन सिंह काल ॥ २८ ॥
तप असित नवमि९ दिन बहुरि तात, रसरंग सुभद्र सुकुमरि जात
इहिं साक १९०५ अधिप परतापपाल, किय नगर करोली भाद्र काल ॥ २९ ॥
सुत तास मदनसिंहाभिधान, व्है भूप चार भट कियउ मान ॥
रस व्योम अंक भू १९०६ वर्ष आहि, लाहोर इँग्रेजन लिय उमाहि॥ ३० ॥
हय गगन अंक इक१९०७ होत साल, दुग्गापुर देवीसिंह काल॥
सुत संभूसिंहसु गिनि आसिन्न, दुग्गापुर सासक अप्प किन्न।३१।
इहिं सक्क१९०७ इंग्रेजन युद्ध किन्न, नृप बर्माते कछु देस लिन्न॥

गज गगन अंक इक १९०८ आत साल, पट्टनि सु अज्ज मावसि मुवाल ॥ ३२ ॥
साहब अजंट तहँ मिलन काम, सो जानहु मारीसैंन नाम ॥
चर्मण्वति तरनी उतारि चाहि, आइय बिछात उप्परि उमाहि।३३।
प्रभु अप्प तास अभिमुख पधारि, आइय समाज बहु हित बढारि
कछु समय राखि दै सिक्ख तास, पहुँचावन पायंदाज पास ॥३४॥
हुव दाखिल शिबिरहिं हड्डमान, दिन द्वितिय२कियउ तहँ न्हान दान
करि कुंच बहुरि प्रभु अप्प राम, बुंदी पुर सत्वर आजगाम ॥ ३५ ॥
तदनंतर बीकानैर राय, पहु रत्नसिंह तज्जिग सु काय ॥
सरदारसिंह तस पट्ट पाइ, जानैं कछु प्रभुतैं हित जनाइ ॥ ३६ ॥
ग्रह गगन अंक इक१९०९आत साल,कापरनि किया बलदेव काल
सब मेटि विघ्न कापरनिकेर, महाराजा हलधर कियउ फेर ॥३७॥
रागिनि सेखावति हड्डराइ२०४, उज्जाऽसित तिन दिन निधन पाइ
बर्मा उपवर्तन नृप बहोरि, इंग्रेजन लिय इक१दुर्ग तोरि ॥ ३८ ॥
सक गगन इक्क नव ससि१९१० समात,
प्रभु मिलन अत्थ सोधन अवाप ॥३९॥
किय करन दुर्दिसकछु कुसल कारि, पुनि अप्प तखत उप्परि पधारि ॥
बर्टन गालीचन रक्खि बाम, बेलाल्प रहि रु गय वस्त्रधाम ॥४०॥
उष किय अजंट अजमेर जान, अब सुनहु वृत्त इत हुव दिवान ॥
एकादसि११आश्विन असित आत, पटरागिनि पहु पंचत्व पात४१
तदनंतर जीवाराम तात, ग्वालेरप जनकू नाम ख्यात ॥
कछु रोग पाइ तिहिं कियउ काल,सुत जीवारामसु भो मुवाल४२
सक भूमि इक्क निधि ससि१९११उदार, शुक्राऽसित दशमी१० शुक्रवार६ ॥

मदनेस झल्ल धीदा उमाह, कुमरार्जुन पट्टनि किय विवाह ॥४३॥
तहँ त्याग अमित पहु राम२०१४आप, मोदित दिवाइ किय कवि
अमाप ॥

सक इहिं१९११इंग्रेजन रूससाह,आस्कंदन जीति रु कियउछाह४४
सय भूमि अंक ससि१९१२लगत साल, आयउ अजंट मेसन भु-
वाल ॥

जयवलिय ताल उत्तरन जास, आगत अजंट महलन हुलास४५।
अभिमुख पहु पायंदाज आइ, करिको परिकर पुनि सय मिलाइ॥
उपवेसन गद्दी कियउ आप, आसन सु सव्य रहि हित अमाप४६
रहि समय तुच्छ तस सिक्खिदिन्न, पहुँचावन आदिक पुव्व किन्न
तदनंतर जानहु नरनपाल, पट्टप कुमार बंसनबहाल ॥ ४७ ॥
उद्वाह करन भेजिय इलाप, सह जन्य कुंच करि तहँ अवाप ॥
सह मास९एकादशि११बुद्धवार४,इहिं लग्नभीम२०३पट्टपकुमार४८
राउल सु भवानीसिंह धीय, अभिधा गुलावकुमरी सुहीय ॥
परनि रु बुंदीपुर आजगाम, दंपति किय महलन दिवस बाम॥४९॥
गुन भूमि अंक मृगअंक१९१३साल, किय इंदगढप सिवसिंहकाल
संग्रामसिंह हुव तास पट्ट, बनि चलिय महाराजा कुबट्ट ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

मेसन साहब मोटि अरु, बर्टन आइ बहोरि ॥
हुव अजंट हड्डोतिको, मद अरातिगन मोरि ॥ ५१ ॥
बलानाथ इहिं सक बहुरि, मोष्टासित नरपाल ॥
रंगनाथ२०४१सिंहहिं कुमर, किय नागोधहि काल ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-
सिंहचरित्रे षोडशो मयूखः॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वेद इंदु नव ससि १९१४ बरस, तपा मास सित पाइ ॥
पहु हलधर पंचत्वपन, पुरिणाम१५ दिन प्रकटाइ ॥ १ ॥
तब कापरनिय तस तनय, राजसिंह नरराज ॥
आइय बनि महाराज इत, गौरवादि सुभ काज ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रसू अप्प २०१३ जो पहु तदनंतर, उज्जा८।३सित एकादशि११ वासर ॥
जो अमानकुमरी ति जनावत, पन पंचत्व मध्यदिन पावत ॥ ३ ॥
याहि समय १९१४ सेना इंग्रेजन, अज्जावत्तज मनुज फिरे मन ॥
सत्तर७०ही पल्टनके स्वामी, साहिब रेटकप्तान सु नामी ॥ ४ ॥
सासन गोरन एह सुनायो, टोटन सिर काटन प्रकटायो ॥
तामें मेघजीन खल्लासिय, ए उदंत समग्र सु जानिय ॥ ५ ॥
इकदिन आयुधीय तहँ आइय, खल्लासी जातें दक मंगिय ॥
तबहि अदेय आयुधिक अक्खी, जब खल्लासि बात यह भक्खी॥६॥
मेद मिलित टोटन गो१ सूकर२, रद छेदन करिहो तब सत्वर ॥
जातिहु जबर पुराय फल पैहो, दक जब हमहिं पानकों देहो ॥ ७ ॥
इम सुनि चमू आयुधिक आयो, सब अज्जन वह वृत्त सुनायो ॥
तब कप्तान रेट तिन्ह मारि रु, इकदिन सर्व छावनिन जारिरु ॥८॥
ससुत मैंम साहब बहु मारे, कति भूपनके सरन सिधारे ॥
सुनि यह कोन दयो तब सासन, बाहिनि जाहु उपद्रव नासन॥९॥
सेनासहित लार्ड तब आये, कारेजन सब मारि भगाये ॥
दिल्ली साहबहादुर सानी, अधिपतिता हिंदुन उर आनी ॥ १० ॥
पकरि सोहु तब साहब भेजिय, पिंसन करि रु कपमँहँ रक्खिय ॥
तदनंतर कोटापुर स्वामी, रामसिंह२१२ महाराव जु नामी ॥११॥

कायथ जैदयाल१ तस किंकर, भो महरापखान२ अनुचित धर ॥
मैंम१ पुत्र२ सह बर्टन३ मारयो, बैभव लूटि सदन तस बारयो १२
बाहिर कोटा निजबस किन्नौं, दुःख अमित भूपति सिर दिन्नौं ॥
॥ १३ ॥
सुनि यह वृत्त करोलिय सत्वर, भेजिय मदनपाल दल भूवर ॥
पुर अंदर कछु यत्न प्रवेसिय, जैदयाल दारुन कलि मंडिय ॥ १४ ॥
कग्गर लिखि अजमेर खिनायो, महाराव अति नम्र दिखायो ॥
सु सुनि लार्ड तब –क सजायो, अति अमर्ष कोटापुर आयो॥१५॥
कतिदिन दुरदिस युद्ध तोपन किय, दुसह ताव साहब तस सिर
दिय ॥
जैदयाल१ महरापखान२ जब, सुभट मराइ तजि रु बैभव सब१६
भीरुक मनि कोटा तजि भज्जे, बंधि बिजय साहब बल बज्जे ॥
मेटि सकल बिग्रह पुर करि म्ह, साहब गो अजमेर सेनसह।१७।
सक सर भूमि नंद ससि १९१५ जानहु, पुरिशाम१५ तिथि इस७
सुक्ल१ प्रमानहु ॥
देवीसिंह पुत्ति दुर्गापुर, मृत गोविंदकुमारि अंतेउर ॥ १८ ॥
अष्टि नंद इक१९१६ हायन आवत, मैंनेजन मिलि धाटि मचावत
दुःख पंथजन बहुरि सु दिन्नों, बुंदिय मुलक धाटि बस किन्नों१९
पहु तब तापर चक्क पठायो, रहि बन रोक सु समर रचायो ॥
कतिदिन कलि करि कतिक पलायन, कतिक नयारि चक्क कि-
य आवन ॥ २० ॥
हय भू अंक इक्क १९१७ मित हायन, फग्गुन१२ असित२ त्रयोद-
सि१३ पावन ॥
यन१ वन२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
प्रतिहारी किय महिषि उद्यापन, तापर लिखि रु निमंत्रित भूधन२१

कवि रविमल्लहिँ दियउ कृपाकर, बलि भूदेवहिँ बित्त दियउ बर
तिनदिन भोमसिंह२०३तदनंतर,लागो चलन कुमग्ग अनयकर२२
बिगरन राज्य उपाय सु बलि किय, मीनैं मनुजहिँ सरन अमित दिय
जब प्रभु अप्प इहाँतैं सुभजन,भेजिय भोमसिंह२०३समुझावन२३
जाइ रु तिन प्रति नय समुझायो, इक्क न वृत्त तास उर आयो ॥
उत्तमांग बिनु नक्क कहिय इम,कहो बिचारि ललित लग्गैं किम२४
इम सुनि सब बुंदीपुर आये, तास उक्त सब वृत्त सुनाये ॥
सुनत गहन मैंनन मारन सन, भेजिय चक्क गाठपुर भूधन ॥२५॥
ग्राम घेरि मैंने इन मंगिय, नहिँदै कहि रु भोम२०३ रन मंडिय ॥
जब कुमार अर्जुन कलि किन्निय,दुसह ताप तोपन तससिरदिय२६
कतिदिन कलह भोम २०३ गोलिन किय, भीरुक बनि रजनी बलि भग्गिय ॥
नृप २०३ तस ग्राम सकल जब छिन्निय, कुमर सचक्क आगमन किन्निय ॥ २७ ॥
बसु बसुधा निधि इंदु१९१८अब्द मित,आवन किय बेलन अजंट इत
पुव्वरीति सम्मेलन पहु किय,दृढ दिखाइ पुनि प्रीति सिक्ख दिय२८
तदनंतर इहिँ सक१९१८इंग्रेजन, किय अजमेर नन्हजी पकरन॥
पुनि सु बिठूर भेजि गल अप्पिय, बोये बीज तास फल पक्किय२९
बाजेरायज एह बखानिय, मिलि कारन कलि नन्ह प्रमानिय ॥
बलि बलोद संग्रहि संन्धारन, सोपुरपतिहिँ दयो इंग्रेजन ॥ ३० ॥
सक इहिँ बहुरि उदयपुर सासक, सिंहस्वरूप नामहुवनासक ॥
संभूसिंह पट्ट तस पावत, जे अक्करथन रीति जनावत ॥ ३१ ॥

[दोहा]

संबत इक्क निधि अंक ससि१९१९ तेरसि१३तैस१०रु स्याम
श्रीगङ्गोदक क्रम स्रवन, राजराज किय राम२०३।४ ॥ ३२ ॥

श्राद्धादिक सब वेद विधि, पहू अप्प कर कारि ॥
सुभ मुहूर्त उडुदुर्गतैं, रहि केदार पधारि ॥ ३३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुत सहित ---- पडवा१पयान, दुबलान प्रवेशन किय दिवान ॥
मौजिम्य भ्रात त्रिक३ कियउ आन, ॥ ३४ ॥
अह बहुरि तृतीया३ आर३ वार, सो दिवस भयो प्रभुकोऽवतार ॥
करि पूज नवग्रह आदि केर, पटवास नयनपुर बेसि फेर ॥ ३५ ॥
रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, आहूत सभा भटवर असेस ॥
लै लंचा सामाजिक समाप, अंसुकअगार दै सिक्ख आप ॥ ३६ ॥
सितपक्ख पंचमी५ दिवस आत, पहु दियउ समीधी दल प्रयात ॥
विश्राम करत चोरू वलाप, तहँ सुजन टोंकपतिके अवाप ॥ ३७ ॥
दोलांत वजीर सु पहु नवाब, सुभ छद लै आये दुव२ सिताब ॥
सु अजीटरा अबदुल समनखान, विष्णुप्रसाद कायस्थ वान ॥ ३८ ॥
सामाजिक किय दुव रचि समाज, करि नजर अरज कियहद्दराज
पहु मामकीन आधिराज एह, नाणक रू सहस्र १००० नय करि
सनेह ॥ ३९ ॥
कंडोल हारहूगादि केर, मिष्टान्न एक शत १०१ नियन फेर ॥
महिमानिक लंचा लेहु लार, धरनीन्द्र अप्प उंछद-धार ॥ ४० ॥
उडुनाथ उदित रस६ घटि अवाप, दै सिक्ख उज्झि पर्यारित आप ॥
पुनि दुरहुँन सभा बुलवाइ प्रात, सिरुपाव दियउ छदहित दिखात ४१
चंक्रमन सप्तमी७ चाहुवान, आमिल माधवपुर कियउ आन ॥
तस नाम जवाहरमल्ल१ तात, अरु नायब बाजूलाल२भ्रात ॥ ४२ ॥
तिम नायब जन मनसुख३ तृतीय३, तित मुनसी नारायण४तुरीय ॥
ए सम्मुह आये अद्धकोस, सुभ अरज नरतरकि गत सतोस ॥ ४३ ॥
हुव दाखिल पटगृह हद्द भान, पहु किय मिलान अष्टमि पड़ान ॥

नवमी९ दिनेस पुनि किय पयान, डुंगर मलारनें किय मिलान४४
पदऊन कोस तँहँ पुनि नृपाल, आइय बिश हाकिम रामलाल ॥
सुभ अक्खि नजर करि तिमसलाम,रहि तहाँ रत्ति धरनीन्द्रराम४५
वाटोदै दशमी१०दिन सुजात, पुर परिसर पन्नालाल आत ॥
लैं लंचा सुभ तस अक्खि आप, अधिराज बहुरि पटगृह अवाप४६
उग्गत एकादशि११ सौम्यवार४, जावत खुसालगढ पटअगार ॥
आइउ द्विज आमिल अद्धकोस,सिवदीन सु लंचा किय सतोस४७
अंसुकअगार पुनि अप्प पास, सिवदीन पुत्त नारायनाऽऽस ॥
रहि द्वार कराइय अरज जोहि, व्है हुकम सरबराकेर मोहि॥४८॥
तापैं पहु अक्खिय तावकीन, है रीति इक्क१ हम लिपउ तीन३ ॥
हमरें रु परस्पर एकबत्त,अब जानी यह तुम अप्रमत्त ॥ ४९ ॥
इम सुनि रु कराइय अरज एस, सामग्री किय पुब्बहि असेस ॥
सब पुब्ब माफ करिहे सुसंध, व्है हुकम ततो दैहाँ प्रबंध ॥५०॥
सासन दिय सो सुनि पुनि रसेस, तब दियउ सरबरा दल असेस
आवत अंतेउर गढकुसाल, मच्छीपुर जेमन कियउ काल ॥५१॥
मच्छीपुराप बलवंत आइ, करि नजर पुहप कंडोल काइ ॥
किय नजर सबिबी अप्प केर, प्राभृतक कियउ महिषी सु फेर५२
बैतनिक१ वाहुभवर जोहि सत्थ, सतच्यारि४०० सग्धि करवाइ तत्थ ॥
अंतेउर बेसिय शिबिर आइ, पहु रहिय तहाँ इम रत्तिपाइ ॥ ५३ ॥
करि कुच्च द्वादशी१२दिन दिवान, पीलोदै पुनि हुव शिबिर आन ॥
तस सार्द्धकोस आमिल सुहात, श्रावक सुहि चुन्नीलाल आत५४
किय वलि वजीरपुरकेर आन, आमिल्ल सु उदयचंदाभिधान ॥
लै भेट तास दै सिक्ख आप, अंसुकअंगार पहु पुनि अवाप॥५५॥
हिंडोंनि पात तेरसि१३ अनंद, आमिल बहोरि गुलआवचंद ॥

करि पावकोसलग नजर आइ, तहँ फैर रुद्र११ तोपन कराइ॥५६॥
लै सिक्ख गयो हाकिम सतोस,पहु कियउ शिबिर आगम प्रदोस
हिंडौनितैंहि सब सेन माँहि, इंधन तृनादि अरु भांड आँहि ॥५७॥
तहँ रहत चतुर्दसि१४ धरनिकंत, आमादसलेमाकेरहंत ॥
नामसु——————————, गोपेश्वरसरणा सु देवराव ॥ ५८ ॥
अधिकारि नरायनदास आइ, रहिद्वार मिलन बिन्नति कराइ ॥
तब कहिय अप्परविचाहुवान,मान्योहम पुरिणाम१५मिलनमान५९
पुरिणाम१५ सर४ नाड़ी चढि पतंग,अधिराज मिलन हंकिय उमंग
पटगृह गोपेश्वरसरणापाइ, अधिराज नमन करि भेट आइ ॥ ६० ॥
रहि पहर इक१धरनीन्द्र राम२०३१४, अंसुकअगार पुनि आजगाम
तप असित द्वितीया२दिन दिवान,सूरैट माहिप दिय लिमनिलान६१
तिथितीज३वपानें किय मुकाम, हाकिम तस आगल मिलन राम
बलदेवसिंह तस नामधेय, इककोस आइ सम्मुह अजेय ॥६२॥
मातुल सु भरतपुर महिप केर, ताजि तुरग नजर करि गयउफेर ॥
रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, नाड़ी१इक१रहतहि अहन सेस॥६३॥
तत्रस्थ सुजन पटद्वार पाइ, पक्कान्न द्व्यंक९२मन भांड लाइ ॥
सरसतक५००बहुरि नाणकन सत्थ,माहिमानिक सामग्री समत्थ६४
मुदपाइ पहू यह मामर्कान, भेजिय सु अत्र इम अरज कीन ॥
राक्खिय सु सर्व सो सुनि रसाप, इम लंचा लै दे सिक्ख आप६५
तिथि नाग५दिवस तहँ मोद पाइ, साहब सु मिठाई मिलन आइ॥
ताजि तुरग सभा करतहि प्रवेस,सम्मुह हिरपैंड क्रमकारि जनेस६६
बलि करत सलाम सु हित बढारि, तब तास तत्र टोपी उतारि ॥
सँल्लाप दु२दिस हुव सब बहोरि,एकांत करन कहि सुभटओरि६७
बाहिर उपवेसन करिउ सर्व, रहि अप्प मंत कारन अखर्व ॥

बलि भीम २०४१२ कुमर पट्टप भुवाल, बहुरा अमात्य जविन सु
लाल ॥६८॥
करिसंग उक्त सबही समेत, हुवर याम बजत तिहिं सिक्ख देत ॥
छट्ठी६ दिन चढ्ढत एक्क जाम, बलदेवसिंह पहु दरस काम ॥ ६९ ॥
हाजरि हुव संसद करि सलाम, करि नजर निछावर मिसल बाम
उपवेसनकिय अध सुभटतीन३,कछुसमय१बत्त शास्त्रोक्त२कीन७०
तत जाम उपरि बज्जत तृतीय३, सिरुपाव सिक्ख दै गनि स्वकीय॥
बलि आइ करोली जादवेन्द्र, सो मदनपाल मेलन रसेन्द्र ॥ ७१ ॥
बलि होत सप्तमी७ सोमवार, अधिराज अप्प सम्मद अपार ॥
रवि चढत जाम इक१ राजराम, किय क्रमन शिविर तस मिलन
काम ॥ ७२ ॥
तजि तुरग प्रवेसत तहँ भुवाल, अभिमुख तब आइय मदनपाल ॥
मिलिकरि रु परस्पर हत्थ मत्थ, तत मेलन खंधा जुट्ट तत्थ॥७३॥
मिलि बहुरि महाराज सु कुमार, पूर्वोक्त रीति करि सब अपार ॥
इम दुवरहिं गद्दिकाउपरि आइ, पहु अप्प रहे अपसव्य पाइ॥७४॥
आत्मीय सुभट रहि तिम अवाम, पुनि मदनपाल बैठिय सवाम ॥
वामजु तस रक्खिय सुभट सर्व,दुहुँ२ओर भयो इम सभा पर्व॥७५॥
सारीर बत्त समयानुसार, करि क्रमन किय्उ पहु मुद अपार ॥
पहुँचावन आइय मदनपाल, डोढीलग पूषा मध्यकाल ॥ ७६ ॥
सप करि रु परस्पर बहुरि सीस, स्वस्थान गयो जादव सुधीस ॥
उपवेसन सिबिका अप्प आत, दस सत्त१७फेर नालिन करात७७
पहुअप्प सिबिर आइय प्रजेस, नाड़ी इक१ रहतहिं पुनि दिनेस ॥
पहु मिलन सुभट सहमदनपाल, आत्मीय शिविर आइउउताल७८
नरयान छोरि पटद्वार पात, सम्मुह तहँ सत्वर अप्प आत ॥
सप दु २ दिस बहुरि हुव सीस रक्खि, अधिराज दुवरहि आमोद

आक्खि ॥७९॥

उपवेसन किय दुवरतखत आइ, पहु अप्प रहिय तहँ सव्य पाइ॥
पट्टप कुमार तहँ भीम२०४।१ तात, अरु कुमर दुवरहि भौजिष्य भ्रात ॥ ८० ॥
सुभट जु बलि आत्मक रहि सु बाम,रक्खिय सु महामात्रादि राम
सम्मुह सु सर्व कवि बुधन छल्ल. मिश्रन कवीन्द्र तहँ अर्कमल्ल८१
लालित्य यावनी अमृतलाल, नीती सुहु संकर मुकटलाल ॥
तलाल१ टलाल२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इम राखि सर्व अप्पन सुवाल, अपसव्य रहिय पुनि मदनपाल८२
अपसव्य चारभट तास रक्खि, अरु उचित समय वृत्तांत आक्खि॥
निस जात घटी लप३ सीख दिन्न, पहुँचावन पूब्ब रीति किन्न८३
उपवेसन किय नरयान आइ, दससत्त१७ फैर नालिन कराइ ॥
आमोद दुहुँन इम रहि अपार, पहु मदनपाल गत पटअगार८४
उग्गत सु अष्टमी८ दिन दिवान, किय गाम नभेरै शिबिर आन ॥
नवमी९ सु भासकर बुध मिलंत,किय शिबिर फतेपुर धरनिकंत८५
कायस्थ सु हाकिम गुरुदयाल, इक१कोस आइ सम्मुह नृपाल॥
प्राभृतक निछावर करि सलाम,पहु अप्प सोहु गय उचित धाम८६
दसमी१० दिन मंडा कर मुकाम,द्वादसि१२खंदोली बलि विश्राम॥
पुनि गाम सैदआबाद पाय, हुव शिबिर चउद्दसि१४हड्डुराय ॥८७॥
करि कुच्च अमावासि३० सोमवार२, हुव दाखिल हतरस पटअगार
सित पड़िवा१मंगल३दिन दिवाप, बलि काचकेर नगरै अवाप॥८८॥
बुधवार४द्वितीया२ दिवस पाइ, किय गाम सिकंदर शिबिर जाइ ॥
मोहन पुर चौथी४ दिन मुकाम,बलि कासगंज पंचमि५विश्राम८९
छट्ठी६दिन सूकरछेत्र पाइ, किय धारा गंगा शिबिर जाइ ॥
आप्लव करि सूकरछेत्र आप, करि भेट छपाधारा मवाप ॥ ९० ॥

कारि सवन पूर्णिमा १५ दिन दिवान, नाग १ रु गो २ बाजी ३ छिति ४ नृजान ५ ॥
उष्णीष आदि सिरुपेच सत्थ, दिय दान सु गंगागुरुहिं तत्थ ॥९१॥

॥ दोहा ॥

गंगागुरु गोविंदकों, चाढि रु गज चहुवान ॥
दै पट संभूनाथ गुरु, आरुहि अस्व बिमान ॥ ९२ ॥
बह्मसदनके द्वारतैं, इम दुव २ गुरुहि चढाइ ॥
महिपति राजकुमार सह, पहुँचावन तस पाइ ॥ ९३ ॥
गुरु नारिन दै वस्त्र गुरु, पिन्नस रथ सु बिठाइ ॥
इक निसान सादी कतिक, दै तस सद्म पुगाइ ॥ ९४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे   सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

प्रतिपदि १ फग्गुन असित पुनि, गंगधार तजि गेय ॥
मोहनपुरहि मुकाम बलि, सब कारि बेद बिधेय ॥ १ ॥

॥ मनोहरम् ॥

करत पयान श्रीदिवान राम दूजीरतिथि,
गाम कांचनगरसो सिविर सुहातभो ॥
बहुरि तृतीया ३ सुक्रवासर बलापतिहू,
सैदाबाद आइ सुभ थूलन तनातभो ॥
फग्गुन चउत्थि ४ स्याम सहादरै धाम राखि,
अकबरनैर षष्ठी ६ दिवस दिखातभो ॥
साहब अजंट नाम बेलन १ ब्रुरुक २ द्वैरही,
सम्मुह दिवाप चढें नाडी गुन ३ आतभो॥ २ ॥
कारिकैं सलाम औ परस्पर भविक भाखि,

साहब सहित अप्प डेरनलौं जाइकैं ॥
अकबरनैर गये साहब दुरसिक्ख लैकैं,
अप्प प्रभु सिविर प्रवेसे हरखाइकैं ॥
एकादशी११ मंदवार जाम जुगर बज्जतही,
हूतीहु पधारे लार्ड साहबको पाइकैं ॥
बेलन अजंट औ सिकत्तर द्वैर साहबहू,
सम्मुह दसक१० अप्प डेरिनलौं आइकैं ॥ ३ ॥
जातहि समीप लार्डसाहबके बस्त्रधाम,
आये द्वैर सिकत्तर न जानें ताके नाममें ॥
रजीडन्ट आयो पुनि साहबहू लारनस,
लैगये पहूकों लार्ड साहबके धाममें ॥
दी आनरेबल दी अर्ल आफ ऐलजिन,
आयो ऊठि सम्मुह त्रि३पैंड मेल काममें ॥
सीस कर करिकैंहू दुरदिस संलाप श्रेप,
बैठे पहु संसद जु लार्ड नहि आममें ॥ ४ ॥
समय अतीत तहँ करिकैं कितोक आप,
कालोचित्त बत्त करी राजराज रामनैं ॥
अतर लगाइ पान दैकैं सकुमार लार्ड,
उट्ठि दिय सिक्ख धर्मधारकके धामनैं ॥
होत असवार लार्डकेर तहँ तोपनके,
सप्तदस१७ फैरहु कराये नेह नामनैं ॥
पाइ इम लार्ड प्रीति अंसुकसदन आइ,
उज्झ्यो कटिबंध पौं अतीत जुग जामनैं ॥ ५ ॥
आर३वार असित चउद्दसि१४ तपस्य दिन,
बेलन अजंट आये पहु पधरानकौं ॥

अरुहि अजंट उक्त अप्प पहु अस्वरथ,
सेना सह त्वरित पधारे लार्ड थानकों ॥
पट्टप कुमार भीम२०४१२ अर्जुन रु गोवर्द्धन,
जगन्नाथ वावातिक अंतः प्रविसानकों ॥
जीवन अमृतलाल वीर बलवंत भट्ट,
सत्थलै दिखायो अपसव्य चहुवानकों ॥ ६ ॥
तखत बितस्ति इक्क१ उच्चक बिछाइ तापैं,
जातरूप जटित लगाइ खुरसी जहाँ ॥
बैठिकैं बुलाये लार्ड भूप रजवारेकेर,
सव्य अपसव्यहू बिठाये क्रमतैं तहाँ ॥
बेगम भोपालकी१ अपसव्यहू बिठाई पुव्व,
सन्निधि सिकत्तरो२पवेसन करयो वहाँ ॥
असि तास हेठ ग्वालियरको नरेस जीवा३,
आसन अजंट कह्यो अप्प४को पहु चहाँ॥७॥
भरतपुरेस५ भूप अप्प अध बैठो इम,
महाराव कोटा राम६ तातर बिठायोहै ॥
उत्तर अधीस७ अलउरको बिठायो तहाँ,
तास अध टौंकके नबाब८ थान पायोहै ॥
झालाकेर पट्टनिको राजराना पृथ्वीसिंह९,
रामपुर नबाब१० उत्तरोत्तर गायोहै ॥
ओंक अधिराज अपसव्य लार्ड बैठो सब,
जानहु जनेस अब सव्य क्रम आयोहै॥८॥
जैपुरजनेस राम१ आसन सु सव्य कारि,
रजीडंट लारनस२ईस रजवारको ॥
इतर अजंट३ औ सिकत्तर४ सु संसद्दाम,

राम नरनाह जानूं सर्व सुभ कारको ॥
दच्छिन जो सर्व रजवार भूप पीछैं तास,
आत्मज श्रो भ्रात उपवेसन सुढारको ॥
जाके पिट्ठि सुभट श्रो सचिव वकील स्वक,
ऐसैं करि आमकह्यो धामजयधारको ॥ ९ ॥
राखिकैं कितेकवेर संसद बहुरि लार्ड,
सिरोपाव१ दत्तभो सु माला मुक्तानकी ॥
अतरमगाइ लगाइ जु उत्तरोत्तरहू,
उट्ठिकैं दियउ सिक्ख सर्व निज थानकी ॥
अस्वरथ आरुहि स्वकीय क्रमैं भूप थान,
आरुहि तुरंगगति शिविर चुहानकी ॥
रहत दिनेस सेसनाड़ी कृत४ अप्प२०३।४पहु,
उज्झिय पर्यस्तिका विसेस करि तानकी ॥१०॥
दरस३० दिनेस सौम्य बासर बहुरि लार्ड,
मध्यदिन शिबिर पहूके आसु गाइकैं ॥
अंसुकसदन द्वारउज्झत तुरंग रथ,
सम्मुह क्रमि रु ताहि मोद दरसाइकैं ॥
भविक भनाइ भनि संसद सलार्ड जाइ,
वैठिकैं सुविष्टर उदंत कछु पाइकैं ॥
सिरोपाव१ स्तंबेरम२ सप्त६ सब लेंचा लै रु,
दै लै सिक्ख लार्ड गयो सम्मद जमाइकैं ॥ ११ ॥
द्वादसी८२ रहत नाड़ी नयन२ दिनेस सित,
आगरा किलहर चरून मेल आयोहै ॥
जीवन सु अंत लाल आदिक समाजी लोक,
सहित मजेस२०२।३ ताहि विष्टर विठायोहै ॥

समय उदंत आखि रक्खिकैं कितेक बेर,
संक्रम चुहान साहबकों दरसायोहै ॥
जामिनी जुगल२ जात नारीजन नाथ अप्प,
आरुहि क्रमन काज बलन बढायोहै ॥ १२ ॥
सिबिर बरोदै सावरोध गाम गेसै आइ,
बासर सु तेरसि१३ फतैपुर बितायोहै ॥
चतुर्दसी१४ चंदवार४ नभेरै मुकाम करि,
शिबिर बयानै राका दिवस१५ सुहायोहै ॥
पड़िवा१ – अर्जुन२ अधीस२०३।४ इम मधु१ आम,
गाम – सूरैट धाम स्वजन –नायोहै ॥
मंदवार७ दूजी२तिथि हड्डन अधीस इम,
रहत हिंडोनी ब्ल थूल तनवायोहै ॥ १३ ॥
करोली मदनपाल भूपके प्रसस्त जन,
सुभट अमात्य आये पहु पधरानकों ॥
अभिधा औंकार१ औ मलूकपाल२दोलसिंह,
मंत्री बलदेव ४ ए बलदेव सभा थानकों ॥
मुजर औ नजर निवेदि लै मिसल कह्यो,
भावुक भनायो भूप जादवके भानकों ॥
बहुरि कहिय एह अनुकंपा करि––,
ओमिति करोगे तूर्ग सवलक आनकों ॥ १४ ॥
अंगीकार तास अरज कारि तृतीया३ दिन,
शिबिर वरोदाको कृपाल करवायोहै ॥
दिवस चतुर्थी४ क्रमै अस्व जु सवार इतैं,
भूप मदनेस उतैं अभिमुख आयोहै ॥
कोस इक१ तटिनी करोलीतैं उतरि नीर,

आइ अश्वाक ढाढो रहि रु जितायोहै ॥
वावा ता कुमार नाम अर्जुन रु गोवर्द्धन,
जगन्नाथ मुत एस भावुक भनायोहै ॥ १५ ॥
महाराजकुमार पधारे पुनि भीमसिंह२०४१२,
अस्ववार अप्प२०३१४ मिले मदन प्रजापतैं ॥
दुहुँओर मुजरा स्वसीस सप भव्य कारि,
चंक्रम चुहान करयो सव्यक जु आपतैं ॥
उतरि नदीज जल उभय२ बिछात आइ,
गद्दीकोपवेसन ससव्य मुद मापतैं ॥
आप अपसव्य प्रभु रहिकैं विराज तहाँ,
पट्टप कुमार२०४१२ बैठे पच्छिम मिलापतैं ॥ १६ ॥
सुभट स्वकीय बलवंत राष्ट्रकूट पुनि,
जीवनादिलाल द्विक सम्मुह बिठायोहै ॥
बालूर दिवान औ औंकारपाल२ अनपसव्य,
सव्य रहिकैं कितेिबेर मनन मिलायोहै ॥
अस्ववार होइ दुव२ भूपन क्रमनक्रम,
सुभट समाज ओर पुव्वक्रम पायोहै ॥
नगर करोलिके समीप भो शिविर तहाँ,
प्रभुके प्रवेसतैं जु वदन उम्हायोहै ॥ १७ ॥
सेस दिव तत्व५ नाड़ी रहत करोली भूप१,
बिप्र बलदेव द्वार नायक पठायोहै ॥
पक्क एक अन्न चत्वारिंश४१हूके भाड पुनि,
पंचशत५०० नाणक सनेह दरसायोहै ॥
नजर निवेदि भव्य भाखिकैं जुहार जिम,
पाइकैं परागत प्रवृत्तपन पायोहै ॥

तीन३ अग्ग त्रिशत३०० टकेनभर सेर इक्क१,
पक्क अन्न सेना सब्बन प्रति दिवायोहै ॥ १८ ॥
पंचमी५ दिनेस सेस रहतहि नाड़ी च्यारि४,
महल पधारे अप्प मदन भुवालके ॥
महाराजकुमर सु नाम भीमसिंह२०४१२ बलि,
अर्जुनादि भ्रात तीन३ वावा ता नृपालके ॥
प्रासादन द्वार जात सेन सह हड्डइंद,
सत्तदस१७ फैर सु कराये अपनालके ॥
अंदर जु चोक लग जातहि मदनपाल,
अभिमुख आयो अधसीढिन सुजालके ॥ १९ ॥
करिकैं करन सीस दुरदिसही मद्र भाखि,
सव्य सातमी – पहु धारे संसदामैं ॥
स्वीय सुभटालि सर्व वामहिं बिठाइ राम२०३१४,
आप अपसव्य राखि बैठो तखतामैं ॥
पहुपकुमार भीम२०४१२ और शिवदान भ्रात,
अप्प२०३१४ दिस बैठे बीच गद्दिका अवाममैं ॥
सुभट स्वकीय अन्य संहति सचिव सर्व,
ऐसैं आम बाम रची सभा सुख धाममैं ॥ २० ॥
करिकैं कितोक काल नरप अतीत तहाँ,
हड्डइंद२०३१४ सिक्खलै पधारे निज थानकों ॥
मंजु क्रम तुरग अरोहन अधिप उहाँ,
पुव्वक्रम जादवेन्द्र आयो महुवानकों ॥
आरुहि तुरंग द्वार प्रासादन बाहिरात,
सप्तोत्तर दसक१७ कराये फेर जानकों ॥
जावन गुनक३ घटी बहुरि नरेन्द्र राम२०३१४,

नेह करि प्रबल प्रवेसे सिविरानकों ॥ २१ ॥
सप्तमी७ दिनेस पंच५ रहतहि नाड़ी सेस,
करोली मदन भूप स्वीय शिबिरायोहै ॥
अंदरके द्वार लग वीरन सहित आत,
हड्डन अधीस तास सम्मुह सिधायोहै ॥
सोलह सहित इक्क१७ नालिन कराइ फैर,
अप्प दच्छि नासा तख्त उपरि बिठायोहै ॥ २२
अनेह अतीत घस्र करिकैं सिधायो सिक्ख,
पुब्ब लग द्वार अप्प आयो पहुंचानकों ॥
बाहिर शिविर द्वार आइ नरयान चढि,
जादवन नेता गयो जेता निज थानकों ॥
अठ नव१७ फैर स्वीय तोपन कराइ पुनि,
आगत अधीस२०३४ सभा बिहित बिधानकों ।
आदमीय सेना काज महीप जु सब अन्न,
पिष्ट आदिक समस्त बस्तु —— दानकों ॥ २३ ॥
ऐसैं राखि दशमी१० निसालग मदनपाल,
सिक्खदैन एकादशी११ थूल स्वक आयोहै ॥
ताजिकैं तुरंग द्वार अंदर प्रवेस पात,
सम्मुह तहांही अप्प आवन रचायोहै ॥
संसद पधारि सव्य रहिकैं वहुरि आप,
भद्रासन ताहि अपसव्य बिठवायोहै ॥
एम क्रम तास आस सुभट समाज स्वीय,
पाइकैं प्रवृत्ति पहू प्रीतिपन पायोहै ॥ २४ ॥
मदन महीप गेह सिक्खदै स्वकीय गयो,
कुच्च सर५ जात नारी रति करवायोहै ॥

गाम कुर१ आइ थूल राखिकैं द्वितीय२ दिन,
काम तिथि१२ धाम खुसहालगढ२ पायोहै ॥
अमावासि३० अनेह संक्रमन चुहान करि,
वाटैदै३ वलाप चक्र पत्तन करायोहै ॥
पड़िवा१ वलच्छ काव्य बासर बहुरि राम२०३१४,
ग्राम कमलारनैं४ सु शिविर सुहायोहै ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बलानाथ अथ पुब्ब सम, करि इम कुच्च मुकाम ॥
नवमी९ पुष्प तड़ाग निस, समुचित कियउ स्वधाम ॥ २६ ॥
लीबीनामक दूरवा, चउदसि १४ दिन चहुवान ॥
सिंहअंत सिरदारके, उपवन किय थुल आन ॥ २७ ॥
राध२ श्याम सित१ दोजि२ दिन, वलज उदीचि विसाइ ॥
मग्गराज छलकमहल, हुव दाखिल हरखाइ ॥ २८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे अष्टादशोमयूखः ॥१८॥

॥ दोहा ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सिविर लार्ड आगम सुनत, जीवनलाल जनेस ॥
सोदर अमृतलाल सह, अभिमुख भेजिय एस ॥ १ ॥
सम्मुहजाइ रु लार्ड सन, मिलि करि इन मनुहारि ॥
सिविर द्वार लग तस समुह, प्रभु पुनि अप्प पधारि ॥ २ ॥

(पद्धतिका)

कर सीस परस्पर करि मिलाइ, अधिराज सभा सह लार्ड आइ ॥
विष्टर सु लार्ड राजत बिठाइ, उपवेसन वाम सु अप्प पाइ ॥ ३ ॥
प्रभु हेठ्ठ बैठि पट्टप कुमार, अर्जुन लि३ बंधु बैठे उदार ॥
तदनंतर बैठिय सुभट सत्थ, पुनि सम्मुह जीवनलाल पत्थ ॥ ४ ॥

नागोध नवमि९ पगगृह पधारि, भेजिय उन सेवन हित बढारि॥२८॥
सित सुक्र दसमि पुनि सुक्रवार, साद्धिय सु लग्न पट्टप कुमार॥
बलि वीरसिंह तस२०४०याहि साथ, करग्रहन भिन्न किय जगन्नाथ
इनमाँहिं राघवेन्द्राभिधान, कन्या स्वकीय दुव२ भीम२०४ दान॥
सो सुरजभानु कुमरी गरीय, दिय तेजभानुकुमरी द्वितीय३॥३०॥
सुचि४असित२त्रयोदशि१३आरवार३,—तकुन ग्रामठक्कुरउदार २०३
हरवंशराय तनया सु ब्याहि, सुभ नाथकुमारि प्रभु अप्प०याहि३१
सुचि४सुक्ल१पंचमी५सुक्रवार६, करि कुंच सिंहपुर रहि उदार२०३
इम चलत मुकामनकरत आप, हिंडोन हक्क अधिपति२०३अवाप३२
महिपाल करौली मदनपाल, उत्तम जन भेजिय तहँ उताल॥
सो जानि सभा करि लिय बुलाइ, आहूत मलुकपालादि आइ॥३३॥
गौरव प्रभु मुजरा करत किन्न, करि नजर निछावरि अरज किन्न
जय मदनमोहन—जन स्वकीय,कहि करहु सदन सुभ अस्मदीय३४
कर उत्तमांग करि अधिप आप,इहि क्रमन अखिल सीख सु दवाप॥
प्रोष्ठा६ऽर्जुन नवमी९करि प्रयान, विश्राम वरोदहि दिय दिवान।३५।
चंक्रमन करि रु दशमी१०चुहान, इक१ —— करौलितैं दिवान॥
अहिफेन बेल रहि लिय नृपाल, प्रभु सम्मुह आगत मदनपाल३६
मिलि करि रु परस्पर हत्थ मत्थ, उत्तरन बहुरि हुव दुव२हितत्थ॥
मिलि दुव२हि वच्छतैं उर मिलाइ,उपवेसन किय घटि अद्धपाइ३७
अधिराज प्रीति सह पुनिअभिन्न, नालकि उपवेसन इक१किन्न॥
अरु मिलि दुरसेन मुदजुत अमाप,वसनौक करौली दुव२अमाप३८
तहँ घटी इक१ रहि पुनि उताल, पुरमति किय जावन मदनपाल॥
रहि दिवस तिथी१५ तहँ इह राम२०३, कुरगाम नाम चलि किय मुकाम॥३९॥
इम करत कुच प्रभु पुनि मुकाम, जनपति बुन्दीपुर आजगाम॥

कोटेस राम २१२ इहिं१९२३ साक माँहिं, अरु राध२ चउदसि १४ सुक्ल आँहिं ॥ ४० ॥
महिपाल सोहु कछु गद ममार, तस पट्ट पंचसिख सुदत धार ॥
सो सत्रुसल्य२१३इहिं नामख्यात,सुभ दिन भद्रासन तिलकपात४१
साहब सुहृत इंडन सनाम, कोटेस२१३ हिं टीका देन काम ॥
आगतइह जावत तहँ उताल,क्रियक्रमन तास अभिमुख कृपाल४२
सल्लाप भव्य सय करि रु सीस, आगमन ससाहब किय अधीस
पुनि सिंहचतुष्पथ प्रीति पाइ, दै सिक्ख तासप्रासाद जाइ ॥ ४३ ॥
आरामरत्नसाहब अवाप, अंसुकगृहसाहब जाइआप२०३ ॥
उपवेसन खुरसिन कियउ जास,समयाल्प रहि रु दै सिक्खतास४४
अधिराज कियउ प्रासाद आन, साहब किय कोटा द्रंग जान ॥
माघा११ऽर्जुन एकादसि११मिलंत,मथुराहुवभ्राता भोम२०३अंत४५

इतिश्रीवंशभास्करे　　एकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

सक बिक्रम जिन नंद ससि १९२४, अमा३०रु चैत्र अनेह ॥
भोमसिंह२०३भ्रातृज भुवप२०३, आइ विश्वेश्वर२०४एह॥१॥
काढि दिवस आराम कति, प्रभुके लग्गिय पाय ॥
तबहि स्वकर सिर फेरि तस, लिन्नों क्रोड़ लगाइ ॥ २ ॥

॥मनोहरम्॥

विश्वेश्वर२०४।१सिहकों विसासि रु आधिप आप२०३,
प्रत्यह कराये वेद४ नाग८ क असनकों ॥
राखी कछु भिन्न पुव्व रीति सु महर करि,
पुव्व जो हवेली सोहु तास२०४ दै रहनकों ॥
व्याकरन आदि शास्त्र अध्यापक मेलिह वलि,

दिनप्रति दूनी करि बुद्धिहु मननकों ॥
बहुरि नागोध दंग करिकैं विवाह ताकों,
नयो ग्राम नाम राम२०३ वाम दै बसनकों ॥ ३ ॥
मास नभ५ धवल१ चउद्दसि१४ रु आर३ वार,
दुर्गापुरी ईस संभूसिंह२० अवसानभो ॥
आत्मजहू ताको ओंकारसिंह२० प्रट्टपति व्है,
गोरवादि काज प्रभु राम२०३तहँ जानभो ॥
बिहित बिधान पुव्व होजो प्रभु ताको तास,
सो सब ओंकार२० सिंहको व प्रभुदानभो ॥
सख्व१ अरु साख्व२ तास२० अध्ययन सासन दै,
बुन्दीपुर राम२०३ को प्रवेसन बिधानभो ॥ ४ ॥
प्रौष्टाद्सित नवमी९ दिवाकर उदय होत,
लध्वी प्रातिहारि जनी धीदा प्रसवकाल ॥
अंकक२ दिवस सोहुरहिकैं अतासु भई,
सौवास्तिक ताको कर्म कारक भो नृपाल ॥
अष्टमी८ नभस्य६ सित बहुरि सुव्यवहार,
नाम रसरंग जो भुजिष्या कियउ काल ॥
साहब जु रूसइस७ बुन्दिय अजंट आत,
रामप्रभु ताको संमेलन कियउ ताल ॥ ५ ॥
भूत दुव अंक सासि१९२५सुचि४ सुचि मास केर,
एकादशी११ आर३ बेद४ नाडी दिवस आत ॥
मिश्रन कवींद्र रविमल्ल बहु आमयतैं,
बुन्दीद्रंग माँहिं प्रभु निजरनैर पात ॥
सो सुनि अनंत शोक करिकैं नरेंद्र आप
स्नानकरि अनल अंजली दियउ तात ॥

तास पुत्र अगुन मुरारिदान नामककों,
अभ्युत्थान आदि दै विसासि हित दिखात ॥ ६ ॥
भाद्र६सित षष्ठी६ सदानंद जो भुजिष्या भूप२०३,
जगन्नाथ जननी पंचत्वपन पातभो ॥
सहा९सित२ पक्ख दोजि२ उपरि तृतीया३ आत,
सोमवार२रत्ति सत्त७ नाडीकों विहातभो ॥
पट्टप कुमार भीमसिंह२०४१हूके स्वर्ग जात,
हाहारव बुन्दी घरघरहि दिखातभो ॥
ताको दाहकर्महु पुरोधातैं करायपुनि,
———कति आधिक कुमारन करातभो॥ ७ ॥
संवत तर्क दुव अतिधृति१९२६ समय होत,
स्वर्ग नभ५ भूप गो करोली मदनपाल ॥
नवमी९ नभस्य६ सित१ वहुरि अमात्य आप२०३,
वहुरा गतासु भयो जीवन अंतकाल ॥
सो सुनि नरेन्द्र आप२०३चंदनकों खंड इक१,
दैकैं प्रेतवनकों पठायो चर उताल ॥
सासनानुसारि प्रभु२०१३ सोहू तहँ जाइ पुनि,
उज्झिय सकल सो कापालिक क्रियाकाल ॥८॥
प्रातिपदि१ आरवार३ आश्विन७ असित२ आत,
लघ्वी प्रतिहारी प्रात होत जन्यो श्रीकुमार ॥
ताको जातकर्म वेदविधितैं सधाइ पुनि,
आव्हय ताको रघुवीरसिंह२०४१३ भो उदार२०३ ॥
सार आढ्य रंकनकों कारिकैं वहोरि आप२०३,
जाचकन अत्थहू दिवायो वसु अपार ॥
भूसुर गणाप अभिरूपजनहूकों वालि,

स्वापतेय१ बसन२ निवाजे तैं धर्मधार ॥ ९ ॥
मार्गशीर्ष९ मासहु द्वितीया२ सित पक्ख होत,
साहब वृहत अजंट सह बुंदी आइ ॥
वृहत किटिंग इहिं नामक के सम्मुहकों,
गाम जोधसागरके संनिधि प्रभु जाइ ॥
तुरग विहाइ रु विछातके उपरि आत,
सीसकरि पानि परस्पर हित दिखाइ ॥
आरुहि सु अश्व किय क्रमन वरम्बरतैं,
आइ पु बुंदी सिंहचत्वर बहुरि पाइ ॥ १० ॥
साहब सिबिर गयो मानिकसुचोकमाँहिं,
राजराज राम२०३अप्प प्रासादन पातभो ॥
बहुरि तृतीया३ सोमवासर२ किटिंग आत,
गोपुर बलवंत रट्ठऊर भिजातभो ॥
हत्थीपोल उत्तरि सु अंदर प्रबेस कियो,
अपाश्रय महल छत्र सन्निधि जातभो ॥
जाइ तहँ सम्मुह मिलाइ कर सीस करि,
मेवर अजंट सह संसदहि आतभो ॥ ११ ॥
वेला अलप राखि दुव२ अतर रु पान करि,
सिक्ख दै प्रथम रीति किय पहुंचानकों ॥
अंसुकसदन तास बहुरि पधारि आप२०३,
सम्मुह किटिंग पद पंच५ किय आनकों ॥
अवसर अलप राखि करिकैं समय वृत्त,
धनर किटिंग पुनि दियउ दिवानकों ॥
दैकैं सिक्ख ताहि इत्रोवसीयस वचन भाखि,
राजराज राम२०३ निज धाम किय आनकों ॥ १२ ॥

सत दुव अंक ससि१ बाहुल८ अमावसि३०कों,
गोन अजमेर किय लार्डहि मिलनकों ॥
करत मुकाम कुच्च द्रुत अजमेर जाइ,
लार्ड मिलि गोन किय पुष्कर सबनकों ॥
न्हाइ तहाँ जाइ वेदविधितैं सधाइ पुनि,
भोजन जिमावहु भूसुरजननकों ॥
पंचसत५०० नाणक अनेकप दिवाये दान,
आये पुर बुंदी अप्प बंटि बहु धनकों ॥ १३ ॥
अहि दुव अंक इक१९२८ विक्रम नरेन्द्र सक,
अधवल तपस्य१२ द्वादसी१०हू सौम्यवार२ ॥
सत्त७ पल अमल निशीथके उपरि आत,
रानी प्रातिहारी जन्यो लघ्वी लघु कुमार ॥
जात१ नाम२ कर्म बेदबिधितैं सधाइ तास,
रंगराजसिंह२०४१४ नाम मंजुल भो उदार ॥
चारन१ रु भट्ट२ आदि दैन सब जाचककों,
राज राज राम२०३ दयो बसु कति हजार ॥ १४ ॥
नंद दुव अंक भू १९२९ समा रु सुचि६ मास माँहि,
बीकानेर भूप सरदारसिंह कालभो ॥
ताके बंधुगनमें डुंगरसिंह नाम हुतो,
सोहू पट्ट पंचसिख पाइकैं भुवालभो ॥
पुणिग्राम१५ दिवसतप ११ जोधपुर भपतिहू,
स्वर्ग तखतेस जात रानिन विहालभे.
पट्टप कुमार जसवंतसिंह पूरवहू,
राजकारि कज्ज पिता अंतर नृपाल भो ॥ १५ ॥
नभ गुन अंक इक१९३० बाहुल८ असुचि पक्ख,

सप्तमि७ सु बहुरि दिवाकर१ वारपात ॥
साहब वृहत पेली१ बर्कलो अजंटो दुव२,
आवत नयर बुंदी हुतही सु प्रभात ॥
सम्मुह गमन आदि मेलन सु पुब्ब जिम,
करि तस गेहपट जाइ हित दिखात ॥
महलन प्रवेस किय दैकैं सु सिक्ख तास,
साहब वृहत अजंट सह कोटै जात ॥ १६ ॥
बाहुल८ धवल१ तिथी हरि१२ हरिवार होत,
पट्टनिपुरीकों प्रभुराम२०३ किय पयान॥
ग्राम रहि ठिक्करे बहोरि तिथि मार१३ सौम्य४,
पट्टनि सिविरको पवेसितभो दिवान२०३।४ ॥
राका उपराग वालि केसव दरश करि,
बिहित विधान करि बेद सु न्हान दान ॥
सार्द्धमासइक्क१॥ तहँ रहिकैं बहुरि आप२०३।४,
राजराज राम२०३।४ नेर बुंदो कियउ आन ॥ १७ ॥
इक्क गुन अंक भू १९३१ समान सक विक्रमके,
फग्गुन चतुर्थी४ श्वेत जीव५दिन पायोहै ॥
महाराज आदिक कुमार रघुराजसिंह२०४।५।३,
रजनी पहर१ गये उद्भव दिखायोहै ॥
लक्खन लुटाइ द्रव्य भूसुर रु रंकनकों,
जातक-आदिक विधान बनवायोहै ॥
राम२०३।४ नरनाह सब देसनके जच्चनकों,
इच्छामित स्वापतेय अमित दिखायोहै ॥ १८ ॥
रस गुन अंक ससि १९३६ संवत बहुरि होत,
अष्टमी८ अनेहाऽसित सुक्र३ अपनायोहै ॥

इक१ पल छप्पन५६।१ घटीके इष्ट लच्छी अंस,
लक्ष्मण।।२०४१६ कुमारिहूको जनन जनायोहै ॥
नव गुन अंक इक १९३९ हायन नवीन होत,
सावन प्रथम मास विसद सुहायोहै ॥
चढत दिवाप तीन३ घटिकाहू पंच५ पल,
रघुवरसिंह२०४१७ जन्म चउद्दसि१४ पायोहै ॥ १९ ॥
उक्त सक १९३९ हीमें जसवंत भूप जोधपुर,
पुत्री तखतेसकी स्वभागिनी भनाईहै ॥
असित तृतीया३ माघ११ काव्य११ दिन लग्नकाल,
कुमारी सौभाग्य रघुवीर२०४१३।१सिंह पाईहै ॥
रंगराजसिंह२०४१४।२ लघु सोदर बहुरि व्याही,
सूरज कुमरि चोथि४ जोरावर जाईहै ॥
उक्त तिथि४हूमैं सिंहमुहुव्बत पुत्री बल,
दिव्य देवकुमरी रघुराज२०४१५।३ हित दाईहै ॥ २० ॥
बावाता कुमार तखतेसको जवानसिंह,
पुत्रिका समर्थ नाम कुमरी कहाई है ॥
माघा११सित२ चोत्थि४ मंद७ वासरहू लग्नकाल,
जगन्नाथ पुत्र हरिनाथहित दाईहै ॥
करि उपयाम तत्थ रहिकैं कितेक दिन,
दुहुँ२दिस प्रीति रीति परम दिखाईहै ॥
महारावराजा श्री दिवान रामसिंह२०३१४ बलि,
आइकैं प्रवेसि बुंदी नगर बधाईहै ॥ २१ ॥
गोपुर चोगान बनायो सत्रुसाल१९५ तास,
गोपुर१ बनायो बाह्य संनिधि अप्प राम२०३१४ ॥
तोरन प्रासाद जोव बज्जत हजारी द्वार,
ताके सन्निकर्ष लि२द्वारिका२ बनाई बाम ॥

तास अग्ग अंदर बनायो इक द्वार गेह३,
अंतिक बनाई तास त्रिद्वारि४ बंब काम ॥
मोतीकूप निकट बनाईहू तिवारी५ पुनि,
तामैं विष्णुस्वामीकाति रहत अष्ट जाम ॥ २२ ॥
न्याय६ मुल्क७ नामक कचहरी द्वै२ बनाई पुनि,
मंदुरा८ सुखम बनाई भीमकुंड पास ॥
मंदुरा९ छितापर२ कौन नैर्ऋत बनाइ प्रभु,
आज्जहू वजत सोनपाइगाँ९ नाम तास ॥
छत्रमहल्ल माँहिं जलजंत्र१० अरु होद११इक,
त्रिद्वारी१२ भई पुष्पगो रखन वितर्दी जास ॥
दूदा१९२१के महलहूतैं द्वार लग बाह्य दुर्ग,
खुरा१३ किय तातैं मर्त्य जावत अनायास ॥ २३ ॥
द्वा–तोरन१४ अरु त्रिद्वारिका१५, मंगल द्वार समीप ॥
जीवरखा दूजेहु इक, महल१६ जु कियो महीप२०३४॥२४॥
वज्जत चामुंडा वलज, तास बाह्य त्रिद्वारि१७ ॥
प्रभु भंडारन सहित पुनि, कमन राम२०३४ प्रभु कारि॥२५॥
वायुकोन उडुदुर्गतैं, स्वापतेय सरसाइ ॥
देवी चामुंडा सदन१८, वलानाथ२०३४ बनवाइ ॥ २६ ॥
कौतुक मृगया कज्ज वलि, तुंग१९ रचिय अति वाम ॥
वहुरि पुष्पसागर वली, रचिय मल्ल२० अभिराम ॥ २७ ॥
कुंड२१ इक्क१ ताके निकट, मण्डप जु छवी पाइ ॥
सागर पुष्पतड़ाग तट, केतक वाटि कराइ ॥ २८ ॥
चाल्लागढ किल्लादि वलि, इतर जु थान उदार ॥
जँहँ जँहँ भंगित भो तहां, किय जीरन उद्धार ॥ २९ ॥
इतिश्री वंशभास्करे विंशोमयूखः ॥२०॥

इतिश्रीवंशभास्करनामको ग्रन्थः समाप्तः ॥